कोरिकी

श्यामनोहर पाण्डेय

लोक महाकाव्य

लोरिकी

(लोरिक और चंदा की लोक-गाथा)

मूलपाठ, भावार्थ, शब्दार्थ तथा टिप्पणियाँ

संग्रहकर्ता, सम्पादक, तथा भूमिका लेखक
डा० श्याममनोहर पाण्डेय,
एम० ए०, डी० फिल्०

साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड
जीरो रोड, इलाहाबाद

Lok Mahakavya Loriki

BY

Shyam Manohar Pandey

Istituto Universitario Orientale
NAPOLI, ITALY.

प्रथम संस्करण : १९७९

मूल्य : अस्सी रुपये

श्री गिरीश टंडन द्वारा साहित्य भवन प्रा० लि०, ९३, के० पी० कक्कड़ रोड, इलाहाबाद के लिए प्रकाशित तथा स्टार प्रिंटर्स, २८७ दरियाबाद, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित । आवरण सज्जा : इम्पैक्ट; इलाहाबाद ।

Lok Mahakavya Loriki

BY

Shyam Manohar Pandey

Istituto Universitario Orientale
NAPOLI, ITALY.

प्रथम संस्करण : १९७९

मूल्य : अस्सी रुपये

श्री गिरीश टंडन द्वारा साहित्य भवन प्रा० लि०, ९३, के० पी० कक्कड़ रोड, इलाहाबाद के लिए प्रकाशित तथा स्टार प्रिंटर्स, २८७ दरियाबाद, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित। आवरण सज्जा : इम्पैक्ट; इलाहाबाद।

प्राक्कथन

लोक महाकाव्य लोरिकी का यह पाठ पाठकों के हाथ में सौंपते हुए मुझे हर्ष है। इस कार्य को प्रारम्भ हुए लगभग बारह वर्ष व्यतीत हो गये। मुझे स्वयं इस कार्य की गुरुता और कठिनाइयों का पहले अनुमान नहीं था। स्वर्गीय डा० माता प्रसाद गुप्त, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, आचार्य बलदेव उपाध्याय, डा० सत्येन्द्र, डा० नामवर सिंह तथा श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, के अतिरिक्त प्रोफेसर शार्लोल वादविल, (पेरिस), प्रोफेसर एडवर्ड डीमक (शिकागो तथा प्रोफेसर टी० एन० पाण्डेय (कैलिफोनिया) आदि अनेक विद्वानों ने मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में इस कार्य को शीघ्र समाप्त करने की प्रेरणा दी पर समय बीतता ही चला गया।

यह सम्पूर्ण कार्य अब दस खण्डों में प्रकाशित करने की योजना है, क्योंकि इस पाठ के अतिरिक्त मूल पाठों के सात अन्य खण्ड हैं जो अपने आप में पूर्ण हैं। मूल कथा की एक रूपरेखा के अतिरिक्त उनमें कोई अन्य समानता नहीं है। वे भाषा, शब्द, स्वर, छन्द, वर्णन-विस्तार सब में भिन्न हैं। एक ही कथा को लेकर सभी गायकों ने नवीन पाठ प्रस्तुत किये हैं। जैसे एक ही राम कथा अनेक व्यक्तियों के हाथों में आकर अलग-अलग रूप ग्रहण करती चली गयी, उसी प्रकार लोरिक की एक कथा अनेक गायकों के स्वर में अनेक रूपों में मुखर हुई है। इसीलिए केवल एक पाठ प्रस्तुत कर देने से उस महाकाव्य की महत्ता का पूर्ण अनुमान नहीं लगता अतः मुझे यह निश्चय करना पड़ा कि प्रस्तुत बनारस के पाठ की ही भाँति अन्य सात मूल पाठ भी भावार्थ, शब्दार्थ, टिप्पणियाँ तथा संक्षिप्त भूमिका के साथ प्रकाशित किये जायँ। तत्पश्चात् एक खण्ड में व्युत्पत्तिमूलक तुलनात्मक कोश दिया जाय। पूर्वी हिन्दी बोलियों का कोई समग्र विशद् कोश नहीं है। आशा है यह कोश उस बड़े कार्य की पूर्व-पाठिका बन सकेगा। अन्त में एक खण्ड में सम्पूर्ण लोक महाकाव्य का आलोचनात्मक अध्ययन होगा जिसमें महाकाव्य के उद्गम और विकास के साथ-साथ उसके ऐतिहासिक पक्ष का विवेचन भी होगा। प्रस्तुत पाठ की भूमिका में इसीलिए मैंने लोरिकी के इतिहास और भौगोलिक पक्ष पर विचार नहीं किया है।

आशा है जब दस खण्डों में यह कार्य पूर्ण हो जायगा तब केवल लोक साहित्य और विशिष्ट साहित्य के अध्येता ही नहीं बल्कि भाषा विज्ञानी, मानव शास्त्री तथा लोक संगीत के विशेषज्ञ भी इससे लाभ उठा सकेंगे, क्योंकि सभी पाठ टेप पर मेरे पास सुरक्षित हैं और कुल रिकार्डिङ्ग ३¾ की स्पीड पर १५६ घन्टे के लगभग है।

Lok Mahakavya Loriki

BY

Shyam Manohar Pandey

Istituto Universitario Orientale
NAPOLI, ITALY.

प्रथम संस्करण : १९७९ मूल्य : अस्सी रुपये

श्री गिरीश टंडन द्वारा साहित्य भवन प्रा० लि०, ९३, के० पी० कक्कड़ रोड, इलाहाबाद के लिए प्रकाशित तथा स्टार प्रिंटर्स, २८७ दरियाबाद, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित। आवरण सज्जा : इम्पैक्ट; इलाहाबाद।

प्राक्कथन

लोक महाकाव्य लोरिकी का यह पाठ पाठकों के हाथ में सौंपते हुए मुझे हर्ष है। इस कार्य को प्रारम्भ हुए लगभग बारह वर्ष व्यतीत हो गये। मुझे स्वयं इस कार्य की गुरुता और कठिनाइयों का पहले अनुमान नहीं था। स्वर्गीय डा० माता प्रसाद गुप्त, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, आचार्य बलदेव उपाध्याय, डा० सत्येन्द्र, डा० नामवर सिंह तथा श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, के अतिरिक्त प्रोफेसर शार्लोल वादविल, (पेरिस), प्रोफेसर एडवर्ड डीमक (शिकागो तथा प्रोफेसर टी० एन० पाण्डेय (कैलिफोर्निया) आदि अनेक विद्वानों ने मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में इस कार्य को शीघ्र समाप्त करने की प्रेरणा दी पर समय बीतता ही चला गया।

यह सम्पूर्ण कार्य अब दस खण्डों में प्रकाशित करने की योजना है, क्योंकि इस पाठ के अतिरिक्त मूल पाठों के सात अन्य खण्ड हैं जो अपने आप में पूर्ण हैं। मूल कथा की एक रूपरेखा के अतिरिक्त उनमें कोई अन्य समानता नहीं है। वे भाषा, शब्द, स्वर, छन्द, वर्णन-विस्तार सब में भिन्न हैं। एक ही कथा को लेकर सभी गायकों ने नवीन पाठ प्रस्तुत किये हैं। जैसे एक ही राम कथा अनेक व्यक्तियों के हाथों में आकर अलग-अलग रूप ग्रहण करती चली गयी, उसी प्रकार लोरिक की एक कथा अनेक गायकों के स्वर में अनेक रूपों में मुखर हुई है। इसीलिए केवल एक पाठ प्रस्तुत कर देने से इस महाकाव्य की महत्ता का पूर्ण अनुमान नहीं लगता अतः मुझे यह निश्चय करना पड़ा कि प्रस्तुत बनारस के पाठ की ही भाँति अन्य सात मूल पाठ भी भावार्थ, शब्दार्थ, टिप्पणियाँ तथा संक्षिप्त भूमिका के साथ प्रकाशित किये जायँ। तत्पश्चात् एक खण्ड में व्युत्पत्तिमूलक तुलनात्मक कोश दिया जाय। पूर्वी हिन्दी बोलियों का कोई समग्र विशद् कोश नहीं है। आशा है यह कोश उस बड़े कार्य की पूर्व-पीठिका बन सकेगा। अन्त में एक खण्ड में सम्पूर्ण लोक महाकाव्य का आलोचनात्मक अध्ययन होगा जिसमें महाकाव्य के उद्गम और विकास के साथ-साथ उसके ऐतिहासिक पक्ष का विवेचन भी होगा। प्रस्तुत पाठ की भूमिका में इसीलिए मैंने लोरिकी के इतिहास और भौगोलिक पक्ष पर विचार नहीं किया है।

आशा है जब दस खण्डों में यह कार्य पूर्ण हो जायगा तब केवल लोक साहित्य और विशिष्ट साहित्य के अध्येता ही नहीं बल्कि भाषा विज्ञानी, मानव शास्त्री तथा लोक संगीत के विशेषज्ञ भी इससे लाभ उठा सकेंगे, क्योंकि सभी पाठ टेप पर मेरे पास सुरक्षित हैं और कुल रिकार्डिङ्ग ३½ की स्पीड पर १५६ घन्टे के लगभग है।

प्रोफेसर श्यामाचरण दुबे को

विषय-सूची

अध्याय ४, नेउरापुर की लड़ाई (पृष्ठ २६४—३३२)

अध्याय ५, लोरिक की गउरा वापसी (पृष्ठ ३३२—३६२)

अध्याय ६, पिपरी की लड़ाई (पृष्ठ ३५५—३७९)

लोक महाकाव्य लोरिकी*

लोक महाकाव्य लोरिकी का प्रचार-प्रसार लगभग सम्पूर्ण हिन्दी क्षेत्र में है। बिहार में मिथिला से लेकर उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ में इसके गायक अभी जीवित हैं। वे प्रायः अहीर हैं जिनका मुख्य उद्यम दूध का व्यापार और खेती करना है। लोरिकी की कथा केवल लोक-साहित्य की ही कथा नहीं है बल्कि इस कथा पर आधारित साहित्यिक कृतियाँ भी उपलब्ध हैं। चौदहवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी तक इस कथा को लेकर साहित्यिक कृतियाँ रची गयीं और उनको काफी ख्याति प्राप्ति हुई। हिन्दी में 'चन्दायन' (१३७९ ई०)[1] तथा 'मैनासत'[2] (१७ वीं शताब्दी) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बंगला में दौलत काजी ने 'सती मयना ओ लोर चन्द्रानी'[3] काव्य की रचना सत्तरहवीं शताब्दी में की तथा दक्खिनी में प्रायः उसी समय गव्वासी ने 'मैना सतवन्ती'[4] लिखी। फारसी में हमीद नामक कवि ने इस कथा के आधार पर 'अस्तमतनामा'[5] (१६०७) लिखा। अतः लोरिक की कथा न केवल लोक साहित्य के अध्येता के लिए बल्कि साहित्यिक पाठक के लिए भी महत्वपूर्ण है।

कथानक

प्रस्तुत अध्ययन बनारस के पाठ पर आधारित है जिसकी कथा संक्षेप में दी जा रही है।

"कथानक का नायक लोरिक गउरा का अहीर है जिसको चनवा नामक एक सुन्दरी अपमानित कर देती है और होली के अवसर पर यह ताना देती है कि यदि वीर हो तो बड़े भाई का विवाह करा लाओ और भाभी से होली खेलो। गाँव की बहिन-बेटी पर रंग क्यों फेंकते हो? लोरिक को इससे दुख पहुँचता है और भाई का विवाह कराने के लिए वह कटिबद्ध होता है।

---

* लोरिकी महाकाव्य के विस्तृत अध्ययन के लिए प्रस्तुत पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण The Hindi oral epic Loriki की भूमिका देखिये, प्रकाशक, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, सन् १९७९।

१. विस्तृत अध्ययन के लिए देखिये डा० माताप्रसाद गुप्त, **चांदायन**, आगरा १९६७ ई०। श्यामसनोहर पाण्डेय, **'मध्य युगीन प्रेमाख्यान'**, इलाहाबाद, १९६१, पृष्ठ ६१, ६२ तथा **'सूफी काव्य विमर्श'**, आगरा, १९६८, पृ० १ – ३६।

२. **मध्ययुगीन प्रेमाख्यान**, पृष्ठ १०२-१०३।

३. Satyendranath Ghosal, beginning of secular romance in Bengali literature, Santiniketan, 1959, pp. 13-34.

४. मसूद हुसैन खाँ, कदीम उर्दू, हैदराबाद, १९६५, पृष्ठ १ से २२१ तक।

५. इसकी एक प्रति अलीगढ़ विश्वविद्यालय में है।

किन्तु कठिनाई यह है कि भाई जिनका नाम मलसाँवर है भजन-भाव में लीन रहते हैं और विवाह नहीं करना चाहते । लोरिक तथा उसकी माँ खोइलनि तथा अन्य लोग कह कर थक जाते हैं पर मलसाँवर विवाह के लिए तैयार नहीं होते । अन्त में एक मुसहरिन के व्यंग्य करने पर कि मेरा मुसहर उस समय तक खाना नहीं खा सकता जब तक जल छिड़क कर उस रास्ते को पवित्र नहीं कर लिया जाय जिससे एक बाल कुंवार गुजरा हो, वह तैयार हो जाते हैं । पर सँवरू के विवाह करने पर तत्पर हो जाने से ही समस्या का हल नहीं हो जाता । उनकी भावी पत्नी सतिया भी ऐसी है जो भजन-भाव में लीन रहती है और विवाह नहीं करना चाहती । उसके पिता बमरी ने यह प्रण किया है कि "मैं ससुर नहीं कहा जाऊँगा और मेरे लड़के साले नहीं कहे जायेंगे, अन्य देश की लड़कियाँ मेरे देश में आयेंगी पर मेरे देश की लड़कियाँ दूसरे देश में नहीं जायेंगी ।"

अजयी और उसकी पत्नी बिजवा की अगुवाई पर बारात सज कर गउरा से सोहवल जाती है और उसमें अजई धोबी, बाँठा चमार, गुर्जन डोम तथा अन्य अनेक जातियों के लोग सम्मिलित हैं । युद्ध के बीच यह भी सूचना मिलती है कि मुगल, तुर्क, पठान तथा रघुवंशी भी बारात में योद्धा के रूप में वर्तमान हैं । विवाह साधारण नहीं है । इसमें अनेक लड़ाइयाँ बड़े पैमाने पर होती हैं जिनमें शक्ति-बाण और अग्नि बाण प्रयुक्त होते हैं तथा माँ दुर्गा और बनसती भी कार्य करती हैं । सतिया विवाह के पूर्व ब्रह्मा के यहाँ जाती है और उनसे शिकायत करती है कि उन्होंने उसका विवाह कैसे रच दिया और गउरा से सजधज कर बारात क्यों आयी है ? कथा फिर साधारण नहीं रह जाती । सतिया आकाश से धरती पर आने-जाने की क्षमता रखती है । उसकी आज्ञा पर हरदोइया नाग सम्पूर्ण बारात को डस लेता है । दुर्गा सम्पूर्ण बारात को पुन.जीवित करने का उपाय भी बताती हैं और कथा एक मिथक का रूप धारण कर लेती है जिसमें मनुष्य के साथ देवता भी भाग लेते हैं ।

लोरिक का बमरी के पुत्रों, भिम्हली और दसवंत से बड़े भयङ्कर रूप से युद्ध होता है और वे मारे जाते हैं । अन्त में सँवरू और सतिया का विवाह सम्पन्न होता है और बारात गउरा वापस आती है ।

कथा का दूसरा चरण तब प्रारम्भ होता है जब कहानी अगोरी की तरफ बढ़ती है । अगोरी का राजा मोलागत अत्याचारी है, आततायी है, लम्पट है । वह अपने राज्य की लड़कियों की इज्जत लूटने की कोशिश करता है । वहीं जब महर के घर मजरी उत्पन्न हुई तो सोना और चाँदी की वर्षा हुई । मोलागत ने उसके हाथ में तागा बंधवा दिया कि जब वह बड़ी होगी तो वह उसके साथ विवाह करेगा । जब मजरी बड़ी हो जाती है तब उसके पिता को चिन्ता होती है और वह जाति और धर्म की रक्षा के लिए अहीर कुल का लड़का खोजता है पर उसे कहीं योग्य वर नहीं मिलता । उद्विग्न

होकर वह तलवार से मंजरी की हत्या कर देना चाहता है। मंजरी उसे सलाह देती है कि वह गउरा के अहीर लोरिक के पास प्रस्ताव भेजे। लोरिक जातीय सम्मान और एक कन्या के मान की रक्षा के लिए अगोरी विवाह करने चल पड़ता है। वहाँ मोला-गत के सहायक भांट और उसके मानजे निर्मल को युद्ध में पराजित करता है और मंजरी के साथ गउरा वापस आता है। लोरिक अगोरी में एक हाथी को भी मारता है कथा से पता चलता है कि उसकी हथिनी पूर्व जन्म में मंजरी की बहन लगती थी। नये जन्म में उसे मानव से हथिनी बनना पड़ा था।

कहानी का तृतीय मोड़ अधिक दिलचस्प है। जब एक वीर योद्धा अपनी समस्त लड़ाइयों के बाद अब थोड़ा विश्राम करता है। भाई के विवाह के अवसर पर भयङ्कर लड़ाइयाँ तथा अपने विवाह के अवसर पर कठोर संग्राम के बाद वह गउरा में सुख से रहने लगता है और इसी अवधि में पड़ोस की लड़की चनवा से जिसका पहले उल्लेख हो चुका है, उसका प्रेम सम्बन्ध बढ़ने लगता है। विवाहिता के साथ-साथ एक अन्य स्त्री उसके जीवन में आती है और विवश होकर उसे चनवा के साथ हल्दी जाना पड़ता है। हल्दी में उसे जमुनी कलवारिन मिलती है। लोरिक को यहाँ नये प्रकार की विप-त्तियों का सामना करना पड़ता है। उसे यहाँ नौकरी करनी पड़ती है और गाय चराने का कार्य करना पड़ता है, जो एक योद्धा के सम्मान के अनुकूल नहीं है।

किन्तु कुछ ही दिनों बाद उसके शौर्य को नयी चुनौती मिलती है। वह कट्टाह और भयङ्कर घोड़े को अपने वश में करता है और हल्दी से नेउरापुर जाकर सोलह सौ कन्याओं के पतियों को बन्दी जीवन से मुक्त कराता है और उन्हें हल्दी वापस लाता है। हल्दी में ही उसे जग्गू बनजारा से ज्ञात होता है कि इधर चनवा के पिता तथा पड़ोस के अनेक वीरों ने संयुक्त रूप से संवरू पर आक्रमण कर उन्हें मार डाला है। उसकी माँ खोइलनि तथा उसकी पत्नी मंजरी दोनों अत्यन्त विपन्न अवस्था में जीवन काट रही हैं। दूसरे के घर सेविका का कार्य करके उन्हें जीवन-यापन करना पड़ रहा है। परिवार की दारुण अवस्था का संदेश पाकर लोरिक दुखी होता है और चनवा के साथ बोहा वापस आता है। वहाँ से गउरा की स्थिति का पता लगाता है, अपनी पत्नी के सतीत्व की परख करता है, फिर गउरा वापस आता है। उसके अब दो पुत्र हो चुके हैं—मंजरी से भोरिक, चनवा से चन्द्राइत के अतिरिक्त संवरू का एक पुत्र देवाइच भी हैं। सभी मिल कर पड़ोस के पिपरी के देवसी पर आक्रमण कर अपने सारे पशुओं को वापस लेते हैं और अन्य शत्रुओं को पराजित कर सारा धन फिर प्राप्त कर लेते हैं। एक वीर लड़ाकू की यह अन्तिम लड़ाइयाँ हैं जिसमें यह स्पष्ट झलक जाता है कि उसकी शक्ति का क्षय हुआ है। निदान अपने पुत्रों और पत्नियों को सब कुछ सौंप कर वह बेवरा नदी के तट पर झोपड़ी बनवा कर भजन में समय व्यतीत करता है और कुछ दिनों के उपरान्त चिता बनवा कर उसमें अपने को भस्मीभूत कर देता है।

लोरिकी—अहीर जाति का लोक महाकाव्य

लोरिकी मुख्य रूप से अहीर जाति का लोक महाकाव्य है। इसके तीन नाम प्रचलित हैं। मैथिली और मगही क्षेत्र में प्रायः इसको लोरिकायन कहते हैं। भोजपुरी क्षेत्र में लोरिकी और लोरिकायन तथा अवधी क्षेत्र में इसे चनैनी कहते हैं। पहले कहा जा चुका है कि इस महाकाव्य के गायक प्रायः अहीर या यादव हैं। मैंने मिर्जापुर जिले में अगोरी और चोपन के पास का एक पाठ ददई मल्लाह का संग्रहीत किया है पर उनके गुरु भी अहीर थे। कहने का तात्पर्य यह है कि एक संगठित और प्रभावशाली जाति ने अपने इस जातीय गौरव गाथा को जिलाये रखने की भरपूर चेष्टा की है जिसकी वजह से यह काव्य अभी तक लोक-परम्परा में जीवित है; किन्तु अब आधुनिक शिक्षा के प्रचार और प्रसार के कारण नई पीढ़ी नौकरी की ओर प्रवृत्त हो रही है तथा मनोरंजन के आधुनिक साधन विकसित हो गये हैं, अतः लोक महाकाव्य के अभ्यास जैसे श्रम-साध्य कार्य से नये युवक विमुख हो रहे हैं।

नई पीढ़ी के पास अब न तो समय है और न उसके पास कोई प्रेरणा है कि जिसके कारण वह इतने बड़े महाकाव्य को सीखे, अतः युवा-पीढ़ी इस काव्य में उतनी दिलचस्पी नहीं ले रही है। नई शिक्षा से पठन-पाठन का अभ्यास अधिक बढ़ा है, अतः स्मृति में किसी वस्तु को सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति भी कम हुई है। यह भी लोक-साहित्य से लोक को दूर हटा रहा है, अतः आशंका है कि कुछ ही वर्षों में लोरिकी जैसे गायन की परम्परा क्षीण होकर नष्ट हो जायगी। लोरिकी के श्रोताओं में भी अधिकांश अहीर लोग ही होते हैं। उत्तर भारत में इन्हें यादव या चौधरी कहा जाता है। इस जाति का सम्बन्ध प्राचीन आभीरों से ही है जिनका कभी सम्पूर्ण भारत में प्रभाव था। आभीर जाति के इतिहास पर शोध-कार्य हुआ है।[1] पर प्रस्तुत लेखक का उद्देश्य केवल लोक महाकाव्य के वर्तमान सन्दर्भ को स्पष्ट करना है।

जहाँ तक मुझे ज्ञात है यह कथा मैथिली, मगही, भोजपुरी, अवधी, छत्तीसगढ़ी आदि क्षेत्रों में ही प्रचलित है। ब्रज तथा अन्य हिन्दी क्षेत्रों में मुझे इसके गायकों की सूचना नहीं मिली। उत्तर प्रदेश में अहीर लोगों के जिस वर्ग ने इस कथा को सुरक्षित रखा है उसमें किढोर और ग्वाल विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सन् १८९१ की जन-गणना के अनुसार लोरिकी के प्रचार-क्षेत्र में ये ही दो वर्ग अधिक संख्या में थे।

---

१. विस्तृत अध्ययन के लिए देखिए, Suryavanshi (Bhagavan Singh) Abhiras, their history and culture, Baroda, 1962 pp. 119.

विलियम क्रूक[1] के आधार पर इन दो वर्गों की संख्या उत्तर प्रदेश के कुछ प्रमुख जिलों में इस प्रकार थी।

सन् १८९१ में ढिढोर और ग्वालों की संख्या

जिला	ढिढोर	ग्वाल
बनारस	१०५८१	७२५३९
फैजाबाद	३८५६	१३४२१२
इलाहाबाद	२४७	१३८४१३
जौनपुर	१-६६६	१७६८२७
मिर्जापुर	—	१११८२१
बलिया	४०७५३	३३६९९
आजमगढ़	७२५७	२३४५२२
गाजीपुर	३६४४५	१३१९९७
गोंडा	१२४५३	१३३८९१
फतेहपुर	१४२३९	३५३७५
उन्नाव	१९८१८	२३०२५

घोषी, नन्दवंशी तथा यदुवंशियों में मुझे लोरिकी के गायक नहीं मिले। पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में जहाँ लोरिकी का प्रचार-क्षेत्र है इनकी संख्या बहुत ही कम है।

श्रोताओं में भी इसी वर्ग के लोग अधिक थे। इन सब में लोरिकी महाकाव्य के प्रति एक विशेष प्रेम है और गायन के समय लोरिक की विजय और पराजय के साथ उनकी भावात्मक एकता देखी जा सकती है। लोरिक के युद्ध, शौर्य, उसकी पत्नी मंजरी की विपत्ति तथा अन्य सभी घटनाएँ श्रोताओं के मर्म को छूती हैं। इस अर्थ में लोरिकी एक सच्चा लोक महाकाव्य है जिसका अपने निकटतम श्रोताओं की भावात्मकता के साथ सहज सम्बन्ध जुड़ जाता है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यादवों के अतिरिक्त अन्य श्रोता महाकाव्य से प्रभावित नहीं होते। किन्तु एक जातीय गौरव की जो अनुभूति गायन सुन कर यादव समुदाय में होती है, वह शायद अन्य जाति के श्रोता नहीं महसूस करते। सम्भवतः सैकड़ों साल से यह महाकाव्य जीवित है, उसका मूल कारण भी यही है कि एक विशेष जाति ने इसको प्रश्रय दिया, संरक्षण दिया और उसके साथ अपना अटूट भावात्मक सम्बन्ध स्थापित रखा। अन्यथा मौखिक परम्परा में जीवित रहने वाला यह काव्य कभी काल-कवलित हो गया होता।

---

१. विस्तृत अध्ययन के लिए देखिये, W. Crook, The tribes and castes of the North-Western provinces and Oudh, Calcutta, 1896, Vol I, PP 49-71.

लोरिकी—अहीर जाति का लोक महाकाव्य

लोरिकी मुख्य रूप से अहीर जाति का लोक महाकाव्य है। इसके तीन नाम प्रचलित हैं। मैथिली और मगही क्षेत्र में प्रायः इसको लोरिकायन कहते हैं। भोजपुरी क्षेत्र में लोरिकी और लोरिकायन तथा अवधी क्षेत्र में इसे चनैनी कहते हैं। पहले कहा जा चुका है कि इस महाकाव्य के गायक प्रायः अहीर या यादव हैं। मैंने मिर्जापुर जिले में अगोरी और बावन के पास का एक [illegible] [illegible] मल्लाह का [illegible] किया है पर उनके गुरु भी अहीर थे। कहने का तात्पर्य यह है कि एक संगठित और प्रभावशाली जाति ने अपने इस [illegible] गौरव गाथा को जिलाये रखने की भरपूर चेष्टा की है जिसकी वजह से यह काव्य अभी तक लोक-परम्परा में जीवित है; किन्तु अब आधुनिक शिक्षा के प्रचार और प्रसार के कारण नई पीढ़ी नौकरी की ओर प्रवृत्त हो रही है तथा मनोरंजन के आधुनिक साधन विकसित हो गये हैं, अतः लोक महाकाव्य के अभ्यास जैसे श्रम-साध्य कार्य से नये युवक विमुख हो रहे हैं।

नई पीढ़ी के पास अब न तो समय है और न उसके पास कोई प्रेरणा है कि जिसके कारण वह इतने बड़े महाकाव्य को सीखे, अतः युवा-पीढ़ी इस काव्य में उतनी दिलचस्पी नहीं ले रही है। नई शिक्षा में पठन-पाठन का अभ्यास अधिक बढ़ा है, अतः स्मृति में किसी वस्तु को सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति भी कम हुई है। यह भी लोक-साहित्य से लोक को दूर हटा रहा है, अतः आशंका है कि कुछ ही वर्षों में लोरिकी जैसे गायन की परम्परा क्षीण होकर नष्ट हो जायगी। लोरिकी के श्रोताओं में भी अधिकांश अहीर लोग ही होते हैं। उत्तर भारत में इन्हें यादव या चौधरी कहा जाता है। इस जाति का सम्बन्ध प्राचीन आभीरों से ही है जिनका कभी सम्पूर्ण भारत में प्रभाव था। आभीर जाति के इतिहास पर शोध-कार्य हुआ है।[1] पर प्रस्तुत लेखक का उद्देश्य केवल लोक महाकाव्य के वर्तमान सन्दर्भ को स्पष्ट करना है।

जहाँ तक मुझे ज्ञात है यह कथा मैथिली, मगही, भोजपुरी, अवधी, छत्तीसगढ़ी आदि क्षेत्रों में ही प्रचलित है। ब्रज तथा अन्य हिन्दी क्षेत्रों में मुझे इसके गायकों की सूचना नहीं मिली। उत्तर प्रदेश में अहीर लोगों के जिस वर्ग ने इस कथा को सुरक्षित रखा है उसमें ढिंढोर और ग्वाल विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सन् १९६१ की जन-गणना के अनुसार लोरिकी के प्रचार-क्षेत्र में ये ही दो वर्ग अधिक संख्या में थे।

१. विस्तृत अध्ययन के लिए देखिए, Suryavanshi (Bhagavan Singh) Abhiras, their history and culture, Baroda, 1962 pp. 119.

विलियम क्रूक[1] के आधार पर इन दो वर्गों की संख्या उत्तर प्रदेश के कुछ प्रमुख जिलों में इस प्रकार थी।

सन् १८९१ में ढिढोर और ग्वालों की संख्या

जिला	ढिढोर	ग्वाल
बनारस	१०५८१	७२५३९
फैजाबाद	३८५६	१३४२१२
इलाहाबाद	२४७	१३८४१३
जौनपुर	१-६६९	१७६८२७
मिर्जापुर	—	१११८२१
बलिया	४०७५३	३३६९९
आजमगढ़	७२५७	२३४५२२
गाजीपुर	३६४४५	१३१९९७
गोंडा	१२४५३	१३३८९१
फतेहपुर	१४२३९	३५३७५
उन्नाव	१९८१८	२३०२५

घोषी, नन्दवंशी तथा यदुवंशियों में मुझे लोरिकी के गायक नहीं मिले। पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में जहाँ लोरिकी का प्रचार-क्षेत्र है इनकी संख्या बहुत ही कम है।

श्रोताओं में भी इसी वर्ग के लोग अधिक थे। इन सब में लोरिकी महाकाव्य के प्रति एक विशेष प्रेम है और गायन के समय लोरिक की विजय और पराजय के साथ उनकी भावात्मक एकता देखी जा सकती है। लोरिक के युद्ध, शौर्य, उसकी पत्नी मंजरी की विपत्ति तथा अन्य सभी घटनाएँ श्रोताओं के मर्म को छूती हैं। इस अर्थ में लोरिकी एक सच्चा लोक महाकाव्य है जिसका अपने निकटतम श्रोताओं की भावात्मकता के साथ सहज सम्बन्ध जुड़ जाता है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यादवों के अतिरिक्त अन्य श्रोता महाकाव्य से प्रभावित नहीं होते। किन्तु एक जातीय गौरव की जो अनुभूति गायन सुन कर यादव समुदाय में होती है, वह शायद अन्य जाति के श्रोता नहीं महसूस करते। सम्भवतः सैकड़ों साल से यह महाकाव्य जीवित है, उसका मूल कारण भी यही है कि एक विशेष जाति ने इसको प्रश्रय दिया, संरक्षण दिया और उसके साथ अपना अटूट भावात्मक सम्बन्ध स्थापित रखा। अन्यथा मौखिक परम्परा में जीवित रहने वाला यह काव्य कभी काल-कवलित हो गया होता।

१. विस्तृत अध्ययन के लिए देखिये, W. Crook, The tribes and castes of the North-Western provinces and Oudh, Calcutta, 1896, Vol I, PP 49-71.

लोरिकी—अहीर जाति का लोक महाकाव्य

लोरिकी मुख्य रूप से अहीर जाति का लोक महाकाव्य है । इसके तीन नाम प्रचलित हैं । मैथिली और मगही क्षेत्र में प्रायः इसको लोरिकायन कहते हैं । भोजपुरी क्षेत्र में लोरिकी और लोरिकायन तथा अवधी क्षेत्र में इसे चनैनी कहते हैं । पहले कहा जा चुका है कि इस महाकाव्य के गायक प्रायः अहीर या यादव हैं । मैंने मिर्जापुर जिले में अगोरी और चोपन के पास का एक पाठ रब्बै मल्लाह का संगृहीत किया है पर उनके गुरु भी अहीर थे । कहने का तात्पर्य यह है कि एक संगठित और प्रभावशाली जाति ने अपने इस जातीय गौरव गाथा को जिलाये रखने की भरपूर चेष्टा की है जिसकी वजह से यह काव्य अभी तक लोक-परम्परा में जीवित है; किन्तु अब आधुनिक शिक्षा के प्रचार और प्रसार के कारण नई पीढ़ी नौकरी की ओर प्रवृत्त हो रही है तथा मनोरंजन के आधुनिक साधन विकसित हो गये हैं, अतः लोक महाकाव्य के अभ्यास जैसे श्रम-साध्य कार्य से नये युवक विमुख हो रहे हैं ।

नई पीढ़ी के पास अब न तो समय है और न उसके पास कोई प्रेरणा है कि जिसके कारण वह इतने बड़े महाकाव्य को सीखे, अतः युवा-पीढ़ी इस काव्य में उतनी दिलचस्पी नहीं ले रही है । नई शिक्षा से पठन-पाठन का अभ्यास अधिक बढ़ा है, अतः स्मृति में किसी वस्तु को सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति भी कम हुई है । यह भी लोक-साहित्य से लोक को दूर हटा रहा है, अतः आशंका है कि कुछ ही वर्षों में लोरिकी जैसे गायन की परम्परा क्षीण होकर नष्ट हो जायगी । लोरिकी के श्रोताओं में भी अधिकांश अहीर लोग ही होते हैं । उत्तर भारत में इन्हें यादव या घोसी कहा जाता है । इस जाति का सम्बन्ध प्राचीन आभीरों से ही है जिनका कभी सम्पूर्ण भारत में प्रभाव था । आभीर जाति के इतिहास पर शोध-कार्य हुआ है ।[1] पर प्रस्तुत लेखक का उद्देश्य केवल लोक महाकाव्य के वर्तमान सन्दर्भ को स्पष्ट करना है ।

जहाँ तक मुझे ज्ञात है यह कथा मैथिली, मगही, भोजपुरी, अवधी, छत्तीसगढ़ी आदि क्षेत्रों में ही प्रचलित है । ब्रज तथा अन्य हिन्दी क्षेत्रों में मुझे इसके गायकों की सूचना नहीं मिली । उत्तर प्रदेश में अहीर लोगों के जिस वर्ग ने इस कथा को सुरक्षित रखा है उसमें ढिंढोर और ग्वाल विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । सन् १८९१ की जन-गणना के अनुसार लोरिकी के प्रचार-क्षेत्र में ये ही दो वर्ग अधिक संख्या में थे ।

---

१. विस्तृत अध्ययन के लिए देखिए, Suryavanshi (Bhagavan Singh) Abhiras, their history and culture, Baroda, 1962 pp. 119.

विलियम क्रूक[1] के आधार पर इन दो वर्गों की संख्या उत्तर प्रदेश के कुछ प्रमुख जिलों में इस प्रकार थी ।

सन् १८९१ में ढिंढोर और ग्वालों की संख्या

जिला	ढिंढोर	ग्वाल
बनारस	१०५८१	७२५३९
फैजाबाद	३८५९	१३४२१२
इलाहाबाद	२४७	१३८४१३
जौनपुर	१-६६९	१७६८२७
मिर्जापुर	—	१११८२१
बलिया	४०७५३	३३६९९
आजमगढ़	७२५७	२३४५२२
गाजीपुर	३६४४५	१३१९९७
गोंडा	१२४५३	१३३८९१
फतेहपुर	१४२३९	३५३७५
उन्नाव	१९८१८	१३०२५

घोषी, नन्दवंशी तथा यदुवंशियों में मुझे लोरिकी के गायक नहीं मिले । पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में जहाँ लोरिकी का प्रचार-क्षेत्र है इनकी संख्या बहुत ही कम है ।

श्रोताओं में भी इसी वर्ग के लोग अधिक थे । इन सब में लोरिकी महाकाव्य के प्रति एक विशेष प्रेम है और गायन के समय लोरिक की विजय और पराजय के साथ उनकी भावात्मक एकता देखी जा सकती है । लोरिक के युद्ध, शौर्य, उसकी पत्नी मंजरी की विपत्ति तथा अन्य सभी घटनाएँ श्रोताओं के मर्म को छूती हैं । इस अर्थ में लोरिकी एक सच्चा लोक महाकाव्य है जिसका अपने निकटतम श्रोताओं की भावात्मकता के साथ सहज सम्बन्ध जुड़ जाता है । किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यादवों के अतिरिक्त अन्य श्रोता महाकाव्य से प्रभावित नहीं होते । किन्तु एक जातीय गौरव की जो अनुभूति गायन सुन कर यादव समुदाय में होती है, वह शायद अन्य जाति के श्रोता नहीं महसूस करते । सम्भवतः सैकड़ों साल से यह महाकाव्य जीवित है, उसका मूल कारण भी यही है कि एक विशेष जाति ने इसको प्रश्रय दिया, संरक्षण दिया और उसके साथ अपना अटूट भावात्मक सम्बन्ध स्थापित रखा । अन्यथा मौखिक परम्परा में जीवित रहने वाला यह काव्य कभी काल-कवलित हो गया होता ।

---

१. विस्तृत अध्ययन के लिए देखिये, W. Crook, The tribes and castes of the North-Western provinces and Oudh, Calcutta, 1896, Vol I, PP 49-71.

गायक–परिचय और पृष्ठभूमि

प्रस्तुत लोक महाकाव्य के बनारस के गायक पांचू भगत जाति के यादव है। वह कब पैदा हुये, यह ठीक-ठीक बताना सम्भव नहीं है। लोरिकी के सभी गायक अपनी उम्र अनुमान से बताते हैं। पांचू भगत का कहना है कि सन् १६१६ ई० की बड़ी बाढ़ उन्हें याद है। सन् १६६६ में जब मैंने उनके गाये हुए पाठ की रिकार्डिङ्ग की तो उन्होंने अपनी उम्र ५६ वर्ष बतायी थी। उनका गाँव परानापुर है, डाकखाना चौबेपुर है, परगना कटेहर। बनारस केन्ट से चौबेपुर बस या ट्रेन से जा सकते हैं। चौबेपुर रेलवे स्टेशन से उनका गाँव परानापुर पास पड़ता है। सारनाथ से यह लगभग ६ मील उत्तर है। परानापुर में मुख्यतः यादव (ग्वाल अहीर) बसते हैं पर कोइरी, कहार तथा तेलियों के भी घर हैं। तीन घरों में कायस्थ हैं तथा एक घर भाट का है। गाँव में चमारों की भी बस्ती है। आसपास के गाँवों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य सभी बसते हैं। भगत जी के गाँव और उसके आसपास भारत की महत् सांस्कृतिक परम्परा लोक साहित्य के साथ-साथ जीवित है। दोनों परम्पराओं को एक दूसरे से अलग करना कठिन है। भगत जी का गायन रामायण और महाभारत के चरित्रों की स्तुति से प्रारम्भ होता है। लोक और मौखिक परम्परा के इस महाकाव्य में शास्त्रीय परम्पराएँ सुरक्षित हैं।

पाँचू भगत धार्मिक प्रकृति के सरल और प्रसन्नचित्त रहने वाले व्यक्ति हैं। उनके पिता रूप नारायण भगत थे जो भगवती की पूजा दिलवाने तथा कड़ाहा चढ़वाने का कार्य करते थे। पाँचू भगत ५ भाई थे। अन्य चार के नाम बलदेव यादव, रामदेव, दुलार तथा पुरनमासी यादव था। सबकी मृत्यु हो चुकी है। परिवार में पाँचू भगत जो सबसे छोटे थे, पिता की भाँति पूजा-पाठ में संलग्न हुए। उनके परिवार में यह परम्परा चार पुश्तों से चली आ रही है। भगत जी पूजा दिलवाने तथा कड़ाहा चढ़-वाने के लिए गाजीपुर, जौनपुर तथा बलिया तक जा चुके हैं। जब चेचक का प्रकोप होता है तब भगत जी रोगियों की सहायता के लिए जाते हैं। लोगों का विश्वास है कि भगत जी के पूजा करवाने से चेचक की बीमारी चली जाती है। आम लोगों का विश्वास है कि चेचक की बीमारी भगवती के प्रकोप से होती है।

भगत जी के घर पर खेती भी होती है और उसको उनके पुत्र राम जी सम्भा-लते हैं। उनकी उम्र लगभग २६ वर्ष की है। उन्होंने इलाहाबाद बोर्ड के इन्टर मीडि-यट तक की शिक्षा प्राप्त की है। वे थोड़ी-थोड़ी लोरिकी भी गा लेते हैं। परिवार की जीविका मुख्यतः खेती बारी से चलती है। पूजा करवाने तथा गायकी से जो आय होती है वह पूरक है। पांचू भगत अपनी ओर से गायकी के लिए शुल्क या पुरस्कार नहीं

माँगते किन्तु जब किसी विशेष अवसर पर गाते हैं तो किसी न किसी रूप में उन्हें पुरस्कार अवश्य मिलता है ।

प्रायः लोरिकी के गायक यह कहते हैं कि उनके गुरु अमुक थे किन्तु सच बात तो यह है कि गायक प्रायः एक से अधिक व्यक्तियों के सम्पर्क से अपनी कला सीखते हैं । यह बात अवश्य है कि कभी कभी एक प्रमुख गुरु होता है किन्तु अनेक बैठकों, दंगलों तथा समारोहों में गायक जाते हैं और उसमें से ग्राह्य चीजों को लेकर अपने महाकाव्य को सँवारते हैं । पांचू भगत ने मुझे बताया कि उनके गुरु स्वयं कृष्ण भगवान थे । बाद में पता चला कि पन्द्रह-सोलह वर्ष की उम्र में उन्होंने अपने गाँव के अयोध्या नामक व्यक्ति के सम्पर्क में लोरिकी गायन प्रारम्भ किया । दूसरे गायक गाजीपुर के थे जिनके सम्पर्क में गायक ने लोरिकी सीखी । कदाचित उनके पिता रूप नारायण भी लोरिकी गाते थे । गायक की भाषा में शुद्ध बनारस की भोजपुरी नहीं है । बलिया और गाजीपुर की भोजपुरी के व्याकरणिक रूप उनके पाठ में प्राप्त होते हैं अतः सम्भावना है कि गायक का एक गुरु बनारस जिले के पूर्व का अवश्य था । लोरिकी के सभी गायक बार-बार कहते हैं कि बिना दैवी प्रेरणा के इतना बड़ा महाकाव्य नहीं गाया जा सकता । पांचू भगत कृष्ण, दुर्गा और भगवती को यह श्रेय देते हैं । बनसत्ती भगवती की ही एक रूप हैं । परानापुर में बनसत्ती का एक चौरा भी है जहाँ भगत जी पूजा करते हैं । लोरिकी में दुर्गा के साथ-साथ बनसत्ती भी नायक लोरिक को विजय में सहायता करती हैं ।

गायक की किसी पाठशाला में शिक्षा नहीं हुई । उन्हें लिखने या पढ़ने का अवसर नहीं मिला । बचपन में ढोरों की कुछ चरवाही भी की है । लगभग १६ वर्ष की अवस्था में पांचू भगत बिरहा गाने लगे थे । उसके बाद लोरिकी सीखनी प्रारम्भ की । गायक के अपने संचित कोश में अनेक पौराणिक कथाएँ हैं और अपनी बिरहा गायकी में उनका उपयोग भी करते हैं । एक दूसरा महाकाव्य आल्हा से भी गायक का परिचय है और उसकी गायन शैली का कुछ प्रभाव उनकी लोरिकी पर भी है । एक सिद्ध गायक होने के पूर्व गायक ने अनेक स्वरों की साधना की । अभी भी गायक में स्वर परिवर्तन और एक ही छंद को अनेक रूपों में गाने की क्षमता है ।

लोरिकी की परम्परा मौखिक है । इस पर छपी पुस्तकों ने प्रभाव नहीं डाला है । लिखित पाठ परम्परा और मुद्रित पुस्तकों का आदर्श गायक के सामने नहीं रहा । गायक आशुकवि है, परम्परा का प्रसारक है और अपने स्वर तथा लय पर उसका अधिकार है । वह प्राचीन काव्य में अपनी मौलिकता मिलाकर गाता है । आरा (बिहार) के महादेव प्रसाद का लोरिकायन, दूधनाथ पुस्तकालय, कलकत्ता और गायघाट, बनारस से कई खण्डों में सन् १६३८ के आसपास प्रकाशित हुआ था । पर यह लोक-परम्परा के पाठ पर आधारित नहीं है । महादेव प्रसाद ने कथा को लेकर अपनी निजी काव्य-रचना भोजपुरी में की थी । उनकी रचना श्रोताओं के लिए नहीं

उनकी जीविका का साधन भी है पर लोरिकी से कोई गायक अपनी रोजी-रोटी नहीं कमाता ।

यह अवश्य सत्य है कि गायक को अपने समाज में प्रतिष्ठा मिलती है । पांचू भगत को लोरिकी ने अतिरिक्त सामाजिक मान्यता दी है और जातीय राजनीति तथा अपने क्षेत्र की सामान्य राजनीति, मतदाता, क्षेत्रीय विधायक, संसद सदस्य सबको प्रभावित करने की क्षमता गायक में है क्योंकि यादव समाज में गायक को मान्यता एक विशिष्ट-जन के रूप में है । भगत जी अपने जातीय गौरव के गायक हैं । राज्य या कोई श्रीमन्त ऐसे गायकों को आश्रय नहीं देता फिर भी यादव जाति सम्मान देकर ऐसे गायकों की कला की रक्षा करती है जिसमें उसके जातीय नायक लोरिक की सम्पूर्ण गौरव-गाथा निहित है । गायक पैसे से अधिक इस सम्मान को महत्व देते हैं ।

भगत जी की गायकी का कोई विशेष समय नहीं है । लोगों की प्रार्थना पर वह किसी रात को गा सकते हैं । पर गर्मी के दिनों में खलियान में, पुत्र जन्म, विवाह तथा पर्व, ऐसे अवसर हैं जब लोरिकी के गायक विशेष रूप से अपना गायन प्रस्तुत करते हैं । प्रायः पुरुष ही इन गानों में भाग लेते हैं । पर लुक-छिपकर स्त्रियाँ भी सुनती हैं । भगत जी के यहाँ होली के अवसर पर ५ सौ व्यक्ति लोरिकी सुनने आ जाते हैं । गायक गायन प्रारम्भ करने के पूर्व गांजा पीते हैं और गांजा बनाने वाले चेले बीच-बीच में उन्हें गांजा पिलाते रहते हैं । लगभग सभी लोरिकी के गायक गांजा पीते हैं ।

नयी पीढ़ी लोरिकी नहीं सीख रही है और भगत जी को इस बात का दुख है कि अच्छे गायक समाप्त हो रहे हैं । कुछ ही दिनों में लोरिकी के गायन की परम्परा बनारस जिले से समाप्त हो जायगी, यह आशंका भगत जी को है ।

लोक महाकाव्य का श्रोता और उसका प्रभाव

लोक महाकाव्य तथा साहित्यिक महाकाव्य की रचना प्रक्रिया में एक बड़ा अंतर यह है कि लोक महाकाव्य का गायक सदैव अपने श्रोताओं के लिए पाठ प्रस्तुत करता है जब कि साहित्यिक रचनाकार पाठकों के लिए रचना करता है। वह पाठक के सामने प्रत्यक्ष रूप से नहीं होता। लोक महाकाव्य के प्रस्तुतीकरण के समय श्रोता गायक के सामने होता है। श्रोता की रुचि और प्रकृति लोक महाकाव्य के गायक को प्रभावित करती रहती है। श्रोता गायक के समक्ष वर्तमान तो रहता ही है वह उसकी गायकी में स्वर मिलाकर सहयोग भी प्रदान करता है। श्रोताओं में से अनेक व्यक्ति और कभी-कभी सम्पूर्ण लोग, कड़ी के अन्त में गायक के साथ स्वर मिलाते हैं।

लोक महाकाव्य का श्रोता अपनी काव्य परम्पराओं, कथा, वर्णनों, चरित्रों तथा आगामी घटनाओं से परिचित रहता है। वह उनको बार-बार सुनकर भी थकता नहीं है। पुनरावृत्तियाँ उसके आनन्द और रस को फीका नहीं बनातीं। वह प्रस्तुतीकरण की संपूर्णता में जिसमें परम्परा की रक्षा, कवि की मौलिकता, अभिनय, संगीत सब कुछ है, आनन्द प्राप्त करता है। प्रसारण की सम्पूर्ण प्रक्रिया में श्रोताओं की गहरी रुचि, उनकी स्वीकृति और प्रार्थना लोक महाकाव्य को जीवित रखती है। श्रोता भिन्न-भिन्न रूपों में लोक महाकाव्यों को प्रभावित भी करते हैं।

गायक के श्रोता अच्छे हैं, उसके मन के अनुकूल हैं तो वह अपने गायन में वृद्धि करता चलता है। रोचकता के लिए नये प्रसंग जोड़ता है और अपने प्रस्तुतीकरण में अधिक शक्ति और नाटकीयता लाने की कोशिश करता है। गायक परम्परा का वाहक, मौलिक आशुकवि और अभिनेता एवं संगीत-साधक सब कुछ का समन्वय होता है अतः एक महाकाव्य की एक बार की रिकार्डिंग उसके सम्पूर्ण आयामों को प्रकट करने के लिये पर्याप्त नहीं है। श्रोताओं के अनुकूल गायक का पाठ घटता-बढ़ता रहता है और श्रोता उसके स्वर और उसके अभिनय कला को भी शक्तिशाली तथा दुर्बल बनाने की क्षमता रखते हैं। यदि श्रोता के बिना गायक को सुना जाय या उसे गाने को विवश किया जाय तो उसका रंग फीका होता है और वह अपने पाठ के उस अंश को संक्षिप्त कर देता है जो कथा-संघटन का अविभाज्य अंग नहीं है। लोक महाकाव्य का गायक विभिन्न श्रोताओं के समक्ष कैसे भिन्न-भिन्न पाठ प्रस्तुत करता है और उसका प्रस्तुतीकरण और शैली कैसे भिन्न हो जाती है, इसका अध्ययन अधिक गहराई से करने की आवश्यकता है।

साहित्यिक महाकाव्य की एक विशिष्ट शैली होती है जो पाठकों से प्रत्यक्ष रूप से दूर रहकर सजती और संवरती है। लोक महाकाव्य का गायक श्रोताओं के बीच

बैठकर अपनी कला को मांजता है। साहित्यिक महाकाव्यों को लिखित परम्परा अधिक गहराई से प्रभावित करती है जबकि लोक महाकाव्य के श्रोता और रचयिता दोनों अलिखित परम्परा से अधिक प्रभावित होते हैं। यद्यपि यह सच है कि भारत जैसे देश में जहाँ लिखित और मौखिक परम्पराएँ दोनों सशक्त रही हैं दोनों एक दूसरे को किसी न किसी रूप में प्रभावित करती रही हैं, पर लोक महाकाव्य के रचयिता का आदर्श लिखित महाकाव्य का आदर्श नहीं है। उसकी प्रेरणा का संपूर्ण स्रोत मौखिक और अलिखित है।

लिखित साहित्य या शास्त्रीय साहित्य का दाय उसको मौखिक रूप में प्राप्त हो जाता है तो उसे वह ग्रहण कर लेता है। अतः लोक-साहित्य की परख की कसौटी भिन्न है। लिखित साहित्य और परम्पराओं की कसौटी से परिचित आलोचक यदि लोक का सम्पूर्ण परिपार्श्व नहीं जान पाये तो वह रस, छन्द, अलङ्कार की खोज में लोक महा-काव्य की टेक्नीक, शैली, उसकी संस्कृति और उसकी साहित्यिक परम्पराओं को अपनी आँखों से ओझल कर देगा। लोक महाकाव्य की रचना श्रोता के लिए होती है, पाठक के लिये नहीं, और यह श्रोता रचना में योगदान भी करता है, लोक महाकाव्य के संदर्भ में यह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है।

—∘o—

लोक महाकाव्य की रचनाप्रक्रिया तथा लोरिकी में सूत्रों की आवृत्तियाँ

(१)

लोक महाकाव्यों की रचना प्रक्रिया में एक विशेषता यह है कि गायक कुछ विशेष सूत्रों को विशेष छन्दों में संजो कर रखते हैं और कुछ विशेष प्रकार का वर्णन प्रस्तुत करने के लिए उनका बार-बार उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिये पांचू भगत के प्रस्तुत पाठ में वीरों की वेशभूषा का चित्रण इस प्रकार हुआ है, जिसे सूत्र की संज्ञा दी जा सकती है।

> पेन्हे लागल निरखी जब गलबन में
> एहबन में दोहरी मोर मीचें ले लगाय
> आल्हा गुंजकर जब पनही जे
> आरे बलको गोहबन ले लें रे चढ़ाय
> सात मे परद के बलको देवा ताया
> आरे बलको छतिया ले लें रे बन्हवाय
> बायें त बगल में जो ओढ़न बान्हे
> आरे दहीने धींच के बिजुलिया सांढ़   १/१३

कुछ शब्दों के अन्तर से इस वर्णन की आवृत्ति अनेक बार हुई है। जहाँ-जहाँ वीर लोरिक अपने अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होता है ये पंक्तियाँ अल्प परिवर्तन के साथ दुहराई जाती हैं। इसी आवृत्ति या सूत्र को गायक दूसरे छन्द में भी निबद्ध कर गाता है किन्तु उसके सूत्र के मूल भाव में बहुत ही कम अन्तर पड़ता है। एक उदाहरण यहाँ पर्याप्त होगा—

> आरे बलको पेन्हे लागल बबुआ निरखिया हो गलबन में
> आरे गोड़वा में दोहरी रे मड़या मीचलस रे लगाय
> आरे एहर सात मे परद क गउवा मे पीतरी कें
> आरे पट्टा छतिया ए बबुआ ले ले हउवे बन्ह रेवा……य
> आरे बलको बायें अलगिया ओढ़नया जो बान्हि रे ले ले
> आरे दाहिने धींचि के रे मड़या बिजुलिया न बलको रे बांढ़   १/४२

दो छन्दों में निबद्ध एक ही प्रकार का वर्णन हमारा ध्यान सहज ही आकृष्ट करता है। एक बार योद्धा की वेशभूषा का जहाँ कहीं भी लोरिकी में वर्णन आता है, लगभग इन्हीं शब्दों में आता है। पांचू भगत के पाठ में वीर लोरिक ही नहीं अजई तथा कई अन्य वीर भी इन्हीं शब्दों में अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित चित्रित किये गये हैं।

लोरिक के मित्र अजई की वेश-भूषा का चित्रण भी लगभग इसी सूत्र में हुआ है ।

एतनी बात जब लोरिक सुन लैं
धोबिया के हुकुमइ देलैं रे लगाय
पेन्हे लागल निरखी जब गलवन में
गोड़वन में दोहरी मोर खींचे लैं तमांच
आल्हा गूँजकर जब पनही धोबी बलको
हइहै एड़वन में ले लैं रे चढ़ाय
मोटका मुंगरवा मोर कांखी में दबावै
आगे-आगे खेदू चलले,
आरे पीछे धोबियैं रेवरले जाय १/३१

इस सूत्र में धोबी को मुंगदर लेकर जाते हुये चित्रित किया गया है । दोनों सूत्रों में समानता बहुत ही स्पष्ट है, यद्यपि लोरिक से सम्बन्धित सूत्र में 'सात पर्तों का तवा' 'ओड़न' तथा 'बिजली का खड्ग' भी है ।

लोरिक और अजई के सदृश उनके शत्रु दसवंत और मिमली भी गले में 'निरखी', पैर में 'दोहरी', और तमांचा लिए हुये चित्रित किये गये हैं । पाँव में जूते तथा पीतल के साथ पर्तों के तवे उनकी छाती पर भी बँधे हुये है

आरे दुनो भाई बंगले में साजे लगलं
आरे पेन्हैं लगे निरखी जब गलवन में
गोड़वन में दोहरी मोर खींचै लें तमांच
आल्हा गूँजकर जब पनही भो
आरे पट्टा एंड़वन ले लै रे चढ़ाय
सात परद के तवा पितरिन के
आरे छतिया पर ले लैं बन्हवाय
पंच-पंच बान पोठिया पर लादे
हथिया के पजरे गइलें रे निअराय १/३५

उपर्युक्त पंक्तियों में 'ओड़न' और 'खड्ग' का चित्रण नहीं है पर शेष सूत्र लगभग पूर्व सूत्रों के सदृश ही हैं । धोबी के पास मुगदर है तो मिमली और दसवंत के पास पाँच-पाँच बाण हैं । पर यह स्पष्ट है कि वीरों के चित्रण के लिए गायक के पास एक निश्चित सूत्र है जिसका यह आवश्यकतानुसार पुनः पुनः उपयोग करता है । पांचू भगत की लोरिकी में इस प्रकार के सूत्रों की विविधता और बहुलता है ।

साहित्यिक महाकाव्यों में इस प्रकार के सूत्रों की पुनरावृत्तियाँ नहीं पायी जातीं । कवि के पास समय होता है और पुनरावृत्तियों से बचने का प्रयास करता है । किन्तु

लोक महाकाव्य का श्रोता और उसका प्रभाव

लोक महाकाव्य तथा साहित्यिक महाकाव्य की रचना प्रक्रिया में एक बड़ा अन्तर यह है कि लोक महाकाव्य का गायक सदैव अपने श्रोताओं के लिए पाठ प्रस्तुत करता है जब कि साहित्यिक रचनाकार पाठकों के लिए रचना करता है। वह पाठक के सामने प्रत्यक्ष रूप से नहीं होता। लोक महाकाव्य के प्रस्तुतीकरण के समय श्रोता गायक के सामने होता है। श्रोता की रुचि और प्रकृति लोक महाकाव्य के गायक को प्रभावित करती रहती है। श्रोता गायक के समक्ष वर्तमान तो रहता ही है वह उसकी गायकी में स्वर मिलाकर सहयोग भी प्रदान करता है। श्रोताओं में से अनेक व्यक्ति और कभी-कभी सम्पूर्ण लोग, कड़ी के अन्त में गायक के साथ स्वर मिलाते हैं।

लोक महाकाव्य का श्रोता अपनी काव्य परम्पराओं, कथा, वर्णनों, चरित्रों तथा आगामी घटनाओं से परिचित रहता है। वह उनको बार-बार सुनकर भी थकता नहीं है। पुनरावृत्तियाँ उसके आनन्द और रस को फीका नहीं बनातीं। वह प्रस्तुतीकरण की संपूर्णता में जिसमें परम्परा की रक्षा, कवि की मौलिकता, अभिनय, संगीत सब कुछ है, आनन्द प्राप्त करता है। प्रसारण की सम्पूर्ण प्रक्रिया में श्रोताओं की गहरी रुचि, उनकी स्वीकृति और प्रशंसा लोक महाकाव्य को जीवित रखती है। श्रोता भिन्न-भिन्न रूपों में लोक महाकाव्यों को प्रभावित भी करते हैं।

गायक के श्रोता अच्छे हैं, उसके मन के अनुकूल हैं तो वह अपने गायन में वृद्धि करता चलता है। रोचकता के लिए नये प्रसंग जोड़ता है और अपने प्रस्तुतीकरण में अधिक शक्ति और नाटकीयता लाने की कोशिश करता है। गायक परम्परा का वाहक, मौलिक आशुकवि और अभिनेता एवं संगीत-साधक सब कुछ का समन्वय होता है अतः एक महाकाव्य की एक बार की रिकार्डिंग उसके सम्पूर्ण आयामों को प्रकट करने के लिये पर्याप्त नहीं है। श्रोताओं के अनुकूल गायक का पाठ घटता-बढ़ता रहता है और श्रोता उसके स्वर और उसके अभिनय कला को भी शक्तिशाली तथा दुर्बल बनाने की क्षमता रखते हैं। यदि श्रोता के बिना गायक को सुना जाय या उसे गाने को विवश किया जाय तो उसका रंग फीका होता है और वह अपने पाठ के उस अंश को संक्षिप्त कर देता है जो कथा-संघटन का अविभाज्य अंग नहीं है। लोक महाकाव्य का गायक विभिन्न श्रोताओं के समक्ष कैसे भिन्न-भिन्न पाठ प्रस्तुत करता है और उसका प्रस्तुतीकरण और शैली कैसे भिन्न हो जाती है, इसका अध्ययन अधिक गहराई से करने की आवश्यकता है।

साहित्यिक महाकाव्य की एक विशिष्ट शैली होती है जो पाठकों से प्रत्यक्ष रूप से दूर रहकर सजती और संवरती है। लोक महाकाव्य का गायक श्रोताओं के बीच

बैठकर अपनी कला को मांजता है। साहित्यिक महाकाव्यों को लिखित परम्परा अधिक गहराई से प्रभावित करती है जबकि लोक महाकाव्य के श्रोता और रचयिता दोनों अलिखित परम्परा से अधिक प्रभावित होते हैं। यद्यपि यह सच है कि भारत जैसे देश में जहाँ लिखित और मौखिक परम्पराएँ दोनों सशक्त रही हैं दोनों एक दूसरे को किसी न किसी रूप में प्रभावित करती रही हैं, पर लोक महाकाव्य के रचयिता का आदर्श लिखित महाकाव्य का आदर्श नहीं है। उसकी प्रेरणा का संपूर्ण स्रोत मौखिक और अलिखित है।

लिखित साहित्य या शास्त्रीय साहित्य का दाय उसको मौखिक रूप में प्राप्त हो जाता है तो उसे वह ग्रहण कर लेता है। अतः लोक-साहित्य की परख की कसौटी भिन्न है। लिखित साहित्य और परम्पराओं की कसौटी से परिचित आलोचक यदि लोक का सम्पूर्ण परिपार्श्व नहीं जान पाये तो वह रस, छन्द, अलङ्कार की खोज में लोक महा-काव्य की टेक्नीक, शैली, उसकी संस्कृति और उसकी साहित्यिक परम्पराओं को अपनी आँखों से ओझल कर देगा। लोक महाकाव्य की रचना श्रोता के लिए होती है, पाठक के लिये नहीं, और यह श्रोता रचना में योगदान भी करता है, लोक महाकाव्य के संदर्भ में यह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है।

लोक महाकाव्य की रचनाप्रक्रिया तथा लोरिकी में सूत्रों की आवृत्तियाँ

(१)

लोक महाकाव्यों की रचना प्रक्रिया में एक विशेषता यह है कि गायक कुछ विशेष सूत्रों को विशेष छन्दों में संजो कर रखते हैं और कुछ विशेष प्रकार का वर्णन प्रस्तुत करने के लिए उनका बार-बार उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिये पांचू भगत के प्रस्तुत पाठ में वीरों की वेशभूषा का चित्रण इस प्रकार हुआ है, जिसे सूत्र की संज्ञा दी जा सकती है।

> पेन्हे लागल निरखी जब गलबन में
> एहवन में दोहरी मोर मीर्चे ले तमाच
> आल्हा गूंजकर जब पनही जे
> आरे बलको गोड़वन ले लें रे चढ़ाय
> सात मे परद के बलको देखा ताथा
> आरे बलको छतिया ले लें रे बन्हवाय
> बायें त बगल में जो ओढ़न बान्हे
> आरे दहीने धीच के बिजुलिया मांड   १/१३

कुछ शब्दों के अन्तर से इस वर्णन की आवृत्ति अनेक बार हुई है। जहाँ-जहाँ वीर लोरिक अपने अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होता है ये पंक्तियाँ अल्प परिवर्तन के साथ दुहराई जाती हैं। इसी आवृत्ति या सूत्र को गायक दूसरे छन्द में भी निबद्ध कर गाता है किन्तु उसके सूत्र के मूल भाव में बहुत ही कम अन्तर पड़ता है। एक उदाहरण यहाँ पर्याप्त होगा—

> आरे बलको पेन्हे लागल बबुआ निरखिया हो गलबन में
> आरे गोड़वा में दोहरी रे भइया मीबलस रे तमाच
> आरे एहर सात मे परद क तउवा मे पीतरी के
> आरे पट्टा छतिया ए बबुआ ले ले हउवे बन्ह रेबा⋯⋯य
> आरे बलको बायें बलगिया ओढ़नवा जो बान्हि रे ले ले
> आरे दाहिने धीचि के रे भइया बिजुलिया न बलको रे बांध   १/४२

दो छन्दों में निबद्ध एक ही प्रकार का वर्णन हमारा ध्यान सहज ही आकृष्ट करता है। एक बार योद्धा की वेशभूषा का जहाँ कहीं भी लोरिकी में वर्णन आता है, लगभग इन्हीं शब्दों में आता है। पांचू भगत के पाठ में वीर लोरिक ही नहीं अजई तथा कई अन्य वीर भी इन्हीं शब्दों में अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित चित्रित किये गये हैं।

लोरिक के मित्र अजई की वेश-भूषा का चित्रण भी लगभग इसी सूत्र में हुआ है ।

एतनी बात जब लोरिक सुन लैं
धोबिया के हुकुमइ देलैं रे लगाय
पेन्हे लागल निरखी जब गलवन में
गोड़वन में दोहरी मोर खींचे लैं तमांच
आल्हा गूंजकर जब पनही धोबी बलको
हइहै एड़वन में ले लैं रे चढ़ाय
मोटका मुंगरवा मोर कांखी में दबावै
आगे-आगे खेदू चलले,
आरे पोछे धोबियै रेवरले जाय १/३१

इस सूत्र में धोबी को मुंगदर लेकर जाते हुये चित्रित किया गया है । दोनों सूत्रों में समानता बहुत ही स्पष्ट है, यद्यपि लोरिक से सम्बन्धित सूत्र में 'सात पर्तों का तवा' 'ओड़न' तथा 'बिजली का खड्ग' भी है ।

लोरिक और अजई के सदृश उनके शत्रु दसवंत और मिमली भी गले में 'निरखी', पैर में 'दोहरी', और तमांचा लिए हुये चित्रित किये गये हैं । पाँव में जूते तथा पीतल के साथ पर्तों के तवे उनकी छाती पर भी बँधे हुये है

आरे दुनो भाई बंगले में साजे लगलं
आरे पेन्हैं लगे निरखी जब गलवन में
गोड़वन में दोहरी मोर खींचै लें तमांच
आल्हा गूंजकर जब पनही भो
आरे पट्टा एंड़वन ले लै रे चढ़ाय
सात परद के तवा पितरिन के
आरे छतिया पर ले लैं बन्हवाय
पंच-पंच बान पीठिया पर लादै
हथिया के पजरे गइलैं रे निअराय १/३५

उपर्युक्त पंक्तियों में 'ओड़न' और 'खड्ग' का चित्रण नहीं है पर शेष सूत्र लगभग पूर्व सूत्रों के सदृश ही हैं । धोबी के पास मुगदर है तो मिमली और दसवंत के पास पाँच-पाँच बाण हैं । पर यह स्पष्ट है कि वीरों के चित्रण के लिए गायक के पास एक निश्चित सूत्र है जिसका यह आवश्यकतानुसार पुनः पुनः उपयोग करता है । पांचू भगत की लोरिकी में इस प्रकार के सूत्रों की विविधता और बहुलता है ।

साहित्यिक महाकाव्यों में इस प्रकार के सूत्रों की पुनरावृत्तियाँ नहीं पायी जातीं । कवि के पास समय होता है और पुनरावृत्तियों से बचने का प्रयास करता है । किन्तु

लोक महाकाव्य का गायक कथा को शक्तिशाली बनाने के लिए और अपने कथानक के सम्यक प्रस्तुतीकरण के लिए तथा अपने लिखित चित्रणों की प्रेषणीयता के लिए पुनः पुनः सूत्रों का माध्यम ग्रहण करता है।

एक अन्य सूत्र गायक लोरिक और मलसांवर का परिचय देने के लिए प्रयुक्त करता है। गउरा का धोबी मोहबन में बमरी को चेतावनी देता है कि मैं लोरिक तथा मलसांवर को तैयार कर यहाँ लाऊँगा और मंजिया का विवाह कराऊँगा तथा दमयंत को धाराशायी कराऊँगा। इस प्रसंग में धोबी ने निम्नलिखित सूत्र का उपयोग किया है—

अब हम जात बाड़ी गाँव गउरा में
थाना कनउज की जाला रे (बाजार)
एक बाघिन दू दू डंवरू जनमल
आरे दूनो जनमल दइब कर लाल
एक जने गइया रे बोहे में चरावल
एक जने भूमि के करें लें ठकुराय १/९

लोरिक भी अपना परिचय अनेक स्थलों पर लगभग इसी प्रकार देता है। एक स्थान पर वह कहता है—

बोलत हो अहीर मोर गढ़ गउरा के
आरे जेकर लोरिक रे बघेलवै नाव
गउरे मोर ओतनवा गउरे जो गोतन जे
आरे गउरा जनम भयल रे बुनियाद
टिकई मैं तुनवा के सिरिजल बाड़ी
आरे कोइलनि कोखिया ले लें रे अवतार
एक बाघिन दू दू डंवरू जनमल
आरे दूनो जनमल दइब कर लाल
एक जने गइया रे बोहे में चरवलें
आरे हम, गउरा भूमि के करे ले ठकुराय १/१०

"एक सिंहनी ने दो बच्चे उत्पन्न किये हैं और दोनों देव के लाल हैं। एक बोहा में गाय चराता है, और एक गउरा में ठकुराई करता है," यह बात किंचित् हेर-फेर के साथ सभी सूत्रों में आती है। अल्प परिवर्तन के साथ यह सूत्र अन्यत्र कई बार प्रयुक्त हुआ है। एक उदाहरण और नीचे दिया जा रहा है—

बोलत हो अहीर मोर गढ़ गउरा के
आरे बाबू मनध्या बात हमार
गउरइ ओतन गउरा गोतन

आरे गउरा जनम भयल रे बुनियाद
टिकई बुन कै सिरजल बाड़ी
आरे खोइलनि कोखिया ले लैं रे अवतार
एक बाघिनि दू दू डंवरू जनमल
आरे दुनो जनमल दइव कर लाल
एक जने गइया रे बोहे में चवलैं
हम गउरा घूमि के करैं ले ठकुराय १/१७

गायक ने लोरिक के जन्म-स्थान गउरा का अनेक बार उल्लेख किया है। गउरा में तिरपन बाजार हैं। वहाँ तेली, तमोली, कलवार, रघुवंशी, यदुवंशी ग्वाल सभी रहते हैं। वहाँ घर-घर में अखाड़े हैं, उसके पास में ही बोहा है जहाँ गायों के चरने के लिए चरागाह है। गउरा के वर्णन के लिए जिस सूत्र का उपयोग गायक ने किया है उसे यहाँ दिया जा रहा है।

बारः न पाल गढ़ गउरा सुनिलं आरे तिरपन कनउज के बसै ले बाजार
तेलिया बसल मोरि जाति तमोलीं आरे जतियन के भुजा रे कलवार
जतियन के रघुवंस बसे हैं जेकर निगी भुले ले तरवार
जतियन के जदुवंस बसे हैं अरे गुप्ती नंदन बसै ले गुवाल
घर-घर मोरि अखड़वा बन्हल ले गउरा में
आरे लेजिम घूमैनी भय सांझ बिहान
सात कोसे क बोहा रे गइयन कै
आरे चौउदह कोस में बिड़र के चरगाह
लछमी मय गोड़वन तोरि तोरि बहठं
आरे ब्रह्मा रथ हंकलईं सांझ बिहान १/११

अपने पिता बमरी का पत्र दसवंत को प्राप्त हुआ है, उसमें भी थोड़े परिवर्तन के साथ इस सूत्र का उपयोग किया गया है। दसवंत पिता बमरी का पत्र अपने भाई भिमली को पढ़ कर सुना रहे हैं—

दसवंत बाँचि के मोर घलैं ले सुनाय
बारह पाल गढ़ गउरा लिखलैं
आरे तिरपन कनउज क लिखे लैं बजार
तेलिये लिखल बाड़ें जाति तमोली
आरे जतिया भुजा रे कलवार
जतियन के रघुबंस लिखा है
आरे जेकर निगी रे भुले ले तलवार
जतियन कै जदुबंस लिखा है

आरे गुप्ती नंदन बसें ले गुवाल
घर घर मोरि अगरइया बनल रे गउरा में
आरे लेजिम पुरनी जो मांक बिहान
साता भी कोस के चोहा लिगान भइया
चौदह कोस के बिहुर में नगन बाढी गाय   २/३४

इन सूत्रों का उपयोग अन्यत्र भी हुआ है । अध्याय २-८४ में सोनागन अपने भानजे के पास पत्र लिखता है और उसमें भी इस सूत्र का प्रयोग करता है । छंद में परिवर्तन के साथ यही सूत्र अन्यत्र कई बार प्रयुक्त हुआ है

आरे उनके निकल के मोर पनिया पहर पनवा मोर हउवे धरहवने
आरे पहर आरह रे पनिया गउरा निकाल रे हउवे
आरे पहर नीलिया मोर पानी में समालिया ना नीमान रे हउवें
आरे तिरपन कनउज के रे बबुआ निकान बाड़ें ना रे बज ''
आरे संग में भुजनी हो गइया लिगान बाड़े कल रे बार—
आरे एहर जलिया के भइया जदुबंसी बलको नीमान रे हउवें
आरे गुपती नन्दन रे मोरि गइया बगान बाड़ें ना रे गुर''''

ध्यान देने योग्य है कि गायक ने अपने सूत्र में छंद परिवर्तन होने पर कुछ शब्द बढ़ा दिये हैं । चोहा और उसके विस्तृत चरागाह का प्रसंग कम भी कर दिया है किन्तु सूत्र का मूल भाव अक्षुण्ण है ।

महाकाव्य में एक अन्य सूत्र का भी प्रयोग हुआ है । बारात गउरा से मोहबल जाने की तैयारी कर रही है और उसके खाने के लिए सामान लद रहा है । गायक इन वस्तुओं के चित्रण के लिए सूत्र का उपयोग करता है ।

चाउर लादत जो हउवे बसमतिया
रहर मोर मंगउवे को दर दर दाल
घीउ बैनन के बाबू हो लदवाय दे
आरे तेरपन नियुनन के लदल अचार
आटा में दउदिया बाबू रे लदवाय दे
तेल मसाला धनिया आदि भी
सारी में बरतिया बलको रे सजवा दे   /१३

गायक इस सूत्र को थोड़े से परिवर्तन के साथ अनेक स्थलों पर दुहराता है ।

चाउर भुनल बलको रे बसमतिया
रहर मंगउवे को दर दर दाल
घीउ बैनन के रे कटि गइले
आरे तेपर नेबुलन के कटले आचार

आटा दउदिया रे कटि गइले
नीमक कटल बलको रे चटकार
तेल मसाला धनिया कटि गो
टिक लै मोती रे सगड़ के घाट /१४

इस प्रसंग में उल्लेखनीय है कि प्रथम सूत्र में बारात के जाने का वर्णन है अतः बासमती चावल, दाल, आचार सब कुछ लद रहा है तथा दूसरे में बारात निश्चित स्थान पर पहुँच चुकी है अत: 'लदल' के स्थान पर 'खुलल' हो गया है। 'लदि गौ' के स्थान पर 'कटि गौ' हो गया है। इस प्रकार के शब्दों या एक आध पंक्तियों का सूत्र में परिवर्तन हो जाना एक सामान्य बात है। छन्द को अनुकूल रखने के लिए कुछ शब्दों को जोड़ना और कुछ को घटा देना गायक की सूत्र शैली की विशेषता है।

लोरिकी के एक दूसरे सूत्र में लोरिक के खड्ग और ओड़न का चित्रण है जिसके प्रयोग से सर्वत्र लपट सी फैल जाती है। युद्ध के वर्णन में इस सूत्र का उपयोग बार-बार हुआ है।

दबलसि मुठिया जब ओड़ने के
पोरिसन लवर रे गइल बुमुवाय
झर झर झर झर झरेले चुनरी जं·······
टूटि टूटि गिरने में लागले अंगार
दाबे मुठिया जब बिजुली के
जाके बलको बादर में दरेरा खाय
सोरह से कंटाइन सुमिरं
आरे सोरह से मरी रे मसान
सोरह से दलवा छोहरी सुमिरं
आरे जवन रुवां रे रुवां असवार
ब्रह्माइन बाहवा क सुमिरं
आरे संवरू दादा के रे पूजमान
बायें बनसत्तिया के सुमिरं
आरे दहीने सुमिरै दुरगा माइ १/१३

इसी सूत्र को कुछ परिवर्तन के साथ गायक ने दूसरे छन्द में निबद्ध किया है। वह इस प्रकार है—

आरे बलको दबलसि रे बबुआ मुठियवा रे ओड़ने क····
आरे पोरिसन गइल बाड़े रे मइया लवरियो न बुमु रे वा···य
आरे जहवां झर झर झर झर चुनरियें बलको गिरै रे लागल,
आरे हहहे टूटि टूटि सगड़े गिरै लगल बलको अँगा···र

आरे बलको सोरह से बबुआ सुमिरत बाड़ें क···रे टाइन
आरे सोरह से सुमिरत रे मइया मरियउ ना रे मसान
आरे बायें बनवा सतिया सगड़वा पर सुमिरत रे हउवें
आरे दहीने सुमिरत रे मइया दुरगवा न बलको रे मा···इ   १/४१

उपर्युक्त दो सूत्रों में थोड़ा अन्तर है। पहले में थोड़ा विस्तार है जबकि दूसरे में कुछ संक्षिप्तता है। पर भाव की दृष्टि से दोनों में समानता है। इस सूत्र का प्रयोग गायक ने युद्ध के प्रसंगों में लोरिकी में अनेक बार किया है।

सूत्रों की संख्या लोरिकी में बहुत है। वास्तविकता तो यह है कि लोक महा-काव्य की यह एक मुख्य शैली है। लोक महाकाव्यों के सभी गायक इस सूत्र का उप-योग करते है पर यह कहना कठिन है कि बनारस के प्रस्तुत पाठ के गायक पांचू भगत ने यह शैली कितनी परम्परा से ली है और कितनी उनकी अपनी रचना है। पांचू भगत के गुरु का पाठ मेरे पास नहीं है जिससे यह अनुमान लग सके कि गुरु परम्परा से उन्होंने किन-किन सूत्रों को लिया है, और अपनी रचना उनमें कितनी है। हर गायक यह दावा करता है कि वह हू-बहू अपने गुरु का अनुसरण कर रहा है पर तथ्य यह है कि हर गायक गुरु से सीखी हुई कला में अपनी विशेषताएँ जोड़ता है। एक ही गायक के पाठ को यदि कई बार टेपबद्ध और लिपिबद्ध किया जाय तो उसके पाठ में पर्याप्त अन्तर हो जाता है। लोक महाकाव्य के गायक को सदैव श्रोताओं का सामना करना पड़ता है और उसके पास गाते समय समय की कमी होती है, अतः ये सूत्र उसके लिये सहायक हैं। अपने विशेष कथनों को वह सूत्र शैली में और एक विशिष्ट छन्द शैली में संजोकर रखता है और थोड़े परिवर्तन के साथ उसका अनेक बार उपयोग करता है। लोक महाकाव्य का श्रोता इस प्रकार की पुनरावृत्तियों को कोई दोष नहीं मानता। वह इसको एक विशेषता के रूप में मानता है। इन सूत्रों की शब्दावली प्रायः असाधारण और कुछ जटिल होती है। गायक के इन सूत्रों में प्राचीन शब्द और परम्पराएँ गुंफित रहती हैं।

प्रस्तुत पाठ में नायक के गाँव का चित्रण, वीरों की वेशभूषा, युद्ध, इन सबमें सूत्र शैली विशेष रूप से अपनाई गई है। यह बात भी स्मरणीय है कि एक अध्याय में एक सूत्र का प्रयोग अधिक है तो दूसरे में दूसरे का। साहित्यिक महाकाव्यों में जहाँ एक बार किसी स्थान का वर्णन कर देना पर्याप्त है वहाँ लोक महाकाव्य में उसी को गायक अनेक बार दुहराता है। उदाहरण के लिये लोरिकी की जन्म-भूमि का चित्रण अनेक बार लगभग एक ही प्रकार के सूत्रों में पांचू भगत के पाठ में होता है। छन्द परि-वर्तन या प्रसंगान्तर से कुछ शब्दों में अधिकता या कमी गायक अवश्य कर देता है। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि प्रत्येक गायक अपने पाठ में अलग-अलग सूत्रों का उपयोग करता है। उदाहरण के लिये लोरिकी के बलिया के गायक शिवनाथ चौधरी

के पाठ में नितान्त भिन्न सूत्रों का उपयोग हुआ है। स्पष्टीकरण के लिये कुछ सूत्र नीचे दिये जाते हैं जिन्हें शिवनाथ चौधरी बार-बार गाते हैं।

हां पंचे हिन्दू करि गङ्गा तुरुक करि गोर
मलि कामिनि संग छोड़ तू मोर
अब देवी जेवना दिन करि पूजलियं,
तेवन घरी गइलि नियराय
अब देवी कहि द ऽ कीरति मरदन के
कइसे ई मारथ भइल तईयार

अथवा

आजु पंचे हिन्दू करि गङ्गा तुरुक करि गोर
मलि कामिनि सङ्ग छोड़े तू अ मोरि
अब देवी कहाँ गीति बानी गावत
कहाँ आज दीले परल बीस मोर
जेवना दिनकर पूजलिय,
अब देवी घरी गइलि नियराय
कहि द कीरति मरदनि के।

लोरिक के गाँव की चौहदी गायक ने बलिया जिले में बतायी है और उसके वर्णन के लिए जिस सूत्र का उपयोग किया है, वह इस प्रकार है—

लिखतियाड़ी जे उत्तर मय बहल देवहा
दखिन गंगा दरे ललकार
पतले भील सरयू के जाके मिलल बलिया मोहान
बलिया मटपुर बसे परगना बिहियापुर डंडार
उचे चउर बरम्हाइन नीचे गजन गउर गढ़पाल
छोटे टोला गढ़ गउरा गली तीर पर लागे बजारि
उत्तर टोल बम्हनइया दक्खिन भारि बसे कोइरान
पच्छो ओर जोलहन के, मङ्गल बसल बाड़े पैठान
पुरबे टोला घर अहिरन के लेके गजन गउर गढ़पाल
सोरह स घर जदुबंसी भारि के बसल बाड़ी अहिरान
पंचे लिखतियाड़ी जे ओइजा खेती-बारी ना हो ले
नाहीं झूमत चले कुहारि
घर घर सनल अखाड़ा दुवरा परल दोहरिये काल

अल्प परिवर्तन के साथ गायक ने इस सूत्र को अनेक बार प्रयुक्त किया है। वीर लोरिक के वेश का चित्रण शिवनाथ चौधरी के पाठ में इस प्रकार है—

अब लोरिक जब उलटा काछ लागल चढ़ावै
उपर माल बरनि के गांठ
बान्हे पेटी अजगर के जेहमें गोला जुमुस ना काइ
उपर बान्हे पाग गुलाबी जिला अलंग फहराइ
अलीगंज के जूता पाठा मोजा ले ला लगाइ
घोंचे पाग गुलावी जेहि पर जिरा अलंग फहराइ

शिवनाथ चौधरी के पाठ में अन्य भी सूत्र हैं जो पांचू भगत के पाठ में नहीं प्राप्त होते। पर इसमें सन्देह नहीं कि शिवनाथ चौधरी के पाठ में भी सूत्रों का उपयोग प्रचुर संख्या में हुआ है। इलाहाबाद के गायक राम अवतार बिरहिया के पाठ में भी सूत्र हैं और वे पर्याप्त भिन्न हैं। गउरा का चित्रण यहाँ इस प्रकार है—

बारह न पाली बा गाढ़ि गउरा
जहाँ झारि के बसल बा अहिरान
आजहि बारहि दरबा के भैवाबो
अहिरी डटी वा गउरवो गुजरात

इलाहाबाद के इस पाठ में सेना का चित्रण इस प्रकार हुआ है—

बीगुल बाजन लागे दुआरे, सेना होने लगी तइयार
घोड़े वाले घोड़े चढ़ि गये, हाथी वाले हाथी असवार
पयदलवाले पैदल चलि गये पंचा बन्ही ढाल तलवार
घोबी अजइया गउरावाला आँखा गउरा के सरदार
साठ मने क मुंगरी ओकर ऊ कथरी पर लीहे दवाय
धोती पीतमरी लोरिक पहिरै पीछे देई माल कै गांठ
राजा बना फेर गउरावाला तब अम्मर के लहुरवा भाइ

इलाहाबाद के इस पाठ में सूत्रों की पुनरावृत्ति उसी प्रकार है जिस प्रकार पांचू भगत या शिवनाथ चौधरी के पाठ में है पर जिन सूत्रों का उपयोग गायक ने किया है, वे भिन्न हैं। अभी तक प्रस्तुत लेखक को बलिया जिले के रामसकल, मिर्जापुर जिले के ददई मल्लाह तथा पटना जिले के सुक्खू दास यादव तथा कतिपय अन्य पाठों को विस्तार से देखने का अवसर नहीं मिला है पर उनके विहगांवलोकन से यह बात स्पष्ट है कि उनमें भी सूत्र शैली का उपयोग हुआ है। प्रस्तुत पाठों में मूल कथा को छोड़कर अन्य कोई समानता नहीं दिखाई पड़ती। इन सब पाठों में सूत्रों का प्रयोग भी भिन्न-भिन्न रूपों में हुआ है, पर यह बात निस्संदेह कही जा सकती है कि लोक महा-काव्य की रचना-प्रक्रिया में इन सूत्रों का बड़ा महत्व है। साहित्यिक परम्परा के काव्यों में जो बहुत दिनों तक मौखिक परम्परा में सुरक्षित रहे हैं और बाद में लिपिबद्ध किये गये हैं, उनमें भी सूत्रों और पुनरावृत्तियों के अवशेष इसीलिए वर्तमान है।

(२)

पंक्तियों की पुनरावृत्तियाँ

सूत्रों की आवृत्तियों के अतिरिक्त पांचू भगत के पाठ में कुछ पंक्तियों की पुनरावृत्तियाँ भी पायी जाती हैं। इन पुनरावृत्तियों में गायक कुछ पंक्तियों को दुहराता है। प्रायः इस पुनरावृत्ति में पंक्तियाँ समान हैं पर कभी-कभी उनमें किंचित भिन्नता भी दिखाई पड़ती है। ऐसी कुछ पंक्तियों के युग्म नीचे दिये जा रहे हैं—

(१) ले जाके मय राजा बमरी के बिजवा के बइठा के
(२) ले जाके मय राजा बमरी के सगरे पर बिजवा के बइठाय के (६)

—

(१) मति जा कुसुमापुर की बाजार
(२) मति जा मइया कुसुमापुर की बाजार

—

(१) आरे सतिया मोर गइल रे घबड़ाय
(२) तबले सतिया मोर गइल रे घबड़ाय (२३)

—

(१) हनि के एड़वा मोर फटके गिरै रे महराय
(२) हनि के मै एड़वा फटकवा में मरले आरे बलको फटके गिरै ले महराय

—

(१) सबके हथवा में रे मइया कंगनवा मोर बान्हल रे हउवे
(२) आरे सबके हथवा में बीरना कंगनवा मोर बान्हल रे हउवे (३६)

—

(१) आरे सकती बान बनावै लागें
(२) आरे सकती बान बनावै लागें (५०)

—

(१) लेके डंड़िया मैं जिरउल पर टीकें
(२) लेके डंड़िया जो जिरउल पर टीकं (८०)

—

(१) हम त जानी धुवें में गयल उघियाय
(२) हम त जानी धुवें में गयल उघिया (६५)

—

(१) आरे जहाँ झूरै रे बदर घहराय
(२) आरे जहाँ झूरै रे बदर घहराय (११४)

—

(१) तीन तीन जोजन गइलें रे मेंड़राय

(२) तीन तीन जोजन गइलें रे मेंडराय (११८)

---

(१) दुरुगा खपड़वा ले लै मारे

(२) आरे बलको दूरुगा खपड़वा ले लै मारे ।

उपर्युक्त उदारणों से स्पष्ट हो जाता है कि इन पुनरावृत्तियों में प्रायः पूर्व-वर्ती और परवर्ती पंक्ति में समानता है अर्थात् जैसी ऊपर की पंक्ति है वैसी ही नीचे की पंक्ति है। कुछ पुनरावृत्तियों में भिन्नता भी है। इस प्रकार की पुनरुक्तियों या पुनरावृत्तियों का उपयोग गायक अपने वर्णन पर विशेष जोर देने के लिए करता है। इनसे गायक को क्रम ठीक करने में भी सहायता मिलती है। गायक के पास इतना समय नहीं होता कि क्रम भंग होने पर या आगामी घटना का क्रम भूल जाने पर गायक रोक दे। वह अपनी पंक्ति को दुहरा कर अपने मस्तिष्क को कुछ विराम दे लेता है। और फिर आगे की घटना या वर्णन की शृंखला को जोड़ लेता है। सूत्रों की आवृत्तियों के अतिरिक्त ये दूसरे प्रकार की पुनरावृत्तियाँ हैं जो लोक महाकाव्य की एक अन्य विशेषता है। साहित्यिक महाकाव्यों में जहाँ पुनरावृत्तियों को दोष समझा जाता है वहाँ लोक परम्परा के महाकाव्यों में इनके बिना गायक अपनी स्मृति को सदैव श्रोताओं की मण्डली में कारगर नहीं रख सकता। पृथ्वीराज रासो, कबीर ग्रन्थावली, सूरसागर आदि साहित्यिक काव्यों में जो पुनरावृत्तियाँ पाई जाती हैं उनका मूल कारण यही है कि ये काव्य बहुत दिनों तक लोक परम्परा में सुरक्षित रहे और उनको बाद में लिपिबद्ध किया गया। अतः उनमें मौखिक परम्परा की प्रवृत्तियाँ और चिन्ह स्वाभाविक रूप से वर्तमान हैं।

लोक महाकाव्य लोरिकी की छन्द-योजना

लोक महाकाव्य लोरिकी की छन्द-योजना विभिन्न गायकों के पाठों में भिन्न-भिन्न है। हर गायक अपना पाठ अलग-अलग ढंग से गाता है और उसकी छन्द-शैली अपनी निजी है। मेरे संग्रह के पटना, बलिया, गाजीपुर, बनारस, मिर्जापुर तथा बलरामपुर (गोंडा) आदि के पाठों में किसी एक पाठ की छन्द-योजना दूसरे से मेल नहीं खाती। एक दूसरी बात यह भी ध्यान देने की है कि शास्त्रीय महाकाव्यों की भाँति इन काव्यों का छन्द-विधान बहुत संयमित नहीं है। मात्राओं या अक्षरों का एक सामान्य क्रम होते हुए भी उनमें संगठनात्मक क्रम निश्चित या स्थिर नहीं है। लोक महाकाव्य का गायक अपने श्रोताओं से शासित होता है। उसको अपना काव्य जनता के सामने प्रस्तुत करना पड़ता है, अतः उसके समक्ष समय की एक सीमा होती है। गायन प्रस्तुत करते समय वह अपना क्रम भंग नहीं कर सकता, न बीच में अपने को रोक कर गायन के समय चिंतन या विश्राम कर सकता है। अतः विस्मृति के क्षणों में वह अपना स्वर, अलाप, आरोह, अवरोह आवश्यकतानुसार कम या अधिक कर लेता है और उसमें यह आवश्यक नहीं कि मात्रा की स्थिरता या एकरूपता बनी रहे, फिर भी यह कहना उचित नहीं होगा कि गायक के पास एक प्रायः निश्चित सी छन्द-शैली नहीं है। बनारस के पाठ में निम्नलिखित प्रकार से छन्द विधान किये गये हैं। एक उदाहरण इस प्रकार का है—

आरे सतिया आपनइ मोर सतवा
आ बलको मोर सुमिरत रे हउवै
एड़वा मरलसि धरती में तिनति
जोजनवा गइल हउवैं मेंड़रे राय

उपर्युक्त पंक्तियों में अक्षरों की संख्या प्रत्येक चरण में लगभग २८ है तथा मात्रायें लगभग ३८ हैं। दूसरा छन्द-विधान इस प्रकार है

आरे बलको उड़ल उड़ल सतिया इनरासने में पहुँचि रे गइ
आरे एहर लागल बाड़इ ए यारो कचहरी रे बरम्हा क
आरे जाइके अगवइं मोर सतिया मइल हउवे तइरे ये
आरे कइसे लिखि देहल ए बरम्हा बियहउ ना रे हमार

उपर्युक्त पंक्तियों में अक्षरों की संख्या प्रत्येक चरण में लगभग २४ तथा मात्राओं की संख्या लगभग ३४ है। एक अन्य क्रम इस प्रकार है

आरे तब तइ धीरे धीरे बरम्हा सिंहासने में समुरेभावं,
आरे तोहरे दसत रे सतिया सोहबल में भयवा (मोर) जनम रे गइल

आरे जेकरी अम्मर रे (मोरि) मइया दसवंता पड़ल हउवनि रे नांव
आरे तवन बमरी छतिसइ जाति के करिनवा बलको रोकि रे देलं

उपर्युक्त छन्द में अक्षरों की संख्या लगभग २८ तथा मात्राओं की संख्या ३८ है। एक अन्य क्रम इस प्रकार है—

तमू उलटि पलटि मोरि गइलं
एहर बरतिहा पानी से ऊगे लगलं—सात
बहि के सगरे में चले लगलं
लदवा धइ धइ तमू के खूंटन में बन्हलं
आरे भुरवा के देख मुरदन क
लिया के तमू खड़ा कइके तमुवा में रखलं

यहाँ अक्षरों की संख्या लगभग ३० तथा मात्राएँ ४१ हैं।

इस संक्षिप्त विवेचन से यह निष्कर्ष सरलता से निकाला जा सकता है कि लोरिकी के बनारस के पाठ में छन्दों का एक क्रम अवश्य है, यद्यपि अक्षरों या मात्राओं में कुछ न्यूनता और अधिकता कभी-कभी अवश्य देखी जा सकती है। गायक को श्रोता और समय की सीमाओं में बँधकर अपना महाकाव्य प्रस्तुत करना पड़ता है, अतः इन छन्दों में शास्त्रीय छन्दों जैसा कठोर अनुशासन नहीं दिखाई पड़ता।

पांचू भगत

पुरानापुर, बनारस
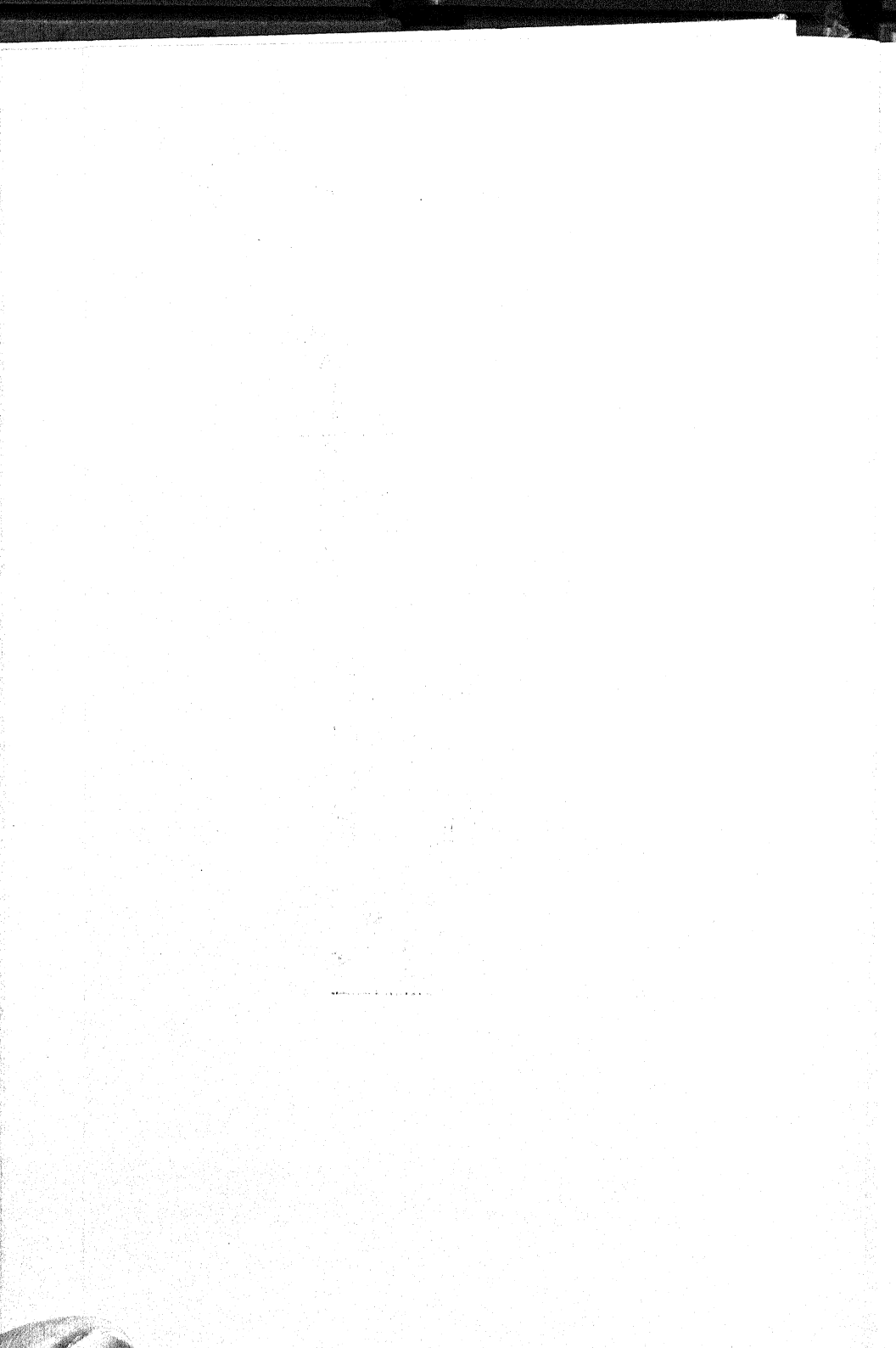
लोरिकी

पांचू भगत

परानापुर, बनारस

रिकार्डिङ्ग तिथि ७ मार्च १६६६—२० मार्च १६६६

सुमिरन

हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ आँ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ आँ ऽ ऽ
आरे राम राम हो ऽ-ऽ राम, राम राम गुन गवले
जइसे दूध पियले बल बढ़ैले राम के जपले में बढ़ैले गियान
बढ़ैले बेटी मोरि सजन घरे बढ़े तरकिया का ऽ-ऽ-ऽ ल
राम नाम जिन छोड़ा यारो अउरू सांझे अवरू बिहान,
राम नाम से भुलि जाब्या अवघट मटियै में लगी रे तोहार,
राम नाम जनि छोड़ा
राम नाम को जपै से कटि जाइ पाप पहा ऽ ऽ ऽ ड़
संघी मोर छुटी रे समउरिया आरे घर पर छुटी रे कुटुम परिवार
घरुनी से नाता टुटि तोरि जइहैं आरे मोर छुटी रे मुलुक संसार,
राम नाम जिन भूला ज्वानों ऽ ऽ-ऽ ऽ ऽ
राम के संगे में गयल बा रमायन, अरजुन के संगवे में पांचों बान
सहदेव के संग में पोथी पतरा के पंडित बचिहैं बेद पुरान
भिम्हल संगे में गयल बा मनसेधुई, रावण के संगे में गयलबा अभिमान
अन में नोना गोहूँ भइलै आरे धन में भइलैं कपिलवा गाइ,
कपड़न में नोना कमरा होइ गइलैं आरे कब्बों धोबी रे घरन नहि जाय,
लकड़िन में नोना मोला आगि रे चन्नन आरे पत्तल में मगहिया ढोली
मोरे पान
तिरियन में नोना सीता जेके बलको पूरुस रे मोर मइया जो मिलत हउवे
मोरे भगरे ऽ ऽ ऽ बान । [१]
हाँ-ऽ-ऽ-ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ-ऽ ऽ-ऽ-ऽ हाँ
भुगुबेर गावेलै भगवती जुझु बेर गावेलै दुरुगा माइ
सुरवै में गावेलं सूरसती क, अरे जवन लागिले गयन कर माइ
जइसे माइ गर भँवराके देहल्यु आरे गोडंजे बाँध कइन के पोर
ओइसे सुर माई गयने के देत्यु आरे नित गाईं रे किरतिया तोहार ।

अध्याय १

गढ़ गउरा का वर्णन

बारह् न पाल गढ़ गउरा सुनिलै, आरे तिरपन कनउज के बसैले बजार
तेलिया बसल मोरि जाति तमोली आरे जतियन के भुजा रे कलवार
जतियन कै रघुबंस बसे हैं आरे जेकर निंगो झुलैले तरवार
जतियन कै जदुबंस बसे हैं आरे गुप्ती नन्दन बसैले गुवाल
घर घर मोरि अखड़वा बन्हल ले गउरा में ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे लेजिम घुमैनो मय साँझ बिहान
सात कोसे क बोहा रे गइयन कै
आरे चौंदह कोस में बिडर के चरगाह
लछमी-मय गोड़वन तोरि तोरि बइठं
आरे ब्रह्मा रथ हकलइँ साँझ बिहान ऽ-ऽ-ऽ
एहर ब्रह्मा रथ हकलइँ साँझ बिहान (पुनरावृत्ति)
बाजल बाड़े तेगवा वीर लोरिक कै
आरे मंडप तीनो रे भुवन सँवसार
सोरह सै कंटाइन बोहवाँ, आरे सोरह सै मरी रे म ऽ ऽ ऽ सान
सोरह सै बल छोड़ी गाइन में
आरे जवन रोंवा रे रोंवा असवार,
ब्रह्माइन बोहवा कै बाड़ी
संवरू दादा क भइल पुजमान
आरे गोरय डीह गाइन कै उछरै अट्ठारह हाथ,
बायें बइठल बाड़ें बनसतिया मोर
आरे दहिने बइठे ले दुरुगा माइ
लछिमी मय गोड़वा तोरि तोरि बइठल
ब्रह्मा रथ हाँकत बाड़े रे भोरि मइया
अब सँझवाँ ऊ नारे ऽ-ऽ-ऽ बि ऽ-ऽ-ऽ-ऽ-ऽ हान [२]

सोहवल, मल सांवर का विवाह

हाँ ऽ-ऽ हाँ-ऽ-ऽ हाँ ऽ-ऽ हाँ ऽ-ऽ हाँ
सुना हाल अगवाँ के ऽ ऽ ऽ
एहर धोबी गढ़ गउरा कै
जेकर परल ले अजइया नांव
चढ़ि गयल गउवाँ गढ़ सोहवल में ऽ-ऽ

सात बेटवा राजा बमरी के जनमल
सातो जनमल ले दइब कर लाल
कवनो सिंघी सेर बघवा मारैं
कवनो नद्दी देवड़ा कूद के धरैं लँ सोइँस धरियार
दसवंत तपल न बाँड़ँ रे दसमासा,
भिम्हली मोरि तपल ले तेरहवाँ माँ ऽ ऽ ऽ स
अम्मर होय के जनमल मल दसवन्त ह
बमरी के एइसनि एइसनि बेटवा ले लँ रे अवतार

सोहवल के राजा बमरी का प्रण, मैं ससुर न हूँगा, मेरे लड़के साले न होंगे

राजा बमरी सोहवल परन ठनत ह
नाहिं देसे में हम ससुरा कहावैं
नाहिं मोरि लरिका कहइहैं सार
दुसरे देसे के लड़की बलको लेइ अइबै
नाहिं बियहब मुलुक सवँसार
ठानल बा परनियाँ राजा रे बमरी कै
आरे दसवंत से घलें लं बतियाय
सुनिल्या बेटवा तूं मल दसवंत जं
आरे तनि बतिया मानेल्या हमार
परन मोर टुटि जाय गाँव सुहवल में
आरे देसे लटक जाइ मोछिया हमार
अबहीं से बेटवा तूं बतिया माना
लड़िजा मोती रे सगर के घाट
लड़िजा मोती रे सगर के घाट (पुनरावृत्ति)
बान्हलि बा परनिया गढ़ सोहवल में
बान्हलिं बा परनिया गढ़ सोहवल में (पुनरावृत्ति)
आरे ऽ ऽ ऽ ऽ तब बमरी जरि के भसम होइ जाय
दसवंत बेटवा जनम तूं लेल्या
आरे, सोहवल में लेल्या हो अवतार
लड़ि जा बेटवा जब सगड़े पर
जीतल बादी होइ रे तोहार
एतनी बात सोहवल में सूनै
बमरी के गइया घलैं लं चराय
एहर माइ सतवाँ महिन्ना बीति गइलैं

अध्याय १

गढ़ गउरा का वर्णन

बारह् न पाल गढ़ गउरा सुनिलै, आरे तिरपन कनउज के बसैले बजार
तेलिया बसल मोरि जाति तमोली आरे जतियन के भुजा रे कलवार
जतियन कै रघुबंस बसे हैं आरे जेकर निंगी झुलैले तरवार
जतियन कै जदुबंस बसे हैं आरे गुप्ती नन्दन बसैले गुवाल
घर घर मोरि अखड़वा बन्हल ले गउरा में ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे लेजिम घुमैनो मय साँझ बिहान
सात कोसे क बोहा रे गइयन कै
आरे चौंदह कोस में बिडर के चरगाह
लछमी-मय गोड़वन तोरि तोरि बइठं
आरे ब्रह्मा रथ हकलइँ साँझ बिहान ऽ-ऽ-ऽ
एहर ब्रह्मा रथ हकलइँ साँझ बिहान (पुनरावृत्ति)
बाजल बाड़े तेगवा वीर लोरिक कै
आरे मंडप तीनो रे भुवन सँवसार
सोरह सै कंटाइन बोहवाँ, आरे सोरह सै मरी रे म ऽ ऽ ऽ सान
सोरह सै बल छोड़ी गाइन में
आरे जवन रोंवा रे रोंवा असवार,
ब्रह्माइन बोहवा कै बाड़ी
संवरू दादा क भइल पुजमान
आरे गोरय डीह गाइन कै उछरै अट्ठारह हाथ,
बायें बइठल बाड़ें बनसतिया मोर
आरे दहिने बइठे ले दुरुगा माइ
लछिमी मय गोड़वा तोरि तोरि बइठल
ब्रह्मा रथ हाँकत बाड़ें रे मोरि मइया
अब सँझवाँ ऊ नारे ऽ-ऽ-ऽ बि ऽ-ऽ-ऽ-ऽ-ऽ हान [२]

सोहवल, मल सांवर का विवाह

हाँ ऽ-ऽ हाँ-ऽ-ऽ हाँ ऽ-ऽ हाँ ऽ-ऽ हाँ
सुना हाल अगवाँ के ऽ ऽ ऽ
एहर धोबी गढ़ गउरा कै
जेकर परल ले अजइया नांव
चढ़ि गयल गउवाँ गढ़ सोहवल में ऽ-ऽ

सात बेटवा राजा बमरी के जनमल
सातो जनमल ले दइब कर लाल
कवनो सिंघी सेर बघवा मारैं
कवनो नट्टी देवड़ा कूद के धरैं लैं सोइँस घरियार
दसवंत तपल न बाँड़ै रे दसमासा,
भिम्हली मोरि तपल ले तेरहवाँ माँ ऽ ऽ ऽ स
अम्मर होय के जनमल मल दसवन्त ह
बमरी के एइसनि एइसनि बेटवा ले लैं रे अवतार

सोहवल के राजा बमरी का प्रण, मैं ससुर न हूँगा, मेरे लड़के साले न होंगे

राजा बमरी सोहवल परन ठनत ह
नाहिं देसे में हम ससुरा कहाबैं
नाहिं मोरि लरिका कहइहैं सार
दुसरे देसे के लड़की बलको लेइ अइबै
नाहिं बियहब मुलुक सवँसार
ठानल बा परनियाँ राजा रे बमरी कै
आरे दसवंत से घलें लं बतियाय
सुनिल्या बेटवा तूं मल दसवंत जं
आरे तनि बतिया मानेल्या हमार
परन मोर टुटि जाय गाँव सुहवल में
आरे देसे लटक जाइ मोछिया हमार
अबही से बेटवा तूं बतिया माना
लड़िजा मोती रे सगर के घाट
लड़िजा मोती रे सगर के घाट (पुनरावृत्ति)
बान्हलि बा परनिया गढ़ सोहवल में
बान्हलिं बा परनिया गढ़ सोहवल में (पुनरावृत्ति)
आरे ऽ ऽ ऽ ऽ तब बमरी जरि के भसम होइ जाय
दसवंत बेटवा जनम तूं लेल्या
आरे, सोहवल में लेल्या हो अवतार
लड़ि जा बेटवा जब सगड़े पर
जीतल बादी होइ रे तोहार
एतनी बात सोहवल में सूनै
बमरी के गइया घलैं लं चराय
एहर माइ सतवाँ महिन्ना बीति गइलैं

खेदू धोबी कै लड़िकी बिजवा
सतिया क चीर धुवत बल्को बाय

धोबी अजई सोहवल में

ले जाके घटवा में चीर धुवत ह
धोबी एहर गइया ले ले बलकउ जाय
घटवा में जाइके मय पनियाँ पियावै
आरे बलको पानी दे लैं पियाय
बिजवा मय चिरिया धुवत सतिया कै
आरे धोबी सोझै रे नजर परि जा ऽ ऽ ऽ य
लगा के ओसारी धोबिया ताकै
आरे इ कवने गली में बसल बाय
ई धोबिन कहवाँ कै हउवैं
आरे बलको संका रे भइल बड़िभार
सारा धोबिया मोर गइया हंक लैं
आरे बलको चिरियै पै दे लैं रे चढ़ाय
तब बिजवा बोलत हउवैं धोबी सें ऽ ऽ
आरे मनसेधु मनब्या बात हमार, हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ—आँ - -
अखियाँ फुटल बा तोहार
जब कहलसि मनसेधू अखियाँ फूटल बा तोहार (पुनरावृत्ति)
लाखों क चीर खराब करत हउवा
चला चला आजु दादा बमरी से कहिके
दसवन्त भइया से मरवा देब जिनिगिया तो ऽ ऽ ऽ हार
उहवाँ से गइया बलको डहरावैं
आरे लेके दुसरे अलंगे चलि जाय
बिजवा मय सझवां के गट्ठर बन्हलस
तिल सतिया कै किला रे गइल नियर। ऽ ऽ य
लें ले बा गट्ठर जो बुरुजवा पर गइं
आरे गट्ठर अगवइं दे लै रे पँवार
मउन होके बिजवा खड़ी रे बंगले में
आरे मउन होके बिजवा खड़ी रे बगले में (पुनरावृत्ति)
काहे मन बिजवा जो भयल ले उदास
आजु त खइले ना ऽ ऽ ऽ बलको बाड़ियु···
कवनो गारी तोके देहले बाड़ीं

काहे बदे मनवाँ भयल रे उदास
एकर हमके बिजवा तुं भेदु बता द
आरे तब बिजवा रुवत बलको बाय
आजु क बतिया कवन कहों बहिन
आरे बात कहै रे जोग कय ना ऽ ऽ ऽ
अइसन अनभो सोहवल कब्बो ना अइनी ऽ ऽ ऽ
आरे तवन अइसन मनसेधू आयल बाय
जवन धोबी तोरा मोरा गइया चरावत
घटवा में पनियाँ दे ले रै पियाय
सारी गइया चोरिया पर मोर चढ़ाई दे
सारी गइया मोर चोरि पर चढ़ा दे (पुनरावृत्ति)
अउरो चिकारी बोलत बलको बाय
अपने चरवाह के मने कय द सतिया
नाहिं सोहवल मरवा देबा जिनगी मो थाना ऽ ऽ सोहवल की रे बजार
एतनी बात जब सतिया सुनला—
आरे बिजा मनब्यु बात हमा ऽ ऽ र
एही से बियहवा तोर सोहवल होते
खुल जात रे बिजवा अब भगिया ऽ ऽ ना ऽ रे ऽ ऽ तोहा ऽ ऽ र [३]

सतिया का खेदू से कहना कि मेरे नौकर अजई से बिजवा का विवाह कर दो

हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ राम राम ऽ ऽ राम ऽ ऽ
एतनी बात जब सतिया कहल ऽ ऽ ऽ
तब धोबी खेदू से कहै लगल कि ए दाऽदा
अपने लड़किया के बिजवा क एह मोरे नौकरवा से बिया ऽ ऽ कय देता
चोरियै चोरी ऽ ऽ ऽ ऽ बिया···तूं···कय···दा
चोरियै चोरीं देद्या कन्या दा ऽ ऽ न
कन्या दान तूं दे दा सोहवल में, बनिजाई मुखुतिया तोहा·· र
तब न खेदू बड़े जोर से बोलैं
बिटिया माना बात हमा ऽ ऽ र
तोरे बाप तपलैं सोहवल में
छत्तिस जात के करिना बारीं रखें कुँवा र
नाहीं देसे मोर ससुर कहावें
नाहीं लरिका मोर कहइहैं सार
दुसरे देसे के लड़िकी हम लें आई

आपन नाहीं दीहैं मुलुक सनसार
ठानल परन तोर बबिले के हउवै
सुनि पइहैं राजा (मा) बमरी मारि नैहैं जिनिगिया हमा····र
बड़ी ड - - र सतिया लगत हउवैं
तब सतिया मोर दे लैं जबाब
चोरियै चोरी भाँवर घुमावा
ना मोर दादा बमरी जनिहैं
ना दसवंत भइया जनिहैं हमार
अतालैं थुन्हीं पतालैं माड़ौ
चोरियै से दे दा तू कन्यादान
चोरियै चोरियैं भांवर रे घुमवलेन
ना सोहवल के जानै बाजा ऽ ऽ ऽ र
ना सोहवल के जानै बजार (पुनरावृत्ति)
आरे तब राजा बमरी किहन धोबी नोकर होके
गाइन क ऽ ऽ ऽ भयल चरवाह
जब एहर धोबी मोर गाइ चरावै
(इसके बाद कुछ अंश खंडित है) [४]

बिजवा का विवाह सम्पन्न

हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ हाँ
अताल थुन्हीं पताल माड़ौ
चोरी चोरी भाँवर देलै रें घुमाय
तब जवने कोठरी पर अजई धोबी रहत रहलैं
ओही अपने कोठरी पर रोज बलको जा ऽ ऽ ऽ य
खेदू धोबी ओन से कहल हइयै
फिन जिन हमरे आया पवन दुआर
फिन जिन आया हमरे पवन दुआ ऽ ऽ र (पुनरावृत्ति)
आरे भाई एहरवें त देखा धोबी
अपने कोठरियैं पर रोज बलको जा ऽ ऽ ऽ ऽ य
घर घर धोबिया मय सोहवल में भइलैं
आरे सब बातिन कै करें लं ख़ियाल
सारा बाजार सोहवल क जानि गइलैं
सारी बात सोहवल कं जानि गइलैं (पुनरावृत्ति)
गइया आपन रे छटकावै
ले लै जालैं बलको रे खेत मैदान

अजई का सोहवल में कुश्ती बदी ठानना

ओगर गाँव सोहवल जूटल हउवै
बदिया क गाँग देलें रे ठटवाय
ओगर गाँव ऊड़न्ती में भइलें,
ओगर गाँव उड़न्ती में भइलें (पुनरावृत्ति)
अजई धोबी गड़ँती में भइलें
एक जँघिया के नीगोटा चढ़वले
सत सत गाँगइ देलें रे चढ़ाय
सत सत गँगिया मोर धोबी रे चढ़ाय दें
ओगर मो सोहवल गइल ले घबड़ाय
लगि गइल खबर जब राजा बमरी के
बमरी के मनवाँ भइल रे उदास
कहँवाँ क मनसेधू भारी आयल
सोहवल पर गाँगई देला रे चढ़ाय

मुंशी का बमरी को सलाह देना कि वह सिलहट में पत्र लिख कर भिमली और दसवंत को बुलावे

तब अमला फइला मुंसी कहै लगलें
आरे बाबू मनव्या बात हमार
लिखिदा पतिया थाना रे सोहवल से
आरे, पाती सिलहट के गिरै रे बाजार
दुनो बेटवन के इलाके से बोलवाइ ल्या
आरे जेकर दसवंत भिमलिया नाँव
तब बाबु बगनियाँ उतरी सोहवल में
नाहि निन्दा मोर भइल बरियार
नाहि निन्दा मोर भइल बरियार (पुनरावृत्ति)
ले के गँगिया दुसमनि भागि जाला,
सोहवल से मोर चली रे पराय
जाके सेखी हाँकी गउरा में
नोचे मउर लटकि जो जाइ रे तोहार
तब राजा बमरो लिखन मोरे लागं
आरे बारह पाल मोर गढ़ गउरा ह ऽऽऽ
आरे अन खाय बाबु अब गढ़ सिलहट में
पानी आइ के सोहवलि की पीया रे बाजार

चढ़ल बा मुदइया मोर गढ़ गउरा कै
आरे जेकर अजई धोबी परल रे नाँव
एइसन बदिया बखेलले बाड़ै
सत सत गँगिया मोर दे लैं रे चढ़ाय
अन खाया बेटवा तूं गड़ सिलहट में
पानी आइके सोहवल की पिया रे बजार

धावन का सिलहट पत्र ले जाना

धावन के हथवै में पतिया दे लं
लेके धावन सिलहट की चलै ले बाजार
राति चलैं लं दिन धावन लागे
आरे कत्तो कुचवन करें न मोकाम
रतिया दिन के बाबू रे चलबे पर
आरे थाना सिलहट के गइलैं रे बाजार
जब बंगले पर दसवंत के गइलं
आरे बलको सिरिया दे लैं रे लटकाइ
जय जय काल दसवंत अ मचावैं
निकल के मोरि पतिया देलैं रे थमाइ

पत्र पाकर दसवंत का घबड़ाना

पतिया जब बाँचत मल दसवंत मो
आरे पतिया बाचत गयल रे घबड़ाय
हथिया पर बाबू हउदा रे कसवा दे
बड़का घंटा देलैं रे रखवाय,
एहर मसरा असबाब दसवंत चढ़ावै
पेन्है लगल निरिखी जब गलवा में
आरे गोड़े दोहरी मोर खींचे तमांच,
आल्हा गूंजकर जब पनही जं
आरे बलको एड़वन ले लैं रे चढ़ाय
बन्हले पाग ऐ रे नव मन का
आरे जेकर चीर रे नेतर फहराय
पंच पंच बान पीठिया पर लदलं
आरे भिम्हली दसवंत दूनो पीठि पर भइलैं रे असवार
आरे भिम्हली दसवंत दूनो पीठि पर भइलैं रे असवार (पुनरावृत्ति)

जाके हथिया के पीठिया प चढ़ गइलै
आरे लेके सोहवल को चललै रे बाजार
लेके दसवंत भिम्हली जब सोहवल में अइलें
बमरी के फटके देलें रे बइठाइ
बमरी के जाइ के गोडे पर गिरि गइलं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
कवने कारन पतिया सिलहटे में भेजल्या
काहे बदे हमके लेल्या रे बोलवाय
तब त धीरे-धीरे बमरी बोलं ऽ ऽ ऽ
आरे बेटवा मनब्या बात हमार
एक ठे धोबी गउरा के आयल हउवै
सत सत गंगिया मोर देलै रे चढ़ाय
उतरले जा गंगिया बेटवा रे सोहवल में
आरे नाहि लटकत मोछ हमार

सुहवल में डुग्गी पीटा जाना

तब मल दसवंत बोलत हउवै
आरे बाबिल मनब्या बात हमार
डुगिया पिटवा द्या गंउवा गढ़ सोहवल में
सब के मै खबरइ देल्या रे जनाय
काल्ह बिहाने बदो होइ खेतवा पं
आरे आपन गंगिया मों लेबै रे उतार
गउवां में डुगडुइया बाजि गइनीं
आरे डुगिया बाजति अन्तः काल
धोबिगा के काने में सबद लगि गइलीं
आरे धोबी रूवत अंतः काल

अजई धोबी की चिंता और उसका लंगोटा कसकर तैयार होना

निज की मरनवा मै सोहवल में अइलें
आरे अब न बची रे जिनिगिया हमार
रोवत बाड़ धोबिया मोर गाँव गउरा कं
आरे बलको हो गइलै आ भोर बिहान
मारत हव सपाटा जब धोबिया जं
आरे आपन निगोटई ले लैं रे चढ़ाय

छव घंटा दिन बाबू चढ़लै जं
आरे आपन गइया लें लैं रे छटकाय
गइया हांकैं खेतवा पर गइलैं
आरे दसवंत भीमली बलको रे चढ़ि जाय
जाके खेतवा पर दसवंत खड़ा भइलं
आरे जंघिया औ निगोटवा चढ़ाय
अपने मय दसवंत मयदाँ सो कूदि गइलं
आरे बदिया का भयल बदान
आरे बदिया का भयल बदान (पुनरावृत्ति)
तब दसवंत धोबिया से बोलं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
रोज रोज ऊ गडंती में रहल्या
गडंती क पारी आइल रे तोहार

धोबी अजई और दसवंत का युद्ध

तब धोबिया मोर उड़न लागं
आरे धोबी चलल पयतरें प चाल
एइसनि चाल मोर धोबिया चलै
उछरै बलको अन्तः कं ऽ ऽ ऽ
आरे बलको उछरै अन्तः काल (पुनरावृत्ति)
एक फेरा धोबिया रे घुमि गइलै
दूसरे म फेरवा गयल नियराय
तीसरे म फेरवा जो धोबी घूमन लागै
चउथा जौ फेरा रे पूरा होइ जाइ
पंचवे फेरा जब धोबिया घूमल ऽ ऽ ऽ
परल नजर मल दसवंत बहरे
हइहैं थप दे थपरवा ऽ ऽ ऽ आ दसवंत के मरले रे हुउवै
आरे मारि के धोबिया चलल बाड़े रे मोरि मइया
आ खेतवइ ले रे परा ऽ ऽ य
आरे भिम्हली दसवंत बड़े जोर से दइबा भिम्हलिया कै लल ऽ ऽ रे ऽ ऽ कारें
आरे भइया खेतवा पर गइल रे मोरि मइया ईजतिया ऽ ऽ नारे ऽ ऽ ऽ तो ऽ ऽ हा ऽ ऽ र [५]

धोबी का पसली टूटना

हाँ ऽऽऽआं ऽऽऽऽ राम ऽऽऽ
आरे तब बोलत न हउवै
दसवंति बड़े जोर ललकारै
दसवन्ति बड़े जोर ललकारै (पुनरावृत्ति)
हनि के एड़ा धोबी के मारै
आरे धोबी क टूटि गइलै पजरिया क हाड़
बोलै धोबिया पर मर गइलै
आरे सब लोगइ चलल पराय
भागल सोहवल में मोर गइलं
आरे खेदू धोबी के खबरइ देले रे जनाइ
दूसरे देस कइ धोबी अइलं
आरे खेदू मनब्या बात हमार
तोहरै जो जात बिरादर हउवे
आरे ओन्है ले आवा खेते ले उठाय
छ महिन्ना ऽऽऽऽ
आरे छ महिन्ना धोबी गुड़ घीव तूं खियावा
आरे नहिं मार जाला सोहवल की रे बजार
एतनी बात ज खेदुआ सुनलं
आरे बलको खटिया जो लेला रे उठाय
एहर आठ पट्टा अपने संगवा में लेके
आरे चल गइलें जो खेत बलको रे मयदान
धोबिया के उठाके पलंग पर सुतावें
आरे सब कन्हवें लेला रे उठाइ
ले गइलें खेदू के बखरी में कइले
आरे खेदुवा के बखरी में देलें रे सुताय
दमिया लवले अजइया धोबी
कुछ बेर के बाद में उठिके बईठ हउवे ऽ जा ऽऽ त
खेदुवा धोबी अजई के समुझावै
एकरे दुपहरे दिन होई जात
छव न महिनवा खाब्या रे घरवा में
तब एकरे बाहर होइ जाय
छवे त महिनवा धोबो के बीति गइलें

सतवा महिनवा गयल रे नियराय
तब खेदू धोबी से कहै

अजई का खेदू से कहना कि वह चुपके से उसका गौना करा दे

आरे बाबा मनब्या बात हमार
चोरियन म चोरिया मोर गवन जो करा द्या
भागि जाइं कनउज की हो बाजार
जमि जाई गउवां गढ़ गउरा में
तब बलको बची रे जिनिगिया हमार
चोरियन म चोरियन गवन करवलै
लेके बलको कनउज की चलै लैं बजार
ले जाके मय राजा बमरी के बिजवा बइठाके
लै जाके मय राजा बमरी के सगरे पर बिजवा के बइठायके (पुनरावृत्ति)
आरे गोपी मनब्यु बात हमार
एहि सगरे पर तू बइठल रहा
तनी बमरी से कइ लेइ मय भेंट दीदार
अब अपने गउवां चलति बाडी गोपी
आरे थाना कनउज की चलै लै बजार
बिजवा के बलको सगरे पर बइठाय के

अजई का बमरी की कचहरी में आना

आरे बमरी क कचहरी गयल नियराय
लागल बा कचहरी राजा रे बमरी कै
आरे गहुअर झूमि के लगल दरबार
बायें त बगल में जो मुन्सी बइठै
दहीने मोर कायथ बइठल बा दीवान
बाजल बा तबलवा नैपाली मोर
आरे बलको घुटुकै लै साँझ बिहान
तबले पहुँचल धोबी जब फटका पर
आरे बाबू मनब्या बात हमार

अजई और सतिया के बिवाह की चेतावनी

अब हम जात बाड़ो गांव गउरा में
थाना कनउज की जाला रे······
एक बाघिन दू दू डँवरू जनमल

आरे दूनो जनमल दइब कर लाल
एक जने गइया रे बोहे में चरवलं
एक जने घूमि के करैलैं ठकुराय
धन धन बेटवा जब बघिनी कै
आरे बलको पाल के करब तइयार
लेके बेटवा बलको रे बघिनी कै
आरे टिकब मोती रे सगर के घाट
कइल बियहवा जब सतिया कै
दसवंत कैं मारि नइवैं रे म ऽ ऽ ऽ ऽ इया
आ खेतवा मयरे दा ऽ ऽ ऽ ऽ न

धोबी का पीछा किया जाना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ
एतनी बाति धोबी मोर कहि के ऽ ऽ
कचहरी में धोबी अब चलल रे पराय
तब लोग बलको लखेदै लगलैं
धोबिया भागे अन्तः काल
बिजवा के सगरे पर बलको रे लिया के
चलल अपने थाना कनउज को चलले बाजा र
राति चलैल दिन धावन लागे
आरे कत्तो कुचवन में करैं लैं मोकाम
ले के बिजवा के गउरा के गइलैं
आरे थाना कनउज की गइलै रे बजार
जब अपने किलवा पर गइलै
जब अपने किलवा पर गइलै (पुनरावृत्ति)
बिजवा के किला में दे लैं बइठाय
अपने धोबी मकान पर रहै लगलं
कोई से न करैं ल भेंट दीदार
ना कोई से धोबी सोचना कइलन
ना कोई से धोबी सोचना कइलस (पुनरावृत्ति)
ना कोई से मोर घले बतियाय
ना कोई के दुआरे जालैं
धोबिया मउन होइकै बइठल बाय

माघ में धोबी का कनउज पहुँचना

एहर त माघ का महिन्ना अइलै
एहर त माघ का महिन्ना अइलै (पुनरावृत्ति)
ओहि में धोबिया सोहवल से आयल
आरे थाना कनउज के आयल रे बजार
एहर फागुन के दिनवा अइलै
आरे फगुवा मोर गयल नियराय
वीर लोरिक सुनलैं धोबिया के
घुमि के मोर कनउज की आयल रे बाजार
लिखलैं पतिया गाँव गउरा से
पाती जाइके गाइन की गिरली अड़ार
मल साँवर क पतिया भेज लैं
आरे भइया माना बाति हमार

लोरिक का कुसुमापुर में फगुवा खेलने जाना

फागुन क महिनवा आयल गउरा में
एक ठे हमें डंफिया देब्या रे भेजवाय
फगुवा खेलत गढ़ गउरा में
आरे मन लागलि बाड़ैं रे हमार
मल साँवर ऽ ऽ ऽ सुन्द ऽ र ऽ ऽ डफ मढ़वावै
आरे पतिया में दे लें रे लिखवाइ
तीन कोन फगुवा भइया खेल्या
मति जा कुसुमापुर की बजार
मति जा भइया कुसुमापुर की बाजार (पुनरावृत्ति)
लिखि के जो पतिया जो गउरा अइलं
सुन्दर डंफिया दे लैं रे भेजवाय
जउने दिन फगुवा आयल गउरा में
धोबिया के किला से ले लै रे बोलवाय
एहर धोबी के गरै में डफि बलको नावैं
अपने पिचकरियैं ले लैं रे उठाय
संगी साथी संगवा में लेके चललं
आरे थाना कनउज की चलै लैं बजार
गलिया में दर गल्ली खेलैं

फगुवा खेलैं अन्तः काल
जोति के पिचुकारी खिरकियै पर मारें
गोपी के रंग से चुनरिया हउवै रे बिगड़जात
फगुवा खेलत बीर लोरिक मं
कुसुमापुर की गइलें रे बाजार
गलिया खेलैं लैं दर गल्ली मं
घूमत घूमत सहदेव महदेव के पवन गइलै रे दुवार
ननद भउजाई चनवा बइठल
थाना कुसुमापुर की बजार
एकै खिरकिया पर चनवा बइठं
सहदेव बो क सोझैं रे नजर परिजात
बीर लोरिक के गलिया में देखल ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे गोपिया रे हउवैं रे हटि जात
सोझे मो नजरिया चन्ना पर परि गइलीं
तानि के पिचुकरिया मैं गलिया से मारे
सारा रंग चनवा के ऊपर परले
चनवा पीछे उलटि के ताकै

चनवा की कटूक्ति

बड़े जोर से चनवा बोलै,
बजर परो मो अहीर गउरा कै
आरे तोके परों रे बजर के घान
गउवां कै बहिन बिटिया न चीन्हत बाड़्या
रंग से बिगरल्या चुनरिया हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
अइसन मनसेधू गउरा जनमल होत्या
भाई के भाँवर घलत्या रे घुमाय
भउजाई लियाय के गढ़ गउरा में
आरे फगुवा खेलते रे मोर प पि ऽ ऽ ऽ या
आ सां ऽ ऽ ऽ झ ऽ ऽ ऽ वा नारे बी ऽ ऽ हा ऽ ऽ न [७]
हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं
तब कहलेस हइयै
आन के घरे तू नजारा मारत बाड़्या
आन के मेहरी के ऊपर फगुवा खेलत बाड़्या
लाज डर नाहि मानत बाड़्या

आरे मुवले पर संवरू की गांड़ी हरदी लगिहैं
आरे तोरे जियले बिरथा होइ जाइ
एतनी बात जब लोरिक सुनलैं
आरे बलको जरि के भसम होइजं
हाथे के पिचकारी बलको फेंकि देहलैं
गरे में क धोबिया क डंफ फोरि देहलं
चललैं बलको कनउज की रे बजार

दुखी होकर लोरिक का बँगले पर जाकर सात दिन तक सोये रह जाना

एहर जाइके लोरिक बंगले में सुतलैं
आरे बलकौ सुतलैं दुपटवैं तान
सात दिन तक सूतल रहि गइलं
आरे बूढ़ खोइलन पंजरे गइल नियराय
कवने कारन बेटवा सूतत बाड्या
कवने कारन बेटवा सूतत बाड्या (पुनरावृत्ति)
कवनो रेरिया तोके मरले हउवैं
मेहना मारैले तोके बड़ियार
कवनो करजहरू तकादा कइ ऽ ऽ ऽ ऽ लैं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
सोच बढ़ैले बरियार
कउने कारन बेटवा तूं बंगले में सूतल
तनिकौ नाहीं रे जुमूस हम खात

खोइलनि का बिजवा के यहाँ जाना

ऊहवां से रूवत बुढ़िया निकसल
बिजवा के किलवा गइल रे नियराय
धोबिया के दुवारे जो बुढ़िया गईं
आरे बीजा भइल रे देवलियैं पर ठाढ़
कउने मै करनवा अइलू मोरे जो दुवरवा
अइया एकर भेदवा तू देबू रे बताय
कवन बात बिजवा हम कहीं
आरे बीजा मनब्यु बात हमार
तोहरे देव ऽ ऽ ऽ र कोंहायल बांड़े
अन पानी बलकों किरिया बोल लैं
पनियां त सुवरइ बोलेलैं हराम

सत सत दिन बीति गइले पतोहू
आरे मरि जाला जे बेटउवा हमार
तनी एकन चलि के मनाइ दे बिजवा
अगवां अगवां जो बुढ़िया चलै
पिछवा बिजवा रेवरली जाय
एहर बूढ़ा अपने जो बंगले में गइलीं
एहर बूढ़ा जवन अपने बंगले में गइलीं (पुनरावृत्ति)

बिजवा का लोरिक के बंगले पर जाना

बिजवा लोरिक के बंगलवें में जाय
धइके खम्हा बिचवा मैं खड़ी हो
आरे देवर मनब्या बात हमार
कवने मैं करनवा बंगलवें में सूतं
आरे कवन अफसोस बढ़े ले बड़ियार
कवने कारन तू सुतल बाड़्या
आरे कवन मेहना मारैलै बड़ियार
कवन करजहरू तकाजा कइला
आरे तोरे सोचिया बढ़ल रे बड़ियार
रूवत ह बेटउया जब बुढ़िया कं
आरे भउजी मनब्यु बात हमार
हमरइ सोचिया बढ़ल बंगलै में
आरे मोरे बूतवे रहब नाहीं जाय

लोरिक का बिजवा को अपने दुख का कारण बताना

खेलै मैं फगुवा कुसुमवेंपुर गइली
सहदेव महदेव के पवन दुआर
सहदेव बो आ चनवा देखा ऽऽऽऽऽ
आरे बलको बइठल रे खिरकियै पर बाय
तानि के पिचकारी भउजाई मरली सहदेव बो के,
सारा रंग चनवैके ऊपर परि जाय
पिछवा उलटि के चनवा तकलै
आरे बड़ा भारी किरियै मो देले रे धराय
बजरवै परो जा अहीर गउरा कै
आरे तोहके परो रे बजर कै बान

२

गउवां क बहिन बिटिया न चीन्हलं
आरे रंग से बिगद ला चुनरिया हमार
अइसी मबसेधू मउरा जनमल होत्या
भाई के भाँवर घलत्या रे घुमाय,
मुवले पर गांड़ी में हरदिया लगिहैं
आरे तोहरे जियले रे बिरथ होइ जाइ
अइसी मनसेधू जौ गउरा जनमल होत्या
नहीं गिरि जा कुवां बलको रे इनार
एतनी बात चनवा कहले हउवै
आरे उहै भउजी मो गयल रे बुझाय
अन्न क किरिया बलको बोललीं
पानी सूअर बोलै लैं हराम
आरे जबले होई ना बियाह भइया कै
पानी न पियब रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ इ या
अपने गउरवैं बलको गुंजरे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रात [८]
हां ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ राम
तब बिजवा कहल ऽ ऽ ऽ सि
अऊर तोरे अकिल देवर बउरइले
आरे मंदा बलकउ परै लै गिया ऽ ऽ ऽ ऽ न
एकर तोहके खोजिया करै क नाहि हउवै
आरे तनी मानि जाब्या बतिया हमार
आरे मोरे ज्ञानी से पूछि लेब्या
आरे जवन संघीयै जौ लागैं लैं तोहार
तोहरे जोड़ कै बलको देख मल दसवंत,

बिजवा का कहना कि संवरू सतिया से विवाह के योग्य है

सतिया के जोगे मल सांवर हउवैं
आरे मोर समिया करी रे अगुवाई
आरे बलको खाई रे अगुवई क भात
चढ़ि जा गाँव बलको रे सोहवल में
चढ़ि जा गाँव बलको रे सोहवल में (पुनरावृत्ति)
सतिया क भांवर लेब्या रे घुमाय
जइ दिन सोहवल हम धन रहलीं
आरे चिर धोवलीं थाना सोहवल की रे बजार

भला एहू ठियन सतिया देवर आव
चिरिया मैं धोइत सांझ बिहान
करित मैं भजनिया जइ सतिया कं
आरे सती बरनै रे जोग कै नाय
अइसन भजन सोहवल में करत हउवैं
छन में धरती में आवत बाय,
छनवा में ब्रह्मा की दुवारें
एइसन तपोबल बनल बाय
तोहई अगुवा सामी के बनाइल्या
आरे जेकर अजई परल हउवैं नांव
चढ़ि जा सामी मोर गढ़ सोहवल में
चढ़ि जा बलको गढ़ सोहवल में (पुनरावृत्ति)
आरे बलको भाँवर लेबे रे घुमाय
एतनी बात जब बिजवा कहलं
आरे देवर मनब्या बात हमार
काल्ह संगी के बलको संगै लेइ लेल्या
चलि जा बलको गइयन की रे अड़ार
सगरौं गाइन में टहरावा
जब धोबी बलको रे थकि जाय
ढेकुली के पेड़वा तर धोबिया मै सुतिहैं
बांयीं बगल में जब धोबिया के
तानि के मुक्वा ओकरे मारा
आरे बलको उठि के बइठत हउवे जाय

अजई के घाव का कारण पूछने की लोरिक को बिजवा की सलाह

तब ओसे बोहवा में तूं धन पूछं
आरे संगी मनब्या बात हमार
कवनों पुराना घउवा हउवै
की घाव टटका लगल तोहरे बाय
कवने मै करनवा तू चिघरति वाड़्या
तब कुल बातै ऽ ऽ ऽ दिहै रे बताय
होत सबेरवा मोर बीर लोरिक जं
धोबिया के संगवै में ले लैं रे लिआय,
लेके बलको धोबी के गइयन में गइलै

सारा बोहवा मोर घलैलैं टहराय
चार बजे के देखा बेला में
आरे धोबी के जो आइल थकाई बाय
ढेकुली के पेड़वा पर धोबिया सूतं
आरे जेकर नकुला बजत बलको बाय,

लोरिक का अजई को मुक्का मारना

तानि के मुकवा बायीं रे करवटे
आरे लोरिक मोर देलैं रे चलाई
उठि के म धोबिया बलको बइठ गइलं
आरे संगी मनब्या बात हमार
अइसन मुक्का पजरिये में मरल्या
टूटि गयल मोर रे पजरिया क हाड़
तब वीर लोरिक बोलन लागैं
आरे संगी मनब्या बात हमार
ई पुराना घाव कब्बों क उभरल हउवैं
की लड़त क लतवा लगल बरियार
कवने मैं करनवा तूं चिघरति बाड़ ऽ ऽ ऽ ऽ
काहे बदे एतना जोर चीघर देल्या
एकर बलको भेदवा तू देब्या हो बताय

अजई का दसवंत से हुए अपने युद्ध का वर्णन करना और लोरिक को अपने घाव का कारण बताना

एतनी बात जब धोबिया सुनं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे संगी मनब्या बात हमार
हम धन गइलीं थाना रे सोहबल में
आरे बलको सोहवल की हो बाजार
सात बेटवा हउवैं राजा बमरी कें
आरे सातो जनमत दइऊ कै लाल
दसवंत से बदिया बदान होइ गइलीं
आरे बलको खेत भयल रे मयदान
हम धन भयवा उड़न्तों में भइली
दसवंत बलको गड़न्तो होइ जाय
एहर माई एक फेरा घुमि गइलीं

दूसरा मैं फेरवा गइलीं रे नियराय
तिसरा मै फेरवा जे दउरन लागे
आरे चउथा फेरवा पूरा होइ जाय
पांचवा जो फेरवा मैं घूमन लागं
दसवंत पर सोझे रे नजर परि जाय
हनि के थपरवा मैं मुंहवे पर मारे
आरे बलको मार के चलल पराय
तबले भिम्हली भिम्हली ललकारै
आरे भिम्हली भयल रे पजरवा ठाढ़
धइ के पोंगरवा जो घोंचि मोरि लिहलै
आरे हम गिर गइलीं बलको रे भहराय
हनि के एड़ा दसवंत मरलैं, हमरे टूटि गइले रे
मोरि ऽऽऽऽम ऽऽऽइऽऽया
आ पजरिया ऽऽऽके रे ऽऽऽहा ऽऽऽऽऽड़ [६]

धोबी को लोरिक द्वारा शराब पिलाया जाना

हाँ ऽऽऽऽहाँ ऽऽ ऽऽहाँ ऽऽऽऽहाँ
राम राम राम रा ऽऽऽऽम
तब धोबी के संगे लोरिक ले लैं
लियाइ अपने चललें कनउज की बाजार
आरे जब गाँव गउरा धोबी गइलै
तब लोरिक से धोबो कहलै
कि बड़ा थकाई भाय हमरे आइल
तब लोरिक मो ठावें दे लैं रे जबाब
चला चला संघी तू बलको कलवरियाँ
चल चला सँगी तू बलको रे कलवरियाँ (पुनरावृत्ति)
आरे तोके दारूयै मै देइं रे पियाइ
लिया गइलै बीर लोरिक जब रे कलवरियाँ
धोबिया के बलको देलैं रे बइठाय
बोतल क दारू अगवाँ रखलैं
धोबिया पीयत बलको बाइ
नशा में चूर जब धोबिया भइलं
आरे बलको कुरसी ले कूदल भहराइ
बड़े जोर से धोबिया गल्ली में ललकारै

धोबी का कथन 'सतिया, भीमली, दसवंत सभी अवतारी हैं'

आरे संघी मनब्या बात हमार
चढ़ चला गउवाँ गड़ सोहवल में
आरे थाना सोहवल की चला रे बजार
पट्ठे हम करबै तोर अगुअई
बलको खाबै रे अगुअई क भात
जइसे तोरे भइया सँवरू जनमल
ओइसे सतिया भउजी ले ले अवतार
जइसे जनम तोर गउरा में भइलै
ओइसे दसवंत भिम्हली ले लैं रे अवतार
एतनी बात सब धोबिया कहल
आरे छाती फूलि के भइल गजराज
अगवां अगवां जो लोरिक चललं
आरे पीछे धोबिया रेवरले जाय
ले जाके धोबी के मक्कान पहुँचाय के
अपने किलवा गइलें रे नियराय
किलवा में जाके भोजन कइलैं
आरे बलको बंगला गयल रे नियराय

नशे में अगुवाई करने का आश्वासन, फिर प्रातः काल भयवश अस्वीकार करना

जाके बंगले में आपन सूतन लागं
आरे पलंग सूतैले टंगरिये फइलाय
होत भिनुसहरा तड़का भइलैं
धोबिया क नींद बलको रे टूटि जाय
तब धोबिया बलको सोचन लागे
नसवा में हम अगुवा बनि गइलीं
सोहवल में जिनिगी न बची रे हमार
होत सबेरा बंगले पर पहुँचं
आरे लोरिक भाय मनब्या बात हमार
हम नाहीं अगुवा बनब सोहवल कै
नाहि तोरे खाबै रे अगुवई क भात
एतनी बात धोबिया मोरि कहि के
अपने क़िला पर पहुँचं ललकार

जब अपने बंगले में गइलैं
एहर लोरिक उठि के भइलै रे तइयार
होति मो सबेरवा देखा लोरिक
धोबिया के पवन गइलै रे दुवार
बिजवा अपने बखरी से निकसं
आकै दुवरिया भइल तइयार
कउने न कारन देवर आयल बाड़्या
आरे बलको कुरूसी दे लें रे लगाय
बीर लोरिक के बलको बइठावइ
बीर लोरिक से पूछति बाय

बिजवा से लोरिक का कथन 'अजई अगुवाई के लिए तैयार नहीं

तब बोलै बेटवा जब बघिनी कै
आरे भउजी मनब्यु बात हमार
कालि क हुँकरिया भरले नसवा में
भोरै में देइ अइलै रे जबाब
अब के अगुआ बनी भउजाई
के जाई सोहवल की रे बाजार
तब धोबिया के बिजवा गोहरावै
आरे दुलहा मनब्या बात हमार
बरबस मनसेधू के जनम होइ गइलं
आरे जौन न जनम होतं तोहार
एक लात दसवंत भइया मरलैं
करकल करेजवा हउवै रे तोहार
कइसन बीर न लात मरले हउवं
आरे तोहार पयँड़ा गइल रे भुलाय

बिजवा की भर्त्सना 'स्वामी तुम स्त्रीवेश पहन कर बैठ जाओ मैं अगुवाई करूँगी'

बड़ा भारी मनसेधू गउरा बनत बाड़्या
परल काम मरदे से सामी
हिल्लत बाड़ं बलको रे टँगरिया तोहार
आपन असबबवा तूं हमके दे द्या
आरे गउरा में लेबैं रे चढ़ाय
हमरी लुगरिया गउरा में पहिरिलं

कोनवा का होके रहा रे बिलार
बलको हम करबै अगुवई अहीरे कै
आरे बलको खाबै रे अगुवई क भात
विना बियाह हो करवले मल साँवर क ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
ना आइब ए मोर सा ऽ ऽ ऽ ऽ मि ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ या
आ तोरे गउरवा बलको गुजरे ऽ ऽ ऽ ऽ रात [१०]
हां ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ हां
तब धोबी बड़े जोर मैं तड़कल
ना जनतिउ हाल मल दसवंत का ऽ ऽ ऽ
जानल मरमैं हउवै रे तोहार
अइसन मेहना मारत बाड़
ल करत हई अगुअई अहीरे क ऽ ऽ ऽ
आरे खाबे रे अगुवई क भात
बाकी एक बात लोरिक मोर माना
आरे बाबू मनब्या बात हमार

अजई द्वारा बमरी के पुत्रों के शौर्य व अमरता का उल्लेख

सात बेटवा जनमल राजा बमरीं
आरे सातो जनमल दइउ कर लाल
कउनो सिंधिया औ सेरवा मरलैं
आरे कवनो बघवा मारैला हुँडार
कउनों नदिया बेवरा में कूदलें
आरे डूबि के धरैले सोंइस घरियार
दसवंत तपल बाडै दस मासा
भिम्हली मोर तपल ह तेरहवा माँस
अम्मर हो हो जनमल बाड़ें
आरे खइले बाड़ें रे अमर कर भात
पाँच बान ब्रह्मा मोरि देलं
आरे बान टरै रे जोग कइ नाय
एक बान के मरलै लोरिक
चौदह कोस लगैं लैं बन डेढ़वा
सुलुगन लागे रूख परास
सुरसर पनिया जो खल बल खल बल
आरे जेमन जो उलटी रे सोंइस घरियार

एक लोरिक के कवन चलावो
सगरे जिनगी न बची रे तोहार
हमार दोष तनिको मति दिहा
आरे भरत बाड़ी रे हुकँरिया तोहार
एतनी बात मोर लोरिक सुनलं
आरे संगी मनब्या बात हमार
तोर दोस कवनों ना हउवै
आरे मोर कइला अगुवई कनउज की हो बजार
एतनी बात जब लोरिक कहलं
आरे धोबी भरत जे हुँकरिया बाय
दूनो जने एक संगे में भइलं
आरे थाना कनउज की हो बाजार

कनउज में घर घर मंडप गड़वाया जाना

घर घर मांड़ो धोबी गड़वाइं दें
आरे सबके कंगन देलें रे बन्हवाय
सबके गोड़े में महावर लगावै
आरे सबके मउर देलें रे बन्हवाय
सजल बा बरतिया मोर गढ़ गउरा में
आरे जेकर लोरिक रे बघेला नांव
एहर सुनिला मल सांवर कै जे
आरे बाबू मनब्या बात हमार
सबके घरे मांड़ो गड़ि गइलं
सबके मटमंगरा होत बलको बाय
लोरिक के घरवां कुछ नाहीं भइलै
अपने में संवज घलल बतियाय
कइसे दादा मोर बोहवा से अइहैं
जेकर मल सांवर परल बा नांव

गांगी नाऊ का संवरू के पास जाना और विवाह सम्बन्धी तैयारी की सूचना देना

गंगिया नाऊ के दूनो भेजि मैं दे लैं
आरे गांगी गाइल की गइलै अड़ार
जाके हथवा सँवरू से जोड़
आरे भइया मनब्या बात हमार

एतनी बात मल सांवर सुनलं
आरे गंगिया से देलें रे जबाब
कहंवा से गंगिया तें आवत बाड़ें
आरे कहवां क करे ला पयान
तब बोलति जो हउवै गांगी जं
आरे भइया मनब्या बात हमार
गउरा दूसर हो हो गइलै
आरे गउरा जुलुम मचल बड़ियार
घर घर भइया मांड़ो गड़ल हउवैं
सबके कंगना देलें रे बन्हवाय
अब तोरी पारी भइया आयल
आरे चला कनउज की हो बजार
तोहरी मटमंगरा कनउज में होई
अंगने में मंड़वा देईं रे गड़वाय
कंगन भइया हाथे में बंधवा दें
तोहरऊ होई बलको रे बियाह
एतनी बात मल साँवर सूनलं

मल सांवर का क्रुद्ध होना और गांगी को मारकर भगाना

आरे मल सांवर बलको उठल रिसियाय
तोन पनथ धोबिया बीति गइनीं
चउथी मरन गइल नियराय
मुहवां क दतवां जो मोरे टूटि गइलै
सनकुट भयल रे कपरवा क बाल
भजन करत दिन मोर जौ बितलै
तानि तानि गंगिया के मारै
गंगिया बलको चलल पराय
भागल अपने गउरा गइलं
लोरिक के पंजरे गइलें रे नियराय
लोरिक पूछत जब गंगिया से
आरे गांगी मनब्या बात हमार
भइया मोर ऽ ऽ आवत हउवैं
कि तोके ठावइं दे लै रे जबाब
तब गंगिया लोरिक से बोलै

आरे भइया मनब्या बात हमार
बियाहे क नउवां ओनसे लेहलीं
आरे तवन जरि क भसम होइ जं
दू दू गोजी तानि के मरलै
हम धन बलको चलली रे पराय
अब नाहीं भइया जाबै रे बोहवा में
नाहिं मारि नइहैं जिनिगिया हमार
अब हमके जिन भेजा गाइन में
लोरिक के मै झर झर बहत ह नयन से आंस

खोइलन का मल सांवर को विवाह के लिए तैयार करने जाना

रूवत गइलै बूढ़ खोइलनि के पजरे
आरे माई मनब्यु बात हमार
तनी त बोलाय दा जब भइया कें
नाहीं बलको गइल रे ईजतिया हमार
तब बूढ़ा डगर बोहवा धइले
आरे गाइन की गइलीं रे अड़ार
मलसांवर गोड़वा पर गिर गइलं
कौने कारन माई बोहवा में अइलीं
एकर भेदइ देबू रे बताय
सुना ए बेटवा मल सांवर जं
तनी एकन मनवा बात हमार
मनवा बढ़ाय देला बीर लोरिक कै
आरे थाना कनउज की हो बजार
हमार कहल नाहिं मानति बांड़
गउरा उखमज करें ले बरियार

विवाह का प्रसंग आने पर संवरू का क्रोध

घर घर मांड़ो सबके गड़ववले
सबके कंगन दे लैं रे बन्हवाय
का जानी कहवां गांव सोहवल हौ
छत्तिस जात के करिना बचवा
सुनिला बारी परल कुवां ऽ ऽ ऽ ऽ र
उहै बारात बलको साजल बाड़ै

तोहऊँ कनउज की चला रे बजार
तोके बेटवा बलावति हउवैं
सँवरू जरि के भसम होइ जाय
आज मतारी न होत्यु बोहवा में
आरे बोहे में कटि जाइत रे मोरि म ऽ ऽ इ ऽ ऽ या
आ मथवा ऽ ऽ ऽ ऽ ना ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ तोहार [११]

खोइलनि का रुष्ट होकर बोहा से आना और गउरा के निवासियों में चिन्ता

हां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ ऽ
बू ऽ ऽ ढ़ा ऽ ऽ बड़े जोर से खुनसाय के चलि देहलों
ल्या भाई न जाब्या ऽ ऽ ऽ कहल न दूनो जने मनब्या
अब गउरे की जात हई ब ऽ ऽ जा ऽ ऽ र
बूढ़ा भागल गउरा में गइलीं
लोरिक गिर पड़लें गोड़े पर भहराय
कहा हाल माई तनी रे बोहवा क ऽ ऽ ऽ
हम धन सूनब कान ओन्हाय
तब बुढ़िया बड़े जोर से चिढ़ै
करे ना कत्तों से तिलकहरू अइलै
ना कवनो अगुवा तोर भइलैं
ना कत्तो तीलक तोर चढ़लै
कइसे करै जात तू बाड़्या रे बियाह
बड़ी ऊखमज गउरा में कइल्या
सँवरू तोहार नाहिं मनिहैं बात बलको तोहार
एतनी बात बुढ़िया जब कहलं
सब लोग बलको गयल रे घबराय
एतनी बात बूढ़ा कै सुनि कैं
झर झर बहत ह नयन से आँस
तब सँउजा सब बान्हल लागे
आरे बाबू मनब्या बात हमार
अब के मनाइ मल साँवर के
बलको हइहै गउरै गयल रे घबराय

गुलबी मुसहरिन का सांवर को मनाने का बीड़ा उठाना

तब गुलबी एकठे मुसहरिन रहं
आरे बाबू मनब्या बात हमार

हमके ज छुटिया गउरा में देइ देत्या
हम भसुरे के देइत रे मनाय
ओगर गांव बड़ा जोर चौढ़े
आरे बड़ी सुन्दर तू धनि बाय
बड़ी सुन्दर तू लागति बाडू
भले भसुरे के घलैलू मनाय
गउवां भर संउजा मै कइकैं
गुलबी के हुकुमइ देलैं रे लगाय

गुलबी का बोहा जाना और हाथ में जल लेकर रास्ते भर जल छिड़कते जाना

एक ठे रोटी गुलबी पोइ लेहलैं ऽ ऽ ऽ ऽ
कपरे पर टुकड़ा ले लै रे रखवाय
हथवा में लोटा अपने उठाइ के
चलल गाइन की रे अड़ार
मल सांवर पूजा करत हउवैं
गुलबी मैं सम्हने गइल रे नियराय
चिरूवा पै पानी ले के गुलबी छिरकै
अगवा बलको बढ़ल हउवै जात

गुलबी से मल सांवर का पानी छिड़कने का कारण पूछना

तब मल सांवर गुलबी से बोलं
आरे गुलबा मनब्यु बात हमार
ई तू का धन करति बाड़्यु
तब गुलबी मोर दे लैं रे जवाब
ए भसुर तनी मोर बतियये माना
ए भसुर तनी मोर बतियये माना (पुनरावृत्ति)
हमरे मुसहरवा गुरूमुख भइलैं
कोई का छूवल खातैं नाहीं
उहै लोटा क पानी लेहलीं
तवन मुसहरवा तोरे जंगल में
भसुर लकड़ी तोरत हउवै

'बाल कुंवार के आगमन से मार्ग अशुद्ध हो गया होगा इसीलिए जल छिड़क रही हूँ' गुलबी का कथन

उहै पनिया छिरकत हम जात बाड़ीं

कवनो बारम कुँवार लड़िका आयल होइहैं
पयड़ां असुध होई गइल भसुर
नाहीं बलको समिया खाई रे हमार
ओहि से मो पनिया छिरकति बाड़ी
आरे बलको सँवरू गइलैं रे घबड़ाय
असुध मोर सरोरिया के समझत बाड़ो
ई कवन बेद जानति बाड़ै
आरे तबत संवरू गइलैं रे घबड़ाय
बियहवे कइले में का सुद्धी हो ला
चला चलीं कनउज की रे बजं
एहर गुलबी अड़वें से भागल
भागल कनउज की गइल रे बजार
गउवां गउरा बलको पूछन लागं
आरे गुलबी मनब्यु बात हमार
करे गुलबी आवत हउवें सँवरू
आरे गुलबी ठांवइ देलैं रे जबाब

सँवरू का कनउज पहुँचना

पिछवां पिछवां आवत हउवै
एहर मल साँवर के अफसोस बोहवा भइलं
आरे बलको गाइन रे छोड़ै लागलै
कनउज की चलै लगलैं बजार
जब गउरा में संवरू गइलै
लोरिक क बंगला गयल रे नियराय
जाके बंगले में नीचे मउर कर कें
आरे सँवरू बइठल रे बंगलवे में बाइ
ओगर गाँव जाइ जाइ के देखै
मारे डरन जियरा ले चलैं लैं पराय

लोरिक का मल सांवर के पांव पड़ना और एक बात मानने के लिए कहना

वीर लोरिक बलको बंगले में गइलैं
थाम के गोड़ मल सांवर कै
रूवत बाड़ै आरे भइया बड़ो बड़ी बेजइयाँ
गउरा में हम कइले रहलों

आरे हमैं माफी देल्या ए भइया, गउरवै हमरे जौ गुंजरे ऽ ऽ ऽ रं
आरे भइया जवन जवन बतिया, तोहसे कहत हम गउरा रे ऽ ऽ ऽ गइलीं
आरे तवन तवन करत गइला ए विरना कहलवौ रे ऽ ऽ ऽ हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे हमसे अइसन अइसन ए विरना चुकिया ना होई रे गइं
एदवां पारी कय देव्या ए बिरना कहलउ रे हमं ऽ ऽ ऽ
आरे फेर फेर ना कहवै बलको थाना रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ या
अपने गउरवा बलको गुजरे ऽ ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ ऽ त [१२]

सँवरू के विवाह की तैयारी

हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ आँ ऽ ऽ ऽ ऽ राम राम हो राम
आरे तब मल साँवर बोलले लागे
बीरन तनी मानि जाव्या बतिया हमार
जवन जवन बतिया हमसे गउरा कहल्या
तवन तवन कइलीं कहलवा तोहार
एदवा क बतिया अउर बीर हम करबै
फिन नाहि कहलइ करव रे तोहार
तोहरे मन हो तवन कइ लेव्या
अँगने में मांड़ो दे लैं रे गड़वाय
चउक पुरवाय दे लैं जब अंगने में
आरे बलको कलस दे ले रे रखवाय
दूबरी पंडित के बोलवावैं
गंगिया मैं नउवा भयल तइयार
अँगने में पीढ़ा चन्नन के रखि गइलं
दूबरी बाबा के दे लैं रे बइठाय
बइठ गइलैं मल साँवर अंगने में
आरे बलको कंगन दे लैं रे बन्हवाय
होति बाड़े मंगल गढ़ गउरा में
आरे ढोलक बाजै सांझ बिहान
अइसन भजनिया अगनवे में होति बं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे देवता सारा रे मोहित होई जाय
इन्दर के परिया नाचत बाड़ीं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बलको नाचैं झंझाकार
एहर मोर मटमंगरा मलसांवर के भइलै
आरे बलको बियाहो गयल रे नियराय
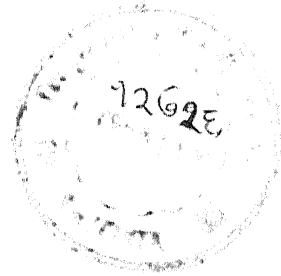
घर घर मांड़ों गड़ल गउरा में
आरे सबकर असवारी दे लैं रे सजवाय
एहर मल सांवर क डंड़िया फनिगं ऽऽऽऽऽ
मल सांवर डंड़िया भयल रे असवार
छ छ म कहार डंड़िया में लगि गइलैं
आरे थाना कनउज की हो बजार
बारह जोड़िया मै सिंघवा बाजं
तेरह जोड़िया बजल करताल
चउदह जोड़ी धंउसा बाजं
आरे बलको बरन जोग कै नाहि
एहर बीर लोरिक सुना हाल अगवा
चाउर लदत जौ हउवै बसमतिया
रहर मोर मुंगउवै की दर दर दाल
घीउ बैनन कै बाबू हो लदवाय दें ऽऽऽऽ
आरे तेपर नेबुलन क लदल अचार
आटा मै दउदिया बाबू रे लदवाय दे
तेल मसाला धनिया लदि गौ
सारी मैं बरतिया बलको रे सजवा दे
तब बीर लोरिक क सुना खेलवाड़

बीर लोरिक की सजधज व उसकी खाँड का वर्णन

पेन्है लाग निरखी जब गलवा में
आरे गोड़े दोहरी खीचैं लैं तमाच
आल्हा गूंज कर जब पनहो जं ऽऽऽऽ
आरे पट्ठा एड़वन ले लैं रे चढ़ाय
सात परद कै तवा पितरिन कै
आरे पट्ठा छतिया ले लैं बन्हवाय
बायें त बगल में जौ ओड़न बान्है
आरे दाहिने घोंचि के बिजुलिया खांड़
दबलस मुठिया जब ओड़ने कै
पोरिसन लबर रे गइल बुमुत्राय
झर झर झर झर झरैलै चुनर जं
टूटि टूटि गिरने में लागलै अंगार

दाबै मुठिया जब बिजुली कै
जाके बलको बादर में दरेरा खाय

दुर्गा, बनसत्ती, डीह तथा अन्य देवियों की पूजा

सोरह सै कंटाइन सुमिर
आरे सोरह सै मरी रे मसान
सोरह सै दलवा मै छोहरी सुमिरं
आरे जवन रूवां रे रूवां असवार
ब्रह्माइन बोहवा कै सुमिरं
आरे संवरू दादा कै रे पुजमान
गोरये डीह गाइन कर सुमिरं
आरे गोरया उछरै अठारह हाथ
बायें बनसत्तिया के सुमिरं
आरे दहीने सुमिरै दुरूगा माई
छत्तीस कोट कें देवता संगै
वीर लोरिक के भइलैं रे तइयार
सजल बरतिया मोर गाँव गउरा से
लेके थाना सोहवल की चलैं ले बाजार
अरूवा लकड़िया मै मरूवा बाजै
डीह ठाकुर लकड़ो मै देलैं रे बजाय
पाछवा लकड़िया जुझार बजावै
ओकरे पीछे बियहुती लकरो मै दे लैं रे बजाय

हरिण तथा हरिणी की बातचीत

हरिनी हरिनवा जो जंगल में चरै
हरिनी के पजरे हरिन गयल रे नियराय
एइसन हरिनिया बाजा बाजै
आरे जहां कान दीहल बा नाहिं जात
तब हरिनी हरिना से कहै
आरे जीव लेके चलबा रे पराय
अब नाहीं जिनगी बची रे जगल में
कवनो मुदई जौ आवै ले तोहार
एतनी बात हरिना जब सुनै
हरिनी हरिना मै देबै लगै लैं जवाब

केहू नाहीं मुदई आवत हरिनी हं
तनी एकर बतिया मानै लू हमार
एही बोहवा में जवन मल सांवर रहलें
ओनही के होथे जाला रे बियाह
ओनही क बोहे क बरात सजल हउवै
धउंसा बाजै सांझ बिहान
एतनी बात हरिनी कै सूनै
हरिना से हंस के मै करैले जबाब
ए बुढ़ऊ क बियाह होत हउवै
जवन माला जपलें सांझ बिहान
तब हरिना हरिनी से कहै
हरिनी तू मनब्यु बात हमार
एही कोने कत्तो गढ़ सोहवल हउवै
सोहवल की जातै हउवें रे बाजार
सोहवल की जातै हउवें रे बाजार (पुनरावृत्ति)

हरिण द्वारा भिमली की मृत्यु और सतिया के विवाह का संकेत

सोहवल में राजा बमरी हउवै
सत सत बेटवा ले लें रे अवतार
दसवंत तपल बाड़ै रे दसमासा
भिम्हली जो तपलै तेरहवाँ मास
पंच पंच बान ब्रह्मा मोरि दे लें
बनवा टरै रे जोग कै नाय
अइसे अइसे मनसेधू जनमल बाड़ैं
हम्मै मालूम परत हौ हरिनी
एतना लोग कै गाँव सोहवल में
आरे बलको गयल रे बियाह नियराय
मालूम पड़त बा मरन मल दसवंत कै
सतिया कै गयल बाड़ै ए ह ऽ ऽ ऽ रि ऽ ऽ ऽ नि ऽ ऽ या
आ बियहवा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ नियरे ऽ ऽ ऽ ऽ राय [१३]

बारात का रात दिन चलना

हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं
सुना हाल अंगवां कै

नौ नौ गंडक लोग तोरन लागे
तेरह भिउली कै तोरै लै पहाड़
रात चलैं ले दिन धावन लागैं
आरे कत्तौ कुचवन करैं लैं मोकाम
अगवां अगवां धोबी जाला
पिछवा बाराति रेवरली जाय
जब सोहवल धोबिया नियरायल
बाराती से देबै लगलै जवाब
हम अगवां अगवां नाहिं भाई चलब
नाहिं बची रे जिनिगिया हमार
हम अगुवा बलको हो हइं
पहिलै सोहवल में मारल जाबै
नाहिं कोटि बचो रै जिनिगिया हमार
तब बरतिहा धोबिया से कहैं
हमके काहे ली अइला चढ़ाय
अगवां अगवां फिन धोबी चलल
आरे राजा बमरी के मोती रे सगर के घाट
जब सगड़े पर धोबिया पहुँचं
जब सगरे पर धोबिया पहुँचल (पुनरावृत्ति)

दुबरी पंडित का साइत देना व बरातियों का तम्बू डालना

आरे बलको तमुवा दे लैं रे गिराय
दुवरी बाबा के लोरिक ललकारै
आरे बाबा मनब्या बात हमार
तनी एक पतरवा आपन खोलि दं
हमके तू साइत देब्या रे बताय
डेरा कै गिराय देइं जब सगरे पर
पंडित बलको पतरा दे लैं रे फइलाय
साइत से तमुववा लगलैं रे गड़वावै
पहिले तमू सुरजन डोमै के पर लें
आरे पहिले डोम सुरजन के तम्मू परलै (पुनरावृत्ति)
आरे तब बंठवा क तमुवै दे लैं रे गिरवाय
जेमन अउसा घउंगा गांजल हुउवैं
आरे धोबिया के तमुये देलैं रे गिरवाय

परि गयल तम्मू जब देवसी कं
आरे निज की मोती रे सगर के घ.ट
नौ नौ कुतिया तमुवा में बइठल
नौ धनुवा टाँगल तम्मू में बाय
परि गयल तम्मू जब सिवगड़ कं
आरे सिवगड़ सुतलै गोड़ फइलाय
परि गयल तमुवा ऽ ऽ ऽ मल साँवर कं
आरे माला जपलईं सांझ बिहान
परि गयल तम्मू जब लोरिक कै
छत्तिसौ जाती सूतति बाय
छतिसौ जतिया सूतति बाय (पुनरावृत्ति)
सब कर तमुववा सगड़वा पर गड़ि गै
चाउर खुलल बलको रे बसमतिया
रहर मुंगववै की दर दर दाल
घीव बैनन कै रे कटि गइलैं
आरे तेपर नेबुलन के कटलै आचार
आटा दउदिया रे कटि गइलै
नीमक कटल बलको रे चटकार
तेल मसाला धनिया कटि गौ
टिकलै मोती रे सगर कें घाट

भोजन बनाने के लिए अहरा जोड़ा जाना तथा धुवां उठने से चिन्तित सतिया का शिव मन्दिर जाना

सबकों अहरा बलको देला
सगरे पर धुंवा रे गयल उधियाय
सतिया गोपी बइठल सोहवल में
ताकति बाड़ै ओसरियै लगाय
देखैले धुंवा जब रे सगरे कं
आरे बलको गोपिया गइल घबड़ाय
कवनो दसवंत भइया कै बंगला
फुंकलैं मोती रे सगर के घाट
कवनो मुदई सगरा पर आयल हउवैं
एइसन धुंवा रे गयल र उधिराय
देखा दिनवा बलको बीति गयल हौ

रतिया बलको बीतल हो जं
होत सबेरा गड़ सोहवल में
आरे बलको सतिया गइल रे घबड़ाय
चार सखी अंगवा, चार सखी पिछवां ऽ ऽ ऽ ऽ
बीचवा में सतिया चलति बलको बाय
हाथ में डलई लटका के सिव कै पूजा करै मोरि म ऽ ऽ इ ऽ ऽ या
आ सगरवा के नारे घा ऽ ऽ ऽ ट [१४]

शिव द्वारा सतिया के विवाह व बमरी की मृत्यु की भविष्यवाणी

हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम
सुना हाल अगवां कै
आरे सती जब सगरे पर आईल
सगरा में रचै लगल नहा ऽ ऽ ऽ न
नहान रचि के गोपी पीतामर ले लै चढ़ाय
लेके डलई सिव के मंदिल में गईल
आरे एहर जल कपारे पर दै कै
माला फूल दे लै चढ़ाय
धइले ध्यान सिव बाबा पर
सिव बाबा परघट होई जाय
जवन मंगन सतिया तूं मांगा
उहै मांगन पूरा करी तो हा ऽ ऽ ऽ र
तब सतिया सिव बाबा से रूयं
आरे बाबा मनब्या बात हमार
लाल लाल मैं तमुवा देखल
लालै लालै लगल बा कनात
सुन्दर सुन्दर मनसेधू देखं
आरे हम मोती रे सगर के घाट
एक भेद बता द्या बाबा
राही हउवै बटोही सूबा टिकल उमराव
खर्चा चुकल सगरे पर हउवै
कि ये डेरा दे लैं गिराय
ई कहवां का राजा आयल वाड़ै
टिकलैं मोती सगड़ के घाट
तब सिव बाबा बोलन लागैं

आरे सती मनब्यु बात हमार
एही कोने गढ़ गउरा हउवै
आरे बलको रारी रे सिंगिन कर बार
जवन धोबी तोहार बलको गइया चरवलै
बिजवा के लड़की से भयल रे बियाह
तवन धोबी ले कै गउरा गइलै
तवन धोबी आजु कइलै अगुवाई
खइलै हउवै रे अगुवई क भात
करिना बताउर राजा बमरी कं
आरे धोबी खइलै रे अगुवई क भात
एहर ले कै बरात सगरै पर टिकल
निज की मोती सगर के घाट
हम्मै मालूम पड़त बाडै सतिया
आरे दसवंत कै मरन रे मोरी र ऽ ऽ नि ऽ ऽ ऽ यां
आ गयल ह नियरे ऽ ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ य [१५]

सतिया की आज्ञा पर हरदोई नाग का बारात को डँसना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां
सुना हाल अगवां कै
आरे जब सतिया मंदिल से निकलल
अपने सोहवल के चलै ले बजार
जब सतिया सोहवल में गई ऽ ऽ ऽ ल
आरे बंगले में सतिया के बढ़लि अबसोस
कि मइया मोर मारल औ जइहैं
आरे डोंगा डूबी बलको जाला रे हमार
होत बा सबेरवा जौ गांव सोहवल में
आरे सती उठल जो बंगलवा से बाय
भागल भागल सोहवल से सतिया मै जाला
हरदोई क मान गयल बाडे नियराय
नगवा जौ नगवा सती गोहरावै
हरदोई जो भइले रे डेवढिया पर ठाढ़
कवन मैं करजिया सती तोहके परं
हमरे तू अइल्यु पवन दुवार
तब सतिया हरदोई नाग से कहै

आरे नाग मनब्या बात हमार
एक ठं आचरज सोहवल में भइलै
आरे कुं अचरज गयल बलको रे देखाय
आइल बा बरतिया बाबू रे सगड़ा पै
आरे टीकल मोती रे सगर के घाट
भइया दसवंत मोर मारल जइहैं
सोहवल में डूबि जाई रे डोंगवै हमार
तनी एकर हरदोई सगड़वै पै जातं
सकलइ मोर मुवाइ द बरात
सकल बरतिया सगड़े पर मरि जइहैं
सोहवल में भइया बची रे हमार
एतनी बात हरदोइया सुनि कं
आरे बलको मानी में गयल रे घबड़ाय
एतना पाप नाहीं सती हम करबै
हमकै लिखत हौ पूरे रे अपराध
तोहरे कहलवा सती ना करबै
आरे सतिया जरि कै भसम होइ जाय
हमरे राज से बलको भागा
कोटिउ नाहीं जिनगी छोड़ब रे तोहार
निकल जा नाग जब रे मनिया सें
आरे नगवा मोर गयल रे घबड़ाय
तोहरै कहलवा मै सतिया करबै
आरे थाना सोहवल की करब रे बजार
बाकी जेतना मनसेधुवै कै मुआय देब
फिनि नाहीं जौ घालब रे जिआय
हमहीं जिआय देब जब मुर्दन कें
हमरै जिनिगी नाबची सोहवल की रे बजार
जा सती तोर मैं कहल कइ दे बै
सतिया घुमि के पवन जो गइल रे दुवार
एहर हरदोइया नाग निकलल मानो से ऽ ऽ ऽ
आधी रात जो गइल नियराय
हरदोई सगड़ा कै चललैं
सतिया कै एहर सुना खेलवाड़
सतवा घुमाय के सगड़वा पै मारं

सब लोग सूतै लगलैं गोड़ फइलाय
पहिले तमू सुरजन डोमवा क परलै
आ। रे नाग पजरै गयल रे नियराय
तब सुरजन डोमै के डसलैं
उहवां से नगवा निकसल बं
जाके बठवा चमारे के तमू में डंसि लेल्या
उहवा से नगवा निकसल बाय
जाके बंठवा चमारे के तमू में डंसि लेल्या
उहवां से नगवा निकसल बाय (पुनरावृत्ति)
जाके धोबिया के तम्मू नगवइ डंसलस
उहवां से नाग निकल हउवै जात
तब देवसी के तम्मू में डंसलस
सिवगड़ कै तमुवा गयल रे नियराय
ओन के जाके सिवगढ़ के तमुवा में डंसलं
उहवां से नागै निकसल बाय
भागल मलसांवर के तम्मूं
जाइके मलसांवर के तमुवा में डंसल ऽऽऽऽ
उहवां से नाग घूमति बलको बाय

नाग का लोरिक के तम्बू में जाना

भागल गयल वीर लोरिक के तमू में
सबके धीरे धीरे डंसति बाय
सारी मै बरतिया सगरवै पर डसलं
लोरिका के पजरे गयल रे नियराय
बायें त सूतल बाड़ै बनसतिया मं
आरे दहीने सुतैलै दुरुगा माय
तेकरे बीचे मोर अहीरे गउरा कं
आरे जेकर लोरिक रे बघेला नाव
एहर नगवा बाड़ा घबड़इलै
अब हम कवनै करी रे उपाय
दूठे जनमवा जो सूतल बानी
हमकै पूरे लिखो रे अपराध
उपरा के फनवां जो नगवा लगावं
उपरा के फनवां जो नगवा उठावै (पुनरावृत्ति)

निचवां के मउर आपन लटकावै
लोरिक क डंसै बदे चललै
तबले बनसत्ती टप दें जागि गइलीं
बारि के लुकवा जो मुँहे में लगावै
आधी फन नगवा के जरि गइनीं

हरदोई नाग का सोहवल में आना

आरे नाग बलको चलै ले पराय
भागल नाग गइलै सोहवल में
आरे सती मनब्यु बात हमार
अब ना जिनिगिया बची ए सतिया
तब ले मैं सतिया दे लै रे सुहराय
एहर नगवा सभै डसि देहलं
सकल मरल बाड़ै रे बरात
एहर सतिया पूछत नगवा से
हरदोई जो मनब्या बात हमं
सब मुरूदा मर गइलै सगरे पर
कोई जिन्दा लौकत नहिं बाय
एतनी बात जब नागै सुनलं
आरे सती मनब्यु बात हमार
सारा बरतिया सगरे पर डसली
सब मर गयल मोती रे सगर के घाट
तब सतिया कहलस सच तू बतावा
झूठ बात हमसे जिन कहा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
तब नाग कहलस ए सती ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
सबके डसि देहलीं
एक ठे बड़ा मोट सा सूतल
ओके डंसे गइलीं
एक ठे बुढ़िया बारि के लुक्का लगवलसि
आधी फन जरि गइं, आरे हम चलली पराय
तब सतिया कहलस
सबके हां डंसि का कइल्या
निज गै छोड़ल्या हर दो ऽ ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
आ मुदइया ऽ ऽ ऽ ऽ ना ऽ ऽ ऽ रे हमा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र [१६]

आरे निकल के पालकी से जग्गू बंजार
लदवाहन के पास में गइलैं
कहलैं बाबू सारा धन लूटल मोर गइलें
बरधी लूटल गइल तोहार
उहै ले जाके तम्मू में गंजले ह
जगुवा हालो हालो परायल जं
जब फाटक पर पहुँचल तम्मू के
जग्गू बनजारा देवै लगल अवाज
चोर चंडा ऽ ऽ ल भूत बैताल
आरे हरे बरधी लूटल हमार
तोके डर तनिको ना लागल
तनिको न गइल्या डेराय
जल्दी भेद बताव्रा
आ सगरे पर जुलुम भइल बरियार

लोरिक द्वारा बारात के मरने की सूचना देना तथा विपत्ति दूर करने की अभ्यर्थना करना

बोलत हौ अहीर मोर गढ़ गउरा कै
आरे बाबू मनब्या बात हमं
हमहन दू भाई जनमल गउरा में
मल सांवर लोरिक परल बा नांव
करै मैं बियहवा भइया का अइलीं
आरे निज की सोहवल की रे बाजार
सकल बरात सगड़ पर मरि गइलैं
भइया मुवल हउवैं रे हमार
परल बिपतिया जग्गू हो हमरे पं
तनी एकन काटि देब्या बिपतिया हमार
एतनी बात जगुवा मोर सूनलं
बड़ा संगी मल सांवर रहलै
हमकै नेवता ना देलैं पठवाय
हमहूँ बरात सोहवल में कइले होइत
बाकी एक बात लोरिक संका हउवै
इहै तिलंगिया बछवा सांवर

कहवां लदवले हउवा जात
एकर भेद तू हम्मैं रे बताय द्या
चिन्ता बढ़ल रे बदन में बाय
तब लदवाह मोर बोलन लागें
आरे बाबू मनब्या बात हमार
अगोरियै से बरधी कै लदले बाड़ीं
आरे ले के हरदी की जाबै रे-बाजार
तोहार कहाँ भइया घर बलको हउवै
एइसन हमसे करैल्या सवाल
बोलत हौ अहीर मोर गढ़ गउरा कै
आरे बाबू मनब्या बात हमार
गउरइ ओतन गउरा गोतन
आरे गउरा जनम भयल रे बुनियाद
टिकई बुन कै सिरजल बाड़ी
आरे खोइलनि कोखिया ले लैं रे अवतार
एक बाघिन दू दू डंवरू जनमल
आरे दूनो जनमल दइब कर लाल
एक जने गइया रे बोहे में चरवलैं
हम गउरा घुमि के करैं ले ठकुराय
धोबिया मतंगिया मोर करैं लें अगुवई
आरे धोबी खइलै ह अगुवइन क भात
करिना बताउर राजा बमरी कै
आरे जेकर सत्ती रे मदाइन नांव
बेटवा बताउर रे राजा बमरी कै
आरे जेकर दसवंत भिमलिया नांव
ना सारन से भेंट भइल हौ
नाहीं मुंहे देखि के चलल तलवार
नाहीं त बियाह मोरे भइया के भइलै
नाहीं लेके गउरा कै गइलीं रे बाजार
सकल बरात सगड़े पर मरि गइलं
आरे भइया मुवल हउवै रे हमार
परल हौ बिपतिया सगड़ें पर बाबू
कोई नाहीं लागति हउवै रे सहाय

तनी एकन बिपति सगरवै पर काटि द्या
आरे जिनिगी नेकी मानब रे तोहार
आरे तनिक एकन बिपतिया सगडवा पर काटि द्या
एतनी बात जब लोरिक कहलैं
आरे लदवा जरि के भसम होई जाइ
हम हन क कइल नाहीं बाबू होई
आरे हम हरदी की जाबें रे बजार
तेज पात धनिया बीर लोरीं
ते जाके तमुवा में अपने देलैं रे गजवाय
सारा बरधी हांकि ले बलको गइलं
तमुवा में खूटन के देलै रे बन्हवाय
एहर लदवा सगड़े पर घबड़इलं
लोखै लगल पातीं
आरे धावन संडिनी भयल रे असवार
लेके पतिया अगोरिये के चललं
आरे थाना गइलैं रे अगोरी की बजार
लगल बा कचहरी जब जगुवा कै
आरे बाबू मनब्या बात हमार
आरे सारो बरधी बेरि गइल
बेर गयल बाड़ैं रे भ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
आरे धनवां नारे तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [१७]

जग्गू का पालकी पर सोहवल जाना

आ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ आरे लगल कचहरी जग्गू बनजारा कै
कहारन के हुकुम देलैं रे लगाय
छ छ कहार का पालकी साजत बाय
आरे जग्गू पालकी भइलैं असवार
लेके पालकी चलैं ले सोहवल के
नौ नौ गंडक जगु तोरन लागे
तेरह भिउली कै तोरै पहाड़
आरे ए भाई तेरह भिउली के तोरै पह.ड़ (पुनरावृत्ति)
लेके जगुवा आपन डांड़िन
पहुँचल सोहवल के री बजार
जब सगड़ पर डांडी जाके छीपल

कहवां लदवले हउवा जात
एकर भेद तू हम्मैं रे बताय द्या
चिन्ता बढ़ल रे बदन में बाय
तब लदवाह मोर बोलन लागें
आरे बाबू मनब्या बात हमार
अगोरियै से बरधी कै लदले बाड़ीं
आरे ले के हरदी की जाबै रे-बाजार
तोहार कहाँ भइया घर बलको हउवै
एइसन हमसे करैल्या सवाल
बोलत हौ अहीर मोर गढ़ गउरा कै
आरे बाबू मनब्या बात हमार
गउरइ ओतन गउरा गोतन
आरे गउरा जनम भयल रे बुनियाद
टिकई बुन कै सिरजल बाड़ी
आरे खोइलनि कोखिया ले लैं रे अवतार
एक बाघिन दू दू डंवरू जनमल
आरे दूनो जनमल दइब कर लाल
एक जने गइया रे बोहे में चरवलैं
हम गउरा घुमि के करैं ले ठकुराय
धोबिया मतंगिया मोर करैं लैं अगुवई
आरे धोबी खइलै ह अगुवइन क भात
करिना बताउर राजा बमरी कै
आरे जेकर सत्ती रे मदाइन नांव
बेटवा बताउर रे राजा बमरी कै
आरे जेकर दसवंत भिमलिया नांव
ना सारन से भेंट भइल हौ
नाहीं मुंहे देखि के चलल तलवार
नाहीं त बियाह मोरे भइया के भइलै
नाहीं लेके गउरा कै गइलीं रे बाजार
सकल बरात सगड़े पर मरि गइलं
आरे भइया मुवल हउवै रे हमार
परल हौ बिपतिया सगड़े पर बाबू
कोई नाहीं लागति हउवै रे सहाय

तनी एकन बिपति सगरवै पर काटि द्या
आरे जिनिगी नेकी मानब रे तोहार
आरे तनिक एकन बिपतिया सगडवा पर काटि द्या
एतनी बात जब लोरिक कहलैं
आरे लदवा जरि के भसम होई जाइ
हम हन क कइल नाहीं बाबू होई
आरे हम हरदी की जाबें रे बजार
तेज पात धनिया बीर लोरीं
ते जाके तमुवा में अपने देलैं रे गजवाय
सारा बरधी हांकि ले बलको गइलं
तमुवा में खूटन के देलै रे बन्हवाय
एहर लदवा सगड़े पर घबड़इलं
लोखै लगल पातीं
आरे धावन संडिनी भयल रे असवार
लेके पतिया अगोरिये के चललं
आरे थाना गइलैं रे अगोरी की बजार
लगल बा कचहरी जब जगुवा कै
आरे बाबू मनब्या बात हमार
आरे सारी बरधी बेरि गइल
बेर गयल बाड़ैं रे भ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
आरे धनवां नारे तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [१७]

जग्गू का पालकी पर सोहवल जाना

आ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ आरे लगल कचहरी जग्गू बनजारा कै
कहारन के हुकुम देलैं रे लगाय
छ छ कहार का पालकी साजत बाय
आरे जग्गू पालकी भइलैं असवार
लेके पालकी चलैं ले सोहवल के
नौ नौ गंडक जगु तोरन लागे
तेरह भिउली कै तोरै पहाड़
आरे ए भाई तेरह भिउली के तोरै पहाड़ (पुनरावृत्ति)
लेके जगुवा आपन डांड़िन
पहुँचल सोहवल के री बजार
जब सगड़ पर डांडी जाके छोपल

आरे निकल के पालकी से जग्गू बंजार
लदवाहन के पास में गइलें
कहलें बाबू सारा धन लूटल मोर गइलें
बरधी लूटल गइल तोहार
उहै ले जाके तम्मू में गंजले ह
जगुवा हाली हाली परायल जं
जब फाटक पर पहुँचल तम्मू के
जग्गू बनजारा देबै लगल अवाज
चोर चंडा ऽ ऽ ल भूत बैताल
आरे हरे बरधी लूटल हमार
तोके डर तनिको ना लागल
तनिको न गइल्या डेराय
जल्दी भेद बतावा
आ सगरे पर जुलुम भइल बरियार

लोरिक द्वारा बारात के मरने की सूचना देना तथा विपत्ति दूर करने की अभ्यर्थना करना

बोलत हौ अहीर मोर गढ़ गउरा कै
आरे बाबू मनब्या बात हमं
हमहन दू भाई जनमल गउरा में
मल सांवर लोरिक परल बा नांव
करै मैं बियहवा भइया का अइलीं
आरे निज की सोहवल की रे बाजार
सकल बरात सगड़े पर मरि गइलैं
भइया मुवल हउवैं रे हमार
परल बिपतिया जग्गू हो हमरे पं
तनी एकन काटि देब्या बिपतिया हमार
एतनी बात जगुवा मोर सूनलं
बड़ा संगी मल सांवर रहलै
हमकै नेवता ना देलैं पठवाय
हमहूँ बरात सोहवल में कइले होइत
बाकी एक बात लोरिक संका हउवै
इहै तिलंगिया बछवा सांवर

तोहरे भइया मलसांवर हमके बोहे में देहलैं
जवन चौकड़ी भरैला अठारह हाथ
तब जानबि कि लोरिक टिकल मोती सगर के घाट
मरलेसि टिकोरी तिलंगिया बछवा कें
बछवा चउकड़ी भरै अठारह हाथ
ओही के संगै लोरिक उड़ि गइलै
तब ठोके पीठ जगुवा लोरिक कै
लोरिक मानत हईं मोती रे सगर के घाट

मुरदों की रक्षा के लिए लदवाहों की नियुक्ति

जवन बात होय तवन करवाय देंईं
कहलसि भाय हमार बरतिहा अगोरवाय द्या
हम सूति लेइं मोती रे सगड़ के घाट
एक एक मुरूदन पर दू दू लदवाह लगावै
आरे लदवाहन ले जग्गू बनजारा समुझावै
जेकर कउवा आँख निकाल लिहैं
तोहार आंखि निकालि के ओकरी आंखी में नवा देबै
जेकर सियार लाद फार लीहैं
तोहार लाद फरवा के ओकरी लादी में नवा के टंकवा देबै
लदवाह कुल गइलैं घबड़ाय
न करै सुतलैं में कउनों के फारि दिहलैं
सगरे पर गइल जिनिगिया हमार
दिनवां हांकैं लगलैं कउवा
रतिया में हाकैं लगलैं सियार
बड़ा जोर कउवा धइलैं
और बड़ा जोर सियार लगलैं
लदवाह गइलैं बेकलाय
तब एक ठे लदवा ओमन से बोलैं
कि सभै जने मुरूदा बनि के सुत्ता
आ कउवा तमू में घुसि जब जालं
त मारा हकंन से पांखि टुटि जाय
कउवा तमू में हल गइलैं
मारे लगलैं हंकनन से पार पांख टूटि गइनी
कुछ निकल के चललैं पराय

भागल गइलैं सोहवल में सतिया से कहलैं
जेतना मुरूदा मुवल रहलैं
ओकर दुगुना रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया
आ भयल हउवै तइरे ऽ ऽ ऽ ऽ या ऽ ऽ ऽ र [१८]

सतिया द्वारा माया का सियार छोड़ना

आ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ सुना हाल अगवां कै
सतिया कउवा लुटा देलै
रात में सियार छोड़ति बा माया को बना कै
पहुँचल मोती सगर के घाट
सब सियार हुवां हुवां चिल्लाये लगलैं
तब लदवाह मुरूदा बनै लगलैं
सब मुरूदा बन के तमू मैं सूतलैं
जब सारा सियार तमुवा में हलि गइलैं
तब एक अलंगे से लदवाह ललकारै
घुसि गइलै मारै
मार हंकन से गोड़ टूटि गइलै
कोइ क पोंछ पकरि के उपारि ले लैं
कउनो चललै पराय
भागल गइलैं गढ़ सोहवल में
सतिया से कहलैं जेतना मुरूदा मूवल रहलैं
ओकर दुगुना भइलैं तइयार
एहर सतिया घबड़ाइल सोहवल में
एहर लोरिक सूतल अन्तः काल
आठ दिन बीति गइलैं
आरे दुरूगा पंजरे गइल रे नियराय
काहे बदे बचवा मो सूतति बाड़्या
तोर बलको अकिलि गइल बा घबड़
एतनो बरतिया जेकर मारि गइलीं
ऊ सूतल हौ टंगिया बलको रे फइलाइ
भइया पिठिया क़ा तोरे मरि गइलै
आरे भइया मल सांवर मरि गइलै (पुनरावृत्ति)
ऊपर गइलि सोरिया बलको रे तोहं
उठि के लोरिक बलको बइठ गइलैं
दुरूगा से करने में लगलैं जबाब

दुर्गा के आदेश पर लोरिक का योगी वेश धारण करना

ई बतावा मा ऽ ऽ ऽ वा
आल्हर नींद जगवलू पीड़ा बहुतै बाड़ै बुझं
अब हमरी उपाय कवनो नाहीं लगत हउवै
हम कवन जो करीं रे उपाय
दुरुगा उठाय के लोरिक के बइठावैं
तब का दुरुगा करै ले उपाय
माया क सारंगी बनावै
माया क कोथरी घलै ले बनाय
माया को कमंडल बनावै
माया को मृगछाला करै लै तइयार
माया के झोली बनावै
माथे में लोरिक के देलै भभूती
खाड़ा तिलक मोइ दे लैं लगाय
गर में गुदरी पहिरावै
कान्ही में झोली देले रे लटकं
कांखी में मिरिगछाला
हाथे कमडल देलैं थमाय
हाथे में सरंगी थम्हा दे
तनी एकर भजन तू घाला रे सुनाय
तनी एक सरंगिया तू बचवा बजाय द्या
आरे जेमन छत्तीसो बेधति बाड़ै राग
अइसन भजन लोरिक मोर गावै
चिड़िया चुनमुन मोहित होइ जाय
बायें हंसति बाड़ै बन सतिया मं
आरे दहीने हंसै ले दुरुगा माय
एइसन जोगी भयल बीर लोरिक
आरे जइसे उयल रे दूइज कै चाँद

लोरिक का सुहवल जाना व बमरी के कुएँ पर बैठकर सारंगी बजाकर भजन गाना

तब दुरुगा लोरिक के समुझावै
आरे बचवा मनब्या बात हमार
चला चला गउवां गड़ सुहवल में
राजा बमरी के पुरुब बगल में

बड़का इनारा खन्नल हउवै
जेम्मन चार घाट बनल बाड़ै
जवने घाटे गोड़ लटका के बइठबा
ओहर त बचवा पानी रही
तीन घाटि बलको जाई रे झुराय
एतनी बात बोर लोरिक सुनि कें
आपन पैंड़ा ले लैं रे सुधियाय
भागल पुरुब बगल में गइलैं
बमरी के इनरवा गइलै रे निअराय
जाके गोड़ लटका के बइठै
आपन सरंगिया घालैं लैं बजाय
भजन गावत जब इनारे पर हउवं
एहर क सुनि लेब्या खेलवाड़
आधी रात में दुरुगा उठल
सोरह सै कंटाइन ले ले
आरे सोरह सैं मरी रे मसान
सोरहे सैं दल छोहरी लिहलें
आरे जवन रुवैं रे रुवां असवार
ब्रह्माइन बोहवा कै ले लैं
आरे संवरू दादा कै रे पुजमान
गोरया डीह गाइन के ले लं
आरे गोरया उछरे अठारह हाथ
बायें चलल बा बनसतिया मं
आरे दहीने चलै ले दुरूगा माय
आधो रात में सुहवल गइनीं
ताल सोखैंनी पोखर
आरे कुवां मों सोखन लागैं ले ईनार
घुमि के गांव सोहवल में गइलीं
गगरिन क पनिया देलीं रे ढरकाय
कुंडन क पानी रे ढरकावै
बटुअन क पानी देलीं रे सुखाय
सारा पानो जब पी गइलीं
सोहवल क पानी गयल रे झुराय
होत सबेरा थाना सोहवल में

सोहवल कै लोग उठल देखैं
निज की मोती रे सगर के घाट
भिटवा के अरियैं आरी बइठ गइलैं
जब भींटा के ऊपर चढ़ि गइलैं
सगरे क पानी गयल रे झुराय
अपने में सान बुझावैं लोग
चला ओ सगरे पर पानी छुवल जं
उहां जब सगरे क पानी गयल रे झुराय
कहैं चल बड़के ताले में चलीं
उहवां क पानी गयल रे झुराय
एहर सोहवल में गोपी उठि के
अंसवारी बंसवारी ढुरति मैं बाड़ी
कत्तो पानी ना हउवै देखात

पानी सूख जाने से गढ़ सोहवल की स्त्रियाँ चिन्तित

झंखै गोपी गांव गड़ सोहवल में
हमहन क धरम छूटल सोहवल की रे बजार
एहर मनसेधू छ छ घरी दिन चढ़ि गइलं
आरी आरी घूमति जो हउवैं
कोई सोहवल नाहि हउवै जात
बारह बजे के अमला में
आरे गोलिया गइल घबड़ाय
अपने अपने घुमि के लोग
आरे सोहवल की गइलैं बजार
दुआरि पर पट्ठा खड़ा होय के
अंगुरी क साना घलैं ले बुझाय
गगरी में पानी गोपी रखले होब्युं
तनी रख देब्यु धरमवा हमार
ओहर गोपी कहैं पानी ना हउवै
सइयां छूटल हो धरमवा हमार
केहू से केहू नाहिं बोलति हउवै
न केहू से मूंड़ी हिलावत हउवै
अंगुरी के सान बुझावति हउवै
आरे बलको गोपियै गइलीं रे घबड़ाय

अपने ओखरिया से मूसर उठा कें
दू दू मूसर देलीं चलाय
आरे बजर परो तोहकै लोगै
आरे बलको परो बजर कै घान
ताल पोखर छोड़ि देल्या सामी
चल अइल्या अपनें पवन दुवार
कउनो अनुभो सोहवल में आइल हौ
कउनो भूतवा मो आयल रे सयतान
का दो कवन दईत आ गइलैं
पानी सोहवलि के पी गइलैं बाजार
हम हन के धरम छूटि गइलै समिया ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे अब मरि जायल जाई रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ या
आ सोह ऽ ऽ वलि की रे बा ऽ ऽ ऽ जा ऽ ऽ ऽ र [१६]

राजा बमरी के किले में घबड़ाहट — सोलह सौ गोपियों का कुएँ पर जाना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ हो राम
हां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ आं सुना हाल अगवां कै ऽ ऽ ऽ ऽ
सारा पानी सूख गयल सोहवल कै
सब लोगवे गयल रे घबड़ाय
हड़बड़ मच गयल राजा बमरी के किला में
सोरह सै सखी बलको सउंजा करत बाय
कि चला चला बड़के इनारे बमरी के
आरे बड़ा अमोघ पानी बाय
ओमन से पनियां घींचि ली आईं
आपन आपन धरम जो लेइं रे बचाइ
रेसमें क डोरिया म हाथे में उठाइ के
आरे सारा घड़िलै ले ली रे लटकाय
सोरह सै गोपिया मै गड़ सोहवल सें
आरे बलको इनरा जानी रे नियराय
तब दुरुगा लोरिक से कहै
आरे बेटवा मनब्या बात हमार
इहै सोरह सै गोपी आवै
आरे छाड़ि दीहैं बुधिया गियान
ईनरे पर गोड़ बचवा रखि दी हैं

आरे बिगड़ जाई रे धरमवा तोहार
बड़े जोर से बेटवा तड़कि जा जगते पं
गोपिये पर गोपिया गिरत रे भहराय
कुंड़ा में कुंड़ा बलको फूटि जाई
आरे तबले गोपिया गइनीं रे नियराय
तड़कल अहीर जब गढ़ गउरा कं
आरे रानी मनब्यु बात हमार
जगते पै गोपिया गोड़वा जो रखबूं
आरे तोहके देई देबैं रे सराप
बड़े जोर से लोरिक तड़कं
आरे गोपियै पर गोपिया गिरैनी भहराय
कुंडा में कुंडा रे फूटि गइलं

योगी लोरिक का गोपियों को सुहवल में पानी सूखने का कारण बताना

आरे गोपी हाथ जोड़ खड़ीं बाय
बाबा तनी मोरि बतिया माना
सोहवल क पानी गयल रे सुखाय
कउनो बात बाबा तूं जानत होबा
हमहन के तू कुछ देबा रे बताय
बोलत हो अहीर मोर गढ़ गउरा कं
आरे जेकर लोरिक रे बघेला नांव
बारह बरिसिया क तिथि जानीं ला
आरे मोर जोगी परल हौं नांव
तब कहै बाबा मोर पनियै सुखायल
कउनो कारन पनिये गयल हो सुखाय
मरत बाड़ी मै गाँव सुहवल में
आरे छुटि जाला रे धरमवां हमार
बोलत ह बेटउवा जब बुढ़िया कं
आरे जेकर लोरिक रे बघेला नांव
सुनिला गोपी बलको इनारे
तनी एकन बतिया मानेल्यु हमार
तोहरे सोहवल बड़ा पापै भइलै
आरे उहै पाप उदै होइ जात
सुनत बाड़ी गउवां तोरे सोहवल में

आरे राजा बमरी भयल तइयार
छत्तीस जाति के करिला गांव सोंहवल में
आरे बलको बारे रखलें कुँवार
नाहिं देसे में ससुर मैं कहावै
नाहिं लड़िका मोर कहइहैं सार
दूसरे देस क लड़िकी ले अइबै
आपन नाहिं वियह मुलक संसार
ठनल बा परनिया राजा रे बमरी कं
आरे तउनो बमरी क सुना खेलवाड़
ओही पपवा से गोपी सोहवल
आरे तोरे पानी गयल रे झुराय
ओही पपवा से गोपी सोहवल
आरे तोरे पानी गयल रे झुराय (पुनरावृत्ति)
जनमल बा बिटिया राजा बमरी कै
आरे जेकर सती रे मदाइन नांव
सतवा क गोपिआ जे लोटा रे बनाई
सत कै डोरी घली रे बनाय
सतवा से आइके पानी रे पिआय दें ऽऽऽऽ
पानी खुलि जाई सोहवल की रे बजार
सोरह सै गोपिया उहां से घुमि देहलीं
आरे भागल सोहवल की जानी रे बाजार
लगल बा कचहरी राजा रे बमरी कं
आरे गहुअरि झूमि के लगल बा दरबार
जाके गोपी कचहरी में सारा खड़ी भइलीं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
बड़ा पाप सोहवल मैं उदय भइलै
सोहवल कै पानी गयल रे सुखाय
क्वनो उपइया बाबू नाहीं लगत हउवै
तनी एकन बतिया माना रे हमार

गोपियों का राजा बमरी को योगी के बारे में सूचना देना तथा बताना कि सती द्वारा योगी को पानी पिलाये जाने पर ही जल की प्राप्ति सम्भव

ओही बड़के इनरवा पर बाबू
एक ठे योगी आयल बा

आसन लगा के बइठल हउवैं
आरे सरंगी बलको घले लं बजाय
ओनही से बाबू हमहन पूछले बाड़ीं
काहे बदे पनिया गयल रे सुखाय
तवन कहले हइयें बीर लोरिक जं
आरे बाबू उहैं तवन तवन कहलं बीर लोरिक जौं
आरे तनी मनब्यु बात हमार
तनी एकन बाबू सतिया के कहि देब्या
जोगिया के पानी देई रे पियाय
तप कइ लोटा बाबू रे बनाइ के
सतवन क पानी देई रे पियाय
तब पानी सोहवल में खुलिहं
आरे बमरी मो गइलैं रे घबड़ाय
अपन किला बलको छोड़ि देहलं
सतिया क किलवा गइलैं रे नियराय
सतिया गोपी बुरुजै पर बइठं
आरे ओंके आगम गयल बुझाय
बाबिल मोर कचहरी से आवत हउवैं
बुरुजे से गोपिया उतरल जाय
जाके फटके पर गोपी मैं खड़ी ह
बमरी के गोड़वा गिरें ले भहराय
कउने कारन बाबिल तूं कचहरी छोड़लं
काहे बदे पवन अइला रे दुवार
धीरे धीरे बमरी सतिया के समुझावें

बमरी द्वारा सतिया को सत का लोटा व सत की डोरी बना कर योगी को पानी पिलाने का आदेश

बिटिया तू माना बाति हमार
बड़के इनारे पर जोगी अइलं
आरे जाके पनिया तू देतू रे पियाय
सत कै बिटिया तू डोरी रे बनाय ल्या
सतवा के लोटा लेबू रे बनाय
तनी एकन साधु के तू पानी जो पियाय दं
पानी सुहवल की खुलो रे बजार

एतनी बात जब गोपिया सुनं
आरे बलको जो उठे लै घबराय
आउर त अकिलिया बाबुल घबडइं
आरे बाबिल मंदा पड़ल गियान
तोरे लेखे जोगिया आयल बाड़ें
हमरी लेखे मुड़इ भयल तइयार
आरे उहै दसवंत भइया के मरिहैं
अध जल में डूब जा ऽ ऽ ई रे मोरि म ऽ ऽ इ ऽ ऽ या
आ डोगवा ना ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [२०]

सती के द्वारा दसवंत की मृत्यु की आशंका प्रगट करने पर बमरी का क्रोध व दसवंत की अमरता का वर्णन

हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं
तब तड़कल राजा बमरी
भुजा लाल पियर होइ जा ऽ ऽ ऽ ऽ
बजर परौं बिटिया तोके परौ बजर कै धान
अम्मर होके दसवंत जनमल
खइले हउवै अमर कर भात
पांच बान ब्रह्मा मोरि दे लैं
आरे बान टरै रे जोग कर नाय
एक बान के मरलैं बिटियं
चउदह कोस लगै बनडढ़वा
सुलगन लागै रुख परास
सुरसर पानी खलबल खलबल
जेमन बलको उलटैं लें सोंइस घरियार
एक मुदई क कवन चलावै
मुदई मारि नइहैं दुइ चारि
जाके बिटिया पानी पियादं
तब सतिया गोड़े पर गिरै ले भहराय
ल्या बाबिल तोर कहल करत हइ
जाके पानी देबे रे पिअयं

सती द्वारा एक भुंजइन को सतीवेश में लोरिक को पानी पिलाने भेजना

सोरह गोपी संगे ले लै
माया क अपने रूप क भुंजइन क लड़की बना के

लोटा डोरी हाथे में थम्हा के
कहलस चला आगे जोगिन के पानी पिआवा
सोरह गोपी जब इनारा के पास गइनी
तब दुरुगा काने में कहत ह ऽऽऽऽ
कि ए बीर लोरिक उहै आवत हई
सतिया कै रूप पकाड़ कं
आरे छाड़ देनीं रे घरमवा तोहार

दुर्गा के संकेत पर लोरिक का सब को डांटना और वास्तविक सतिया के हाथ का पानी पीने का आग्रह

इन्हें डपटि दा, घूमि दा, इनसे कहि दा
कि पीछे आवत हउवै ओहि के हाथ के पानी पियं
गोपी जब पजरें आ गइलीं
तब बड़े जोर से लोरिक डपटै
गोपी तोरे हाथ क पानी नाहि पियं
पिछवा जवन आवत हउवै
ओहि के हाथ के पानी पियं
सोरह गोपी घूमि गइनीं उहां से
सतिया के पजरे गइलीं रे नियराय
ए सती बहिन बतिया माना
जवन उड़ अब सोहवल में कइल्यु
कुल जोगी तोर जानति हउवै
हुब हुब तोके देला रे बताय
हमहन के हाथे क पनिया न पीहैं
सतिया उहैं से देले रे लवटाय
अपने डगर धइलस इनारे कै
आरे बलको इनारा गइल नियराय
एहर लोरिक बइठल जगते पं
आरे एहर दुइ बिगहा रहि जाइ

कोढ़िन के रूप में आई हुई सतिया के हाथ का पानी न पीने का लोरिक का निश्चय

सतिया एइसन रूप बनावैं
अस्सी बरिस क भइल पुरनियं

एतनी बात जब गोपिया सुनं
आरे बलको जो उठे लै घबराय
आउर त अकिलिया बाबुल घबडइं
आरे बाबिल मंदा पड़ल गियान
तोरे लेखे जोगिया आयल बाड़ें
हमरी लेखे मुदइ भयल तइयार
आरे उहै दसवंत भइया के मरिहै
अध जल में डूब जा ऽ ऽ ई रे मोरि म ऽ ऽ इ ऽ ऽ या
आ डोंगवा ना ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [२०]

सती के द्वारा दसवंत की मृत्यु की आशंका प्रगट करने पर बमरी का क्रोध व दसवंत की अमरता का वर्णन

हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं
तब तड़कल राजा बमरी
भुजा लाल पियर होइ जा ऽ ऽ ऽ ऽ
बजर परौं बिटिया तोके परौ बजर कै धान
अम्मर होके दसवंत जनमल
खइले हउवै अमर कर भात
पांच बान ब्रह्मा मोरि दे लैं
आरे बान टरै रे जोग कर नाय
एक बान के मरलैं बिटियं
चउदह कोस लगै बनडढ़वा
सुलगन लागै रुख परास
सुरसर पानी खलबल खलबल
जेमन बलको उलटैं लें सोंइस घरियार
एक मुदई क कवन चलावै
मुदई मारि नइहैं दुइ चारि
जाके बिटिया पानी पियादं
तब सतिया गोड़े पर गिरै ले भहराय
ल्या बाबिल तोर कहल करत हइ
जाके पानी देबे रे पिअयं

सती द्वारा एक भुंजइन को सतीवेश में लोरिक को पानी पिलाने भेजना

सोरह गोपी संगे ले लै
माया क अपने रूप क भुंजइन क लड़की बना के

लोटा डोरी हाथे में थम्हा के
कहलस चला आगे जोगिन के पानी पिआवा
सोरह गोपी जब इनारा के पास गइनी
तब दुरुगा काने में कहत ह ऽ ऽ ऽ ऽ
कि ए बीर लोरिक इहै आवत हई
सतिया कै रूप पकड़ कं
आरे छाड़ देनीं रे धरमवा तोहार

दुर्गा के संकेत पर लोरिक का सब को डांटना और वास्तविक सतिया के हाथ का पानी पीने का आग्रह

इन्हें डपटि दा, घूमि दा, इनसे कहि दा
कि पीछे आवत हउवै ओहि के हाथ के पानी पियं
गोपी जब पजरें आ गइलीं
तब बड़े जोर से लोरिक डपटै
गोपी तोरे हाथ क पानी नाहि पियं
पिछवा जवन आवत हउवै
ओहि के हाथ के पानी पियं
सोरह गोपी घूमि गइनीं उहां से
सतिया के पजरे गइलीं रे नियराय
ए सती बहिन बतिया माना
जवन उड़ अब सोहवल में कइल्यु
कुल जोगी तोर जानति हउवै
हुब हुब तोके देला रे बताय
हमहन के हाथे क पनिया न पीहैं
सतिया उहैं से देले रे लवटाय
अपने डगर घइलस इनारे कै
आरे बलको इनारा गइल नियराय
एहर लोरिक बइठल जगते पं
आरे एहर दुइ बिगहा रहि जाइ

कोढ़िन के रूप में आई हुई सतिया के हाथ का पानी न पीने का लोरिक का निश्चय

सतिया एइसन रूप बनावैं
अस्सी बरिस क भइल पुरनियं

एइसन सत से माया बढ़ावै
एइसन सरीरे से माज चुवावै
धइलै रूप कोढ़िनी कै
हाथ में ठेंगुरी लगावै
इनारा के पास गइल नियराय
एइसन माया सती बढ़ावै
एइसन जोर महकति बाय
लोरिक जगत पर नकुला दबाबै
उठि के नीचे निहारै
कतों मुरुदा बलको परल अब बां
इनारा के पास गइल नियराय
एइसन माया सती बढ़ावै
एइसन जोर महकति बाय
लोरिक जगत पर नकुला दबावै
उठि के नीचे निहारै
कत्तो मुरुदा बलको परल अब बाय (पुनरावृत्ति)
सती पर नजर परल बीर लोरिक कं
आरे बलको लोरिक गयल घबड़ाय
दगन क मार धोबिया संगे कइला
आरे कइसन भउजाइ मिलत हमके बं
ई त बियाह हम नाहि करबै
चाहे भइया बारै रही रै कुँवार
तब ले सती जगते के पजरे
आरे गोपी मोर गइल नियराय
जगत पर गोड़ सतिया जब रखै
तनो जगत से कूदै लगलैं ललकार

दुर्गा का आकर लोरिक की गर्दन पकड़ना और सती के हाथ का पानी पीने का आग्रह

तब दुरुगा धइलेस गरदन बीर लोरिक कं
आरे बलको पजरे गइल रे नियराय
धइलै डगर जब बीर लोरिक कै
आरे बलको पजरे गइल रे नियराय
धइके गरदन जगतिया पर झोंकै

आरे बइठ जा पानी पील्या
जी जाय बरतिया तोहार
नकुला दबा के लोरिक बलको बइठं
आरे बइठत हउवैं रे असनवा लगाय
गोपिया जगतिया पर चढ़ि गइनीं
एहर लोटा डोरी घलैं ले बनाय
ईनारे में लोटा डोरी मोर छोड़लं
पानी घींच के कइलस तइयार
लागल पानी पियावै जोगी के
बइठा अंजुरिया बलको लग
डोल लोरिक नकुला दबावै हाथे से
एहर गोपी महकत बलको बाय
कइसे अंजुरी में लोरिक लगावैं
पानी अंजुरियै में छोडिति बाय
माया क मांज चुवा दे अंजुरी में
आरे लोरिक जगते से चललैं पराय
तबले दुरुगा जाइके गर्दन धइलं
आरे बेटवा मनब्या बात हमार
पी ला पानी जो एकरे हाथ कै
आरे भइया जी जइहै तोहार
तब झोंक के दुरुगा फिन जगत पर बइठ
आरे लोरिक बइठें आसन के लगाय

लोरिक के तीन अंजुरी पानी पी लेने पर सती का बारह वर्ष की कन्या का रूप धारण करना

अंजुरी लगा लोरिक पीये लगलैं
एक घोंट पी गइलं
दूसरे घोंट पी गइलै
तीसरे घोंट पी गइलै दू लोटा पानी पी गइ लै
तब सतिया मोर गइल रे घबड़ाय
अब ना मानी पानी पी हथवा कै
तब सती का कइल ऽ ऽ ऽ ऽ
छोड़लसि रूप बुढ़िया कै
बारह बरिस क करिना बनि गइल

एइसन सत से माया बढ़ावै
एइसन सरीरे से माज चुवावै
धइलै रूप कोढ़िनी कै
हाथ में ठेंगुरी लगावै
इनारा के पास गइल नियराय
एइसन माया सती बढ़ावै
एइसन जोर महकति बाय
लोरिक जगत पर नकुला दबावै
उठि के नीचे निहारै
कतों मुरुदा बलको परल अब बां
इनारा के पास गइल नियराय
एइसन माया सती बढ़ावै
एइसन जोर महकति बाय
लोरिक जगत पर नकुला दबावै
उठि के नीचे निहारै
कत्तो मुरुदा बलको परल अब बाय (पुनरावृत्ति)
सती पर नजर परल बीर लोरिक कं
आरे बलको लोरिक गयल घबड़ाय
दगन क मार धोबिया संगे कइला
आरे कइसन भउजाइ मिलत हमके बं
ई त बियाह हम नाहि करबै
चाहे भइया बारै रही रै कुँवार
तब ले सती जगते के पजरे
आरे गोपी मोर गइल नियराय
जगत पर गोड़ सतिया जब रखै
तनो जगत से कूदै लगलैं ललकार

दुर्गा का आकर लोरिक की गर्दन पकड़ना और सती के हाथ का पानी पोने का आग्रह

तब दुरुगा धइलेस गरदन बीर लोरिक कं
आरे बलको पजरे गइल रे नियराय
धइलै डगर जब बीर लोरिक कै
आरे बलको पजरे गइल रे नियराय
धइके गरदन जगतिया पर झोंकै

आरे बइठ जा पानी पीऽल्या
जी जाय बरतिया तोहार
नकुला दबा के लोरिक बलको बइठं
आरे बइठत हउवें रे असनवा लगाय
गोपिया जगतिया पर चढ़ि गइनीं
एहर लोटा डोरी घलें ले बनाय
ईनारे में लोटा डोरी मोर छोड़लं
पानी घींच के कइलस तइयार
लागल पानी पियावै जोगी के
बइठा अंजुरिया बलको लग
डोल लोरिक नकुला दबावै हाथे से
एहर गोरी महकत बलको बाय
कइसे अंजुरी में लोरिक लगावैं
पानी अंजुरियै में छोडिति बाय
माया क मांज चुवा दे अंजुरी में
आरे लोरिक जगते से चललें पराय
तबले दुरुगा जाइके गर्दन धइलं
आरे बेटवा मनब्या बात हमार
पी ला पानी जो एकरे हाथ कै
आरे भइया जी जइहै तोहार
तब झोंक के दुरुगा फिन जगत पर बइठ
आरे लोरिक बइठें आसन के लगाय

लोरिक के तीन अंजुरी पानी पी लेने पर सती का बारह वर्ष की कन्या का रूप धारण करना

अंजुरी लगा लोरिक पीये लगलैं
एक घोंट पी गइलं
दूसरे घोंट पी गइलै
तीसरे घोंट पी गइलै दू लोटा पानी पी गइ लै
तब सतिया मोर गइल रे घबड़ाय
अब ना मानी पानी पी हथवा कै
तब सती का कइल ऽ ऽ ऽ ऽ
छोड़लसि रूप बुढ़िया कै
बारह बरिस क करिना बनि गइल

लोरिक क हाथे खपड़िया पै जाय
धन बरनल मोरे भइया के
आरे थाना कनउज की रे बाजार
धन बरन अपने भउजी के
थाना सोहवल की रे बजं
एहर बीर लोरिक सोचै मैं लगलै
आरे तबले गोपी सत के लोटा बनावै
सत कै डोरी घलै बनाय
बइठा जोगी तोहैं पानी पिआई
आरे जोगी बइठै अंजुरिया लगाय
सत घुमाय के सती मोर मरलं
आरे मुहें अंजुरी दाढ़ी मे सट गइनीं
एहर दूनो अंजुरी सट गइनीं

दुर्गा का लोरिक के पेट में बड़वानल डालना और सतिया का पानी पिलाने से थकना

घींचि घींचि पानी छोड़ै लगल
एक लोटा पी गइले
दूसर लोटा पनिया जगतिया पर पी हो गइलं
आरे जौं मोर तीसरा लोटा पनिया
जगतिया पर बलको पी हो गइलैं
आरे चउथा लोटवा मै पनिया जगतिया पर पीयै रे लागं
आरे जेकरे मुँहवाँ नकुलवा से पनिया मोर गिरै रे लागल
एहर केतनो मुड़िया जगत पर जो लोरिक हउवै हिलावत
आरे सतिया झोंकले सतवा के पनिया बलको रे जाला
आरे जहवां लोरिक मरिया गयल हउवै घबरे रं
आरे एहर देखा दुरूगा भइया जगतिया पर हंसत रे हउवै
आरे इत पनिया पियावत सतिया जो मारि हो नइहे
आरे दुर्गा पेटवा में बड़वा जो नलवा हउवे लगवले
आरे एहर जेतना पनिया मोर सतिया हउवे पियावत
आरे ओतना दुरुगा बड़वा नलवा जरउले हउवे चलि रे जं ऽऽऽ
आरे एहर मैं त देखा पनिया पियावै सतिया मोर बेकरे लइं
आरे आपन लोटवा डोरिया जगतिया पर पटकि रे दे लै
तब कहलेस तोहरे पेटवा में बबुवा भवनिया मोर ओलिरे अइं
आरे कहिया केइ झुराइल बाड़ै रे जोगिया हलकियौ ना रै तोहं
आरे एहर आजु एइसन पानी घींचत कंवरिया हमार लागल पिराये

आरे बहँवा में पीरा जोगिया गइल बाड़े नारे उझंग
आरे एहर एइसन जोगिया ईनरवा पर हउवे पियासल
लोटा डोरी पटकि के अपने चलि देहलसि गोपिया सोहवलि की बलको
बजं ऽ ऽ ऽ ऽ

आरे एहर दुरुगा पजरवा लोरिका के पहुँचि रे गइं
आरे कहलस बचवा अब सतिया जाति बा गउवां रे सोहवल में
आरे अब बारात ना जी सगड़े पर कुल मरल रहि जाई रे
मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या सोहवली की रे ब ऽ ऽ ऽ जं ऽ ऽ ऽ ऽ [२१]

लोरिक का भागती हुई सतिया को पकड़ कर भउजी कहना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ आं
जब सतिया लोटा डोरी पटक के जगत के नीचे कूदि गइल
तब दुरुगा कहलस जात हौ गांव सोहवल में ना जी बरतिया तोहार
आरे तबले लोरिक जगत से कूदि के सतिया के पजरे गइले नियराय
भरि अंकवार के गहुवा लगवले पर परकरत हौ पजरिये क हाड़
छोड़ि दा जोगी छोड़ दा जोगी आरे भाई कइसन जोगी बनल तू बाड़ा
एइसन गहुवा लगवले बाड़ा पर पर करत हौ पजरिये क हाड़
तब लोरिक बोले सतिया से भउजी मनब्यु बात हमार
जब ले हम्मैं देवर न मनब्यु त भउजी भउजी न घालब गोहराय
तबले गहुवा न छूटी हमार तब सतिया बोले रानी
कहिया तोहार भइया मांगी में सेन्हुर नवलें
कहिया ले भउजी ए बबुआ हम लागैं लगली नारे तो ऽ ऽ ऽ हार
आरे आपनइ तू भेदवा हमके ना बलको बतावा
आरे कइसे करे आयल बाड़्या तू सोहवली में बलको बियं
आरे हइहै कइसे भवरवा तोर सोहवल में घूमि रे जइहैं

लोरिक के हाथ में तागपाट देख कर सतिया का लोरिक को देवर कहना और बारात को जिला देने का आश्वासन

आरे हमके ताग पाट सोहगइला अम्मर चिरिया तनी देखावा
तब जानब सोहवल में करे आयल हउवा हमरो ना रे बिह
आरे जहवां अइसे बतिया सतिया मोर कहले रे हउवै
आरे दुरुगा अपने डोरिया हो मइया जंघवा से काटि रे दे लै
आरे तागपाट सोहगइला लोरिक के मोर हथवा दे लै बाड़े ना रे थमं
आरे जब सतिया मोर देखलस हनिये जो गोपिया

आरे बलको देखि के मोर हलिया गइल हउवै रे घबड़े रंग
आरे तबत देवरा मोर देवरा ओठियन गोहरे रावै
आरे ऊ भउजी भउजी रे मइया घलति बाड़ै गोहरे ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ य
आरे कल सगरे पर देवरवा
सिव बाबा के पुजनिया बलको क ऽ ऽ ऽ रे रे अइबै
आरे बलको जिया देबै रे देवरवा बरतियउ रे तो ऽ ऽ हा ऽ ऽ र
आरे जब एइसे मोर गोपिया ओठियन कहै रे लागे
आरे लोरिक कहलैं तोहार बिसास ना मानि परत बाड़े
भउजी सोहवली की बलको बा ऽ ऽ ऽ जा ऽ ऽ ऽ र
आरे जब एइसे बतिया सतिया कै सुनि रे ले ला ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तोके बिस्सास न पड़ी कल जिया देबै रे देवरवा बरतियउ ना रे तोहा ऽ ऽ ऽ र

दुर्गा के साथ लोरिक का मोती सगड़ के शिव मन्दिर में जाना

एहर बलको सतिया के बबुवा ओठियन में छोड़ि रे देला
आरे तुमड़ी पोथड़ी लेके अपने जात बाड़े दुरगा के संगवा
मोती सगरवै के बलको रे घं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बलको एहर मोर बबुवा सगरवा पर पहुँच रे गइलं
आरे तमू में से मोटका बेवड़वा हथवा के हउवैं लगवले
आरे सिव के मंदिल पै लोरिक मोर गयल हउवैं नियरे रं ऽ ऽ ऽ ऽ
हनि के एड़ा मरलै सिव बाबा क फटकवा सगरवै पर गिरि हो गइले
आ मन्दिल में हलि के दूइ मोर बेवड़वा
सिव बाबा के जो मरले रे हउवै
आरे एइ भउजी के आ जिनिगी भर पूजा खइल्या
सकल मर गइल रे म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
आ सगड़वा पर रे ब ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ त [२२]

चार सखियों के साथ सतिया का पूजा के लिए शिवमँदिर में आना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ
सिव बाबा के मरि के अपने तम्मू में अइलैं
आके तम्मू में लोरिक चूप चाप मारि के बइठलैं
बाकी ओहर सतिया का कइल ऽ ऽ ऽ ऽ
चार सखी अगवां चार सखी पछवां
आरे लेके बिहान भर सिव बाबा के पूजा करै चलल मोती सगर के घाट

सगड़ में असनान कइकै एहर सतिया सिव बाबा के पूजा कइके
धइलस डगर सोहवल क, सोहवल की गइल रे बजार
बिहान भयल सतिया का कइलेस
पान ठे सुवर माया क ले ले बनाय
हाथ में बेंवड़वा जो सतिया ले लं
आरे लेके चललं मोती रे सगर के घाट
जब सगड़े पर सतिया मोरि पहुँचं
आरे बइदा बइदा घलै ल ललकार
हम बइद आयल बाड़ा सगड़े पर
आरे बाबू मनब्या बात हमार
कोई क मुअल अ जियल बलको होतं
आरे बलको हम देइब रे जिआय
लोरिक हथवा सतिया के मारैं
आरे बलको पजरे गइल नियराय
सारा सुअर तमुवा में ओलिगा दें
आरे बाबू मनब्या बात हमार
हमरी सुअरिया सगड़े पर चरावं
हम बिरई जे लियंई उपार
सकल बराती के नकुलवै लगाय देइं
उठके बइठत मोती रे सगड़ के घाट
एतनी बात बीर लोरिक सुनलं
आरे रानी मनब्यु बात हमार
द्या मोर सुवरिया सगड़वै पर चराईं
हथवा में बेवंड़ा दे लै रे थमाय
लेके सुअरिया मोर हांकन लागे
सतिया भीटा से नीचे रे उतरि जाय
भागल बन छिउली में घुसुरल
आरे बाबू गनब्या बात हमार
सुवर बलको सतवा के ललकारै
जइठे तई ओर चलैनी पराय
तबले लोरक धइके पांचो क गोड़ छनलैं
आरे सतिया मोर गइल रे घबड़ाय
तब ले सतिया मोर गइल रे घबड़ाय (पुनरावृत्ति)

भाई दसबंत की मृत्यु की आशंका से सतिया का चिन्तित होना

जब सतवा धइ धइ छानति बाड़ै
कब भइया क जिनगी छोड़ी मोती रे सगड़ के घाट
मरन दसवंत भइया के अइलैं
सोहवल में गयल बाड़ै रे मोरि मइ ऽ ऽ ऽ ऽ या
बिहयवा क मोरे नियरे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ राय
आरे आ निज की मोर डोंगवा
अधजल में बूड़त रे हउवै
आरे सतिया पीटि पीटि के छतिया
जंगलवा में रूवत रे हउवै,
आरे सोहवल में बूड़त बाड़ै रै मोर मइया
आ डोंगवों नारे हमा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आ एइसन रूवइया जंगलवा में बलको रूवत रे हउवै
आरे दादा के बेरिया की बेरिया
आ सोहवल में बरजत रे रहलीं
आरे नाहीं मान ऽ ऽ ल रे मोरि मइया
कहनउ ना रे ह ऽ ऽ ऽ ऽ मार
आरे हइहै निज की लड़इया सोहवल में आइल रे हउवै
आरे गोपिया रूवत रूवत रनिया सगड़वा पर पहुँचि रे गईं
आरे काहे बदे छानि देला ए बबुवा सुवरियो ना रे ह ऽ ऽ ऽ मार
आरे तब कहले जै ठे तै ओर गोपिया सुवरिया तोहार धन भागै रे लगनीं
ओहि में जियरै रे रनिया गयल हउवै मोर घबरे रा ऽ ऽ ऽ य
आरे हम कहवां डंडवा मइया सगरवा पर बलको हइहैं रे पाइं
जा एदवां चराइ घलब ए गोपिया सुअरियो ना रे तोहार
आरे गोपिया ओदवां जंगल में जाके सतिया

जंगल में सतिया का अपना सतीत्व स्मरण करना तथा इन्द्रासन में जाना

बड़े जोर से सतवा जंगलवै से ललरे करलस
आरे जइसे सूअर भाग गइलीं रे मोरि मइया सोहवली की बलको
बजा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे सतिया घुमि के गोपिया गउवां सोहवल में चलि हो गइलीं
आरे सतिया घुमि के गोपिया गउवां सोहवल में चलि हो गइलीं
(पुनरावृत्ति)
आरे सतिया अपनई मोर सतवा आ बलको मोर सुमिरति रे हउवै

एड़वा मरलसि धरती में तीन ती जोजनवा गइल हउवै मेंडरे ऽऽऽ
राऽऽऽय
आरे बलको उड़ल उड़ल सतिया इनरासन में पहुँचि रे गइलीं
आरे एहर लागल बाड़ें रे यारो कचहरी रे बरह्मा कं
आरे जाइके अंगवै मोर सतिया भइल हउवै तइरेयं
आरे कवन हमार पापवै रे ब्रह्मा मिरितवा मे उदय रे भइलै
आरे कइसे लिखि देहला ए बरह्मा बियहउ ना रे ह ऽऽ मा ऽऽ र

ब्रह्मा का सतिया से कथन—दसवंत की मृत्यु तथा तुम्हारा विवाह निश्चित

आरे तब तइ धीरे-धीरे बरह्मा आ सिंहासने मे समुरेझावं
आरे तोहरे दंसत सति ए सतिया सोहवल में
भयवा मोर जनमल रे गइलं
आरे जेकर अम्मर रे मोरि मइया
दसवंता परल हउवै रे नांव
आरे तवन बमरी छतीसे जाति के सोहवल
करिनवा बलको रोकि रे देला
आरे उहै पपवा ए सतिया सोहवल में उदय रे भइलै
आरे दसवंत के मरे आय गयल बा ए सती
तोर ग ऽऽऽ य ऽऽ ल हउवै रे मोरि म इ ऽऽऽऽ इया
आ बियहवा नियरे ऽऽऽऽ रा ऽऽऽ य [२३]

हरबोई के पास जाकर सतिया का बारात जीवित करने के लिए कहना

हाँ ऽऽ आं ऽऽऽ आं ऽऽऽ आ
तब सतिया ना बोलल ऽऽऽ कु ऽऽ छ
इनरासन से चलै लगल
तब बरम्हा से कहलस
नौ दिन के बदरी, दस दिन झाटा लिखा बरियार
तमू उलटि पलटि द मोती सगर के घाट
एहर कहि के सतिया चलि देहलं
नौ नौ दिन के बदरी, दस दिन झाटा भयल बरियार
तम्मू उलटि पलटि मोर गयलं
एहर बरतिहा पानी से उगे लगलें साद
बहि के सगरे में चलै लगलें
लदवा धैं धैं तमू के खूटन में बन्हलं

और झुरवा के देखा मुर्दन के
लिया के तम्मू खड़ा कइके तमुवा में रखलें
नौ दिन क बदरी निकल गइल
दस दिन के झाटा निकल हउवै जात
एहर ए भाई सतिया का कइला
हरदोई के नाग के मान पर गइ
ए हरदोई ए हरदोई
तनी एकन मनब्या बात हमार
एतनी बरतिया मुववले बाड़्या
ओतनी तू बरतिया देब्या हो जियं
एतनी बात हरदोइया सुनल ऽ ऽ ऽ
तब सतिया पर उठल रिसियाय
एइसन बात हमसे कहत बाड़ि
आरे हम त तोहसे ठांवइ दे लें रे जबाब
एतना मुरदा मुवाइ जब देबै
फिन न जिआइब मोती रे सगर के घाट
हम जिआ देबै जौ मुरुदा सतिया
त हमरै चोला हउवै रे छूटि जं
एइसन बात जिनि बोला सती
ए सतिया तू अकिल गइल बउराइ
हमसे कहल्यु हमरे मान पर
आरे हमरे लागति बाड़ें ए नगवा जौ मोहिया रे भ ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या क
आरे भइया मोर मारल जइहैं रे दइया
सगड़वा के बलको ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ घा ऽ ऽ ट
आरे तवन छूटि गइल ए सतिया
मोरि मोहिया रे दस ऽ ऽ ऽ ऽ वत कै
आरे तोहसे अब होइ गइल रे सतिया
आ भेंटिया देव ऽ ऽ ऽ रे से
आरे का दसवत क गइल बाड़े रे सतिया
मरनवा जो नियरे ऽ ऽ ऽ ऽ राय
आरे जा तूं अपने ए सतिया बगलवै में बलको रे बइठा
आरे आज रात में जिआ ऽ ऽ ऽ देबे
ए र ऽ ऽ ऽ ऽ नि ऽ ऽ ऽ या ऽ ऽ ऽ आ बरतिया नारे तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र

[२४]

हरदोई नाग का जाकर सारी बारात का विष उतारना

आ ऽऽऽऽ आ ऽऽऽऽ आ ऽऽऽऽऽ
सतिया घूमि के हरदोई नाग के मान से
अपने बंगले में गइल
आधी रात में हरदोई उठलै है मानि से
भागल सगरे पर गइलैं
तब सतिया का कइलस सगरे पर माया झोंकलेस सत कै
सारा बजा लदवाह सुत्तै लगलैं
हरदोई नाग गइलैं जब सगरे पर
पहिल तमू सुरजन डोमवा के खिचलै
त उहाँ से बिख डोम क जौ उतारि कं
आरे एहर बंठवा क तमुवा गयल रे नियराय
सारा मै बजनिहन कै बीख उतारै
धोबिया क तमुवा गयल नियराय
जाके बाबा अजई धोबी के तम्मू
ओनकर बीख उतारे
उहां से हरदोई नाग निकलि के
देवसिया के तम्मू गइलैं नियराय
जाके देवसिया क बीख उतारैं
सिवहरि के तमू में घुसल हउवै जात
सिव गड़ कै मोर बीख उतारैं
मल सांवर क तमुवा गइलैं रे नियराय
जाके मल सांवर क बीख तमू में उतारं
उहवां से घूमि के नाग हरदोई
लोरिक क तमूववा गयल बा नियराय
जब तमुवा में लोरिक के गइलै
सारा बरतिहन क बीख उतरलैं ऽऽऽऽ
सारा बरतिहन क बीख उतरलैं (पुनरावृत्ति)
एहर हरदोई नाग चललैं रे पराय
भागल सोहवल जाला हरदोइया
सतिया क बंगला गयल रे नियराय
सतिया क बंगला गयल रे नियराय (पुनरावृत्ति)
जब सतिया के बंगले में गइलं

आरे सती मनब्यु बात हमार
चढ़ल जाला बिखिया बरमांड के ऊपर
छुटि जाला चोला बलको रे हमार
एहर नदिया पानी भरवदलीं
नाग हरदोइया के नादी में छोड़ै
सारा पानी काला होइ गइलैं
दूधन की नदिया में छोड़ै
सारा दूध काला होइ गइलै
तब नाग अउरो गयल रे बउराय
जलदी सती मोर जिनगी बचाय द्या

सत का दूध बनाकर सतिया का हरदोई का विष शान्त करना

सतिया सत कै दूध बनावै
ओही में नाग के बलको जुड़वावै
तब नाग अपने मनिया के जालं
एहर सती बइठल सोहवल की रे बजार
भयल भोर जब रे सगरे पर
सकलि उठलि बाडै बरात
केउ दतुवन कुल्ला मोरि करै
केउ सगड़े में रचल नहान
केउ मेवा करने में मोर पहुँचल
तलिया धड़कै सांझ बिहं
एहर अजई धोबी तमू से उठलै
लोरिक क तमुवा गयल रे नियराय

लोरिक का चावल दाल घी का अभाव घोषित करना

ए संगी संगी बलको गोहरावै
आरे संगी मनब्या बात हमार
कुछ हमकै दाना पानी रे कटा द्या
आरे बलको हलकै गइल रे झुरं
तब लोरिक धोबिया के समुझावै
आरे बाबू मनब्या बात हमार
चाउर मोर चुकल जो रे बसमतिया
आरे रहर दरदर रे मुंगउवै की दार

घीउ बैनन कै बबुवा चुकं
आरे ते पर नेबुलन कै चुकल आंचार
आटा जौ बाबू मोर दउदिया चुकल
कउनो खरचा नाहीं बा सगर के घाट
एतनी बात जब लोरिक कहलैं
आरे धोबिया मोर गयल रे घबड़ाय
आरे अबहीं कलियै ले के बबुवा
खरचवा गउरा से आयल रे हउवै
आरे तवन का भयल रे मोरि मइया
खरचवौ ना रे तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र
आरे भइया आइके बिपतिया
सगड़वा पर बलको नाइ हो देलैं
केकरी हा ऽ ऽ खरचा लेबे रे मोरि मइया
सो ऽ ऽ ह ऽ ऽ वलो की बलको बा ऽ ऽ जा ऽ ऽ र
आरे हम त नाहीं ले बै रे भइया आ नउवां रे
सो ऽ ऽ ह ऽ ऽ ऽ व ऽ ऽ ऽ ल क ऽ ऽ ऽ
आरे नाहीं त बांची रे मोरि मइ ऽ ऽ ऽ या
जिनिगियउ रे ह ऽ ऽ ऽ मा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे जब एतनी बात धोबिया सगड़वा पर कहै रे लागल
आरे लोरिक बलको रूवै लंगलै म ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
सगड़वा के ना ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ घा ऽ ऽ ऽ ट
आरे बबुवा हो राखी ए मीतवा पंयडिया पै देखल रे हउवै
आरे नाहीं चिन्हल बाड़ै रे संगी जौ सोहवली कै बाजा ऽ ऽ ऽ र
आरे तोहरे ससुरवा धोबिया सोहवली में होइ रे गयीं
आरे चीन्हल हउवै ए धोबिया
सोहवली ना ऽ ऽ ऽ रे ऽ तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र
आरे आजु खरचा गँजवा दा आ ऽ ऽ सगरे पर
दिन दिन नेकी मानब रे मोरि म ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
आ तो ऽ ऽ ऽ रे गउरवै बलको गुजरे ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ त [२५]

लोरिक का सजधज कर सुहवल में पहुँचना और झिगई बनिया से भेंट

हाँ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ हाँ
तब धोबी लोरिक से कहै ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तूं चल जा गाँव सोहवल में

तोंहके चिन्हले जनले केहु ना हउवै
औ सारा होलिया बताइंला
सारा उपाय बताइलं
तब लोरिक का कइलं
पेन्है लगलं निरखी जब गलवन में
गोड़वन में दोहरी मोर खीचैं लै तमांच
आल्हा गूंजकर जब पनहीं गे
आरे पट्ठा एड़वन ले लें रे चढ़ाय
साद परद का तावा पितरिन कै
आरे छतिया पर ले लैं रे बन्हवाय
बायें त बगल में जो ओड़न बान्है
आरे दहीने घींच के बिजुलिया खांड़
सारा असबाब चढ़ा के लोरिक
चल लैं मोती सगड़ के घाट
जब सोहवल के लोरिक चललैं
उतर गली से हललैं
दाखिन गली में गइलैं
दाखिन गली से धुमि के
झिंगई बनिया के पवन गइलैं दुवार
आरे झिंगई बइठल कुरुसी पं
आरे ए भाई गड़गड़ा पियत बाड़ैं
तबले लोरिक भइलैं तइयार
झिंगई जब देखलस सूरत लोरिक कै
आरे पकड़ि के कलाई कुरुसी पर बइठा
कहवां कै ए बबुआ चलल बलको तोंहीं हो हउवा
आरे कहवां हइया ए बबुआ चलवले ना चलिए जं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बलको आपन ए बबुयै जों भेदवा ना हम्मैं बातावा
आरे चिन्ता बढलि रे मोरि मइया बदनिया में बड़ी रे ऽ ऽ ऽ ऽ यं

लोरिक का अपना परिचय देना तथा खर्च के अभाव होने की बात करना

आरे तब तह धीरे-धीरे बोलति बाय अहीरवा हो गउरा कं
आरे बबुवा बड़ी दूर पर हमरहू जो गउवा न ऽ ऽ ऽ बलको रे हउवै
डेरा हम देहलें बाड़ी बबुआं सगड़वा के बलको रे घं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे हमरे रजवा रे मइया जो डेरवा न देले रे हउवै

खरचा चुकल बाड़इ रे मोर बनिया सगड़वा के बलको रे घं ऽ ऽ ऽ
आरे उहै आनै आयल बाड़ी मों खरचवा रे र ऽ ऽ ज वा के
आरे लदवा के ले ले चला सगरे पै सोना चानी लदवा के
आइब रे मोर स ऽ ऽ ऽहु ऽ ऽ ऽ वा ऽ ऽ ऽ आ सोहवली की रे ब ऽ ऽ जं
आरे एहर मो सा ऽ ऽ ऽ लोरिक के ए बबुवा कुरुसिया पै बइरे ठा ऽ ऽ वै
आरे जाके किला में सहुआइन से कहलै
सहुआइन मनब्यु जो बतियउ रे ह ऽ ऽ ऽ मं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे अइसन मनसेधू ए सहुआइन कत्तो हम नाहीं रे देखलीं
आरे पूजा करै लायक बइठल बाड़े ए सहुआइन सोहवली की रे बाजा ऽ ऽ ऽ र
आरे एहर सहुआईन से बरनन किलवा में कइले रे देता ऽ ऽ ऽ
सहुआइन क सोचिया किला में बढ़ति हउवै बड़िरे यं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे कइसन मनसेधू रे मोरि मइया दुअरिया पै आयल रे हउवै
सहुआइन आइके हो गइली मोरि रनिया दुअरियै पर तइरे ऽ ऽ ऽ यं ऽ ऽ
आरे जब नजर में नजर सहुआइन से दुअरिया पर लड़ि रे गइलैं
आरे सहुआइन गिरि गइलि रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
आ डेवढ़िया में भहरे ऽ ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ य [२६]

सहुआइन के हुक्म से चावल, दाल, घी, मसाला आदि का लोरिक के लिए लदना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ
आरे तब बोलै लगलीं सहुआइन
ए साव, आरी बप्पा रे अइसन मनसेधू ना देखलै मुलुक संसार
जेतना खरचा मांगै ओतना देब्या लदवाय,
हुकुम हो गयल सहुआइन क ऽ ऽ ऽ ऽ य
आरे पयाम बलको देलैं लगाय
चाउर लदत बाड़े रे बसमतियै
रहर मैं दरदर रे मुंगउवै की दार
घीउ बयनन के मय बबुवा लदत ह ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तेपर नेबुलन क लदलै आचार
आटा मो दउदिया बाबू लदि गइलैं
आरे नीमक बलको लदै लैं चटकार
तेल मसाला धनिया लदि गो
आरे सब बही मोर ले लैं रे दबाय,
कलम दुवाइत हथवा में ले के

आरे चल ले मोती रे सगड़ के घाट
एहर बीर लोरिक पिछवैं पिछवैं
आरे बलको सगड़ा गइलैं रे नियराय
जब सगड़े पर बरधी पहुँचं
लोरिक अजई के पजरे गइलैं रे नियराय
सुनिला मोर संगिया मतंगियै जौ धोबी
आरे बाबू मनबे बात हमार
सारा मैं खरचवा लेइ मो अइलीं
एकर हम्मै देब्या तू उपइयै बताय
उहौ खरचा लेवे बदै आयल हउवै
आरे धोबी टप देला समुझाय
जा कहि दा सब लदवाहन सें
उतर के बेलकुल तमुवै लेब्या हो गंजवाय
बरधी हांकि के मों खूंटवै में बान्हा
तबले हम सन्मुख होइलं तइयार
एहर लौरिक जाइके हुकुम लगाय दें
सारा बलको देहले हउवैं रे गंजवाय

अजई धोबी का साहु झिंगई के पास जाना और उसको डपटना

धोबिया उठल बाड़ें अपने तमुवा से
मोटका मुंगरवा कंखियाइ लेला रे दबाय
लेके धोबिया जब चलल सगड़े पं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बलको साव के पजरे गयल बा नियराय
बड़ी दूर से धोबिया बोलत सगड़ा पं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे झिंगई मनब्या बात हमार
का करे सगरे पर आयल हउवं
आरे हमके भेदवइ देबा रे बताय
बोले लगलं साव जब देख खेतवा पं,
आरे बाबू मनब्या बात हमार
एकठे सिपाही इहवां से गइलैं
सारा मोर खर्चा ले लैं रे लदवाय
कालहिं हिसाब तोंर सगरे पर होई
आरे बही-खतवा तूं लेबै रे दबाय
उहै हम बबुआ जौं आयल बाडीं

आरे धोबी ठावैं देला रे जबाब
हमके तू धन देखति बाड़्या
नाहीं चिन्हत मोती रे सगर के घाट
तबले झिंगई धोबिया से बोलैं
हा हा पाहुन खेदू क लागति बाय
हम धन बबुआ जौ चीन्हति बाड़ी
तब धोबिया मोर देलैं रे जबाब
कि त खरचा राजा बमरी चलावै,
कि त परजा सोहवलि के चलावै रे बजार
हटि जा हमरै जब समने से
आरे नाहीं मारि नइबै रे म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
आ जिनिगिया ना रे ऽ ऽ तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [२७]

बाजे गाजे की तुमुल ध्वनि से राजा बमरी का घबड़ा उठना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
राम, राम, राम राम हो राम
आरे राम राम राम गुन गवले कोटि कटे अपराध
संगी मोर छूटैं ले समउरिया
घरवा में छुटै ले कुटुम पलिवार
घरनी से नाता टुटि मोरि जालं
आरे मोर छूटे लैं मुलुक संसार
राम नाम कलऊ में भूलब्या
औघट माटी लगी रे तोहार
जब खरचा सगरे पर गंजि गइलै
चाउर मोर खुलल ना हउवै बसमतिया
रहर मो मूगउवै की दर दर दाल,
घीउ बैंनन कै रे कटि गइलैं
तेपर नेबुलन कै कटै लै आचार
एहर ए भाई बरतिया घीव खिचड़ी मोर खाये लगलैं
लड़ै लगलैं मेवा रे करन के बगवान
बारह जोड़िया सिंहा बाजै चौदह जोड़ी मोर बजै लै करता ऽ ऽ ऽ ल
चौदह जोड़ी मोरे धंउसा बाजै
जहवां कान दोहल बा नहीं जात
राजा बमरी सोहवल में घबड़इलं

राजा बमरी सोहवल में घबड़इलं (पुनरावृत्ति)
एतना दिन सोहवल में बीति गइलै
अइसन बाजा कब्बों नाहिं सोहवल में बाजल
छतिस जाति क करिना आरे बारी ना रखै कुंवार
केहू मनसेधू देस में ना मिल लैं
चढ़ि के ना सोहवल की आयल रे बाजार
आरे चढ़ि के सोहवल की आयल रे बाजार (पुनरावृत्ति)
एइसन बजवा मैं बाजति बाड़ै
जहवां कान दीहल बा नाहीं जात

सगड़ के घाट पर अजई को पहचान कर बमरी के धावन का चिन्तित होना

धावनै में धावन बमरी गोहरावै
धावन आइके बगल में भयल बा तइयार
कवने करनवा बाबू हम्मैं तू पुकरल्या
एकर भेदइ देब रे बतं
तब एहर बमरी धावन से कहलैं
चलि जा मोती रे सगर के घाट
अइसन बाजा सगड़े पर बाजति बाड़ै
जहवाँ कान दीहल बा नहीं जात,
कउनो राही मोर बटोही हउवै
आरे कवनो सूबा जो हउवैं रे उमराव
कउनो अइसने पड़हरू मोर डेरवा दीहलैं
निज की जौ मोती रे सगड़ कै घाट
तवन धावन डगर वांयीं सगरा के धइलैं
आरे जालै मोती रे सगर के घाट
पहिले तमू सुरुजन डोमवा के परलं
आरे धावन ताकत हौ ओसरिया लगाय
उहंवा से धावन बलको चलि दीहलै
बंठवा क तमुवा गइलै रे नियराय
बंठवा क तमुवा धवनवां मै छोड़ि कें
आरे धोबी तमुवा गइलैं रे नियराय
देखत बाड़ै धोबिया सुतल तमुवा में
आरे तब त धावन गयल ले घबड़ाय
जवन धोबी एक दांई सोहवल में आयल

दसवंत भिम्हली जौ हनि के एड़ा मरलै
धोबिया के टूटि गइलें पजरिया क हाड़
तवने धोबी फिन सगरै पर सुतल बाड़ैं
उहवां से अगवां रे बढ़ि जाय
देवसी के तमुवा पर धावन गइलै
उहां जो आगे रे बढ़ि जाय
एहर सिवगढ़ के तम्मू पर गइलैं
आरे बलको मल सांवर के तमुवा गयल बा नियराय
देखले सुरतिया जो मल सांवर कै
आरे तब त धावन गयल ले घबड़ाय
जइसे बिटिया राजा बमरी के जनमल
जेकर बलको सती रे मदाइन नांव
ओइसे बर लवकति बाड़ै सगरे पर
सतिया के गयल हउवै रे ऽ ऽ ऽ
आ म ऽ ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ ऽ या ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ
बि ऽ ऽ ऽ य ऽ ऽ ऽ ऽ ह ऽ ऽ ऽ ऽ वा ऽ ऽ ऽ निय रे रा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ य [२८]

लोरिक का धावन को डपटना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
जब छोड़ि दे लै तमुवा जो मल सांवर कं
लोरिक का तमुवा गइलैं रे नियराय
छतिस जात तमुवा में सूतं
आरे धावन देखि के गयल रे घबड़ाय
जब फाटक पर धावन पहुँचं
आरे लोरिक सोझै रे नजर परि जाय
बड़े जोर से तमुवा में तड़कत हउवें
आरे बाबू मनब्या बात हमार
चोर चंडाल सगरवा पर अइल्यां
आरे टूटही पनही मोर घलब्या रे चोराय
खाले में बाबू जो भूसा तोरे भरवाइ दें
आरे धावन थर थर काँपति बाय
दसनह धावन बलको जोरै
आरे बाबू मनब्या बात हमार
जइसे राजा बमरी के धावन लगबा

आरे ओइसे ला ऽऽऽग ऽऽऽऽब रे म ऽऽऽऽ इया
आ धवनवा ना रे तो ऽऽऽऽहा ऽऽऽऽ र [२९]

लोरिक का अपना परिचय देना और कहना कि मेरे भाई सँवरू की शादी सतिया से होगी

हाँ ऽऽऽऽऽ राम ऽऽऽऽऽऽ राम
आरे तब बीर लोरिक गांगी के बोलवायै
आरे बंगला में बार दे लैं रे बनवाय
सगड़े में बलको नहवावैं
कछनी पीताम्बर दे लै रे थम्हाय
सारा असबबवा मै धावन के बदलि दें
सोने क बिदाइये करत बलको बाय
तब धावन लोरिक से पूछैं
आरे बाबू कहवां मकान बा तोहार
कहवां से बाबू चलल बाड्या
आरे कहवां हउवे चलवले जात
एकर बाबू भेदवा तूं हम्मे रे बता द्या
आरे चिता बढ़ल बदन के बाय
बोलत हौ अहीर मोर गढ़ गउरा कै
आरे जेकर लोरिक रे बघेलवै नाव
गउरै मोर ओतनवा, गउरै जो गोतन जं
आरे गउरा जनम भयल रे बुनियाद
टिकई मैं बुनवा कै सिरिजल बाड़ीं
आरे खोइलनि कोखिया ले लैं रे अवतार
एक बाघिन दू दू डंवरू जनमल
आरे दूनों जनमल दइब कर लाल
एक जने गइया रे बोहे में चरवलैं
आरे हम गउरा धूमि कै करै लैं ठकुराइ
धोबिया मतंगी मोर करै लें अगुवई
आरे धोबी खइले ह अगुवई क भात
करिना बताउर राजा बमरी कै
आरे जेकर सती रे मदाइन नाँव
बेटवा बताउर राजा बमरी कै
आरे जेकर दसवंत भिम्हलिया नांव

नाहिं भेंटिया सगरे पर भइनीं
नाहीं मुहैं पेलि के चलल ले तलवार
नाहीं त बियहवा मै भइया कै भइलैं
नाहीं डांड़ो ले के कनउज की गइली रे बाजार
एतनी जौ बतिया जो लोरिक कहलैं
आरे फिन धावन के दे लैं रे समुझाय
हइहैं सोने के मोहरवा धावन तू हमसे तूं ले ल्या
चलि जा अपने सोहवल की रे बाजार
जाइके राजा बमरी से कचहरी में कहि द्या
थरिया में थनवा संगे लेई रे लगाय
नाऊ बाभन ले के संगवा में अइहैं
भइया कै तिलक मै दीहैं रे चढ़ाय
कइ दे बियहवा जब सतिया कं
ले के अपने कनउज की जाइ रे बजार
एतनी जो बतिया धवनवै जो सुनै
सोहवल क पंयड़ा जो ले ले सुधियाय
भागल धावन गउवां जो सोहवल में गइलैं
राजा कै कचहरी गयल ले नियराय
जाकै राजवा को सीर झुकावै
आरे बलको लटक कै करै लें सलाम
पूछैं लगलैं राजा बमरो जब किलवा मैं
आरे धावन मनव्या तूं बात हमार
जल्दी एकन भेदवा सगड़वे क बतावा
आरे धावन ठांवइ दे लैं रे जवाब

धावन का अजई की अगुवाई पर कन्याओं से विवाह के लिए बारात के आगमन की सूचना बमरी को देना

कवन बतिया बाबू सगड़े क कहीं
आरे बात कहै रे जोग कै नाय
आपन बतिया बाबू हमसे नाहिं कहल जाला
रहि रहि जिइरा मोर हउवै रे डेरात
मारि नइबा जिनगी बाबू मोर किलवा में
आरे बमरी मोर घलैं ले समुझाय
तवन बतिया धावन सगरवा के हउवैं

आरे तब तै धावन इ घलैं लैं बताय
राही बाबू नाहीं बा बटोही कउनो
आरे बलको सूबा रे टिकल बा उमरांव
जवन धोबी बारह बरिस सोहवल में रहलैं
बादी बलको खेललस खेत मैदान
दसवंत भइया बलको एँड़वै जो मरलै
आरे धोबिया के टूटि गयल पजरिये क हाड़
तवने धोबी बाबू मोर कइले ह अगुअई
आरे धोबी खइले ह अगुवई के भात
जेतना मैं बारै न कुँवार करिना सोहवल
ओतना बर टिकल मोती रे सगड़ के घाट
एइसन सगरे पर बाबू मालूम होत बा
आरे एतना अनभों सगरे पर आयल
कि सोहवल में गयल बाड़ें रे म ऽऽऽ इया
आ दसवंत क मरन ऽऽ बा ऽऽऽ नियरे ऽऽऽऽऽऽ राय [३०]

बमरी का जल कर भस्म होना और सोहवल में खेदुवा की पुकार

हाँ ऽऽऽऽ हाँ ऽऽऽऽऽ हाँ ऽऽऽऽ
बमरी मोर जरि के भसम होइ जाय,
दूइ मै सिपहिया बमरी गोहरावै,
आरे सिपाही बगल में भइलें तइयार,
टप दे राजा बमरी मोर हुकुम जे लगाइ दे,
चलि जावा खेदुवा के पवन दुवार
धइ लियावा खेदुवा के गड़ सोहवल में
आरे बलको कोल्हू में देई रे पेरवाइ,
चोरियै मै चोरिया बियाह कइलै हउवै
आरे बिजवा कइ गवन देलैं रे करवाय,
ओही क पाहुन बलको कइले ह अगुवई
आरे बलको खइले हौ अगुअई क भात
भागल मै सिपहिया खेदू के दुवारे
आरे खेदू खेदुए घलै ले गोहराय
खेदुवा के आगे कै सिपाही के खड़ा हौ
आरे दूनो कलई में ले लैं रे पकड़ि

ले के खेदू के कचहरी कैं चललैं
आरे बलको कचहरी गयल रे नियराय
लागल बा कचहरी राजा रे बमरी कै
आरे गहुअर झूमि के लगल बा दरबार
बायें बगल में जो मुन्सी बइठं
आरे दहीने कायथ बइठें ले देवान
बाजत बा तबलवा नैपाली मोर
आरे घुटकत हउवै जौ सांझ बिहान
तबले खेदुवा सन्मुख मोर गइलं
आरे बमरी जरि के भसम होइ जाय
तोहार लरिका परानी कोल्हू तर पेरवा देबै,
नाहीं पाहुन देब्या किलवा में ओलियाय

खेदू का मोती सगड़ पर अपने दामाद अजई के पास जाना तथा लोरिक द्वारा खेदू को डाँटा जाना

दसों नहवां मोर खेदुवा जोरै
आरे बाबू मनब्या बात हमार
घटा भर के छुटिया एठियन दे द्या,
आरे जाईं मोती रे सगर के घाट
आयल होईं पाहुन मोर सगड़े पं
आरे तोरे किला में देबे रे ओलियाय,
धइलै बा डगरिया जब सगड़ा के
आरे चलले मोती रे सगर के घाट
एहर धोबिया भिटवा पर बइठल
आरे ओकर सोझे रे नजर परिजाय
मोरे सासुर खेदू आवत हउवै
तबले धोबी मोर चलल रे पराय
अपने तमुवा में मोर धोबिया गइलै
आरे बलको तानि के चदरिये सुति जाय
एहर खेदुआ मोर सगरे पहुँचं
आरे बलको तमुवै में घलैं ले निहार
कत्तो न पहुनवा लवकति बाड़ै
लोरिकै कै तमुवै गइलैं रे नियराय
जब फाटक पर लोरिक गइलै

आरे लोरिक मोर देलैं रे अवाज
चोर चंडाल सगरवा पर अइल्या
टूटही मैं पनही जो घलब्या रे चोराय
खाली मेवे भूसा भरवा दे सगड़े पं
आरे जब एतनी जो बतिया दे लै रे सुनाय
दसो नहवां बलको खेदू जोर लैं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
हमार पाहुन अजई जो आयल हउवैं
आरे हम करै अइली भेंट दीदार
ओनकर सास सरहज गढ़ सोहवल में
अन कै बाबू बलको किरिया बो लैं लं
पनिया जौ सुवर बोलै ले हराम
जब ले न देखब सूरत पहुने कं
पानी नाहीं पियब मैं सोहवल को हो बा ऽऽऽ जा ऽऽऽ र
आरे उहे सुनि के नांव हम पहुने कं
अइलीं बलको मोती रे सगर के घाट
एतनी बात जब लोरिक सुनलैं
आरे धोबिया का तमुवा गइलै रे नियराय
सुना संगी तोरे बलको सासुर अइलैं
तनी एकन कइ ले बे जौ भेंट दीदार

लोरिक के आदेश पर सास ओर सरहज से भेंट करने के लिए अजई का गढ़ सोहवल जाना

धीरे-धीरे बलको हइहैं धोबिया बोलै
संगी तनि मानि जाब्या बात हमार
भंइसन मोरे गुड़गुड़िया चंपले
भंइसन चढ़ल बाड़ै रे तिजार
हमसे उठि के भइया बइठा नाहीं जात हउवै
हमसे मत कराइ द्या भेंट दीदार
तब ले लोरिक पकड़ के कलइया घींचत हौ
खेदू के मोर सन्मुख करैं ले तइयार
ना त धोबिया मोर सीर झुकावै
आरे बलको जरि के भसम होइ जाय
लोरिक खेदू से बोलन लागे

आरे बाबा मनब्या बात हमार
कवने तू कारनवा सगरवा पर अइल्या
तब खेदू मोर घलैं ले समुझाय
सास एनकर बलकउ रे सरहज
कसम बलको सोहवल में खाइ गइलीं
जब ले सूरत नाहीं देखब हम पहुने क
पानी नाहीं सोहवल की पियब रे बजार
एहर हईं जब ले गइलैं गउरा में
फिन नाहीं सोहवल की अइलैं रे बाजार
एतनी बात जब लोरिक सुनलैं
धोबिया के हुकुमइ देलैं रे लगाय
पेन्है लगल निरखी जब गलवन में
गोड़वन में दोहरी मोर खींचे लैं तमान
आल्हा गूंज कर जब पनही धोबी बलको
हइहै एड़वन में ले लैं रे चढ़ाय
मोटका मुंगरवा मोर कांखी में दबावै
आगे आगें खेदू चल लै
आरे पीछे धोबियै रेवरले जाय
ले ले गइलैं गउवां गड़ सोहवल में
आरे अपने बइठका में दे लैं बइठाय
ओहर मैं किला जब अपने गइलै
आरे पतोहू के हुकुमइ दे लैं रे लगाइ
दू कंवर खिंचड़ी तुं जल्दी रे बनाइ द्या
इन्हें बलको खिचरी देईं रे खियाय
ले जाके राजा बमरी के किला में ओलियाय देंई
ना त लरिका मारल जइहैं पतो ऽ ऽ ऽ हि ऽ ऽ ऽ ऽ या
आ परनिया नारे ह ऽ ऽ ऽ मा ऽ ऽ ऽ र [३१]

अजई के सामने खेदू की पतोहू का रोना और परिवार के लोगों पर आने वाली दुर्घटना का उल्लेख करना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ
तब खिचड़ी पकाय के पतोह बखरी में
आरे तब खिंचड़ी पकाय के जब देख बखरीं (पुनरावृत्ति)
लोटवा क पनिया ले लै रे लटकाय

जब देखा भाई बइठके पर गईं
आरे बाबा ननदोई के देब्या हो खियाय,
लोटवा कै पनिया मोर खेदू लेहलैं
आरे लेके हथवै में देलैं रे थम्हाय
जा बचवा तोहरे मैं लरिका परानी
आरे धोबी हलल जे हउवै जात
जब ठहरे पर धोबी बइठ मोरे गइलैं
आगवाँ मैं खिचड़ी दे लैं रे रखवाय
पटवा के अड़वा जो अपने हटि के
गोपिया रूवत बाड़े रे मइया
आ सोहवलि की बलको बा ऽऽऽऽ जा ऽऽऽ ग
आरे गोपी एइसन रूवइया
आ रनिया बलको रूवत रे हउवै
आरे हमरे बाबवा के रे मइया
आ चकरवा बलको गिरि हो जालं
आरे हइहैं ननदोई मोर परिजइहैं
ननदोई मोर परिजइहैं हो मइया
और किलवइ रे बन रे ऽऽऽऽ खा ऽऽऽऽ न
आरे जेकर एइसन एइसन ललवा
आ सोहवल में मारल रे जइहैं
आरे ओकर कइसे जीयत रही रे म ऽऽऽ इ ऽऽऽ या
औ मतरियौ न बलको रे बाप
आरे हइहै आजु जेकर अइसन अइसन सेन्हुरवा
अब सोहवल में मारल रे जइहैं
आरे ननद मोर होइ जाइ रे मइया
औ चउकवा पर बलको रे रां ऽऽऽऽ ड़ ऽऽऽऽ
आरे एहर ननदोई मोर सोहवल में मारल जइहैं
गउरा डूब जाइ रे न ऽऽऽ न ऽऽऽऽ दि ऽऽऽऽ या
आ डोंगवा ऽऽऽऽ ना ऽऽऽऽ रे ऽऽऽऽ तो ऽऽऽऽ हा ऽऽऽ र [३२]

खेदू का अजई को शराब की दूकान पर ले जाना और शराब पिलाना

हां ऽऽऽऽऽ आ ऽऽऽऽऽ आ ऽऽऽऽ
धोबी का नजर गोपी पर परि गइलै
आंसुन से आरे चुनरी भीजि गइलीं

तब अजई मोर धोबियै जो दे लैं रे जबाब
कउने मैं करनवा गोपी रूवत बाड़ै
कवन तोके गढ़ मैं गइलै रे बुझाय
कउनो मैं करनवा तूं रोवत बाड़ै (पुनरावृत्ति)
का तोहके परि मोरि गयल रे बिसमाद
आरे एकर भाइ भेदवा तू हम्मै रे बता द्या
तब ठहरे पर करब रे जेवनार
एतनी मैं बतिया जो गोपियै सुनै
आरे नन्दोई तू मनब्या जो बात हमार
दुइ कवर खिचड़ी तूं इहां खाइ लेब्या
राजा बमरी के किला में परैल्या बनखान
आखिर त मरनवा जब सोहवल में होइहैं
आरे गउरा डूबि जाई जो डोंगा रे तोहार
दुइ कवर खिंचड़ी मुंहवा में धोबी नवलल
आरे बलको ठहरे से रे उठि जं,
जाके धोबीं बलको खेदू से कहलैं
आरे बाबा कई मइ दे लैं रे जेवनार
तब खेदुवा धोबिया के समुझावे
आरे बचवा मनब्या बात हमार
तोहरे सास धोब-घटवा में धूबत
तनी चलके कइ लेब्या तूं भेंट दीदार
उहवां से खेदू संगे बलको रे ले कैं
आरे गब दे सोहवल की चलि मैं गइलै रे बाजार
ले जाके मैं दारू के दुकानी बइठाइ दें
हथवा में बोतल देलैं रे थमाय
एक बोतल दारू जब धोबिया पियलं
आरे नसवा में चूर हउवैं रे होइ जात
लेइ के मुंगरवा मैं गलिया मैं भाजै
बड़ा जोर घलैं लैं ललकार
कवन हउवै किलवा राजा रे बमरी कै
हमसे करा दे तनी भेंट दीदार

शराब पीकर अजई का बमरी के द्वार पर पहुँचना

अंगवा जो अंगवा खेदुवा चललं
आरे पीछे धोबियै रेवर लै जाय

बमरी के फाटके पर धोबिया पहुँचं
आरे फाटक सोझे रे नजर परिजाय
चढ़ल न नसवा जौ धोबी कै उतरि गं
आरे खेदू लेहले फटकवे में जाय
लागल बा कचहरी राजा रे बमरी कै
गहुअरि झूमि के लागै लै दरबार
जब समने धोबिया मोरे पहुँचल
पीछहीं के खेदुवा मोर चलैं ले पराय
बनि भइलैं फाटक राजा बमरी कं
धइ के किलवा में नावा रे बनखान
बिगुलै मै बजवा कचहरी में बाजल
आरे मारू बजवै देलैं रे बजवाय
पलटनिहनि के काने में सबद लगी गइनी
लोहवल क कोठरी गइलैं रे नियराय
वरछी मैं भलवा कमर में चढ़ावै
एड़वा में एड़वा जौ ले लैं रे मिलाय
पहुँच गइलैं राजा बमरी क किलवा पर
आरे बाबू मनब्या बात हमार
कउने मै करनवा बिगुल तोरे बजलैं
बमरी जौ हुकुम मैं देलैं रे लगाय
इहै हउवै अगुवा बीर लोरिक कै
मारि नावा सोहवलि की रे बजार

मुंगरा लेकर अजई का बमरी की पलटन से लड़ना

चारि अलंगे से पलटनि बीचवे में छेकलं
आरे धोबिया मोर गयल रे घबड़ाय
लेइके मुंगरवा मैं धोबिया मारै
आरे गोल पिछही के चले ले पराय
लेइ लेइ मुंगरवा कैं धोबिया लड़ै
आरे किला जुलुम कइले हौ बरियार
सारी मोरा गोलिया बेकलाइ बलको गइं
आरे बमरी पजरे गयल रे नियराय
चाउर खइल्या तूं बसमतिया
रहर मोर मुंगउवै की दर दर दाल

घिउवा जो बबुवा बयनन क खइल्या
आरे तेपर नेबुलन क खइल्या रे अंवार
एक ठे धोबी गउरा क आयल हउवै
नाहीं किलवा में परै लै बनखान
संगै जौ धोबिया पर तोनहन गिरत्या
आरे धोबी तरही मो जातैं रे दबाय

पलटन द्वारा धोबी को घर दबाना तथा उसकी छाती पर कोल्हू तथा नखों में खप-चार ठोका जाना

तबले ललकारत गोलिया कूदि गइं
आरे धोबी नीचहीं में दे देलैं रे दबाय
उलटी म मुसुकिया धोबी के चढ़ि गंइनीं
सवा पोरिसा गड़बड़ देलैं रे खनवाय
ओही में मं धोबी के बलको ढ़ेंगलाइ के
छतिया पर कोल्हुवै देलैं रे रखवाइ
नहन में खपचरिया धोबी के ठोकि गइलीं
तनक मै बीरुहुन हौले रे हवाल
एक दिनवा धोबिया के बीति गइलै
दूसरा मैं दिनवा गयल रे नियराय
तीसरा मै दिनवा धोबी के बीतत हउबै
आरे चउथा दिनवा बीतल हउवै जात
पंचंवा मै दिनवा जो धोबिया के बीति गं
आरे धोबी बुतवै रहल बा नाहि जात
सतईं मैं रतिया में धोबिया रूवै
आरे जेकरे झर झर बहत हौ नयन से आंस
आरे भइया मरि गइल्या हो मइ ऽ ऽ ऽ या
औ गउवां तूं ऽ ऽ ऽ ऽ गढ़ ऽ ऽ रे ऽऽ ग ऽ ऽ उ ऽ ऽ रा
आरे कि लोरिक त मरि गइल्या रे म ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या सगरवा के बलको
रे घं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

आरे हमार सांसत में रे मोरि मइया
आ जिनिगिया न परल रे हउवै
आरे कब लेबे रे मोर सांगिया आ खोजियउ ना ऽ ऽ ऽ रे ह ऽ ऽ मा ऽ ऽ र

लोरिक के कान में बनसत्ती द्वारा अजई की दारुण दशा का हाल कहना

आरे हइये बायें बनवा ऽ ऽ ऽ मोर ऽ ऽ ऽ सातिया ऽ ऽ ऽ ऽ
अ सगडवा पर सूतल रे बाड़े ऽ ऽ ऽ ऽ आरे दहीने सूतत बाड़ी

मोर मइया दुरुगवा ना बलकौ रे मा ऽ ऽ ऽ य
आरे हइए आजु एतनी मोर बतिया
आ बनसत्ती के कान ऽ ऽ ऽ वा में बलको लगि हो गई
आरे लोरिक के गइल बाड़ै मोर मइया
आ पंजरवा मोर नियरे ऽ ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ ऽ य
आरे बलको आपने ए बचवा सगड़वा पर बलको सूतत रे हउवै
आरे धोबिया किलवै में ए ललवा आ परल हउवै बनरे खा ऽ ऽ ऽ न
आ रे ए बान्हल जो सोहवल में धोबी मरि जाला
गउरा में उपर जाला ए ल ऽ ऽ ऽ लवा
आ सोरिया ऽ ऽ ऽ ऽ नारे तोहा ऽ ऽ ऽ ऽ र [३३]

सती के साथ समस्त सुहवल के जल जाने के भय से संवरू का अग्नि बाण न चलाना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ आ
तब लोरिक तमुवा से उठलैं
मल सांवर क तमुवा गइलैं रे नियराय
ए भइया ए भइयं
आरे धोबी किला में परल बा वनखान
तनी सगरा पर तूं बरतियै देखं
आरे हम सोहबल की जाबै रे बजार
एतनी बात मल सांवर सुनलं
आरे टप दे तन लैं रे अगिन कर बान
मारि देइं गउवां सोहवल जरि जइहैं
आरे धोबी बच जा सोहवल की हो बजार
तब लोरिक संवरू के समुझावै
आरे भइया मनब्या बात हमार
ओही के संगे भउजी हो जरि जइहैं
आरे पीछे झोलिया तू घलब रे बुताय
एतनी बात मल साँवर सुनलैं
आपन बलको रखि दे लैं अगिन कर बान
लोरिक अपना तमुवा पर घुमि के अइलैं
पेन्हे लागल निरखी जब गलवन में
एड़वन में दोहरी मोर खींचैं लै तमाँच
आल्हा गूंजकर जब पनही जे

आरे बलको गोड़वन ले लैं रे चढ़ाय
सात मै परद कै बलको देखा तावा
आरे बलको छतिया ले लैं रे बन्हवाय
बायें त बगल में जौ ओड़न बान्है
आरे दहीने घींच के बिजुलिया खाँड़
सोरह सै कंटाइन सुमिरं
आरे सोरह सै मरी रे मसान
सोरह सै दलवा मैं छोहड़ो सुमिरं
आरे जवन रूवां रे रूवां असवार
ब्रह्माइन बोहवा कै सुमिरं
आरे सँवरू दादा कै रे पुजमान
गोरये डीह गइयन कै सुमिरं
आरे गोरया उछरें अठारह हाथ
बांये बनसतिया के सुमिरं
आरे दहीने सुमिरै दुरुगा माइ

दुर्गा की सहायता से लोरिक का अजई को गड्ढे से निकालना

आंगवां जे आंगवां दुरुगा रे चलत बाय
आरे पीछे लोरिक रेवरले जाय
पहुँच गइलै फटका राजा बमरी कें
आरे दुरुगा बगल में भइल ले तइयार
इहै हौ फटकवा राजा रे बमरी कै
हनि के एड़ा मारै फाटके गिरै रे भहराय
हनिके मैं एड़वा फटकवामें मरलें आरे बलको फटका गिरल भहराय (पु०)
हलले मैं किलवा में दुरुगा गइं
धोबियें के पजरे मो गइल रे लिआइ
एहर माया दुरुगा सोहवली में कइल
आरे सब सूत गोड़ फइलाय
धोबिया बनखान जब किलवा में परं
आरे लोरिक पजरे गइलें रे नियराय
परल बा नजरिया बीर लोरिक कैं
आरे जेकरे ढुरकत हौ नयन से आँस
मरि गयल संगी मोर रे किलवा में
आरे टप दे लोरिक के भयल रे खियाल

आरे सुनिला मंतगी तो ही बलको घोबी
आरे तनी मनब्या बात हमार
तनी एकन सीना तू किला में फुलवत्या
आरे नार तीन तीन रे टुकड़ होइ जं
दहीने से तूं बायें मेल्हि जात्या
छतिया का कोल्हुवा जातै रे ढेंगलाय
लेके मुंगरवा किला में लड़ि जात्या
जोर में हमके तूं देत्या रे अवाज
सुनि लेइत बबुआ जब सगड़े पं
आरे तोर छतवन में करित रे गोहार
तब धोबी सिनवा जो आपन रे फुलावै
नार बलको तिन तिन रे टुकड़ होइ जं
दहीने से धोबिया बायें जो मेल्हि गइलै
छतिया क कोल्हुवा गयल रे ढेंगिलाय
नहवां खपचारी धरती में ठोकि देहलं
आरे नहवन क गिरल रे खमचार
जब धोबी उठि के बइठ मोर गइलैं
पकड़ के कलाई बीर लोरिक जं
गड़बड़ा से अपना लिहलैं रे निकाल

दुर्गा, लोरिक और अजई धोबी का मोती सगड़ पर वापस आना, बमरी की उदासी

अँगवा जो अँगवा मै दुरुगा चलल
पिछवा से धोबिया रेवरलै जाय
तेकरे मैं पिछवा मै लोरिक चललै
लेके चलल मोती रे सगर के घाट
जब धोबिया के सगड़े पर लेइ गइं
सोहवल होइ मोर गइलें रे बिहान
गड़बड़ा में सिपाही जाके धोबिया के देखै
आरे धोबी कै आ पतवा ना लगलै ठेकान
बमरी के निचवा मउर लटकि गईं ऽऽऽऽऽ
आरे बमरी होइ गइलैं उदास
अब कवन बीरवा बलाईं सोहवल में
आरे अब कवन बीरवा बलाईं सोहवल में (पुनरावृत्ति)
कइसे जीतल आ बाजी होइ रे हमार

एहर मुंसी बोलै राजा बमरीं से
आरे बाबू मनब्या बात हमार
लिखिदा मैं पतिया थाना रे सोहवल से
आरे पाती सिलहट के गिरै रे बजार
दूनो बेटवा मोर इलाके से बोलवाल्या
आरे जीतल बजिया होई रे तो हं

बमरी का अपने दोनों पुत्रों को पत्र लिखना और सोहवल पर लोरिक के चढ़ आने की बात कहना

एतनी बात जब बमरी सुनलैं
हाथे में कलमिया ले लैं रे उठाय
लीखैं लगले गउवां गढ़ सोहवल में
आरे बारह पाल गउरा मोर लिखलै
आरे माई तिरपन कनउज के लिखैं लैं बजार
आरे तिरपन कनउज के लिखैं लैं बजार (पुनरावृत्ति)
अन खाया बेटवा तू गढ़ सिलहट में
पानी आइके सोहवल की पीय रे बजार
चढ़ल बा मुदइया गढ़ गउरा कं
आरे जेकर लोरिक रे बघेला नांव
धोबिया मंतगिया मोर करै लै अगुवई
आरे धोबी खइले ह अगुअई क भात
जेतना मै बार ना कुंवरवा कनिया सोहवल
ओतना बर टिकल मोती रे सगड़ के घाट
बान्हल परनिया बेटवा सोहवल में टूटल ह
धावन के हथवै में देलै रे थमाय
धावन पाती अपने बलकों रे गठियावै
संड़िनी के पजरे गयल रे नियराय
डाकि के धवनवां संड़िनियां पै चढ़ि गं
अपने सड़िनी दे लें रे दवराय
लेके बलको सिलहट के धावन चललैं
नव नव गंडक तोरन लागैं
आरे तेरह भिउली के तोरै ले पहाड़
रात चलैं लैं दिन धावन लागैं
आरे कत्तो कुच वन करैं लैं मोकाम

पत्र लेकर धावन का दसवंत के पास पहुँचना और दसवंत का सहोवल का हाल पूछना

लेके पतिया सिलहट में गइलं
दसवंत क बंगला गइलै रे निअराय
जाके मैं सिपहियनि से पूछन लागे
आरे बाबू दसवंत भिम्हलियै कहाँ बाय
सिपाही कहलै बाबू उहै मेवा करनी
आरे दूनो जने बलको लड़ति बाय
धावन आपन सिड़िनी अखड़वा के हंकलं
दसवंत के पंजरे गइलैं रे नियराय
कूदि के सड़िनिया से देखा धावन
आरे आपन सिरिया घलै ले लटकाय
जै जै जै दसवंत बोलं
धावने के पंजरे गइलै रे निअराय
का हाल धावन गढ़ सोहवल कै
कइसे दादा बमरी जौ हउवैं रे हमार
कइसे भइया गउवां रे सोहवल में
आरे कइसे सतिया जो बहिन बाड़ै रे हमार
कइसे मों सोहवली जौ गांव जे हउवैं
आरे एकर भेदवा तूं देब्या रे बताय
खोल के पतिया धावन मैं थमावै
दसवंत बाचै ले नेतर फइलाय
तबले भिम्हली बलको पजरे अइलं
आरे भइया मनब्या बात हमार
का का पतिया में बलको लिखल बाड़ं
दसवंत बांचि के मोर घलैं ले सुनाय
बारन पाल गढ़ गउरा लिख लैं
आरे तिरपन कनउज क लिखे लैं बजार
तेलियै लिखल बाड़ैं जाति तमोली
आरे जतियन के भुजा रे कलवार
जतियन के रघुवंस लिखा है
आरे जेकर निंगी रे झूलैले तरवार
जतियन कै जदुबंस लिखा है (पुनरावृत्ति)

आरे गुपुती नन्दन बसैं लैं गुवाल
घर घर मोरि अखड़वा बनल ले गउरा में
आरे लेजिम घुमनी जो सांझ बिहान
सात मो कोसे क बोहा लीखल भइया
चौदह कोस के बिड़र कें चरति बाड़ीं गाय
धोबिया मतंगिया मै करै लै अगुवई
आरे धोबी खइलै ह अगुवई क भात
करिना बताउर राजा बमरी कै
टिकल बाड़ै मोती रे सगड़ के घाट

गउरा से बारात चढ़ आने की सूचना पाकर भिम्हली का क्रुद्ध होना

एतनी बात जब भिम्हली सुनलं
आरे बड़े जोर से तड़कति बाय
पूरुब देस पुर पाटन गइलीं
कोई ऽ ऽ ऽ ऽ आरे जोड़ ना मिलल हमार
दखिन देसे हम पहाड़े में गइलीं
कोई जोड़ ना मिलल हमार
पच्छिम देस पंजाबे में गइलीं
कोई जोड़ ना मिलत हमार
उत्तर देस नैपाले में गइलीं
कोई जोड़ ना मिलत हमार
चार कोन क पिरथमी भइया
लग्गन से अइलीं थहाय
कोई बदी ना मिलत खेते पर
मुहें पेल के चलल तरवार
बान्हल परन बाबिले कै
आ टूटि जाला देसवा में लटकि जाला ऐ बी ऽ ऽ ऽ
र ऽ ऽ ऽ ऽ ना ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ म ऽ ऽ ऽ उ ऽ ऽ ऽ रि ऽ ऽ ऽ या
ना ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ तो ऽ ऽ ऽ हा र [३४]

योद्धा की पूरी सज्जा के साथ भिम्हली और दसवंत का पलटन के पीछे-पीछे सुहवल चलना

हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
जेतना पट्ठा अखाड़े पर जूटल बाड़ै ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे दसवंत कहलं

रोज रोज मोंसे कहल्या गांव सोहवल देखाय द्या ज्वानो
आज देखै क पारो गइल नियरा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ य
कादर मनसेधू जंघिया निगोटा छोड़ छोड़ चललै पराय
सुरवां छतिया के आरे भइलैं रइन पर ठाढ़
दसबंत भिम्हली जंघिया निगोटा छोड़ि के
आ एहर चललैं बंगले के
सिपाहिन के अडर लगवलं
पट्ठन के दाना पानी कराय द्या
चलै के सोहवल के री बजा ऽ ऽ ऽ र
एहर दूनो भाई गइलैं बंगले में
आपने दूनो जने दाना पानी कइके
तब अडर लगावै सिपाहिन के
हाथी पर हउदा कसवाय द्या
बड़का घंटा देब्या रखवाय
एहर ए भाई आडर लग गयल, भयल तइयार
अपने दूनो भाई बंगले में साजे लगलं
आरे पेन्है लगे निरखी जब गलवन में
गोड़वन में दोहरी मोर खींचै लें तमांच
आल्हा गूंज कर जब पनहीं जं
आरे पट्ठा एंडवन ले लैं रे चड़ाय
सात परद के तावा पितरिन के
आरे छतिया पर ले लैं रे बन्हवाय
पंच पंच बान पीठिया पर लाँ दै
हथिया के पजरे गइलै रे नियराय
दूनो जने जाइके हाथी पर बइठ गइलं
आरे बिगुल बजवइ दे लैं बजवाय
अगवां अगवां जौ पलटन चालल
पिछवा से हथिया रेवरली जाय
लेके सोहवल के जब चलि देहलं
आरे थाना सोहवल की जालैं रे बजार
गउवां सिलहट जब डांकन लागे

दो सियारों के रास्ता काटने पर भिम्हली को अपशकुन की आशंका

दूसरा मों सरहद गइलै रे नियराय
जोड़ै सियार अगवैं से भागैं

भिम्हली के सोझे नजर परिजाय
भइया दसवंत बतिया मानं
आरे बड़ा असगुन गयल रे देखाय
दसवंति बोलत जब भिम्हली से
कइसन असगुन देखति बाय
दुइ सियार अंगवें से भगलें
आरे का दो हमहन के ए बीर ऽ ऽ ऽ ना
मरनवा जौ आयल रे हउ ऽ ऽ ऽ वें
आरे कादों मुदई कै गयल हउवें
ए बीरना मरनवा जो नियरे ऽ ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ य
आरे कादौं कालि न होके ए बीरना
सतिया बहिनिया जनमल रे हउवै
आरे कां दो बमरी दादा भइलैं रे मोरि
म ऽ ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या आ जियरवा न कइरे का ऽ ऽ ऽ ऽ ल [३५]

भिम्हली और दसवंत के आने की समस्त सुहवल में चर्चा

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
तब दसवंत हाथी पर बड़े जोर से तड़क ऽ ऽ ऽ ऽ ल
अइसन अइसन असगुन भिम्हली बहुत पंयड़े में देखिला हमहन का मरन ना होई

हां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
तब हाथी सोहवल के हकलं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बजल घंटा हाथी कै
सोहवल सबद गइल सुनाय
लागल बा कचहरी राजा रे बमरी कै
गहुअर झूमि के लगल दरबार
बायें बगल में मुंसी बइठै
आरे दहीने कायथ बइठें लै देवान
बाजत बा तबलवा नैपाली मोर
घुटुकै बलको सांझ बिहं
लागलि बा सबदिया जब घंटा कै
छतिया फूलि भइल गजराज
आरे ऽ ऽ ऽ ऽ बाजत बाड़े घंटा जब हथिया कै
छतिया फूलि भइल गजराज(पुनरावृत्ति)

आवत बा बेटउवा भिम्हली मोर दसवंत
दुसुमन मारि नाई खेत मयदान
एतनी बात बमरी मोर सोचं
ओहर मै सबद सोहवलि में लगि गइनीं
घर घर गोपिनि के खबर होइ गइलीं
अपने घर से गोपिया निकसै
घर घर अपने दउरन लागे
बहुत दिना पर बियाहे क नांव
मोरे गांव सोहवल में सुनायल बाड़ैं
फिन हथिया लेके दसवंत भिम्हली
सोहवल की आवैं न रे बजार
कुल दुलहा सगरे पर मरिहैं
आरे बलको फूटि गयल भाग हमार
तब गोपी अचरा खुल मनावै
आरे हमहन तीनि तीनि रे मइया
पनथिया न बीति हो गइलीं
आरे चउथी मरन ए राम जी
गयल हउवै नियरे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रँ
आरे एहर मैं दंतवा रे भइया सोहवल में टूटि हो गइलैं
आरे सनकुट हो गइले रे राम जी कपरवन के बेलकुल रे बा ऽ ऽ ऽ र
आरे कब मरि जाई रे भइया बेटउवा रे बमरीक ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे कब सोहव ऽ ऽ लि में खुलि जाई रे ऽ ऽ र ऽ ऽ ऽ म ऽ ऽ ऽ वा
आ ऽ ऽ ऽ ऽ अगिया ना ऽ ऽ ऽ र ऽ ऽ ऽ ह ऽ ऽ ऽ मा ऽ ऽ ऽ र [३६]

राजा बमरी का अपने पुत्रों भिम्हली और दसवंत को सोहवल में बुलाने का कारण बताना

हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ
आरे तब दुनो जने हाथी हँकले
थाना सोहवल की गइलैं रे बजार
एहर राजा बमरी के पलटन सजल ह
हाथी फटकै भइल ले तइयार
हाथी बइठाय के दुनौ मोर भाईं
आरे कचहरी गयल जो बाड़ैं रे नियराय
जाके बमरी के गोड़वा पर गिरि गइलं

आरे दादा मनब्या बात हमार
कवने पै करनवा थाना सोहवल से
सिलहट में पतिया देला रे भेजवाय
एकर भेद तू हम्मै रे बताय द्या
चिन्ता बलको बढ़ल रे बदन में बाय
बोलत राजा बमरी सोहवल ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बेटवा मनब्या बात हमार
जवन धोबिया सोहवल आयल रहलै
आरे बदी खेलैल्या खेत मयदान
हनि के एड़ा धोबिया के मरलं
आरे बलको टूटल रे पजरिया के हाड़
तवन धोबिया मोर करै लैं अगुवई
आरे धोबी खइले ह अगुवई म भात
जेतना मै बार कुंवारि कन्या सोहवल
ओतना पर टिलक मोती रे सगर के घाट
पहिले अगुवा के बेटवा तू मरत्यां
पीछे मुदई के मारि घाला ललकार
एतनी बात जब बमरी कहलै
दसवंत ठांवइ देलैं रे जबाब
दादा तनी मोरि बतिया माना
हम धन मोती रे सगर के घाट
जाके सगड़े पर पता रे लगाइं
मारै जोग सूबा मोर आयल
जोरै जोग आयल भैंपाल
जोरै जोग हीताई अइलैं
टिकलैं मोती रे सगर के घाट
एकर दादा पता लगायीं
आरे हुकुमै बमरी मैं दें लैं ऐं लगाय
दुनौ भाई अपने कचहरी से चललं
हथिया के पंजरे गइलैं रे नियराय
दुनो जने अपने हाथी पर चढ़ि गइलैं
हाथी हांक के चललैं मोती रे सगर के घाट
गांव बहरे सोहवल के निकसै
हाथी लेके सगरा के करैं लैं पयान

हाथियों के घंटों की आवाज सुनकर अजई का तम्बू से बाहर भागना

घंटा बलको हथिया क बाजै
घन्न घन घंटा गयल रे सुनाय
धोबिया के काने में सबद लगि गइनीं
आरे धोबी तमू से निकल के भागल जाय
जब भिटवा पर धोबी रे खड़ा है
आरे लगा के ओसरियँ ताकत बलको बाय
हथिया मै दसवंत भिम्हली के देखलै
आरे धोबी बलको मोर चलेला पराय
अपने तम्मू में धोबिया जागें
आरे मोटका गदवा पीठि पर लेलैं फेंकि
सूतला तमू कुल ऽऽऽऽऽ (अस्पष्ट)
सुतलै कनात कुल तमुवा क कटलं
निचवा खर खर धोबी हिलत बाय
उपरा से मोर तमू रे हिलावैं
तबले हाथी भिटवा गइल नियराय
पहिले डोम सुरुजन परि गइलैं
आरे हाथी भिटा पर दे लैं रे चढ़ाय
एहर हथिया के बलको घन्टा बाजै
आरे बलको हँसे गउरा के बजार
पहिले काम सुरुजन से परलैं
आरे एही मोती रे सगर के घाट
देखा हाथी रोकै लै सगरे
कुछ दुसुमन से घलैले बतियाय
तबले हथिया मोर भिटा पर चढ़ावै
सुरुजन क फटका गइलें रे नियराय

सुरजन के आकार प्रकार का वर्णन

सुरजन बइठल जब तम्मू में
आरे जंघा रे केदरियन क खंभा
मुसुक लउकै रे खयर कर डार
सेरन धूर गरदन पर लउकै
आरे पवन चमकै माथ लिलार
दू दू फेरा मोंछि अइठले काने पर

सुरजन बइठल रे तमू में बाय
तबले हाथी फटका पहुचं
आरे सुरजन मैं दे लै रे जबाब
चोर चंडाल भूत बैताल
अइसन हाथी घलै लै टहराय
आरे आजु होइ भेंट सूबा से सगड़े पर
काटि लेई रे म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ या ऽ ऽ ऽ ऽ
तोर मं ऽ ऽ ऽ ऽ थ ऽ ऽ ऽ वा ल ऽ ऽ ऽ ल ऽ ऽ ल ऽ ऽ ऽ रे का ऽ ऽ र [३७]

सुरजन का भिम्हली और दसवंत से अपनी जाति बताना और गउरा गांव का परिचय देना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ आं
जब अइसे अवाज सुरजन देला
आरे भिम्हली दसवंत के खोदन लागे
भइया माना बाति हमार
अइसन बात बतियावत हउवै
ई कवन जात बलको बाय
एसे पूछा भइया सगरें
आरे जल्दी तू करा रे जबाब
तब दंसवति मोर बोलन लागे
आरे बाबू मनबा बात हमार
सुना भाय तनो मोर सगरे पं
एइसन बतिया कलै ला बतियाय
हथिया के बाबू सुअर बनवल्या
तू एइसन काहे देला रे अवाज
कवन जात तू भइया तू हउवा
एकर भेदा देव्या रे बताय
बालत सुरजन जब सगड़े पं
आरे बाबू मनबा बात हमार
हम जतिया के सुरजन डोम जं
थाना रहिला कनउज की रे बजा ऽ ऽ ऽ र
बीर लोरिक के संगे बबुवा
आरे हम करै अइलीं रे बरात

बाबू एतनी बात में चौढ़ं
आरे अइसन देत बाड़ा रे जबाब
बड़ा लोग गउरा क आयल
बड़ा बड़ा लोग गउरा के आयल (पुनरावृत्ति)
बड़े बड़े लखपती मोर अइलें
बड़े बड़े करोड़पति जे अइलें
अइसन सुअर केहु क दुवारे हम ना देखलों
एकर मान जान ना होत
इ गउरा ना रखले हउवै
तब दसवंत मोर पूछै
आरे गउरा तोहार जौ कइसन हउवै
आरे सुरजन डोम तब देलै रे जबाब
बारह पाल गढ़ गउरा
आरे तिरपन कनउज क बसैले बाजार
तेलिया बसल मोरी जात तमोली
आरे जतियन क भुजा रे कलवार
जतियन कै रघुबंस बसे हैं
आरे जेकर निगी रे झुलै ले तलवार
जतियन कै यदुबंस बसे हैं
आरे गुपती नंदन बसै ले गुवाल
घर घर मोर अखड़वा बन्हल रे गउरा में
आरे लेजिम घुमैनी सांझ बिहान
ओगर गाँव लड़वइया हउवै
लड़लस मेवा रे करन के बगवान
मुदई से भेंट खेतवा पर होला
आरे गउरा बातिन से चुकै लगल
आ मुदई के मुहवां में
पेलि देहलस रे म ऽ ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ ऽ या
आ खेतवा पर तर ऽ ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ वा ऽ ऽ ऽ र [३८]

बसवंतत और भिम्हली का बांठा, धोबो, देवसी तथा शिवगढ़ के तम्मू में पहुँचना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ आं
ऊहां से हाथी दूनो जने हकलैं
आगे कै हाथी घलैं बढ़ाय

परल तम्मू बंठवा चमरे क
जेमन अंउसा धंउसा गांजि के
सूतल बांठ चमार
सबकर पियरी धोबी तमुवा
आरे सबकर मउर रे टंगल बलको बाय
सबके हाथे में कंगन बन्हल बाड़ं
गोड़वा बुकनी से रंगल बाय
तब भिम्हली दसवंत से बोलै
आरे भइया मनब्या बात हमार
बड़ा असगुन सगरे पर देखत बाड़ीं
कपरे पर असगुन गयल नियराय
एइसन अचरज कब्बो ना देखल
आरे थाना सोहवल की देखल रे बजार
इ बजनिहां सगड़े पर बाड़ैं
सब दुलहा बनल मोती रे सगर के घाट
उहवां से हथिया आपन हकलं
धोबिया क तमुवा गइलैं रे नियराय
घटा जेतना मै हथिया क बाजै
धोबी के काने में सबद जो गइल रे सुनाय
निचवा से धोबिया जो अपने कांपै
ऊपरा से तमुवा मै घलै ले हिलाय
तब हथिया तम्मू पर पहुँचं
भिम्हली क सोझे रे नजर परिजाय
ए दसवंत भइया तनी देखा
बड़ा भारी अचरज गयल रे देखाय
चौमुख बतिया मैं देखत बानी
इहवां जो असगुन गयल रे देखाय
कवनो जादू कय खेला कइलै ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बलको करी रे जदुववन क मार
अगवैं के भइया तूं हाथी रे बढ़ावा
दुनो जने हथिया मै दे लै रे बढ़ाय
लेके हथिया देवसी के तम्मू
आरे दसवंत भिम्हली गइलै रे निअराय
नौ नौ कुतिया तमुआ में बइठल

नौ धनुवा मोर दे लैं रे टंगवाय
उहवां से देखत दसवंत भिम्हली
अगवां के हथिया मै दे लै रे बढ़ाय
देवसी के तम्मू पर गइलै
आरे हां देवसी के तम्मू पर गइलै (पुनरावृत्ति)
उहवां से हथिया आपन हंकलै
सिवगढ़ के तमुवा पर गइलै
आरे सूतल सिउअरिया बाय
भिम्हली मै देख के जब सगड़े पं
आरे बलको गयल हउवै रे घबड़ा ऽ ऽ ऽ य
भइया सुना मोरे हो दसवा
बड़ा भारी असगुन गयल रे देखाय
हम त जानी कवनो मानुख टिकल हउवैं
बेलकुल भूत टिकल सयतान
उहवां से हथिया ज अंगवइं हांकं
दसवंत के देवइ लगलैं जबाब
बड़ा अचरज भइया देखत बाड़ीं
बड़ा बड़ा दूलहा जौ बाड़ैं रे देखात

बारातियों के हाथ में कंगन देख कर दोनों भाइयों को आश्चर्य

एक बात कै अचरज भइया
सबके हथवा में रे मइया
कंगनवा मोर बान्हल रे हउवै
आरे सबके हथवा में बीरना
कंगनवा मोर बान्हल रे हउवै
आरे सबके गोड़वा में बीरना
बुकनिया मोर लागल रे हउवै
आरे जेतना दादा बारि कुंवरवा करिनवा रे सोहवल में
ओतना बाबा टीकल बाड़ें बीरना
जो खेतवा ना मय रे दा ऽ ऽ ऽ ऽ न
आरे एहर एइसन बतिया ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे एइसन बतिया सगड़वा पर बोलै हो लागै
आरे कत्तो नाहीं मोके मइया दुलहवा कवनो लवकत रे हउवै
नाहीं बराती क तनिकौ रे बीरना जो लवकत हउवैं सर रे दं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

दोनों भाइयों का संवरू के तम्बू में पहुँचना

ऊंहवां से हथिया अगवां के हांकि रे देला
आरे बलको संवरू के गयल बा तमुववा मोरे नियरे रं ऽऽऽऽ
आरे जब संवरू के तमुववा पर हथिया मोर पहुँच रे गइं
आरे भिम्हली के सोझइं रे मोरि मइया नजरिया ना परि रे जं ऽऽऽ
आरे कहलें भइया बरवा मोर जोगवा बरवाः जो लवकत रे हउवैं
आरे समधी जोगवा ए बीरना नाहीं लवकत बाड़ै बलको ग ऽऽ रा ऽऽऽ
आरे ना बदिया मोर जोगवा बदिया ना लवकत रे हउवै
आरे सूबा कउनै रे मोर बीरना वरनिया कें बलको रे बं
आरे एहर धीरे धीरे भिम्हली दसवंत के समुरे झा ऽऽऽऽव
आरे घुमि के गउवां ए बीरना
सोहवल में चालि हो चलब्या
चल के दादा बमरी के बीरना
सोहवल में समुरे ऽऽऽऽ झावा
आरे थरिया थनवा ए बीरना संगवा में लेइ हो लीहैं
आरे संगे लेइ लीहैं बीरना
कुटुमवा आपन पलि रे ऽऽऽऽऽ वं
आरे नाउ बाभन ए बीरना संगवा में लेइ हो लीहै
आरे सवा मन सोनवा ए बीरना सोहवलि में लेइ हो लीहै
आके तिलक चढ़ाइ देति ए बीरना सगड़वा के बलको रे घं
आरे सुन्दर मोर हितइया गउरा में होइ रे जइहैं
आरे कबो छतवा में हितवा करिहैं ना रे गोहं

दोनों भाइयों का लोरिक के तम्बू में पहुँचना

उहवां से हथिया सगरवा रे हाँकि रे देला ऽऽऽऽ
लोरिकै के तमुवै रे भइया गयल हउवै नियरे रं
आरे जब घन घन घंटवा सगड़वा पर बाजै रे लागै
आरे तब तक एहर लोरिक के मै काने में
सबदिया ना लागि हो गइं
आरे लोरिक फटके पर अपने भयल बाड़ै तउरे यं
आरे बड़े जोर से अवजिया लोरिक बलको देवइ रे लागै
आरे बड़े जोर से अवजिया लोरिक बलको देवइ रे लागल (पुनरावृत्ति)

दसवंत और लोरिक की बातचीत

चोरवा चंडलवा सगरवा पर आयल रे हउवै
आरे कउनो भूतवा रे मइया आयल बाड़ै सयरेतं
आरे कवनो तूं टूटही पनहिया बरतिया के हमरे चोरा हो लेबा
तोहरे खलिया में बबुआ भूंसा देबै बलको भरेवं ऽऽऽऽ
आरे जब एतनी मोर बतिया लोरिक बलको कहि रे देला
आरे भिम्हली हाली हाली मइया दसवंत के खोदै रे लगलैं
आरे भइया कवनों तू बतिया सगड़वा पर पूछि रे लेब्या
आरे तब तइ धीरे धीरे दसवंत लोरिक से मोर बोलै रे लागल
आरे भइया रहिया हमना बटोहिया ना आयल रे बाड़ीं
आरे नाहीं सुब्बा रे मइया आयल बाड़ी उमरे ऽऽऽऽ रा ऽऽ व
आरे बाबू हमरी पयंड़वा सगड़वा पर भूलि रे गइंली
आरे तोरा लालै लाल तमुवा बलको देखले रे बांड़ी
लालै लाल तमुवा के बबुवा खींचल बाड़ैं ना रे कना ऽऽ त
आरे एहरवैं त सुन्दर सुन्दर बबुवा मनुसवा सगरे देख लें रे बाँड़ी
आरे उहै घूमि गइल बबुवा हथियउ रे ह ऽऽऽ मा ऽऽऽ र
आरे भइया अपनै तू भेदवा सगड़वा पर तं हमसे बताय द्या
आरे कवने कारन टीकल बाड़्या बबुवा मोती सगड़वौ के रे घा ऽऽऽ ट
आरे बलको आपनइ भेदवा हमसे तनी जल्दी ब ऽऽऽ ता ऽऽऽ वा
आरे केहू कवने करनवा सगरवा पर टीकल रे हउवा
आरे तोरा पयंड़ा बबुवा गइल ऽऽऽ बाड़ैं ना ऽऽ रे भु ऽऽ ला ऽऽऽ य
आरे बाबू खरचा बबुवा सगड़वा पर चुकल रे होइहैं
आरे तोहके गड़िया छकड़वा देबै बलको लदरे ऽऽऽ वा ऽऽऽ य
आरे बाबू पंयड़ा भुलाइल हो तोहके बलको पहुँरे चा ऽऽऽ ईं
कोई के दुसमन होके टीकल होबा ओकर भेदवा
देबे हमसे ना रे बा ऽऽऽ ता ऽऽऽ य
आरे हइहे बाबू दुसमन कोई के सगड़वा होके जोहत रे हउवैं
तब तै धीरे धीरे बोलै लागल ज बेटउवा रे बुढ़िया कै
आरे बाबू हमके खरचवा सगड़बा प नाहि चूकि हो गइलै
आरे नाहीं पयंड़ा बबुवा गइल बाड़ैं ना रे भु ऽऽऽ ला ऽऽऽ य
आरे बाबू इहै धोबिया मतंगिया कइले हउवैं बलको आगुवई
आरे धोबी खइलै बाड़ै बबुवा अगुवइनकै रे भा ऽऽऽ त
आरे बलको करिना बबुवा बताउर रजवा रे बमरी क

आरे तब तइ टीकल बाड़ी बबुवा खेतवा मय मय रे ऽऽऽ दा ऽऽ न
आरे बइठल बाड़ै आ दसवंत कै जोहत बाड़ीं
हमसे ना भईल रे मोरि म ऽऽऽ इ ऽऽऽ या
औ भेंटिया मुल रे ऽऽऽ का ऽऽऽ त [३९]

बमरी के पुत्र झिंगुरी का बोहा में छ महीना बास करने और मल सांवर से सम्बन्ध स्थापित करने के प्रस्ताव का उल्लेख

हां ऽऽऽ आ ऽऽऽ हां ऽऽऽ आ
तब भिम्हली दसवंत से कहलं ऽऽऽऽ
कि भइया पूछा धोबिया के अगुवई
हां ऽऽऽऽ तब दसवंत पूछैं वीर लोरिक से
एक बात तूं हम्मैं बताय दा
अउरो केहू अगुवा हो ऽऽऽ कि
अइसे केहू तिलक बरच्छा ऽऽऽ गउरा में
सोहवल से करै गयल कि
धोबियैं के अगुअई कइले चढ़ि अइला
मोती सगड़ के घाट
एकर भेद बताय द्या बबुवं
आरे चिन्ता बढ़ल रे बदन में बाय
तब बोलत बेटवा बुढ़िया कं
आरे बलको राढ़ी रे सिहिन कर बार
सुनिला भइया बलको एठियन ले
एक समै क हाल सुना जो
राजा बमरी क गाय बहक के
आरे मोर गइयन कीं गइलीं रे अड़ार
ओनकर बेटवा खोजत झेंगुरी गइलैं
मल सांवर भइया के संगे
छ महीना दूधै लिट्टी खइलैं
सतवां महिनवां जब चढ़ि बलको गइलैं
आरे झिंगुरी बोलत अन्तःकाल
सुना म ऽऽऽ ल तोहीं संवरू जं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
बहुत दिन बोहे में भइलैं
अब हम सोहवल की जावै रे बजार

बड़ा सेवा मल सांवर तूं कइल्या
संगी भइल्या बलको हमार
एक ठे मोरे तोरे संगे हिताई हो जाय
थाना कनउज की रे बजार
तवन मल सांवर कहैं लगलैं
झिंगुरी माना बाति हमार
नाहीं बेटवा नाहीं मोरे बिटियं
आरे थाना कनउज की रे बजार
दू भाई गउरा में जनमल
दूनो जने बारइ परल कुवांर
दूनो जने कइ बियाह ना भइलैं
कवन हिताई कनउज की करब्या हो बजार
तू गइया आपन लेइ लेबं
घूमि कै मैं सोहवल की जाब्या हो बजार
तब झिंगुरी मल सांवर से कहलैं
आरे बाबू मनब्या बाति हमार
जइसे जनम तोहार गउरा हउवै
ओइसे सतिया बहिन सोहवल की जनगल रे बजार
जइसे तोर भइया गउरा जनमल
ओइसे बेटवा दसवंत भिम्हली ले लैं रे अवतार
चल के दादा बमरी के समुझाईं
मानि जइहैं बतिया जो बलको रे हमार
करा दे बियाह मैं गांव सोहवलि में
दादा बतिया जौ नाहीं मोर मनिहैं
लोहा बलको बाबू रे लगी खेतवा पर
मुहवां में पेलि के चली रे तरवार
जे जीति पाई लोहा सोहवल कै
उहै बलको भांवर घली रे घुमाय
तवन झिंगुरी के पतवा न लगत हौ
न बरतिया क कउनो करैं लै इंतिजाम
बइठल पयंड़ा सगड़वै पर जोहं

दसवंत का बमरी के पास आना और उनसे सगड़ पर चल कर वर-रक्षा कर देने का प्रस्ताव

तव दसवंत से भिम्हली बौलें

आरे भइया मनब्या बात हमार
तिलक बरच्छा भयल बाड़ैं
चल के दादा बमरी कै कवल समुझा दं
कइसों मान जातैं बतिया बलको रे हमार
एहर मै सवा मन सोना ले तैं
संग में ले लिहैं कुटुम परिवार
नाऊ बाभन संगे में लेके
आवा मोती रे सगड़ के घाट
चढ़ा द तिलक बलको मल सांवर क
भांवर बलको देब्या रे घुमाय
सुन्दर मो हिताई गउरा होइ जइहैं
दूनो जने हथिया मैं ले लैं रे घुमाय
लेके गउवां सोहवल के चलैं लैं
आरे थाना सोहवलि की जालै लैं बजार
जब हथिया फाटक पर बइठल
बमरी के हलल रे कचहरीं में जाय
एहर दसवंत बमरी के पजरे
आरे जाके गोड़ पर गिरैं लैं भहराय
तब बमरी दसवंत से बोलैं
बेटवा माना बाति हमार
का का सगड़े पर देखले बाड़ं
आकर एकर भेदवई देब्या रे बताय
धीरे में बोलत मल दसवंत जे
आरे दादा कहलइ माना रे हमार
थरिया थान सोहवल में ले ल्या
आरे संगे ले लेब्या कुटुम पलिवार
नाऊ बाभन संगवा में ले ल्या
चला चला मोती रे सगर के घाट
चढ़ा द तिलक जब रे सगरे पं
आरे गउरा सुन्दर हो जाई हितइया हमार
बड़ा सुन्दर हित आयल बाड़ैं
आरे दादा माना बाति हमार
एतनी बात बमरी जब सुनलैं
आरे बलको जरि के भसम होई जांय

बजर परो मल दसवंत
आरे तोके परो रे बजर के घान
हमसे रोज रोज सोहवल में कहल्या
कवनो मरदन से कराय द्या भेंट दीदार
आजु भेंटु मरदे से भइल काहे बदे हिल्लत बाड़े ऽ ऽ ऽ ए
ल ऽ ऽ ऽ ल ऽ ऽ ऽ वा ऽ ऽ ऽ आ टंगरि ऽ ऽ ऽ ऽ या
ना ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ ऽ तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [४०]

दसवंत की पत्नी का पति के आने का स्वप्न देखना और उससे भेंट करा देने के लिए नौकरानी सेप्रार्थना करना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
एहर दसवंत बमरी दूनो जनें बतियावैं
आरे ओहर किला में लगल खबर दसवंत के
बियही के लंउड़ी लउड़ी गोहरावै
आरे लंउड़ी भइल बगल में ठाढ़
त रुवत हौ रनिया ए लउंडी
सूतले में रे रनिया अ सपनवा हम धन देख लें रे ऽ ऽ ऽ बाड़ीं
आरे जइसे सइयां सिलहट से ए लंउड़ा
औ सोह ऽ ऽ ऽ व ल में आयल रे ऽ ऽ ऽ हउवैं
आरे हमसे कराय ऽ ऽ ऽ देबो ए लं ऽ ऽ ऽ उं ऽ ऽ ऽ ड़ी
अ भेंटियन मुल ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ का ऽ ऽ ऽ त
आरे एहरवैं अइसन सपनवा आ किलवा में
लउंड़ी हम देखत रे बाड़ो
आरे बड़ा दूतवा दउड़त बाड़ैं ए लउंडा
सोहवलि की बलको बजा ऽ ऽ ऽ र
आरे तबत लंउड़ी रोइ रोइ बतिया
आ रनिया के समुरेझावै ऽ ऽ
आरे अब हम तोहसे कराय देब ए रनिया
आ भेंटिया न मुल रे का ऽ ऽ ऽ त
आरे लंउड़ी छोड़लसि ए मइया बुरुजवा रनि ऽ ऽ ऽ या क
आरे बमरी के गइल बारे मोरि मइया
कचहरियो नियरे रा ऽ ऽ ऽ य
आरे जाके सिपाही के अंगुरी क सतवा पजरवा में हउवैं बलवले
आरे हमसे दसवंत से कराय देब्या ए सिपहिया

अ मेंटियो ना मुल रे ऽ ऽ ऽ का ऽ ऽ त
आरे ए सिपहिया फटकवा आपन बलको छोड़ि रे दे ला
आरे बमरी के गयल हउवै रे मोरि मइया कचहरी जो नियरे ऽ ऽ रा ऽ य
आरे जाइके अंगुरी क सनवा आड़े से दसवंत के हउवैं बुझवले
सिपाही के पजरवैं हो मोरि मइया गयल हउवैं नियरे रा ऽ ऽ ऽ य
आरे सिपाही कहलस तोहके लउंडी ए बबुआ फटकवा पर हउवै बलावत
आरे अंगवा अंगवा सिपहिया फटकवा पर लेइ हो गइलैं
आरे तब त लउड़ीं क तोहके ए राजा
रानी किलवा में हउवै बलावत
आरे एहर अंगवा अंगवा आ लउड़ी मै चलै रे लागल
आरे पिछवां से दसवत रे मोरि मइया रेवरले हो रे जा ऽ ऽ ऽ त

पूर्ण श्रृंगार करके रानी का दसवंत की आरती उतारना और उसकी भावी मृत्यु को आशंका प्रकट करना

आरे एहरवइं गोपिया रानी, आरे बलको किलवा में गोपिया
सोरह में रानी अजीरन कइले रे हउवै
आरे बतीसो मो कइले बलको जो हउवै रे सींगा ऽ ऽ ऽ र
आरे अंखिया में गोपिया कजरवा भरकहवा न दे ले रे हउवै
मथवा में टिकुली ए गोपिया लगवले हउवै रतरे ऽ ऽ ना ऽ ऽ र
आरे तबले लउंड़ी लियवले बुरुजवा पर हउवै चढ़वले
गोपिया के कोठरी पर रनिया दे ले हउवै पहुँरे चा ऽ ऽ ऽ य
आरे गोपिया ले के अरतिया समियां क करै ले लागल
आरे जेकरे ढुरकत बाड़ैं रे मइया नयनवौ ले रे अं ऽ ऽ ऽ
आरे एहर माई कइके अरतिया धरतिया में धइ रे दे लै
आरे तब तौ धइलस ए गोपिया गोड़वा न समियां क
आरे काहे बदे ए दुलहा सिलहटे से चलि ए अइल्या
आरे अब ना बची रे मोरि मइया जिनगियौ ना रे तो ऽ ऽ हा ऽ ऽ र
आरे जब ले सुनले ए बाड़ी र मइया अइबवा रे अहीरे क
आरे किलवा में हिलत बाड़ैं रे बलमुवा टंगरियौ रे हमा ऽ ऽ ऽ र
आरे सइयां अबहीं से बतिया किलवा में मानि हो जाब्या
आरे मत लड़े जाब्या रे बलमुवा खेतवा त मयरे ऽ ऽ ऽ दा ऽ ऽ ऽ न
आरे एहर संइया अइसन डरिया किलवा में लागति रे हउवै
आरे अबहीं कलिहैं ए समिया गवनवा मोर कररेवउल्या
आरे हमके दे ले बाड़े रे कंसिया कोटिया में बइरेठाय

रे हमार फूलन क सेजरिया किलवा में लागल रे रहल
: रतिया में जोहतं रहलीं बलमुवा पयंड़ियौ रे तो ऽ ऽ हा ऽ ऽ र
: मोर फूलन्ह क सेजरिया किलवा में कुम्हिरे लंइली
अबहीं गवने क चुनरिया धुमिलवा नाहीं रे भइलें
इहर मरन क परिया समिया गयल हउवै नियरे रा ऽ ऽ ऽ य
ावने दिन औ सगरे पर जाब्या सइयां
ना बंची रे मोरि मइ ऽ ऽ ऽ या
निगियौ ना रे तोहा ऽ ऽ ऽ र [४१]

द्वारा नव विवाहिता पत्नी को अपनी अमरता के बारे में बतलाना

ऽ हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ आ
वंत बियही के किला में समुझावै
किल बउराइल मंदा परल गियान
मर होइ के जनमल
ामर के भात
ा ब्रह्मा मोर देलैं
ै जोग कै नाय
एक क कौन चलावै
ारि नाइब दुइ चार
ठा किला में तोसे करबै भेंट दीदार
धमक्का छाती में गोपी
ो बड़े जोर से किलवा में गोपिया रूवै रे लागं,
अदिमी कै समियां सगड़े पर कहवां नाईं रे चलावो
ंगवा में आयल बाड़ैं समियां भूतवो न सयरेतं ऽ ऽ ऽ
बायें बनवांसतिया मोर आइल रे हउवै
आइल बाड़ैं समिया दुरुगवा न बलको रे मा ऽ ऽ य
ा एहर छतिसइ कोटि कै देवतवा
ाल रे हउवै किलवा में
त बा बलमुवा टंगरियेउ रे हमार
अबहीं से बतिया बुरूजवा पर समियां मानि हो जात्या
ड़ै जाबै रे मइया खेतवा त मय रे ऽ ऽ दा ऽ ऽ न
रोइ रोइ गोपिया किलवा में समुरे झावै
ाहीरे क डरिया कम बलको लागल रे हउवै
क डरिया हो मइया लागति हउवै बरि ऽ ऽ ये ऽ ऽ या ऽ ऽ र

आरे ऊहै दुरुगा ए समियां तोर मथवा मो काटि हो लेइहैं
आरे सोहवल डूबि जाईं समिया डोंगवउ रे हऽऽमाऽऽर
आरे अब रोइ के गोपिया दसवंतै के समुरे झावै
आरे दसवंत बइठा के मोर गोपी के किलवा से निकल रे देला
आरे बमरी क गयल बाड़ै मइया कचहरी मोर नियरे राय
आरे जाइके बमरी के गोड़वा कचहरी में गिरि हो गइलैं
आरे दादा कहल कारन आपन बरजल एठियन मान जात्या जौ रे हमाऽऽर
आरे दादा बतिया इ नाही सोहवल में मानति रे हउवा
आरे हम लड़ै जात बाड़ी रे मइया खेतवा ना मय रेऽऽऽदान

हाथी पर चढ़ कर भिम्हली और दसवंत का सगड़ पर पहुँचना

आरे दसवंत अगसर हथिया सोहवल में कसरे वउलैं
आरे भिम्हली के सोहवल में दसवंत दे ले हउवैं बइरेंऽऽऽठाय
आरे अपने हांक के हथिया सगड़वा के चलि रे देहलैं
आरे गउवां के बहरे मोर हथिया मयदनवा में जाके पहुँचि रे गइलीं
आरे घन घन घटा हथिया के बाजत रे हउवैं
आरे धोबी आगे गयल बाड़ै रे मइया सबदियउ नारे सुनाऽऽय
आरे तवन एहर देखा धोबिया के काने में सबदिया बलको लगि हो गइलीं
आरे धोबी आइ के भिटा पर ओसरिया बलको हउवै लगवले
आरे दसवंत भिम्हली कै देखि के मोर हथिया, धोबिया मोर हिल्लै रे लागल
आरे लोरिक के हाली हाली भइया सगड़वा पर गोहरे रावैं
आरे हइहै आ गयल ज्ञीरना मुदइयौ ना रे तोहाऽऽऽर
आरे एहरवई हालीं हाली लोरिक जौ पंजरवा बलको पहुँचि रे गइलैं
आरे लोरिक ताकै लगलैं दसवंत पर ओसरियौ ना रे लगं (पुनरावृत्ति)
आरे एहरवै न ताकै लगलै दसवंत पर ओसरियौ ना रे लगं
आरे तब त एहर धोबिया लोरिक के पिछवा मा लुकि रे गइलैं
आरे दसवंत हथिया हंकले मोरे हंकले खेतवा पर आइ हो गइलैं
आरे तब त आपन हथिया दसवंत खेतवा पर बहरे ठावैं
आरे दसवंत ऊतर के हथिया के नीचवा जौं खड़ा रे भइलैं
आरे बलको बड़ा जोर से दसवंत खेतवा से ललरे कारैं
जे बीर पट्ठा लड़वइया लड़ी अब रे मइया खेतवान न मयरे दाऽऽऽन

आरे बलको खेतवा लोरिक के मो काने में सबदिया बलको लगि हो गइलीं
आरे धोबिया मोर सगड़े से भइया चलल हउवै ना रे पराय
आरे जाइके लोरिक के तमुववा में दरी ओढ़ि के सूति रे गइलैं
आरे हम अगुवा हई मारि जाइ रे भइया जिनिगियों ना रे हमा ऽ ऽ ऽ र

धोबी का भयभीत होकर लोरिक के तम्बू में जाकर छिप कर सोना तथा लोरिक द्वारा लड़ाई की तैयारी

आरे एहर लोरिक भाई पीछवां धोबिया के ताकै रे लागल
आरे धोबिया क पता न लागत बा सगरवा के बलको रे घं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बलको घूमत घूमत ए यारों तमुववा पर पूछै रे लागैं
आरे लोरिक अपनै तमूववा गयल हउवै नियरे रा ऽ ऽ ऽ ऽ य
आरे बलको तमुवा में अपने लोरिक बलको हलि हो गइलैं
ओहर बलको धोबिया मै दरिया तमुववा में हउवै हिलावत
आरे दरी उलटि देहलै
आरे आजु धोबिया बड़े जोर तमुवा में बोलै रे लागल
आरे हमके तोपि दा नाहिं बची रे भइया जिनिगियउ रे हमा ऽ ऽ ऽ र
आरे तब तैं लोरिक देखब्या धोबिया के बइरेठावै
आरे तू त उठि के बराती क इंतजामवैं मों कइ रे घलब्या
आरे हम लड़ि जाइं धोबिया खेतवा ना मयरे ऽ ऽ ऽ ऽ दान

लोरिक का आयुध धारण करना

आरे एहर संवरू से जाइ के सबदिया कनवा देइ रे देला
आरे भइया (जाइ के) दुसमनवा खेतवा पर बलको हउवै ललकार
आरे बरतिया देखब्या ए बीरना सगरवा के बलको रे घा ऽ ऽ ऽ ऽ ट
आरे एहर भागल लोरिकवै अपने तमुवा में घुसि रे गइलैं
आरे बलको पेन्हे लागल बबुवा निरखिया हो गलवन में
आरे गोड़वा में दोहरी रे भइया खीचलस रे तमां ऽ ऽ ऽ ऽ च
आरे एहर सात मै परद क तउवा रे पीतरिन कै
आरे पट्टा छतिया ए बबुआ ले ले हउवै बन्हरे वा ऽ ऽ ऽ य
आरे बलको बायें अलंगिया ओड़नवा जो बान्हि रे ले लैं
आरे दहीने धींचि के रे भइया बिजुलिया न बलको रे खां ऽ ऽ ऽ ड़
आरे बलको दबलसि रे बबुआ मुठियवा ए ओड़ने क ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे पोरिसन गइल बाड़े रे मइया लवरियो न बुमुरेवा ऽ ऽ ऽ ऽ य

आरे जहवां झर झर झर झर चुनरियै बलको गिरै रे लागल
आरे हइहै टूटि टूटि सगरे गिरै लागल बलको अंगा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे बलको सौरह सै बबुवा सुमिरत बाड़ै कं रे टाइन
आरे सौरह सै सुमिरत रे मइया मरियवउ नारे मसान
आरे बायें वनवा सतिया सगड़वा पर सुमिरत रे हउवें
आरे दहीने सुमिरत रे मइया दुरुगवा न बलको रे मा ऽ ऽ ऽ इ
आरे एहर बान्हि के बिजुलिया बगलिया में कूदि रे गइलैं
आरे दसवंत कै सोझे नजरिया लोरिक पर परि हो गइलैं
आरे दसवंत के झर झर बहति बा नयनवा में बलको रे आं ऽ ऽ ऽ स
आरे जवन बियही हमसे किला में कहलसि
तवन हमरे अंखियन रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ या
औ गयल हउवै नारे ऽ ऽ ऽ ऽ दे ऽ ऽ ऽ खा ऽ ऽ ऽ ऽ य [४२]

लोरिक का दसवंत कनउज लौट जाने की सलाह, दसवंत द्वारा विरोध

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां
आरे एहर बीर लोरिक हाली हाली खेते पर जालैं
पीछे दउड़ै ले दुरुगा माय
जब दसवंत के पंजरे गइलैं
दसवंत के झर झर बहत हौ नयन से आंस
चम चम चम चम माथे चमकगो
एहर दुरुगा मरले बा थप्पी दसवंत कें
आरे नाहीं सूझत हौ उबार अपार
रूवत हौ बेटउवा राजा रे बमरी कै
का मोर मरन गइल रे नियराय
आरे मोर मरन गइल रे नियराय
तबले मुंहवा टप दे दसवंत पोछिं के
लोरिक से करने लगलैं जबाब
सुना मैं अहीर गढ़ गउरा कै
मानि जात बात हमार
अबहीं से बतिया सगड़वा पर माना
आरे घूमि के कनउज को जाब्या रे बजार
जेकर अइसन ललवा तूं मारल जाब्या
आरे घर कै दिया रे भसम होई जाइ
जेकर अइसन सेंदुर तू मारल जाब्या

आरे गोपी रोइहंइ सांझ बिहान
जेकर अइसन बेटवा तूं मारल जाब्या
आरे घर के दिया रे भसम होइ जाइ
अबहीं से बबुआ तूं घूमि बलको जाब्या
भागि जाब्या कनउज की बलको रै बजार
एतनो बात बीर लोरिक सुनलैं
आरे टप दे देने लगैलें जबाब
सुनिल्या बबुआ बलको एठियन
हमरे त आगे क रूवइया ना हौ
कोई बलको गवइया ना हौ देखात
नान्हैं बाप मतारी मुवलैं
आरै टूवर मंडप रे भुवन संसार
दू भाई गउरा में जनमल बाड़ो
आरे दूनो जने बरवै मैं परली रे कुवांर
एक जने क तीन पनथ बीति गइलीं
आरे चउथी मरन गइल रे नियराय
मुंहवा क दंतवा जौ भइया का टूटि गइल
सनकुट भयल ले कपरवा के बार
नाऊ क काम सगड़े पर नाहीं हउवैं
नाहि घूमि के कनउज रे जावै रे बजार
करा तू उबार मल दसवंत खेतवा पं
आरे बलको तोहरिउ देखीं ने मनुसाय
कमत ? बियाह मो करै भइया क
ढेर तोर देखै रे अगिन कर बान

लोरिक की बात सुनकर क्रुद्ध दसवंत का वाण चलाना

एतनी बात जब दसवंत सूनं
आरे दसवंत जरिके भसम होइ जाय
तानत बान बाबू जब अगिनी कै
चर चर चर चर धनुहां बोलै
आरे पड़ पड़ करैं लैं अगिन कर बान
दूनो गोंछवा रे बनवां कन इ गइलैं
बायें त खड़ो बलको बाड़े बनसतिया
आरे दहीने खड़ी हौ दुरुगा माई

तेकरे बिचे मोर अहीर गउरा कै
आरे जेकर लोरिक रे बघेला नांव
तानि के मोर बनवा दसवंतैं मरलै
बनसती दुरुगाई के देलीं रे ललकार
पहिल बान दसवंत क धइला
काटि लेबू मथवा बलको रे ललकं
दूनो जनो बनवा में बलको लपट गइलीं
आरे बलको धरती में देलीं रे दबं
मलि के उड़ावति जब दुरुगा माइ
आरे चउमुख कोइला भयल रे अन्हियार
दसवंत की अंखिया पर थपिया मरलीं
आरे नाहीं सूझत हौ उबारा पार
एहर माइ माघ पूस क कोइला
आरे सगड़े पर भयल रे अन्हियार
सोचत हौ बेटउवा राजा रे बमरी कै
आरे मारि गइलैं रे मुदइया हमार

दसवंत का गौरा के वीरों को ललकारना

अब सगरे पर बलको ललकारैं
जे बीर बचल बलको होई
आरे बलको लड़ि जा रे खेत मयदान
इहै दसवंत खेतवा पर सोचैं
आरे बड़े जोर में दे लैं रे ललकार
जे बीर बांचल गढ़ गउरा कै
आके लड़ि जाय बलको रे खेत मयदान
लागलि बा सबद धोबिया के काने में
लोरिक मरि गइलैं मोती रे सगर के घाट
तमुवा में तमुवा धोबी दउरै
आरे यारों मनब्या बात हमार
हमहीं अगुववा बरतिया क बाड़ीं
आरे पहिले मरि जाई जिनिगिया हमार
डेरवा गिराय ल्या बलको बाबू सगड़े पर
भागि चला कनउज की बलको रे बजार
इहै बात कहत धोबी चलि दीहलैं

अजई धोबी का मल सांवर के पास जाकर लोरिक की मृत्यु की आशंका प्रकट करना तथा बिना विवाह किये वापस लौटने की सलाह

आरे सँवरू क तमुवा गइलें रे नियराय
ए मल सांवर भइया सुनिल्या
आरे तनी बतिया तू मानैल्या हमार
तोरे भाई लोरिक सगरे मारल गइलैं
आरे दसवंत मरले हो अगिन कर बान
बड़ा जोर दसवंत ललकारत हउवैं
लोरिक मरि गइलैं मोती सगर के घाट
ललकारत हौ लड़े बदे भइया खेतवा पं
आरे आपन डेरवा तूं लेब्या ऐ गिराय
बियाह के फेर में भइया तनिको जिन परा
नाही कोटि बची रे जिनिगिया तोहार
तब मल सांवर धोबी से कहै लगलैं
काहे तोर अकिलि गइल रे बउराय
का तैं धोबिया जौ कहत बाड़ैं
आरे करे पीठिया क भयवा मोर खेतवा पर मारल रे गइलैं
आरे कइसे भागि चलीं रे धोबिया
हम गउरवै बलको गुजरे रा ऽ ऽ ऽ ऽ त
आरे हइहैं देसवा ए धोबिया आ मेहनवा गउरा मारै रे लागीं
आरे कहीं मेहरी के करनवा अब भयवा बलको मारल रे गइलैं
आरे संवरू भागि अइलैं हो भइया
अ गउरवै बलको मोरे गुंज ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ त
आरे जइसे भइया सगड़े पर मरि गइलैं
तइसे मर जाबै ए धो ऽ ऽ बि ऽ ऽ या आ खेतवा मयरे ऽ ऽ दा ऽ न [४३]

लोरिक का प्रस्तुत होना और दसवंत की चिन्ता

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ
तब दुरुगा पुरुवा से पंछुवा रोकावै
सगड़े पर होइ गइलैं ओजरा ऽ ऽ ऽ ऽ र
लोरक कुछ दूरी पर खड़ा हउवैं
दसवंत सूरत लोरिक कै देखलैं
तब दसवंत झंखै लगलैं
को पेड़े पर चढ़ि के बइठल

तब बचि गइलैं हुंइयै
की धरती फोरि समाइलं तब बचि गइलैं हइयै
एदवां अइसन बान मारब
चौदह कोस लगै बनडढ़वा
सुलगै लागै रूख परास
सुरसर पानी खलबल खलबल
जेम्मन उलटै सोइंस घरियार
एहर दुरुगा लोरिक के आसन बुझउले
चला चला तोहार पारी गइल नियराय
लोरिक पजरे जब मोर पहुँचं
बड़े जोर देलैं ललकार
तोर पट्ठे ओसरी बीति गइलीं
हमरी पारी गइल नियराय
हमरी जो परिया गइल नियरं (पुनरावृत्ति)
तोर ओसरी पट्ठे बीति गइलीं
आरे लोरिक पजरे गइले रे नियराय
दबलस मुठिया जब ओड़ने का
पोरिसन लवर गइल रे बुमुवाय
झर झर झर झर जरै लै चुनरी
टूटि टूटि गिरने ए लगलैं अंगार
दबलस मुठिया जब बिजुली कं
आरे जाइके बादर में दरेरा खाय

दसवंत की गर्दन पर लोरिक का खड्ग पड़ना किन्तु उसका जीवित बच रहना तथा उसके चलाये अग्नि बाण से लोरिक का घायल होना

घूमल खांड बीर लोरिक क दसवंत के गरदन पर
आरे दसवंत धरती में सुति गइलैं
न कटले कटैं न मरलै जालैं बलको ओड़ार
जब गस्ती बदने चपलैं
तबले बान लेके सूतल बाड़ैं
जब गस्ती बदने क हटि गइल ह
उहे लेके खड़ा अगिन कर बान
बड़ी जोर ललकारैं
पट्ठे तोर औंसरी बीति मो गईल

आइल हउवै ओसरिया हमार
चर चर चर चर धनुहा बोलै
पर पर करै लै अगिन कर बान
दूनो गोंछ बानै क नइगै
आरे जेमन धुंवा ए गयल उधियाय
बाये खड़ी बनसतिया दहिने खड़ी दुरुगा माय
जोति बान दसवंत मरलेस हं
लोरिक तीन तीन कलटा खाय
एहर दुरुगा के खोंइछा में अगिन फूटि गईल
चउदस कोस लगल बनडढ़वा
सुलगन लागे रूख परासं
सुरसर पानी खलबल खलबल
आरे जेमन उलटैं लैं सोंइस घरियार
दुरुगा लोरिक के हाथे पर उठाय के
सुरसर तीर गइल नियराय
सुरसर क पनियां खलबल खलबल
आरे बलको कूदल कुवां रे ईनार

दुर्गा का लोरिक को लेकर पाताल पहुँचना और अमृत पिलाना

फरेले धरती पतलवा में जाके
दुधवन की नदिया घलै ले जुड़वाय
अमिरित चीरि कै मुंहे में पियावै
उड़ि के बइठल राड़ी रे सिंहिन कर लाल
दसों नांह दुरुगा से जोरे आरे माई मनिबिउ बात हमार
फूंकि द्या बियाह मलसांवर भइया क
आवा भागि कनउज की चलीं रे बाजार
अइसन बान दसवंत मरले हौ
खउलति बाड़ैं रे करेजवा हमार
अब जान न बची भइया सगड़े पर
अब जान न बची माता सगड़े पर (पुनरावृत्ति)
इहवां माना बाति हमार
एतनी बात दुरुगा जब सुनलं
लोरिक के जरि के भसम होई जाय
बजर परो बीर लोरिक तोके

आरे बलको परो रे बजर कर घान
रोज रोज गउरा में कहल्या
कउन्नो मरदन से कराय दा भेंट दीदार
भइल भेंट मरदे से बचवा
काहे बदे हिल्लल हौ टंगरिया तोहार
सहजै भउजी भउजी गोहरइब्या
सहजै का फगुवा कनउज की खेलब्या रे बजार
चला चला तोहार ओसरी आइल हौ
आरे बलका लोरिक गइलैं डेराय
एक्को दा ना ओसरी लउकी
नाहीं बलको बची रे जिनिगिया हमार
सनमुख मत करा भल दसवंत से
भागा कनउज की रे बजंग
तब दुरुगा जरि भसम भइल है
बजर परो बीर लोरिक तो के परौ बजर कै धान
तौ हैं डर दसवंत के लागत हौ
आरे भागि जाबे रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या ऽ ऽ ऽ ऽ
अ ऽ ऽ ऽ गउरवां बलको गुंजरे ऽ ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ त [४४]

दुर्गा का लोरिक के पास आने का कारण बताना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब लोरिक के दुरुगा समुझावै
ए लोरिक आरे हम सात बहिन अइलीं मिरुते में
कोइ गया बसल गजाधर कोइ बेनिया बसल पयाग
कोइ परबत पहाड़े पर बसल, पूजा कइलस मुलुक संसार
कोइ केवट के संग में गइलीं
आरे नइया खे खे लगवली पार
कोइ बाम्हन के संगे में गइलीं
पतरा आँखि आँखि घललीं अलगाय
हमको कवनो अलम न मीलल
हमहन दूनों जने घूमत गाइनि के गइलीं अड़ार
मल सांवर तोरे भाई सूतल रहलैं
अद्धि रात में खोदि खोदि घललीं जगाय
उठि के मल सांवर बइठलैं

कहलैं तू के हऊ, हम कहलीं की दुरुगा
कहैं काहे के नींद जगवलियु हौ
आरे कहलीं कुछ भूख लागल हौ हमैं खियावा
बैनन क बछरू छोड़लै सोने क माजैं गिलास
बैना दूहि दूहि बीर सांवर मुंहे के लगवलें
ओहु से पेट ना भरलैं
तब कहलीं कुछ आउर खियावा
त परासे क दोना बनाय बनाय
बड़ा बड़ा गोबरीं लेवर लेवर
कडा बिन बिन आरे एक ठहर जुटिआय के
ओही पर दोना राखि के
दूध बहंगी क बहंगी देलैं छोड़वा ऽ ऽ ऽ य
चाउर गुड़ छोड़वा के ऽ ऽ ऽ भर भर दोना खीर खियवलैं
तबो पेट न भरल हमार
तब कहलैं कि निकल जा हमरे बोहे से
अइसन देवता क काम न बाय
एतना भोजन क पूजा न देहल दियाई रे हमार
तब ओनसे कहलीं बड़ा सुख मीलत हौ
बोहा न छोड़ब बलको तोहार
तब ऊ कहलैं बोहा न छोड़ै क हउवै
चल जा गउरा के री बाजार
एक ठे भाई लोरिक जनमल हउवैं
आरे उहे भर दीहैं मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
आ पेटवा ना रे तो ऽ ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [४५]

दुर्गा द्वारा लोरिक के जंघे से रक्त निकाल कर पीने की घटना का स्मरण दिलाना और सहायता का आश्वासन देना

आरे तोहार संग धइं ऽ ऽ ऽ ऽ नी ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
तवन मलसांवर बोहे में पक्की चउरी बनवाय के
सोने क मूरत बइठावैं
आगे सोने क अरघा बनवावैं
आगे कुंड खनवाय के
बहंगी क बहंगी घीउ झोंकवावैं
बहंगी से सकला देलैं छोड़वाय

एहर बहंगी से दूध अरघे में भरवावत
तबो पेट न भरल हमार
तब तोर सत अजमावै लगलीं
दहीना जंघा चीर ले चउरी पऽऽऽर
आरे पीयलीं पेट अघाय
तब कहलीं जहवां बचवा पसीना ढूरी
उहवां रूधिल ढूरी हमार
हम एतना बरदान गइयन में देहलीं
काहे बदे हिल्लत हौ टंगरियै हमार
चला चला सगरे ओसरिया आईं
तब लोरिक धीरे से देलें जबाब
चला तूं बहुत समझावत बाड़ू
एदवां क पारी आउर चलत बाड़ी
फिर नाहीं हम दे देबै जबाब
एहर धोबी सगड़े पर देखैं
लगा लगा ओसारी ताकै कि
एदवां पता न चलत बाड़ै
कत्तो बाने के संगे उड़ि गइलैं
अब जिनगी ना बची हमार
तबले दुरुगा ले ले पताले से
भींटा गइल निअराय
परल नजर धोबी का धड़ धड़
तालइं घलै लैं बजाय
अब का ताकत बाड़्या बबुआ
दसवंत क काटि लेल्या माथ ललकार
धइला झोंटा बाबू तूं सतिया कै
आरे बलको भांवर लेब्या हो घुमाय
जब सगरे पर दुरुगा आइल
तम्मू में रे देले बइठाय
अपने दुरुगा दसवंत कै
आरे बलको पजरे गइल रे निअराय
ए मल दसवंत सूना सगरें
लोरिक क संग बलको छोड़त बाड़ी
आरे संग बलको धइलेबै हो तोहार

कहलैं तू के हऊ, हम कहलीं की दुरुगा
कहैं काहे के नींद जगवलियु हौ
आरे कहलीं कुछ भूख लागल हौ हमैं खियावा
बैनन क बछरू छोड़लै सोने क माजैं गिलास
बैना दूहि दूहि बीर सांवर मुंहे के लगवलैं
ओहु से पेट ना भरलैं
तब कहलीं कुछ आउर खियावा
त परासे क दोना बनाय बनाय
बड़ा बड़ा गोबरीं लेवर लेवर
कडा बिन बिन आरे एक ठहर जुटिआय के
ओही पर दोना राखि के
दूध बहंगी क बहंगी देलैं छोड़वा ऽ ऽ ऽ य
चाउर गुड़ छोड़वा के ऽ ऽ ऽ भर भर दोना खीर खियवलैं
तबो पेट न भरल हमार
तब कहलैं कि निकल जा हमरे बोहे से
अइसन देवता क काम न बाय
एतना भोंजन क पूजा न देहल दियाई रे हमार
तब ओनसे कहलीं बड़ा सुख मीलत हौ
बोहा न छोड़ब बलको तोहार
तब ऊ कहलैं बोहा न छोड़ै क हउवै
चल जा गउरा के री बाजार
एक ठे भाई लोरिक जनमल हउवैं
आरे उहे भर दीहैं मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
आ पेटवा ना रे तो ऽ ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [४५]

दुर्गा द्वारा लोरिक के जंघे से रक्त निकाल कर पीने की घटना का स्मरण दिलाना और सहायता का आश्वासन देना

आरे तोहार संग धइं ऽ ऽ ऽ ऽ नी ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
तवन मलसांवर बोहे में पक्की चउरी बनवाय के
सोने क मूरत बइठावैं
आगे सोने क अरघा बनवावैं
आगे कुंड खनवाय के
बहंगी क बहंगी घीउ झोंकवावैं
बहंगी से सकला देलैं छोड़वाय

एहर बहंगी से दूध अरघे में भरवावत
तबो पेट न भरल हमार
तब तोर सत अजमावै लगलीं
दहीना जंघा चीर ले चउरी प ऽ ऽ ऽ र
आरे पीयलीं पेट अघाय
तब कहलीं जहवां बचवा पसीना ढूरी
उहवां रूधिल ढूरी हमार
हम एतना बरदान गइयन में देहलीं
काहे बदे हिल्लत हौ टंगरियै हमार
चला चला सगरे ओसरिया आईं
तब लोरिक धीरे से देलैं जबाब
चला तूं बहुत समझावत बाड़ू
एदवां क पारी आउर चलत बाड़ी
फिर नाहीं हम दे देबै जबाब
एहर धोबी सगड़े पर देखैं
लगा लगा ओसारी ताकै कि
एदवां पता न चलत बाड़ै
कत्तो बाने के संगे उड़ि गइलैं
अब जिनगी ना बची हमार
तबले दुरुगा ले ले पताले से
भींटा गइल निअराय
परल नजर धोबी का धड़ धड़
तालइं घलै लैं बजाय
अब का ताकत बाड़्या बबुआ
दसवंत क काटि लेल्या माथ ललकार
धइला झोंटा बाबू तूं सतिया कै
आरे बलको भांवर लेब्या हो घुमाय
जब सगरे पर दुरुगा आइल
तम्मू में रे देले बइठाय
अपने दुरुगा दसवंत कै
आरे बलको पजरे गइल रे निअराय
ए मल दसवंत सूना सगरें
लोरिक क संग बलको छोड़त बाड़ी
आरे संग बलको धइलेबै हो तोहार

अम्मर होंके जनमल हउवै
आरे बलको खइले ह अम्मर कै भात
हम जाईं ब्रह्मा से कागद लेइं
फिर देइं कागद लोरिक कं
मारि जाते रे मोती सगड़ के घाट
हमको कबो ना पूजा देहलैं
नाहीं कब्बो पेटवा भरल रे हमार
कोई बोर हम से ना मिललैं
ओही के संग धै हम पुजाईं
गुड़लू दसवंत के मोर खंचावै
आरे बलको गुड़लू देलैं रे बइठाय
अपने दुरुगा लोरिक के तम्मू में
आरे बलको पजरे गइल रे नियराय

दुर्गा का लोरिक को बताना कि बिना ब्रह्मा से दसवंत का कागज लाये उसे मारना सम्भव नहीं

बिना कागद दसवंत क लेहले
आरे जीतल बादियै न हाई हो तोहार
दुरुगा एड़ा धरती में मारै
आरे तिन तिन जोजन गइल रे मेंड़राय
लागल बा सबदिया जब ब्रह्मा के
आदि जोति सकति आवति बाडै
फूंकि देई ना रे इनरासन हमार
ब्रह्माइन के खबर भेजवाय के
अंगने में चउका देलीं रे पुराय
चन्नन कै पीढ़ा रख देहलीं
फिन जलदी गोड़ धोया दुरुगा कै
नाहि फूंकि देलैं रे कोठरिया हमार
इतनी बात ब्रह्माइन सुनि के
आरे अंगने में करैं ली इंतिजाम
जबले दुरुगा फाटक पर पहुँचल
पकरि क कलाई जब ब्रह्माइन ले गइलीं अंगने में बइठावै
उठा के पीढ़ा दुरुगा मरले
ब्रह्माइन के टूटि गइलैं पजरिया क हाड़

उठि के ब्रह्माइन लमहरे हटि गइलीं
कउनो करनवा तूं मारत बाड़ूं
दुरुगा धइलसि गर बरम्हाइन कें
बड़े जोर मैरुवै
आरे हमरे दू दू ठे सेवकवा
आ गउरा मैं जनमल रे रहलं

ब्रह्माइन से दुर्गा का दसवंत का कागज मांगना

आरे तवन दूनो मरि गइलं ए बरम्हाइन
अब खेतवा ना रे दं
आरे उहै आने आयल बाड़ी रे म ऽऽऽ इ ऽऽऽ या
अ ऽऽऽऽ कगदवा ऽऽऽ दस ऽऽऽऽ वंत ऽऽ के
आरे दे दा इनरासने में
ना फूंकि देबे रे मोरि म ऽऽऽ इ ऽऽऽऽ या
आ कोठरिया ऽऽऽऽ ना ऽऽऽ रे ऽऽऽ तो ऽऽऽ हा ऽऽऽ र [४६]
कहनीं दुरुगा से ऽऽऽऽऽऽऽ
आरे हम्मार इहां काम ना ह ऽऽऽऽ
तू ब्रह्मा की कचहरी में चलि जा ऽऽऽऽऽ
दुरुगा धइले बा डगर ब्रह्मा के कचहरी कय ऽऽऽऽ
आरे लागल बा कचहरी देखा ब्रह्मा कै
जब बजल अवाज दुरुगा कै
सारा देवता कचहरी ले चल लैं पराय
ब्रह्मा तानि के गुदरी सुतलैं
तबले दुरुगा पजरे गइल हौ निअराय
धइके गुदरी ब्रह्मा क खिचलै
उठि के बइठि बलको गइलैं
कहै कहां चललिउ ह
आरे कहै जल्दी द्या कागद दसवंत क
ना फूंकि देबे कोठरिया तोहार
ब्रह्मा कहलें फूंका तनि देखीं हम
आरे तब ले आदि जोति सकति घुमाके बांड़ मरलस
कोठरी से अगिनि फूटि गइलीं
पोरिसन लवर गइल रे बुमुवाय
झर झर झर झर झरै ले चुनरी

टूटि टूटि गिरने मो लगलैं अंगार
ब्रह्मा आपन कचहरी छोड़लं
आरे इन्द्र पजरे गइलैं रे निअराय
अडर लगाय देलैं मेघनाद कै
अइसन बरखा करा एनकर अगिनि जाई रे बुताय
भल भल भल भल अल लगावै
आरे तबले दुरुगा पजरे गइल रे निअराय
एक जने के गोड़वा बलको हे पकड़ लेहलस
फेंकि देले तबले वा मिरित संसार
ऊ लोग दसो नह बलको जोरैं
आरे भाई मनब्यु बात हमार
जवन कहा तवन तोहरै कयल जाय
कहै ए हमरै कहल जब करै के हउवै
मूसरन क धार घीव बलको बरसा
अउरो अगिनी जाई रे बुंमुवाय
ऊ लोग मूसर क घीव बरसावैं लगलैं
कोठरी से अगिनी गइल रे बुंमुवाय
ब्रह्मा आपन जौ कचहरी छोड़लैं
आदि जोति सकति के पजरे गइलैं रे निअराय
दसों नह दुरुगा से जोरै
आरे तनी मनबियु बाति हमार
अपन अगिनिया तनी बुताय द्या
नाहीं बलको मरि जालै मुलुक सनसार
काहें न देबा कगदवा तू दसवंत का
तबले नाहीं छोड़ब रे जिनिगिया तोंहार
काहें ले ला कागद मल दसवंत के
छोड़ि देवी देबू बलको रे जिनिगिया हमारं
दुरुगा घुमाय के सकतिया मरलस
आरे बलको अगिनि जो गइल रे बुताय
आगे आगे ब्रह्मा चल लैं
आरे पीछे दुरुगा रे रेवरलीं जाय
ले ले अब जौं कचहरी में गइलैं
आरे सारा देवता ले लैं रे बलाय
सबके आगे कागद फेंकि देहलैं

दसवंत क कागद ब्रह्मा चूतरे तर लेलैं रे दबाय
सब बांचत बांचत बेकल बलको भइलैं
तब ब्रह्मा ठावैं देलैं रे जबाब
ऊत धन अम्मर होके जनमल
आरे बलको खइलै हौ अमर कर भात
कागज छोड़ै ले जोग नाहीं
आरे तब त गोलिया गइल रे घबड़ाय
दुरूगा बड़े चक्कर में परलीं
आरे दुरुगा बइठै ले असनवै लगाय
लगाय के पलथिया इनरासन में
आरे उपरे सांसा ले लैं रे चढ़ाय
तीनो लोकवा दुरुगा अ बलको सांसा से ढूंढ़ै रे ऽ ऽ लागल
आरे ब्रह्मा क सारी रे मोरि मइया कोठरिया में ठूंढै रे ऽ ऽ ऽ लागल
आरे एहर माइ सांसै ब्रह्मनवा ब्रह्मा के चूतरवा तक पहुँचि रे गइलै
आ दुरुगा पेसि के कगदवा आ चूतरे से अमरे के लेइ रे ले लैं

दुर्गा द्वारा दसवंत का कागज हस्तगत किया जाना

आरे तब हंसति बाड़ै रे मोरि मइया खपड़ियौ न रे बरा ऽ ऽ ऽ त
आरे ब्रह्मा जरि जरि रे मोरि मइया
भसमवा मोर होइ रे गइलैं
आरे ले जात बाड़ू ए दुरुगा कगदवा रे अ ऽ ऽ म ऽ ऽ रे क
आरे फिन दोसवा जिनि दीहा बलको रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे दुरुगा कहै तोहरे दोसवा तनिको नाहिं रे देबै
आरे जवन कहै के होय कहि दा
ए बरह्मा इनरवापुर दर रे बा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे एहर दुरुगा धीरे धीरे बरम्हा दुरुगा से कहै रे लगलैं
आरे दुरुगा पहिलीं दाईं मथवा दसवंत के काटल रे जइहैं
आरे मथवा उड़ि के गया माई गजाधर करे रे लागं
आरे घूमि के बेनिया दुरुगा करिहैं रे पया ऽ ऽ ऽ न
आके बलको धरिया पर धरिया
मथवा मोर बयठ रे जइहैं
आरे जदि के मारी रे माई
अगिनिया क बलको रे बान
आरे जब पंचि पंचि दाईं मथवा न काटल रे जइहैं

आरे छठईं दाईं आके हमरे रोहि ए दुरूगा पवनवउं रे दुआ ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे दुरुगा बलको सतईं दाईं मथवा न काटल जइहैं
एको ठोप जौ खुनवा मउरी से परिथिमी पर गिरि रे जइहैं
ना जानी केतना अम्मर दुरुगा जौ होइ जइहैं तइ रे या ऽ ऽ ऽ र
आरे जौ न कटले दुरुगा सगरवा पर कटि रे जइहैं
आरे तोहरे अकिल ओठियन जाई रे भुला ऽ ऽ ऽ य
आरे त बलको एतनी बतिया दुरुगा जौ सुनि रे ले ला
हमरे संगे छतीसौ जौ कोटेके देवतवा जौ आयल रे हउवें
सतईं दाईं सबकर मुंहवा बवाय के उतरें के बलको ताकइबै
हनि के एड़ा मारब बनसत्ती लोकि लेई ए बरह्मा खेतवा न मयरे दा ऽ ऽ न
आरे उठाय के मथवा ए बरम्हा सोहवली में फेंकि रे देबै
आरे दसवंत के गिरि जाइ रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया
आ बमरी कै अंगनवा में भहरे ऽ ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ ऽ य [४७]

कागज आने की बात से दसवंत चिन्तित

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
तब दुरुगा कागद लेके इनरासन से
आरे बलको आइल रे मिरित संसार
जब लोरिक तमुवै में पहुँचल
हड़बड़ बलको तमुवा में मचि गइलैं
आरे धोबी उछरै अठारह हाथ
भले आ गयल कगदवा मल दसवंत क
हमहन क परिया गइल रे नियराय
एहर धोबिया तम्मू में उछरै
दसवंत के काने में सबद लागि गइंनी
का हमरै त कागद ना ली आइल
हमरे संगे कइलस रै धोखन कै मार
जवन बियही किलवा में कहलस
तवन मोरे अंखिया न गयल रे देखं
हमरे कगद इनरासन लेईं आइल
हमरै कगद इनरासने से ले आइल (पुनरावृत्ति)
का मोर मरन गइल रे निअराय
एहर दसवंत सोचत खेतवा पर
एहरे कै मैं सुना खेलवं

आरे दसवंत के बियही किलवा मैं
अपने मोर लंउड़ी लंउड़ी गोहरेरावें
आरे लउड़ी मो होइ गइल रे मोरि मइया बगलिया में तइरे ऽ ऽ या ऽ ऽ र

दसवंत की पत्नी का स्वप्न में पति का मरण तथा छत्तीस वर्ण की कन्याओं का विवाह देखना

आरे लउंड़ी सूतले मों किला में सपनवा बलको देखत रे रहलीं
आरे जइसे सइयां क लउंड़ी
आ कगदवा दुरुगा मोर लेइ रे अइलीं
आरे तवन कागद लेइ रे आइल रे
मोरि मइया अ खेतवो ना मय ऽ ऽ ऽ रे ऽ ऽ ऽ दान
आरे एहरवैं अइसन सपनवा किलवा में देखत रे रहलों
आरे ओहर छतीसै जाति के करिनवां
सोहवल झंखत रे बाड़ीं
आरे आवा अंचरा खोल खोल गोरिया
सोहवली में हईं न मनवले
आरे एदवां ना बांची रे मोर मइया
जिनिगियउ ना रे ह मा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे हमहन क तीनि तीनि पनथ रे मोर दइवा
अब सोहवल में बीतत रे हउवै
आरे चउथी मरन रे मोर मइया
अ गयल हउवैं बलको नियराय
आरे एहर मोर अइसन मो रोवइया सोहवल में रूवत रे बाड़ैं
आरे कब मरि जाई रे मइया बेटउवा रे ब ऽ ऽ म ऽ ऽ री क
आरे कब सोहवल में खुलि जाई रे मोरि मइया आ भगियउना रे हमा ऽ ऽ र
आरे गोपिया रोइ रोइ के रनिया इ बरह्मा से बाड़ी मनावत
आरे एहर बलको अपना अपनइ सतवा
अब सोहवल में गोपिया सुमिरत रे बाडीं
आरे लोरिक के जंघवई भुजवा रे मइया
आ लगि जाई नारे सरा ऽ ऽ ऽ प
आरे जवने दिन मारल जांइ ए यारो अ बेटउवा रे बमरी क
आरे ओहि दिन खुलि जाई रे मइया
सोहवल में भगियौ ना रे हमा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे गोपिया अइसे रोइ रोइ ए यारों

आ सोहवली में हई न मनावै
आरे तबले लोरिक सगरे से दुरुगा घलति हउवै मोरे ललरे का ऽ ऽ ऽ र
आरे लोरिक सारा आसवबवा अ बदन्हयियां पर हउवैं चढ़वलै
आरे एहर सोरह सैं कंटाइन
आ पीछवां पीछवां मै दवरत रे बाड़ीं
आरे सोरह सै मरिया रे मोरि मइया
आ दवरति हउवैं ना रे मसा ऽ ऽ ऽ न
आरे बायें बनवासतिया ए यारों
सगरवा से दवरत रे हउवै
आरे दहोने दवरति बाड़ैं रे मइया ओ दुरुगवा बलको संगवैं रे मा ऽ ऽ य
आरे त छत्तीसै कोट क देवतवा
सनमुख पहुँच रे गइलैं
आरे दसवंत कं सोझै लोरिक पै नजरिया
आरे खेतवा पर बलको परि हो गइलैं
आरे दसवंत रुवति बाड़ै रे मइया
आ खेतवे न मयरे दा ऽ ऽ ऽ ऽ न
आरे मोर कालिन होइके रे मइया
सतिया बहिनियां सोहवल जनमल रे हउवै
आरे बमरी दादा भयल बाड़ैं हो मोरि मइया
आ जियरवा न कइ रे का ऽ ऽ ऽ ऽ ल
आरे बलको एहर रोइ रोइ के दसवंत
आ खेतवा पर झंखत रे हउवै
आरे तबले लोरिक अ सनमुख पंजरवा भयल हउवै तइरे ऽ ऽ या ऽ ऽ र
आरे दुरुगा लोरिक के असनवां
आ खेतवा देति रे हउवै
अपने हाथे में लेइ के कगदवा ऽ ऽ ऽ ऽ
आ लोरिक के बगलिया में खड़ी रे हउवै
आरे लोरिक दबलस रे मइया मुठियवा रे ओड़ने क
आरे पोरिसन गइल हउवै रे मइया
आ लवरियौ बलको बुमुरेवा ऽ ऽ ऽ ऽ य
आरे एहर दबलसि रे मइया अ मुठिया रे बीजुली क
आरे जाइके बादर में बीजुलिया अ दरेरवा हउवै बलको रे खा ऽ ऽ त
आरे एहर माइ खुलि गइल रे मइया अ पलकिया रे दसवंत कै
आरे दुरुगा करवा के कगदवा, आ खेतवा पर फारि रे देला

लोरिक द्वारा दसवन्त की गर्दन काटना

आरे लोरिक क गरदन पर घूमि गइल रे मइया
आ बीजुलिया बलको देखा रे खां ऽ ऽ ऽ ऽ ड़
आरे एहर धरिया दसवत ए यारों
धरतिया पर लौटे रे लागल
आरे मउर क आधे रे मोरि मइया
सगरवा में मेंड़ रे रा ऽ ऽ ऽ ऽ य
आरे बलको मथवा गया ए यारो गजाधर बलको घूमैं रे लागं
आरे बेनिया मो घूमि घूमि कै रे मइया
अ करति हउवै ना रे पया ऽ ऽ ऽ न
आरे एहर मथवा आके देखला
अधरिया पर बइठ रे गइलैं
आरे दसवंत ले के खड़ा बाय रे म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
अगिनिया के बलको रे बा ऽ ऽ ऽ न

दसवन्त के बाण से धरती का हिलना

आरे दसवंत एइसन बनवां आ खेतवा पर तानि हो देला
आरे बीचवा जौ डगडगि डगि डगि पिरिथिवी
बलको हिल्लै हो लागल
आरे ऊपरां हिल्लै लागल ए यारों
बरम्हा क कयरे ऽ ऽ ऽ ता ऽ ऽ ऽ स
आरे एहर हिलै लागल ए यारों
तमुववा रे धोबिया क
आरे धोबिया जौ चिघरत बाड़ै रे मइया
आ खेतवा ना मयरे ऽ ऽ ऽ ऽ दान
आरे बलको एहर देखा जोति क मोर बनवां
अ दसवंत हौ बलको मरले रे हउवैं
आरे लोरिक के जाके लागि गइलैं ए यारों
अ अगिनिया के बलको रे बा ऽ ऽ ऽ न
आरे लोरिक धरती में गिरि गइलैं
दुरुगा गइल बाड़ैं रे मोरि मइया
आ खेतवा पर घबड़े रा ऽ ऽ ऽ य [४८]

दुर्गा का आहत लोरिक को सुरसरि के तीर पर ले जाना ओर अमृत पिलाना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ
आरे दुरुगा जौ गइल ले घबड़ाय
आपन हाली हाली अगिन बुतावै
लोरिक के पजरे गइल नियराय
लोरिक कै बलको हाथे पर उठाय के
सुरुसर तीर गइल रे निअराय
ठंडे पनिया में दुरुगा कूदल
लोरिक के बलको घलैं जुड़वाय
लिया के कररवा पर रखै लोरिक के कै
मुहवां में चीरि के अमरित दे लैं रे पिआय

लोरिक की कापुरुषता पर उसको दुर्गा की फटकार

ओंदवां मो उठि के जौ लोरिक बइठगों
आरे भाई मनब्यु बाति हमार
फूंकि दा बियहवा मल सांवर कै
आवा भागि कनउज की चलों रे बजार
अइसन बनवा दसवतै मारै
आरे भाई खउलत हौ करेजवै हमार
एइसन बियहवा माई नाहीं मैं करबै
आरे दुरुगा ठावैं दे ले रे जबाब
अकिल तोर लोरिक बउरइंली
काहे बदे मंदा परै लें गियान
एइसन बात हमसे कहत हउवा
धन धन बरन मतारी दसवंत कें
आरे जेकरी कोखिया लेला रे अवतार
धनि धनि बरन माता बलको तोके
आरे जेकरी कोखिया ले ले रे अवतार
एक बान के लगले बचवा
हिल्लत बाड़े बलको टंगरिया तोहार
छतीस कोटि क देवता संगवा
आरे तोरे परघट लागै लैं सहाय
तवन बेटवा टंगरी हिल्लत हउवै
एक बान दसवंत मारत हउवैं

आरे तोके पता न चलत हुवै ठेकान
संगवै न संगवा तोरे दउड़त बाड़ीं
तउने पर हिल्लत हौ टंगरिया तोहार
चला चला तोरे जो ओसरिया आइल
आरे दुरुगा संगवै ले लैं रे लिआय
भींटवा के जबले पजरवा आईल
अजई धोबी क सोझे रे नजर परिजाय
देखे ले सुरतिया बीर लौरिक कैं
धर धर तालइ देतैं रे बजाय
अबका ताकइ ल्या पट्ठा सगरा पर
दसवंत क मथवा काटा रे ललकार
तबले लोरिक भिटवा से कूदि गइलैं
दसवंत के पजरे गयल रे निअराय
बड़े जोर से बलको लोरिक ललकारै
आरे पट्ठा ओसरी गइल रे निअराय
आरे पट्ठा ओसरी गइल रे निअराय (पुनरावृत्ति)
एहर दुरुगा बगले में खड़ी हौ
आरे दबलस मुठिया जब ओड़ने क
पोरिसन लवर गइल रे बुभुवाय
झर झर झर झर झरै ले चुनरी
आरे टूटि टूटि गिरने लगल अंगार
दबलस मुठिया जब बीजुली क
आरे जाइके बादर में दरेरा खाय
घूमि गइल खंड़िया जब गरदन प ऽऽऽ र ऽऽऽ
धरिया धरती में लोटन लागे
आरे मउर उड़ि के आधे रे सरग मेंड़राय
गया करत ना बाड़ें गजाधर
आरे बेनियां मोर करै ले पयाग
आके धरिया पर धरिया बइठल
बड़े जोर ललकारें
बड़े जोर ललकारें (पुनरावृत्ति)
आरे पट्ठे ओसरी तोर बीति गइ ली
आइल बाड़ें रे ओसरिया हमार
चर चर चर रे धनुहां बोले

आरे पर पर करैं रे अगिन कर बान
दूनो गोछवन का बनवा नइगै
आरे जेम्मन धुवां रे गयल उधिराय
बायें त खड़ी हौ बनसतिया हो
आरे दहिने खड़ी हौ दुरुगा माय
तेकरे बीचै मोर अहोर गउरा कै
आरे जोत क मरलस रे अगिन कर बान

दसवंत के ज्योति बाण से लोरिक पुनः आहत और दुर्गा द्वारा उसको पुनः जीवित किया जाना

एहर लोरिक तीन तीन कलटा खइलैं
दुरुगा के खोंइछा में अगिनि गइल रे बुमुंवाय
लोरिक के मो हाथे पर दवरि के उठाय कें
सुहसर तीर गइल रे निअराय
सुरुसरि ठंडे पानी में जुड़वावै
चीर चीर अमरित दुरुगा मोर पिआवै
चला चला बचवा ओसरिया आइल
आरे लोरिक मोर गयल रे घबड़ाय
बड़ा आय जुलुम माइ मोर कइलू
भागा कनउज की हो बजार
अइसन बान नाहीं सहबै माता
नाहीं बलको बची रे जिनिगिया हमार

दुर्गा के प्रोत्साहन से छठी बार लोरिक का दसवंत पर आक्रमण

एतनी बात जब दुरुगा सूनै
घइके मउर लोरिक के ढकेलति बाय
लेके बलको सगरा के चलि देहलै
आइल बलको मोती रे सगर के घाट
धोबि के नजरिया जो भीटवा पर परि गइलीं
आरे टप दे बड़े जोर से देला रे ललकार
छठईं दाईं बाबू पारी आईल
एदवां काटि लेता माथ ललकार
लोरिक बलको भींटवा से कूदि गइलैं
आरे दसवंत के पजरै जालैं रे
परल बा नजरिया मल दसवंत कं

झर झर बहत हौ नयन से आंस
रुवत हौ बेटउवा राजा रे बमरी कं
का मोर मरन गइल ले नियराय
एतनी बात जब दसवंत रुवैं
तब ले लोरिक पजरे गयल रे निअराय
पट्ठे तोर ओसरिया जौ बीति बलको गईल
आरे बलको आइल बा ओसरिया हमार
दबलस मुठिया जब ओड़ने कं
आरे पोरिसन लवर रे गइल बुमुवाय
झर झर झर झर झरैले चुनर रीं
टूटि टूटि गिरने मैं लगैं लैं अंगार
दबलस मुठिया जव बीजुली कै
आरे जाके बादर में दरेरा खाय

लोरिक के खड्ग से दसवंत का धराशायी होना और सिर का ब्रह्मा के पास जाकर शिकायत करना

घूमल बाड़ैं खंड़िया जौ बीर लोरिक कं
दसवंत गिर गइलैं बलको भहराय
छठई दाई माथ दसवंत क कटलैं
आरे उड़ि के बरम्हा के गइलैं रे पवन दुआर
जाइके मथवा मै दुअरिये पर गिरलैं
आरे बलको रूवत अंतः काल
जाइके ब्रह्मा से मथवा रोवै
आरे ब्रह्मा मनब्या बात हमार
बड़ी मै भजन तोहार मिरुते में कइलीं
बड़ा खुश भइला बलको ब्रह्मा
अम्मर जनम देला रे हमार
पंच पंच बान हमरे संगै देल्या
काहे बदे मिरुते में देला रे अवतार
आखिर मोर जानम अम्मर क कइला
पिछवा तू मथवै देला रे कटवाय
काहे बदे अम्मर तू कलमिया बनवल्या
काहे बदे हमके देला रे देखं
एकर भेदा तू हम्मैं रे बताय द्या

चिन्ता बढ़ल रे बदन में बाय
कवने ना कारन माथ काटल गइल्या
तब ब्रह्मा मोर घलैले समुझाय
सुनिला माल दसवंत बलको एठियन
आरे तनी मनब्या बाति हमार

पिता के अभिमान तथा छत्तीस जाति की कन्याओं के अविवाहित रखे जाने से दसवंत की मृत्यु निकट—ब्रह्मा का कथन

तोहार जनम अम्मर कइ देल्या
तोके बलको पंच पंच देलैं रे अगिन कर बान
मिरिते में जइहैं जब मल दसवंत
आरे सब कर करी रे उपकार
तवन बतिया नाहीं दसवंत भईल
तोरे बाबिल के अभिमान बढ़ि गइलैं
तोरे बाबिले के अभिमान बढ़ि गइ ऽ ऽ ऽ लैं ऽ ऽ ऽ (पुनरावृत्ति)
आरे छतीस जाति क करिना बारी रखलैं कुंवार
नाहीं देसे में हम ससुर कहावै
नाहीं लड़िका मोर कहइहैं सार
छत्तीस जाति क करिना सोहवल अंचरा खोलि कै मनावत ऽ ऽ ऽ बाड़ीं
कब मरि जाई बेटवा बमरी क
कब खुलि जाई भाग हमार
आरे ओही पाप से दसवंत सोहवल में गयल बाड़े रे
मोरी म ऽ ऽ ऽ ई ऽ ऽ ऽ या आ तोर मरनवा नियरे रा ऽ ऽ ऽ य [४६]
हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ
छटकल माथ इनरासन से
छटकल माथ इनरासन से (पुनरावृत्ति)
आके धर पर धरिया बइठल
आके धर पर धरिया बइठल (पुनरावृत्ति)
तब दसवंत लेकै खड़ा हो अगिन कर बान
सतईं दाईं मल दसवंत बईठल
लेके बलको खड़ा रे अगिन कर बान
बड़े जोर ललकारैं
आरे ब्रह्मा क बान दीहल खतम हो गइलै
अब दसवंत क बान खतम भइलैं

तब दसवंत का कइलैं
सकती बान बनावै लागैं
सकती बान बनावै लागैं (पुनरावृत्ति)
सकती से बान धींचि मारै लगै
आरे बलको लोरिकैं गइलैं घबड़ाय
एहर माई सकल बरतिया सगड़े पर
आरे ताल पीटैं अन्तः काल
धोबिया मै मो धड़ धड़ ताल बजावै
आरे काटि लेबा माथ ललकार
एहर लड़ाई दसवंत से लगि गइलीं
आरे लड़तई जियर गयल रे बेकलाय
ना कटले दसवंत कटत हउवै
आरे नाहीं मरले म गयल रे ओराय
सकति बान दसवंत जब मारै
लोरिक के आंखी पर परदा रे परि गइलैं
नाहीं बलको सूझत हौ उवारा अपार
दुरुगा मो दुरुगा लोरिक गोहरावैं
आरे माई मनब्यु बात हमार
कब माई हमार परिया जब आई
आरे मोर जियरा गइलैं बेकलाय
दुरुगा लोरिक के समुझावैं
आरे बेटवा मनबा बात हमार
सतवां दनि जवने दिन अइहैं
बारह बजे के अमला में तोहार पारी जाई रे नियराय
लोरिक के अंखिया पर परदा परलैं
जेकर न सूझत हौ उवारा पार

दसवंत के बाणों को दुर्गा द्वारा रोका जाना

जोति जोति बनवा दसवंता मारै
आरे दुरुगा बगल में भइल रे तइयार
जेतना ओ बनवा मो दसवंत मारै
आरे दुरुगा देलै मो बान दबाय
सतवा दिन जवने दिन अइलैं
सोरह सै कंटाइन बतावैं

कूदि के मैं एंड़वा जब मथवै के मरलस
बन सत्ती मै लोकलस खेतवा मयदान
सारा मैं देवतवा टप दे जुटि गइलैं
सारा मै रुधिलवा खेते पर खींचि लेहलैं
दुरुगा मैं मथवा जो लेहले उठाय
फेंकलसि मथवा माइ रे सगरा से

दसवंत की गर्दन का बमरी के आंगन में गिरना और उसकी विवाहिता का क्रंदन

बमरी के अंगने गिरल भहराय
जाइके मै मथवा अंगनवा में गीरल
आरे बलको रुवत हौ कुटुम परिवार
उतरल बियहिया मैं बुरुजे से आके
आरे रानी अंगने भइल रे तइयार
चमकति बा बतीसी मल दसवंत कै
आरे गोपी हथवैं मैं मथवै जो ले ले रे उठाय
देखि के मै मथवा जो मल दसवंत क
आरे रुवत किला में बलको बाय
आरे तोहके बेरियै की बेरियां
हम किलवा में बरजत रे ऽ ऽ रहलीं
आरे नाहीं मनल्या ए सइयां आ बतियौ ना रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे भला तू अबहीं ए सइयां
आ बतिया किलवा में नाहीं हो मनब्या
आरे तवन हइहै मारल गइला ए बलमुवा
अब खेतवा न मयरे ऽ ऽ ऽ दा ऽ ऽ ऽ न
आरे हइहें एइसन रुवइया, आरे किलवा में रुवत रे हउवै
आरे सोहवल में ऊपर जालै रे मइया आ सोरियौ नारे हामा ऽ ऽ ऽ र
आरे मोरे कालि न होइके मइया ननदिया जनमल रे हउवै
आरे सइयां मारि गइलैं रे दइवा
खेतवा ना मयरे ऽ ऽ ऽ ऽ दा ऽ ऽ ऽ न
आरे मोरे गवने क चुनरिया आ धूमिलवा सइयां जो नाहीं रे भई
अध जल में डूबि गयल रे पपिया आ डोंगवऊ ना रे ह ऽ ऽ ऽ मा ऽ ऽ ऽ र

दसवंत की पत्नी का रुदन सुनकर सती का सगड़ पर जाना

आरे गोपिया एइसन रुवइया जब किलवा में रुवत रे हउवै

आरे सोरह सै मरी रे मसान
सबके मुंह बवाय के उप्पर के तकावैं
कहले जेकर अलंगे से खून गिरिहैं
आरे ओकर काटि लेब माथ लेलकार
छतीस कोटि के देवता देखा खेतवां
उपरै के मुहवां बावाय ताकत बाड़ैं
एहर लोरिक के बारह बजे अयले
आरे बलको मोर घलै लेलेकार
आइल बा बेटवा तोहार ओसरिया ज
आरे तोर पारी रे गइल नियराय
दबलस मुठिया जब ओड़नै कै
आरे पोरिसन लवर गइल रे बुंमुवाय
झर झर झर झर झरै ले चुनरी
टूटि टूटि गिरने मों लागलैं अंगार
दबलस मुठिया जब ओड़ने कै
पोरिसन लवर गइल रे बुमुवाय
एहर माई मुठिया जब बीजुली कै
आरे जवन बादर में दरेरा खाय
घूमल बाड़ैं खंड़िया बीर लोरिक कं
आरे दसवंत गिरैं लैं धरतिया भहराय
मउर के आधे जौ सरग मेड़राइं
मथवा मों पुरुवे के चलैं ले पराय
एको ठोप धरती में जौ खून गिर जातैं
लुंड क लुंड देवता परायल जांय
रुधिलवा मउरियै क पीयै लगलैं
उड़ि कै मै मथवा जौ दखिने के गइलैं
ओहरे के देवता लुंड़ क लुंड़ परायल जाय
उड़ि के मै मथवा जौ पच्छिम गइलैं
ओहरे देवता परायल जांय
उड़ि के गै मथवा जौ उत्तर गइलैं
उड़ि के देवता परायल जांय
घूमि के मो मथवा जब बीचवां अइलैं
तबले दुरुगा एँड़ा धरती में मरलै
आरे बलको आधे रे सरग मेंड़राय

कूदि के मै एंड़वा जब मथवै के मरलस
बन सत्ती मै लोकलस खेतवा मयदान
सारा मै देवतवा टप दे जुटि गइलैं
सारा मै रुधिलवा खेते पर खींचि लेहलैं
दुरुगा मैं मथवा जो लेहले उठाय
फेंकलसि मथवा माइ रे सगरा से

दसवंत की गर्दन का बमरी के आंगन में गिरना और उसकी विवाहिता का क्रंदन

बमरी के अंगने गिरल भहराय
जाइके मै मथवा अंगनवा में गीरल
आरे बलको रुवत हौ कुटुम परिवार
उतरल बियहिया मैं बुरुजे से आके
आरे रानी अंगने भइल रे तइयार
चमकति बा बतीसी मल दसवंत कै
आरे गोपी हथवें मैं मथवै जो ले ले रे उठाय
देखि के मै मथवा जो मल दसवंत क
आरे रुवत किला में बलको बाय
आरे तोहके बेरियै की बेरियां
हम किलवा में बरजत रे ऽ ऽ रहलीं
आरे नाहीं मनल्या ए सइयां आ बतियौ ना रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे भला तू अबहीं ए सइयां
आ बतिया किलवा में नाहीं हो मनब्या
आरे तवन हइहै मारल गइला ए बलमुवा
अब खेतवा न मयरे ऽ ऽ ऽ दा ऽ ऽ ऽ न
आरे हइहें एइसन रुवइया, आरे किलवा में रुवत रे हउवै
आरे सोहवल में ऊपर जालै रे मइया आ सोरियौ नारे हामा ऽ ऽ ऽ र
आरे मोरे कालि न होइके मइया ननदिया जनमल रे हउवै
आरे सइयां मारि गइलैं रे दइवा
खेतवा ना मयरे ऽ ऽ ऽ ऽ दा ऽ ऽ ऽ न
आरे मोरे गवने क चुनरिया आ धूमिलवा सइयां जो नाहीं रे भई
अध जल में डूबि गयल रे पपिया आ डोंगवऊ ना रे ह ऽ ऽ ऽ मा ऽ ऽ ऽ र

दसवंत की पत्नी का रुवन सुनकर सती का सगड़ पर जाना

आरे गोपिया एइसन रुवइया जब किलवा में रुवत रे हउवै

आरे सतिया आपनइ बुरुजवा आ सोहवल में छोड़ि रे देहलस
आरे भागल भागल सगरा रे मोरि मइया आ गइल हउवै बलको
निअरे रा ऽ ऽ ऽ य
आरे जाइके सगरे पर अंगुरी क सनवां
आ देवरवा के हउवै बुझवले
आरे लोरिक के सतिया के पजरवां अ भयल हउवै बलको तइरे या ऽ ऽ ऽ र
आरे एहर सतिया धीरे धीरे लोरिक से
सगरवा पर गोपिया जो बोलत रे हउवै
आरे हइहे अच्छा कमवा ए देवरवा
आरे सोहवल में नाहीं त हमरे कइले
आरे भले बीरना के मारि नवले देवरवा आ खेतवा त मयरे ऽ दा ऽ ऽ न
आरे भउजी मोर लेइके जो मथवा आ कीलवा से चलल रे हउवै
आरे भइया ले के सतो हो ये देवरवा अ खेतवो ना मय रे ऽ ऽ दा ऽ ऽ न

दसवंत की पत्नी द्वारा लकड़ी चुनना ओर चिता बनाना

आरे भउजी लगाके मोर चितवा
आ लेके अपने सइयाँ के चीतवा पर बईठ रे जइहैं
आरे तब ओनके आंगवैं देवरवा होई जात तइ रे या ऽ ऽ ऽ र
आरे बलको दसो नहवां रे मइया आ भउजी से जोंरि रे दीहा
आरे नाहीं दे देई सराप त दरियैं
ए देवरवा औ भसमवा हउवै त होई रे जा ऽ ऽ ऽ त
आरे ऊ कही जवन ए लोरिक
तूं मंगनवा सगरे पर मांगि हो लेब्या
आरे उहै मंगन पूरा कइ देब रे मइया अ खेतवा जो मयरे दा ऽ ऽ ऽ न
आरे तब तू कहि दीहा जइसै तोर मोर सइयां
अब सोहवल में जनमल रे रहलैं
आरे ओइसे बेटवा मोर जनमी रे मोरि मइया आ गउरवा बलको
गुजरे ऽ ऽ ऽ रात [५३]

लोरिक का गोपी से दसवंत के सदृश पुत्र उत्पन्न होने का वर मांगना

आरे बलको इहै त देवरवा औ मंगनवा बलको मांगि रे लीहा
आरे सतिया कहि के भागल जालै गोपिया
आ सोहवली की बलको बजा ऽ ऽ ऽ र
आरे एहर गोपिया रुवत रुवत ए यारो अ सगरवा के चलत रे हउवै
आरे बनवा क पतवा रे मोरि मइया आगिरत हउवै

बलको ख ऽऽऽऽ हृ ऽऽऽ रे ऽऽऽ रा ऽऽऽ य
आरे गोपी रुवत रुवत रनिया अ खेतवा पर
गोपिया मोरि पहुँचि रे गइलीं
आरे मेवाकरने से चन्नन क लकड़िया
आ बलको गोपी कटरेवावैं
आरे चुनि चुनि चितवइ रे मोरि मइया आ
घालति बाड़ँ न रे लगा ऽऽऽ य
आरे एहर बलको उठाय मोर लसिया
आ चितवा पर धइ रे देल्या
आरे तबले लोरिक सनमुख मोर गोपी के
अ भयल हउवैं बलको तइरे या ऽऽऽऽ र
आरे एहर बड़े जोर से गोपिया आ चितवा पै
बलको घुड़कत रे हउवैं
हट जो हमरे सामने से भले मारि नउले रे
पपिया अ बलमुवौं ना रे ह ऽऽऽऽ मा ऽऽऽ र
आरे गोपिया रोइ रोइ के बतिया
आरे लोरिक क बलको कहै रे लागलं
आरे लोरिक नीचे के मउरिया अब खेतवा पर लटरे कवलैं
आरे तब कहलस जवन ए ननदोइया
मंगनवा हमसे मांगि हो लेब्या
आरे उहै मंगन पूरा करीं ननदोइया हम खेतवा ना मयरे ऽऽ दा ऽऽ न
आरे एहर कहलैं जइसी गोपी बलमुआ तोर
सोहवल में जनमल रे रहलैं
आरे ओइसे हमरे बेटवा जनमै रे रनिया
आ गउरवै बलको गुजरे ऽऽऽऽ रा ऽऽऽ त
आरे गोपिया जौ रोइ रोइ चीता पर
अ मंगनवा बलको देति रे हउवै
आरे जा जइसे हमरे संमिया रे मोरि मइवा
आ सोहवलि में जनमल रे रहलैं
आरे ओइसी जा तोहरे बेटवा जनमी ए ननदोइया
आ गउरवैं बलको गुंजरे ऽऽऽऽ रा ऽऽऽ त

बसवंत के शव के साथ उसकी पत्नी का सती होना

आरे गोपिया देई के मंगनवा अ चितवा पर बईठ रे गइलीं

आरे गोपिया घुमाय कै बलको सातवा आ चितवा में गोपिया जो मारि रे देलै

आरे चितवा से आगिन हो मोरे मइया
आ भइल हउवै बलको तइ रे याऽऽऽऽर
आरे एहर ध ध चितवा आ गोपिया के बरै रे लागल
आरे तब रोई रोई सरपवा अब सतिया के देबै रे लागल
आरे जइसे हमरे ओ सइंया के हरिल्यु तऽऽऽऽऽ
सोहवल में ओइसे हरि जाई रे मोरि मऽऽऽइऽऽऽया
आरे तोरे गइयन की रे अऽऽऽऽड़ाऽऽऽर [५१]

बमरी के परिवार में शोक

हांऽऽऽऽहांऽऽऽहांऽऽऽऽऽ
राम राम राम हो राम
आरे एहर बमरी क रुवै लगल कुटुम परिवार
भिम्हली जौ रुवत गांव सोहवल में
आरे बलको जुलुम मचल रे बरियार
एहर छत्तीस जाति क करिना हंसै
आरे बलको खुलि गयल भाग हमार
एहर गोपिया जब मगन भइलीं
आरे बमरी के पजरे गइलैं न नियराय
भीमली जब मोरे पजरे गइलैं
आरे बलको गोड़े पर गिरलैं भहराय
दादा मोर बतिया जौ सोहवल माना आरे बलको मान जाता तू बात हमार

थरिया थाना दादा लेइ लेब्या
आरे लेके चला मोती रे सगड़ के घाट
अबहीं से तिलकवा जौ बहिन क चढ़ाय द्या
आरे जीतल बाजी आज होई रे हमार
नाहीं भइया क जिनिगी मारि नवलैं
मोके नाहीं छोड़ी मोती रे सगड़ के घाट
तब बमरी के एड़िया आगिन जौ लागल
चुरुकी में लवर गइल रे बुंमुवाय
हमसे रोज रोज में सोहवल में कहल्या
कउनो मरदन से कराय द्या भेंट दीदार

तवन भेंटिया बचवा मरदे से भइलीं
काहे बदे हिल्लत हौ टंगरिया तोहार
भइया दसवंत मारल गइलैं
भले हमरे सामने मुहवां त द्यलै ले देखाय
कुलवा में दगिया बलको रे लगावल
आरे मुदई मारि नावा बलको खेत मयदान
भिम्हली मो एहर देखा सारा अपने
आरे मनवा में घलैं लैं बइठाय
दादा क अकिलिया मारल हउवैं
आरे मंदा मोर परैं लैं गियान
अब दादा नाहीं सोहवल में मनिहैं
आरे बलको लमहरे हउवैं रे हटि जात

भिम्हली का लड़ने के लिए जाना

पेन्है लागल निरखी जब गलवन में
गोड़वन में दोहरी मोर खींचैं लैं तमाच
आल्हा गूंजकर जब पनही जं
आरे पट्ठा एंड़वन ले लै रे चढ़ाय
सात परद क तावा पितरिन कैं
आरे पट्ठा छतिया ले लैं रे बन्हवाय
पंच पंच बान पीठिया पर लादैं
आरे बलको हाथी के पजरे गइलै निअराय
जाइके हथिया पर भिम्हली चढ़लैं
आरे बलको हथिया देले रे हंकवाय
लागल बा खबर बलको किल्ला बियही कैं
टप दे लउंड़ी से ले ले बोलवाय
सामने जब भिम्हली मोर गइलैं
आरे सामी मनब्या बात हमार
तोहरी अकिलिया जौ मंदा परल
काहे बदे समिया गयल बउराय
अंगवा क बतिया देखा मोर दुलहेजं
काहे बदे भसुर मारल गयल रे हमार
एइसन अमरवा जौ मारल गइलैं
घर कै मै दिया रे भसम होइ जाय

अबहीं से बतिया जौ सामी मानि जात्या
मत लड़ै खेत जाब्या रे मयदान
जउने दिन सइंया सगरवै पर जाब्या
कोटिउ नाही दमिया जौ बची रे तोहार
अबहीं से बतिया जौ तू मानि जाब्या
घूमि जा बलको तू एठियन से
सिलहट की बलको भागा रे बजं
एतनो बात भिम्हली जब सुनलैं
झर झर बहत हौ नयन से आंस
रूवत हौ भिम्हलिया जौ गढ़ सोहवल में
आरे गोपी मनब्यु बात हमार
ठानल बा परनिया देखा बविले कं
आरे परन टूटै रे जोग कै नाय
जबले लड़इया न होई खेतवा पर
तबले बाबिल नाहीं मानी रे हमार
अपने जौ बंगला से निकल देलैं
हथिया के पजरे गइलैं रे निअराय
डाकि के मैं हथिया पर भिम्हलीं चढ़लैं
पीठिया पर लादैं लैं अगिन कर बान
हथिया मों हांकि के सगरवै पर चललैं
गांव सोहवल के बाहर होइ गइलैं
लेंके हाथी जब सगड़े के जालैं

भिम्हली की धोबी, लोरिक आदि से भेंट

परल बा नजरिया जब धोबिया कं
आरे बलको निरखत हौ ओसरियैं लगाय
लोरिक लोरिक बलको गोहरावै
आरे संगी पजरे जाब्या हो नियराय
तबले लोरिक जाके बगले में खड़ा हउवै
आरे बाबू मनब्या बात हमार
इहै हथिया भिम्हलो क आवत हउवै
मति बलको खोजियो जौ कर्‌या हमार
हमार नउवां लेइके जीन गोहराया
नाहीं मारि नाई रे जिनिगिया हमार

हमरे बराते क अगुवा बाड़ी
खइले बाड़ी बलको रे अगुवई क भात
एतनी बात जब धोबिया कहलं
आरे लोरिक ताकत हौ ओसरियै लगाय
ओहर से भिम्हली हाथी हंकले अइलैं
जहवां मौ दसवंत हाथी के बइठावै
ओही जा भिम्हलियें लिया के बइठावै
भिम्हली जो हाथी के नीचे उतर गइलैं
एहर भिम्हली बड़े जोर ललकारैं
पट्ठे तोर बलको ओसरिया बीतल
आइल बाड़ैं जौ ओसरिया हमार
जे बीर लड़वइया हो सगरे
आइ जाव्या बबुआ खेत मयदान
एतनी सबदिया सगड़वा पर लागै
लोरिक बलको गइल हइयै रे घबड़ाय
मल सांवर के पंजरे गइलं
आरे भइया मनव्या बात हमार
एदवा भिम्हलिया ललकारत हउवैं
बराती क तोहईं करा हो इंतिजाम
हम जाइके भइया खेते पर लड़ि जाईं
उहवां से लोरिक बलको घूमि गइलैं
आरे अपन तमुवा गयल निअराय

लोरिक का युद्ध के लिए सन्नद्ध होना

पेन्है लागे निरखी जब गलवन में
आरे गोड़े दोहरी चढ़ावै लैं तमाच
आल्हा गूंजकर जब पनहां जें
आरे पट्ठा एडवन ले लैं रे चढ़ाय
सात परद क तावा पितरिन कै
आरे पट्ठा छतिया ले लैं रे बन्हवाय
सारा असबाव बलको रे चढ़ाय के
आरे सगरा पर भयल रे तइयार
दबलस मुठिया जब ओड़ने कै
पोरिसन लवर गइल बुमुवाय

झर झर झर झर झरैले चुनर री
टूटि टूटि गिरने मैं लागैं लैं अंगार
दबलस मुठिया जब बीजली कै
आरे जाइके बादर में दरेरा खाय
सोरह सै कंटाइन संगवा
सौरह सै मरिया मोर चललैं मसान
एहर दुग्गा अगवां आगे जाल्या
पिछवां मै राड़ी रे सिहिन कर बार
एहर धोबिया धड़ धड़ ताल बजावै
काटिल्या सारे क माथ ललकं
बीर लोरिक भींटवा से कूदि गइलैं
भिम्हली क पजरे गइलैं रे निअराय
परल बा नजरिया मल भिम्हली कै
आरे जवन उल्टा रे पछारा खाय
एहर भिम्हली रूवत हउवै खेतवा पर
आरे कहां मरन गइल रे निअराय
जवन गोपीया किलवा में समुझवला
काल मोरे कपरवा गयल रे नियराय
आरे मोर हमरे बहिन रे मोर मइया
आकलवा मोर भईल रे हउवै
आरे हइहे कलवा आ गयल हउवै रे
मोरि मइया कपरवा पर निअरे रा ऽ ऽ ऽ ऽ य
आरे एहर भिम्हली के झर झर झर झर अंसिया
खेतवा पर बहत रे हउवै
आरे भिम्हली जो रोइ रोइ के ए बबुआ
खेतवा पर बलको झंखत रे हउवैं
आरे दादा के मै बेरिया की बेरिया रे मइया
सोहवल में बरजत रे रहलीं
आरे नाहीं मनलस रे मोरि मइया कहनवां रे हमा ऽ ऽ ऽ र
आरे एहर रोइ रोइ क भिम्हलिया सगरवा पर लल रे कारै
आरे पट्ठे भइया के मोर बबुआ
सगरवा पर तू मारि हो नवल्या
आरे हइहै बढ़ि गयल रे पठवा
आ मनवौं रे तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ ऽ र

आरे दउरि दउरि हमरे अगवां खेतवा पर आवत रे हउवैं
आरे डेरा डंडा गिरा के बबुआ भागि जाब्या ए बबुआ गउरवै अपने गुंजरे रा ऽऽऽ त
आरे सगड़े से ना भागि जा औ जाब्या आ बबुआ
खेते पर काटि लेवै रै मोरि म ऽऽऽ इ ऽऽऽ या अ मथवा ललरे का ऽऽऽ र [५२]

लोरिक द्वारा, सती का विवाह कर देने की सलाह व क्रोधित भिम्हली का अग्नि बाण छोड़ना

हाँ ऽऽऽऽ हाँ ऽऽऽऽ राम ऽऽऽऽ राम ऽऽऽऽ राम
तड़कल बीर लोरिक, सुना सुना ए भिम्हली बतिया माना हमार
जाके राजा बमरी के समुझाय द्या
थरिया थान ले ले ले, ले संग में बलको कुटुम परिवार
नाऊ बाभन संगवां में लेइके तिलकै बलको दीं हैं रे चढ़ाय
कै दें बियाह सतिया कै
कै दै बियाह सतिया कै (पुनरावृत्ति)
ले के कनउज की जाईं रे बजार
एतनी बात जब भिम्हली सुनलैं
आरे बाबू मानब्या बात हमार
करा उबार तनीं तूं खेतवा पर
आरे तोर बलको देखीं रे मनुसाय
एतनी बात जब करैं लैं भिम्हली
आरे लोरिक मोर देलैं रे जवाब
पहिले उबरवा तूं आपन कइ द्या
आरे बलको तोरै रे देखीं मनुसाय
पहिले उबरवा बाबू हम नाहीं करबै
आरे पीछवा ना रखब रे उठाय
करा उबार भिम्हली खेतवा पर
आरे बलको तोरी रे देखीं मनुसाय
मारे त कुरोध में भीमलियै जरै
आरे बलको जरि के भसम होइ जाय
तनलसि बनवां जब अगिनि कं
आरे पोरिसन लवर गइल रे बुमुवाय
झर झर झर झर झरैले चुनर री

टूटि टूटि गिरने यों लगलैं अंगार
टूटि गिरने मों लगलैं अंगार (पुनरावृत्ति)
बायें खड़ी जब बन सतिया जं
आरे दहीने खड़ो रे दुरुगामाय
तेकर बीचे मोर अहीर गउरै कै
आरे जेकर लोरिक रे बघेला नांव
तान बान भीम्हली मोर ले लैं
आरे अब लागि गयल रे मइया
अब बनवा जो लोरिक के
आरे लोरिक गिरि गइलैं रे मइया
धरतिया में भहरेरा ऽऽऽऽय

बाण लगने से लोरिक का धाराशायी होना तथा दुर्गा का अमृत पिला कर लोरिक को फिर से खड़ा करना

आरे एहर मैं त दुरुगै के खोइछीं में
अगिनिया बलको फूटि रे गइलीं
आरे दुरुगा हाली हाली अपनै अगिनिया ना हउवै बुतवले
लोरिक के बलको पजरे ए माई मोर गइले हउवै निअरे ऽऽ राऽऽऽय
आरे हइहै लोरिक के हाथे पर दुरुगा
आरे मोर लोरिक कै हाथे पर जो दुरुगा ना हउवै उठवले
आरे सुरसरि तीरे रे मातरियौ गइलि हउवै नियरे राऽऽऽय
आरे बलको ठंडे पानी दुरुगा लोरिक मोरे जुड़ रे वावै
आरे अमरित चीर चीर के मुहवां में
देले हउवै नारे पिया ऽऽऽय
आरे एहर उठि के बइठि जब घटवा में लोरिक गइलैं
आरे दुरुगा के गिरि गइलैं रे मइया
चरनिया पर भहरे राऽऽऽऽय
आरे हइहै बलको ए माता गउरवा के भागि रे चललीं
नाहीं खेतवा पर बची रे मऽऽऽइऽऽऽया
जिनिगियौ रे हऽऽऽमाऽऽऽर
आरे तब धीरे धीरे दुरुगा मोर घटवा में समुरे झावै
आरे एदवां चला आईल बाड़ैं बचवा जो परियौ रे तोऽऽऽहाऽऽऽर
आरे एदवां न जीतल हो बाजी होई

माना जिनगीं लेके भागि जाबै रे मोरि य ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
अपने गउरवां ऽ ऽ ऽ ऽ बलको गुंजरे ऽ ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ त [५३]

निरुत्साहित लोरिक को दुर्गा द्वारा प्रोत्साहन

हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ हां आं ऽ ऽ ऽ आं
दुरुगा धीरे धीरे समुझावत मैं बीर लोरिक कें
चला चला ओसरी जौ आइल रे तोहार
पांच बान भिम्हली हों पवले
आरे पांचो पवले हा अगिन कर बान
एक बनवां छुटि गइलैं बेटवा
दूसरा बनवां जालैं रे निअराय
तिसरा बांन जब छुटि मोरि जइहैं
चउथा बान पूरा होई जाय
पंचवा बान की ए बेरि बेटवा
काटि लेब्या बलको तूं माथ लिलार
एतनी बात जब लोरिक सुनि कें
अंगवा क पंयड़ा घलल सुधियाय
जब लोरिक सगड़ा पर पहुँचै
आरे धोबी पजरे गयल रे नियराय
धड़ धड़ ताल सगरवै बजावै
आरे भइया मनब्या बात हमार
काटिल्या मथवा जब भिम्हली कै
आरे थाना सोहवल की हो बजार
कय ला बियहवा जौ गांव सोहवल में
आरे लोरिक काने अवाजे जौ गइल रे सुनाय
दन देने कूदि परलैं भाटंवा से
हाली हाली पजरे गइलैं रे निअराय
आरे तब तै रूवत बाड़ैं रे मइया बेटउवा ब ऽ ऽ ऽ मरीकै
आरे दादा के बेरियै के बेरियैं भइया हम सोहवल में बरजत रे रहलीं
आरे तनी एक मानिहि जाब्या ए दादा
अ बतियो ना रे ह ऽ ऽ ऽ मा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे बलको हमार दादा रे बतिया
सोहवली में नाहीं रे मनलैं
आरे खेतवा पर गईल बाड़ें रे मोरि मइया

मरनवा मोर निअरे रा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ य
आरे बलको एहर बड़े जोर से लोरिक खेतवा पर ललरे कारै
आरे पट्ठे तोर कइसन बनवां खेतवा छूटत रे हउवै
आरे नाहीं मालूम होत बाड़ैं बबुआ खेतवा मयरे ऽ ऽ ऽ ऽ दा ऽ ऽ ऽ न

भिम्हली का फिर अग्निबाण छोड़ना और दुर्गा का उसे निरस्त कर देना

आरे तू जो एदवा भिम्हली बनवौ जौ छोड़ि रे देब्या
आरे तोहांर देखीं ए बबुआ अगिनियौं बा ऽ ऽ ऽ न
आरे बलको चर चर धनुहवां बोलै रे लागल
आरे पर पर करत बाड़ैं ए रामजो
अगनियां कै रे बा ऽ ऽ ऽ ऽ न
आरे एहरवई तानि के बनवा भिम्हलिया मरले रे हउवैं
आरे दुरुगा बनवा के संगवा टप दे लपक रे गइलीं
आरे दुरुगा देहलस रे मइया धरतियौ में रे दबाय
आरे बलको मलि के देखा जौ दुरुगा बाड़ै उड़वले
आरे सगड़े पर देखा कोइला के भयल हउवै अन्हि रे ऽ ऽ ऽ ऽ या ऽ ऽ र
आरे यारो भिम्हली के आंखी पर थपिया मरले रे हउवै
आरे तनिको ना सूझत बाड़ै रे मइया उवरवै नाहीं रे ऽ ऽ ऽ पा ऽ ऽ ऽ र
आरे भिम्हली बड़े जोर से यारों सगरवा पर ललरे कारैं
आरे मरि गइलैं लोरिक सगरे पै
आरे जे बीर होय आइके लड़ि जाई रे
मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया अ खेतवा मयरे ऽ ऽ ऽ ऽ दा ऽ ऽ न [५४]

लोरिक को जीवित देखकर भिम्हली का रुदन

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां
लगल सबद जब रे सगड़े पर
अरे सकल बरतियै गइल रे घबड़ाय
का मरि गइलैं बीर लोरिक रे खेतवा पर
आरे भिम्हलो ललकारत बलको बाय
लागल बा सबदिया जब धोबिया कें
आरे बलको ताकत हौ ओसरियै लगाय
पीटि पीटि छतिया सगड़वै पर रुवै
आरे का हमहन क मरन गइल रे नियराय
हमहीं जौ अगुआ बनि के आयल

आरे बाबू खइलीं रे अगुअई क भात
माई मोरे पुरुवा ले पछिवा लवकारै
आरे सगड़ा पर भयल बा ओजियार
परि गइल नजर जब वीर लोरिक पर
आरे भिम्हली मोर देखि देखि सूरतिया
सगड़वा पर रूवै रे लाग
आरे हइहैं निज की गयल बाड़ैं हो मोरे मइया
मरनवां बलको निअरे ऽऽऽऽ रा ऽऽऽऽ य
आरे बलको एइसन रुवइया खेतवा पर रुवत रे हउवै
आरे बनवा कै पतवै रे मोहि मइया गिरत हउवै मोर खहरे रा ऽऽऽ य
आरे बलको एइसन रुवइया आ खेतवा पर रुवत रे हउवै
आरे किलवा में गइल बाड़ै रे मोरि मइया
अ सबदियौ ना रे सुना ऽऽऽऽ य
आरे बलको रानी सुनि सुनि के बोलिया
आ खेतवा पर अकनत रे हउवै
आरे किलवा में मारि के धमकवा
आ गोपिया जब रुवै रे लागल
आरे हमके देले बाड़ै रे समिया
आ किलवा पर बइ रे ऽऽऽऽ ठा ऽऽऽऽ य
आरे अपने हइहै इलकवा में रे मइया
आरे सिलहटे में बलको चलि रे गइलैं
आरे ओनसे तोहसे ना भइल रे मइया
आरे भेंटियौ ना मुलरे का ऽऽऽ त
आरे आज दूलहा मोर आ खेते पर मारल जात बाड़ैं
आरे अध जल में डूबति बाय रे म ऽऽऽ इ ऽऽऽ या
आरे डोंगवा ना रे ह ऽऽऽ मार ऽऽऽऽ र [५५]

भिम्हली का फिर बाण चलाना

हां ऽऽऽऽ हां ऽऽऽऽ हां ऽऽ हां
राम ऽऽऽऽ राम ऽऽऽऽ राम ऽऽऽऽ हो ऽऽऽऽ राम
आरे तबले लोरिक बड़े जोर से रे मइया
आरे खेतवा पर ललरे कारैं
आरे तनी भिम्हली देखब रे मोरि मइया अ मनसेधुई नारे तोहं
आरे तनी आपन हमके उवरवा औ खेतवा पर बलको देखावा

आरे भिम्हली तनलस रै मोरि मइया अगिनिया के बलको रे बा ऽ ऽ ऽ न
आरे एहरवां चर चर धनुहवां आ खेतवा बोलै रे लागें
आरे पर पर बोलत बाड़ैं रे मोरि मइयो अगिनियां कै बलको रे बा ऽऽ न
आरे एहरवइं जोति कै बनवा भिम्हलिया मोर मरलै रे हउवै
आरे यारों चउदस कोसवा दइया लागत बाड़ै बनरे डेढ़वा
आरे चउदह कोस में सुलगति बाड़ैं रुखवौ रे परा ऽ ऽ ऽ स
आरे सुर सर पनियां बबुवा खलबल खलबल डोलै रे लागल
आरे जेमन उलटत बाड़ैं रे मइया आ सोइंसिया मोर घरि रे ऽ ऽ ऽ यार
आरे तबले दुरुगा हाथे पर उठाय कै लोरिक के भागल रे जालै
आरे हइये ढंडे ए पनियां में घालति बाड़ जुड़रे वा ऽ ऽ ऽ य
आरे अमरित चीर के ए माई मुहवां में हउवै पीयवले
आरे उठि के बइठ गयल रे मइया बेटउवा रे बुढ़िया कै
आरे दुरुगा के गिर गइलैं रे ए मइया चरनिया पर भहरे रा ऽ ऽ ऽ य
आरे माइ कब मोर ओसरिया खेतवा पर बलको रे अइहैं
आरे जीतल होत बाड़ैं ए मावा अ बदियौ रे हमा ऽ ऽ ऽ र
आरे दुरुगा कहै दूई बचवा बनवा बीति रे गइलैं
आरे तीसरा बनवां ए ललवा बीतल हउबैं चलि रे जात
आरे एदवां चलि के वचवा मथवारे भिम्हली
आरे होइहैं कैसे जीतल रे मोरि भइया होई बदियौ
रे तो ऽ ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे दुरुगा लेके देखब्या घटवा से चलि रे देला
आरे सगड़ा गइल बाड़ैं रे मइया बलको जौं निअरेराय
आरे धोबिया क सोझै नजरिया खेतवा पर परि रे गइलीं
आरे बलको धड़ धड़ धड़ धड़ तलिया खेतवा पर हउवै बजवउले
आरे हइहैं कइसे जीतल रे मोरि मइया होइ बदियौ रे हमा ऽ ऽ ऽ र
आरे एदवां काटि लेब्या बबुआ मथवा भिम्हली कै
आरे हइहै लवटि जाई रे बबुवा बदलवौ रे हमा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे जब अइसे धोबिया लोरिक के मोर ललरे कारै
आरे भीटंवा ले कूदि गइलैं रे मइया खेतवा पर बलको ललरे का ऽ ऽ ऽ र

भिम्हली का रुदन

आरे बलको सोझवैं नजरिया भिम्हली क परि रे गइलीं
आरे तब त पीटि पीटि के छतिया खेतवा पर रुवत रे हउवै
आरे दादा के बेरियैं के बेरियां

आरे मोरि मइया सोहवल में बरजत रे रहलीं
आरे नाहीं मनब्या बाबिला जो कहनवां रे हमा ऽ ऽ ऽ ऽ र
आरे तबतैं सहजैं जिनिगिया खेतवा पर मोर जाति रे हउवै
आरे अब ना किला में होई ए बाबिल
आरे भेटिया ना मुलरे का ऽ ऽ ऽ त
आरे रुवत बाड़ें ए यारो बियहिया रे भिम्हली कै
आरे लउंड़ी के पंजरे में ए गोपिया ले ले हउवै नारे बला ऽ ऽ ऽ य
आरे लउंड़ी हइहै तीन बनवा समिया के बीति रे गइलीं
आरे चउथा बान गयल बाड़ै ए लउंड़ा खेतवा पर निअरे रा ऽ ऽ ऽ य
आरे हइहै पचवां बनवा समिया के छूटि रे जालैं
आरे अब खेते पर हइहै मरि जाला रे लउड़िया अब
बलमुवा ना रे हमा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र [५६]
हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ
तबले वीर लोरिक पजरे गयल रे निअराय
बड़े जोर से लोरिक ललकारें खेतवा पर
आरे बाबू मनब्या बात हमार
कवन बनवां तू लेके आयल बाड़ा
नाहीं बान तनिको हउवै रे बुझात
सरल पाकल बनवां लेके अइल्या खेतवा पं
नाहीं तनिको बान हमके रे बुझात
एदवा उबार पट्ठे तैं कइ देबें
आरे तनी तोरि देखीं रे मनुसाय
एतनी बात जब भिम्हली सुनलं
आरे बलको जरि के भसम होइ जांय
तानि देलैं बनवा जो रे जब अगिनी कैं
आरे पोरसन लवर गइल रे बुमुंवाय
झर झर झरै ले चुनर रीं
आरे टूटि टूटि गिरने मो लगैं लैं अंगार
दूनो गोंछ बनवा कै नइ गइलै
आरे जेमन धुवां रे गयल रे उधियाय
तवन बान भिम्हली मोरे मरलैं
आरे बान गगन जाइ के छाय
घूमल बाड़ें बनवा जब भिम्हली कैं
आरे लोरिक के मो लगि गइलैं अगिन कर बान

गिर गइलैं बीर लोरिक धरती मैं
आरे दुरुगा पजरे गइल रे निअराय
उठा के हथवा पर दुरुगा दउरैं
आरे सुरसर तीर गइल रे निअराय
सुरसर में जब ठंडा कइलैं
अमरित चीर के मै दे लैं रे पिआय
बइठ गयल बेटवा जब बुढ़िया कं
आरे बेटवा मनब्या बात हमार
चला चला ओसरी सगरवा पर आइल
आरे लोरिक गिर परलै चरन पर भहराय
सुनिला मतरिया जौं मोरि दसबैनं
आरे माई मनब्यु बात हमार
अब ना जिनिगिया सगड़वा पर बचिहैं
अइसन जोत के मारत हौ अगिन कर बान
तबलै दुरुगा लोरिक के समुझावैं
चला बचवा बात गइल रे निअराय
मारैला मोर बनवां तम्मू रे जरि जालं
आरे दुरुगा संगवै ले ले रे लिआय
परल बा नजरिया जब धोबिया कं
धड़ धड़ तालई देला ए बजाय
अब का ताकैला भइया जब सगड़े पर
आरे काटिला माथ ललकार
बीर लोरिक भींटवा ले कूदि गइलैं
भिम्हली के पजरे गयल ले नियराय
बड़े जोर से भिम्हली मो तड़कै खेतवा पं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
एक बान हमरै रे रहि गइलैं
आरे ओसरी मोर गइल बा नियराय
तनलस बान जब रे अगिनी कैं
आरे जेम्मन लवर गइल रे बुमुवाय
डगमगि डगमगि हिलत हौ परिथिमी
आरे ब्रह्मा कांपै लगै लैं कयलास
जोति के न बनवा भिम्हली मरलस
आरे दुरुगा बनवइं देलै रे दबाय

मति रे मैं बनवा धरती में जुड़ुवावै
हथवा में मलि के मै देलैं रे उड़ाय
उड़ि गयल बनवा जब भिम्हली कैं
आरे एहर लोरिक के घलैं रे गोहराय
आरे एहर बीति गइल ए बचवा ओसरिया रे भिम्हली कै
आरे तोर खेतवा पर गइल बाड़ैं रे ललवा मोर पारयौ जौ नियरे ऽ ऽ ऽ
रा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ य

भिम्हली की गर्दन का कट जाना

आरे जब एइसे मोर दुरुगा खेतवा पर ललरे कारै
आरे एहर दबलसि ए मइया मुठियवा रे ओड़ने कै
आरे पोरिसन गइल रे मोरि मइया लवरिया जौ बुमुरे वा ऽ ऽ ऽ य
आरे जब मोर दबलसि रे मोरि मइया मुठियवा रे बीजुली कै
आरे जाइके बादर में रे मोरि मइया दरेरवा हउवै रे खा ऽ ऽ त
आरे एहरवैं घूमि गइल ए यारों अ खंड़ियां हो लोरिकै क
आरे भिम्हली क धरिया ए मोरि मइया धरतिया में लोटै रे लागल
आरे आधा मउर मो सगरवा में मेंड़ रे रा ऽ ऽ ऽ ऽ य
आरे एहर छत्तीसै कोट कै देवतवा रूधिलवा पीयै रे लगलैं
आरे दुरुगा उड़ि के एंड़वा मथवा के मरले हउवै
आरे बनसत्ती लोकि लेलीं रे म ऽ ऽ ऽ ऽ इया खेतवा न मयरे दा ऽ ऽ ऽ न
आरे सारा देवता रूधिलवा मउरिया के खींचि रे लेहलैं
आरे दुरुगा आपने हाथे में मथवा हउवै उठवले
आरे फेंकलस बमरी के गिर गइलैं रे मोरि मइया
अगंनवा में भहरे ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ ऽ य
आरे एहरवैं रूवत बाड़ैं रे मोरि मइया बियहिया रे भिम्हली कै
आरे सोहवल में डूबि गइलैं रे मोरि मइया अ डोंगवउ रे हमा ऽ ऽ र
आरे गोपी एइसन रूवइया किलवा में रूवत रे हउवै
आरे बन के पतवै रे मोरि मइया गिरत बाड़ैं खहरे रा ऽ ऽ ऽ य
आरे मोर कालि होइके रे मोरि मइया ननदिया जनम रे गइलीं
आरे बाबिल भयल बाड़ैं बमरी जो जिअरवा कइ रे का ऽ ऽ ऽ ल
आरे आजु अइसन रे सेंन्हुरवा सोहवल में मारल रे गइलैं
आरे मारि गइलै सइयां सोहवल में
उपरि गइल रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया
आ सोरिया ना रे ह ऽ ऽ ऽ मा ऽ ऽ ऽ र [५७]

भिम्हली का शव लेकर उसकी पत्नी का सती होना

हां ऽऽऽऽ हां ऽऽऽ ऽ हां ऽऽऽ आं राम ऽऽऽ राम
रूवत बाय गोपी रे किलवा में
आरे जेकरे ढुरकति बाय रे मइया नयनवा ले बलको रे अं
आरे गोपी एइसन रूवइया जौ किलवा में रूवत रे हउवें
आरे एहर सामी कै मउरिया जो रे मथवें में बाड़े उठवले
आरे लेके चल देहलस गोपिया जो खेतवा ना मयरे दं
आरे बलको एहर लेइ के मउरिया मोर खेतवा पर चलै रे लागल
आरे तब तै रूवत बाड़ें मइया बिटियवा रे बमरी कै
आरे हइहै मारि गयल रे मइया जौ बिरनौं रे ह ऽऽ मा ऽऽ र
आरे बलको अइसन रूवइया जौ सतिया मोर रूवत रे हउवे
आरे मथवा लेहले मोरे गोपिया सगरवा पर पहुँचि रे गइलीं
आरे मेवाकरने ले गोपिया लकड़िया मोर कट ऽऽऽ रे ऽऽऽ वावै
आरे चन्नन कइ लकड़िया गोपी मेवा करने ले कटरे वा ऽऽऽ वै
आरे चुन चुन चितवा मोर गोपिया जो घलति बाड़ें ना रे लगं
आरे तबले एहर चुनि चुनि चीतवा जो खेतवा पर हइवै लगवले
आरे तबले लोरिक पजरवां गयल हउवें निअरे रं
आरे बलको दसऊ नहवां गोपिया से जोड़ले रे हउवें
आरे हमसे हो गइलैं ए गोपिया कसूरवा न बरि रे य
आरे तब हमके ए गोपिया तूं का बलको कहत रे बाड़ू
आरे कवन घलत बाड़ू हमके बिदइया रे सोहवल में
आरे का दों करत बाड़ू गोपिया बिदइयो रे हमं ऽऽऽऽ
आरे तब तै धीरे धीरे गोपिया जौ चीतवा पर बोलति रे हउवै
आरे हमरे समने से बबुआ तूं एठिइन हटि रे जइब्या
आरे हमरे बूतवां रे मइया रहल अब नाहीं रे जं
आरे भले हमरे पपिया सेनुरवा त मारि रे नवले
अध जल में डूबा देले पपिया जौ डोंगवउ रे हमं

लोरिक का वरदान मांगना

आरे हम कवन पपिया मंगनवा न तोके रे देईं
आरे एहर गोपिया त मारै जौं कुरेध में मरल रे हउवै
आरे लोरिक तनिकउ देखब्या मउरिया बलको उठाय के नाहीं ताकत रे हउवें
आरे गोदी कुछुवें में देखब्या जौ रनिया जो रूवै रे लागल

आरे अपने सतवा के गोपिया मोर चितवा पर हउवै गोहरवले
आरे सत परघट गोपिया क लागलि बाड़ैं ना रे साहं
आरे एहर एइसन अगिनियाँ मो चितवा ले फूटि रे गइलीं
आरे तब तै रोइ रोइ के रनिया आ लोरिक के बलको सामुरेझावै
आरे हइहै जा दिन दिन जीया हो मोर ननदोइया आ गउरवइं बलको
गुजरे रा ऽ ऽ ऽ त
आरे गोपिया मो रोइ रोइ के असिरबदवा
अब चिनवा पर देबै रे लागल
आरे जइसे मोर ननद कै रे भइया
आ बिबहवा सोहवल में होत रे हउवै
आरे एहरवइं त हमरै जो डोंगवा सोहवली में बलको बूड़ि हो गइलैं
आरे ननदी कै डूबावल जाई रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ ऽ या अ गइयन
की रे आड़ा ऽ ऽ ऽ ऽ र [५८]

राजा बमरी की पलटन की युद्ध की तैयारी

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
हड़बड़ मचि गइलैं गढ़ सोहवल में
आरे बलको जुलुम मचल रे बड़िआर
जरत हउवै राजा बलको बमरीं
आरे बलको जरि के भसम होइ जाय
बीगुल कचहरी में आपन बजवाय देहं
आरे मारू बजबै दे लैं रे बजवाय
पलटनिहन के कानें में सबद लगि गइलीं
आरे पलटनियां मैं उठि उठि भइलै रै तइयार
लोहवन की कोठरी पलटनियां गइलैं
आरे असबबइ ले लैं रे चढ़ाय
कतर क कतरइ जो पट्ठा लगलैं
आरे एड़वन में एड़ा रे मिलाय
एहरै मैं घोड़िया कटहिया सजि गइल
आरे कटहियें दे लैं रे सजवाय
हथियन पर हउदा रे कसि गइलैं
आरे बड़का घंटवा देलैं रे रखवाय
एहर बरछी भाला कमरे में लेइके
आरे बलको बीगुलै देलैं बजवाय

अगवां अगवां पलटनिहां चललैं
आरे बलको गोल रेवरलै जाय
इंटवन कै टाठि लगि गइलीं
आरे खाईं देलैं रे मरवाय
गोलिया तननि मैं सजि के सगड़वै पर चलै
आरे नौज की मोती रे सगड़ के घाट
बीगुलइ बजवा मोर बाजत हउवैं
आरे गोल सगड़े गइल रे घबड़ाय
रुवत हउवै धोबिया जब मोर अजई
आरे बाबू गइल रे जिनिगिया हमार
बड़ी मो कटकिया जौ सोहवल से आवै
अब कवन हम करीं रे उपाय
हमरइ नउवां लेके जिन गोहरायं
नाहीं बाबू मरन गयल निअराय

लोरिक का बमरी से युद्ध करने के लिए तत्पर होना

एतनी बात जब लोरिक सुनलैं
आरे धोबी क घलें ले समुझाय
बइठा बइठा मतंगी तू सगरे पर
आरे तनी हो देखा हमरी मनुसाय
अम्मर लोगवा एइसन रहलैं
आरे बलको खइलैं रे अमर कर भात
दसवंत भिम्हली जौ खेतवा मिललैं
आरे मुंहे पेल के चलल ले तलवार
उन्हैं मारै में कउनो देरी ना हौ
निज की मोती रे सगर कर घाट
पेन्है लागल निरखी जब गलवन में
आरे गोड़े दोहरी चढ़ावैं लैं तमाच
आल्हा गूंजकर जब पनही जौं
आरे पट्ठे एड़वन ले लैं रे चढ़ाय
बायें त बगल में जौ ओड़न बान्हैं
आरे दहिने घींचि कै बीजुलिया खांड़
सात परद के तावा पितारिन कै
आरे पट्ठे छतियन लेलैं रे बन्हवाय

सोरह सै कंटाइन सुमिरैं
आरे सोरह सै मरी रे मसान
सोरह सै दल छोहरी सुमिरैं
आरे जवन रुवै रे रुवां असवार
ब्रह्माइन बोह्वा क सुमिरैं
आरे संवरु दादा कै रे पुजमान
गोरया डीह गइयन क सुमिरैं
आरे गोरया उछरैं अठारह हाथ
बायें बनसतिया कै सुमिरैं
आरे दहीने सुमिरैं दूरुगा माय
छतीस कोट कैं देखा देवता मो
आरे बलको रुवाँ रे रुवां अंसवार
एहर पलटवा बारह सै मंगलइता हउवैं
आरे तेरह सै तुरुक रे पठान
सोरह सै रघुवंश जे हउवै
आरे जेकर निगी रे झुलै ले तरवार
एहर बीर लोरिक अगवां अगवां
आरे पीछे सारा देवता परायल जाय
गोलिया के बोचवा जौ पठवा पहुँचल
आरे खेतवा पर मचैं ले चिंघार
तबले तुरुगा लेहले खपड़वा हथबा में
आरे बलको खड़गइ ले लै लगाय
अपने बीचे दुरुगा खड़ी जौ भइल हो
आरे देखा मों खेत मयदान
बीगुल बाजा जब खेतवा पर वाजैं
आरे मारु बजवै देलै रे बजवाय
लागल बा सबदिया जब पलटनि हन के
आरे पलटनिहां उछरैं अठारह हाथ
हननन हननन गोली रे चलत बाय
आरे भन भन करने लगै ले तलवार
चीबि चीबि चीबि बरछी बोलै
आरे गोल तीन तीन रे तरारा खाय
बायें त रोकति बाड़ैं बनसतिया जं
आरे दहिने रोकैं ले दुरुगा माय

एहर दुरुगा बीर लोरिक के ललकारैं
आरे हइहै आइल बाड़ैं ऐ ललवा
ओसरिया ना रे तोंहा ऽ ऽ ऽ र
आरे बलको दबलस रे मोरि मइया मुठियवा ओड़ने में
आरे गयल पोरसन रे मोरि मइया लवरिया हो बुंमुरेवा ऽ ऽ ऽ य

लोरिक का तलवार से लाशों की ढेर लगाना

आरे एहरवइं दबलसि रे मोरि मइया मुठियवा रे बीजुली कै
आरे जाके बादर में रे मइया देरेरवा हुउवै रे खा ऽ ऽ ऽ त
आरे एहरवइं घूमि गइलीं ए यारों खड़िया लोरिक कै,
आरे दुरुगा हथवा में लेइके खपड़िया त घूमै रे लागल
आरे बलको मउरिन क जब मलवा लागि हो गइलैं
आरे लसियन क लगि गइलन ए मइया खेतवा पर खरि रे हं
आरे एहरवैं गिधिनी गिधवा गावति बाड़ै छकरै छूमै
आरे एहरवैं गिधिनी गिधवा गावति बाड़ै वेदवउ रे पुरंग
आरे एहरवइं सारा पलटनियां खेतवा पर मारल रे गइलैं
आरे बमरी के कनवा में गइल बा रे मइया सबदियौ नारे सुनाय
आरे बमरी पीटि पीटि के छतिया सोहवल में रुवत रे हउवें
आरे हइहै टूटत बाड़ैं राम जो परनियौ रे ह ऽ ऽ ऽ मं
आरे एहवइं सतिया गोपिया सोहवलि में रुवति रे हउवै
आरे जवन ब्रम्हा रे मोरि मइया इनरासन में हमसे रे कहलैं
आरे सोहवल में गयल बाड़ैं सतिया
बमरी के कपारे पपवाउ असरे ऽ ऽ ऽ वा ऽ ऽ ऽ र
आरे उहै पपवा रे मइया सोहवल में आइ रे गइलैं
आरे पाप उदै भयल बा ऊ बाबिले क सोहवल में
ऊत मार गइलैं रै म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या भयवा ऽ ऽ ऽ
ना रे हमा ऽ ऽ ऽ र [५६]

लोरिक का सतिया के विवाह के लिए बमरी से स्वीकृति लेने जाना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ ऽ
सारी पलटन मारल गइलीं
दुरुगा बीर लोरिक के लिआय के चलल मोती रे सगर के घाट
धोबिया सगड़वा पर बोलन लागे
आरे मइया मनब्या बात हमार

अब चढ़ि चला गउवाँ गढ़ सोहवल में
आरे थाना सोहवल की चलब्या रे बजार
धइ लेब्या झोंटवा जब सतिया कै
भइया क भांवर लेब्या रे घुमाय
एतनी बात जब धोबिया कहलस
आरे लोरिक देवैं लगैं लैं जबाब
अइसन बात बाबू जिन करब्या
आरे चला चलीं सोहवल की बलको रे बजार
पूछि लेब्या राजा जब बमरी सें
आरे अब ले भांवर देई रे घुमाय
धोबिया जो अंगवा अंगवा भइलैं
आरे पीछे लोरिक रेवरले जाय
चढ़ि गइलैं थाना जब सोहवल में
आरे सोहवल हलवा बड़ि रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया
मचल बाड़ैं बड़ि रे या ऽ ऽ ऽ र
आरे जब धमकल रे मोरि मइया एंड़वा रे अहीरे कै
आरे एहर सगवां में दुरुगा रे मोरि मइया परायल बाड़ीं चलि रे जं
आरे एहर जब धीरे धीरे राजा बमरी के किलवा पर पहुँचि रे गइलैं
आरे पहरुदार फटकें ले रे मोरि मइया चलल बाड़ैं ना रे पारा ऽ ऽ ऽ य
आरे एहरवैं लोरिक हलल कचहरी में पहुँचि रे गइलैं
आरे बमरी गिरि गइलैं रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया
आ कुरुसिया ले भहरे रा ऽ ऽ ऽ य [६०]

अजई धोबी द्वारा बमरी का मुसुक चढ़ाना और उसकी छाती पर कोल्हू डाल देना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ ऽ राम
राजा बमरी कुरुसी ले गिर गइलैं
मुनुसी देवान मों चललै पराय
भइले बन कचहरी राजा बमरी के
आरे धोबी पजरे गयल हो निअराय
सुनिल्या बमरी मोरे हो बाबा
आरे तनी बतिया मनैला हमार
अताल न थून्हीं पताल बलको मांड़ो
आरे सोहवल में देब्या गड़वाय
आरे घुमाय द्या भांवर जब सतिया कै

आरे लेके कनउज का जाइं रे बजार
एतनी बात जब बमरी सूनै
आरे बलको जरि के भसम होइ जाय
एड़ी में अगिनियाँ जौ बमरी के फूटिगं
आरे चुरूकी लवर गइल बुंधुवाय
हटि जा बलको मोर सामने से
आरे नाहीं देखा जियरा खउलति बाड़ै रे हमार
हटि जा हमरे सामने से
आरे नाहीं देखा जियरा खउलति बाड़ै रे हमार (पुनरावृत्ति)
हटि जा मोरे सामने से
आरे नाहीं मारि नाइब जिनिगिया तोहार
आरे तबले धवर के मोर धोबिया
बमरिया के पकड़ि रे लेहलस
आरे किलवा में उलटी रे मोरि मइया
मुसुकिया हउवै चाढ़वले
आरे छतिया पर कोल्हू रे मोर मइया
दे लै बाड़ै ढेंगरा ऽऽऽऽय

बमरी का सतिया के बिवाह की स्वीकृति देना

आरे एहरवइं रूवत बाड़ैं राजा बमरी रे सोहवल में
आरे का भइया लोरिक हमार एतना बेटउवा
आ खेतवा पर मारि रे नवल्या
आरे हमरउ जिनिगी मारत बाड़्या
ए भींटवा सोहवली की रे बजार
आरे बाबू हम दे देबै कन्या दानवां सतिया रे बिटिऽऽऽऽया कै
आरे सोहवल में देबै ऐ भइया मड़उवा गड़वा ऽऽऽऽय
आरे तवले दउर के पंजरवा लोरिक बलको पहुँचि रे गइलैं
आरे ओकरे छतिया क कोल्हुवा घलति बाड़ैं ढेंगले राऽऽऽय
आरे एहरवा ह उलुटि मुसुकिया किलवा में छोड़ि रे देला
आरे तब ते सोहवल में बाजल रे मइया बजवा बलको रे हउवै
आरे घर घर माड़ो रे मोर मइया घलत बाड़ैं गड़रे वा ऽऽऽऽय
आरे मुंसरवा ओ सोहवल में पूजै रे लगलैं
आरे कलसा घर घर रखा रखवाय के सुगवा बान्हैं रे लगलैं
आरे सोहवल में होये लगल रे मोरि मइया

आरे मंगलवा ना बलको रे चा ऽऽऽ र
आरे घर घर सोहवल ढोलकिया मोर बाजै रे लागल
आरे जवन बारह सै गोपी बारी कुंवरवा सोहवल में रहलीं
आरे जौन हंसति रे हई मइया सोहवली की रे बजार
आरे मल मल मरि गइलैं रे मइया बेटउवा रे बम ऽ ऽ ऽ री कै
आरे सोहवल में खुलि गइलीं ए यारो
आ भगिया रे हमा ऽऽऽ र
आरे एहर खुलि गइलै ए यारों भगिया रे सोहवल में
आरे काल्ह बिहाने डोलि जाई रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
आ गउरवां बलको गुंजरे रा ऽऽऽऽ त [६१]

मल सांवर तथा अन्य बारातियों के विवाह की तैयारी

हां ऽ ऽऽ हां ऽऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽऽऽ आं
राम हो राम ऽऽऽऽऽऽ
घर घर मांडो सोहवल में गड़लैं
आरे घर घर मांडवै देलैं रे गड़वाय
ठनल बा बियहवा जौ गांव सोहवल में
आरे एहर बमरी अपने अंगने में माड़ौ देलैं गड़वाय
एहर मै बियहिया जौ मल सांवर कै
आरे थाना सोहवल की होलैं रे बजार
ओहर माई देखा मै साइत आइ गइलीं
आरे सोहवल में साइत गइल रे निअराय
सजल बा बरतिया जब सगड़ा से
आरे बलको सकलो जब सजल बा बरात
बाजत बा बजनवा जब बठंवा कैं
आरे जहां कान में दीहल नहीं जात
अरुवै लकड़िया जौ मारूवै बजाय देत
आरे डीह ठाकुर लकड़ी देलें रे बजाय
पीछवां लकड़िया जुझार बजावै
ओकरे पीछे बीयहुती जौ लकड़ी मौ घलैलै बजाय
सजल बा पलकिया जो मल सांवर कै
आरे दुलहा चललै सोहवल की रे बजार
एहर बजवा मो अन्तः काल बाजै
आरे जहां कान दीहल नाहीं जात

सोहवली की रे बाजा ऽ ऽ ऽ र
आरे एहर भइया बलवंतवा खेतवा पर मारल रे गइलैं
आरे लवकुस जूझि गइलैं रे मोरि मइया खेतवा ना मयरे ऽ ऽ ऽ दा ऽ ऽ न
आरे एतना छ छ जने के ए बाबिला खेतवा पर मररेववले
आरे सोहवल में ऊपरि गइलैं मोरि मइया आरे सोरियउ रे हमा ऽ ऽ र
आरे दे दा बिहाने हं बिदाई सतिया क बलको चलि जाय रे
मोरि म ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या आगउरवैं अपने गुंजरे ऽ ऽ ऽ राय ऽ ऽ ऽ त [६२]

बारात का सोहवल से वापिस आने की तैयारी करना

हां ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ ऽ राम
सांझे कइलैं सिर सेहोर
आरे भाई मोरे डोला घलि हैं फनाय
लेके सगरे पर बरात बियाह कइके ओगर गांव कै
अ गइलै मोती रे सगर के घाट
होत बा सबेरवा गाँव सोहबल में
आरे एहर डंड़िया फनल जब मलसांवर कै
आरे डांड़ी सोहवल की गइल रे बाजार
लगि गईल डंड़िया बमरीं के किलवा पर
आरे बंठवा बाजा घलैं लै बजाय
ओहर सतिया देखा चउके पर बइठं
आरे बलको बइठल अंगनवै मैं बाय
सारा सखिया मोरे जुटल अंगने में
आरे कोई सुसुकत अन्तः का ऽ ऽ ऽ ऽ ल
एहर छत्तीसै बरन क कनिया मोर
छतीस जात क जब कनिया मोर
आरे सबकर डंड़ियै ले लैं रे फनवाय
एहर मैं त रुवत बा गोपी रे अंगने में
सतिया जो रुवै अन्तह काल

सतिया का मां से बिदाई लेना

धइलस गरवा जब माता कै
जेकरे मै बूते रे रहल नाहीं जात
अइसन रुवइया मै सोहवली में रुवं
आरे बनकै पतवा गिरै लैं खहराय
बड़ी दूर माइ मोर बियहवै होइ गइलैं

आरे के मोरे जाई कनउज की रे बजार
कइसे माई भेंटिया फिन हमसे होइहैं
अब नाहीं होई जो भेंट दीदार
कवन कवन माई मोर बिदइया देति बाड़ू
आरे हमके कवन करै लू बिदाई बरियार
जवन मैं बिदइया मावा हम्मै तू देतू
आरे लेके गउरे की जावै रे बजार
एतनी बात जब रनिया सुनि कें
आरे सतिया के घलै ले समुझाय
कवन मैं बिदइया बिटिया तोर बलको करी
सोहवल में उपरल सोर हमार
भइया मोर दसवंत बेटउवा मरि गइलैं
आरे एही मोती रे सगर के घाट
आरे भईया बेटवा भिम्हली मारि गइलैं
सोहवल में ऊपर गइल सोरिया हमार
बेटवा मोर बलवतैं मरि गइलैं
सोहवल में उपरि गइल सोरिया हमार
आरे कवन बिदाई मैं सतिया जो करबै
आरे थाना सोहवलि की बलको रे बजार

सतिया का मां से नौलखा हार प्राप्त करना

जवन ऐ मंगनवा सति मांगि तोइ लेबै
आरे मांगन पूरा मै करी रे तोहार
नवलखवा माई हरवा मै दे द्या
लेके अपने गउरा कै जावै रे बजार
जै दिन रनिया मैं जीयत रहि हैं
आरे तै दिन पहिरब कनउज की बलको रे बजार
एतनी बात जब रानी सुनि कें
आरे सतिया के गरे में हार देलैं पहिराय
एहर मोरे नाउन बलको पकड़ि कें
ले जाकै मैं डोलिया देले रे बइठाय
सखिया सहेलर संगवै में रुवैं
आरे बमरी कइ रुवै लै कुटुम पलिवार
एहर माई झींगुरी पजरवाँ रुवैं

आरे जेकरे ढूरत हौ नयन से आंस
लै के मैं कंहार डोलिया चलि देलैं
आरे थाना कनउज की चललैं बजं
एह मैं त डंड़िया सती कै बलको जाला, आरे निज की मोती रे सगड़ के घाट

सतिया का शिव मन्दिर में जाकर बिदाई लेना

सतिया जो डंड़िया से अपने निकसं
सिव के मंदिल गइल बा निअराय
जाइके मंदिल में मैं सतिया रोवै
आरे बाबा अब तोर पूजनवा आ घटवा में छूटत रे हउवै
आरे अब हमसे न होई रे मोरि मइया
औ भेंटियो न मुलरे का ऽऽऽऽ त
आरे सतिया एइसन रूवइया मंदिलवा में रूवतरे हउवै
आरे सिव बाबा परघट रे मोरि मइया मंदिलवा में होइ रे गइलैं
आरे सतिया बहुत दिन पुजनवां औ सोहवल में कइले रे बाड़ीं
आरे जवन मांगबी ए सतिया मंगनवा त धन बडिरे या ऽ ऽ ऽ र
आरे सतिया रोइ रोइ के गोपिया औ सिव से मोर कहै रे लागल
आरे सिव बाबा हम संझववा सवेरवा जब गउरा में जो भजै रे लागीं
आरे हमके परघट दरसन दोहा रे मोरि मइया गउरवा हमरे जो
गुंजरे रा ऽ त
आरे सतिया के दे देलैं सिव बाबा वरदनवा रे मंदिलवे
आरे गोपिया निकल के अपनी डंड़िया भईल बाड़ैं तइरे या ऽ ऽ ऽ र
आरे एहर मोर कूचे के लकड़िया सोहवलो में बाजी रे गइलैं
आरे छतीसै जाति क करिनवा गवनवां मोर कर रे व ऽ ऽ उ ऽ ऽ लैं
आरे एहर सतिया कै डड़ियां गउरा के चलै हो लागल
आरे एहर बठंवा के बाजवा सगड़वा पर बाजै रे लागल
आरे डांड़ी ले ले चललैं रे मोरि मइया गउरवें ना गुंजरे रा ऽऽऽत
आरे जवन रतिया आ दिनवा आ गउरा के चलै हो लागल
आरे कत्तो नाहिं करति रे हउवै कूचवैं रे मोकाम
आरे रतिया दिनवां ए बबुआ गउरा में अपने रे गइलैं
आरे निज की गाइन की बलको गइलैं रे आडार
आरे एहर मोर देखा डंड़िया सतिया क गइयन में पहुँचि रे गइलीं
आरे डांड़ी छिपा देलैं आ बोहे में बिना पूजाकइले ना बल ऽ ऽ ऽ ऽ ब रे
मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या अ अपने गउरवें

बलको गुंजरे रा ऽऽऽऽत [६३]

मल सांवर का बिवाह कर बोहा पहुँचना तथा हवन करना

हां ऽऽऽ हां ऽऽऽऽ
जब डांड़ी बोहे में छिपा देलैं ऽऽऽऽ
आरे सतिया क डांड़ी बोहे में जब रुकि गईल है
तब मल सांवर अडर लगावै गांव गउरा के
आरे बहंगी के बहंगी मो घीउ मगवावा
बहंगी से सकला ले लैं रे मंगवाय
बहंगी से दूध गइयन क दुहवावैं
आरे बोहवा के सुना हो खेलवार
पंडित बाबा दुबरी के बोलवाय के
आरे हवन होय लगलैं गाइन की रे अड़ार
बहंगी क बहंगी जौ घीउ झोंकवावैं
आरे बहंगी से सकला देलैं रे छोड़वाय
बहंगिन से दूध अरघा छोड़वाय दे
तबो पेट ना दुरुगा कै भरलैं
आरे पूजा गाइन के भयल रे अड़ार
एहर जग्य बोहवा में सतिया क फनि गइलैं
आरे जग्य करने लगी रे बरियार
दान पुन्न जगिया मोर कइलैं
आरे निज की गाइन की रे अड़ार
जब पुजवा गइयन में करलें
आरे दुरुगा मचवले हौ जै जै कार

थाना कनउज में स्थित गउरा में सतिया की डोली का पहुँचना तथा विजवा धोबिन से भेंट

एहर डंड़िया सतिया के उठि गइलीं
आरे थाना कनउज की चलै लै बजार
जब गउरा डंड़िया सती गईं ऽऽऽऽ
आरे बूढ़ खोइलन के पवन गईल रे दुआर
जाके डंड़िया मैं दुअरिया पै लागै
आरे खोइलनि क जुट गयल कुटुम परिवार
हंसि हो भयल गांव गउरा में

आरे गोपिया भजन गावैंनी सांझ बिहान
बाजत बा ढोलकिया जब अंगने में
आरे जहाँ कान दीहल बा नाहीं जात
एहर बिजवा मोरे पजरे पहुँचल
आरे बलको धइले बाड़ें रे
मइया जो गरवा रे सतिया कै
आरे बिजवा रुवत बाड़े रे दइया
गउरवें बलको गुंजरे रा ऽ ऽ ऽ त
आरे एइसन रुवइया बिजवा मोर रुवत रे हउवै
आरे हमरे बमरी दादा के बहिन बजरवा बलको परि हो जातैं
आरे एइसन एइसन बीरना मोर मरवाय घललैं
आ खेतवा ना मयरे दा ऽ ऽ ऽ न
आरे बलको बहुत दिन ए सतिया सोहवल में
तोर चीरिया मैं धुवले रे बाड़े
आरे संगे भजन कइलीं ए सतिया सोहवल ना की रे बजा ऽ ऽ ऽ र
आरे कुछ दिन अउरो ए सतिया तोर चीरिया में गउरा रे धोईं
आरे हमरो जिनिगी ए सतिया सुफलवा अब होई रे जा ऽ ऽ ऽ त
आरे बलको रोय रोय गोपो किलवा में समुरे झावै
आरे सतिया रोइ रोइ के बीजा के किलवा के समुरे झावै (पुनरावृत्ति)
आरे तनी मान जाबू ए बिजवा कहनवाँ रे हमा ऽ ऽ ऽ र
आरे बलको एइसन अनभो सोहवल में नाहीं रे देखल
आरे बाबिल ना जानो ए बिजवा
कउने कमइया क चूकल रे रहलैं
आरे गउरा सोहवल ऊपर गइल ए बिजवा
सोरियौ रे हमा ऽ ऽ ऽ र
आरे तब त रोई रोई सतिया बिजवा के समुरेझावै
आरे एहर डंड़िया हो ए यारों
सतिया क किलवा में बइठ रे गइलैं

गायक का अपना परिचय देना

आरे एहर सहर रे मोरि मइया बनारस बसल रे हउवै
आरे जहवां बाबा बिसनाथ क भयल बाड़ैं दर रे बा ऽ ऽ ऽ र
आरे एहर जिलवा हो मइया बनारस में बसल रे बाड़ैं
आरे चउबे पुरवा में आइके दे ले बाड़ैं ना रे मोका ऽ ऽ ऽ म

आरे गंगा राम के दुकाने गानवां मोर होत रे हउवै
आरे जहां मिठाइन क मइया लगत हउवै दररेबा ऽ ऽ ऽ र
आरे थनवा चउबे पुर बबुआ लिखनिया मैं लिखत रे बाड़ैं
आरे गउंवा पराना पुर जनम भयल बाड़ैं ना रे ह ऽ ऽ मा ऽ ऽ र
आरे आजु गाना जौं अ पांचू भगत मोर तब गवले हउवैं
गंगा के पवनवां ना रे दुआ ऽ ऽ ऽ र [६४]

[मल सांवर का विवाह समाप्त]

● ●

अध्याय २

लोरिक का विवाह

अगोरी में महर के घर मंजरी का जन्म, सवाघड़ी सोने व चाँदी की वर्षा

हां ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम, राम ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ ए राम राम राम
सुना हाल अंगवां कै
आरे राम ए राम हो राम ऽ ऽ ऽ
आरे सुना हाल थाना रे अगोरी कै
आरे बलको सुना रे अगोरी के खेलवार
आरे ओहर जौं त राजा मोलागत गोइयां
एहरवां मो राजा महर जे भयल तइयार
जनमल बिटियवा राजा महरे कं
आरे जेकर दवनै रे मंजरिया नांव
जब मंजरी कै जनम बलको भइलैं
सवा धरी सोना चाँनी बरसत हो
अगोरिया की रे बजार
नोनवा बतावत बबुआ गई आरे थाना अगोरी की रे बजार
एहर में त देखा नोनवां आइं
आरे देखा राजा महर के पवन दुआर
नरवा मो कटलस जब मंजरी कै
आरे बरही छठिया दे लै रे बिताय

आ गिरित हउवैं खइरे ऽऽऽऽ रा ऽऽऽ य

बारह वर्ष की उम्र में मंजरी के लिए वर की खोज

हाँ ऽऽऽऽ हां ऽऽऽऽ आ ऽऽऽ आं
राम राम राम रा ऽऽऽ म
आरे जब बारह बरिस कै मंजरी भयल
तब राजा महर घर बर मो खोजन लागें
आरे सवा मन तीलक ले लैं उठवाय
पुरुब देस पुरुपाटन गइलैं
कत्तो घर बर ना मोर मिललैं
दक्खिन देसे गइलै पहाड़
ओहर घर बर न जब मिललैं
पछुम देस पंजाबे में गइलैं
कत्तो घर बर जब ना मिललैं
आरे घूमि के अगोरी की गइलैं रे बजार
राजा महर किलवा में गुर गइलैं
कि अब धरम लूटल जाई हमार
करम बिगड़ गइल थाना रे अगोरीं
कालि न होइ के मंजरी जनमल
भईल जिअरवा क काल
आजु मंजरी के मारि नावा
किला में बचि जाई धरम हमार
अपने हाथे में तरवार उठाकें
राजा महर बगले में ले चलि दे लैं
आरे तबले मंजरी बुरुज के नीचे हाली हाली आवै
गोड़े पर गिर गइल, बाबिल केकर काल निअरइलैं
मियनियां ले खींच ले ला तरवार
एक भेद बता द्या चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
तब राजा महरे मोर बोलं
मंजरी कालि न होके जनमल
कवनो दिन लुटली रे इजतिया हमार
घर बार हम खोजन लागे
कतहूँ घर बार ना हमके मिललै
कि तोर तिलक देईं त चढ़ाय

कन्यादान अगोरी में देईं त
हमरो जिनिगी सुफल होइ जाय
तब मंजरी दुआरो पर बोलै
दादा मनब्या बात हमार
तो हैं घर बर जबना मिलैं
आरे हम बताईं घर बर
तूं ओही ठियन मोर जाब्या
महर कहलस कि जौ जानत हऊ
मंजरी हमके तनी बता द्या

गढ़ गउरा के अहीर के पास तिलक भेजने के लिए मंजरी की सलाह

तब मंजरी मोर बोलै
कहे एही कोनवा ए बाबिल मोर गउवां न गढ़ गउरां
आरे जहवां बारह मोर पलिया जब गउरा न बसल रे हउवै
आरे तिरपन कनउज के मइया जौ बसल बाड़ैं ना रे बजं ऽऽऽऽ
आरे हइहै ओही ठिंयन ए बाबिल तिलकवा मोर भेंजि रे देब्या
आरे बलको सात रे मोर कोसवा कै बोहवा रे गाइयन क
आरे चउदह कोस में बिड़री के चरति बाड़ी बलको रे गं ऽऽऽऽऽ
आरे तब त एहर ओही ठियन ए बाबिल जौ घर बर तोहके रे मिलि हैं
आरे बलको बदिया में जोगवा जो बादिया न मिलि हो जइहैं
आरे बरवा जोगवा बइठल बाड़ैं ए बाबिल गउरवां बलको गुंजरे रं ऽऽऽ
आरे हइहैं आजु भसुरे क नउवां मलसांवर बलको परल रे हउवै
आरे टिकई बाबा जौ ससुरै
जो लागति बाड़ैं ना रे ह ऽऽऽऽ मा ऽऽऽ र
आरे एहरवइं त समिया क नउवां हम तनिकौ न जानति रे बाड़ी
आरे नाहीं उहौ भेदवा ए बबिला हम देइत बलको ना रे ब ता ऽऽय
आरे हइहैं ओही ठियन तिलकवा मोर गउरा में भेजि हो देब्यं ऽऽऽ
आरे मुदई चढ़ि के चलि आई ए बबिला अगोरियौ की बलको बजं ऽऽऽ
आरे राजा मोलागत के अगोरो में मारि नइहैं
बलको बचि जाई रे मोरि म ऽऽऽऽ इ ऽऽऽ या
अब धरमवा ना रे तो ऽऽऽऽऽ हा ऽऽऽ र [६६]

नाऊ ब्राह्मण के साथ सिवचन का तिलक चढ़ाने जाना

हां ऽऽऽऽ हां ऽऽऽऽऽ आं ऽऽऽऽऽ
जब एतनी बात राजा महर सुनलैं

आरे बलको गयल बा कचहरी निअराय
नउवा बाभन के पजरै बोलावैं
आरे सिवचन के ले लैं रे बोलाय
सिवचन से कहै लगलैं जब मोर कचहरीं
आरे सिवचन मनब्या बात हमार
सवा मन सोनवा तू अगोरी में लेइल्या
आरे थरिया थान लेल्या अगोरी की बजार
आरे तिलक लेके बलको जाब्या गढ़ गउरा
आरे जाके तिलकै देब्या रे चढ़ाय
बर जोगवा सिवचन बरवइ मिलिहैं
आरे समधी जोगे मिली रे गरार
बदिया जोगे जब बदिया मिलिहैं
आरे तब त धरमइ बची रे हमार
एतनी बात जब सिवचन सुनलं
आरे आपन साइत घलैं लैं पुछवाय
सवामन सोनवा थरिया थान लेहलैं
नाऊ बाभन लेकै चललैं कनउज की रे बजार
राति चलैं लैं दिन धावन लागैं
अरे कत्तो कूचवा न करैं लैं मोकाम
रतिया दिन के बाबू चललें
आरे थाना कनउज की गइलें रे बजार
जब लोरिक के बंगले जालं
आरे एहर तीनो रे हलल बलको जांय
एहरवें लगल बा मसहरी बंगले में
आरे मोटका गद्दा बिछावल बाय
मखमल कपड़वा जो फेंकल बाड़ं
आरे जाके बगले में तिलकइ देलैं रे उतार
एहर सूतल वीर लोरिक बंगलें
आरे आपन तानि के सूतल दुपटवा बाय
तनिको जुमुस लोरिक न खालं
आरे नकुला बाजति अन्त: काल
तब एहर देखा सिउचन खोखै लगलै
आरे लोरिक कूद के बइठ बाड़ैं जात
उठि के पलंग से लोरिक बोलैं

आरे बाबू मनब्या बात हमार
कहवा ओतन तोर गोतन हउवैं
आरे कहवां जनम भयल रे बुनियाद
केकरे बुनकै सिरजल बाड़्या
आरी केकरी कोखिया लेला रे अवतार
कहवां के बाबू चलल बाड़्या
आरे हमके भेदवा देब्या रे बताय
धीरे धरे सिउचन बंगलवै मैं बोलं

सिवचन का तिलक की बात बताना तथा लोरिक का मां खोइलनि के पास जाकर तिलकहरू आने की बात कहना

आरे बाबू मनब्या बात हमार, अगोरियौ में मोर जौ ओतन गोतन
अगोरियै में जनम भयल रे बुनियाद
सवा मन तिलकवा अगोरिया में बान्ह
आरे लेके कनउज की अइलीं रे बजार
बताउर धर बर हउवै गउरा कैं
आरे जेकर लोरिक रे बघेला नांव
एतनी बात जब लोरिक सुनलैं
आरे अपने हलल ले किला में जांय
जाय बूढ़ खोइलन से कहन लागे
आरे माई मनब्यु बात हमार
बड़ा भारी अचरज गउरा हउवै
आरे तिलकहरु आयल बाय
लेके तिलकवा बंगलवै में बइठैं
आरे मावा तिलकइ लेबू चढ़वाय
एतनी बात जब खोइलन सुनलं
आरे बलको मनवैं में हंसति बाय

गांगी नाऊ और दुबरी पंडित को बुलाया जाना

हाली हाली गांगी के बोलवावै
आरे गांगी भइलैं रे बगल में ठाढ़
कवन करजिया त बूढ़ा परलं
आरे काहे बदे लेलू माई बुलवाय
एकर भेद तूं हम्मैं रे बताय द्या

आरे चिन्ता बढ़ल रे बदन में बाय
धीरे धीरे बुढ़िया गांगो के समुझावै
आरे चलि जा दुबरी बावा के पवन दुआर
उन्है तनी जलदी से कउनो बोलवाय द्या
अंगने में तिलक दीहैं रे चढ़वाय
गंगिया जो भागल गइलै हइहैं
आरे दुआरी पर बलको घलैं गोहराय
पंडित बाबा दुअरिया पर अइलैं
आरे काहे बदे नउवा घले लै गोहराय
चला चला बाबा तनी एकं
आरे लोरिक के पवन दुआर
बड़के घराने क बलावा हउवै
आरे तोहरै भगिया बलको खुलि जाय
चढ़ी मोर तिलकवा जो बीर लोरिक कै
आरे एहर सोने क टकहवा तो हैं रे मिलि जाय
वड़ी मो विदइया गउरा होइहैं
आरे कांखी पतरइ ले लैं रे दबाय
धइलैं डगरिया मै गढ़ गउरा कैं
आरे लोरिक के पवन दुआर
एहर बंगले में जाके बइठं
आरे लोरिक गोड़वैं गिरलैं भहराय
पंडित बाबा जै जै जै जै मचावैं
आरे उहवां से लोरिक लिअवले जाय
एहर बूढ़ खोइलन कम्मल रे बिछावैं
आरे बलको मोर घलैं ले बइठाय
हालो हाली गोड़वा धुवत बाबा कं
आरे बलको गोड़ ले पारति बाटा
तब पंडित बाबा बोलन लागें
आरे बूढ़ा मनब्यु बात हमार
जल्दी उपाय तिलके क कइ द्या
आरे थाना कनउज की करा रे बजार

लोरिक का तिलक सम्पन्न

अंगने में जौ चउक पुरवावैं, अंगने में जौ चउक पुरवावैं (पुनरावृत्ति)

चन्नन पीढ़वा देलैं रे रखवाय
कलसा अंगनवा में बलको रखवाय के
एहर लोरिक सजत गउरा में
सारा असबाब जो बदन पर चढ़ाय के
आके बलको पीढ़ी पर भइलैं रे तइयार
एहर नाऊ बाभन के बलको रे हुकुम लगलैं
लेके तिलक किलवा में गइलैं
मथवा में तिलक देलैं रे लगाय
सवा मन सोनवां, अगवां रखि दें
होति बा बिदइया जब पंडित कै
आरे सोना चानी कर व्यवहार
उहां जब तिलकवा जो लोरिक के चढ़लैं
आरे जाइके बंगले भइलैं रे तइयार
पंडित नाऊ बगलवैं में गइलैं
आरे तब होने लगे जेवनार
दूध मलाई जब अंगवां आयल
आरे छपनौ मोर वनल परकार
एहर नाउ बाभन खइलैं
आरे तब लोरिक के लेलैं रे बोलाय
हमके जलदी में छुटिया दे द्या
आरे हम थाना अगोरी की जाबै रे बजार
रखि द लगनिया बलको बियाहे कें आवा अगोरी की रे बजार
एतनी बात जब लोरिक सुनलैं
आरे दुबरी बाबा के लेलैं बोलवाय
लियाय के बंगलवा में बलको बइठाय दें
आरे पतरा खोलि घलैं लै बताय
अइसन लगनिया वलको बतावा
आरे साइत पूरा देलैं रे बताय
तब सिवचन बंगले में बोलैं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
तिलक चढ़ाय देत्या गढ़ गउरा में
आरे चला अगोरी की रे बजार

बरात में पट्ठों और युवकों को ही ले आने का सिवचन का निवेदन

बाकी एक बतिया बबुआ सुनिलं
आरे तनी माना बाति हमार
अइसन पठवा गउरा साज्या
आरे पट्ठा उवल रे दुइज कर चान
ना केहू ओही के टकरे आई
ना कोई रहै रेखिया बलको उठान
एक बरना मनसेधू लीहं
आरे थाना कनउज की लोहा रे बजार
बारह जोड़िया मो सिंहवा लेल्या
आरे तेरह मो जोड़ी रे करनाल
चौदह जोड़ी मैं धउंसवा लेल्या
आरे जेवन बाजइ साझं बिहान
भले भले पठवा लेइके आया
आरे थाना मोरे रे अगोरी की बजार
बड़े बड़े लड़वइया रहैं
आरे ताल धड़कइ सांझ बिहान
जवन अगोरिया में बबुआ मानं
आरे ऊ जौ न मिलि अगोरी को रे बजार
आरे जवने पंयड़े से गयल रहल्या
ऊहै दे ऽऽऽ वै रे मोरि म ऽऽऽ इ ऽऽऽऽ या
अ पयंड़िया ना रे घुमा ऽऽऽऽ य [६७]

सिवचन की बात से लोरिक का चिन्तित होना

आं ऽऽऽ आं ऽऽऽऽ राम ऽऽऽऽ राम ऽऽऽ राम ऽऽऽऽ
तब सिउचन लोरिक के समुझावैं
भले भले मतारी कै जायल
भले भले रहै रे तरुनवा क जोर
बूढ़ ठेल कै काम न हउवै
कोई बूढ़ ठेल नाहीं आवै
नाहीं जवन रास्ता धई ले जाब्या
उहै रस्ता देबै रे घुमाय
एतनी बात जब लोरिक सुनलैं
तनिको बोलत नाही बाय

आरे दादा बूढ़ कूबे हमरे
बाबिल लागति बाड़ैं हमार
ओनके कइसै छोड़ि देवै मैं गउरा
आरे बलको जुलुम भयल बड़ियार
सिवचन तिलक चढ़ा के गउरा
आरे चलैं थाना अगोरी की बलको रे बजार
लेके अपने अगोरिया में गइलैं
लोरिक कै सोचिया बढ़ल बरियार
एहर मल सांवर के पतिया लिखलैं
आरे बलको गाइन की रे अड़ार
जब गंगिया पाती लेके गइयन में गइलैं
संवरू के हथवा में देलैं रे थमाय
संवरू पाती गाइन में बांचै
आरे झर झर बहत हौ नयन से आंस
हमके खबर नाहीं बोहवा में देहलस
काहे बदे रे मोर मइया आ गउरा
तिलकवा जौ रोपि रे ले लैं

लोरिक द्वारा तिलक की खबर देर से दिये जाने पर मलसांवर का दुःखी होना

आरे काहे बदे नाहीं देले रे मोर बीरना
खबरिया रे बो ऽ ऽ ऽ हवा में
आरे हइहै काटि लेहले रे भयवा मथवो रे हमा ऽ ऽ ऽ र
आरे जब एतनी बतिया भइया गंगिया से कहैं रे लगलै
आरे संवरू के झर झर बहत बाड़ैं रे मोरि भइया
आरे संवरू के झर झर बहत बाड़ैं रे मोरि भइया नयनवौं ले न रे अं ऽ ऽ
आरे अइसन मो रुवइया गंगिया के अंगवा जौ रूवै रे लागै
आरे गंगिया मै धीरे धीरे संवरू के गइयन मैं समुझावैं
आरे भइया ओढ़कार में परि गइलैं गउरवै हमरे गुजरे रं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे एइसन भइया अफतिया मोरे होइ रे गइलीं
आरे संवरू लिखै पतिया बोहवा में बलको रे लगलैं
आरे बचवा अनवां धनवां गउरा में कमी रे होइहैं
आरे भइया हम गाड़ो छकड़वा लेवै बलको लद रे ऽ ऽ ऽ ऽ वाय
आरे जब एहर मै बरतिया लेके अगोरिया कै चढ़ि रे चलब्या
आरे भल भल मतारी कै जायल ए बबुआ अ कइलेबें तइरे या ऽ ऽ ऽ र

आरे जब अइसे मो पतिया गंगिया के देइ हो देलैं
आरे पाती लेके जाति बाय रे मोरि मइया ऽऽ गउरवै अपने गुंजरे रा ऽऽत
आरे जब गउरा में लेके पतिया पहुँचि रे गइलैं
आरे जाइके लोरिक के हथवा देलैं बाड़ैं नारे थमा ऽऽऽय
आरे एहर लोरिक मो पतिया गउरा में बाचैं रे लागल
आरे रोय रोय पतिया लिखले रे गइयन की अड़ा ऽऽऽर
आरे एहरवैं लोरिके क नयनें से अंसिया जौ बहै रे लागल
आरे हमरे पर लग गइलैं रे मइया इजलेमवै न बड़िरे यं
आरे भइया से पूछि ले ले होइत तबतैं बचि जातैं रे
मोरि म ऽऽऽइ ऽऽऽया अ धरमवां ऽऽऽना रे हमा ऽऽऽर [६८]

लोरिक के विवाह के पूर्व की तैयारी

राम ऽऽऽऽ राम ऽऽऽऽ राम
सुना हाल अंगवा कै रा ऽऽऽऽम
आरे लोरिक एहर सारा मोर सियंबर
जब मोरे गउरा में रचै रे लागं
आरे गउवां भीउली रे मइया भदोहिया मोर नेवते रे लागल
आरे बेलकुल कनउज के भइया जब नेवतति बाड़ैं ना रे बजं
आरे बलको तेलियै के संगे में तमोलियौ जो नेवते रे लागै
आरे छतीसै जतियन के मइया नेवतवा मोर देई रे नवलैं
आरे जहवाँ बारह मोर जोड़िया जौं सिहवा न कइले रे हउवैं
आरे तेरह जोड़ियँ रे मइया बजति बाड़ैं कररे ना ऽऽऽल
आरे चउदह जोड़िया रे मइया धउंसवा कइ रे ले लां
आरे थाना कइलसि रे मइया गउरवैं बलको गुंजरे रं ऽऽऽऽऽ
आरे एहर अइसन बबुआ मतरियौ हौ लोरिक क
आरे मंगल गावति बाड़ी मइया जौ संझवौ रे बिहं ऽऽऽऽऽ
आरे एहर बाजति बा ए बबुआ ढोलकिया रे आंगने में
आरे जहवां कनवै रे मइया दीहल हौ अब नाहीं रे जं
आरे एहर भयल भइया ए मट मंगरा हो लोरिक कै
आरे जेकरे हथवै में बबुआ कंगनवा मोर बान्हल रे गइलैं
आरे एहर संवरू गइयन से मइया अ कनउज में चलि हो अइलै
आरे जहवां एहर चाउर रे बबुवौ लदवलें मोर बसरेमतिया
आरे एहर दर दर रे मइया भुंजउबै कै बलको रे दं (दाल)
आरे एहर घिउवा ए बबुवा बयनवन क लदरेत्रउलै

आरे एहर तमुवा कनतिया अ गउरा में लदरेवावैं
आरे अपने बाबिले मैं बुढ़ऊ के झपोलवा न बनरेवावैं
आरे ओही में बन कइ दिहलैं बबुवा गउरवां न गुंजरे ऽऽ रं
आरे कहले हउवें सिउचन बुढ़वा में ठेलवा क कामवा जौ नाहिरे हउवै ऽ
आरे बुढ़ठेलवा न देला कुल उपइया सगड़वा पर बलको बतइहैं
ऊ न रहिहैं त इनहन लोगन के देवे रे मोरि मइया गउरवै क लवरेटं
आरे एहरवे त सारा इंतजमवा ए गउरा में कइरे लेला
आरे मल सांवर क सुन्दर पलकिया आ गउरा अपने सजरेवावा
आरे एहर धोबिया क सारा सिंगरवा न हउवै बनवले
आरे एहरवे त बा ए मोर बनवा सतिया के सुमिरत रे हउवै
आ दहीने सुमिरत रे मइया दुरुगवा न आपन रे मं
आरे बलको छतिसइ कोटे क देवतवा मोर सुमिरि रे चललै
आरे एहर ठीक कइ लेहलैं बबुआ गउरवैं अपने गुंजरे रं ऽऽऽऽ
आरे सारा बरतिहा रे मइया गउरवा मै सजि रे ले लैं
आरे जहवां बारह जोड़िया सिहवा मोर वजै रे लागैं
आरे चउदह जोड़ियै रे मइया बजति हउवै कररे तं
आरे एहर देखा चउदह जोड़िया धउंसवा मोर बाजइ लागैं
आरे जहवां कनवैं रे मइया दोहल अब नाहीं रे गं
आरे हरिनी हरना के काने में सबदिया बलको लगि रे गइलीं
आरे हरिनी रोइ रोइ रे मइया जंगलवा में कहत रे हउवै
आरे हई गयल बाड़ैं बबुआ तोर मरनवा जो नियरे रं ऽऽ ऽऽऽ
आरे एइसन बजवा रे मइया कबहूं न सुनले रे बाड़ैं
आरे हरिन मरि जाई बबुआ जिनिगियौ रे तोहं
आरे बलको दूसरे ए बबुआ जंगलवै में भागि रे चलब्या
आरे हरिनी हरिना ए मइया हरिनियां के समुरेझावैं
आरे हमहन क हरिनी मरनवां जौ नाहीं रे हउवैं
आरे उहै सजल बाड़ैं हरिनी अ बरतिया हो अहीरे कै
आरे जेकर लोरिक ए हरिनी बथेलवा हउवैं बलको रे नं
आरे उहै बाजा ए हरिनी गउरा में बाजत रे हउवैं
आरे लेके जात बाड़ैं ए हरिनी अगोरियउ की रे बाजं
आरे एक ठे राजा मोलागत अगोरिया में जनमल रे हउवैं
आरे मंजरी के देलैं बाड़ैं हरिनी हाथे में धगवो मोर बन्हवाय
आरे तवन उहै सिवचन ए हरिनी तिलकवा मोर हउवैं चाढ़व ले
आरे लोरिक तनिके जात बाड़ैं लोरिक सजि के अगोरियैं में अपने वरं ऽ

आरे एहर धीरे धीरे हरिना हरिनियां के समुरेझावैं
आरे राजा मोलागत आ मारल जइहैं अगोरी में रे
हरिनिया मंजरी के डोलवा जाई रे म ऽऽऽइऽऽऽया
आ गउरवैं बलको गुंजरे ऽऽऽऽऽ रा ऽऽऽत [६६]

बारात का सजाया जाना तथा लोरिक की परिछन होना

हां ऽऽऽऽ हां ऽऽऽऽ हां
सुना हाल अंगवा कै
सजल बरात बीर लोरिक कैं
आरे एहर पलकी सजल मलसांवर कै, फिन पालकी सजल बीर लोरिककै
परछन कनउज की होलैं रे बजार
आरे सखी गावैंलीं मंगलवा चार
गावै बिजवा संगे ढोलक बाजति सांझ बिहान
आरे घूमै लागल परछन बीर लोरिक कैं
आरे बायें हंसै बनसतियै
दहीने बलको हसै ले दुरुगा माइ
छतीस कोट कै देवता दउरं
आरे मचल खुसिया अन्तह काल
साजि के बरतिया चलल जब हइयै
अंगवा अंगवा डांड़ी मल सांवर कै
पिछवा से लोरिक कै चलि देलं
आरे बांये चलै ले बनसतिया
मोर दहीने चलै लें दुरुगा माइ
सोरह सै कटांइन चल लैं
सोरह सै मरिया चलैं लैं मसं
सोरह सै दल छोहरी चलतु हं
आरे जवन रूवां रे रूवां असवार
ब्रहमाइन बोहवा कै चललीं
आरे संवरू दादा कै रे पुजमान
गोरए डीह गाइन कै चललैं
आरे गोरया उछरै अठारह हाथ
छतीस जात गउरा सें चललैं
भल भल मतारी के जायल चललैं
आरे भल भल चललैं तरुनवा कै जो॰

आरे एहर सुरजन डोमवें मै चललैं
आरे आपन लाव लसकर के सजाय
धइलैं मो डगरिया जब है अगोरी
रात चलैं लैं दिन धावन लागे
आरे कत्तो कूचवा न करैं लैं मोकाम
रतिया दिन के बाबू चललैं
आरे थाना गइलैं अगोरी की बजार
एहर माई सगड़ा पर डेरा रे गिराय दे
आरे निज की मोती रे सगड़ के घाट

देवी देवता के साथ बारात का अगोरी पहुँचना और डेरा डालना

डेरवा लोरिक कै सगड़े पर गिरलैं
आरे दुबरी म बाबा के लेतैं रे बोलवाय
साइत बिचारा बाबा सगरे पं
आरे मोर तम्मू देला रे गिरवाय
परै लें तमुवा जब सगड़े पर
सुरुजन डोमवै देलैं रे गिराय
परैं लगल तम्मू जब बंठवा कै
आरे धोबियै क तमुबै दे लैं रे गिराय
परै लागल तम्मू जब देवसी कै
आरे जेमन नौ नौ कुतिया बइठल बाय
परि गयल तम्मू जब सिवगढ़ कै
आरे बलको डेरा दे लैं रे गिराय
एहर तम्मू मल सांवर क परि गयल
लोरिक क तमुवा दे लैं रे तनवाय
मल सांवर कूसन टाटी रे बिछाय दें
आरे पूजा कइलैं सांझ बिहान
मालवा जपत जब रे सगरे पं
आरे निज की मोती रे सगर के घाट

दुर्गा एवं बनसत्ती सहित बारात के साथ छत्तीस जाति के देवताओं का टिकना

एहर डेरवा जब गिरि गइलें
दुरुगा क गहि के गोड़े लैं निसान
छतिस कोट कै देवता टिकलं

आरे थाना अगोरी की रे बजार
एतनी बात जब सुना सगरे कं
आरे बलको बाजा दै लैं रे बजाय
अइसन बजवा सगड़वै पर बाजै
आरे जहां कान दिहल नाहीं जात
लागल बा खबरिया थाना अगोरी
आरे महरे गयल रे घबड़ाय
पहिलै बाजा बजावति बाड़ैं
आरे बलको जुलुम कइलैं रे बरियार
राजा मोलागत सुनि मोरि पाई
आरे पहिले डंडिया देई रे रोकवाय
अइसन बाजा बाजत बाड़ैं
आरे जहां कान दीहल नाहीं जात
सिउचन सिउचन महर गोहरावैं
आरे सिउचन भइलैं रे बगल में ठाढ़
तनी एकन जाइके सगड़े कहि दा
आपन बाजा ना रे बजइहैं
चुपचाप मरिके बइठै मोती रे सगड़ के घाट
राजा मोलागत किला में सुनिहैं
चढ़िहैं अगोरी की रे बजार
सिवचन छोड़लैं जब बंगला जं
आरे भागल सगड़ा गइलै रे निअराय
जब लोरिक के पजरे गइलै
आरे बाबू मनब्या बाति हमार
अइसन बाजी बजावति बाड़्या
आरे बलको जुलुम होई रे बरियार
मुदई बबुआ चढ़ि मोर अइहैं
आरे अगोरी में लूटि लेई रे मोरि मइ ऽ ऽ ऽ ऽ या
जा सगड़ेवै पर इजतिया रे तो ऽ ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ ऽ र [७०]

राजा महर को सगड़ पर पत्र लिख कर तीन सौ साठ पोर का बांस मांगना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ अगोरी
जब सिउचन सगड़े से अगोरी में गइलैं
तब बीर लोरिक बंठवा के पास में गइलैं

अइसन एदवां बाजा बजाय द्या कान दिहल नाहीं जाय
बारह जोड़ी सिंहा तेरह जोड़ी करताल
चउदह जोड़ी धउंसा
आरे बंठवा के कइ मो देलैं रे तइयार
पहिले अरुवै में मरुवैं बजावैं
डीह ठाकुर लकड़ी मोर घलैं लैं बजाय
पिछवा बलको देख मैं जुझार बजावैं
आरे पीछे बियहुती लकड़ी घलैं बजाय
आरे पीछे बियहुती आरे लकड़ी घलैं बजाय (पुनरावृत्ति)
लगि गइल सबदिया थाना अगोरी
आरे राजा महरै गइल रे घबड़ाय
जुलुम भयल थाना बलको अगोरी
आरे अब जिनगी ना बची रे हमार
तब राजा महर का कइलैं
आरे लीखै लागल पतिया मो थाना रे अगोरी
पाती धावन के देलैं रे थम्हाय
लेके धावन सगड़ा पर गइलैं
लोरिक के हाथे मो देलैं रे थमाय
का लीखल पतिया लोरिक बांचै
आरे तीन सै साठ पोरे कै हमके
गउरा से बांस मंगवाय द्या
बांस अगोरी की गाड़ी बजार
तब सियम्बर करब मंजरी कय
तब लोरिक बांचल बूढ़ कूबे के झंपोला पर गइलैं
आरे बाबिल माना बाति हमार
अइसन पाती राजा म ऽऽऽ हर
आरे सगरे पर देलैं रे भेजवाय
कुल हम देखल ए मोरे दादं
आरे थाना कनउज की हो बजार
तीन सै आठ पोरे कै बांस ना देखला हउवै हमार
बड़ भारी ओठवन अँगवैं परलैं
आरे एकर कउनो भेदवै देब्या रे बताय
धीरे धीरे बुढ़ऊ झंपोलवै में बोलैं
बचवा माना बाति हमार

आरे थाना अगोरी की रे बजार
एतनी बात जब सुना सगरे कं
आरे बलको बाजा दे लैं रे बजाय
अइसन बजवा सगड़वै पर बाजै
आरे जहां कान दिहल नाहीं जात
लागल बा खबरिया थाना अगोरी
आरे महरे गयल रे घबड़ाय
पहिलै बाजा बजावति बाड़ैं
आरे बलको जुलुम कइलैं रे बरियार
राजा मोलागत सुनि मोरि पाई
आरे पहिले डंडिया देई रे रोकवाय
अइसन बाजा बाजत बाड़ैं
आरे जहां कान दीहल नाहीं जात
सिउचन सिउचन महर गोहरावैं
आरे सिउचन भइलैं रे बगल में ठाढ़
तनी एकन जाइके सगड़े कहि दा
आपन बाजा ना रे बजइहैं
चुपचाप मरिके बइठै मोती रे सगड़ के घाट
राजा मोलागत किला में सुनिहैं
चढ़िहैं अगोरी की रे बजार
सिवचन छोड़लैं जब बंगला जं
आरे भागल सगड़ा गइलै रे निअराय
जब लोरिक के पजरे गइलै
आरे बाबू मनब्या बाति हमार
अइसन बाजी बजावति बाड़्या
आरे बलको जुलुम होई रे बरियार
मुदई बबुआ चढ़ि मोर अइहैं
आरे अगोरी में लूटि लेई रे मोरि मइऽऽऽऽया
जा सगड़ेवै पर इजतिया रे तोऽऽऽऽहाऽऽऽऽर [७०]

राजा महर को सगड़ पर पत्र लिख कर तीन सौ साठ पोर का बांस मांगना

हांऽऽऽऽहांऽऽऽऽऽअगोरी
जब सिउचन सगड़े से अगोरी में गइलैं
तब बीर लोरिक बंठवा के पास में गइलैं

अइसन एदवां बाजा बजाय द्या कान दिहल नाहीं जाय
बारह जोड़ी सिहा तेरह जोड़ी करताल
चउदह जोड़ी धउंसा
आरे बंठवा के कइ मो देलैं रे तइयार
पहिले अरुवै में मरुवैं बजावैं
डीह ठाकुर लकड़ी मोर घलैं लैं बजाय
पिछवा बलको देख मैं जुझार बजावैं
आरे पीछे बियहुती लकड़ी घलैं बजाय
आरे पीछे बियहुती आरे लकड़ी घलैं बजाय (पुनरावृत्ति)
लगि गइल सबदिया थाना अगोरी
आरे राजा महरै गइल रे घबड़ाय
जुलुम भयल थाना बलको अगोरी
आरे अब जिनगी ना बची रे हमार
तब राजा महर का कइलैं
आरे लीखै लागल पतिया मो थाना रे अगोरी
पाती धावन के देलैं रे थम्हाय
लेके धावन सगड़ा पर गइलैं
लोरिक के हाथे मो देलैं रे थमाय
का लीखल पतिया लोरिक बांचै
आरे तीन सै साठ पोरे कै हमके
गउरा से बांस मंगवाय द्या
बांस अगोरी की गाड़ी बजार
तब सियम्बर करब मंजरी कय
तब लोरिक बांचल बूढ़ कूबे के झंपोला पर गइलैं
आरे बाबिल माना बाति हमार
अइसन पाती राजा म ऽऽऽ हर
आरे सगरे पर देलैं रे भेजवाय
कुल हम देखल ए मोरे दादं
आरे थाना कनउज की हो बजार
तीन सै आठ पोरे कै बांस ना देखला हउवै हमार
बड़ भारी ओठवन अँगवैं परलैं
आरे एकर कउनो भेदवै देब्या रे बताय
धीरे धीरे बुढ़ऊ झंपोलवै में बोलैं
बचवा माना बाति हमार

चलि जा बलको देवहा के तीरै
जाइके कररवां होबे रे तइयार
हनि के एंड़वा कररवें में मारा
आरे बलको करार गिरी रे भहराय
तीन सै साठ पौरे के आरे एक ठे कूसैं लेब्या उपार
भेजवाय द्या अगोरिया में आरे लेइके मोरे
ल ऽऽऽ ल ऽऽऽ वा अगोरी में भंवरवा घूमैं रे
तो ऽऽऽ हा ऽऽऽ र [७१]

देवहा के तट से लोरिक का तीन सौ साठ पोर का कुश लाना

हां ऽऽऽ हां ऽऽऽऽ
जब देवहा के किनारे गइलैं
हनि के एड़ा वीर लोरिक मरलैं
आरे करार गिरल भहराय
तीन सै साठ पोरे के कुस उपारैं
गन्नत गन्नत झपोला गइलैं निअराय
दादा हम ली अइलीं सगडे पर
गांगी नउवै से देब्या भेजबाय
गंगिया के हथवा में रे थमाय दें
आरे गांगी लेके चललैं अगोरी को रे बाजार
ले के राजा महरे के देहलैं
तब महर सोचै अगोरियै में
अपने मुदई के लड़ैं जोंग कै बलको बाय
फिन मै लिखलैं चिठिया रे अगोरी
आरे धावन के दे लैं थमाय

महर का दूसरे पत्र में सूखे कुएँ की माँग करना

ले के धावन सगड़े पर गइलैं

आरे कहलैं भाई एक ठे कुँआ मंगाय द्या सगरे
आरे एक ठे कुँआ मंगा द्या गढ़ गउरा से (पुनरावृत्ति)
ओंही कुँआ क पानी कलसे में भरवाय देईं
मंजरी क भाँवर देईं रे घुमवाय
सुखि गइल कुँआ थाना अगोरी में
केथुवा क पनिया रे मोर म ऽऽऽ इ ऽऽऽ या

अ घलीं बलको भररे वं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे ई त बाँचत पतिया बीर लोरिक जौं
झंपोलवा पर पहुँचि रे गइलैं
आरे दादा एदवां बड़ा भारी
अड़गुड़वा पतिया न भेजि रे देलैं
इ अइसन अचरज न देखलीं रे मोरि मइया मुलुकवा न संवरे सं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बलको कइसे कुँबा दादा
गउरा से आई हो जइहैं
आरे कइसे परी रे दादा पनिया हो कलसे में
आरे कइसे घूमी ए दादा भँवरवौ रे हमं
आरे बुढ़ऊ धीरे धीरे ए यारों झंपोलवा में समुरेझावैं
आरे बलको लिख दा ए बचवा मैं पतिया सगड़े पर
आरे फिन ओही गंगिया के हथवा देवे बलको नारे थमं
आरे लिखि द्या पट्ठे अगोरी से झूरै कुवँवा सँगे कइ हो देब्या
आरे अपने ले जाईं ए मइया गउरवैं बलको गुजरे ऽ ऽ ऽ रं ऽ ऽ ऽ
आरे बलको एक्कै में जोर ले अगोरिया में ले ले रे आई
आरे तब कलसा में देईं ए बबुवा पनिया भर रै व ऽ ऽ ऽ
आरे फिन लिखि के मैं पतिया गंगिया के देइ रे देलं
आरे पाती लेके गयल गँगिया अगोरियै की रे बजं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे जाइके राजा महर के पतिया बाड़ैं थम्हवले
आरे तब महर बांचत पतिया किलवा में झँखै रे लगलैं
आरे निजकी बीर आइके टिकल बाड़े रे मइया
सगरवै के बलको रे घं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे अब बचल रे मोरि मइया धरमवा अगोरिया में
आरै सिवचन करब्या ए बबुआ बियहवा रे मंज ऽ ऽ ऽ री कैं
आरे हइहै आयल सुबवा हउवैं बलको उमरे रं

द्वारपूजा की तैयारी

आरे एहर मैं त गड़े लागल बबुआ बंसवै रे अंगने में
आरे एहरवैं त देखा कँगन उ मँजरी के बान्हि हो गइलैं
आरे जवने दिन लागै क दुअर पूजवा सइतिया मोर आइ हो गइलीं
आरे तब तैं एहर बारह जोड़ी सिहंवा मो बाजै रे लागल
आरे तेरह जोड़ी रे मइया बस बजत हउवै कररे त ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे चउदह जोड़ी ए बबुआ घउंसवा मोर बाजे रे लागै

आरे एहरै मंजरिया आधी रतिया मड़वा धइके रुवै रे लागलं
आरे बिहने होई जाई रे मइया बिदइया अगोरियै में
आरे राजा मोलागत छोरि लेई माई ए डंडियौ रे हमं ऽऽऽ
आरे हमरे मंगियै में बबुवा सेहुरवा मोर परि हो गइलैं
आरे एक मनसेधू कै मइया जननवां मैं होइ रे गइलीं
आरे बिहने दू दू रे माई जो भयल बाड़ँ तइरे रं ऽऽऽ
आरे अब ब्रम्हा रे मोरि माई इनरा से हिल्लै रे लागल
आरे नीचवा हिलत बाड़ँ रे मइया मंजरी रे अंगने में
आरे मंजरी अइसन अइसन मोरि मइया रूबइया बलको रूवत रे हउवै

लोरिक के कान में करुण क्रन्दन पहुँचना

आरे लोरिक के काने में सगड़े पर मइया सबदिया ना लगि हो गइलीं
आरे तमुवा में बइठल झंखत बा अहीरवा हो गउरा कै
आरे कउनो क बेटवा कवन कोट अगोरिया में मारि हो गइलैं
आरे बलको रूवत बाड़ँ रे मइया बियइयें की रे अं ऽऽऽऽ
आरे कउनो क आज दूवर भयवा राजा महर पतिरिया ले हउवै उठवले
आरे ओके पतरी क सोचिया अगोरिया में बढ़ल हउवैं
आरे एहर कउनो सखिया सहेलर गांव अगोरिया में छूटत रे हुउ ऽऽ वै
आरे रूवति बाड़ँ रे मइया अगोरिया की रे बजं
आरे कवन अनभो आज अगोरी में आइल ह कि
गोपिया रूवति बाड़ैं रे मोरि म ऽऽ इ ऽऽ या
अ अगोरिया की रे बजा ऽऽऽ र [७२]

लोरिक का गांगी के पास जाना तथा गोपी के रुदन के बारे में बताना

हां ऽऽऽ आं ऽऽऽ आं ऽऽऽ
जब लागल बा सबदि सगडे के
लोरिक मनहीं में ऽऽऽ गइलैं रे घबड़ाय
आरे घूमि घूमि पहरवा सगड़वै पर दे लैं (पुनरावृत्ति)
आरे धीरे धीरे तमुअवा आपन छोड़लैं
गांगी के पजरे गइलै रे निअराय
खोदि खोदि गांगी नाऊ के जगावैं
आरे गांगी उठि के बईठ बलको गइलैं
आरे बड़े जोर से लोरिक के डपटैं
आरे बाबू तू अद्धी रात में हम्मै जगावति हउवा

आरे सांझे बियाह करवलीं अंगने में
न त खाये के मीलल न खोजिया कइल्या तू धन हमार
न अधेला पइसा कउनो मीलल
औ फिन आधी रात में घलै ल जगाय
तब लोरिक गांगी से बोलैं
आरे गांगी मनब्या बात हमा ऽ ऽ ऽ र
कोठरी क ताली गउरा क हमरे पास हउवै
जवने दिन बियाह कइके अगोरी से चलबै
हम खोलि देबै कोठरी आपन असरफी सोना लोहा गठियाय
तू कउनो फेरे गांगी डरत जौ हउवां
आरे तब गांगी दे लैं रे जबाब
कउनो न करनवा तू नीदं जगउल्या
आरे एकर भेदवा तू देब्या न बताय
एतनी बात जब गंगिया कह लैं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
एइसन अनुभो मालूम होला
आरे निजकी मोती रे सगड़ के घाट
अइसन बोलिया सूनति बाड़ी
आरे थाना बलको अगोरी की बजार
रुवत गोपिया कउनो अंगने में
आरे बलको आधी राते में
आज अइसन रूवाई रूवत बाड़ी
आरे बन के पतवा गिरल खहराय
तनी गंगिया तनी पता लगावा
कवन रूवत हौ निआईं की रात
एतनी बात जब गंगिया सूनैं
आरे बाबू तूं गइला हों बउराय
अद्धी रात में अगोरियै मैं जाईं
आरे कउनो मारि नइहैं जिनिगिया हमार
के के बाबू हम गोहरइवैं
आरे के के हमै परघट लगी रे सहाय
एतनी बात जब गंगिया बोलैं
आरे कहलेस कि बबुआ मनबे बात हमार
चल जो थाना तैं त अगोरी

आरे तनी पता ले वे रे लगाय
नाऊ क जब बलको बा रे गंगिया
आरे बुधियन में बलको भरल रे गियान

गांगी का सगड़ से अगोरी जाना

गंगिया छोड़लसि जब सगरा मं
अगोरी क करैं लैं पयाम
थाना अगोरी के गंगिया चललैं
आरे बलको किला रे गइलैं निअराय
दुई सिपाही फटके पर बइठं
आरे बड़े जोर से तड़कत बाय
सुनिल्या सुनिल्या चोर चंडाल
आरे भूतवा मो आयल रे बयताल
एतनी रात में कहवां जाब्या
आरे गंगिया मोर देला रे जबाब
सुनिला बबुआ बलको सिपाही
आरे बतिया तू मानि लेब्या हमार
आरे बाबा महर थाना अगोरी
भतिया में नमक खियावैं बरियार
चटर पटर लोरिक कै जीभ
आरे बोलत मोती हउवै रे सगर के घाट
सूखि गयल तारू बीर लोरिक कं
आरे ओही मोती रे सगर के घाट
सगरे क पनिया ढबइल भइलैं
आरे सूखल हौ कुंवा इनार
अद्धी रात में जात मैं बाड़ी
आरे बाबू थाना अगोरी की हो बजार
लेबे जात हईं पानी जब कलसा कैं
आरे लोरिक के घलब पिआय
नाहीं मर जाला अहीर गउरा कै
आरे मंजरी होलै रे चउकवा पर रांड़

गांगी का फाटक पर बाघ और सिंह के अतिरिक्त कूबे और मल सांवर की प्रतिमा देखना

एतनी बात जब गंगिया बोलै

आरे फाटक सिपहिया खोलि मैं देय
हलल गांगी फटके में गइलैं
दूसरा फाटक गइलैं रे निअराय
सिंहा बाघ फटके पर लीखल
आरे गंगियां मोर चलल रे पराय
जाइके सिपाहिन से बोलत हउवैं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
सिंहा सेर बलको बान्हल हउवैं
आरे कउनो बघवा बान्हल हुंड़ार
एकर भेद तूं हम्मैं बताय द्या
चिन्ता बढ़ल रे बदन में बाय
जवन बिदाई अंगने में पाईं
आधा लौहा बाबू हो बंटाय
तब बोलत सिपाही गांगी से
आरे बबुवा मनब्या बाति हमार
पागल मनुसवा तूं आयल बाड़्या
अंखिया से ना हउवै सुझात
बनउरी फटके पर लीखल हउवै
आरे तब त गंगिया लवटि कें जाय
जाइके बनउरी में टूवत हउवैं
आरे गांगी हलल रे किला में जाय
तिसरे फटकवा पर गंगिया गयं
एक डेवढ़ी के बूढ़कूबे क लीखल बाड़्या
एक डेवढ़ी मल सांवर के देलैं लिखवाय
तब गंगिया देखि के बउराइल
आरे ईत दूनो जने टीकल बाड़ैं अगोरी की बजार
आरे देखि ले लैं मोर किलवा में
आरे कउनो बतिया घलब बतियाय
भागल गंगिया जो फटके पर गइलैं
आरे सिपाही बाबू मनब्या बाति हमार
कउनो मनसेधू खड़ा जौ हउवैं
आरे सिपाही हंसति अंतःकाल
ईत पागल मनसेधू हउवैं आरे बाबू बनउरी लीखल बाय
उहै जौं फटकवा में गंगिया डांकै

अंगने के फटके गयल रे निअराय
मंजरी बांस मंड़वा कै धइके
आरे बलको रुवति हइहै बाय

गांगी को देखकर मंजरी का भागना

चीन्हत हउवै गंगिया अंगवनवा में बलको
आरे देखत बेलक्रूल रे व्योपार
चीन्हत मंजरी के अंगने में हउवै
आरे गोड़े लगल महावर बाय
हाथे में कंगनवा मंजरी के बान्हल
हाथ में कंगनवा मंजरी के बान्हल (पुनरावृत्ति)
एहर गहबर पियरिया देखं
माथे में जब सेंदुर देखं
मंजरी क नजर सोझैं परि गइलों
मंजरी बलको चलल रे पराय
भागल अनुपी के कोठरिया पर गइं
आरे बहिन मनबू बात हमार
एक ठे मनसेधू अंगनवा में हउवै
केहु निंगी केहू सूतत हौ उघार
अनूपो जौ गोपिया कोठरिया छोड़लसि
बलको गांगी के पजरे गइल निअराय

अनूपी का गांगी को पकड़ कर पीटना और उसे मांड़ में ढकेलना

धइलस कलइया जब गांगो कै
अंगने घिसरउले हउवे जात
जवन मांड़ बलको छानल रहल
ओहीं में बलको देलैं रे ढ़ेंगलाय
गगिया बलको उलटै पलटै
आरे बलको रूवति अन्तः काल
एहर जो अनूपी बहुवें से मारै
चोर चंडाल तूं आयल बाड़्या
आरे हइहैं लूटै ल्या इजतिया हमार
तब गंगिया अंगने में रूवै
आरे मंजरी भउजी मारि जालै हो मइया जिनिगियों ना रे हमं ऽऽऽऽ

आरे आजु हम दिन दिन ए भउजाई
अ तोहरे गउरा में पूजरे ऽऽऽऽवइबै
आरे मेहना तोर मारी रे मोरि म ऽऽइऽऽया
कुटुमवा न पलि रे वा ऽऽऽऽर
आरे जब अइसे वबुआ अंगनवा में बोलै रे लागल
आरे मंजरी अनूपी के पजरे गइल बाड़ैं निअरे रा ऽऽऽय
आरे बहिन बचाय देबी रे मइया जिनिगिया रे नउवा कै
आरे गउरा में मेहना ए बहिन होई बलको बड़ि ऽऽऽरे ऽऽयाऽऽर

मंजरी के कहने पर गांगी को बाहर निकालना
तथा उसे नया वस्त्र तथा पुरस्कार देना

आरे जब अइसे अनूपीसे मंजरी मैं कहि रे देलैं
आरे अनूपी गड़बड़ा से बलको गंगिया के हउवै निकलले
आरे एहर कुंडन के पानी गांगी के घलत बाड़ैं नहेरवा ऽऽऽय
आरे एहरवैं कछनी रे माई पीताम्बर क देइ रे देलैं
आरे सब नवा असबबवा गंगिया के पहिरेरावै
आरे कवने कारन ए गंगिया रतिया में आयल रे हउवा
आरे तब त रोइ रोइ गंगिया अनूपी से कहत रे हउवै
आरे कादों मर गयल होई रे मइया अहीरवा हो गउरा कै
आरे मंजरी हो गइल रे मइया चउकवै पर बलको रे रं ऽऽऽ (रांड़)
आरे एहरवां बबुवा अनमो जौ आइल रे हउवै
आरे सगड़े क पनिया रे मइया ढबइल होइ रे गइलैं
आरे सगड़े पर सूखि गयल रे मइया कुंवओ रे इनं ऽऽऽऽ
आरे एहर मैं उहै आनै आयल बाड़ी रे कलसा कै
आरे लेके जाबै ए अनूपा सगरवों कै नारे घं ऽऽऽऽऽ
आरे नाहीं मरि जाला ए मइया अहीरवा हो गउरा कै
अगोरियै मैं उपरि जाला ए रनिया अ, सोरिऔ ए तोहं
आरे जब एतनी बतिया मोर जनूपी कहैं रे लागल
आरे जब इतनी बतिया अनूपी मोर सुनि रे लेला
आरे बलको भागल भागल गोपिया कोठिया पर चढ़ि रे गइलीं ऽऽऽ
आरे बलको तरीतर बबुवा एहरवैं रथ बलावैं
आरे बड़के लोटवा में पनिया लोटवा में सरबत थम्हावै
आरे हइहै सोनवा मैं चनिया गंगिया के देवै रे लागल
आरे कहलस कि चल जा ए गांगी सगड़वा के बलको रे घं

आ कहलसि कि जाके कहि दीहा ए बबुवा अहीरवा हो गउरा से
आरे एही साईत में रतिया में मइया कइजइहैं ससुरे ऽ ऽ ऽ रं

गांगी का मोती सगड़ पर आना

आरे एहर गांगी मैं लेके सगरवा के चलि रे देला
आरे किलवा के बाहर गंगिया अपने जौ होई रे गइलैं
आरे लोटवा के सरबत गंगिया खूब बलको पी हो लेला
आरे हथवा में लोटवा गंगिया आरे बलको ले ले हउवै लट रे कं
आरे बलको हाली हाली गंगिया सगड़वा पर भागल रे गइलैं
आरे डांक के लोरिक पंजरवा भयल बाड़ैं तइ रे यं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे हइहै कहब्या ए गांगी हलिया अगोरिया कै ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे गांगी बड़े जोर से रे माई लोरिक कै डपटै रे लागल
आरे का रतिया में मरवाय देब्या ए मइया जिनिगियी रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे अगोरी में हम मारल जाइत ना तब
गउरा होइ जात रे मोरे र ऽ ऽ ऽ ऽ नि ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ या
आ चउकवा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ बरि रे ऽ ऽ ऽ ऽ या ऽ ऽ ऽ ऽ र [७३]

गांगी का बताना कि रात में मंजरी रुदन कर रही थी

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
बड़ी जोर से गांगी लोरिक से बोलै
आरे बाबू मनब्या बाति हमार
आधिय राति में भेंजलै अगोरी
मारि जातै बलको जिनिगिया हमार
तब त बोलत हउवैं बीर लोरिक जं
आरे गांगी मनब्या बात हमार
कवन आधी रुवत रे रात अगोरी
एकर बलको भेदवा देब्या बताय
एतनो बात जब गंगिया सूनलं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
कोई क न बेटवा मुवल बा अगोरी
कोई दूबर भाई न गयल रे उठाय
कोई सखी न सहेलर छूटै
चीन्हलीं बियहिया थाना रे अगोरी

आरे थाना बलको री अगोरी की बजार
धइके बांस मंड़वा कै रुवै
आरे जेकर मंजरी परल बा नांव
एतनी बात जब लोरिक सुनिलं
आरे बड़े जोर से तड़कति बाय
संझवा मैं कइलीं सिर सेन्हुर जं
आरे मोरे डोला घलब रे फनाय
आरे मोरै डोला धलब रे फनाय (पुनरावृत्ति)
कइसे बियही किला में चीन्हल्या
तब गांगी मोर दे लैं रे जबाब
लगल बा बुकनियां बाबू हो गोड़वा में
हथवा में कंगन बान्हल बाय
गहवर पियरिया मंजरी पहिरलें
आरे जवन खड़ी रे अंगनवै में बाय
एही तरे बियही किला में ना चीन्है
आरे तब तै लोरिक हंसत अन्तः काल
जरूर तूं किलवा में चीन्हि मोर गइल्या
तब गंगिया मोर घलैं लैं समुझाय
एक बात बाबू अउर सूना
हमसे कहले जौ बाड़ीं रे चेताय
जाइके कहि दीहा जौ अहीर गढ़ गउरा कै
आरे रतिया में करी रे ससुराय

लोरिक की परेशानी, भइया मलसांवर तथा समस्त बारात को छोड़कर ससुराल कैसे जाय

एतनी बात जब लोरिक सूनलं
आरे गांगी पर जरि के भसम होइ जांय
संझवै कइलो मै सिर सेन्हुरजं
आरे मोरे डोला घलब रे फनाय
तैं रतिया में गाँगी भेजत हइयै
आरे थाना भेजै ले अगोरी की बजार
भइया संवरू सगड़े पर जगिहैं
आरे बलको खोजिया करी रे हमार
मंतगी धोबी सगड़ पर जागि जइहैं

आरे बलको गोहराई मोती रे सगड़ के घाट
सकली बरतिया सगड़वा पर जगिहैं
आरे खोजिया जब करी रे हमार
तैं आधी रतिया मैं भेंजत हइयैं
आरे तनिको नाहीं हउवै रे लजात
एतनी बात जब बोलन लागें
आरे ठावैं गांगी देलैं रे जबाब
चलि जा भइया गाँव अगोरी
आरे ठटि के कइलेब्या रे ससुरार
एही साइत ससुरार तूं कइल्या
फिर नाहीं घुमके गउरा के अइब्या हो बजार
एतनी बात जब बोलन लागे
लोरिक के देबै लागैं लैं जबाब
ए बबुआ कइसे जाईं अगोरीं
कवनो बेबरा देब्या रे बताय
एतनी बात जब बोलन लागे
आरे गांगी मोर देलैं रे जबाब
सुनिला भइया जा तूं अगोरियै
ठटि के कई लेब्या रे ससुरार

पान केला और दो झोला कंकड़ के साथ आंगन जाने की सलाह

थोरी एकन मगही पान लगाय ल्या
थोरी एकन केरूवा क देब्या हो लगाय
सगरे क सिकटी बीनि के नाइ देब्या
दू ठे झोलरा लेब्या रे बनाय
चलि जा भइया तूं अगने में
आरे ठटि के कइ लेब्या रे ससुराय
एहर मंगिया देखा केरूवा के पता तोरि नावै
सगड़े पर सिकटी बीनि के बीड़ा घलैं लें लगाय
एहर पनवा बलको रे लगावैं
दू दू झोलरा घलै ले लगाय
ए भइया संवरू जागि जइहैं
अंगवा कमंडल पीतरी क रखि देब
हथवा में माला देबै रे थमाय

ऊ भजन में अपने रहि जइहैं
धोबिया मंतगी तमू में जब जागे
गढ़ बुटऊल क तमाखू चढ़ाय के
मुंहवा के सटकि देबै रे लगाय
सुत्ती धोबिया जब सगड़े पर
सकल बराती भइया तोर जगिहैं
आरे बलको पंखा घालब रे डोलाय
सकल बरतिया सगड़ेवै पर सुत्ती
तूं धन जाब्या अगोरी की रे बजार
एहर लोरिक सारा असबाव सगरे पर चढ़ाय के
छतिया पर तावा ले लैं रे बन्हवाय
बायें त बगल में जौ ओड़न बान्हें
आरे दहीनै घींचि के बिजुलिया खांड़
बान्है लै पाग बाबू हो नरमन क
आरे जेकर चीर न तन फहराय
एहर झोलरवा कान्हे पर लटकावै
आरे बलको धइ लेहलस रे मइया डगरिया अगोरिया कै
आरे बलको हइहै महर कै फाटक रे मोरि मइया
गयल हउवें नियरे रा ऽ ऽ ऽ ऽ य

लोरिक का किले में प्रवेश करना

आरे बलको सिपाही रे बबुवा फटकवा पर बइठल रे हउवें
आरे सिपाही देखि देखि लोरिक के गयल बाड़ें घबरे रं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बलको एहर सिपहिया बाबू फटकवा पर बइठल नाहीं रे हउवें
आरे बलको तनिकों सिपाही फटकवा पर नाहीं रे बोलें
आरे लोरिक हलल रे माई फटकवा में घुसि रे गइलें
आरे बलको दूसरा फाटक बबुआ गयल बाड़ें नियरे रं ऽ ऽ ऽ
आरे जे पर सिंही सेरवा बबुआ बघवा जौ बान्हल रे हउवें
आरे टप दे दबलस मइया मुठियवा रे ओड़ने क
आरे किला भक से बलको भयल बाड़ें उजिरे या र
आरे बलको बनउरी क सेर बघवा लीखल रे बाड़ें
आरे लोरिक उहो मोर फटकवा किलवा कं छोड़ि रे देलं

बूढ़ कूबे सतिया, मलसांवर व बिजवा की प्रतिमा ड्योढ़ी पर देखना

आरे तीसरे फाटक पर गयल बाड़ें निअरे रं

आरे जहवां बूढ़ कूबे देखा दुअरिया के लीखल रे हउवैं
मल सांवर एक डेवढ़ी के बबुआ भयल बाडैं तइरे यं ऽऽऽऽ
आरे जब उहो फटकवा लोरिक बलको डांकि रे गइलैं
आरे एक डेवढ़ी के निंगी सतिया फटकवा पर लीखत रे हउवैं
एक डेवढ़ी के बिजवा निंगा सड़ासड़ लीखल रे हउवैं
आरे लोरिक देखि के किला में भसमवा होइ रे गइलैं
आरे क गुठिया गउरा न देखत रे लील ?
आरे तेके निंगी ए दादा अगोरियँ में लिखरेवउलैं
आरे इनकर देइत रे मइया अगोरिया फुंक रे वं ऽऽऽऽ
आरे जब उहो फटकवा लोरिक डांकि हो गइलैं
अंगने क दुआरी पर गयल बाडैं नियरे रं
आरे एहर चार घरे क नेंवतहरी सूतल रे हईं
आरे घर में अगने सूतल बाड़ी कुटुम बलको परिरे वं
आरे कुंडा क पनिया लोरिक अंगनवा में ढर रे कवलं
सारी गोपिया उठि के उपरैं के ताकै रे लागीं
आरे कहवां से देवतवा इ बरखवा करत रे हउवैं
आरे कहवां से पानी अगने में गयल बाड़ैं ढेंगरेलं
आरे सारी गोपिया उठि उठि अंगनवा में टहरै रे लागैं
आरे जब अंगने क दुआरी पर गोपिया पहुँची रे गइलीं
आरे जाइके अनुपी के बबुआ कोठरिया पर पहुँचत रे बां ऽऽऽऽ
आरे अनुपी बहिन जवन तूं सनेसवा अगोरिया से भेजले रे बाड़ीं
आरे हइहै आयल बाड़ैं रे मइया अहीरवा हो ग ऽऽउऽऽ रा कै
आरे आइके अंगने में रे मइया भयल हउवै बलकौ तइरैया ऽऽऽ र
आरे अनुपी आपनैं गोपी कोठरिया अकिलवा से छोडले रे हउवै
आरे आइके अंगने के दुअरिया अ गईल हउवै बलको तइरेवं

गोपियों का चावल तथा दूब से लोरिक को चूमना

आरे बलको लोरिक क कलइया अब गोपिया बलको पकड़ रे ले लैं
आरे हइहै धइके आंगने में बलको रनियां अ घलति हउवै मोर बइ रे
ठं ऽऽऽऽ
आरे बलको आंगने में रे मइया आ ढोलकिया मोर बाजै रेलागैं
आरे गोपी जुटि जुटि गावत बाड़ीं मोरि मइया अ मंगलवो न बलको रे
चं ऽऽऽऽ
आरे एहर गोपिया लेइ लइ दूब चउरा अब लोरिक के रानी मोर चूमत
रे बाड़ीं ऽऽऽऽ

अ मनवैं कि धन धन भगिया रे मोरि मइया
अब मंजरी क बलको बरन रे घलबै
आरे एहर देहलें बाड़ैं मोर बरम्हा
अ खोंइछवइ में बलको हइहै रे नाय
आरे एहर मैं त अइसन मोर गोपिया
अ अंगनवै में बलको झंखत रे बाड़ीं
आरे अइसन मंजरी मोर देवता जनमलि बाड़ैं रे
मइया अ अगोरियों की रे बाजार
आरे अइसन जनम भयल बाय आरे थाना अगोरी में
हइहै मंजरी बाड़ी अ अगोरिया में भयल बाड़ैं अवरे ता ऽ ऽ ऽ र [७४]

लोरिक का मुंह लटका कर मूक होकर बैठना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम
सारी गोपिया अंगने में झंखति बाड़ीं
सारी गोपिया अंगने में झंखति बाड़ीं (पुनरावृत्ति)
एहर वीर लोरिक मउर लटकाय के नीचे बइठल
कोई के ओर ना ताकैं पलक उठा ऽ ऽ ऽ य
आरे सारी गोपी मारें खुदुक्का
गाले में तनिकौ जुमुस न खांय
आरे न हिलउले हीलैं न डोलवले डोलैं
बेला बबुर कै जइसे खुत्था बइठल अंगने में बाय
केतनो गोपी बोलावैं बोलबे ना करै
केतनो गोपी हिलावें हिलबै ना करै
आरे तब आपुस में बतियावैं
फूटि गइल भाग मंजरी कै
गूंग बहिर मिल गइलैं
देखत क बड़ा सुन्दर, करम बिगड़ि गयल रे मंजरी कै
करम बिगड़ि गयल रे मंजरी कै (पुनरावृत्ति)
गूंग बहिर मिलि गइलैं
तब महरिन रुवै कीला में
आपन बिटिया हम ना बिदा करब
सिउचन तिलक चढ़उले बाड़ैं
उहै अनुपी अपने बिटिया कै बिदा कइ दे
हम गरे में गगरी जो मंजरी के बान्हं

आरे कत्तो गिरि जाबै कुंवा रे इनार
फूटि गइल भगिया जब मंजरी कै
गूंग बहिर मिल गइलैं
दईब गूंग बहिर बलको मिल गइलैं (पुनरावृत्ति)

लोरिक को गूंगा व बहरा समझ कर महरिन का रोना और छाती पीटना

महरिन पीटि पीटि छतिया रुवै
तब अनुपी महरिन कै समुझावै
सुना सुना रोवा मत तूं किला में
हम इनके रे बोलाइब
आरे तब अनुपी सोरह में गोपिया जौ मोरे अबीरन करै रे लागं
आरे बलको बतीसो में रनियां आ कइले बाड़ँ नारे सींग ऽ ऽ ऽ
आरे अंखिया में गोपिया रे मइया कजरवइ मोर मरकहवा
आरे मथवा पै टिकुली लगवले हउवै रतरे नं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे गोपी गोड़े में घुघुरवा अंगनवा में बान्हि रे ले ले
आरे एहर आंगने रनिया ढोलकिया मोर बजै रे लागै
आरे अनुपी एइसन नचिया अंगनवा में नाचैं रे लागैं
आरे लोरिक के अंगवा तोरति बाड़ँ रनिया चुटुकवै पर बलको रेतं ऽ ऽ ऽ

अनुपी के अद्भुत नृत्य पर लोरिक का अविचल रहना

आरे तनिको हिलत नाहीं हउवै जो अहीरवा रे गउरे कै
आरे एहर अइसन नचिया अनुपी बलको नचले रे हउवै
आरे निचवां धरती रे मइया मोहितवा मोर होइ रे गइलीं
आरे उपरा बरम्हा के बबुआ मोहत बाड़ँ कयरेलं
आरे नाहीं मोहल ले मोरि मइया अहीरवा हो गउरे क
आरे अनुपीं गिर गईल ले मइया धरतिया में भहरे राय
आरे सच्चो फूटि गइल हो मइया जो भगिया रे मंजरी कय
आरे महरिन एहर रुवत रुवत मइया औ किलवा मोर छोड़ि रे देला
आरे सिवचन क गइल बाड़े रे मोर मइया बंगलवा नियरे रं ऽ ऽ ऽ
आरे जाइके सिवचन सिवचन बंगलवा में गोहरे रावै
आरे सिवचन हइहै बड़ा भारी खेलवा मोर अजगुत आई हो गइलैं
आरे जौ मंजरी क तिलक लेके ए सिवचन गउरा में गयल हो रहल्या
आरे अंगने में दुलहा तू तनिकौ जौ घलले बाड़्या ना हो बोलं
आ कि ना बोलवल्या हो भइया जो गउवा न गढ़ रे गउरा

अ मनवैं कि धन धन भगिया रे मोरि मइया
अब मंजरी क बलको बरन रे घलबै
आरे एहर देहलें बाड़ें मोर बरम्हा
अ खोंइछवइ में बलको हइहै रे नाय
आरे एहर मैं त अइसन मोर गोपिया
अ अंगनवै में बलको झंखत रे बाड़ीं
आरे अइसन मंजरी मोर देवता जनमलि बाड़ें रे
मइया अ अगोरियों की रे बाजार
आरे अइसन जनम भयल बाय आरे थाना अगोरी में
हइहै मंजरी बाड़ी अ अगोरिया में भयल बाड़ें अवरे ता ऽ ऽ ऽ र [७४]

लोरिक का मुंह लटका कर मूक होकर बैठना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम
सारी गोपिया अंगने में झंखति बाड़ीं
सारी गोपिया अंगने में झंखति बाड़ीं (पुनरावृत्ति)
एहर वीर लोरिक मउर लटकाय के नीचे बइठल
कोई के ओर ना ताकैं पलक उठा ऽ ऽ ऽ य
आरे सारी गोपी मारें खुदुक्का
गाले में तनिकौ जुमुस न खांय
आरे न हिलउले हीलैं न डोलवले डोलैं
बेला बबुर कै जइसे खुत्था बइठल अंगने में बाय
केतनो गोपी बोलावैं बोलबे ना करै
केतनो गोपी हिलावें हिलबै ना करै
आरे तब आपुस में बतियावैं
फूटि गइल भाग मंजरी कै
गूंग बहिर मिल गइलैं
देखत क बड़ा सुन्दर, करम बिगड़ि गयल रे मंजरी कै
करम बिगड़ि गयल रे मंजरी कै (पुनरावृत्ति)
गूंग बहिर मिलि गइलैं
तब महरिन रुवै कीला में
आपन बिटिया हम ना बिदा करब
सिउचन तिलक चढ़उले बाड़ें
उहै अनुपी अपने बिटिया कै बिदा कइ दे
हम गरे में गगरी जो मंजरी के बान्हं

आरे कत्तो गिरि जाबै कुंवा रे इनार
फूटि गइल भगिया जब मंजरी कै
गूंग बहिर मिल गइलैं
दईब गूंग बहिर बलको मिल गइलैं (पुनरावृत्ति)

लोरिक को गूंगा व बहरा समझ कर महरिन का रोना और छाती पीटना

महरिन पीटि पीटि छतिया रुवै
तब अनुपी महरिन कै समुझावै
सुना सुना रोवा मत तूं किला में
हम इनके रे बोलाइब
आरे तब अनुपी सोरह में गोपिया जौ मोरे अबीरन करै रे लागं
आरे बलको बतीसो में रनियां आ कइले बाड़ैं नारे सींग ऽ ऽ ऽ
आरे अंखिया में गोपिया रे मइया कजरवइ मोर मरकहवा
आरे मथवा पै टिकुली लगवले हउवै रतरे नं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे गोपी गोड़े में घुघुरवा अंगनवा में बान्हि रे ले ले
आरे एहर आंगने रनिया ढोलकिया मोर बजै रे लागै
आरे अनुपी एइसन नचिया अंगनवा में नाचैं रे लागैं
आरे लोरिक के अंगवा तोरति बाड़ै रनिया चुटुकवै पर बलको रेतं ऽ ऽ ऽ

अनुपी के अद्भुत नृत्य पर लोरिक का अविचल रहना

आरे तनिको हिलत नाहीं हउवै जो अहीरवा रे गउरे कै
आरे एहर अइसन नचिया अनुपी बलको नचले रे हउवै
आरे निचवां धरती रे मइया मोहितवा मोर होइ रे गइलीं
आरे उपरा बरम्हा के बबुआ मोहत बाड़ै कयरेलं
आरे नाहीं मोहल ले मोरि मइया अहीरवा हो गउरे क
आरे अनुपीं गिर गईल ले मइया धरतिया में भहरे राय
आरे सच्चो फूटि गइल हो मइया जो भगिया रे मंजरी कय
आरे महरिन एहर रुवत रुवत मइया औ किलवा मोर छोड़ि रे देला
आरे सिवचन क गइल बाड़े रे मोर मइया बंगलवा नियरे रं ऽ ऽ ऽ
आरे जाइके सिवचन सिवचन बंगलवा में गोहरे रावै
आरे सिवचन हइहै बड़ा भारी खेलवा मोर अजगुत आई हो गइलैं
आरे जौ मंजरी क तिलक लेके ए सिवचन गउरा में गयल हो रहल्या
आरे अंगने में दुलहा तू तनिकौ जौ घलले बाड़्या ना हो बोलं
आ कि ना बालवल्या हो मइया जो गउवा न गढ़ रे गउरा

आरे सिवचन कहलैं एक बहिन सूरतवै बलको उतर हो गइलीं
औ ना बोलवलीं हो मइया अ गंउरवै बलको गुजरे रं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे एहरवैं त पीटि पीटि के महरिन मोर छतिया ना रुवत रे हउवै
आरे पनिया में बोरि अइल्या सिवचन लरकियौ हो हमं
आरे बलको ए रुवत रुवत महरिन किलवा के लवटि रे देलीं
आरे सिवचन पीछवा मे पीछवा बगलवा के चलि हो देलैं
आरे जाइके आंगने के दुअरी भयल बाड़ें तइरे यं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे जाइके कहलैं ए भाई
इनके का बोलावति बाड़ियु ए अंगनवा में
एनकर बाप गउरा में हरवा जाइके
हरवहिया मोर करति रे रहलैं

सिवचन के व्यंग्य पर लोरिक का बोल उठना

आरे एनकर माता ओखरी क कन्ना अ खुदियैं न बाड़ीं बटोरले
आरे ओही क रोटी गउरा में घलले बाड़ी नारे बनं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे ऊहै जरती मो जरती जौ रोटिया मोर खइले रे हउवैं
आरे एनकै नन्हवैं मोर कंठा जो रुन्हनवैं न होइ रे जं
आरे जब एतनी जौ बतिया सिवचनवा बलको कहि रे देला
आरे कहां हइहैं हमरे अस भइया अगोरिया में बलको रे रहले
आरे तोहरे गंड़िया में देइला हरदियौ ना रे लगं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तबले बोलत बाड़े रे मइया अहीरवा हो गउरा कैं
आरे बुढ़ करिनवां ए बाबा बियहवा मोर कइ रे देला
आरे गांव अगोरी में रहत बाड़ा
आरे पानी खोज के सगरवां मुदई रे
मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या करत हउवा तइरे या ऽ ऽ ऽ र [७५]

लोरिक का मंजरी से मिलना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ आं
जब अइसे सिवचन कहलन अंगने मैं
जक सिवचन अंगने में कहलैं (पुनरावृत्ति)
आरे एहर सारी गोपी हंसै लगलीं लोरिक बोलै लगलैं
सारी गोपी लगलीं कि एतनी बेर से बोलवलीं
तनिको नाहीं बोलल्या ऽ ऽ ऽ ऽ
कइसन बात तोके गोली लगि गइल
कइसव तूं बोलत अब बाड़्या

मचल खुसिहाली बाय अंगने में
ढोलकी बाजै अंतः काल
होत मंगल जब रे अंगने में
आरे जहां कान दीहल बा नाहीं जात
कुछ देर ले हंसब औ गाइंब
कुछ देर ले हंसब औ गाइब ई अंगने में भइल्या
आरे अनुपी का कइलस ले जाके मंजरी के
कोठरी में तोसक तकिया लगावै
चुनि चुनि सेज बनावै
ले जाके बीर लोरिक के सुतावै
आइल नींद लोरिक के
बाजै नकुला अन्तः काल
मंजरी गोपी अंगने में खड़ी है
चुपचाप औ मारि के जब सूतें लगै
मोटके गद्दा पर एहर नकुला बाजै लागल
तब मंजरी का कइलस आरे आपन सत मनावै
सतवै सतवा गोपिया किलवा में गोहरावै रे मोरि म ऽऽइऽऽ या
आरे किलवा में गोहरे राऽऽऽवै
आरे हम एकर माई मतरिया बाप कहां बेटीं
आरे एकर होबे राम जी पुरुसवै कहलं ऽऽऽऽ
आरे सतवा ए ब्रह्मा सरिरिया में बचल रे होइहैं
आके परघट ए मइया लगि हैं रे सहं
आरे गोपिया सतन कै जौ थलवा बाड़ं बनवले
सतवन क दीपक घललसि रे जरं
आरे सतवन कै मैं फूलवा बाड़ै बनवले
आरे धीरे धीरे अरतिया करै रे लागल
आरे कइके अरतिया जो किलवा में रुवत रे हउवै
आरे कलियैं माई मोर डंड़िया रे जिरउल पर
आरे मारल जाई बलमुआं रे हमं
आरे हमार अधजल में जब डोंगवा बूड़ि रे जइहै
आरे तबलै खुलि गइल ए यारों निंदिया रे लोरिक कै
आरे हइहै पकड़ि ले ले कलइया रे मंऽऽऽजरी के
आरे तोरे पर कवन ए रानी बिपतिया रतिया में आइल
आरे बलको रुवत रहलीं ए गोपिया अगोरिया की रे बाजंऽऽऽ
आरे कवने करनवा ए रानी तू किलवा में रुवत रे रहलू

मंजरी का लोरिक को समझाना कि दुष्ट मोलागत उसे मार डालेगा

आरे तोहरे संगिया आजु छूटत बाड़ै समरे उरिया
आरे गउवां छूटत बाड़ैं कुटुम तोर पलिरेवं
आरे कवने क सोचिया ए रानी किलवा में बढ़ल रे हउवै
आरे एकर देबू ए गोपी भेदवो तूं बतं
आरे तब त रोय रोय गोपिया जो किलवा में समुरेझावैं
आरे जउने दिन जनम ए सइंया अगोरिया में होइ रे गइलै
आरे मोरे सउरी में राजा मोलागत धगवा न बन्हरेवउलै
आरे पहिली बियहुता मंजरी जौ भईल रे हवं
आरे उहै सोचिया ओ सइंया किलवा में आवत रे हउवै
आरे काल्ह जिरउल पर मारल जाइ बलमुआ जिनिगिया रे तो हं ऽऽऽ
आरे उहै तोहरै समिया जौ जियवा मारल रे जइहैं
आरे अगोरिया में डूबि जाई रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया
औ डोंगवा रे हमा ऽ ऽ ऽ ऽ र [७६]

लोरिक का मंजरी को समझाना कि उसने कैसे बमरी के सात बेटों को मारा

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽऽऽऽऽ
एतनी बात जब लोरिक सुनलैं
आरे बजर परो गोपी तोके गढ़वै अगोरी
आरे बलको परो रे बजर कैं घान
अइसन बात बतियावत बाड़ू
आरे बात बरनै जोग कर नाय
अइसन बात हमसे जिनि बतिआवा
आरे हमरे बूते रे रहल ना जात
एके देख के तूं काहे घबरइलू
आरे काहैं रुवैलू निअइयैं की रात
संगी मोर सूतल हउवें समउरिया
आरे संगे सूतल रे कुटुम परिवार
भइया मलसांवर सूतल हउवैं
आरे धोबी सूतल जे मंतगिया मार
जे सुनले होई जब सगड़े पर
गउरा में निंदा करी रे बड़ियार
काहे बदे अइसन रूवइया रूवलूं
आरे तनी माना बाति हमार

एक समय में थाना सोहवल में गइलीं
आरे साति बेटवा जनमल राजा बमरी के
सातो जनमल दइब कर लाल
कउनों सिंही सेर बघवा मरलैं
कउनो नदी बेउरा में कूदलैं
डूब डूब घरैं लैं सोइंस घरियार
दसवंत तपल रहलैं दस मांसा
आरे भीम्हली तपल तेरहवै मांस
ओनके सगड़े पर गोपी मरलीं
आरे भइया के डांड़ी ले लों फनाय
आरे भइया के डांड़ी ले लों फनाय (पुनरावृत्ति)
लेके अपने गउरा अइलीं
आरे चढ़ल तिलक मोर थाना गउरा में
ले के बरात सगड़े पर टिकलीं
अंगने में भांवर लिहलैं घुमाय
काल्ह मो निरम्मर के मारि नाई बै
र ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ नियां आ खेतवा मयरे दा ऽ ऽ ऽ न

लोरिक के आश्वासन के बाद भी मंजरी आश्वस्त नहीं

आरे हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे जब देलैं जबाब बीर लोरिक मंजरी कै
आरे मंजरी मारि के घमकवै मोर कीलवा में रूवै रे लागं
आरे हमके केतनो ए समिया भरोसवा जौ देति रे हउवा
आरे किलवा में हिलति बाड़ें ए समिया टंगरियौ रे हामं (ग)
आरे कलियां जिरउल पर ए समिया जो डंडिया जौ मोर छोंरल रे जइ हैं
आरे कुलवा में दागि रे मोरि भइया
लगति हउवें बलको बड़ि रे यं (ग)
आरे बलको अबहीं से ए समिया जौ बरतिया मोर मानि हो जाव्यं (ग)
आरे अबहीं से घूमि के चल जाबे रे मोरि मइया
अपने गउरवें बलको रं गुजरे रं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे हमसे सुन्दर मैं बियहिया कुसुमवापुर जोहत रे हउवें
आरे जाइके अपने मजा कर रे मोरि मइया गउरवें बलको गुंजरे रं ऽ ऽ
आरे हमरे नरकी जिअरा समिया कारन रे संइया

जिनिगिया तोर बलको रे जइहैं
आरे गउरा में रोई रे मोरि मइया कुटुमवा न पलि रे वं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तोरे भइया रोइहे ए बीरन आरे तोरे भइया बीरन जौ रोइहै
अ गइयन की रे अड़ं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तब त धीरे धीरे लोरिक समुरे झावै
आरे गोपी ऊहो मरनिया तनिको जिनरे जान्या
आरे नाहीं पिछवा गोपिया हम गोड़वै रे हटइवै
आरे नाहीं भागि के जाबै रे माई गउरवै अपने अपने गुजरे रं
आरे की त जिनगी गोपी जिरउली पर चलि हो जइहैं
आरे की त जिनिगी मोर जाई रे माई गउरवैं न गुंजरे रं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे जब ले दम बचल रही जिरउल पर
आरे तबंले छोडब नाहीं ए र ऽ ऽ ऽ नि ऽ ऽ या आ डंडिया
ना रे तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [७७]

सिवचन मामा से ढाल और बटुवा मांगने की सलाह

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ
तब बीर लोरिक मंजरी के समुझावै
एक बात तूं हम्मै बतावा
आरे कवन कवन विदाई बिहाने होई
अ कवन कवन बिदइया पइबू तूं अगोरी की बजार
अ कवन कवन विदाई होई रे हमार
कवन विदाई भइया क होई
कवन दादा क बिदाई अगोरी की होई बजार
तब मंजरी लोरिक के समुझावैं
हम त धरम क ए धैं माता क रोइब अगोरी केरी रे वजार
नान्हू भइया के संगे बगले ले चलब कनउज केरी बजार
जब जब सूधि आई बीरने कै
रूवब गउरा की हो बजार
बाकी तूं अगने में आया, तू अंगने में आया (पुनरावृत्ति)
नीचे मउर लटकाय के बइठा
केतने रुपया पइसा दउलति आगे रखल जं
तनिको जुमुस मत खाया
तब सिवचन मम्मा अंगने में अइहैं
कहिहैं कवनों मांगन तू मांगा

तोहरो विदाई दीहल जाय
तब तू कहि दीहा आपन बटुवा देइ द्या
हम जिरउल पर खिचड़ी लीप पोत के करब तइयार
ढाल दे दा जिरउल पर लड़ें बदे इहै दूनो तूं मांगन मांग्या
अपने भाय मलसांवर से कहि दीहा अगली गाय मति ली हैं
पीछली गाय मति ली हैं मझली गाय जौ ली हैं रे बराय
ऊ लेके गउरा के चलि दो हैं
बूढ़ कूबे बाबिल के अपने कहि दं
दुआरे पर दुसाला दी हैं रे बिछाय
जेतना दइजा मिलै गउरा, में ऊ बन्हि है
जेतना दइजा मिलै गउरा कै
ओतना बान्हि के कनउज की चलि हौं बजार
एतनी बात जब मंजरी कह लैं
बीर लोरिक होत भिनसहरे सबेरे उठि भागल जालें मोती सगड़ के घाट
एहर बरतिहा जागल बाड़ें
आरे गांगी लेके पंखा हाकैं अन्तह काल
एहरी धोबी मंतगी खोंखै
आरे ओकेजे तमाखू गडवुटवल के चिलम जहानाबाद
मुंहे के सटक लगावैं धोबी सूत्ते पीये जब सगरे पर
आरे ओहर मलसांवर जब खों खै
आरे आगे कमंडल पितरो रख दें
हाथे में माला दे लैं थम्हाय
भजन करैं लगलैं सगड़े पर
तबले लोरिक अगोरी से तमुआ पर अइलैं
जब तमू कै पास में अइलैं
तब गांगी पजरे गयल निअराय
हलि आवा तमुवा में सकल बरतिया जागि मोर जालैं
आरे मइया जागि जालैं तोहार
सारा असबाब उतारि के लोरिक
पहरा देलैं मोती रे सगर के घाट
एहर ए भाई गांगी लमहरे जाके
बिछा के सेवला सूतल हइयैं
एहर पूरब लागल लोहिया

मंजरी को विदाई के लिए महर का पत्र लिखना

पच्छु सायर भयल ओजरार
तब राजा महर अगोरो में
लिखि के पाती भेंजलैं
धावन हाथै दे लैं थमाय
ले जा सगरे पर दे दा अहीरे कै
सांझे कइल्या सिर सेन्हुर
भोरवा में डोला लीहा फनाय
आइल साइत बा थाना अगोरीं
आरे धावन लेके मोती रे सगर के घाट
जब सगड़े पर धावन गइलैं
आरे जाके सिरिया दे लैं रे लटकाय
जै जै काल जब लोरिक मचावै
हथवा में पाती देलैं रे थमाय
बांच के पतिया जौ बीर लोरिक जं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बुढ़ऊ क झंपोला गइलै रे निअराय
बन बन देखबा जब सगरे पर
आरे बाबिल मनब्या बाति हमार
अइसन पतिया जौ महर भेजलैं
आरे निज की मोती रे सगड़ के घाट
कि सांझे कइल्या सिर सेन्हुर जं
आरे मोर डोला लेब्या रे फनाय
अइसन पतिया जौ आइल बाड़ैं
हमरे न आवति बाड़ै रे उपाय
तब बुढ़ऊ मोर झपोलवैं बोड़ैं
आरे बचवा मनब्या बात हमार
आरे छ छ कहार के पालकी बेटवा
आरे सगरे पर देब्या रे सजवाय
कहि दा लेकै कहार पालकी जं
महर के जइहैं पवन दुआर
बाजा बजवाय दा जब बंठवा कं
आरे लोरिक हुकुमइ देलैं रे लगाय
जब बंठवा से जाके कहलैं
आरे कहारन के करने लगैं लैं तइयार

सजल पलकिया जब मंजरी कं
आरे ले के जात अगोरी की बजार
ले गइलं अगोरी दुआरी पर लगाइ दं
एहर मंजरी चउके पर बइठल बाय
जब चउके से मंजरी खाली भईं
आरे तब त धइले बाड़े रे मइया
आ गरवा रे मह ऽ ऽ ऽ ऽ रिन कै
आरे हमार बहुत दूर पर ए मावा
बिदइया रे करत रे बाड़
आरे कवन करत बाड़ो ए माई बिदइयौ रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ

मंजरी का बिदाई में सखियों से नवलखा हार पाना

आरे कहै जवन जवन ए मांजरा मंगनवा जौ मांगि हो लेलू
आरे उहै पूड़ा कई देईं ए बिटिया अगोरिया की रे बजं ऽ ऽ ऽ
आरे कहै ए माई हमैं नन्हुआं भइया के मंगनवा बलको रे देबू
आरे डांड़ो के संगै ले ले जाईं ए मावा अपने गउरवें न गुंजरे रं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे जब जब आई ए माई सुधिया रे बीरने कै
आरे अपने हम रुवब रे मोरि मइया गउरवां ना गुंजरे रं
आरे महरिन उहै रे मोरि मइया बिदइया ना दे इ हो देलीं
आरे महरिन क गरवा मंजरो अंगनवा में छोड़ि रे देलैं
आरे जाइकें धइलस मंजरी गरवा समसूनरी के
आरे धइके गरवा मोर गोपिया अंगनवा में रूवत रे हउवैं
आरे हमार तोहार ए सखिया संगवा न छूटत रे हउवै
आरे अब नाहीं होई रे मोरि मइया भेंटियो रे दीदं
आरे कवन ए सखिया मंगनवा न देति रे बाड़ीं
आरे कहैं जवन ए मंजरा मगनवा तूं मांगि हो लेबू
आरे उहै मांगन पूरा ए सखिया अ कइ देईं ना रे तो हं
आरे कहै हम्मै नवलखवा हरवा गरवा कै देई हो देबू
आरे अपने पहिरबि रे मोरि मइया गउरवैं न गुजरे रं
आरे गोपी नौलखवा हरवा गलवा कै अपने न हउवै निकल ले
आरे मंजरी के देहलसि रे मोरि मइया गलवै मैं पहिरे रं
आरे गोपिया ओहू क गरवा अंगनवा में छोड़ि रे देहल
आरे जाइके धइलस मंजरी गोड़वा रे सिउचन कै
आरे हमार बड़ा दूर पर ए मम्मा बियहवा ना कइले रे हउवा

आरे नाहीं ओहर से ए ममवां कउनो कुकुरा ना बलको रे अइहैं
आरे नाहीं अइसे मनईं एहर से ए मइया जइहैं रे बिलं
आरे हमार कवन ए सिवचन मम्मां बिदइया न करत रे हउवा
आरे कहैं जवन ए मंजरा मंगनवा न मांगि हो लेबू
आरे उहै कई देईं ए मंजरी बिदइयौ रे तोहं

मंजरी का मामा सिवचन से अनूपी को मांगना तथा
पिता से गाड़ी भर कर सोना पाना

आरे कहैं हमके अनुपी ए मम्मा बहिनिया न देइ हो देब्या
आरे अपने ले ले जाईं रे मइया गउरवां न गुजरे रं
आरे जब जब आईं ए मम्मा सुधिया रे मतवा कै
आरे अपने रूवब रे मइया गउरवैं न गुजरे रं
आरे ऊहै जो मंगनवा सिउचन न देईं हो देलैं
आरे जाइके धइलस गोपिया गोड़वा रे महरे कै
आरे हमार बड़ी दूर पर ए बाबिल बियहवा न कइले रे हउवा
आरे कवन करत बाड़ा ए बाबिला बिदइयौ रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे कहैं जवन ए मंजरी मंगनवा मांगि ए लेबू
आरे उहै कइ देईं ए मंजरा बिदइयौ रे तोहं
आरे गाड़ा छकड़ा सोना लदवाय देईं
बइठल जाके खाबी रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
अपने गउरवैं बलको गुजरे रा ऽ ऽ ऽ ऽ त [७८]

लोरिक का विदाई के लिए महर के आंगन में आना
व सिवचन से बटुवा मांगना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ राम
आरे तब त छोड़ि देहलस रे मोरि मइया गोड़वा म ऽ ऽ हरे कै
आरे नाउन पकड़ि के मंजरी के डंड़िया में बइरे ठावै
आरे डांड़ी फनि के चललि रे मइया जिरउली की रे खेतं
आरे एहर मो हो गयल ए बबुवा हुकुमवा रे सगड़े पर
आरे दुलहा मोर आयल हउवै अंगनवा रे महरे के
आरे जहां सखिया मैं गावत बाड़ी रे मोरि मइया मंगलवा न बलको रे
चं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

आरे लोरिका के अंगने में बलको मोर वइठि रे गइलैं
आरे नीचवा के लोरिक जौ मउरिया न कइले रे हउवैं

आरे ठहरे पर अंगवा देखब्या आयल बाड़ैं देवर तं
आरे केतना अंगने में सब लोग लोरिक के बाड़ैं मनावै
आरे तनिको नाहीं ताकत बाड़ैं जौ नेतरवो रे फइरेलं
आरे तबले सिवचन आके अंगनवा में खड़ा रे भइलैं
आरे जवन कहा तोहके मैं अनवाँ धनवां देई हो देई
जवन मांगै के होय तवन मंगनवा मांगि हो लेब्या
आरे लोरिक कहलैं अपना बटुवा ए बाबा हमके तूं देइ हो देब्या
जवन जिरउल पर लीप पोत के रखि देई खिचड़ी
संझवा सबेरवा न होइ रे जइहैं
आरे ओढ़न दे द्या हम लड़ी रे मइया खेतवा मयरे दं
आरे बलको उहो मोर बिदइया अहीरे के होइ रे गइलैं
आरे जब ऊहो ए बाबू बिदइया मोर होइ रे गइलैं (पुनरावृत्ति)

संवरू आदि सबकी विदाई सम्पन्न

आरे तब तं एहर देखा उहे विदाई लोरिक पाइ हो गइलैं
आरे संवरू क गइल बाड़े विदइया मोर नियरे रं ऽऽऽ ऽऽऽ
आरे अगली गइया माइ न पछली लेत रे हउवैं
आरे एहर मोर ऊंदत गइया हई न बररे दं
आरे दू दू दंतवा पर ज लगल हउवै न रे बियं
आरे बलको बराके गइया मोर संवरू ना हांकि रे देलैं
आरे एहरवै मो आ गइल ए यारों बिदइया रे बुढ़ऊ कै
आरे ले जाके दुआरे सेमलवा जो आपन बलको फेंकि रे देलैं
आरे एहर अगोरी देत देत बिदइया गयल हउवैं बेकरेलं
आरे एहर भूसवले में भूसा महरे के गांजल रे हउवै
ले जाके उहै बान्ह देलै देखा दइया बुढ़ऊ के बलको अगोरो
आरे ऊ कपारे पर धइके जात बाड़ैं रे माई गउरवै न गुजरे रं
आरे एहरवा हो गइल बिदइया रे बुढ़ऊ कै
आरे एहरवै लेके गउवां गउरवा जाति रे हउवैं
अ एहर डांड़ी लेके चलति बाड़ैं जिरउली की रे खेतं
आरे बलको राजा मोलागत के कोलिया में डांड़ी रे पहुँचल
अ डंड़िया खोपवा में राजा मोलागति से उड़ि हो गइलीं
अ पिछवां के डांड़ी मंजरी के देले बाड़ैं न रे हटं ग
आरे धै धै खोंपवा क बसंवा मैं निचवा मों खींचि रे देलैं

अंगवा के डांड़ी मंजरी के देले बाड़ै हकरे वं
आरे लेहले डंड़िया जिरउल पर जाति रे हउवैं

महर का राजा मोलागत से मंजरी की डोली छीनने के लिए कहना

आरे डांड़ी देहलैं रे मइया जिरउली पर रे गिरा ऽऽऽऽऽ
आरे एहर राजा महर भागल राजा मोलागत क गयल कचहरी बा
नियरे रंऽऽऽऽ

आरे जाइके कचहरी में राजा महर बलको कहै रे लागल
आरे बाबू जवने मंजरी के हथवा मैं धगवा तूं बन्हरेववला
आरे तवन बाबू एकठे दूबर भयवा खोजना नवले रे बाड़ीं
आरे अंगने में गाड़ि के मंडउवा हम भंवर बाड़ी घुमरेवउले
मंजरी क दे देहलीं बाबू बलको रे कन्या दंऽऽऽऽ
आरे हमार जिनिगी ए बाबू सुफलवा न होइ रे गइलीं
आरे उहै डांड़ी ले के जिरउल ए बाबू पर डेरवा न देले हउवैं
आरे छोरि लेब्या ए बबुआ डंड़िया रे अहीरे कै
आरे मंजरी के संगे ए बाबू करबे न सुखवौ रे बेलंऽऽऽऽ
आरे एहर कहि के महर किलवा में भागि रे गइलैं
आरे राजा मोलागत कचहरी गयल बाड़ैं घबड़े रं
आरे कब मारब ए माइ अहीरवा हो गउरा कै
आरे कब मंजरी के डांडी किला में देब बलको ओलिरे अं
आरे एहर अइसन रूवइया किला में रूवै रे लागल
आरे मुनसी देवान कचहरी बलको गयल बाड़ैं घबरे राइ
आरे एकरे कपारे पर बबुआ पपवा चढ़ि रे गइलै
आरे एइसन बतिया माई घलत बाड़ैं बतिरे याय
आरे गउवां के बहिन रे बिटियवा नाहीं रे चीन्है
आरे का एकर मरन ए माई गईल बाड़ैं निअरे रं
मुनुसी देवान ए बबुआ इहै बलको बति रे यावैं
आरे एहर राजा मोलागत धावन के गोहरे रावैं
आरे धावन हो गइलैं बाबू बगलिया में तइरे यार
आरे एहर पतिया बाबू अगोरिया में लीखै रे लागं
आरे लीखत हउवै आधा रजवा आधा पतवा देई हो देबैं
अ बरमपुर क भीटा कचरे बाबू मघइया ढोली रे पान
आरे बलकों अन खाये भँटवा तै गढ़वा रे भंटउली में
आरे पानी ए बाबू अगोरियौ की रे बाजंऽऽऽऽ

धावन का बीर भांट के पास राजा मोलागत का पत्र ले जाना

आरे बलको लिखि के पतिया धवनवा के देइ हो देलैं
आरे धावन ले के भटउल की मइया चलल रे बजं
आरे धावन अरगन देखे परगन तोरै रे लागै
आरे माथे अगोरी गयल भंटवा के पवन रे दुअ
आरे एहर मैं भाटिन भाटिन धावन दुअरिया पर गोहरे रावै
आरे भांटिन हो गइलीं रे मोरि मइया दुअरिया पर तइरे र
आरे कहै जल्दी हमके भांटे के जल्दी न बलको बलावा
आरे नाहीं हइहै जे बतिया बबुआ बिगड़त हउवै रे हमं
आरे एहर जो भाटिन धीरे से धवनवा के समुरे झावै
आरे हमरे भांट उहै मेवा करने में लड़त बलको रे हउवै
आरे धावन धइलस रे मइया डगरिया अखड़वा कै
आरे बलको अखाड़े पर धवनवां गयल बाड़ैं निअरे रं ऽऽऽऽ
आरे जाइके बलको सिरियां भंटवा के बाड़ैं झुकवले
आरे भंटवा गयल रे मोरि मइया पजरवैं में निअरे रं
आरे कहा हाल धावन थनवा अगोरिया कै
आरे कइसन पाती ले के आयल बाड़ा ए बबुआ हमरे पवन रे दुअं ऽऽऽ
आरे तबले निकाल के पतिया धावन ना हउवै थमवले

मोलागत का आधा राज्य पाने के लोभ में भांट प्रसन्न

आरे आरे एहर भंटवा बाचत बा रे मइया भटउली की रे बजं
ओमन लीखल बा आधा रजवा अगोरिया के देइ हो दे बै
आरे बरमपुर क भींटा कचरै क बबआ मघइया ढोली रे पं
आरे एहरवैं सारा दउलतिया अगोरिया में देइ हो देबै
आरे बइठै राजा गुजर भंटवा अगोरी की बजं
आरे एक ठे चढ़ल बाडैं अहीरवा हो गउरा कै
आरे जेकर लोरिक एमइया बघेलवा जो बाडैं रे नं
आरे उहै मारि नवते भंटवा अहीरवा हो गउरा कै
आरे तोके तिलक रे देइत दइबा अगोरिया की रे बजं
आरे भंटवा एतना जोर से मोर तलिया हउवै बजउले
आरे जवन अइसन ढेपुलिया अखड़वा में मारत रे हउवै
आरे बहुत दिन पर लवटि गइल रे मइया जो भगियौ रे हमं
आरे बहुत दिन पर राजा कहावै क पारी जौ आइल रे हउवै
आरे चलि के भूंजव रे माई एकवटे में बलको रे रं ऽऽऽऽ

आरे भंटवा सेरन धूरिया जो गरदन पर धइ हो ले लैं
आरे पउवन माथे ले ले न हउवै रे चढं
आरे बलको भंटवा देखा सब पट्टन के ललरें कारैं
रोज रोज अखड़वा भइया भंटउली रे बलको चलाया
हम धन जात बाड़ीं बबुआ अगोरी की रे बजं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बहुत दिन पर राजा क पारी न आइल रे हउवै
आरे तनीं हम राज कइ लेईं ए बबुआ अगोरी की हो बजं
आरे भंटवा भागल बबुआ बखरिया पर पहुँचि रे गइलैं
अंगने में जाइके भीतियै में धकवा भंटवा जौ मरले रे हउवे
आरे हंसत हौ अन्तः काल भंटवा अंगनवा में बलको रे अपने
एहर भांटिन एकठे धीरे-धीरे चुल्हनिया न पोतति रे हउवै
एक ठे चरखा बेउली बेवंतत अंगनवै में बलको रे बं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे कहलसि सामी आजु ढेर तोरे नसवा दरूववा के होइ रे गईं
आ एतना जोर हंसत बाड़ा समिया पवनवो रे दुं ऽ ऽ अं ऽ ऽ
आरे भंटवा कहै आजु हमके राजै रे रनिया
अगोरिया क मिलल रे हउवै
आरे बइठल भूंजा ए गोपा अगोरे में बलको रे रं
आरे हइहै आइल बांड़ैं गोपी पतिया अगोरिया सें
अ राजा मोलागत हमहन के राजे पर गोपी दे लैं बलको बइरे ठं
आरे बड़ बड़ अहीरन क कमरी मैं गोजिया छोरि रे ले लं
आरे भंटउल में देंवका रे मइया मोर भयल रे चरं

लोरिक से लड़ाई में पति के मरने की आशंका से भाटिन का दु:खी होना

आरे तब धीरे धीरे भटिनिया पजरवा में पहुँचि रे गईं
अ कइसन पाती समियां तूं बांचत बाड़्या अंगने में
आरे भाटिन हथवा से पतिया अगनवां में लेइ हो लेल्या
आरे तब त पीटि पीटि के छातिया आ अंगनवा में गोपिया जौ रूवत रे हउवै
आरे अहीरे क जानल बाड़ैं ए समिया अ मरमियौं न रे हमं
आरे उहौ अहीर एक समै में ए समिया हमरे सोहवल में गयल रे रहलैं
आरे तवन सत सत बेटवा हो मोरि मइया अ बमरिया के सोहवल में जनमल रे रहलैं
आरे तेके मारि नवलैं ए सइया अ खेतवा बलको मयरेदं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे सामी हमर जानल बा मरमिया अब बलको अहीरे हउवै एठियन

आरे हइहै ना पार पइब्या ए बलमुवा अगोरियौ की रे बाजं
आरे बलको अबहीं से बतिया सामियां अब किलवा में मानि हो जाब्या
आरे ओकरे संगे सोरह सै ए समिया आइल बाड़ी कन रे टं
आरे सोरह सै आईल बाड़ैं हो मइया अब मरियउ ना रे मसं
आरे जवने दिन दुरुगा के समने समिया अब खेतवा पर परि हो जइब्या
आरे हइहैं नाहीं बची रे मोरि मइया आ जिनिगियौ ना रे तो हं
आरे तबले बड़े जोर से भंटवा अंगनवा में उछर रे गइलै
आ जनाना क जात आगे कटति बाड़ी रे गोपिया हमरे भंटउली की
बलको बजं
आरे बइठा बइठा भंटउल में हम थाना अगोरी में जात बाड़ी
अहींरे क काटि लेब ए र ऽ ऽ ऽ ऽ निया औ मथवा लल रे का ऽ ऽ र [७६]

प्रसन्नता में भांट का अन्न बांटना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
घड़ धड़ घड़ ताल बजावैं, अंगने में उछरल भांट
कोठरी में जाइके ठिल्ली लिआय के अगने में पटकैं कुंड़ा पर कुंड़ा पटके
अन्तः काल
कहलसि कि खुसी क मिलल राजा अगोरी क
उहां से निकसल भांट भटउली में जाइके भूजब एकवटे राज
घर घर कहलसि कि एक कोठिला गोजई आज बंटी
हमरे ओगर गांव जुटि आवा
सब लोग दउरी ले ले भंटवा के दुआरे गइलैं
हनि के एड़ा मरलस कोठिला गयल भहराय
लोग दउरी भरि भरि उठाइ ले गयल
एहर भांट मोर बान्हैं मुरायठ उलटा डंडा ले लै लगाय
हाथे में लोटिया लटकवलं अ धइलैं डगर थाना अगोरी कै
अगोरी की चललैं बलको बजार
सोचे अपने मन पंयडे में कीत भड़कीत भड़काइ देवैं
न त अपने भड़क के भागि अइवै
उहै सोचत भांट भंटउल में गइलै भंटउल से गइलै अगोरी की रे बजार
लगल कचहरी राजा मोलागत कै
गहुवर झूमि के लागल लैं दरबार
तबले भंटवा फाटक पर पहुँचं
आरे हइहे झुकि के मो करै लैं सलाम

जै जै कार मोर राजा मोलागं आरे भंटवा कै घलै ले मनाय
कहा हाल भंटवा तनी बतिया
आरे का हाल चाल भटउल कैं बाड़ैं रे बजार
तब भाँट मुलुक बोलै लागं आरे बाबू मनब्या बाति हमार
खूब मजा भंटउल में हुउवै
आरे बइठल भूंजिला एकवटे राज
कहा हाल बाबू अगोरी कैं
आरे हम सूनी कान ओन्हाय
तब तै राजा मै मोलागत कहलैं

मोलागत का भांट से जिरउल पर लोरिक से लड़ने के लिए कहना

आरे भांट मनबे बात हमार
एक ठे बिटिया राजा महरे कैं
जेकर जनम में सवा घरी सोना चानी बरसल
सउरी में धागा गइली रे बन्हवाय
तवन एक ठे अहीर गउरा कै भांवर ले लैं घुमाय
ले जाके डांडी जिरउल के छिपउले बाड़ैं
उहै जौं डांड़ी छोड़ि लेत्या तो के बलको लिखि देइत
राजा अगोरिया क भूंजा एकवटे रा ऽ ऽ ऽ ज
एतनी बात जब भंटवा सूनं
आरे धड़ धड़ तलिया देला रे बजाय
हमके बाबू तूँ पंयड़ा रे बताय दं
हम जिरउल की जाबै रे खेतान
एतनी बात जब राजा बोलं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
एक धावन के लगैं पुकारै
आरे धावन भयल बगल में ठाढ
एहर भंटवा के पंयड़ा बतावैं
आरे बिड़ा लगाय के भांट के आगे लिआय के रख देलैं
भंटवा उठाके मुंहे में नावै
आरे एहर जिरउल के पंयड़ा घलै लैं सुधियाय
धइलैं डगरिया तब जिरउल कैं
आरे जिरउल की चलैं खेताड़
जब मयदान परल जिरउल पं

आरे लोरिक सोझवैं नजर परिजाय
मंजरी के डंड़िया के टप दे पहुँचं
आरे डांडी पजरें गयल निअराय
सुनिला गोपिया लड़कवन्हीं
आरे रानी मनब्यु बात हमार
चीन्हल जानल मनसेधू हउवै
अगोरी के जानल मरम न हमार
तोर चीन्हल गोपिया जौ होइहैं
आरे हमके चीन्ह के मो देबी रेबताय
सतिया क बतिया मैं खोजले रहीं
आरे जिरउल की बलको रे खेतार
टप देना मंजरी ओहार मारि दे लैं
आरे गोपी ताकत हौ ओसरिया लगाय
देखें लें सुरतिया जब भंटवा कै
आरे दुलहा मनब्या बात हमार
ई त भांट भंटउल कै हउवैं
आरे जेकर रंपा परल हौ नाव
आवत बाड़ें जब जिरउल पं
आरे थाना अगोरी से सुन के आवत बाय
सबकर नेग जोग देइ घलल्या
एकर वाको हउवै रे रहि जाय उहै नेगवा आनै आवत हउवैं
आरे लोरिक डांडी से लमहरे हटि जाय
अपने दूरीं पर डांड़ी से गइलं
तबले भांट पजरे गयल रे निअराय
जेतना सुरत लोरिक कै देखै

भांट का जिरउल पर प्रसन्नता से ठुमकना

भंटवा ठुमुकै अंतः काल
पिछहीं कै ठुमुक ठुमुक चलैं लगलैं
आरे भांट देखि गयल घबड़ाय
अपने मन में भंटवा सोचैं
आरे का मोर मरन गइल रे निअराय
जवन बियही किलवा में कहलं
आरे मोर अंखियैन न गयल रे देखाय

डंड़िया के पिछवा के भांटैं चलि देहलैं
आरे उत्तर मुंहे हउवै चलि जात
अगवां से भांट बलको फिन घुमि दिहलैं
डंड़ियां के बीचवैं से भाग न दक्खिन के जइं
दक्खिन से आड़े से घुमि के जं
आरे फिन डांड़ी बीचै हउवै जात
बइठल बा अहीर मोर गढ़ गउरा कैं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
कउने करनवा घूमति बाड़्या
का पयंड़ा बलको गयल रे भुलाय
का जौ हिरायल बबुआ हउवै
आरे हम खोज के देईं रे दिआय
एतनी बात जब कहन लागें
आरे बाबू मनब्या बात हमार
की राही तू बाड़्या बटोहीं
आरे कि त सुबवा बाड़्यारे उमराव
की चोर चंडाल तू आयल बाड़्या
कउनो घात पेंचि लगावत बाड़ा
का बाबू डंड़िया लूटब्या हमार
एकर भेदा बता द्या बबुआ
आरे चिन्ता बढ़ल रे बदन में बाय
तब भंटवा मोर बोलन लागें
आरे बाबू मनब्या बात हमार
कहवां ओतन तोर कहां रे गोतन हौ
कहवां जनम भयल रे बुनियाद
केकरे बुन क सिरजल बाड़्या
आरे केकरी कोखि में लेल्या अवतार
कहवां क बाबू चलालि बाड़्या
आरे कहां हउवा चलवले जात
कवने कारन जिरउल पर टिकल्या
एकर भेदा देब्या रे बतं

लोरिक का अपना परिचय देना

बोलै लागल मैं अहीर गउरा कै

आरे जेकर लोरिक रे बघेला नांव
गउरै ओतन मोर गउरा गोतन हौ
आरे गउरा जनम भयल रे बुनियाद
टिकई बुन क सिरजल बाड़ीं
आरे खोइलन कोखिया ले लैं रे अवतार
एक बाघिन दू दू डंवरू जनमल
आरे दूनो जनमल दइब कर लाल
कइली बियाह मोर थाना अगोरीं
आरे गोपी कै डंड़िया ले लैं रे फनवाय
तवन राजा मोलागत अगोरिया
हमार डाँड़ी दे लै रे रोकवाय
उहै पयंड़ा हम जोहत बाड़ीं
आरे नाहीं भेटिया भयल रे दीदार
तब भंटवा बड़े जोर से तड़कै
आरे बाबू मनब्या बात हमार
की त लेल्या बिटिया खतरी कैं
आरे जेकर सोना रे सोहागिन नांव
की बिटिया सिवचन कै लैं ल्या
आरे जेकर अनुपइया परल हौ नांव
सोना चानी रे गाड़िन लदवाय देईं
छोड़ि दा बाबू डंड़िया मंजरी कैं
भाग जा कनउज की रे बजार
अब जिनिगी ना बची खेतऽऽऽवा परऽऽऽऽ
आरे मारि नाईब जिनिगिया तोहाऽऽऽऽर
एतनी बात बीर लोरिक सुनि के आरे जिरउल पै
जरि जरि के मऽऽऽइऽऽऽऽया ऊ भसमवा
हउवै होइ रे जाऽऽऽऽत [८०]

लोरिक का गोजे का बोझ लादना

हाँऽऽऽऽआऽऽऽऽ
आरे लोरिक जरि के भसम होई जाय
तब बोलत जब रे भंटवा जं
आरे बाबू माना बात हमार
जवने कै भूखल हउवा तूं जिरउल पै

उहै हम तोहके बलको देईं रे लदवाय
तब मैं बोलत बा अहीर गउरा कं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
हमरे जे आगे क रूवइया नइखं
कोई पाछे क गवइया नाहीं बाय
हमरे कोई जीयत ना गउरा
आरे थाना कनउज की बलको रे बजार
इ डंड़िया हम ना ले जइबैं
आरे छोड़ि के जिरउल पर चलि जाय
हमरे टूटही मड़इया गढ़ गउरा में
आरे बाबू मनब्या बात हमार
तवन देंवका मोर मड़इया खइलं
आरे हम धन क भूखल नाहीं बाय
उहै केरुवा गोजवा फूटल हउवैं
आरे सरजू के बलको रे किनार
एक बोझ गोजवा तू हम्मै देइ देब्या
ले ले जाबै कनउज की बलको रे बजं
मड़ई मैं छइबै गढ़ गउरा मैं
एक ठे बुढ़िया माई जियत बाड़ैं
ओही के मान के हम खियइबै
बलको हम धन लेबै रे बिताय
एतनी बात जब भंटवा सूनै
आरे भाट उछरै अन्त: काल
मरले क काम तनिकौ नाहीं बाड़ै
सहजे में निकल जाला कमवाँ रे हमार
बबुवा तू एक बोझ गोजवा लेला
भंटवा भागल नदी पर पहुँचं
गोजवा मो तोर जब केरुवा कै
मोट मोट गोजवा बान्हति बाड़ं
आरे सुन्दर बोझा घलैं लैं बनाय
उहवाँ से भाँट बलको रे ललकारैं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
आवा आपन बोझवा तूं गउरा लेके भागं
आरे लोरिक ललकारति बलको बाय

तनी एकन भयवा उठवलै आवा
कुछ हमरौ जौ होई रे उपकार
भंटवा जो बान्हि कै पगरिया कपारे पर
आपन बोझवै ले लैं रे उठंग
लेहले बोझवा जौ डाँड़ी के पजरे
बलको बबुआ गयल हो निअराय
लो आके मैं डंड़िया के पजरे पटकि दे लैं
लोरिकै के बलको घलैं लैं ललकार
ले ला बबुआ तूं गोजा बोझवा कै
लेके बलको कनउज की जाब्या रे बजार

बोझा समेत भांट को लोरिक द्वारा ढकेला जाना तथा भांट का भाग खड़ा होना

तब ते लोरिक हाली हाली पगरी बान्हैं
बोझवा क पजरे गयल रे निअराय
एह्र एक अलंगे से भांट उठावै
एक अलंगे से लोरिक ताने लागं
छतिया पर बोझवा बलको रे लेइ अइलैं
भइल मोर ढकेली ढकेला जब खेतवा पं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे लोरिक दू दू बिस्सा रे ढकेलले जांय
हांफे लगल भंटवा जब खेतवा पंग
गोंजा फेंकि के बलको चलै रे पराय
तब तैं डपटत भांट बाड़ै जिरउल कैं
आरे बाबू मनब्या बाति हमार
जल्दी में गोंजवा तू लेइ लेब्या
बलको काटि लेबै माथ तोहार
एतनी बात जब लोरिक सुनलैं
एदवां जौ बाबू हम्मैं ए उठाय द्या
एदवां ले के कनउज की जाबें रे बजार
ओदवाँ जौ भंटवा पहुँचि गयल पजरे
आरे बलको गोजवइं में रे लपट जाय
उठावै दूनो लगलैं गोजा
छतिया पर लोरिक लिआय के रोक देलैं
घंटन बलको भाँट के बीच गइलैं
आरे तब भंटवा गयल रे बेकलाय

गोंजवा मै छोड़ि के लमहरे हूटि गइलैं
डाँकि कै बलको पजरे गयल रे निअराय
सुना मों अहीर तूं गढ़ गउरा कं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
अबहीं से डंड़िया तूं मंजरी कै छोड़ि द्या
भागि जा तूं कनउज की रे बजार
अब नाहीं छोड़ब जिनिगी जिरउल पर
मारि जाइब बलको जिनिगिया तोहार
एतनी बात जब लोरिक सुनलैं
आरे बलको जरि के भसम होइ जाय

गोंजे से लोरिक द्वारा भांट की पिटाई-भांट की पसली और दांत टूटना

टप दे लोरिक लटक मोर गइलैं
गोंजवा बोझवा से खींचि बलको लेला
आरे घुमा के गोंजा जब भंटवा के मरलैं
भंटवा गिरि गयल भहराय
हनि के एंड़ा पर पजरी में मरलैं;
भंटवा के टूटि गइलैं पजरिया के हाड़
तबले मंजरी डंड़िया से निकल देला
आई आगे मोर भइल तइयार
सुनि लेबा दुलहा जौ सुखनन्दन
आरे बलको सेंहूर के रे बहुआर
आजु भंटवा के मारि तू नइबा
गउरा तोर होई रे पुजमान
बड़ा जुलुम मइया गढ़ गउरा में
आरे पूजा खाई सांझ बिहान
एहर मंजरी लोरिक से बतियावै
तबले भंटवा घात पइबै कइलस
उठि के मो चललैं रे पराय

भांट को भागते हुए देख कर लोगों का हंसना

भागल भंटवा जब जिरउल से
पयंड़े में सब लोग हंसत हउवै
एहर दतवां मरले हउवैं टूटि गयल

मुंहे से जो बहत रे रूदिलवा बाय
अउर लोग बड़ा जोर हंसत हउवै
मंजन इहै बीडा जो खइले हौ
मुंह से चुवत हौ मघइया कली पान
सब लोग अन्तह काल हंसति हउवैं
आरे भाँट भागल भंटउल की जालैं रे बजार ऽऽऽऽ
गउवां के गोइड़ें पहुँचि गइलें
भंटना के खबरे जब गइल रे बुझं
सुनिला भाँट बलको हइहै भागल आवै
जब भाँटिन भइलीं रे डेवढ़ियें पर ठाढ़
एहर जब भंटवा नीचे में मउर बलको हौ कइले
आरे भागल बाखरी में हउवै जात
जाके भाँटिन हंसत बलको खड़ो हौं
आरे दुलहा मनब्या बाति हमार
आरे कइसे तोर जिनिगिया जिरउली पर बाचं
कइसे भागि के भटउल की अइल्या हो बजार
तब भंटवा धीरे धीरे बोलै
आरे बड़ा धंगी बा अहीर गउरा कैं
आरे जेकर बलको लोरिक रे बघेला नाँव
एइसन बात मोसे बतिआवै
बतिआवत बतिआवत गोपीं
आरे बलको कुछ रे ठइन होइ जाय
अइसन बात तनी मुंह से निकसल
मुहवाँ के हूँचा देलैं रे उवंग
तबले लोरिक देखा गोजा बोझवा से
अइसन गोजा जिरउल पर' मरलैं
आरे हम गिर गइलीं धरतिया में भहराय
हनि के एंड़ा देखा दंतवा पर मरले हौ
आरे मोर टूटि गइलैं दूनी दंतवा अंगनवा कै
आरे ऊ त मंजरी न पहुँचल होत रे
त चलि जातैं ए मोरि र ऽऽऽ नियाँ
अ जिनिगिया ना रे हमा ऽऽऽऽ रं [८१]

धावन को भेज कर भांट के बारे में मोलागत का पता लगवाना

हाँ ऽऽऽ हाँ ऽऽऽऽ

राम ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ हो ऽ ऽ ऽ राम
ओहर भाँट भागल भंटउल में गइलैं
एहर राजा मोलागत बगल ले घबड़ाय
धावन जौ धावन बलको रे गोहरावैं
धावन बलको भइलैं गयल रे ठाढ़
तनी भंटवा कइ पता रे लगाय ल्या
का करत हौ जिरउल की रे खेतार
धावन मोर अगोरियै रे छोड़ले
आरे भागल जिरउल गइलै रे निअराय
जब जिरउल पर धावन पहुँचं
आरे डांड़ी पजरे गयल रे निअराय
बइठल बाड़ैं अहीर मोर गढ़ गउरा के
आरे जेकर लोरिक रे बघेला नांव
देखि के धावन बलको घबड़इलैं
आरे बलको पजरे गयल रे निअराय
जाइके में सिर जौ हउवै लटकवले
आरे लोरिक जै जै मचवले कार
तूं के भइया हउवा रे जिरउल पं
आपन भेदवा तूं देब्या रे बताय
धीरे धीरे धावन जिरउली पर बोलैं
आरे बाबू मनब्या बात हमार
हम तइ राजा न मोलागत कै धावन
आयल बाड़ी पतवा लगावै जिरउल की रे खेतार
एक ठे बातै बाबू पूछत बाड़ीं
आरे हमके तनी एकन देब्या हो बताय
एक्कौ भांट इहां बलको आयल रहलैं
आरे जेकर रंपा परल हौ नाव
बोलत हौ अहीर मोर गढ़ गउरा कैं
आरे धावन मनब्या बात हमार
एक ठे भांट आयल रहल रे भंटइल कै
आरे जेकर रंपा परल हौ नांव
नेग जोग जिरउल से ले के
अपने भाग गइलैं भंटउल की बलको रे बजार
एतनी बात जब धावन सूनं

आरे बलको अगोरियै की जालैं रे बजार
लागल बा कचहरी राजा रे मोलागत
आरे बलको गहुअर लगलैं दरबार
तबले धावन फटके पर पहुँचं
आरे बलको मोलागत ले लैं रे बोलाय
कहा हाल धावन जब जिरउल कै

धावन का आकर सूचना देना कि भांट घूस लेकर भाग गया

आरे बाबू मनब्या बात हमार
बड़ा उहाँ खेला बाबू भइलं
आरे ऊत घूस लेइ के भागल
बड़ा घूसहा जमाना आयल बाय
आरे तब धीरे धीरे धावन बोलै
आरे बाबू मनब्या बात हमार
सोना चानी भंटवा ले के
अपने भंटउल की गइलैं रे बजार
कोई नाहि बाबू उहां लड़ति बाड़ैं
आरे तब राजा मोलागत जरि के भसम होइ जाय
मुनुसी अ देवान से मैं पूछन लागैं
आरे ज्वानो माना बाति हमार
अब कइसे डांड़ी मिली रे मंजरी कं
आरे एक ऊपइया जो दे बै रे बताय
तब मुन्सी मोर देवानइ बोलं
बाबू मोर मनबा बाति हमार

मदमत्त हाथी भंवरानन्द का छोड़ा जाना

भंवरानंद हाथा छोड़ि देबा
आरे जिरउल की जाई रे खेतार
मारि नाई बाबू अहीर गउरा कें
आरे डांडी लूटि लेबा जो ढोल बजाय
बरन भाठी के दारू बलको देखं
अगोरिया में हइहैं देलैं रे जोतवाय
अफिम कै गोला हाथ के खियाय के
आरे बलको नसा में देलैं चढ़ाय

हथवा क सीकड़ रे छटकावैं
हथवा मैं घललैं जिरउल की रे खेतार
केतने कचिया केतने पकिया
भींटा खन खन करैं लैं मयदान
परल बा नजरिया बीर लोरिक कं
मंजरी के डांड़ी के पजरै गइलैं रे निअराय
सुनि लेबू गोपिया मैं लड़िकवन्हीं जब
आरे रानी मनब्यु बात हमार
एक ठे हथिया अब झूमति आवैं
जलदी मो भेदवा जो देबी रे बताय
तबले गोपी डंड़िया क ओहार मारि देलं
आरे गोपी ताकत हव ओसरिया लगाय
देखलस भवरानन्द बलको हाथं
आरे मंजरी मोरि गइल रे पगलाय
धीरे धीरे लोरिक के समुझावै
आरे दुलहा मनब्या बात हमार
ई त भवरानन्द हाथा मातल हउवैं
अब नाहीं बची रे जिनिगिया तोहार

भवरानन्द हाथी का लोरिक को सूंड़ में लपेट कर धरती पर पटक देना

तब लै हथवा चोकरल कै पहुँचै
आरे डांड़ी के पजरे गयल रे निअराय
जाइके बीर लोरिक के सूंड़े में लपेटि के
आरे धरती मोर देलैं रे धराय
चारउ गोड़ छाती पर रखि के
हथवा हुमुचति वलको बं

बनसत्ती और दुर्गा का हाथी का पांव पकड़ लेना तथा लोरिक की सहायता करना

आरे बायें त लगति बा बनसतिया मो
आरे दहीने लगल बा दुरुगा माइ
चारो गोडवाँ जौ हथवा कै धइलैं
हाथा हुमुचत रे बेकल होइ जाय
सूतल बाड़ैं अहीर मोर गढ़ गउरा कं
आरे तबले हाथा छाती पर लें हउवै कूदि जात

धुमा देहलस मुंहवा जौ गढ़ सोहवल कें
आरे जेकर नसा रे उतर हउवै जात
सोचत मनवा हथवा में जालं
आरे थाना देखा अगोरिया की रे बजार
चल के खबर किलवा में रजवा देईं
आरे बलको मरि गयल रे मुदइया तोहार
कुछ दूर हथवा हटल हइयैं
आरे तबले लोरिक मों भयल रे तइयार
आरे बड़े जोर से ललकारत हौ खेते पर
काहे के भागल जाले रे हऽऽऽथऽऽऽवा
आरे अगोरिया की रे बाजाऽऽऽऽर [८२]

मोलागत के पास हाथी का जाकर लोरिक के उठ खड़े होने की बात बताना

हांऽऽऽऽहांऽऽऽऽराम
हाथा भागल अगोरियै में गइलैं
आरे जब अगोरी में हथवा गइलैं
मारे खुसिहाली में राजा मोलागत
हाथा के पजरे गयल बा निअराय
कहा हाल हाथा, कहा हाल हाथा जब जिरउल के
आरे तब ठांवै देला रे जबाब
बाबू हम घंटन दबवले रहलीं
आरे तबले सूतल बलको बाय
सोचलीं कि मर गयल अहीर गउरा कं
आरे ऊहै भागल अगोरी की अइली रे बजार
देबै खबरिया जब राजा कै
आरे किला डंड़िया दीहैं रे ओलियाय
आरे तबले उठि के बड़े जोर से बबुआ
जिरउली पर ललरे करलैं
आरे धइके हिलै लागल रे मोरि मइया टगंरियौ रे हऽऽऽमं
आरे एहर बलको हिम्मत मोरि रे मइया
जिरउल पर छुटि रे गइलैं ... ...
.... पहुँचि रे गईं
आरे कहलीं जल्दी भंवरानन्द हाथा के
कगदवा हम्मैं दइ रे देब्या

आरे नाहीं हमार सेवक कै कटि जाला रे
भइया खेतवा न मयरे दा ऽऽऽऽ न
आरे ब्रह्मा मारे डरन कगदवा देइ हो देलैं
आरे दुरुगा ले कै भागल आवत बा मइया खेतवा मयरे दं

दारू तथा अफीम के नसे में भवंरानन्द हाथी का फिर जिरउल जाना

आरे एहर लेके कगदवा के बइठि रे गइलीं
आरे ओहर बारह भट्ठीक दरुरवा बाड़ै पिअवले
अफीम गोलवा हथवा के देहलस रे चिख
आरे हथवा क सींकड़ रे मोरि मइया
अगोरियो ले छट रे कवलैं
हाथा भागल जात बाड़ैं मोर जिरउली की रे बजार
आरे एहर लोरिक डंड़िया के पंजरवा
मंजरी के पहुँचि रे गइलैं
आरे गोपी एदवां हथिया फिर बउराइल रे हउवै
आरे मजरी मारि के ओहरवा हथवा के देखत रे हउवै
आरे तब कहै उहै ए समियां, हथवा फिर लपटत आवत रे हउवै
आरे एहरवैं हथवा पजरे गयल हउवैं नियरे रं
आरे जाइके सूंड़वा में हथवा जो लोरिक के ना पकड़ि हो लेला
आरे देहलसि बलको धरतियउ रे दबाय
चारो टपिया छतिया पर रखि रे देला
आरे हथवा मैं हुमुचत हउवै जो खेतवा मयरे दान
आरे बांये बनवा न सतिया गोड़वा ना धइले रे हउवैं
आरे दहीने धइके बइठल बा दुरुगवो बलको रे माइ
तब तै हथवा छतिया ले अहीरे के कूदि रे गइलै
आरे तब लें एहर लोरिक टप दे भयल बाड़ें तइरे यार
दुरुगा लोरिक के हउवै ललरे करलें

लोरिक का हाथी पर प्रहार करना और हाथी का धराशायी होना

आरे बचवा एदवौं भंवरानन्द हथवा अगोरिया के भागि रे जाला
फिन घात बइठी नाहीं बेटवा जिरउली की रे खेतं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे एहर लोरक मैं बायें अपने ओडनवा दबले रे हउवैं
दहीने दबलस बीजुलिया न बलको रे खांड़
आरे जाइ के अगवां से सूंड़वा ए यारो हथवा कै धइ हो ले ला

आरे दुरुगा कर दे कगदवा हथबा के फारि रे देला
आरे एहर लोरिक क घुमि गइलैं रे मइया
लोरिक कै बीजुलिया ना बलको रे खांड़
खंड़िया धरतिया में हथवा कै गिरि हो गइलैं
आरे पोंकरत बाड़ैं रे माई जिरउल की रे खेतं
आरे जाइ के लगि गइल ए यारो खबरिया रे हो किलवा में
आरे मोलागत धावन धावय मइया घलति बाड़ैं गोहरे रं ऽ ऽ ऽ
आरे धावन जाइके बगल में राजवा के खड़ा रे हउवें
आरे धावन तनीं चलि जाव्य हो भइया जिरउली की बलको खेतं
आरे ना जानीं कउनो कारन से हथवा जिरउल पर चींघरत रे हउवैं
आरे धावन भागल मइया जिरउली पर बलको रे गइलैं
हथवा ओइसे पहड़वा मतिन बलको लोटत रे हउवै
आरे धावन ओहि ठिन से भागि के जात बाड़ैं
मइया अगोरियो की रे बजं
आरे जाइके राजा मोलागत के बबुआ कहचरी में कहि रे दे लैं
आरे जिरउल पर मरि गयल ए बाबू हथवौ रे तोहं

करनी (हथनी) का बदला लेने जाना

आरे एहर राजा मोलागत कचहरी मोर छोड़ि रे दे लैं
आरे जाइ के करनी हथिया आपन छट रे कवलैं
करनी से कहलै हउवें भंवरानन्द मरि गयल ए करना सेन्हुरवा रे तोहं ऽ
आरे जाइके मारि घललीं गोपी अहीर रे गउरा कैं
आरे करनी भागल जात बाय रे मइया जिरउली की रे खेतं ऽ ऽ ऽ
आरे लोरिक पजरे जायके डंड़िया खड़ा रे हउवैं
आरे एहर मारि के ओहरवा जो मंजरी न देखै रे लागल
आरे कहै दुलहा इ आवति हउवै हथिया बलको रे करनी
अपने आइके समिया जौ डंड़िया में बइठि रे जाब्या
आरे ओही जनम में दूनो जने बहिन लागत रहलीं
बलको जनम भयल रहल हमार
एक्को नंतवा बहिनिया क परल रे हौं
आरे हम करनी के समिया देईं बलको समुरे झं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तबले हाथी पजरे डांड़ी के गयल हउवै निअरेरं
मंजरी नीकल के मै डंड़िया से खड़ी रे हउवै

मंजरी और हथिनी पूर्व जन्म की बहनें थी अतः मंजरी पर उसका क्रोध

आरे करनिया बहिन जौं ओहि जनम में एकै जनमवा भयल रे रहलैं
पदवन में बहिन बलको लगत रहलू न रे हमं
आरे हमार एइसन ए बहिनी कमइया बानी रे गइनीं
मानुख जनम जो देसवैं भयल रे हमार
तोहरी कमइया बलको बिगड रे गइलीं
आरे हथिया क जनम करनी जो भयल रे तोहं
आरे समियां क करिना डंड़िया जौं छुइ हो देबूं
तोहके कुमे ऽ ए सनी नरक हउवै होइ रे गं
आरे तब त करनी अइसन रूवइया मोर
जिरउल पर रूवै रे लागं
आरे मांजर तूं अइसन धोखवन क मरिया समिया तोहार रे कइलैं
आरे भल मरवाय देहल ए मंजरा सेन्हुरवौ ना रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बलको एहर धीरे धीरे गोपिया हथिया के हउवै घुमवलें
आरे हाथी जात बाड़ैं ऐ रामा अगोरियौ की रे बाजं ऽ ऽ ऽ ऽ

दुर्गा के कहने पर लोरिक द्वारा करिनी का वध

आरे दुरुगा धीरे धीरे लोरिक के जिरउली पर बलको समुरेझावै ऽ ऽ ऽ ऽ
एदवा जौ करनी जालैं फेर घूमि के आइ रे बचवा जिरउली की बलको खेतं
आरे बलको काटि लेबा ए बचवा अ सूंड़वा रे करनी कैं
ओर फिर नाहीं आई करै ए ललवा आरे भेंटियौ न मुलरे कं ऽ ऽ ऽ
आरे लोरिक अपने बगल में ओड़नवा अ बीजुलिया क बन्हले रे हउवै
हथिया के पजरे ए मोरि मइया गयल हउवै निअरे रं ऽ ऽ ऽ
आरे बलको अगवां से पकड़ लेला से ए यारो सूंड़वा रे करनी कं
आरे उपरा के लेहलस ए सामी हथिया सूंड़वै ना रे उठाय
आरे दुरुगा टापि देना रे देखा सूंड़वा ना हउवै दबउले
एहर लोरिक काटि लेहलस रे मइया अ सूंड़वो ललरे कार
आरे हथिया भागल भागल ए यारो अगोरिया में बलको रे गईं
आरे राजा मोलागत रे मोरि मइया गयल हउवै घबरे ऽ ऽ ऽ रं
आरे अब ना मिली डांड़ी मंजरी कै
हइहै डूबि जाला रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
ओ डोंगवो ना रे हमा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र [८३]

मंजरी की डोली न मिलने पर मोलागत चिन्तित

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं
सुना हाल अगवां कै ऽ ऽ ऽ ऽ
तब राजा मोलागत कचहरी में ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बड़ा नीचे मऊर कइके बइठल
आरे मुनसी देवान पूछैं राजा मोलागत से
ए बाबू मउर लटकाय के बइठल्या
बड़ा मनवां भयल रे उदास
तब राजा बमरी क सारा धन सेवटले जाला
मंजरी गोपी सेंवटली न जाय
अब कवन उपाय करीं हम ऽ ऽ ऽ ऽ कवन उपाय लगाईं
आरे कि मिल जाय डांड़ी मंजरी कै
मुनसी देवान कहलैं बाबू बिना लडइया से डांडी ना मिली
आरे ना एको लगी उपाय
लिखि दा पाती थाना अगोरीं
आरे पाती बिजयपुर की जाकै गिरै बजार
आरे निरम्मल के बलवाय ल्या भयने थाना अगोरी में
उहै अम्मर होय के जनमल खइले अमर कर भात
पांच बान ब्रह्मा मोर दे लें आरे बान टरै जोग कै नाय
एक बान के मरले चउदह कोस लगै बनडढ़वा
चउदह कोस में सुलुगै रूख परास

मोलागत का भानजे निर्मल के पास पत्र लिखना और लोरिक से लड़ने के लिए कहना

जब निरम्मल अइहैं अगोरी
आरे जीतल बाजी होई तोहार
एतनी बात मोर सुनलैं मोलागत
टप दे कलमैं मैं ले लैं उठाय
ले के कागद लीखै लगैंलैं
आरे बारहपाल गढ़ गउरा
तिरपन कनउज की लिखलैं बजार
तेली लिखै तमोली, आरे जतियन कै भुजा रे कलवार
जतियन कै रघुबंस लिखत हौ
आरे जेकर निगी रे झुलै तलवार

आरे अन खाया भयने बलको बिजैपुर
पानी आइके पीया रे अगोरी की बजार
चढ़ल हृ मुदइया गढ़ गउरा कैं
आरे हइहैं लूटत बाड़ें रे ललवा अकिलवो ना रे हमं
आरे बलको लिखि के मोर पतिया धवनवा के देइ हो देलैं
आरे धावन सांड़िनी पर रे मइया भयल हउवैं असरे वं
आरे हइहै हांकि के सड़िनिया बिजैपुर के भागल रे जाला
आरे बिजैंपुर की रे मइया गइलें पवनवौं रे दुअं ऽऽऽऽ
आरे जाके दुआरी पर धवनवा बिजइयापुर जौ उतर रे गइलैं
आरे तबले निरम्मल कै मतारी ए मोरि मइया दुआरिया पर खड़ी रे हउवै
आरे कवने कारन ए धवनवां आरे बिजइयापुर आयल रे हउवै
आरे ई त आपन भेदवो रे मोरि मइया आ देबी बलको ना रे बतं
आरे काहे बदे ए धवनवां एतनी तूं दउरत रे हउवा
आरे तब तै निकलि के पतिया धवनवां हउवे थम्हवले
आरे हइहै बांचति बाड़े रे मइया मतरिया निरमले कै
आरे बलको रूवति बाड़ैं रनिया अपने पवनवौं ना रे दुअं ऽऽऽ
आरे एहर बज्जर परो रे मइया बीरना के अगोरिया में
आरे एक्कै बेटवा मै मइया निरमल मोर जनमल रे हउवै
आरे अगोरी में जाले मारि जालैं रे मोरि मइया बेटउवौ रे हमं
आरे मारि जाई बेटवा अगोरी में बिजैपुर में
ऊपर जाई रे ध ऽऽऽ वनवां अ सोरिया ना रे हमा ऽऽऽ र [८४]

निर्मल का गौना करा कर लौटना तथा
उसकी भयभीत पत्नी का लोरिकके बारे में बताना

हां ऽऽऽऽ हां ऽऽऽऽ हां
राम ऽऽऽऽ राम ऽऽऽऽ राम
आरे तब धावनवां पूछत बाड़ैं कुनुपी से
एक बतिया बहिन हम्मैं बताय द्या
आरे चिन्ता बढ़ल रे बदन में बाय कहवां हउवै हमके बताय द्या
आरे कहवाँ निरमल गयल बाड़ैं
एकर भेद तूं हमके बताय द्या
चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
तब बोलै कुनुपी बिजैपुर आरे धावन मनब्या बात हमार

गयल हउवैं गवना करावै लोह गाजर
आरे नाहीं बेटवा आयल रे हमार
एतनी बात जब धावन सुनि कैं
टप देना सड़िनी भयल रे असवार
लेके सड़िनिया लोह गांजर कै
आरे धावन मोर करैं लैं पयान
नौ नौ गंड़क तोरन लागें
आरे तेरह भीउली कै तौरैं लैं पहाड़
ओहर से निरम्मल गवना करवले लोहगाजड़ ले लवटल हउवैं
पंयड़े में हो गइल रे मइया बलको भेंटिया औ मुला रे कं
आरे एहर धावनै मो सिरिया निरमलै कै लटरेकवलें
आरे जै जै जै मोर निरमला धावन के बोलै रे लागें
आरे धावन कहवां से बबुआ सड़िनिया मोर कसवले रे हउवा
आरे धावन कहवां के बबुआ औ कइले हउरे ना रे पयान
आरे कइसे हमरे मम्मा धवनवां मोलागत बलको अगोरी में हउवैं
आरे कइसे हमरे नानी हउवै अगोरियौ की रे बजं
आरे तबले निकाल मोर पतिया एहर धवनवा मोर हउवै थम्हवले
आरे एहर बारह रे मइया पलिया गउरा लिखल रे हउवै
आरे तिरपन कनउज के रे बबुवा लिखल बाड़े ना रे बजं
आरे एहर तेलिया मोर पाती में औ तमोलिया ना लीखल रे हउवैं
आरे संग में भूजवै हौ मइया लिखल बाड़ें कलरे वार
आरे एहर जतिया क मइया जदुबंसी बलको लीखल रे हउवैं
आरे गुपुतीनंदन रे मोरि मइया बसल बाड़ें ना रे गुवं
आरे बलको अन खाया ए भयने अ गउवां बलको बीजैपुर
आरे पानी आके पीये रे बचवा अगोरियौ की रे ब जं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे अइसन मुदई ए ललवा आ गउरा से आयल रे हउवैं
आरे हइहै लूट जालै बचवा अगोरियौ कै रे बजं
आरे एहर निरमल पतिया आ पवनी धोड़िया पर बाचत रे हउवै
आरे एहर डंड़िया मो गोपी का पजरवा रे बलको रखल
आरे गोपी सूतन बाड़ें डांड़ी में कनवौं रे ओहं
आरे अपने डांड़ी के ओहरवा अ रनिया मोर मारि हो देला
आरे बलको अंगुरी कै सनवा नीरमल क हउवै बुझवले
आरे हइहैं डंड़िया के पंजरे गयल हउवैं नियरे रं
आरे सामी कइसन पतिया औ पइंड़िया में बांचत रे हउवा

आरे हम बूतवैं ए राम जी,
आरे हमरे बूतवैं ए राम जी अ रहल हउवैं ना रे जं
आरे कुछ कुछ पतिया में समियां अ गउवां गउरा सुनले रे बाड़ी
आरे डंड़िया में हिल्लत का बलमुवा औ टंगरियौ ना रे हमं
आरे हम जानी ला आ मरम अहोरे कै कोटिउ नाहीं बंची रे
मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया अ जिनिगिया ना रे तों ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [८५]

अगोरी में पति के न बचने की निर्मल की पत्नी की आशंका

हाँ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आँ
तब गोपी लगल समुझावैं, हाथे क पाती रानी मांग के
अ डांडी में लगल बांचै
जेतने पतिया बाचै ओतने झिरकलै नयन से आँस
रुवत हउवै गोपी जब डंड़िया में
हमार नाहकि रे मोरि मइया गवनवा बलको कररेवल्या
आरे नाहक लेके चलति बाड़्या ए समिया अ बिजइयो पुर की बजा ऽ र
आरे बलको अबहीं से मोर डड़िया पयंड़वै ले लवरेटावा
आरे फिन हमरे नइहरवैं रे मोर समिया मोर देबै बलको पहुँरे चा ऽ ऽ य
आरे जब रोई रोई मोर गोपिया आ बतिया मोर सामुरेझावैं
आरे एक समैं में ए समियाँ अहीरवा हो गउरा कै
आरे लोहा गजरे में अपने मम्मवा के गोहरिया करै रे गइलैं
आरे तबकैं देखल बाड़ैं ए समिया अ सुरुतियौ ना रे हमार
आरे एहरवैं जवने दिनवा ए समिया अगोरिया में तूं धन बलको रे जाब्या
आरे नाहीं बची रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया अ जिनिगियौ ना रे हमा ऽ ऽ ऽ र
आरे एहर एइसन रूवइया अ गोपिया बलको रूवत रे हउवैं
आरे ए संइया मैं जानत बाड़ी देखब्या अ मरमियाँ हो अहीरे कै
आरे जेकरे संगे सोरह सै ए समियां आ गइलि रहलीं कनरे टाइन
आरे सोरह सै गयल रहलैं रे मोरि मइया अब मरियौ ना रे मसा ऽ ऽ न
आरे एहर बांये बनवा सतिया लोह गजड़े में बलको टिकल रे रहल
आरे दहीने टीकल रहल रे मइया दुरुगवै ना बलको रे मं
आरे तवन भल भल मतारी समिया अ जंयड़वा बलको मारल रे गइलैं
आरे केतने गोपिया मोर होइ गयलीं ए समिया अचउकवा पर बलको रे रं
आरे जवने दिन सनमुख जो अहीरे के परिजाब्या
अ कोटिउ न बची रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ ऽ या
अ जिनिगिया ना रे तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [८६]

निर्मल का पत्नी को डांटना

हाँ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब तरकल राजा निरम्मल
आरे बजर परो गोपी तोहकै, परौ बजर कै घानि
एइसन बात बतियावत बाड़ , मारे मोरे बूते रे रहल नाहीं जात
अम्मर होइ के जनमल बाड़ीं हम धन खइलीं रे अमर कर भात
पाँच बान ब्रह्मा दे लैं बनवा जोग कै नाय
एक बान के मरले चौदह कोस लगै बनडढ़वा सुलगन लागै रुख परास
सुरसरि पानी खलबल खलबल
आरे जेमन उलटन लगें सोइंस घरियार
एक लोरिक कै कवन चलावै आरे लोरिक मारि नाइब दुइ चारि
एतनी बात जब गोपी सुनलं
आरे तब त मारि के धमकवा
मोरे डंड़िया में रूवत रे हुउवै
आरे समियाँ जानलि रे मोरि मइया मरमिया रे अहीरे कै
आरे एक समय में ए समियाँ सोहवलो में चढ़ि रे गइलैं
आरे राजा बमरी कै सत सत बेटउवा बलको जनमल रे रहलैं
आरे सातो जनमलि रे समियाँ दइब कर बलको रहलै रे लं
आरे कउनो सिंहिया रे मइया सेरवा मोर मारति रे रहलैं
आरे कउनो बघवै रे मइया मारति रहलै ना रे हुड़ं
आरे तब ए अइसन अमरवा खेतवा पर मारल रे गइलैं
आरे कोटिउ ना बचि रे मोरि मइया आरे जिनिगियौ ना रे तो हुं ऽ ऽ
आरे सइयाँ अबहीं से बलको बतिया अ पयंड़वौ में हमार जो मानि रे जात्या
आरे अपने लेके डाँड़ी चला रे मइया अ बिजइयै ना पुर की बजं ऽ ऽ ऽ
आरे दू चार दस दिन आपने एक समियाँ औ किलवा में बलको रे रहल्या
आरे तब तै लड़ै जाबै रे पपिया अगोरियौ की रे बाजं
आरे एहर सामी हमके भरोसवा तनिकौ पंयड़िया में नाहिं रे हउवै
आरे बड़े जोर से निरम्मर अ डंड़िया पर बालै रे लागल
आरे काहे बदे गईल बाड़ी रे गोपिया पयंड़िये में घबड़े रं

निर्मल की पत्नी का रुदन व पति को लेकर सती होने की इच्छा प्रकट करना

आरे चला तोहार डाँड़ी ए रनिया बिजइया पुर बइरे ठाईं
आरे हम जाबै रे रनिया अगोरियौ की रे बजं

आरे तब त एइसन रूवइया अ डंड़िया में रूवै रे लागल
आरे हमरे गवने क चूनरी ए समियाँ अ धूमिलवो जो नाहीं रे भइलीं
आरे हइहै मरन क पारी रे मोर मइया अ गयल हउवै बलको नियरे रं
आरे समियां हम बेरिया की बेरियां रे मइया
अ डंड़िया में बरजति रे बाड़ी
आरे नाहीं मानति बाड़ा ए समियां कहनवौ नारे हमं
आरे अपने थानवा ए समिया अगोरिया में जाति रे हउवा
आरे हमरो ड़ांड़ी ले ले चला अब रे मइया अगोरियौ की रे बजं
आ कउनो नीकै आ गति खेते पर होई
तोके लेके रे बलमुवा अ सतिया बलको होइ रे जा ऽ ऽ ऽ ब [८७]

कहारों का बिजयपुर के बजाय अगोरी में डोली ले जाना

आ ऽ ऽ ऽ आ ऽ ऽ ऽ ऽ
तब त निरम्मल समुझावै कहारन के
डंड़िया गोपिया क तोहन लोगन लेल्या
आरे ले के बिजैपुर की जाब्या रे बजार
हम धन थनवा अगोरियै जावैं
आरे कहि के पवनी पर भयल रे असवार
एहर अपने घोडिया हंकलं
आरे गोपी कहरन से जल्दी जल्दी बोलति बाय
सुनिला कहार तनी मोर बतिया जौ
आरे दू दू न मोहर सोनवन कै दे वै
तनो एकन मानि जाबा बात हमार
दुलहा मोर जों आगे आगे जालैं
आरे पीछे डंड़िया ले ले चला मोर अगोरी की रे बजार
बबुआ ईत बतिया पयंड़ियै में माना
एहर मो कहारैं ले लैं पीछियाय
अंगवा जे अगवा चललैं निरम्मल
अगवां जे अगवां निरम्मल चल लैं (पुनरावृत्ति)
पछवा से डंड़िया रेवरले जाय
ऊड़ल घोडिया जालै देखा, ऊड़ल घोड़िया जातै देखा (पुनरावृत्ति)
एहर मोर घोड़ी अगोरिया गइल रे निअराय
जाके घोड़िया फटिकवै पर चूवं
आरे एहर उतर गइलैं घोड़िया से
हलल फटके हउवैं जात

लागल बा कचहरी मै राजा रे मोलागत कै
गहुवर झूमि के लगल दरबार
बायें बगल में मुनसी बइठैं
आरे दहीने कायथ बइठैं लैं देवान
जाके सिरवा झुकावै लगलैं
आरे बलको जै जै मचावैं कार
एहर मोलागत जो बोलन लागैं
आरे भैने मनब्या बात हमार
एक बात तूं हम्मै बताय द्या
आरे बडी अनभो आईल बाय
धीरे धीरे बलको निरम्मल बोलैं
आरे मम्मा मनब्या बात हमार
कवन अनभो आइल हउवैं
आरे काहे पतिया दे ला रे पठवाय
आरे अनभो कै बात बतावा

मोलागत का निर्मल से मंजरी की डांडो लूटने के लिए कहना

आरे तब मोलागत घलैं लैं समुझाय
एक ठे राजा महर अगोरियैं
आरे जे के करिना ले लैं रे अवतार
ओकरे जनम में सवा घरी सोना चानी बरसल
हम सउरी में धागा दे लैं रे बन्हवाय
तवन ए माई राजा ऽ ऽ ऽ आरे तवन राजा कइलैं दगन कै मार
चोरियै चोरिया मोर भांवर रे घुमावै
आरे चोरी चोरी गवन देलैं रे करवाय
ले के डंड़िया मैं जिरउल पर टीकैं
आरे मैके मनब्या बात हमार लेके डिड़िया जो जिरउल पर टीकं
सारा धनवां सेवटल जाला
आरे मंजरी गोपिया सेवटली न जाय
कब मैं मरबा गहीर गउरा कै
आरे कब डांड़ी लूटि के जाबे रे
मोरि भै ऽ ऽ ऽ ऽ ने जे अ किलवा में ओलिरे या ऽ ऽ ऽ य [८८]

निर्मल का मंजरी की डोली के पास जाना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ

तब निरम्मल बोलै राजा मोलागत से
आरे मम्मा मनब्या बात हमार
तनी एकन सगरे पर हम्मैं चलि जाब्या
आरे तनी एकन जिरउल पर हम धन जाबै
तनी एकर पतवा जौ लेईं रे लगाय
कइसन मानुस आइकै बलको टीकल बाड़ैं
आरे तनी कइं लेईं भेंट दीदार
मारे ना जोगनवा जिरउल आयल बाड़ैं
आरे जोरने जोग आयल भैंपाल
जोरने जोगे मो हितइया आइल
आरे मम्मा मनब्या बात हमार
तीन तीन जौ पनथिया बीतल थाना अगोरी
आरे चउथी मरन गइल ले निअराय
मुंहवा कै दंतवा जौ तोहरे टूटि गइलैं
आरे सनकुट लागल बा कपरवा कै बार
अइसन बात बतियावत बाड़
आरे का कपारे पर गयल रे निअराय
एइसन पपवा अगोरिया में अइलैं
आरे का मम्मा मरन गयल रे निअराय
अनके जननवा तूं छोरति बाड़ा
आरे कत्तों गिर जाबे जो कुआं रे इनार
उहां से निरम्मल बलको निकल देलैं
आरे पवनी पीठिया भयल रे असवार
अपने जो पवनियां अगोरी से हंकलं
आरे जिरउल की मो चलैं लैं खेतार
जब मयदनवां में निरमल गइलैं
आरे लोरिक सोझै रे नजर परिजाय
हाली हाली मंजरी के डंड़िया के गइलैं
आरे रानी मनब्यु बात हमार
एकर तूं भेदवा तू हम्मैं तू बताय द्या
आरे चित्ता बढल रे बदन में बाय
एक मो मनुसवा अगोरिया से आयल
आरे पवनी घोड़िया भयल रे असवार
एकर भेदवा तनी हम्मै तू बताय द्या

आरे चिन्ता बढ़ल वदन में बाय

निर्मल को पहचान कर मंजरी का चिन्तित होना व रोना

तब मंजरी मो ओहरवा डांड़िया कैं
आरे गोपी ताकै ले ओसरिया लगाय
चीन्हि गइल बलको देखा रे नीरम्मर
आरे तब त मारि मारि धमकवा आ छातिया में रूवै रे लागल
आरे सामी अब नाहीं बची रे मोर मइया
औ जिनिगियौ ना रे तोहा ऽऽऽर
आरे एहर मो छोड़ि के तूं डंड़िया आ गउरवा बलको भागि रे जाब्या
आरे अम्मर आइ गयल बलमुवा अब खेतवा मोर मयरेदा ऽऽऽन
आरे गोपिया मोर एइसन रूवइया अ डोलिया में रूवत रे हउवै
आरे जिरउल पर बनवाँ कै पतवाइ रे मोर मइया
अ गिरत हउवै बलको खइरे रा ऽऽऽऽय
आरे एहरवैं मों धीरे धीरे रूवत हौ अहीरवा मोर गउरा कैं
आरे गोपिया अब काहे बदे अ जिरउल गइल बाड़ू जौ धबरे राऽऽऽय
आरे एहर मंजरी अपनइ मो सतवा अब डंड़िया में हउवै मनवले
आरे सतवा मो डंड़िया की अरियां मो अरियाँ बलको घूमैं रे लागल
आरे एहर संवरू दादा
आरे एहर संवरू दादा, मइया जिरउल पर ललरेकारैं
आरे संवरू सूतल बाड़ैं हो मइया अब गइयन की हो अड़ा ऽऽऽर
आरे हइहै सूतले में सपनवा अब बोहवा में देखत रे हउवैं
आरे हइहै लोरिक पर परि रे मोरि मइया
अ बिपतिया जिरउल पर परल रे हउवैं
आरे बोहवा से तानि के बिसवनवाँ अ गइयन से मरले रे हउवैं
आरे जिरउल पर अरियाँ अरियाँ बनवाँ अब मंजरी के घूमैं रे लागल
आरे तब ले एहर निरम्मल मोर पंजरवा अ गयल हउवैं निअरे राऽऽय

निर्मल तथा लोरिक का एक दूसरे को परस्पर देखना

आरे एहरवैं पजरे रे मोरि मइया
अ निरमलै जब मोर पहुँचि रे गइलैं
आरे हइहै लोरिक के समने नजरिया
अ निरमले कै परि हो गइलीं
आरे तब ले बोलत बाड़ैं रे मइया

अहीर बलको गउरा कै
आरे रहिया मोर बटोहिया
अब जिरउल पर बलको आयल रे हउवा
आरे बाबू कउनो सूबवा रे मोरि मइया अ आयल हउवै उमरे रं
आरे एहर भइया कहवाँ कै ए बबुआ
आ चलल बलको पंयड़ा रे हउवा
आरे कहवाँ जाति बाड़ा ए बबुआ
आ पयंड़िया ना आपन रे धइलो
आरे तबतै धीरे धीरे नीरमला
अब जिरउल पर बोलैं रे लागं
आरे भइया थानवै रे भइया अगोरिया से आवत रे बाड़ी
आरे सुनलीं कि आयल बाड़ैं हो भइया अहीरवा हो गउरे कै
आरे हम करें अइलीं रे भइया अब भेटियौ ना मुलरे कं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे हइहै काहे बदे ए बबुआ अ जिरउली पर टीकल रे हउवा
आरे अपने मनवा ए मोरे बबुआ अब डेरवा बलको देहले रे हउवा
आरे कि केहू पयंड़े में तोर डंड़िया अब देहले हउवै बलको रोकरे वं

'मैं अम्मर निर्मल को मारने की तैयारी में हूँ' लोरिक का कथन

आरे हमके जलदी जलदी ए बबुआ आपन भेदवा ना बलको बतावा
आरे चिन्ता हमरे भइले रे मोरि भइया अ सरीरियो में बाड़ी रे बं ऽ ऽ ऽ
आरे तब तै धीरे धीरे बोलत हौ हीरवा हो गउरा कै
आरे भयवा हम करै बदे बियहवा अगोरिया में बाबू जौ चढ़ि रे अइलीं
आरे राजा महर भांवर रे मोरि मइया हमार देइले हउवै बलको घुमरे यं ऽ ऽ ऽ ऽ

आरे तबले एइसन राजा दइबा
अगोरिया में उफ्फेर रे परै
आरे हमार देहले हउवै रे मइया अब डंडियौ जौ रोकरे वा ऽ ऽ ऽ य
आरे बाबू गउंवा क बहिन बलको बिटियवा
अगोरिया में नाहीं चीन्हत रे हउवै
आरे तवन बइठल बइठल हम पंयड़िया अ जिरउली पर जोहत रे बाड़ी
आरे कब बिजैंपुर ले आई जाई रे मइया आमरवा रे बलको नीरम्मर
आरे कब हमसे होई जाइ रे मइया भेंटियौ न मुलरे का ऽ ऽ ऽ त
आरे तब हइहै लगि जाई रे मइया अब लोहवा रे जिरउल पर
आरे कब मरि जाई अम्मर जिरउली पर

कब डांड़ी लै कै जाब रे मोरि म ऽऽऽ इया
अ गउरवैं अपने गुंजरे रा ऽऽऽऽऽत [८६]

निर्मल का मामा मोलागत के पास समझौता व मित्रता कराने के लिए जाना

हां ऽऽऽ हां ऽऽऽ राम ऽऽऽऽ
आरे तब बोलै लगे लैं निरम्मल आरे बाबू मनब्या बात हमार
हम धन जात बाड़ी थाना रे अगोरीं
आरे अपने मम्मा के घली ला समुझाय
कैल्या मिताई धन तूं अगोरी
चलि जा कनउज की रे बजार
होय जा छुटिया बाबू जिरउल सें
आरे पवनी घोड़िया भयल रे असवार
घूमि के घोड़िया गइलैं मैं अगोरी
लागल बा कचहरी राजा रे मोलागत कै
गहुअर झूमि के लगल बा दरबार
बायें बगल में जो मुनुसी बइठं
आरे दहिने कायथ बइठै लैं देवान
बाजत बा तबलवा जब नैपालीं
आरे घुटुकै लै सांझ बिहान
तबले अम्मर समने गइलं
आरे बलको गोड़े पर गिरैं लैं भहराय
मम्मा बतिया अगोरियैं में माना
आरे बाबा अड़गुड़ गयल रे देखाय
हमके मालूम बड़ा असगुन होला
आरे असगुन लउकत बलको बाय
तनी एकन बतिया जौ किलवै में माना
अहीरे से कइला तूं मिताई गउरा में
कब्बों बलको छापे करी रे गोहार

मोलागत का निर्मल को धिक्कारना

एतनी बात जब्ब सुनै मोलागत
बलको जरि के भसम होइ जाय
बज्जर परो रै बजर कै धान
अम्भर होइ के जनमल बाड़ा

आरे बलको खइल्या रे अम्मर कर भात
पांच बान मैं ब्रह्मा जौ दे लैं
आरे बान टरै रे जोग कै नांय
नाहक कोखिया में जनम तूं लेल्या
आरे भनै जा मत रूख परास
आज काम मरदे से परलं
काहे बदे हिल्लत हौ टंगरिया तोहार
सारा धन सेवटल मो जाला
मंजरी न गोपी न सेवटली जाय
जेकरे जनम में सवाघरी भैने
सोना चानी बरसत बाय
आज तोर टंगरी हिल्लत हउवैं
जिउले बलको चलै ला वराय
जनाना क लुगवा पहिर बलको लेब्या
कोनवा में होके रहा रे बिलार, कोनवा में होके रहा रे बिलार
एतनी बात जब कहलस हइयै
बलको जरि के भसम होइ जाय
झर झर आंस नीलम्मर के बहै
आरे जेकर बूते रे रहल नाहि जाति
एहर किला में बलको समुझावै
लंउड़ी पजरे गइल रे निअराय
सुनिला रानी तूं किलवा में
आरे बलको मनब्यु बात हमार
तोहारो डांड़ी किलवा में आइं
आरे दुलहा मारि जालैं रे तोहार
एदवां पारी जिरउल पर जइहैं
आरे बलको मरन गइल रे निअराय
लंउड़ी लंउड़ी रानी कहै
आरे लंउड़ी मनबू बात हमार
तनी एकन कचहरी में जा
आरे समिया के लिआव बोलाय
तनी एकन भेंट करी रे किलवा में
आरे डोंगा डूबि जाला रे हमार
लंउड़ी छोड़त कीला रानी कं

आरे बलको कचहरी गइल ले निअराय
अंगुरी क सनवा निरम्मल के बुझावै
आरे निरम्मल पजरे गयल रे निअराय
आगे आगे लंउड़ी जालैं
आरे पीछे अमर रेवरले जाय

निर्मल की पत्नी का पति का पैर पकड़ कर रोना और अपने दुःस्वप्न का हाल बताना

जब रानी के कोठरी पर गयं
आरे गोपिया पकड़ि के मोर गोड़वा अब किलवा में रूवत रे हउवै
आरे हइहै अधजल में डुवाय देला ए समिया अ डोंगवौ नारे हमं ऽ ऽ ऽ
आरे नाहीं बची आरे भइया
अ किलवा में मारि हो जाब्या
आरे मत लड़ैं जावे रे बलमुआ
अ खेतवा मय रे दं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे हइहै बड़ा मैं ओ सपनवा आ किलवा में रतिया सूनत रे रहलीं
आरे जइसे दूतवा मेल्हत रहलैं समिया अगोरियौ की रे बाजं ग ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तब ले एतनी मोर बतिया निरमला बलको सुनि रे लेहल
आरे जेकरे ढुरकत बाड़ रे भइया नयनवां ले बलको रे अं ऽ ऽ ऽ
आरे गोपिया के धीरे धीरे राना के किलवा में समुरे झावै
आरे बइठा गोर्या तूं थनवा अ बलको ना रे अगोरा
आरे हम लड़ै जात बांड़ी ए रानिया खेतवा ना मयरे दं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तब धमकि दे थपरवा छतिया में मरले रे हउवै
आरे ए बूढ़बा के कपारे पर समिया पपवा मोरि चढ़ि रे गइलैं
आरे उहै पाप नाचत बाड़ैं बलमुआ अगोरियौ की रे बाजं
आरे एकरे पापवै से समिया तोहकं जिरउल पर मारल रे जाब्या
आरे ओहर मारल जाब्या जिरउल पर
बिजैपुर में उतरि जाईं ए ब ऽ ऽ ल ऽ ऽ मु ऽ ऽ ऽ वा
अ सोरिया ना रे तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [६०]

निर्मल की लोरिक से लड़ने की तैयारी

हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ
गोपी के समुझावैं अपने किला से राजा अम्मर निकल देला
आरे भागल राजा मोलागत के कचहरी में गइलैं
जाके गोड़े पर गिर गइलैं

आरे मम्मा कहल ना कइला आपन
बरजल मानत नाहीं हमार
अब हम लड़ें बदे जिरउल पर जात हई
बाकी मारब अहीर गढ़ गउरा कै
मंजरी के संगै करबै सुख बिलास
एतनी बात मोलागत सुनलैं
आरे छतिया फूल भइल गज ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ ज
आरे डाकि कै पवनी पर असवार होये लगलैं
आरे पंच पंच बान पीठिया पर लादैं
आरे पवनी हांक कै चलति बाय रे मइया
अ जिरउली की बलको खेतं
आरे घोड़िया हंकले रे मोरि मइया
आ जिरउल पर पहूँचि रे गइलैं
आरे उपरां गिधवा रे मइया गयल हउवैं मेंडरे राय
आरे गिधवा से गिधनी रे मइया
अ जिरउली पर समुरे झावैं
आरे ओइसन ओइसन मसिया रे गिधवा बहुत हम जे खइले रे बाड़ीं,
आरे अम्मर मांस न देखल कवनो रे मइया बरनियाँ क बलको रे बाय
एदवां अम्मर मंसिया हमके जिरउली पर गीध खिआवा
आरे हमरे अम्मर बेटवा रे मइया अ होंइ जइहैं अत्ररेतं ऽ ऽ ऽ ऽ

लोरिक को गउरा भाग जाने की मंजरी की सलाह

आरे एहर लोरिकै नजरिया अ जिरउल पर परि हो गइलीं
आरे मंजरी के पजरे मोरि मइया गयल हउवै बलको नियरे रं
आरे गोपिया जौ ओदवाँ मोर घोड़ी पर अगोरिया से आयल रे रहलैं
आरे तवन फिन आवत बाड़ै रनिया जिरउली की बलको खेतं
आरे गोपिया पीटि पीटि के छतिया अ डड़िया मैं रूवै रे लागल
आरे एहर तोहरौ ए समियाँ मरनवाँ मो आयल रे हउवैं
आरे अगोरी में लूटल जाई रे मइया बलमुवउ ना रे हमं ऽ ऽ ऽ
आरे गोपिया धीरे धीरे लोरिक के डंड़िया पर समुरे झावैं
अबहीं से बलको डंड़िया ए समियाँ
अ जिरउल पर छोड़ि ए देब्या
आरे अपने भागि जाबे बलमुवा गउरवैं बलको गुजरे रं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे नाहीं नरकी जिअरा कारन तोर जिनिगिया समियाँ मारल रे जइहैं

आरे तब त धीरे धीरे बोलत बा अहीरवा हो गउरा कँ
आरे गोपी चुपचाप मारि के डंड़िया में बइठल रे रहा
आरे जिरउल पर तनिको तू देखा मत जाया बलको बेकले रं
आरे एहर तनिको ए गोपिया डंड़िया में जिन रे हिल्या
आरे तनी देखि लेबू रनियाँ खेतवै पर मनुरेसं
आरे तब ले राजा नीरम्मल खेतवा पर आइ हो गइलैं
आरे बलको पवनी मैं घोड़िया खेतवा पर ऊतर रे गइलैं
आरे बड़े जोर से नीरमला जिरउल पर ललरे कारैं
आरे कीत आइके ए मइया लड़इया हमसे कइ हो लेव्या
आरे नाहीं डांड़ी छोड़के भागि जा भितवा गउरवै बलको गुजरे रं
आरे हइहे कीत ले लेबै बबुआ बिटियवा रे खतिरी कै
आरे जेकर सोनवां ए बबुआ सोहागिन बलको परल रे नाँव
आरे कीत ले लेबे ए बबुआ बिटियवा रे सिवचन कै
आरे जेकरे अनुपिया अगोरिया अ परल हउवै बलको रे नाँव
आरे हइहै छोड़ देबे बीरवा ओ डंड़िया रे मंजरी कै

लोरिक द्वारा युद्ध की तैयारी

आरे एहर पेन्है लागल लोरिक आ निरिखिया हो गलवन में
आरे गोड़वन में दोहरी मोरि मइया चढ़वले हउवै नारे तमं
आरे सात परद कँ मोर तउवा छतिया पर बन्हरे वावैं
आरे बायें बगल में मइया ओड़नवा आपन बन्हले रे हउवै
आरे दहीने बन्हलसि रे मोरि मइया बिजुलिया त बलको रे खं ऽ ऽ ऽ
आरे एहर सोरह सै दइवा सुमिरे लैं कन रे टाइन
आरे सोरह सै सुमिरत रे मइया मरियउना रे मसं
आरे एहर बायें बनसतिया खेतवा पर ललरेकारै
आरे दहिने ललकारति रे मइया दुरुगवा न बलको रे मं
आरे एहर छतिसै कोटे कै देवतवा बलको नाचै रे लगलैं
आरे जिरउल पर कूद परल मइया खेतवा पर ललरे कं
आरे तब म सोझैं त नजरिया निरमल कै परि रे गइली
आरे हइहै रूवति बाड़ी रे मइयाँ खेतवा न मयरे दं
आरे जवन बियहो ए मइया किलवा में समुरेझवलं
आरे तवन अंखियै रे मोरि मइया गयल बाड़ैं नारे देखाय
आरे हम्मैं मालूम पड़त बाड़ैं सारा मोर देवतवा जिरउली पर नाचल
रे हउवैं

आरे हमरै गयल रे मोरि मइया मरनवौ जौ निअरे रं
आरे अइसन अंसिया नयनवा से बहत रे हउवै
आरे बलको आँसुन से ए देखबा हाथे क कपड़वै मोर भीजि रे गइलैं
आरे तबले लोरिक मै पजरवाँ गयल हउवै निअरे रं
आरे बड़े जोर से ललकारत बा अहीरवा हो गउरा कैं
आरे पट्ठे होइ गयल हमसे तोहसे जिरउली पर भेंटियौ न मुलरे कं ऽऽ
आरे हइहै करबा ए बबुआ उवरवा रे खेतवा पर
आरे तनी तोहरौ ए बबुआ अब देखि लेइं मनुरेसं ऽऽऽऽ
आरे तब तै धीरे धीरे निरमल जिरउल पर बोलै रे लागल
आरे हम्मैं नाहीं ए भइया उवरवा पहिले बलको रे करबैं
आरे तूं आपन कै देबा बबुआ उवरवा हौ जिरउल पं
आरे लोरिक टप दे निरमल क देहले हउवैं न रे जावं
आरे बाबू पहले उवरवा कत्तों नाहीं कइले रे बाड़ीं
आरे पिछवा नाहीं ए बबुआ राखवउं नारे उठं ऽऽऽऽ
आरे पहिले अपनै तूं बनवा हमकै न तनी देखावा
आरे तोर मोर देखौं ए बबुआ अगिनिया क बलको रे ऽऽऽ
आरे तब त अम्मर खेतवा भसमवां जब होइ रे गइलै

निर्मल का अग्नि बाण संधान करना

आरे निरमल तनलसि रे मइया अगिनिया क बलको रे वं ऽऽऽऽ
आरे निचवा डगडगि डगडगि पिरिथिमी मोर कांपे रे लागल
आरे उपराँ बरम्हा क मइया हिलत बाड़ैं कयरे लं
आरे एहर अइसन डंड़िया मंजरी के हिल्लै रे लागल
आरे मंजरी पीटि पीटि कै छतिया अब जिरउल पर रूवै रे लागल
आरे हइहै सइयाँ क गयल रे मोरि म ऽऽऽ इया
अ मरनवा नियरे रा ऽऽऽऽय [६१]

दुर्गा का लोरिक को सुरसरि के तट पर ले जाना और अमृत पिलाना

हाँ ऽऽऽ हाँ ऽऽऽऽ
तनल बान अगिनी कै चर चर चर चर धनुहाँ बोलै
पर पर करैले अगिन कर बान
दूनो गोंछ बनवाँ नथि गो, आरे जेमन धुआँ रे गयल उधियाय,
बायें खड़ी बनसतिया दहिने खड़ी दुरुगा माई
जेकरे बीचे मो अहीर गउरा कै जेकर लोरिक बघेला नां ऽऽऽ व

आरे एहर अम्मर बड़े जोर ललकारैं
पट्ठे देख ले अगिन कर बान
जोति बान निरमल मरले
आरे लोरिक तिन तिन कलटा खाँच
बायें त खड़ी बनसत्ती दहिने खड़ी दुरुगा मं ऽ ऽ ऽ
एहर दुरुगा के खोंइछा में अगिनि फूटि गइलीं
टप दे अगिनी देलीं बुताय
टप दे लोरिक के पंजरे पहुँचं
आरे उठा के हथवा पर सुरसर तीर गइल नियराय
ठंडे पनिया में लोरिक के जुड़वावै
अमिरित चीर के दे लैं रे पिआय
चला चला बचवा जल्दी रे जिरउल पर
आरे लूटि जाला डांड़ी रे तोहा ऽ ऽ ऽ र
मरि जाला जब मंजरी जिरउल पर

लोरिक का साहस टूटना

आरे सारे कनउज की उपरल रे बजार
तब बोलत हौ अहीर गउरा कैं
आरे माई मनब्यु बात हमार
छूटत हउवै हिम्मति जब खेतवा पर
आरे दुरुगा बलको घलै ले ललकार
संगवां में दुरुगा देखा जालै
आरे मंजरी खोलि के अचंरवा जिरउल
आरे उ बलको हइये सुरजइं घलै ले मनाय
रूवत बाड़ैं गोपिया जब डंड़िया में
सामी कउने अलंगे जो गयल रे टेराय
तबले सनमुख मंजरी के लउकै
आरे गोपिया पीटि पीटि के छतिया अ खेतवा पर रखै रे लागल
आरे अगसर लड़त बाड़ा ए समिया अ खेतवा जौ मयरे दं ऽ ऽ ऽ

मंजरी का सत जगाना तथा निर्मल के चार बाणों को समाप्त करना

आरे मजरी आपनै सतवा अ खीचि खींचि मारत हउवै
आरे लोरिक के जंघवा पूजवा लागति बाड़ैं ना रे सहं
आ एहर संवरू के वनवा विद्या बिनवां अरियां अरियां घूमत रे हउवै

आरे तबले दुरुगा लेहले खेतवां रे मइया अगरे के आइ रे गइलीं
आरे निरम्मल रूवत बाड़ैं रे मोरि मइया अखेतवा न मयरे दं
आरे मम्मा के बेरियैं की बेरियां रे मइया अगोरिया में बरजत रे रहलीं
आरे नाहीं मनल्या ए मम्मा जौं कहनवा ना रे हमं
आरे निज की मरनवैं न मोरि मइया जिरउली पर आइ रे गइलैं
आरे एहर रूवत बाड़ैं ए यारो बिग्रहिया रे नीरमल कै
आरे किलवा में पीटि पीटि छतिया अगोरिया में रूवत रे हउवै
आरे दुरुगा दवरत हउवै रे मइया खेतवा न मयरे दं
आरे एक्कै बनवां मइया समियां के छूटि रे गइलैं
आरे चार ठे लेके खड़ा बा बलमुवा जिरउली की रे खेतं
आरे जवन चारों बनवा सामीं कै अ जिरउल पर खतम रे होला
आरे दुलहा के गयल बा रे मोरि मइया अ मरनवों न नियरे रं
आरे ओहर सामी जौ मारल जालै अगोरियौ
उपर जालै रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया अ सोरिया ना रे हमा ऽ ऽ ऽ रं [९२]

निर्मल का लोरिक पर पुनः बाण प्रहार करना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ
एहर रूवत गोपी जब किलवा में
ओहर ओसरी ओसरी घलैं ले ललकार
आरे लोरिक बड़े जोर ललकारैं
आरे पट्ठे मानि जाबा बात हमार
अइसन बनवां ले के आयल बाड़ा
तनिको नाहीं मालूम होला अंगिन कर बान
टूटहा बनवां तू छोड़ले बाडं
आरे तनिको बांन क असर नाहीं होत
तनी एकन मइया तूं जो बनवा चलाय द्या
आरे बलको तोरी रे देखी मनुसात
कइसन बान ले के आयल हउवं
आरे एहर अम्मर तनलैं अगिन कर बान
चर चर चर चर धनुहां बोलं
आरे पर पर करैं लैं अगिन कर बान
दूनों गोछवां बनवां कै नइ गै
आरे जेमन धुंवा रे गयल उधियाय
जोति कै मैं बनवां निरम्मल मरलं

आरे अकासे धुंवा रे गयल उंधियाय
गगने में जाइके बांन रूकल हउवैं
आरे बनवा नीचे के गिर जाय
आय के लोरिक के बांन लग गइलैं
आरे लोरिक मों गिरैं लैं भहराय

दुर्गा का सुरसरि तट पर लोरिक को शीतल करके अमृत पिलाना

तब ले दुरुगा बा जाके पजरें
आरे हथवा पर ले ले उठाय
ले के सुरसर तीरवां माय जाला
ठंडे पनियां घलैं ले जुड़वाय
अमरित चीर के जौ मुंहे में पियावै
उठि के बइठै राड़ी रे सिंहिन कर बार
तब दुरुगा बड़े जोर ललकारें
चला बेटवा आयल बा ओसरिया तोहार
मंजरी जो खड़ी हों बहरै अंचरा खोल खोल घलै ले मनाय
एहर लोरिक के दुरुगा लेके आरे जिरउल की आयल रे खेतार
परल बा नजरिया जब निरमल कैं, आरे जेकरे झर झर बहैले नयन से आंस
रूवत बाड़ैं जब जिरउल पं आरे बलको अम्मर गयल रे घबड़ाय
बड़े जोर से लोरिक रे ललकारै, एइसन बान जिरउल पर मरल्या
तनिको बान नाहीं बुझाय, सरल पाकल बान ले ले अइल्या
का लड़बा तूं खेत मयदान
एदवां उबार पट्ठे आपन करा, आरे निरमल जर के भसम होइ जाय
ओदवां बान अगिन कै तानै, चर चर चर चर धनुहां बोलै
पर पर करै अगिन कर बान, एइसन बांन तनले मोर हउवैं
नीचे डगमग हिलै ले पिरिथिमी, आरे ब्रह्मा क कांपै लगै लैं कयलास
बनसत्ती दुरुगा के ललकारैं, आरे तनी मनब्यु बात हमार
एदवा बान अम्मर कर धरा, आरे नाहीं जुलुम भयल रे बरियार
तबले अम्मर बनवैं मरलैं आरे दूनों जनें बनवा में मइया जिरउली में लपट रे गइलीं
आरे दुरुगा दबाय के मोर बनवां धरतिया में मोजै रे लागल
आरे मलके हथवै में दुरुगा अ देहले बाड़ैं ना रे उड़
आरे एहर माघ पूस क कोइला जिरउली पर छाइ रे लेता

आरे एहर निरम्मल के नाहीं सूझत बाय रे मइया अ खेतवा न मयरे दं ऽ

अमर निर्मल का कागज लेने के लिए दुर्गा का ब्रह्मा के पास जाना

आरे दुरुगा अंखिया पर बबुआ थपियान मरले रे हउवै
आरे तनी लोरिक मानि जाबा बचवा बतियौ रे हमं
आरे उधर अम्मर होके बचवा नीरम्मल मोर जनमल रे हउवैं
आरे बलको खइले हउवै बेटवा अमरवान कै रे भं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे जब लेले ना आइब बेटवा कगदवा इनरासने से
आरे नाहीं अम्मर मारी रे मोरि मइया खेतवा न मयरे दं
आरे दुरुगा एइसन धुवंवा सगड़वा पर कइले रे हउवै
आरे निरम्मल के कवनो अलंगिया नाहीं बलको लवकत रे हउवै
आरे तबतै दुरुगा एंड़वा रे मइया धरतिया में मरले रे हउवैं
आरे उड़ि के आधे रे मोरि मइया सरगवा में मेंड़ रे रं
आरे ओहर बरम्हा के बबुआ कचहरी मोर लागल ले हउवै
आरे ब्रह्मा के आगम रे मोरि मइया गयल बाड़ैं ना रे बुझं
आरे एहर ब्रह्मा कइ बबुआ देवतवा मोर भागै रे लागैं
आरे ब्रह्माइन के खबर बलको इनरासने में देहले हउवैं पठरे बं
आरे अपने अँगने में देखा चउकवा मै पुररेवावा
आरे चन्नन पीढ़वा देबू अंगनवा में अपने धररेवाव
आरे बलको दुरुगा रे मइया इनरासने में आवत रे हउवै
आरे हइहै फूंक देलै बरम्हाइन कोठरियौ रे हमं
आरे एहर ब्रह्माइन चउकवा इनरासने में हई पुरवउले
आरे तबले दुरुगा दुवारी पर भइल हउवै तइरे ययं
आरे हइहै पकड़ के कलइया बरम्हाइन अंगनवा में पिढ़वा बइरेठावै
आरे दुरुगा मारे त खुनुसिया पीढ़वा जौ हउवै उठवले
आरे ब्रह्माइन के मरलस गिर परलीं रे मइया धरतिया में भहरे रं
आरे ब्रह्माइन ऊठ क दुरुगा के गोड़वा पर गिरि हो गइलीं
आरे हम कवन ए माई कसुरवा जौं कइले रे बाड़ी
आरे हमरे तोर देहलू ए मावा पजरियन कै रे हाड़ ऽ ऽ ऽ
आरे कहलस अम्मर भतवा इनरासने में बाड़ू खिअवले
आरे तवन निरम्मल टीकल बाडैं मइया खेतवान मयरे दं
आरे हमरे सेवके के मइया आ खेतवा पर मारि रे नवलैं
आरे मंजरी क लूटति हउवै इजतिया अगोरिया में
आरे धरम बीगर जाला ब्रह्माइन गउरवै बलको गुंजरे रं

आरे हमार एतना पूजवा गइयन में खइले रे हईं
आरे पूजा खाइके मइया कइसे कइ जाईं जा रे हजं
आरे जल्दी दिआय दा ब्रह्माइन ज कगदवा रे अमरे कै
आरे नाहीं फूंक देब ब्रह्माइन जौ कोठरियौ ना रे तोहं
आरे आज जौ लोरिक जिरउल पर मारल जइहैं
इनरासन मांटी में रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
अ तोहार देबै ना रे मिला ऽ ऽ ऽ ऽ य ६३]

ब्रम्हा के यहां से दुर्गा का निर्मल की अमरता का कागज लेने का प्रयत्न

हां ऽऽ ऽऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तब ब्रह्माइन ठावें देनीं रे जवाब
हमार ई कहलिया जौ नाहीं होई
आरे ब्रह्मा के तूं पवने जाबू रे दुआर
उहै मैं कगदवा अम्मर कै देइ दी है
आरे दुरुगा पंयड़ा ले लै रे सुधियाय
धइलै हौ डगरिया बलको रे कचहरी
आरे बलको ब्रह्मा तानि के गुदरिया सूति जाय
तनिकौ नाहीं मेल्हति बाड़ैं आरे तनो
आरे सूतलें बलको गोड़ फइलाय
तबले दुरुगा मोर कचहरी में पहुचं
टप दे गुदरिया ब्रह्मा के खींचि लेला
टप दे उठि के बइठ हउवै जात
कवने करनवा इनरासने में अइलु
आरे माई भेदवै तूं देब्यु रे बताय
धीरे धीरे दुरुगा बरह्मा के समुझावैं
आरे जल्दी कागद दे दा निरम्मल कै
लेके जिरउल की जाईं रे खेतार
नाहीं फूंकि देबै मैं कोठिया इनरासन
आरे बलको छन में भसम होइ जाय
एतनी बात जब ब्रह्मा सुनलें
आरे बलको जरि के भसम होइ जाय
अइसै कगदवा आनै अइलू दसवंत कै
आरे फूंकि देलू कोठरिया हमार
अम्मर होके जनमल बाड़ैं
आरे बलको खइले रे अमर कर भात

पांच बान हम देहले बाड़ीं
आरे बनवा टरै रे जोगन के नाय
एक बान के मरले दुरुगा चउदह कोस लगी बनडंढ़वा
सुलुगन लागी रूख परास
आरे एहर दुइ बान छुटि मोर गइलैं
तीन बान हउवैं जिरउल पर
एदवां अइसन बान जब मरिहैं
आरे तूं तनिकै में जाबू घबड़ाय
ओनकर कगदवा मिलै जोग नाहीं
आरे चलि जा बलको रे मिरित सनसार

दुर्गा का शक्ति बाण मारना और ब्रह्मा की कोठरी में आग लग जाना

एतनी बात जब दुरुगा सूनैं
आरे बलको जरि के भसम होइ जाय
दे दा म कगदवा जब अमरे कं
आरे मानि जाबा बात हमार
तब दुरुगा बड़ी कोपल बाड़ैं
टप देना सकती मैं लै ले रे उठाय
घुमा के सकतिया कोठरियैं मै मारैं
आरे जेमन लवर गइल बुंबुआय
ब्रह्मा बलको भागल, मेघनाथ सें जल्दी बरखा करा
इनकर अगिनी जो आई रे बुताय
ऊ लोग भड़भड़ मो हउवै लगवले
आरे तबले दुरुगा पजरे गइल रे निअराय
धइके मै गोड़वा मिरित्तवै मैं फेंकि दं
आरे नाहीं पतवा जौ लगी रे ठेकान
तब ऊ लोग जौ गोड़वै पर गीरैं
आरे माई मनब्यु बात हमार
जवन जवन बतिया कहा रे इनरसने
आरे उहै उहै कइ नाईं बात तोहं
तब दुरुगा धीरे से मै हुकुमै लगाय दें
आरे बलको एइसन बरखा करा माई एहर अइसन बरखा करा इनरसने
दुरुगा कै अगिनी मो जाई रे बुताय
ऊ लोग भड़ भड़ भड़ भड़ कइलं

आरे दुरुगा पजरे गइल रे निअराय
घइ लेहलस गोड़वा देखबा मेघनाथ कै
आरे बलको फेंक देवै मिरित सनसार
आरे एहर माई ब्रह्मा तब मेघनाथ लोग बलको बरखा कइलैं
आरे मेघनाथ जाइके (यहां गायक का स्वर कुछ गड़बड़ हो गया है)
आरे कहैं जेवन हुकुम माई हम्मैं रे लगाय दा
आरे उहै मानि जाइ बात तोहार
घीउवन के धार बलको बरसा तोनहूँ
अउरो अगिनी जाई रे बुमुवाय
आरे माई आगै आग जो कोठरिया से फुटलीं
आरे बरम्हा गिर मैं परैं लैं भहराय

ब्रम्हा का निर्मल का कागज दे देना

आके दुरुगा के आगे मैं खड़ा हौं
आरे माई मनब्यु बात हमार
आरे लेला बलको कागद तूं अमरे कै
आरे चलि जाबू तूं मिरित सवंसार
एक अम्मर के कारन दुरुगा
आरे मोर मरैं लैं मुलुक सनसार
एतनी बात जब बरम्हा कहलं
आरे दुरुगा बलको उठै लै रिसियाय
नाहीं देबा कागद तूं अमरे कैं
आरे बरम्हा गोड़े पर गिरैं लैं भहराय
दे देबे कगदवा माई रे अमरे कैं
आरे दुरुगा अगिनी मो दे लै रे बुताय
अगवै जो अगवैं मे ब्रम्हा चललैं
आरे पीछे दुरुगा मै रेवरलै जाय
सारा मै देवतन के ब्रम्हा बोलवाय दें
सबके आगे कागद देलें रे फइलाय
सब आगे कागद बांचन लागे
आरे बलको बांचत बेकल होइ जाय
अम्मर के कागदवा देखा रे बरम्हा कैं,
आरे बलको चूतरे तरे ले लैं रे दवाय
बांचत बांचत बेकल भइलैं

आरे ब्रम्हा ठावैं दे लै रे जबाब
ऊ त अम्मर होइ के जनमल बाड़ैं
नाही मै कगदवा अमरे कै मिलि हैं
आरे चल जा बलको रे मिरित संसार
अम्मर हो के जनमल बाड़
आरे तब त दुरुगा कै सुना रे खेलवार
लगा के पलथिया इनरासने में बइठैं
उपरै के सांसा घलै लैं चढ़ाय
आरे तब माई तीनों रे म ऽ ऽ ऽ ऽ इ या
अ संसवा से लोकवा ढूंढै रे लागल
आरे बलको चउमुख से संसवा अ बलको इनरासने में
आरे बरम्हा के चूतरे तर संसवा गयल बाड़े ह नियरे रं
आरे तब दुरुगा पजरवें आ बरम्हा के पहुँचि रे गईलीं
आरे बलको हइहै हथवा माई चूतरा तर पेसि रे दे लैं
आरे ब्रम्हा रे मोरि मइया इनरासने में खड़ा रे भइलैं
आरे दुरुगा टप दे कगदवा अमरवा कै लेइ रे ले लैं
आरे दुरुगा हंसत बाड़ी रे मइया थ गड़ियौ ना रे बजाय

अगर निर्मल का रक्त धरती पर गिरेगा तब अनेक अमरों की उत्पत्ति होगी, ब्रम्हा का दुर्गा को चेतावनी

आरे बरम्हा जरि जरि ए रामा इनरासने में भसम रे भइलैं
आरे इहै तूं मरमिया तनिको जिनि हो जान्या
आरे अम्मर मथवा आ जिरउल पर काटल रे जइहैं
आरे ना जानी केतना अम्मर दुरुगा होइ जइहैं तइरे यार
आरे तब तोरि ए माई हम देखबै मनुरेसं
आरे तब हंसि के दुरुगा ब्रम्हा से बतिरे आवैं
आरे हम छतिसै कोटे क देवतवा संगे ले ले बाड़ीं
आरे जब काटी ए ब्रम्हां मथवा निरम्मल कै
आरे सारा देवतवा मुहवां बाइ बाइ उप्पर रे तकि हैं
आरे जेतना रूधिल मथवा ले गिरि हो जइहैं
आरे देवता लोकि लोकि ब्रम्हा कइ जइहैं नारे अहार
आरे हम उड़ि के मथवा के एड़वां मारि हो दे बं
आरे बनसत्ती लोकि लीहैं ब्रम्हा जो खेतवा मय रे दं
आरे हम उठाय के मथवा आरे अगोरी में फेंकि देबै

मोलागत के गिरि जाई रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया
अंगनवा में भहरे रा ऽ ऽ ऽ ऽ य [६४]

निराश लोरिक को दुर्गा का प्रोत्साहन तथा लोरिक को देख कर निर्मल की घबराहट

हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ
ले के कागद दुरुगा इनरासने से कूदल आवत खेत मयदं ऽ ऽ
आरे जब जिरउल पर दुरुगा आइं
आरे लोरिक के पजरे भइल रे तइयार
कहा हाल बेटवा जब खेतवा कैं
आरे तनीं देबा बात सुनाय
रूवत हौं बेटउवा जब बुढ़िया कैं
आरे माई माना बात हमार
बड़ा देखा एहर माई धुआं उधिरइलैं
आरे ओही में गयल रे भुलाय
एहर माई पुरवा से पछिवा रवंका दे
आरे जिरउल पर भयल रे ओजरं
सनमुख लवकत वीर लोरिक जं
आरे बलको निरमल गयल रे घबड़ाय
कि एतना दिनवां कहां रहल हइयैं
हम त जानी धूवैं में गयल उधियाय
हम त जानी धूवैं में गयल उधियाय
सोचलीं कि मरि गयल अहीर गउरा कैं
अगोरी में खबर देईं रे पठवाय
ई धुंववा कइसे गंउजल रहलैं
राजा मैं निरम्मल गयल रे घबड़ाय
झर झर झर आंस वहत नयने से
आरे बलको रूवत अन्तह काल
एहर निरम्मल जिरउल पर रूवै
आ ओहर रानी लंउड़ी मोर लंउड़ी
अगोरिया में गोहरे रावै
आरे लंउड़ी रानी के पजरवा अ गईल हउवै बलको निअरे रं
आरे कहै ए लंउड़ी मैं सूतले में रनियां सपनवा देखत रे रहलीं
आरे जइसे दुरुगा इनरासने में मोरि मइया
आ बलको ना पहुँचि रे गइलीं

आरे बरम्हा से लेके कगदवा सगड़वा पर आइल रे हउवै
आरे हमार समियां के गयल हउवै
ए लंउड़ी मरनवा जौं निअरे रं
आरे गोपिया जौ पीटि पीटि के छतिया
अगोरिया में रूवत रे हउवै
आरे एहर दुरुगा ओसरा रे मोरि मइया ओसरिया ललरे कारै
आरे लोरिक पजरे ए जिरउल पर गयल हउवैं नियरे राय
आरे एहर मंजरी गोपिया रे मोरि मइया सतवा हउवै मनवले
आरे सतवा डंड़िया की अरिया अरिया इ मंजरी के घूमत रे हउवैं
आरे एहर लोरिक बड़े जोर से रे मइया जिरउली पर ललरेकारैं
आरे एतना दिन ए बबुआ बनवां देखत रे बाड़ीं
आरे एदवां आइल रे मोरि मइया ओसरियौ रे हमं
आरे बलको एदवां पारी क बनवाँ अउरो छोड़ि रे देबै
आरे तनी देखीं ए पठवा मनसेधुई रे तोहं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे निरम्मल तानि के बनवां ऊपरा के तानि हो देला
आरे जेमन धुंवा रे मइया गयल बाड़ैं उधिरे यं
आरे जब एहर उड़ि उड़ि बनवाँ खेतवा पर छूटै रे लागल
आरे बायें बनसतिया बगलिया में खड़ी रे हउवै

निर्मल का अग्नि बाण चलाना तथा मेघनाथ का वर्षा करना।

आरे अइसन बनवां निरमलला मरले रे हउवै
आरे बनवाँ आगे होय होय बरखवा होये रे लागल
आरे दुरुगा गइल बाड़ैं रे मइया खेतवा पर घबड़े रं
आरे एहर इनरासन रे मइया अपने जो उड़ि रे गइलीं
आरे जाइके मेघनाद के आउर देहलसि रे लगं
आरे एहर मूसरन धरिया जिरउली पर बरसै रे लागल
आरे तब त अगिनी बनवां गयल बाड़ैं ना रे बुतं
आरे एहर मंजरी रे माई सतवा हउवै मनवले
आरे एक्को बनवाँ डड़िया पर नाहीं बलको गिरत रे हउवै
आरे जब अगिन कैं बनबाँ जिरउला पर बुताय रे गइलैं
आरे तब तइ रूवत बाड़ैं रे मइया निरम्मल रे खेतवा पर
आरे अब कोटिउ ना बचो रे मौरि मइया जिनिगियौ रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे अब निज की मरनवा खेतवा पर आयल रे हउवै
आरे मम्मां ना मनलस रे मइया अ बतियौ रे हमार

आरे जेवन बियही रे माई हमके किलवा में समुरेझवलं
आरे इनके पपवा से समिया मरनवा त होइ रे जइहैं
आरे निज की गयल रे मोरि मइया मरनवा मोर निअरेराय
आरे एहर लोरिक पजरवा निरम्मल के पहुँच रे गइलैं
आरे पट्ठे तोर पांचे बनवां देखै बदे आयल रे बाड़ीं
आरे चार ठे खेतवा पर देखै रे मइया अगिनियाँ कै रे वं
आरे एहर मै पंचवा बनवां अउरी तनी रे देखावा
आरे छठई दाईं काटि लेवे रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया अ मथवा
ना रे तोहा ऽ ऽ ऽ ऽ र [९५]

निर्मल का ज्योति बाण चलाना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ
राम ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम
तब बीर लारिक बड़े जोर ललकारैं
चार बान तोहार बोति गइलैं
एदवाँ एक बान रहि गइलै
तनी देखीं रे अगिन कर बान
कइसन बान बबुआ हउवैं
पंचवा बान तोर कइसन हउवै
तबले निरमल जरैं मैं लगलैं
आरे जरि के भसम होइ जाय
तनलसि बान जब रे अगिनी कै
तनलसि बान जब रे अगिनी कै (पुनरावृत्ति)
चर चर चर धनुहाँ बोलै
आरे पर पर पर करैं लैं अगिन कर बान
दूनो गोंछ बनवा कैं नइगै
आरे जेमन धुवाँ रे गयल उधिराय
जोति बान जो मरलस निरम्मल
आरे बान सनमुख सन सन जाय
उपरां के बान मोर उठन लागें आरे ऊपरा में गयल रे छिटाय
अइसन बरखा अगिन कर होला
आरे दुरुगा गइल रे मोरि मइया जौ खेतवा पर घबड़े रं
आरे एहर अइसन बनवा टूटि टूटि गिरै हो लागल

मेघनाथ द्वारा बर्षा किये जाने पर बाण का प्रभाव समाप्त

आरे दुरुगा मारि के मोर एंडवा
अकसवा में उड़ि हो गइलीं
आरे मेघनाथ के आडर रे मोरि मइया जौ देलै बाड़ैं ना रे लगं
आरे एहर अइसन बरखवा इनरासने से होये रे लागल
आरे अगिनी बनवा रे मोरि मइया
अ पनिया से गयल बाड़ैं ना रे बुतं
आरे एहर दुरुगा पजरवा रे मइया अहीरा के पहुँचि रे गइलीं
आरे बेटवा आइ गइलीं ए ललवा ओसरिया ना रे तो हं
आरे एहर दबलसि रे मोरि मइया मुठियवा रे ओड़ने के
आरे जवन परोसनि गइल बा लवरिया बुमुरे वं ऽऽऽऽऽ
आरे जहां झर झर झर झर चुनरिया झरै रे लागै
आरे टूटि टूटि गिरै लागल ले मइया आ जिरउली पर रे अं
आरे एहर दबलसि रे मोरि मइया मुठियवा रे बीजुली कै
आरे जाइके बादर में रे मोरि मइया दरेरवा हउवै रे खं
आरे दुरुगा कर दे कगदवा खेतवा पर फरले रे हउवै
आरे एहर लोरिक के घूमि गईल रे मइया बीजुलिया न बलको रे खांड़

लोरिक की तलवार से निर्मल की गर्दन का कट कर आकाश में उड़ना

आरे एहर धरिया से मोरि मइया धरतिया में गिरि हो गइलीं
आरे मउर उड़ के रे मोरि मइया सरगवा में मेड़रे रं
आरे दुरुगा छतीस कोटे क देवतवा ललरे कारै
आरे जेतना मथवा ले रुधिलवा गिरत रे हउवैं
आरे सारा देवता लोकि लोकि कइले बाड़ै ना रे अहं
आरे दुरुगा मरलस बबुआ जौ एंड़वा रे धरती में
आरे उड़ि के मथवा के रे मइया एंड़वा मरले रे हउवै
आरे बनसत्ती लोकति रे मोरि मइया खेतवा न मय रे दं
आरे सारा देवता माथै कै रुधिलवा जौ पी रे गइलैं
आरे दुरुगा हाथे में ए यारो मथवा निरम्मल कै
आरे फंकलस थनवां गिर गयल रे मोरि मइया
अगोरिया को रे बजं ऽऽऽऽ
आरे बियही के कीला में रे मइया खबरिया लागि रे गइलीं
आरे गोपिया पीटि पीटि छतिया आ किलवा में रूवत रे हउवै

आरे तब तै बीगुलै बजवा जिरउली पर बाजै रे लगलैं
आरे पलटन ऊछरत रे मइया अठारह न बलको रे हं
आरे एहर हन हन हन हनन गोलिया मोर छूटै रे लागल
आरे भन भन करै लगल ए यारौं मोर खेतवा पर त रे वं
आरे एहर मैं त देखा बायें मोर बनग जो सतिया मो दउरत रे हउवै
आरे दहिने दउरत बाड़ैं मइया दुरुगवा न बलको रे मं
आरे दुरुगा ले के खपड़वा हथवा में दउरति रे हउवै
आरे कहां आइल बाड़ बचवा ओसरियौ रे तो हं
आरे बलको दबलस लोरिक जौ मुठियवा रे बीजुली कै
आरे जेम्मन पोरिसन गइल बा लबरिया जौ बुमुरे अं
आरे एहर देखा दबलसि रे मइया मुठियवा रे ओड़ने कै
आरे जहवां टूटि टूटि बबुआ मोर गिरति बाड़ैं ना रे अंगार
आरे दुरुगा ले के खपड़वा गोलिया में घुसि रे गइलीं

लोरिक के खड्ग से लाशों का ढेर लगना

आरे तबले लोरिक घुमैं लागल ए यारो बिजुलिया न बलको रे खं ऽऽऽ
आरे बलको मउरिन क बबुआ लगत ही मउरमाला बलको रे
लसियन क खेतवा पर मइया लगति हउवैं खरि रे हंग ऽऽऽऽ
एहर दुरुगा चारो ओर खपड़वा खेतवा पर हउवै घुमवले
आरे अपने मंजरा कै डंड़िय पर माई मोर भइल हउवै तइरे यं
आरे एहर सारी पलटनियां जिरउली पर मारल रे गईं
आरे एहर मोलागत भाग गइलैं ए यारों अगोरियौ की रे बजं ऽऽऽ
आरे बलको फाटक रे मइया मोलागत क बन रे भइलैं
आरे मुनुसी देवान निकल के कचहरी ले चलत बाड़ैं ना रे परं ऽऽऽ
एहर औ सारा पलटनिया जो मुरदा बलको परल रे हउवैं
मजरी के पजरे लोरिक मोर गयल हउवैं निअरे रं
आरे गोपी मुरुदा देखि के तनिको तूं जिन डेराया बलको रे जिरउल पर
आरे हम जात बाड़ी गोपिया अगोरियउ की रे बजं
आरे एही लगले रजवा रे मइया मोलागत के मारि रे नइवै
आरे कीला फूंकि देवै छन में भसम हउवै होइ रे जं
आरे लोरिक सारा असववा बदनियां पर हउवै चढ़वले
आरे बलको धइलस रे मइया पंयड़वा अगोरिया कं
आरे बायें बनवा ए सतिया जो संगवै में दउड़त रे हउवै
आरे दहिने दउरति बाये रे मइया दुरुगवा जौ बलको रे मं

मेघनाथ द्वारा वर्षा किये जाने पर बाण का प्रभाव समाप्त

आरे दुरुगा मारि के मोर एंडवा
अकसवा में उड़ि हो गइलीं
आरे मेघनाथ के आडर रे मोरि मइया जौ देलै बाड़ैं ना रे लगं
आरे एहर अइसन बरखवा इनरासने से होये रे लागल
आरे अगिनी बनवा रे मोरि मइया
अ पनिया से गयल बाड़ैं ना रे बुतं
आरे एहर दुरुगा पजरवा रे मइया अहीरा के पहुँचि रे गइलीं
आरे बेटवा आइ गइलीं ए ललवा ओसरिया ना रे तो हं
आरे एहर दबलसि रे मोरि मइया मुठियवा रे ओड़ने के
आरे जवन परोसनि गइल बा लवरिया बुमुरे वं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे जहां झर झर झर झर चुनरिया झरै रे लागै
आरे टूटि टूटि गिरै लागल ले मइया आ जिरउली पर रे अं
आरे एहर दबलसि रे मोरि मइया मुठियवा रे बोजुली कै
आरे जाइके बादर में रे मोरि मइया दरेरवा हउवै रे खं
आरे दुरुगा कर दे कगदवा खेतवा पर फरले रे हउवै
आरे एहर लोरिक के घूमि गईल रे मइया बीजुलिया न बलको रे खांड़

लोरिक की तलवार से निर्मल की गर्दन का कट कर आकाश में उड़ना

आरे एहर धरिया से मोरि मइया धरतिया में गिरि हो गइलीं
आरे मउर उड़ के रे मोरि मइया सरगवा में मेड़रे रं
आरे दुरुगा छतीस कोटे क देवतवा ललरे कारै
आरे जेतना मथवा ले रुधिलवा गिरत रे हउवैं
आरे सारा देवता लोकि लोकि कइले बाड़ै ना रे अहं
आरे दुरुगा मरलस बबुआ जौ एंड़वा रे धरती में
आरे उड़ि के मथवा के रे मइया एंड़वा मरले रे हउवै
आरे बनसत्ती लोकति रे मोरि मइया खेतवा न मय रे दं
आरे सारा देवता माथै कै रुधिलवा जौ पी रे गइलैं
आरे दुरुगा हाथे में ए यारो मथवा निरम्मल कै
आरे फंकलस थनवां गिर गयल रे मोरि मइया
अगोरिया को रे बजं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे बियही के कोला में रे मइया खबरिया लागि रे गइलीं
आरे गोपिया पीटि पीटि छतिया आ किलवा में रूवत रे हउवै

आरे अध जल में डूबा देहलै रे मोरि मइ ऽ ऽ ऽ ऽ या अ डोंगवा न रे
हमा ऽ ऽ ऽ र [६६]

निर्मल की पत्नी का पति के शव के साथ सती होने की तैयारी करना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं
आरे जब माथ अंगनवा में गिर मोर रे गइलैं
आरे जब गोपिया मांथ खोंइछवा में नवले रे हउवै
आरे राजा मोलागत गिरि गइलैं रे मोरि मइया अ कुरूसिया से भहरे
रा ऽ ऽ ऽ य

आरे एहर गोपी मैं रूवत रूवत रनिया अगोरिया ले चलि रे देलैं
आरे बलको जिरउल रे मइया गोपिया पहुँचि रे गइनी
आरे बलको चन्नन क लकड़िया कट रे वावैं
आरे हइहै जिरउल पर चुनि चुनि के चीतवा घालति बाड़ैं ना रे लगाय ऽ
आरे तब ले एहर उठाय के लासिया चितवा पर रखि रे देलैं
आरे गोपी अपने बलको आसनवा हउवै लगवले
आरे समियां के लेके कोरवां गोपिया चितवा पर बईठ रे गइलीं
आरे एहर मारि के सतवा चितवा में मरले रे हउवै
आरे चितवा से धुववां रे मइया गयल बाड़ैं उधि रे यं
आरे एहर लोरिक आयके अगवाँ खड़ा रे हउवैं
आरे हथवा जोड़ जोड़ बबुआ भयल बाड़ैं तइरे रं
आरे गोपिया बड़े जोर से रे मइया अ जिरउल पर डपटत रे हउवै
आरे पापी हमसे लमहरे चितवा से हटि रे जाव्या
अगर चितवा पपिया जिरउली पर छुई रे देब्या
आरे हइहै मोर बिगर जांई माई धरमवा रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे लोरिक तनिकौ नाहीं जुमुसवा खाति रे हउवैं
आरे एहर हथवा जोर ले नीचै के जौ मउरियो कइले रे हउवैं
आरे तब तैं धीरे धीरे गोपी के मन में दयवा मोर आइ हो गइलीं
आरे हइहै जवनै ए बबुआ मंगनवा मांगि रे लेब्या
आरे मांगन पूरा कइ देई रे मइया खेतवा मयरे दं
आरे तब तइ बोलत बा रे मइया अहिरवा हो गउरा कै
आरे हम कवन ए रानी मंगनवा मांगि हो लेई
अनवा धनवा गंजल मोरे गउरवां न गुजरे रात

लोरिक का निर्मल की पत्नी से निर्मल के समान पुत्र पाने का वरदान मांगना

आरे रानो हम मामूली मंगनवा जिरउल पर मांगत रे बाड़ी

आरे जइसे तोर समिया गोपिया अ बिजै पुर में जनमल रे रहलैं
आरे ओइसै मोर बेटवा कउनो जनम जाई मइया गउरवां न गुजरे रात
आरे गोपिया रो रो के बतिया चितवा पर कहै रे लागल
आरे जउने दिना तोरे भइया बेटवा जनम रे जइहैं
आरे थाना जनमी बाबू गउरवा गुजरे रं
आरे गोपिया घुमाय के सतवा चितवा में मरले रे हउवै
आरे जेम्मन अगिन बबुआ लवरिया गईल हउवै बुंमुरेवाय
आरे तब त एहर देखा अगिन ए बबुआ चितवा में फूलि रे गइलैं
आरे तब एहर गोपिया रोय रोय चितवा पर बोलति रे हउवैं
आरे जइसै हमरे पर मंजरी बिपतिया बलको नउले रे बाड़े
ओइसै बिपत पड़ी ए मंजरी गउरवै तोहरे गुजरे रं
आरे गोपिया लेके मैं सामी कै सतिययवा जो होई रे गई

मोलागत का युद्ध की तैयारी

आरे एहर लागल रे मइया खबरिया मोलागत के
आरे कचहरी में बिगुल ए मइया देहले हउवै बजरे वं
आरे एहर पलटनिहन के काने में सबदिया बलको लगि हो गइलीं
आरे जहवां बारह सइ ए मइया सजत हउवैं मोगलइता
आरे तेरह सै तुरूकि रे मोर मइया मोर सज गइलैं ना रे पठं ऽ ऽ ऽ
आरे एहर एतना जोर में धंउसवा मोर बाजै रे लागल
चलि के लूटिला डंड़िया रे मइया मंजरी क जिरउल पं
आरे एहर कतारै क कतार बलको पठवा मोर चलै रे लगलैं
आदमी क तंतवै आ जिरउली पर लगि हो गइलं
आरे तब तै मंजरी कै सोझै मोर नजरिया बलको परि हो गइलैं
आरे समियां एदवां पारी तोहरी जिनिगिया जो नाहीं हो बंची हं
आरे पलटन आके लूट लेला ए समियां जौ डंड़ियौ ना रे हमं
आरे लोरिक कहैं चूप मारके गोपिया डंड़िया में बइठल रे रहा
एदवां पारी आ गईल बा रनियां ओसरियौ ना रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ

मोलागत की पलटन का जिरउल पर आना

आरे तबत पलटन रे मोरि मइया जिरउली पर पहुँचि रे गइं
आरे चउमुख से डंड़िया बीचवा जो मंजरी क छेंकल रे गइलैं
आरे तब तइ दुरुगा लोरिक के पजरवा में पहुचि रे गइनी
आरे बचवा आइल रे ललवा ओसरियौ ना रे तोहं ऽ ऽ ऽ ऽ

आरे तब तँ बीगुलै बजवा जिरउली पर बाजै रे लगलैं
आरे पलटन ऊछरत रे मइया अठारह न बलको रे हं
आरे एहर हन हन हन हनन गोलिया मोर छूटै रे लागल
आरे भन भन करै लगल ए यारौं मोर खेतवा पर त रे वं
आरे एहर मैं त देखा बायें मोर बनवा जो सतिया मो दउरत रे हउवै
आरे दहिने दउरत बाड़ें मइया दुरुगवा न बलको रे मं
आरे दुरुगा ले के खपड़वा हथवा में दउरति रे हउवै
आरे कहां आइल बाड़ें बचवा ओसरियौं रे तो हं
आरे बलको दबलस लोरिक जौ मुठियवा रे बीजुली कै
आरे जेम्मन पोरिसन गइल बा लवरिया जौ बुमुरे अं
आरे एहर देखा दबलसि रे मइया मुठियवा रे ओड़ने कै
आरे जहवां टूटि टूटि बबुआ मोर गिरति बाड़ें ना रे अंगार
आरे दुरुगा ले के खपड़वा गोलिया में घुसि रे गइलीं

लोरिक के खड्ग से लाशों का ढेर लगना

आरे तबले लोरिक घुमैं लागल ए यारो बिजुलिया न बलको रे खं ऽऽ ऽ
आरे बलको मउरिन क बबुआ लगत ही मउरमाला बलको रे
लसियन क खेतवा पर मइया लगति हउवै खरि रे हंग ऽऽऽऽ
एहर दुरुगा चारो ओर खपड़वा खेतवा पर हउवै घुमवले
आरे अपने मंजरा के डंड़िय पर माई मोर भइल हउवै तइरे यं
आरे एहर सारी पलटनियां जिरउली पर मारल रे गई
आरे एहर मोलागत भाग गइलें ए यारों अगोरियौं की रे बजं ऽऽऽ
आरे बलको फाटक रे मइया मोलागते क बन रे भइलैं
आरे मुनुसी देवान निकल के कचहरी ले चलत बाड़ें ना रे परं ऽऽऽ
एहर औ सारा पलटनिया जो मुरदा बलको परल रे हउवें
मजरी के पजरे लोरिक मोर गयल हउवें निअरे रं
आरे गोपी मुरुदा देखि के तनिको तूं जिन डेराया बलको रे जिरउल पर
आरे हम जात बाड़ी गोपिया अगोरियउ की रे बजं
आरे एही लगले रजवा रे मइया मोलागत के मारि रे नइवै
आरे कीला फूंकि देबै छन में भसम हउवै होइ रे जं
आरे लोरिक सारा असबबवा बदनियां पर हउवै चढ़वले
आरे बलको धइलस रे मइया पंयड़वा अगोरिया कं
आरे बायं बनवा ए सतिया जो संगवै में दउड़त रे हउवै
आरे दहिने दउरति बाये रे मइया दुरुगवा जौ बलको रे मं

लोरिक का मोलागत के फाटक पर पहुँचना और उसकी गर्दन काट लेना

आरे एहर मैं त हालीं हालीं गउवां अगोरिया के जाति रे हउवैं
आरे जब थाना मइया अगोरिया में मोर जुटि रे गइलैं
आरे बलको एहर फाटक राजा मोलागत कै बन रे हउवै
आरे लोरिक हनि के मो एड़वा फटकवां में मरले रे हउवैं
आरे बलको फाटक किला कैं गिरत हउवै भहरे रं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे एहर अपने लोरिक फटकवा में हलि हो गइलैं
आरे दुरुगा पजरै मोलागत के गइल हउवै निअरे रं
आरे दुरुगा बड़े जोर से मइया लोरिक के मोर ललरेकारैं
आरे मोलागत के मारि नाइबा मइया किलवा में ललरे कं
आरे जब हइहैं देखा लोरिक ओड़नवा आपन दाबि रे देलैं
आरे कीलवा में दबलसि रे मइया बीजुलिया न बलको रे खं
आरे हइहै काटि लेहलस ए यारों मथवा मोलागत क
खलिया में भूसा बबुआ औ देहले हउवैं भररे वं
आरे एहर दुरुगा फूंक दिहलस मइया किलवा रे रजवा कै
आरे बलको टूटि टूटि अगोरिया गिरति हउवै ना रे अगं
आरे एहर मटिया में ए मइया किलवा न हउवैं मिलवले
आरे लोरिक घुमि के गइलैं ऐ मइया जिरउलो की बलको खेतं
आरे मंजरी मैं सतवै रनिया अरतिया न हउवै बनवले
आरे सत कै घालै रे मइया घललसि ना रे बनं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे सतवन कै गोपिया फूलवा न हउवै बनवले
आरे बलको एहर सतवन से गोपिया अरतिया मोर करै रे लागल
आरे हइहैं बचि गइलैं रे समिया धरमवौं ना रे हमं
आरे धनवा मोर गइले ए समियां धनवा फिन लवटि रे अइहैं
धरम गइले फिन ना आई रे मइया धरमवौं नारे हमं
आरे बांचि गयल धरम अगोरी में
आवा आ चली रे मोरि म ऽ ऽ इया अ तोरे गउरवा गुजरे रं ऽ ऽ ऽ [९७]

मंजरी का सूर्य भगवान की पूजा करना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं
तब लोरिक के मंजरी समुझावै सामी माना बात हमार
अंचरा खोल मैं सुरूज मनावै आरे कइलीं मनवतो जब जिरउल पर
जब लोहा जीत मैं पइबै पहिले पूजा सुरूज के करबै

फिन दुरुगा कै पूजा करबै जिरउल के री खेतार
आरे तब सामी मोर डांड़ो उठिहै कइसे पूजा होई बलकों रे हमार
एकर भेदवा तूं हम्मैं रे बताय द्या आरे चिन्ता बढ़ल रे बदन में बाय
बोले लागल अहीर बलको गढ़ गउरा कं आरे रानी मानि जाबू
बात हमार
बइठा बइठा थाना रे अगोरी आरे हम सनेसवा देबे रे पठवाय
लिखि देबै पतिया गड़ गउरा में आरे पानी गाइनि की गिरी रे अड़ार
मंगवाय देब मैं घाउ गउरां से आरे बंहगी क घिउवै देबै रे झोंकवाय
बहंगी से सकला हम छोड़वाय देब अरघा में दूधवै देबै रे भरवाय
जेतना पूजनिया करा गोपी जिरउल पर आरे ओतना होय पूजा रे तोहार
आरे महरे के अगोरी से बोलावैं, आरे बलको जिरउली की आवैं ले
खेतार
लिखि देलैं पतिया जब जिरउल पर आरे एहर धावन के देलैं रे बताय
ले के महर धावन के भेजि दे लैं आरे पाती लेके गइयन के गइलैं
रे अड़ार
अब पाती लेके गइयन में गइलैं आरे धरमो के गिरै लें चरन पर भहराय
एहर पतिया बलको हाथे में थमावै आरे संवरू बाचै लै नेतर फइलाय
लीखल बाड़ैं पतिया में बलको देखं
आरे भइया अन खाया गांव गउरा में
आरे पानीं अगोरी के पीया रे बजार

लोरिक का पत्र पाकर मलसांवर का पूजा की सामग्री एवं बरातियों सहित अगोरी आना

भइया पतिया में हम लिखले बाड़ीं
आरे बयनन घिउवा लिहा हो लदवाय
सकला लदवायल्या थाना रे गउरा में
आरे लेके अगोरी की आया रे बजार
बारह जोड़ी सिहावै मों संगवै में लेल्या
लिखले बाड़ैं चउदह जोड़िया लिखैं लैं करनाल
चउदह जोड़ी अउरो धंउसा लिख लं
आरे थाना अगोरी की लिखै लैं बजार
जब एहर देखा सांवर बाचै
आरे सांवर बलको बड़ा रे खुसी मोर होइ जाय
छोड़ देलै बोहवा जब गइयन कै

आरे भागल कनउज की गइलैं रे बजार
जाइके बुढ़िया माता से कहलैं
आरे माई मानि जाबू बात हमार
आइ गयल कमवां जब घिउवन कैं
आरे जल्दी बेसन मै करा रे तइयार
ले लेईं घिउवा थाना कनउज में
हम धन जाईं बलको अगोरी की रे बजार
जितलै मै बदिया भइल खेतवा पं
आरे भाय परन ठनल बरियार
करी मैं पुजनिया माई रे जिरउल पर
तब भाय कनउज की आई रे बजार
एतनी जो बतिया बूढ़ा में सुनि पावैं
आरे छाती फूलि के भइल रे गजराज
एतनी जो बतिया मो सतिया सुनलीं
आरे सती बड़ा रे मगन होइ जाय
एहर बुढ़िया घिउवा डबवन क डबवन
आरे बलको संवरू के करैं ली तइयार
एहर बलको देखा कहांर लगि गइलैं
बहगी पर सकला लै लैं रे लदवाय
सारा इन्तजमवा मोर गउरा में कइलैं
लेके बलको जिरउल की चलैं लैं खेतार
बारहन जोड़ी संगे सिहवा ले लं
आरे चउदह जोड़िया ले लैं न करताल
चउदह जोड़ी मोर घउसवा ले लैं
आरे गउरा ले लैं रे कुटुम पलिवार
सारा मो बरतिया जौ गउरा में सजाय के
आरे चललैं थाना जिरउल की रे खेतं
एहर गोलिया नव नव गंड़क तोरै
तेरह बलको भीउलो कै तोरै लैं पहार
रतिया चलैं ले पट्ठा दिनवै में धावैं
आरे कत्तों कूचवै न करैं ले मोकं
जब गोलिया जाइके जिरउल पर जुटि गइं
आरे संवरू प्रजरे गइलैं रे निअराय
एहर बीर लोरिक बलको गोड़वा पर गिरि गइलं

आरे संवरू जै जै मंचावै लैं का ऽ ऽ ऽ र
दुबरी बाबा के संगे में लेहले मोर हउवैं
आरे दुबरी बाबा डांड़ी के पजरवा गइलैं रे नियराय
डंड़िया से मंजरी निकलि बलको गइलीं
पंड़ित के जो गोड़वा गिरैं ले भहराय
धीरे धीरे दुबरो जे बाबा बोलैं
आरे मंजरी मनब्यु बात हमार
कइस मै पूजनिया होई रे जिरउल पर
ओइसे बलको पूजन कराय देईं तोहं

मंजरी का सूर्य बाबा एवं दुर्गा की पूजा करना

आरे बाबा पहिले सुरुजे बाबा के पूजबै
हम धन बलको मनउती करैं लै बड़ियार
फिर हइहै कइली ज मनउती दुरुगा कं
आरे थाना बलको अगोरी की बजार
जीति पाई माई मैं देखा लोहा जिरउल
पहिले जिरउल पर पूजवा मो करब तोहं
एहरवैं देखा दूबरी बाबा करै लगलैं
आरे बलको कुंड जो करैं लें तइयार
एहर मैं त सकला ज आगे रखि गइलैं
बहंगी क घिउवा भयल ले तइयार
एहर मैं पुजनीया बाबा बलको करे लगले
हथवा में संकलप देलैं मो थमाय
एहरवैं हवनवा जौ कुंडवै में भइलें
आरे जहाँ जै जै मचल बड़कं
एहर दुरुगा देखा मैं पूजन होय लागल
आरे दुरुगा बइठे लें असनवां लगाय
एहर सवरू मोर मलवा जौ जपलैं
एहर जौं मंजरी अंतह काल जपत बलको बं
जब ले पूजनीया मैं जिरउल पर होले
आरे सब लोग लगवले जौ हउवैं रे धियान
सब लोग मलवा जपत जिरउल पर
आरे भजन करत अन्तः काल
जब मैं पूजनीया जिरउल के खतम भइलीं

आरे बाम्हन बोसुन जो घलैं लैं खिआय
सबके नेवता मोर अगोरिया में देलै
जिरउल पर गोपिया ले लै रे बोलवाय
सबकर दावत जौ जिरउल पर कइलें

ब्राह्मण भोज के बाद अनूपी तथा नान्हू के साथ मंजरी का गउरा आने की तैयारी करना

तब एहर डड़िया अनुपइया के ले लैं फनवाय
एहर बलको नन्हुवां अगोरिया से अइलैं
आरे अनूपी डंड़िया ले लैं रे फनवाय
एहर देखा मैं सम सुनरी जौ जिरउल
आरे गोपी आइके भइल रे तइयार
एहर सब कर डंड़िया मैं सथवा में फनल
सम सुनरी पजरे गइल रे निअराय
धइ के जो गरवा मो मंजरी क रुवै
अब नाहीं होई जौ भेंट दीदार
अब जाति बाड़ू गउवां रे गउरा में
आरे गोपी उहाँ से देलैं रे लवटाय
बजवा मैं देखा जब बंठवा कै बजि गइलैं
आरे बाजा बाजति अन्तह काल
एहर अनूपी मंजरी कैं डंड़िया मैं फनि गइं
आरे बलको कहारै जौ ले लैं रे उठाय
अगवां जौ अगवां डांड़ी रे मंजरा कै,
तेकरे पीछे अनुपी कै संगवै मैं जाय
एहर बायें बनवा मैं सतिया चलति बाय
आरे दायें चलति रे दुरुगा माय
छतिस कोट कै देवता चललैं
आरे थाना चलैं लैं अगोरी की बजार
नव नव गंडक तोरन लागे
आरे तेरह भिउली कै तौरैं लैं पहाड़
रतिया चलैं लैं दिन धावन लागे
आरे कत्तो कूचवा न करैं लैं मोकाम

बोहा में मंजरी की डोली उतारना तथा उसका दुर्गा की पूजा करना

लेइ ले मैं डड़िया जो बोहवा में गइलैं

आरे बलको गइयन की गइलैं रे अड़ार
एहर बलको गइया बाड़ीं बोहवा के
संवरू के गयल जे अड़ार निअराय
जाइके मैं दुरुगा कै पूजनीयां कइलैं
बोहवा में डंड़ियै मैं देलैं रे टिकं
एहर मंजरी डांड़ी से निकल के गोपिया
आरे दुरुगा के चउरी गइल ले निअराय
कइलस पुजनवा जब बोहवा में
मंजरी मैं डांड़ी पर भइल रे असरे ऽ ऽ वार
उहवां से डंड़िया जो बोहवा पर चलि दे
आरे थाना कनउज की जालै रे बजार
एहर डांड़ी जब मंजरी गउरा में पहुँचल
आरे बुढ़िया के खुसिहाली रे मोरि मइया किलवा में मचल रे हउवै
आरे हइहैं बलको जुटि गयल रे मोरि मइया कुटुमवा न परिरे वं
आरे हइहै बलको सखिया रे सहेलर आइ के जुटि हो गइलीं
आरे जहां भजन होये लागल रे मइया संझवौ रे बिहान
आरे तबले मंजरी के डांड़ी रे मोरि मइया दुअरिया पर लगि हो गइलीं
आरे बूढ़ा फटके पर मोरि मइया भयल बाड़ीं तइरे रं

सतिया का मजरी का भजन देखकर मोहित होना

आरे एहर मंजरी के रे मोरि मइया डंड़िया से हउवै निकलले
आरे ले जाके अपने कीला अगनवां में खड़ी हो कइलस
आरे एहर बाजा बाजति बा रे मइया गउरवां न गुजरे रं
आरे एहर सतिया गोपिया ना रे मोरि मइया मजरी के देखि रे लेहलस
आरे सतिया देखि के रे मोरि मइया मोहितवा तब होइ रे गइलीं
आरे हम त जनलीं हमहीं रे मोरि मइया सोहवल भजनिया न कइले रे बाड़ी
आरे तवन मंजरी कइले बाड़ै रे मइया अगोरियौ की रे बजं
आरे हइहै देखा भजन ए यारों लोरिकी समापत बतको होत रे हउवै
आरे एहर राम राम राम रटत रे मइया गइल बाड़ैं निअरे रं
आरे एहरवैं देखा लोरिक कै खेलवड़वा बबुवा ना बोति हो गइलैं
आरे बईठ के लोरिक गउरा में भूंजत बाड़ैं रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया
आ एकवटे में ना रे रा ऽ ऽ ऽ ऽ ज [६८]

[**लोरिका का बिवाह समाप्त**]

● ●

अध्याय ३

चनवा का उद्धार

कुसुमापुर नैहर आते समय चनवा की बांठा से भेंट तथा बांठा का प्रेम प्रस्ताव करना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम
सुना हाल अगवाँ कै
आरे चनवा अपने सासुर से नइहर को जात ह
आरे एहर गउरा के बंठवा जंगल में रे मइया मोरि खेलति रहलैं नारे सिका ऽ ऽ ऽ र
आरे तब ले सनमुख मोरे चानवा समनवा बलको आई हो गईल
बंठवा देखि देखि रे मइया मोहित बाड़ैं होइ रे जं
आरे एहर चनवै के अगवां जो बठवां मोर खडा रे भइलैं
आरे पहिली होई जाबू रनियां बियहुती ना रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तब तै धीरे धीरे चनवा जौ बंठवा के समुरे झावै
आरे हम धन गउवां कै भइया बहिनियां जो बिटिया रे बाड़ीं
आरे हइहै का फूटि गइल बीरना जौ अंखियों ना रे तो हं
आरे हइहै कइसे हमके एठियन बियहुता ना हउवा बनावत
आरे बंठवा अब गोपी तनियै जंगलवा मैं नाहीं रे छोड़ब
तब तैं चनवा कहलस तोहरइ ए बंठवा बियहुता जावै हम होबै
आरे एही बेले कै पुरइन कै तू बेलवा आनि हो देब्या
आरे बंठवा डांकि के ए बबुआ जौ बेलबा पर चढ़ि हो गइलैं

चनवा द्वारा सत का स्मरण कर पेड़ की लता में बांठा को जकड़ देना

आरे जब धीरे धीरे चनवा मोर बेलवा न लगल रे बनावै
आरे नीचवां से सतवा के जौ चनवां मोर बेरियां के सुमिरत रे हउवै
आरे जागि गयल ए यारों मोर सतवा रे चनवा कै
आरे पेडियां से एइसन बंवरिया मो उपरैं के चढ़ि हो गइलीं
आरे बंठवा के सारी मोर बंबरियै जो उपरैं में बान्हि हो देला
आरे तब तै जंगल रे मोर चनवा जौ चलत बाड़ैं ना रे परं
आरे बलको भागल भागल चनवा कुसुमापुर में चलि हो गइलीं
आरे सहदेव महदेव के मइया पवनवों ना रे दुअं

कुसुमापुर में चनवा का पुन: सत स्मरण करना तथा बांठा का लता से मुक्त होना और कुसुमापुर में आकर सहदेव और महदेव का द्वार छेकना

आरे एहर सतवा मं गोपिया कुसुमपुर हउवे मनवले
आरे बंठवा के जंगल में रे मइया जौ बेलवा पर छोड़ि रे देलैं
आरे बंठवा उतरि के भागल भागल कुसुमापुर में आयल हउवैं निअरे रं
आरे सहदेव महदेव कै जाइके दुअरिया मो छेंकि रे लेहलस
आरे कहलस सम्मन आइल ए बबुआ बियहियौ ना रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे सहदेव महदेव ए मइया दुअरिया पर झंकै रे लागैं
आरे हइहै नाहीं आयल बाड़ैं बंठवा बियहयिा रे कुसुमापुर
आरे अपने घूमि चलि जाबे रे बबुआ गउरवैं बलको गुजरे रं
आरे बंठवा छोड़ि के दुअरिया जौ तनिको नाहीं रे हटै
आरे एहर मतारी मै चनवा कै सिल्हिया जौ उठि रे गइलीं
आरे भागल गइल में देखब्या गउरवैं बलको गुंजरे रात
आरे जाइके लोरिक के खबरिया आ बंगलवा में देइ रे देला
आरे कहलस हइहै ए मइया हमार
कुसुमापुर में इजतिया न जाति रे हउवै
आरे बठवा छेंकलसि रे मइया पवनवौं ना रे दुअं
आरे आजु इज्जत बचाय द्या आरे गढ़ कुसुमापुर में
नाहीं बिगड़ति बाड़ैं रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया
अ धरमवा ना रे हमा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र [६७]

बीर लोरिक का सहदेव की मान रक्षा के लिए आना तथा बांठा को पीटना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं
तब बीर लोरिक बंगला छोड़लैं
आगे आगे बुढ़िया चलल पीछे अपने परायल जांय
भागल गइलें गढ़ कुसुमापुर
सहदेव महदेव के पवन दुआर
बंठवा देखलस बीर लोरिक के
जै राम भइया जै राम भइया आरे बाबा गावत बाय
लोरिक पूछैं लैं का बंठवा बइठल आ बाड़ैं
कहैं भाय कुछ कहै जोग कै बात न हउवै
आरे मोर रानी किला में आयल हउवै
तनी एक भाय तूं मनजूर कइल्या हमके जल्दी देब्या रे दिवाय
एतनी बात बीर लोरिक सूनैं

आरे बठवां तनिको जुमुस ना खाला अन्त:काल, लड़त बलको बाय
तबले बीर लोरिक तानि के घुटुना' बठवां के मरलैं बांठ गिरल भहराय
फिन दउरलैं मारै बदे बठंवा चलल पराय
भागल अपने गउरां गइलैं
आरे लोरिक अपने पवनरे दुआर
एहर मै चनवां के खटका भइलैं कि भाई
बठंवा आपनी स्त्री हमैं घललस बनाय, दोष लगल जंगले में
आरे बलको पंडित ले लै बलाय पंडित से पतरा खोलवावैं
आरे बाबा देखा कउनो दोस हमके लगल बलको बाय

चनवा का प्रायश्चित करना तथा उसका लोरिक पर मुग्ध होना

कउनो जग्य मैं करीं ऐ बाबा आरे बलको बन जाय धरमवा हमार
पंडित बाबा कहि देहलें खूब तूं जग्य करावा चन्ना तब कटी पाप तोहं
आरे चनवां जग्य कुसुमापुर रोपले, सब बाभन बिसुन घल्यैं खिआय
जब खिआय के चनवा खाली भईल
तब फिर पंडित बाबा से पूछै कि ए बाबा अब पाप कटि गइलैं
कि अबहीं कुछ पाप रहि गइलैं
पंडित बाबा मोर कहलैं कि सबके खिअउलू
लोरिक के ना बलवलू ना कहलू आरे जे धरम बचउले बाड़ैं तोहार
अबहीं पाप तोहके लागल बा चन्ना फिर न जग्य तूं करा
चनवा फिन मोर जगिया औ कुसुमबापुर करै रे लागल
आरे हइहै नेवतइ रे मइया देहले हउवै पठरे वं
आरे लोरिक अपने रे मइया कुसुमापुर में बलको रे अइलें
तब चनवा कहलस सबकर भइया सब भोजन हउवैं करवले
आरे हम एनकर भोजन कराइब रे मोरि मइया पवनवों ना रे दुअं
आरे तब तैं चनवा मै लोरिक कै भोजनिया मोर लगल करावै
आरे बलको देखि देखि अहीरे के मोहित बाड़ैं होइ रे जं
आरे जब भोजनै रे मइया औ किलवा में हउवै करवले
आरे हइहै खिलि खिलि बिड़बा देले हउवै ना रे थमं
आरे लोरिक मुंहवा में पनवा कुसुमापुर में नाइ हो लेला
आरे अपने गइलैं रे मोरि मइया गउरवैं बलको गुजरे रं

दूसरे दिन चनवा का अपनी माँ से गउरा जाने की अनुमति मांगना

आरे एहर देखा चनवा बिहान भ अपने मंतवा से बोलै रे लागै

आरे मावा तनी जाब ए मतरिया अ गउरवैं बलको गुंजरे रं
आरे हमके छूटिया ए मावा तनी गउरवै में देइ हो देबू
आरे हम बसावन कोइरी की मावा जाबै बलको कोइरे रं
आरे कुछ भंटा ए मावा अ गउरा ले लेइ हो आई
आरे सिल्हिया छुटिया देखब्या चनवा के देइ हो देला
आरे चनवा जात बाड़ैं रे मइया गउरवैं बलको गुजरे रं
एहर से मोर चनवा गोपिया कोइड़रिया में पहुँच रे गई
आरे ओहर मंजरी मैं गोपिया किलवा ले नीकल रे देला
आरे बलको बसावन कोइरी के कोइड़रिया में पहुँचि रे गई
आरे तब तइ धीरे धीरे मंजरी खेतवा पर बालै रे लागल

बसावन कोइरी के खेत पर चनवा और मंजरी की लड़ाई, बसावन का लोरिक से चनवा व मंजरी की लड़ाई की बात कहना

आरे ओहर चनवा भउजी भउजी घलति बाड़ैं गोहरे रं
आरे तबतै मंजरी कहलस
दिनवा में मौहियां भउजी भउजी कहत रे वाड़ैं
आरे रतिया में सवत मइया मैलगत वाड़ू ना रे हमं
आरे जब अइसे मंजरी बतिया मोर कहै रे लागल
आरे दूनो अन्तः काल लगलीं खेतवा न मयरे दं
आरे बसावन दउर दउर अगवा गोपियन के दउरत रे हउवैं
आरे जेकर भंटा रे मइया गरदवा में मिलि हो गइलैं
आरे बसावन भागल भागल लोरिक के गइलैं पवनओं रे दुअं
आरे जाइके लोरिक से टप दे बंगले में बतिया मोर कहि रे देला
आरे मइया मंजरी चनवा खेतवा पर लड़त रे बाड़ीं
आरे एहर लोरिक आपन जो बगलवा छोड़ि रे देलाँ
आरे भागल भागल गयल संगे बसावन कोइरी के कोइ रे यं ऽऽऽऽ
आरे हइहै टप दे लोरिक मोर खेतवा पर खोंखि रे देलैं
आरे एहर मंजरी छोड़ि के मोर चलल बाड़े नारे परं
आरे ओहर चनवा जों देखबा अहोरे से कहै रे लागल

चनवा का लोरिक से हलदी चलने का प्रस्ताव करना, पीपल के वृक्ष के नीचे मिलने का निश्चय

आरे हमके लेके समियां हरदिया के चलि रे चलत्या
आरे नाहीं जुलुम बलको मचल हउवै बड़ि रे यं

आरे कुछ दिन चलि के समियां हरदियै में रे बिताई
आरे कुछ दिन चलि के समियां हरदियै में रे बिताई (पुनरावृत्ति)
आरे फिन घुमि के अवत्या मइया गउरवैं अपने गुंजरे रं
आरे चनवा इहैं बलको बतिया लोरिक से बति रे यावै
आरे लोरिक कहैं बड़ा निन्दा रे मइया जौ गउरा में होइ रे जइहैं
आरे मइया सुनिहैं मइया मोर गइयन की रे अड़ं
आरे हमरे कुलवा में चनवा जौ दगिया न लागि हो जइहैं
आरे चनवा घींचि के देखब्या अ माया न मारि रे दे लै
आरे तब तै एहर लोरिक अकिलौ गइल हउवै घबड़े रं
आरे चनवा कहलस हमके ले के ए समिया हरदिया के नाहीं ए चलत्या
आरे तोहरे पर खाइके ए दुलहा जहर बलको मरि रे जं
आरे बड़े फेर में अहीर मोर गउरा के परि हो गइलैं
आरे एहर एइसन रुपवा जो गोपिया हउवै देखवले
आरे तबतै देखि देखि मइया मोहित बाड़ें होइ रे जं
आरे तब तै परि गइलैं में ए यारौं बदनवा रे हरदो कै
आरे तब तै चनवा कहलेस कहवां आइ के तूं डेरवा तूं बलको रे देब्या
आरे कीत हम्मैं तूं डेरवा ना हो बतावा
अ कीत तो हैं हम डेरा बबुआ जो देइ रे बातं
आरे तब तैं एहर बोलत हउवैं अहीरवा रे गउरा कै
आरे तूं हमहीं के डेरा गोपिया जौ देबू हो बतं
आरे चनवा कहलस कि ओही टिकुलिया विपरेतर रतिया में आवा
जे पहिले पहुँची छेब लगाय के अरे बलको जे न जाये के होई
घूमि जाई रे मइया गउरवैं न गुंजरे रं
एहर चनवा सांझै जाइके पुलुइयां पर बइठल हउवै

मंजरी का चुन चुन कर भोजन बनाना

आरे एहर मंजरी के सबद गउरा में होइ रे गइलैं
आरे मंजरीं चुनि चुनि भोरि हो मइया अ सेजरिया न हउवै लगवलें
आरे चुनि चुनि बीजन मोरि मइया अब घललसि ना रे बनं
आरे एहर मैं तले जाके लोरिक के रे मोरि मइया
अ बोजनवां व हउवै करवले
आरे हइहै ले जाके सेजिया पर गोपिया देहलै हो अ गउरवैं ना रे सुतं
आरे अपने गोड़वौ में गोड़वा मै रनियां अ पलंगिया पर बलको बान्हि
हो ले ले

आरे सगर रात बेनियै रे मोरि मइया अ घलति बाड़ैं ना रे डोलं
आरे रूवत हमके छोड़ि के रे समिया अ हरदिया के जाति रे हउवा
आरे अधजल में बोरले जालें रे पपिया
अब डोंगवउ ना रे हमं ऽऽऽऽ
आरे सइयां अपने गउवां हरदिया अ बलको ले के चलि हो जाब्या
आरे अधजल में डूबि जाई रे मइया अब डोंगवउ ना रे हमं ऽऽऽ
आरे मंजरी रतिया भर मोर बेनियां अ सेजरिया पर हउवै डोलवले
आरे एहरवैं होत बड़का भिनसहरा अ पंजरी गोड़तरियां सूति हो गइलीं

मंजरी के पैर से पैर छुड़ाकर लोरिक का पीपल के बृक्ष के नीचे आना

आरे लोरिक गोड़वा से गोड़वैं रे मइया अब मंजरी कै छोड़ि हो लेला
आरे भागल भागल टिकुलिया मोर पीपरवा अ गयल बाड़ बलको निअरेरं
आरे जाइके पिपरे में हाली हाली छेवुवा पिपरवैं मैं हउवैं लगवले
आरे अबहीं नाहीं आइल बाड़ हो मइया अ गोपिया रे कुसुमा से
आरे छेब लगाय के अपने भागल जालैं रे मोरि मइया
अ गउरवैं बलको गुंज रे रात
आरे पिपरे पर से ललकारत हउवै अरे घटिया हउवै
घटिया भयल रे मोरि मइ ऽऽऽऽ या
अ तोर कुटुमवा बलको परिरे बा ऽऽऽऽ र [६८]

लोरिक तथा चनवा का गायों की अड़ार में बोहाँ आना

हां ऽऽऽऽ हां ऽऽऽऽ
तब लोरिक लवटि के पिपरे के तरे गइलैं
चनवा उतरल नीचें आरे बजर परो सामी तोके परो बजर कै धान
तब लोरिक नीचे मउर लटकल की जुलुम भयल बड़ियार
बड़ा भारी बात हरलीं हम कुल में दाग लगवलीं
एहरियां सोचै अहीर गउरा कै
आगे आगे अपने, पिछवा पिछवा चनवा चलै लगल
आरे जब धीरे धीरे गाइन की चललैं अड़ार
तब बीर लोरिक कहै चनवा से, कहलै तनी आड़े एही ढेकुली तरे बइठा
तनी भइया से कई लेईं भेंट दीदार
तब चनवा कहलस जौ तूं अपने भइया से भेंट जो करब्या
तनी हम भसुर से कइ लईं मुलाकात
एहर मैं चललैं गइयन के आरे पयरी बजै चनवा कै झंझा कार

बीहे क गइया सारा कान उठा के ताकैं मलसांवर
नान्हूँ नान्हूँ गोहरावैं नान्हू भइलैं बगल में ठाढ़
देखा देखा पिपरे पर से कउनो सिंही सेर आयल हउवैं कउनो
बघवा आयल हुँड़ार
कउनो ना ए भाइ बोहै में सारी गइया कान उठाय के खड़ी हईं
डांकि के नान्हू पिपरे पर चढ़ गइलैं
आरे लगाय के ओसारी देखै
आगे आगे बीर लोरिक रे तेकरे पाछे चन्ना
तब नान्हू कहैं मलसांवर से ए बहनोई
एक बाघ आगे आगे एक बघिनी बोहे में आवत हउवै तोहसे करे बदे
भेंट दीदार

मलसांवर का लोरिक से कहना कि बोहा में रह जाओ

आरे जब लोरिक गाइन में पहुँचैं
मलसांवर के गोड़े पर गिर परलैं
मलसांवर मै बोलैं नाहीं
आरे बचवा कहा हाल गउरा कै
कहां तू जात हउवा एकर भेद बताय द्या
आरे चिन्ता बढ़ल बदन में, बताय ऽ ऽ ऽ ऽ द्या
का कहीं भइया बात कहै जोग कै नांहि
बड़ी गलती भाई कइले बाड़ीं
आरे बड़ी गलती भाई कइले बाड़ीं (पुनरावृत्ति)
आरे गलती माफ़ देइ देबा हमार
एहर मलसांवर लोरिक के समुझावैं
एक गलती का कवन चलावै
आरे गलती कै नावा बलको दुइ चार
कहा बोहवा में तोके महाजनि बनवाय देईं
पक्का देईं बलको रे पिटवाय
ले के चनवा के बोहे में रहा
मति जाब्या हरदी की रे बजार
जौ हरदी में जाब्या बचवा
आरे दुसुमन होइ रे कुटुम परिवार
चढ़ि आई गढ़ कुसुमापुर जौ सहदेव महदेव
मोर गाइन कै अइहैं अड़ार

आरे एक अलंगे गढ़ पिपरी चढ़ि आई
आरे बोहा लूटल जाई तोहार
एतनी बात मलसांवर कहलैं
आरे लोरिक के झर झर बहत हौ नयन से आंस

लोरिक मल सांवर की बात मानने में असमर्थ

तब कहलैं ए भइया नाहीं हम बलको बतिया मानब तोहार
हम हरदी जाबै तब मल सांवर लोरिक के समझावैं
कि अच्छा भइया दूध पीला भइया बोहवा में
बहुत दिन दूध पीयला अ बयनन कै
बछरू छटकावैं सोने क मांजि ले लैं गिलास
एक बयना दूहि के मलसांवर लोरिक के मुंहे देलैं लगाय
घोंट घोंट जब पीयन लगे तब चनवा पीछे खड़ी हौ सोचै मन में
आजु दूध कुल पी जालैं, आज न जइहैं हरदी की रे बजं
आरे तबले झम झम झम आरे गोड़े क कड़ा बजावै
मुहे क दूध कुल्ला कइ देहलैं
आरे तब तैं संवरू रुवैं लगलैं रे मइया अ गइयन की रे अड़ार
आरे अब हमरै ए भयवा जिनिगिया नाहीं रे बचीं
आरे फेरवा में नवले जाला ए भइया जिनिगियौ ना रे हमार
आरे अपने गउवां ए बचवा हरदिया के जाति रे हउवा
आरे फिर हमसे तोहसे ना होई रे मइया अ भेंटिया ना रे दीदा ऽ ऽ र [९९]

चनवा और लोरिक का बोहे से आगे का प्रस्थान तथा
चनवा के पति सिवगढ़ व लोरिक में कुश्ती

आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब लोरिक अगवां रे अगवां, पीछे चनवा रेवरले जाय
नौ नौ गंडूक तोरन लागें, आरे तेरह भिउली कें तोरै लै पहाड़
मल सांवर गइयन में देखं, आरे पतिया में दे लें रे लिखवाय
एहर से मैं पतिया लोखति बाड़ैं, तब सिवगढ़ के पाती लिखलैं
तोहरी मेहरिया चन्ना के आरे मोरे भाई लेहले जा ऽ ऽ ऽ ऽ य
अगवां से छोरि लेबा बलको आरे जाके सिउगढ़ जंगल में बइठल बाय
हां तब जाके जंगले में पहुँचल सिउगढ़
उठि के अगवां लोरिक के भयल बाड़ैं तइरे यं
आरे हइहै हो गईल ए यारों बजनियां रे अहीरे से

आरे लड़त लड़त दूनों जंगल में गयल बाड़ैं धवड़े रं
आरे एहर सिउगढ़ लोरिक के मोर नीचवैं से हउवै दबउले
आरे चनवा जोर से रे मइया जंगलवै में खोंखत रे हउवै
एत्तरे बतिया ना तोहन लोगन कै मनबै
दूनो जने उठि के खड़ा होके बलको रे लड़ा
एदवां जे पटकि देईं ओकरे संगवै
ए मोरि मइया जौ हमहूँ न चलि रे जं ऽऽऽऽ
आरे तब तै दूनों बलको पठवा जंगलवा में लड़ैं रे लागें
आरे तब तै चनवा इसरवा मोर लोरिक के देबै रे लागल
आरे बलको तानि के एड़वा बेवइया मे मारि हो देबा
आरे बलको गिर जइहैं रे मइया धरतियौ में रे भहरं
आरे तब तै तानि के मोर एड़वां बेवइया में मरले रे हउवै
आरे सिवगढ़ गिर गइलैं रे मइया धरतियै में महरे रं
आरे तब तै अंगवा मा अंगवा अहीरवा रे गउरा कै
आरे पीछवा पीछवा चनवा रे मोरि मइया हरदियैं की जालैं बाजं

चनवा तथा लोरिक का हल्दी पहुँचना तथा चनवां का कलवारिन के पास मद के लिए जाना

आरे जौ मोर गउवां हरदी में जो चनवां जब पहुँचि रे गई
आरे गउवां के बहरे मोर पक्का जो इनरवा बनल रे हउवै
ओही पर चनवा लोरिक बलको बईठ रे गइलैं
आरे तबतै धीरे धीरे चनवा मोर लोरिक के जो समुझावै
आरे एही जगते पर समियां तोहैं बलको बइठल रे रहब्या
आरे हम धन जाईं रे मोरि मइया हरदियौ की रे बाजं
आरे कुछ खरचा ए समियां हरदिया से लेइ हो आईं
आरे एही टिकल जौ रे मइया हरदियै की बलको बाजं
आरे चनवा दू ठै मोहरवा जौ सोनवा के लेइ हो लेला
आरे लेके गइल बाड़ैं गोपिया हरदियौ की रे बाजं
आरे बलको जेकर जेकर ना घर मोर हरदिया में परत रे हउवैं
आरे जेकर एइसन रे मइया जननवा रे हरदी में
ओकर मनसेधू कउने मोरि मइया बरनिया कै बलको रे बं
आरे हरदी इहै बलको बतिया हरदिया में झंखे रे लागल
आरे चमवा धीरे धीरे गोपिया बजरिये में घूसल रे जाला
आरे एहर अखाढ़ा रे मइया गइल हउवैं निअरे रं

आरे गुंड़ा सोहदा रे मइया जो बोलिया बोलै रे लगलैं
आरे चनवा दरियैं टप देन देति बाड़ैं ना रे जबं
आरे भला ई बतावा अइसन बोलिया पयंड़िया में बोलत रे हउवा
सोचत बाड़ा मनसेधू हमहीं बाड़ी रे मोर मइया हरदियौ की रे ब जं
आरे तोहरे अइसन मनसेधू आ बहुत हम देख ले रे बाड़ी
आरे जवने दिन समिया से बबुआ जौ भेंटिया न होइ रे जइहैं
आरे तोहार मार नइहैं जिनिगिया हरदियौ की रे बाजं
आरे गोपी उहवां से अगवां बजरिया में पहुँच रे गइलीं
आरे आपन सारा मैं समनियां बजरिया में तउरेलावैं
आरे फिन लोरिक कहलैं तनी एकन गोपिया मदिया रे महुवा कै
आरे हमके ले आवा ए गोपिया हरदियौ से बलको रे तनीं
आरे ओहर चल गइल गोपिया मदवा जौ देखा दुकाने
आरे एकठे टकहवा मोहरिया आ अगवां न फेंकि रे देलैं
आरे जमुनी उठाके मोहरिया किलवा में हलि रे गइलीं

जमुनी कलवारिन का बोतल में दो बूंद शराब मिलाकर पानी दे देना

आरे बलको बोतल ले मइया पनियां से भरि रे देलैं
आरे दो ठोंप उपरां से मदिया दे लैं बाड़ैं ना रे चुवं
आरे सिलहवैं मोहरवा जमुनो जौ कइ हो देहलस
आरे बलको चनवा के हथवां देले बाड़ैं ना रे थम्हं
आरे चनवा लेके रे मइया जगतिया पर पहुँचि रे गइलीं
आरे लोरिक के हथवा में देले बा बोतलियो ना रे थम्हं
आरे ई त काग ए बबुआ बोतलिया क खोलि रे देलैं
आरे देवता दनियां सारा इनरवा पर हउवैं मनवले
आरे मुहवां के बलको बोतलवा न हउवैं लगवले
आरे बलको नसा तनिको नाहीं रे बुझं ऽऽऽऽ
आरे गोपी कहिया कै संगवा मोरे बयरिया न कइले रे बाड़
आरे कहिया क दगइया चुकावत बाड़ रनिया हरदियौं की रे बाजं
आरे भला कउनो दुकाने ए गोपिया तूं मधिया रे महुवा कैं
आरे हम त देवता दानी से झूठ बलको परि हो गइलीं
आरे चनवा टप देना गोपिया देलें लगल ना रे जबं
आरे सामी कब्बों आंखी से कुसुमापुर में नाहीं रे देखल
आरे हरदी में कइलीं बलमुवा कहलवो ना रे तोहं
आरे हमके काग में लगाय के मदिया न देइ हो दे लैं

आरे लोरिक जरि जरि के मइया भसम बाड़ैं होई रे जं
आरे बलको रतिया गुजरवा जगतिया पर कइले रे हउवैं

लोरिक का प्रातः काल जमुनी के पास जाकर डांटना तथा जमुनी का अच्छी शराब देना

आरे बलको होय मैं सबेरवा हरदिया में घुसि रे गइलं
आरे जमुनी के पवन रे मोरि मइया गयल बाड़ैं ना रे दुअं
आरे जाइके चनवा मै गोपिया बंगलवा में बइठि रे गईं
आरे एहर लोरिक जाइके जमुनी के अगवां मों खड़ा रे भइलैं
आरे कवन अइसन दगा गोपिया हरदिया में दे ले रे बाड़ीं
काहे बदे अइसन पानी भर के भेजि देलू हमरे पवनवीं रे दुअं
आरे तब तै धीरे धीरे जमुनी हरदिया में समुरे झावैं
आरे हम सोंचलीं की जेकर अइसन तरवटा ना बलको रे हउवैं
आरे मनसेधू कवने रे मोरि मइया बरनियां कै बलको रे बं
ओही बदे देखे बदे बबुआ हम पनियां न भरि रे देलं
आरे अब पी लेबा बबुआ मदिया रे महुआ कैं
आरे तब तै धीरे धीरे लोरिक मैं जमुनी से कहै रे लगलैं
आरे हम बड़ी दूर कै परदेसिया हरदिया में आयल रे बाड़ीं
आरे कउनो हमके बंगलवा मै जलदी कइ देबू तइरे यं
आरे जमुनी कहलस हमरय बलको बंगलवा लेइ हो लेबा
आरे हइहै रहब्या ए बबुआ हरदियौ की रे बजं

लोरिक को सुरसरि का स्नान और अपना शिव पूजन स्मरण हो आना

आरे जेके दस दस दिनवां हरदिया में बीति हो गइलैं
इगरहवां मोर दिनवां रे मोरि मइया गयल हउवै निअरे रं
आरे ईत सुरसर क रोज क नहवइया बलको हइहै रे रहलैं
आरे जब ले छूट गयल मइया नहनवां रे सुरुसर कैं
आरे सिव क पूजन छूटि गयल मइया गउरवैं बलको रे रं
आरे लोरिक के मनवा में सोचिया हरदिया में बढ़ि रे गइलीं
आरे हमके दस दस दिनवां गउरवां में छूटल ले भइलैं
आरे एहर बरहवा दिनवां गयल बाड़ैं निअरे रं
आरे हमके आजु भइया पपवा जौ लिखत रे हउवैं
आरे लोरिक अपने होतै सबेरवा
जमुनी के देखब मोर कीलवा गयल बाड़ैं निअरे रं
आरे जाइ के सहुआइन सहुआइन जौं कीलवा पर गोहरे रावैं

आरे जमुनी हो गइल गोपिया दुअरिया पर तइरे यं
आरे कहलसि कवने करनवा बाबू हम्मैं गोहरवल्या
आरे तब तै धीरे धीरे लोरिक जमुनी के समुरेझावै

लोरिक का सुरसरि के तट पर जाकर बारह कन्याओं का साधु वेश में देखना

आरे हमके दस दिन सहुआइन नहइलै बलको होइ रे गइलैं
आरे हमके सुरसर क पंयड़ा देबू बलको ना हो बतं
आरे तब तै धीरे धीरे जमुनी हरदिया में समुरेझावै
आरे बड़ा दूर पर घटवा सुरुसर क बनल रे हउवैं
आरे बालू क रेतवा में बबुआ तोहीं बलको चलि हो जाबा
आरे गोड़वा में झाला आई जौ हरदियौ की रे बाजं
आरे कहा घड़ै क घड़ा हम पनियां जो मंगरे वाई
आरे चन्नन क पिढ़वा रे मइया देबै तोहके रख रे वं
आरे बलको बइठ के नहनवां हरदिया में कइ हो लेब्या
आरे कहा तोहैं सतवा क धरमवा हरदिया में बहरे वाई
आरे गोता मारि लेब्या बबुआ हरदियौ की रे बाजं
आरे तब तै लोरिक कहै सतवै के धरवा तोहरे बलको नाहीं नहावैं
आरे जवन असली में धरवा सुरुसर क बहि रे गइलैं
ओही में गोता मारि देबै मइया अ गहिरवाँ न बलको रे घं
आरे जब त सुरुसर पयंड़या हरदिया में नाहीं बतइबू
आरे हम चलि जाबै रे रनियाँ गउरवै बलको गुजरे रं
आरे जमुनी कहलस इहै मोर पयंड़वा घटवा में जाति रे हउवै
आरे लोरिक धइलस रे मोरि मइया पंयड़वा रे घटवा कै
अब जब करारे पर भइलैं, लगाके ओसरिया
लोरिक बलको ताकत रे हउवैं
ओहर बारह सै सथि साधु घटवा में
गाँड़ी मूड़ी कफनी हरदिया में कइले रे हउवैं
आरे माला जपत बाड़ैं मइया सझवौं रे बिहं
लोरिक मन में सोचै भला मारी मैं रे गोतवा सुरुसरि में
बारह सै संतन क दरसन करत बनि जाई रे मइया मुकुतियों रे हमं
आरे लोरिक धीरे से करारवा के नीचवा में उतरि रे गइलैं
हाली हाली सुरुसर में लोरिक रचलैं रे नहं
एहर बलको सारा असबबवा बदनिया पर हउवैं चढ़वले
आरे बारह सै संतन के पजरे लोरिक मो गयल बाड़ैं निअरे रं

आरे ऊ संत पूरुब के मुंहवा घटवा में कइले रे हउवैं
लोरिक के देखलैं पच्छुम मुंहै मुंहवा ले ले बाड़ैं ना रे घुमं
आरे कउनो नंगा लुच्चा घटवा में आवत रे हउवैं
आरे तब ले लोरिक पजरे बलको गयल हउवै निअरे रं
आरे एहर मैं हथवा जोरि संतन के पीछे रे खड़ा
आरे बहुत देरी ए यारों जौ घटवा में होइं रे गइलैं
आरे संत तनिको ताकत नाहीं मोरि पलकियो रे उठं
लोरिक के दिल में संका मइया जौ घटवा में होइ रे गइलें
आरे मज्जन इहै कइले बाड़ी मइया ओढ़रवा रे चनवा कै
आरे बाबा जानति बाड़ैं सुरुसरै के रे किनं
आरे तब तै धीरे धीरे बोलत बा अहीरवा हो गउरा कैं
आरे राम कवने करनवां जो मुंहवा बाड़ा घुमवले
आरे कवन बिगड़ गयल मइया धरमवौं रे हमं
आरे तोरे दरसन कारन धरवा में खाड़ा रे बाड़ीं
तबले एक ठे गोपी घूमि के पुरूब मुहवां जौ होइ रे गइलीं

कन्याओं का अपने बन्दी पतियों के बारे में लोरिक को बताना

आरे बबुआ हमहन साधू नाहीं रे मइया अब घटवा में बलको रे बाड़ीं
आरे हमहन बारह सै गोरी ए बबुआ
अ मलवा घटना में फेरत रे बाड़ीं
हमहन कै सेन्हुर नेउरापुर में रे मइया अ परल हउवै बन रे खं
आरे तवन बइठल जोहत बाड़ी ए बबुआ अ पंयडिया रे अहीरे कै
आरे जेकर लोरिक रे मोरि मइया अ बघेलवा परल हउवैं नांव
आरे नाहीं आयल रे मोरि मइया अहीरवा हो ग ऽ ऽ ऽ उरा कै
आरे नाहीं नेउरापुर ले छुटलैं रे मइया अ बलमुऔं ना रे हमार
आरे कुछ दिन अउरो ना रे मोरि मइया
अ पंयड़िया बलको जोहि रे ले बै
आरे जिनिगी हम देईं देबै रे मोरि मइया अ अंहीरवां ना बलको रे घं
आरे तब ले बाड़ैं रे मइया अहीरवा हो ग ऽ ऽ ऽ उरा कै
आरे हम लोरिक तोहरे अगवां ए रनियां अ
भयल बाड़ीं बलको तइरे यार
आरे जवन बीपत जौ हरदी में परल होई
बलको काटि देबै हो मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
अ बिपतिया ना रे तो हा ऽ ऽ ऽ ऽ र (१००)

लोरिक की प्रतीक्षा में हम लोग साधु वेश में माला फेर रही हैं, कन्याओं का कथन

आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं राम ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम
सारी गोपी लोरिक के ओर ताकै लगनीं, लगनो निहारै
तब एक एक ठे गोपी बोलत हौ तोहीं अहीर गउरा कै हउवा
हमहन बारह सै गोपी गढ़ हरदी से जिनगी देवै सुरुसरि में चललीं
कि जरि जाय बिना बैल क खेती जरि जाय बिना पुरुष कै नार
अ जरि जाय बिना भंइस क घरवा, आंगन छोंड़ी देंवका गइलैं चबाय
तवने घाटे में अइली बबुआ एक डंडी रूप साधू मिललैं
घाटे में कहलैं कहां जात हऊ गोपी हमहन कहलीं
बाबा जिनिगी देबै सुरुसर में हम हन कै सेन्हुर नेउरापुर परलैं बनखान
आरे तवन ऊ बाबा सन्त कहलैं कि एही घाटे में गांड़ी मूड़ी कफनी कइके
माला जपा बारह बरिस जब पूरा होई तब आई अहीर गउरा कै
घाटे में रचैं आई नहान, तवन छोड़ाइ देई बलमुवा रे तोहार
तवन उहै माला जपत बाड़ीं बबुआ, अ फिन कहलैं कि बाईं बगल
गुल्ली का घाव होई, दहिने चमकत होई मथवा लिलार
जंघा रे केदरियन क खंभा, मुसुक होई रे खयर कर रंग
सेर धूर गरदन पर होई, आरे पवन चमकी माथ लिलार
बायें बगल में ओड़न होई, आरे दहिने होई बिजुलिया खांड़
बन्हले होई पाग नरमें कं आरे जेकर चोर नेतर फहराय
एही त बरन कै बाबा कहलैं, तवन एको रूपवा नाहीं तरे देखायं

लोरिक का अपना परिचय देना और
शरीर का चिह्न दिखा कर गोपियों को विश्वास दिलाना

एतनी बात लोरिक जब सूनें आरे सिर क पगरी दे लैं रे उतार
बायें बगल में गुल्ली लउकैं आरे दहिने चमकै मांथ लिलार
बदने क निरिखी जौ अपने निकालैं आरे जंघा केदरियन कै रे खंभा
आरे मुसुक लउकै रे खयर कर डार
छतिया बलको रे गजबरन आरे पेटे लेटै लैं पुरइनी क पात
सारी गोपी बीर लोरिक के देखि के आरे घटवा में पीटि पीटि के छतिया
अ रनियां जौ रूवै रे ला ऽ ऽ ऽ गैं
आरे जेकर अइसन रे मोरि मइया ललवा
न नेउरापुर मारल रे जालं
आरे गउरा रोई रोई रे बबुआ अ मतरियौ ना रे तोहं

आरे हमरे नरकी जिअरा कारन जौ जिनिगिया बाबू मति हो देब्या
आरे अपने भागि जाब्या बबुआ गउरवैं बलको गुंजरे रं
आरे आजु एइसन सेन्हुरवा जेकर नेउरापुर मारल रे जाब्या
आरे गोपिया कोनवा कै होइ होइ रे मोरि मइया
आरे रोइहैं ना रे बिलं ऽऽऽऽ
आरे आजु तोहीं ए मोर बबुआ लड़ैं बदे मति बलको रे जाब्या
आरे नाहीं अध जल में डूबि जाई रे मोरि मइया अ डोगंवौ नारे तोहं
आरे तब तैं धीरे-धीरे अहीरवा अ गउरा कै बोलत रे हउवै
आरे हमें बारह बरिस ए गोपिया पयंड़िया न जोहले रे बाड़ू
आरे पपवा रख देहलू ए रनिया हरदियौ की रे बजं
आरे आजु तोहरै बलमुवा अ नेउरापुर नारे छोड़रे इबै
आरे हमके कुंभ ए रानी जौ नरकवा होइ रे जं
आरे घूमि के चलबू ए गोपिया अ गउवां रे हरदी में
आरे काल्ह बिहानें छोड़ा देबै ए र ऽऽऽऽ नियां
अ बलमुआं ना रे तोहा ऽऽऽ र [१०१]

नेउरापुर में तुम्हारी जान नहीं बचेगी, जमुनी का लोरिक से हल्दी में कथन

हां ऽऽऽऽ हां ऽऽऽ
तब गोपी अपने में बतिआवैं
बड़ा भारी मनसेधू बनत हउवैं
चला चला इनके हरदी में तनी मनसेधुई देखीं
बारह सै गोपी संग में लेई लेहलैं
आरे ले के हरदी की चलैं लैं बजार
अगवां अगवां मै गोपिया जालीं
आरे पीछे लोरिक मै रेवरले जायं
सारी गोपी अपने अपने घरे में गइलीं
बीर लोरिक जमुनी के पवन दुआर
टप दे जमुनी मोर कुरुसी लगावै
लोरिक बलको बइठ हउवैं जात
का संइयां असनान करै ला
आरे की सुरसर गोता मारै ला गहिरवा घाट
बोलत हौ अहीर मोर गढ़ गउरा कै
आरे मरली मै गोता गोपी जब सुरुसर में
बारह सै संतन क दरसन कइलीं

बनि गइल मुकुतिया हमार
तब एतना बात जमुनी सुनैं
आरे तनी मनब्या बात हमार
ऊ बारह सै साधू ना जो हउवैं
ओन के बारह बरिस बीति गइलैं
दूसरे लगल तेरहवा मां ऽऽऽऽ
आरे घाटे में माला जपत सब बाड़ीं
ओनकर बारह सै गोपी क सेन्हुर
नेउरापुर में बनखान परल हउवैं
तोहरे अस मोट मनसेधू बान्हल हउवैं
नेउरापुर क नाव मति लेब्या
नाहीं कोटिउ बची ना जिनगी तोहार
एतनी बात जब जमुनी कहलं
आरे तनी मानि जाब्या बात हमार
उहवां से बीर लोरिक उठि देहलं
आरे चनवाँ कै बंगला गइलैं रे निअराय
गोपी मै भोजनवा बगलवै बनावै
आरे पंयड़ा बइठल जोहत बाय
कब समियां अइहैं सुरुसर घाटे से
आरे कब कइ लिहैं रे जेवनार
तब ले लोरिक फटकवै पर पहूँचं
आरे चनवा हथवा में पानी देलैं रे थमाय
हाथ गोड़ बलको धोइ मोरे लोहलैं जाक ठहरे पर बइठ गइलैं
बीर लोरिक जब खाये लगलैं

चनवा का लोरिक से नौकरी करने का आग्रह करना

तब चनवा का कहत हौ बीर लोरिक से
भला ई बतावा तूं जहाँ जाल्या तहैं रहि जाल्या
जहां जाल्या तहैं रहि जाल्या (पुनरावृत्ति)
आरे खोज खबर नाहीं करत बाड़ा
ई दू परानी क खरचा कइसे हरदी में चली
एकर भेद बतावा चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
ना केहू क नोकरी कइल्या न केहुके हर हरदी की जोतैल्या बजार
एतनी बात लोरिक मै सुनलं, आगे क थरिया

पटकि बलको देहलैं बड़ी जोर में तड़कैं
आउर अकिल बउराइल गोपी मंदा परल गियान
तोहरे मता में परिगइलीं आरे हमरे भइया रे
मोरि मइया गइयन में छूटि रे गइल
आरे गउरा छूटि गइल रे मइया मतरिया ना रे हमं
आरे घर मोर गउरा कनउज कै छूटि रे गइलैं
आरे धोबी संगी छूटि गयल रे मोरि मइया गउरवै हमरे गुंजरे रं
आरे गोपी एक्को दिन भोजनिया हरदिया में नारे करवलैं
आरे गोपी मोरे अइसन रे मोरि मइया गउरवैं मैं छूटि रे गइलीं
आरे जेकरे जनमें सवाघरी सोनवां चनियां न बरसल रे रहलैं
आरे जेकर संग छूटि गयल रे मोरि मइया गउरवैं न गुजरे रं
आरे जवन गोपी गोड़वै में गोड़वा गउरा में बन्हले रे रहल
आरे सगर रात बेनियैं रे मोरि मइया घललसि रे डोलं
आरे तवन गोड़वा से रनिया गोड़वा में छोड़ि रे ले लां
आरे तोहरे संगे में चलि अइली रे मइया हरदियौ की रे बाजं
आरे नाहीं कब्बों दादा रे मइया हरवा जोत रे वउलै
आरे नाहीं संवरू भइया गइया ए मइया घलति बाड़ँ चररे वं
आरे हम केकर करीं रे मोर मइया नोकरिया रे हरदी में
आरे हइहै गइल ए रानी जिनिगियौ रे हमं ऽऽऽऽ
आरे बिना नोकरी कइले हरदी में पानी न पियब रे मोरि
मऽऽऽइऽऽऽया अ हरदिया की रे बजाऽऽऽर [१०२]

जमुनी के पति महिचन के साथ लोरिक का हरदी के राजा महुअरि के यहां नौकरी मांगने जाना

हांऽऽऽऽ आंऽऽऽ आंऽऽऽऽऽ
लोरिक बंगले ले निकल देलैं भागल जमुनी के पवन दुआर
ए सहुआइन ए सहुआइन तीन हांक गोहरवले, जमुनी भइल डेवढ़िया ठाढ़
का हौ बाबू आरे एक ठे तोहई हमार जान पहिचान बाड़ू
एक ठे कउनो नोकरी लगाय द्या हरदी में
हमहू नौकरी हरदी की करीं बजाय
तब जमुनी कहै लगल कि सोना चानी कोठरी में गंजऽऽऽऽल
आरे बइठल बलको बबुआ खा आनकै ताबेदारी का करै जाल्या
तब लोरिक कइलैं भइया आन क धन हम ना बइठल खाबै
हमके पूरे लिखत हौ अपराध बिना नोकरी कइले थाना हरदी

तब महिचन के गोहरवलस ले जा बाबिल कवनो नोकरी लगाय द्या
लगल बा कचहरी राजा रे महुअर कै
गहबर झुमि के लगैल बा दरबार
आगे आगे महिचन भइलें पीछे पीछे बीर लोरिक गइलै
लगल कचहरी जब हरदी में ले जाके आगे जब कइलैं
न सिर झुकावैं न लटक के करैं सलाम
तब राजा महुअरिया पूछलस कि का महिचन का चलल्या
कहै बाबू देखा इहै एक ठे आयल हउवैं गउरा कै
आरे मरत हउवें खइले बेगर कउनो नौकरी चाकरी बाबू दे द्या
अहीर गउरा कै हउवैं तब राजा महुअरिया कहलस
भाई नोकरी कवन इन्है देईं, ई त नौकरी करै जोगना बलको बाड़ैं

लोरिक को चरवाही करने की नौकरी मिली

भाई खटका मालूम होले बरियं
इन्हैं ए भाई गांव भरे क बनाय दा चरवाह
गाँव भरै कै गइयै चरावत चूवै पसीना बदन से
भूजा लाल पियर होइ जं
नोकरी में नोकरी गांव भरे कै बनावत हउवा चरवाह
तईं नौकरी करबै हरदी में उहाँ से लोरिक रे उठि देहलैं
आगे आगे महिचन भइलै रे तइयार
जब किलवा के बाहर भइलें तब महिचन बड़ा जोर बिगड़त बाय
राजा बाबू के आगे जाके कुरुसी पर बइठ गइल्या
हमार जिनगी मारल जातं एहर लिअउले गइलैं
चनवा के बंगले में कइ देलैं आरे एहर ए भाई बंगले में कह देहलस
ले जाके चनवा के बंगले में कह देलै (पुनरावृत्ति)
हइहै राजा महुअरिया हरदी में डुगडुइया बजवलेस
आपन आपन गोरू छोड़ के मोरे दक्खिन वालै सगरे पर पहुँचवाय दीहा
बड़ा सुन्दर चरवाह लगाय दिहलीं, ओ आरे होत सबेरा हरदी में
ओगरा गांव आपन गइया छटकाय छटकाय के
एहर वीर लोरिक उलटवारैं डंडा लेके, जाइके भीटा पर बइठलैं
ओगरा गाँव गइया हाँकि के भींटा पर ले गयल
ओगरा गांव कान धै के लोरिक कै हिलावै
कि चेत करा एक्को हेरइहैं त संझा के डाँड़ लेवल अब जाई
सब जाय के सब कान धै धै हिलावै लोरिक बोलैं नाँ

सब लोग कान पकड़ पकड़ हरदी में गयल
ई गइया डहरवलैं नदी बेवरा के किनारे में गइया उतारैं
कूसा राध गइया चरैं लागैं
असूवा चरि के भइलीं चार बजे के बेला में
एहरे ए भइया गइया डहरवलैं
एहर ओगरा हरदिया ले भीटा पर से ताकैं त का गइया ले के भागि
त ना गयल ए भाई, उहाँ गइया करारे के ऊपर अइलीं
लोरिक गइयन से कहैं कि ए गऊ माता
तनी एकन खड़ी होय जा तू, त बड़ा अच्छा काम जौ करत्यु
सारी गइया पगुरी छोड़ँ लगलीं
लोरिक भागल गइलैं सगड़ँ पर
आरे जाके कहलन कि आपन आपन गइया
बाबू जाके बराय ल(हमार चीन्हल न जानल
ओगरा ए माई हरदो के लोग दउरलैं संगे गइयन के पास गईलैं
एहर वीर लोरिक पंयड़े पर बइठल हउवैं
ओहर से गइया दउरवलें तेंता लगि गइलैं

लोरिक ने गांव वालों के कान उखाड़ लिये

जे लोरिक के सामने पहुँचै, कहैं का भइया तोहरै हउवैं
दउर के दहिना कान उपार लें
अ ओहर गाय लखेदले ऊ चलैं पराय
जे ओहर से आवत हउवै ओकर दहिना कान उपारै
का भइया चेत करा उहै चेतावै
ओगरा गांव के कान उपरलैं
सब आपन आपन कान पकड़लें गइया लखेदले हरदी में जाय के
राजा महुअरिया के कचहरी में जाय के कहैं बाबू
अइसन चरवहवा हरदियै में बाड़ा लगवलें
आरे हइहै कनउपरा कइ दिहलस रे मइया हरदियौ की रे बाजं
आरे धीरे धीरे महुअर मैं रजवा न बोलै रे लागै
आरे तोहन लोगन क कइसे कनवां हरदिया में हउवै उपरलें
कहलैं बाबू हमहन धइ धइ कनवा सगड़वा पर बाड़ी होलवले
अ चेता के बलको हइहै अइली रे मइया हरदियौ की रे बाजं
तब महुअर कहलैं तोहन लोगन क
भारी जौ बेजइयाँ जौ मोर होइ रे गइलीं

अ अपने घुम घुम अइलैं ए भइया पवनवौं ना रे दुअं
आरे बलको भयल बबुआ सबेरवा हो ह ऽ ऽ ऽ ऽ रदी में
आरे दूसर दूसर जनें बिहान भइले
गइया लेके गइलैं सगरवा के बलको रे घं ऽ ऽ ऽ
नीचवां भीटवै से चेतावत गइया जलको रे हउवैं
अ फिन घुमि के हरदी के रे मोरि चलल बाड़ैं नारे बाजं

चनवा के चक्कर में पड़ने का लोरिक को खेद

आरे एहर लोरिक बइठ के रे मोरि मइया सगरवा पर झंखै रे लागैं
आरे हमसे अ बड़े बड़े बीरवन से भेंटिया न होइ रे गइलीं
आ केहू मनसेधू नाहीं धइलस रे मोरि मइया कवनौं रे हमार
आरे आज जननवैं के रे मइया मतवा में परि हो गइलीं
आरे हरदी में पकड़ गयल रे मोरि मइया कनवौं रे हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे एहर मैं गइया लोरिक उहवां से बलको म डहरे रावैं
आरे एहर सगड़े पर लागल बाड़ै मइया महुअरिया राजा के मेवा
करनियां कै लागल बाड़ैं रे बंगरेवं ऽ ऽ ऽ ऽ

सिपाहियों की पिटाई करके फलों के बाग में लोरिक का गायों को पहुँचा देना

आरे बलको दू दू ठे सिपहिया फटकवा पर बइठल रे हउवैं
आरे हइहै सारा गइया डहराय कै फटकवा पर पहुँचि रे गइलैं
आरे सिपाही से कहलें तनी गइयाए बबुआ एही बगइया में हमरे चरादा
आरे सिपाही मुंहवा के सुखा देहले हउवै ना रे लगाय
आरे तबले पकड़ के कलइया आ केहुनिया से मारि रे दे लैं
आरे दूसरका उठि के सिपाही मोरे चलल बाड़ैं ना रे परं
आरे एहर हनि के एड़वां फटकवा पर मरले रे हउवैं
आरे इहै फाटक रे मोरि माई गिरत बाड़ैं भहरे रं
आरे सारी गइया रे माई बगइचा में ओलि रे अवलैं
आरे गइया चोंथि चोंथि मेवइया बगइया में खाये रे लागैं
आरे बलको खाई कै रे मोरि मइया अ सूधा होइ रे जं
आरे सारी गइया बगइचा एतना बाड़ीं असीसत
आरे जुग जुग जींयत रे ए मइया अहीरवा हो गउरा कै
आरे जइसै हमरै ए बचवा पेटवा भरले रे हउवा
आरे ओइसै भरब ए ललवा हरदियौं की रे बाजार
आरे जउने दिन पवरा ओही नेउरापुर में जाई जीतल
हो जाई रे मोरे ल ऽ ऽ ऽ लवा अ बदिया ना रे तो ऽ ऽ ऽ हार [१०३]

लोरिक को कैद कर बनखान में डालने की महुअरि की आज्ञा

हाँ ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ आँ ऽ ऽ ऽ ऽ हाँ
तब गइया बगइचा में खर खियाईं
सारी गइया हंकलै हरदी में ले गइलैं
जेकर जेकर खेत हौ औही खेते में गइया छोड़ि के
अपने लोरिक डाँडे पर बइठलैं
ओगरा गाँव हरदी कै लोग छाती पीटि पीटि रोवैं
कइसे लरिका परानी जीहैं कइसे कउड़ी दियाई
कान उपरले के नाते केहू हाँकै ना जात हउवैं
भागल महुअरिया की कचहरी में जाके हाथ जोड़ जोड़ खड़ा ए बाबू
कइसे लड़िका परानी जीहैं कइसे कउड़ी दिआई तोहार
आरे सारी गइया खेते में छोड़लैं राजा महुरिया इ सिपाहिन से कहलै
जे जा पकड़ि लिआवा किला में नाय द्या बनखान
दूनो सिपाही भागल गइलैं लोरिक के दूनो गट्टा धइलं
अ घिसराय के हरदी के चललैं
लोरिक पूछैं कहाँ लोग ले जात हउवा बबुआ
कहैं चला चला तोहैं पानी हरदी कै लगल
आज मरम्मत होले मजे क हरदी कै री बजार
ले गइलैं घिसरा के कचहरी में
तब राजा महुअरिया कहै धइके किला में
जल्दी नाइ द्या बनखान
उलटी मुसुक चढ़ावा छाती पर कोल्हू देबा ढेंगलाय

लोरिक का बिगड़ कर महुअरि का मस्तक काट लेने पर उतारू होना

तब तड़कल अहीर गउरा कै
आरे चोर चंड़ाल हईं आरे कउनो भूत हईं सैतान
आरे ई हो मरम जिन जाना कि दरब जाई ईनारा में
पोखरा पर दूध देब्या चुकवाय
नाहीं बादी दा खेते मुंहे पेल चलाईं तरवार
ना काटि लेबै माथ हरदी में बरतिया रे भसम होइ जं
राजा महुअरिया कुरुसी ले गिर गइलैं
अमला फइला चललैं पराय
उठा के मुनुसी देवान बइठावैं
तब राजा महुअरिया बोलत बाय

आरे बबुआ अब हम का करीं

मुन्शी और दीवान का काट खाने वाले घोड़े पर लोरिक को नेउरापुर भेजने का सुझाव

मुनुसी देवान कहलैं बाबू कहत हौ अहीर गउरा के
दरब द इनारा मै पोखरा पर दूध देब्या चुकाय
बादी द्या खेते मुंहे पेल चलाईं तरवं
ए बाबू इन्हैं इहै पंयड़ा नेउरापुर कै बतावा
ओहरे जाइके मरि जइहैं बच जाय जिनिगिया तोहार
तब राजा महुअरिया कहलस पूछा घोड़े पै जाई कि पैदल पैदल
कहैं बाबू घोड़ा पर जाब्या कि पैदल पैदल
बीर लोरिक कहलैं कि घोड़े पर जाबै हम भाई
तब सिपाही संगे ले लेहलैं गइलै घोड़सारे
जाके जउने घोड़ा के पीठि पर हाथ रखैं झंउवन लीदि कइ देय
ई भाई घूमि अइलैं चउमुख कउनो घोड़ा ना मीलल
तब घुमि के कचहरी में गइलैं
सारी घोड़ा होइ गइलै बुढ़वा केकरी पीठि पर चढीं
कइसे नेउरापुर की जाईं रे बजं
तब सिपाही कहलैं बाबू उन्है हई कटहवा घोड़ा मंगर बताय द्या
अ फारि के खा जाय सहजै में कंटक जाई मेटायं
दू सिपाही संगे लगलैं कि चला बाबू तो हैं घोड़ा बताईं
ले गइलै फाटक के ऊपर आरे मुंहे पर तावा मंगर के दीहल
सिपाही उहां बताय के चललैं पराय
हरदी में डुगडुइया पीटलि गईल कि आपने आपने घरे में
टाटी बेंड़वा द्या घोड़ा कटहवा छूटति हउवै
सबकर जिनिगी मारि नाई अपने अपने घर में टाटी बेंवड़ा गोल देके

लोरिक का घोड़े को काबू में करना

एहर बीर लोरिक मुंहे के तावा खींचलं
अ धइलैं चोटी घोड़ा कै बहरे जब ली अइलैं
त ऊ दांते लाते दूनो जौ काटै लगत
मरलैं हूंचा मुंहै में अ एक केउनी मरलैं घोड़ा अकड़ गइलैं
तब घोड़ा पूछत हौ कि तू के हउवा भइयं
आरे बीर लोरिक कहलैं तू के हउवा कहलैं हम मंगर घोड़ा

आरे कहैं हम बीर लोरिक बबुआ
आरे मंगर घोंड़ा पूछै तू कहां से आवत हउवा
आरे कहैं कइली ओढ़ार चन्ना कै हरदी की अइली रे बजं
तूं कहां के ईहां आयल बाड़ा
तब मंगर घोड़ा कहत हौ ए भाय हमार जनम नेउरापुर भइलै
लिलिया घोड़ी पेटे लेला अवतार
पच्च कल्यानी घोड़े कै जनम भयल हमार
मांथे में टीका राजा हरेवा पंडित बनवाय के पतरा खोलवावै
हमरे घोड़ा जनमल नेउरापुर की बजं
पंडित पतरा खोलि के बतावैं
अगर ई घोड़ा नेउरापुर में जी जाता राजा, आरे हइहै मारि नाई
ए म ऽ ऽ ऽ इया अ जिनिगिया अ ना रे तोहा ऽ ऽ ऽ र [१०४]

मंगर घोड़ा का लोरिक को अपनी पूरी कथा बताना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ
आरे तब घोड़ा समुझावै बीर लोरिक कै
आरे जब नेउरापुर जनम भइलैं
जब एतनी बात सुनलैं राजा हरेवा
मियनिया ले खींचि ले लैं तरवार
हमके मारे बदे चल लैं थाना नेउरापुर की बजार
किला के पास जब राजा हरेवा आयल
आरे रानी बइठल खिरिकिया पर बाय
तब गोपी बोलै खिरकी से कि आरे सामीं
केकर काल निअरइलैं कि मियनियां से खीचि ले ला तरवार
एकर भेद बताय द्या चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
तब राजा हरेवा बोलै गोपी एक घोड़ा मंगर जनमल
भयल जियरवा कै काल
ओही कै मरन आइल हौ, मिअनियां ले खींचि ले लैं तरवार
तब रानी राजा से बोलै आरे सइयां मनब्या बात हमार
अइसन घोड़ा तूं मारि जौ नइब्या
आरे तो के पूरै लिखत अपराध
ई घोड़ा जिन मार्‌या सइयां बड़ा सुंदर घोड़ा जनमल बलको बाय
तब राजा बोलैं हम का करीं रानी कहैं आरे बढ़ई बोलवाल्या
काठे कै संदूक बनाल्या ओही में घोड़ा कै भरवाय द्या

ताला बन करवाय के बीचे दरिआव में छोड़वाय द्या
घोड़ा बलको बूड़ि के मरि जाई
घोडा बलको बूडि के मारि जाई (पुनरावृत्ति)
बंचि जाई जिनिगिया तोहार
एतनी बात जब रानी कहलस तब राजा बढ़ई ले लैं बलवाय
एहर ए भाई बढ़ई बलवाय कें आरे बढ़ई बलवा कै ऽऽऽऽ
आरे कांठै कै संदूख बनावै ऽऽऽऽ
आरे घोड़ा के ओहो में भरवाय के
ताला बन करवा के बीचे दरियाव में छोड़वा दा
बलको घोड़ा बूड़ि के मरि जाई
जब एतनी बात राजा सुनले बढ़ई बलवा के संदूख बनवा के
ताला बन करवा के आ बीचे दरियाव में छोड़ववलैं
आरे घोड़ा बहल बहल मइया हरदिया में चलि हो अइलीं
आरे जहवां गउवां ए बबुआ हरदिया में आइ रे गइलीं,
आरे तब राजा महुअर हमरै बबुआ बकसवा हो मोर धररेववलैं
आरे तलवा तोड़ि के रे मितवा बहरवां जौ हउवैं निकलले
आरे हमके पालै लगलैं हरदियौ को रे बाजं ऽऽऽऽ
आरे जब चढ़ै रे मइया जोगनवां कै होइरे गइलीं
आरे हमरे मुहे के रे बबुआ सुन्दर सोरन कै
मइया लगमियां मोर बन रेवावैं
आरे पीठिया के जब पाखड़ बबुआ घलेलें हउवैं बनरे वं
आरे हमरे गोड़वै के बबुआ घंघुरुवा न बनरे वावै
आरे पोंछिया के मूंगा रे मोरि मइया करति हउवे तइरेयं
आरे हइहै चढ़ै बदे बबुआ सइतिया मोर पूछ रे वावै
आरे तब बरम्हा से लोरिक इनरासने में कहले रे रहलीं
आरे हमार कमाई रे मइया मिरितवा में चुकि रे गइलीं
आरे घोड़ा क देत बाड़ा ए बरम्हा जनमवौं ना रे हमं
आरे जो त जनम रे मोरि मइया घोड़वा कै देति रे हउवा
आरे हमरे पीठियै के बबुआ भेजि देबा असरेवार
आरे जौ ने दिन चढ़ैं बदे राजा महुअर तइअरिया जौ कइले रे हउवै
आरे जब पजरे ए बबुआ गयल हउवै निअरे रं ऽऽऽ
आरे तब तै दंतवा मो लतवा हरदिया में काटै रे लागै
आरे उहैं परि गयल ए संगी कटहवा न बलको रे यां

आरे हम गउवां कै मइया सुखवन खाये रे लगलीं
आरे गउवां डेराय डेराय मइया हरदिया से भागै रे लागल
आरे राजा महुअर ए मोरि मइया गयल हुउवै बेकलेलं
आरे तब सवा पोरिसा का गड़बड़ा महुअरिया बलको खनरेवाय के
आरे उपरां से टाटी ए मोरि लोरिया देले हुउवै खनरेवाय
आरे उपरा से बालू रे मोरि मइया टटिया पर फेंकि रे दे लैं
आठ आठ लग्गा ले के हमके हरदी रे मइया लेहले हुउवै दउरे रं
आरे एही पर गोड़वा ए मइया टटिया पर परि हो गइलैं
आरे हमतैं गिर परलीं ए बबुआ हरदी
अब गड़बड़ा में उपरां से लोहवै कै तउवा देहले बाड़ें ओंठरे गांय

घोड़ा मंगर ने कहा बारह वर्ष से मैं लोरिक की प्रतीक्षा में था

आरे हमके बारह रे मोरि मइया बरसिया हरदी बीति हो गइलै
आरे बइठल जोहत बाड़ी ए बबुआ पंइड़ियाँ ना रे तो हं
आरे कहवां आ जाई रे मोरि मइया अहीरवा हो गउरा कै
आरे कब हमरी पीठिया पर हर रे होइ जाई असरे वं
आरे कब गउवां ए मइया नेउरापुर चढ़ि चढ़ि रे जाबै
आरे कब राजा हरेवा से लेबै रे मोरि मइया बदलवो जौ लवरेटं
आरे उहै जोहत बाड़ी लोरिक जो पयंड़ियों रे तोहं
आरे हमार अन बिन ए मीतवा पोटरिया न फाटि रे गइलों
आरे पानी बेगर कवल रे मोरि मइया गयल हउवै कुम्हिरे लं

लोरिक का घोड़े को पानी पिलाना व उस पर सवारी करना

आरे तनी पनिया ए बबुआ हरदिया में हमके पीआवा
आरे नाहीं छूटि जाला ओ मइया चोलवा रे हमं
आरे लोरिक घोड़वा कै चोटिया बलको मोर धइ हो ले लैं
आरे घींचि घींचि पनियां घलति बाड़ै नारे पिअं
आरे जब ठंडा जिअरवा आ देखा घोड़वा कै होईहों गइलैं
आरे बड़े जोर से मोर घोड़वा हरदिया में ठनकत रे हुउवै
आरे बलको झूरै रे मोर मइया बदरवा मोर घहरेराय
आरे एहरवैं त जोर से अवजिया लोरिक के मोर देबै रे लागल
आरे जल्दी परवजवा मइया हरदिया मैं धइ हो देब्या
आरे लोरिक ले ले गइलैं राजा के फटकवा पर घोड़ा खड़ा रे कइलैं
आरे कचहरी में हुकुम रे मोरि मइया देहले हउवै ना रे लागं

आरे जल्दी घोड़वा कै बीनवा पखड़वा मोर देइ हो देब्या
आरे राजा महुअर हुकुमवा देहले हउवै ना हो लगं
आरे दूसरे मैं घोड़ा कै समनियां तूं देइ हो देब्या
आरे ओ घोड़ा के समान में बड़ी दौलत
लगि गइल बा हरदियौ की रे बाजं
आरे तब मंगर कहलैं दूसरे क मइया सरमवां पीठिया रखि हो देब्या
आरे तब तै न चलब ए मइया नेउरा न पुर की रे बजार
आरे लोरिक कहलै मंगर घोड़ा कै बबुआ सरजमवा मोर देइ हो घलब्या
आरे एहर अमला फइला सरजमवां न हउवैं उठवलैं
अहीरे के हथवैं में मइया देखले हउवैं ना रे थमं
आरे एहर जीनवा पखड़वा पीठिया पर धई हो देलैं
आरे मुंहवा में सोनन कै मइया चढ़ति बाड़ैं ना रे लगं
आरे एहर साठ साठ मोहरवा गरदन में छोड़ि रे दे लैं
आरे टीका मथवा में चउदह कोसवा भयल हउवैं ओज रे रं ऽऽऽऽ
आरे घोड़वा के नलवै में मइया घुघुरुवा बलको बान्हि हो गइलैं
आरे पोंछिया में मूंगा रे मोरि मइया देहले हउवै रे बन्हवं
आरे राजा महुअर बीड़वा लगाय के अगवां जौ रखि रे देलैं
जे बीड़ा उठावै ऊ जाय रे मोरि मइया नेउरवा पुर की मोरे बजं
आरे एहर लोरिक मोर बीड़वा मुंहवा में नाइ हो लेलैं
आरे डाक के घोड़वै पर मइया भयल हउवै असरे वं
आरे घोड़ा हंकलस रे मइया अ थनवा रे हरदी में
आरे घोड़ा चउमुहानी बबुआ हरदिआ में पहुँचि रे गइलैं

हल्दी में घोड़े का अद्‌भुत नृत्य

आरे घोड़वा एइसन नचिया हरदिया में नाचत रे हउवै
आरे हरदी कै लोगवै रे मइया गयल हउवैं घबरे रं
आरे घोड़ा नाचत ए नाचत दुअरिया हो जमुनी के
आरे जमुनी निकल के मोर किलवा से फटकवा पर खड़ी रे हउवैं
आरे बलको हंसि हंसि बतिया अहीरे से करत रे हउवै
आरे केकर बांड़ा ए मोरि मइया हरदिया में हउवै उठवले
आरे कहां चढ़ै के तूं पा गइला तुरहिया न बलको रे घोड़ं ऽऽऽ
आरे कवन गउवां सइंया लूटै के कइला तइ रे यारी
आरे कहवां लूटल्या ए बबुआ ढोलियौ ना रे बाजं
आरे तब तै धीरे धीरे बोलत बा अहीर गउरा कैं

आरे हम राजा महुअर कै गोपिया बीड़वा न बाड़ी ऊठवले
आरे चढ़ै के पवले बाड़ी रनियां तुरहिया न बलको रे घोड़ं
आरे लूटै बदै गोपिया गउवां गढ़ नेउरा
आरे काल्हि बिहाने लूटब ए मोरि रनियां ढोलियौ रे बजं
आरे एहर चनवा निकल के कुरुसिया मै रखि रे देहल
आरे गोपी हंसि हंसि देखब्या बंगलवा पर बोलत रे हउवै
आरे चलि के ठहरे संइया अ कइ लेब्या जेवरेनार
आरे एहर लोरिक जाइके बगंलवा में भोजन करै रे लगलैं
राजा महुअर गउवां भर डुगडुइया देहले हउवै पिटरे वं
आरे काल्हि बिहाने बिदइया लोरिक कै बलको रे होई
अपने अपने घरे आरती गजरा कइ घला तइरे यं
आरे जब एहर होइं गयल ए यारो बिहनवा हो हरदी में
आरे गोपी घर घर गजरवा हरदिया में बाड़ी बनवले
आरे एहर चनवा चुन चुन बिजनवा हरदिया में हउवै खिअवले
आरे एहर लोरिक अपन असबबवा बदनियां पर हउवैं चढ़वले
आरे एहर मै त गोपी जो अरतिया हथवा में हउवै ऊठवले

घोड़े की पीठ पर सवार लोरिक की आरती उतार कर व माला पहना कर हरदी से बिदाई देना

आरे लोरिक डाक के मोर घोड़वा भयल हउवै असरे वार
आरे गोपिया धीरे अरतिया दुअरिया पर करै रे लागल
आरे गरे में गजरै रे मोरि मइया देहले हउवै पहिरे रं
आरे बलको घर घर गजरवा हरदिया में परै रे लागल
दुअरे दुअरे अरती होति बा मइया हरदियौ की रे बाजं
आरे चारि ओलंगै से घोड़वा राजा के फटकवा पर पहुँचि रे गइलैं
आरे एहर रानी मो अरतिया दुअरिया पर करति रे हउवैं
आरे जेकर ढूरति बाड़ैं मइया नयनवाँ से बलको रे अं
आरे जेकर अइसन रे मोरि मइया लाल नेउरापुर मारल रे जइहैं
आरे गउरा बरत बरत दिअवा भसमवा मों होइ रे जं
आरे गोपी एहर कइ देले रे मइया अरतिया रे अहीरे कै
आरे राजा महुअर कै किलवा हो मइया गयल हउवैं निअरे रं
आरे घोड़ा ले जावे ए बबुआ फटकवा पर खड़ा रे कइलैं
आरे राजा एहर धउंसा ए मइया देहले हउवै बजरे वं
आरे बलको अगवां अगवां घोड़वा मोर चलैं रे लागै

लोरिक का नेउरापुर के लिए प्रस्थान, उधर बोहा में संवरू पर विपत्ति

आरे पिछवां हरदी रे मइया रेवरलें हौ बलको रे जं
आरे गउवाँ हरदी के रे मोर मइया बहरवा मों कइ रे देलैं
ओगरा हरदी घुमि के आयल ए बबुआ हरदियौ की रे बाजं
आरे हइहै गउरा कै बबुआ पयंड़िया मोर देखल रे हउवै
आरे हइहै सोहवल कै बबुआ देखले बाड़ीं न रे बाजं
आरे हइहै देखल बाड़ै मीतवा बोहवा रे गइयन कै
नेउरा पुर कै नाहीं जानल बाड़ैं ए लोरिक मरमियौ रे हम
आरे तब तै धीरे धीरे लोरिक घोड़वा के समुरझावैं
आरे हम कब्बौं के नाहीं ए मंगर नेउरापुर में गयल रे बाड़े
आरे नाहीं जानल बाड़ैं बबुआ मरमियौ रे हमं
आरे एहर घोड़वा बबुआ जंगलवा मोर धइले रे हउवें
आरे जेमन सिंहिया सेरवा जंगलवै में बोलत रे हउवैं
आरे लोरिक एहर रे मोरि मइया जियरवै हउवैं रे रं
एहर घोड़ा हंकले हंकले नदी बेवरवा पर पहुचि रे गइलै
उहां बाड़इ रे मइवा गउवां रे नेउरापुर
ए पार बलको बसल बाड़ैं बबुआ हरदियौ कै रे बजं
आरे एहरवैं त डेरवै रे मइया घटवा पर देइ हो देलैं
अपने घोड़ा लेके टीकल रे मइया नदी बेवरवौ के रे किनं
आरे एहर आइल बाड़ैं रे यारों बिपतिया रे संवरू पर।
एक अलंगे गंउवा रे मइया पिपरियौ मोर चढ़ल ले हउवै
एक अलंगे कुसुमा मै पुरवा कै चढ़ल बाड़ैं ना रे बाजं
आरे एहर देखा सहदेव महदेव चढ़इया बलको कइले रै हउवैं
आरे आइके बोहवा में डेरवा पलटनियां न हउवै गिरवले
आरे संवरू सातै दिनवा कंडन मरिया करै रे लगलं
आरे पहर सातै दिनवा नोइढ़वन क मारै रे कइलैं
आरे बलको सातै दिनवा दुहनियन क मारै रे करैं
आरे बलको ऊलट ऊलट संवरू हरदिया के ताकत रे हउवैं
आरे कब लवटि आई रे मइया भयवौ ना रे हामं
आरे हमरै अकलै सकल रे जिनिगिया बलको जाति रे हउवै
आरे भइया से नाहीं होई रे मोरि मइया भेंटियौ रे दीदं
आरे जेके एतना पलुवा गउरा में पालल
अध जल में डूबा देहले रे म ऽ ऽ ऽ इया
आ ड़ोंगवा ना रे हमा ऽ ऽ ऽ र [१०५]

• •

अध्याय ४
नेउरापुर की लड़ाई

घोड़ा मंगर का लोरिक को बेवरा नदी के पार उतारना

हां ऽऽऽ हां ऽऽऽऽ
ओहर नदी बेवरा पर घोड़ा लेके बीर लोरिक खड़ा हौ
उतरै के नद्दी ओहि पार दू कोस क पाट नदिया
मंगर घोड़ा से कहलैं उतरल जाई
घोड़ा कहलैं नाव बेड़ा मंगावा मांझी के बोलवावा
तब पार हमहन उतरल जाईं तब लोरिक कहलैं
न चीन्हल न जान्हल न काउ देखल हमार
न मांझी जानल बा के के बोलवाई
मंगर घोड़ा कइसों उतार के कइ देता ओपार
आरे त एही पार गांव हरदी हौ ओहि पार नेउरा कै बाजार
बारह कोस कै जंगल राजा हरेवा कै जालपा देबी हौ पुजमान
तब मंजर घोड़ा कहलैं लोरिक से
अगर उड़ि के चलब भाय, त अगर गिर जाब नदी में
दूनो जने बूड़ि के मरि जाब कइसे नदी होबैं ओहि पं
अच्छा लोरिक बइठा पीठिया पर मंगर एंड़ा मरलस धरती
आरे टप दे गइल रे मेंडराय
पर फहराय कै उड़ल मंगरा पानी के छुवाई पर हउवै जात
झर झर बयार लगै वीर लोरिक के घोड़े के ऊपर
तब बिजुली उनकर नीचै सरकै लगल गिरै बदे
मंगर घोड़ा मुंह घुमाय के बीजुली थाम के
लिया के पेटरी में खोंसि ले लिहलैं
ले जा के घोड़ा करारे पर आरे बनछिउली में चू गइलैं
लोरिक घोड़े से उतर के आपन बीजुली ओड़न टूवैं
त बिजुरी क पता नहीं मंगर से कहलं
ए मंगर घोड़ा जउने से हम्मै लड़ै के रहल
तवन का जानी कहां गिरि गइल
फिर घूमि के गांव हरदी के चला मंगर घोड़ा कहै
नौ नौ गंडक तोरल तेरह तोरल पहाड़
एतना दूर चढ़ि अइलीं फिन घूमि के हरदी के चलीं बजार

सरल पाकल बिजली ले अइला पंयड़े में गिर गईल
कत्तों लरिका लेके खेलत होइहैं पानी में गिर गइल होई
कइसे बीजिली मिली होइं तब बीर लोरिक घोड़ा से कहैं
केकर मइया बेटवा बियाइल के धवला गिरि टारें पहाड़
केकरे तारू में जोभ जांमल के उठाई बीजुलिया हमार
पानी में जो गिरल होई पानी खउलत होई बूड़ि के निकाल लें
तब मंगर घोड़ा कहलें जे दूसरे बिजुली से लड़बा
कहे ओइसन ना मिलीं निकाल से पेटारी के आगे रखि देहलैं
आरे तब तै ठोंकै लगल रे मइया पीठिया रे घोड़वा कै ऽऽऽ
आरे हम तै जानत रहलीं ए मंगर
आरे गउरां में संवरू भइया जनमल रे हउवैं
अ तै ना जनली कि भाई जनम गयल ए रे मंगरा हरदियौ की रे बाजं
आरे त मंगर घोड़वै रे मोरि मइया जंगलवा में बान्हल रे गइलैं

राजा हरेवा की आराध्या देवी जालपा को लोरिक के आने की खबर पाना और डाइन तथा कंटाइनो के साथ घूमना

आरे एहर जलपा देवी के थाने में सबदिवा जौ होइ रे गई
आरे कउनो मुदई आके राजा कै जगंलवा में टीकल रे हउवै
आरे ऊ सारा ले ले डाइन कंटाइन दउरै रे लागल
आरे तब मंगरा घोड़वै रे मोरि मइया जगंलवा में रूवै रे लागल
आरे बीर लोरिक उहै राजा हरेवा कै जालपा देवी खाये आवत रे हउवै
आरे कउनो उपइया रचा भइया जिनिगिया आपन बचावा
आरे तब तैं लोरिक बायें रे मोरि मइया
बनवा सतिया हा सुमिरै रे लागैं
आरे दहिने सुमिरत बाड़ैं रे मइया दुरुगवा न बलको रे मं ऽऽऽ
आरे पटकति रे मोरि मइया कपरवाँ हो धारती में
एहर बायें बनवा सतिया गइयन में टीकल रे बाड़ें
आरे दहिने टीकल संवरू के संगे हौ दुरुगवा न बलो रे मं ऽऽ
आरे लोरिक सारी सरिरिया धरतिया में पटकत रे हउवै
आरे दुरुगा बोहे में तनिकौ रे मइया जुमुसवा नाहीं रे खं
आरे लोरिक आपन लेके बीजुलिया जगंलवा में दउरै रे लागल
आरे कि काटि के मथवै रे मोरि मइया
देई तोके बलको ना तोहके रे चढ़ं
आरे बनसत्ती के काने में बोहे सबदिया लगि रे गई

आरे दुरुगा के काने में रे मइया देले हउवै ना रे सुनं
आरे एहर माई देखा मइया कनवा में सबदिया दुरुगा के लागि हो गई
आरे दुरुगा छोड़लसि रे मइया बोहवा रे गइयन के
आयल भागल गइल बाड़ैं दुरुगा जंगलवा जो निअरे रं
आरे जब सन्मुख रे मइया लोरिक के पहुँचि रे गइलीं
आरे दुरुगा के गिर गइलैं रे मोरि मइया चरनिया पर भहरे रं
आरे कहलस माई अइसन बिपतिया जंगलवा में आइल रे हउवैं
आरे सहजै में चलि जाला रे मतरिया जिनिगियौ रे हमं
आरे तब तै धीरे धीरे दुरुगा जगंलवा बोलै रे लागै
आरे तोहके के ए भइया जंगलवै में मारत रे हउवै
आरे कहलस उहै राजा हरेवा कै माई देवतवा आवत रे हउवैं
आरे हमके खा जालैं ए मावा नेउरापुर की रे बाजं
आरे एहर दुरुगा धीरे धीरे मैं लोरिक के समुरेझावैं
अंगवा अंगवा जालपा देविया आवत रे हउवैं
आरे ओही कै दवरि के ए बचवा तूं गोड़वा धइ रे लीहा
बारह कोसवा कै जंगल जंगलवा में ठिठि रे आई
आरे मति छोड़ा ए बचवा गोड़वा ए जालपा कै
आरे तोहरे देही में बेटवा मै जाबै रे सामं
आरे केतनो बेटवा जंगलवां में ताके रे झटकै
तनिको जुमुसवा बलको नाहीं बाड़े रे खं
आरे एहर मैं चार बजे कै अमलवा बीति रे जइहैं
तब जे हइहैं जालपा देबिया जाई बलको बेक रे लं
आरे कहीं जवन ए बबुआ तूं मंगनवा मांगि हो लेबा
आरे उहै मांगन पूरा एठियन करीं रे तोहं
आरे कहि दीहा छोड़ि दा ए माता संगवा राजा हरेवा कै
आरे जंगल में धैं लेबे ए जालपा तूं संगवौ रे हामं
आरे इहै तूं मंगनवा जंगलवा में माँगि हो लीहा
तब ले दुरुगा नदिया के मोरि निववा माई उतरि रे गइलीं

लोरिक का जालपा देवी का पैर पकड़ लेना और बरदान मांगना

जालपा देवी पजरे रे माई गइल बाड़ैं निअरे रं
आरे लोरिक दवरि के गोड़वा जालपा देवी कै धइ हों लेहलैं
आरे हइहै बारह कोस के जंगलवै ठिठिरे रावै
अ धरती पर देखा हाली हाली बलको पटकि रे देलैं

तनिको जुमुसवा जंगलवा में नाहीं रे खइल
आरे जालपा देवी रे माई गइल बाड़ैं बेकरे लं
आरे कहलस जवन बाबू मंगनवा तैं मांगि हो लेव्या
आरे मांगन पूरा बाबू जौ करीं रे तोहं

लोरिक का साथ देने के लिए जालपा देवी का वरदान

आरे कहैं छोड़ि दा ए माता संगवा राजा रे हरेवा कै
आरे एठियन धइ लेबू ए मतरिया संगवौं रे हमं
आरे कहलस अच्छा जा आज तोहरा संगवा जंगलवा में धइ हो लेबै
इ राजा हरेवा के किलवा में देबै खबरियौ रे जानं
आरे ओकर नीमक ए बबुआ नेउरापुर में खइले रे बाड़े
आरे एहरवैं घुमि के जालपा देवी जब नेउरापुर पहुँचि रे गइलीं
आरे दूनो परानी राजा रानी किलवा में सूतल रे हउवैं
अधियै में रतिया में कनवां रानी के सपनवा देबै हो लागल
आरे दूनो परानो ए रानी किलवा में सूतत रे बाड़े
इ जंगल में आयल बा रे मइया मुदइयौ रे तोहं
आरे रानी उठि के सेजिया पर राजा के मोर गोहरेरावै
आरे राजा एइसन अजगुत सपनवां मैं सुनले रे बाड़ीं
आरे राजा बड़े जोर से रानी के सेजरिया पर डपटत रे हउवै
आरे सांझे जूठे मुंहे तो हू सूत रे गइलू
आरे सूतले में बाड़ू ए गोपी तूं किलवा में पहि रे अं
आरे जब रानी चुप मारि के किलवा में सूति रे गई
तब जालपा देबी राजा हरेवा के मुहंवा पर मारि हो देहलं
आरे तूं अपने ए राजा किलवा में सूतत रे बाड़ा
आरे तोहार मुदई टीकल मइया जौ खेतवा मयरे दं
आरे राजा हरेवा कै निदिया खुलि रे गइलीं
आरे बलको होत सबेरवा भोरवा में बाबू हो देखा
आरे रंगू बारी के मइया घलत बाड़ैं गोहरे रं
आरे रंगुवा आके अगवां खड़ा रे भइलैं
आरे राजा हुकुम रे मोरि भाई जौ देहलैं रे लगं

राजा हरेवा का बारी रंगू से शत्रु के बारे में पता लगाने के लिए कहना

आरे बारह कोसवा जंगल में ए रंगू मुदइया टीकल रे हउवै
आरे तनी पता जलदी में घलबे रे लागं

तब बीर लोरिक रंगू से बोलैं
एक बात तूं हम्मैं बताय दा
नेउरा पुर कै हाल कुछ जानै ला, रंगू बारी कहलैं
राजा हरेवा कै नौकरी कइलीं, हम राजा क मंतिरी भइलीं
हमरे हाथे में सारा राज चलत हउवैं
आरे काहैं रंगू तब त हमके उपाय बताय दे भाय
बहुत दिन पर भेंट बलको भइलैं रंगूवारी कहै भाय,
हम्मैं बर बरिस नीमक खइलै भइलैं
भला हमैं बतावा हम कइसे उपाय बताई पूरा लीखत हौ अपराध
तब बीर लोरिक रंगू से कहलैं आरे रंगू माना बात हमार
बारह सै गोपिन के बन्हुआ बान्हल नेउरापुर की बजार
एतना पाप नेउरापुर में आरे आइके परल जौ हउवैं
तब रंगू बारी कहलस कि ए बीर लोरिक सारा उपाय बताय देबै
बाकी एक बात ना तोहैं बताइब कहैं कवन भाई
आरे कहलैं भाई देखा पहिले त बरई क छाता छोड़वाय देई
आरे बरईन क छाता छोड़वाय देई
जौ अ बीन्हि लीहैं जिनगी न बची रे तोहार
आरे ओ से जौ बचि जाब्या कंचित
तो पागर कुत्ती छोड़वाय देई जहर दिया के रखलै हउवै
सो जिनगी ना बची रे तोहार
आरे जिनगी न बची बलको तोहार
ओ से जों कंचित बचि तूं जाब्यां
आरे महाजाल ब्रम्हा कै जंगल पर फेंकवाय देई
अ घिचवाय के नेउरापुर किला में बनखान नवा देई
तब मारल जाई रे जिनिगिया तोहार
इहै तुं मरम मइया तनिको जिन जान्या
आरे तोहार मरन गईल निअराय
बोलत अहीरवा गढ़ गउरा कै आरे रंगू मनब्या बात हमार
एही का उपइया हम्मैं रे बताय द्या तब रंगू मोर देलैं रे जबाब
तोहसे मैं पहिलेंइ कहले बाड़ीं एकर नाहीं बताइब उपाय
नीमक खइली मैं राजा हरेवा क, वीर लोरिक देलैं रे जबाब
एकै न गढ़ कै हई रे रहवइया फिनि गउरा के चालल जाई रे बजार

रंगू बारी का हरेवा द्वारा छोड़े हुए बर्रे, कुतिया व महाजाल से बचने का उपाय बताना तथा वापिस जाकर हरेवा को लोरिक के आने की खबर देना

तब रंगुवा मैं लगल बतावै अगर बरई क छाता देबै रे छोड़वाय
दाब्या मुठिया जब ओड़ने कै पोरिसन लवर रे जाई बुंमुवाय
सारा बर्रे जंगल में जरिहैं कंचित ऐसे रे बचि जाब्या
सांकर कुतिया देबै रे छोड़वाय
अगर सांकर कुतिया जंगलवा पै आवैं
आरे डांकि के घोडे पर होया असवार
तीन तीन जोजन ले मेंड़राया तब जिनगी बचिहैं बलको तोहार
कंचित एसे तूं बचि जाब्या आरे महाजाल देईं रे फेंकवाय
ओम्मन जौ फंसि जाब्या पट्ठा घींचि के नेउरापुर की बजार
ओम्मन जौ तूं भुलाइ जाब्या हम दातुल दातुल घलब गोहराय
मारया खांड़ी के कोने से दू टुकड़ा होई जाईं
निकल के मैं घोड़वै चली रे पराय
एतनी बात जब रंगू कहि के भागल नेउरापुर की बजार
जब नेउरापुर रंगुआ गयल राजा मोर हरेवा के पजरे गयल रे निअराय
हाली हाली रजवा किला में पूछै आरे रंगू मनब्या बात हमार
तनी एकन भेदवा जंगल के बता द्या आरे रंगू देबै लागैलं जबाब
जंगल के हाल बाबू कहे जोगन क
थाना नेउरापुर तनिकौ बलको नाहीं रे बाय
कोटिउ न जिनिगिया बची ए बाबू आरे हइहै मरन गइल रे निअराय
निजि की मैं कलवा कपरवा पर अइलैं आरे घंटा बाजै ला सांझ बिहान
तब धीरे धीरे राजा रंगुवै से पूछैं
ई काहे बदे रंगू एतनी बतिया घलैला सुनाय
कहैं भइया आयल बा अहीर मोर गढ़ गउरा कै
आरे जेकर लोरिक रे बघेला नांव
आके बारह कोस बन छीउलियै मैं टीकल
आरे कोटिउ दमिया न बची रे तोहार
हम त लमहरे से देखि के बाबू
भोठियन से बाबू चलल बाड़ीं रे पराय
तोहरे रजवा छोड़ि देबै नेउरापुर
आरे दूसरे राज बलको रे भागि जाब
एतनी बात जब राजा सूनै

आरे रंगू मनब्या बात हमार
भला एक तूं हम्मैं बात बता द्या
हमरे राज कै मंतिरी तूं भइल्या
आरे मोर राजै घलैल्या चलाय
तूं जो भागि जाल्या नेउरा से
आरे कोटिउ दमियां न बचो रे हमार
कउनो उपाय रंगुआ तू बताय द्या
आरे एहर कइलैं रंगू बरइन क छातै देब्या रे छोड़वाय
मर जाय मुदई बाबू जंगले में सहजै में कंटक जाई रे मेटं

रंगुवा बारी का बरैं छोड़ना तथा लोरिक का इन्हें ओड़न की आग से समाप्त करना

रंगुआ बारी बरैं बलको छोड़वावैं, आरे जंगले में गइलीं रे मेंड़राय
तब घोड़वा मांगर कहलस लोरिक से कनवै में बलको देवैं रे अवाज
आरे भइया निज की मरन आइ गइलैं
दबलस मुठिया जब ओड़ने कै
पोरिसन लवर गइल रे बुंमुवाय
जब बरैं कपरवा पर मेंड़रइली
दबलस मुठिया जब ओड़ने कै पोरिसन लवर रे गइल बुंमुवाय (पुनरावृत्ति)
सारी बरइया जंगलवा में जरि गइलीं
आरे रंगू बारी राजा के पजरे गयल नियराय
बाबू बड़ा उपाई सूबा बा
दबलस मुठिया जब ओड़ने क
सारी रे बरइया जंगलवे में जरि गईं
आरे तब राजा हरेवा गयल ले घबड़ाय
आरे तब कवन रंगू उपइया लगाईं
तब रंगू मैं दे लैं जबाब
छोड़ि दा बाबू तूं सांकर कुतिया
सारा मै बान्हि लेत अहीरे के
मरि जा आरे जंगल बीच मंझार
रंगू बारी सांकड़ कुत्ता छोड़वाय दलैं
आरे जंगल पर गइलीं मेंड़राय
परल नजर मंगर घोड़ा कं
आरे लोरिक डांकि के पीठि हो जा असवार

डाक के छोड़ा पीठिया पर चल गइलै
डाक के घोड़ा पीठि पर चढ़ि गये (पुनरावृत्ति)
एड़ा घोड़ा धरती में मरलस तीन तीन रे मोरि म ऽऽऽऽ इया
आ जोजनवा मेंडरे रा ऽऽऽ य [१०७

दो विषैली कुतियों का घोड़ा मंगर को पकड़ लेना और लोरिक का दुर्गा को पुकारना

हां ऽऽऽऽ आं ऽऽऽ आं
घोड़ा आधे सरग में मेंड़राय दू कुतिया जायके घोड़ा के काछे में धइलेलीं
भीनल बीख घोड़ा के पर बटुरै लगै त अ बीर लोरिक से कहै
ए लोरिक गईल जिनिगिया हमार कउनो कुतिया हमके धइले बाड़ीं
नीचे ताकैं दू दू कुतिया लटकल खांड़ो से मरलैं
आरे दूनों कुतियन कै मउर कटि गइलीं
घोड़ा नीचे पर फहरावत आवै जेतने नीचे आवै उतेरे ओतनै परिया बटुरैं
जब धरती में लात परल है अ गिरल घोड़ा मरि गयल
तब तै लोरिक पीटि पीटि के छतिया जंगलवा में रूवै रे लागं
आरे हइहै टूटि गईल मइया जौ बहियों ना रे हामं
आरे लोरिक अइसन रूबइया जंगलवा में रूवत रे हउवै
आरे हमरे बायें बनसतिया मतरिया कहवां गइल रे हउवें
आरे दहीने कहवां गइल बाड़ै रे माई दुरुगवा न बलको रे मं
आरे एहर सांसत में ए मावा जिनिगिया मोर परल रे हउवै
आरे इइहै छूटि गयल ए माई जौ चोलवो रे हामं
आरे एहर बनसत्ती के काने में सबदिया बोहवा लगि हो गईं
आरे दुरुगा के पजरे रे मइया गइलि हउवें निअरे रं
आरे माई अइसन अवजिया मोर नेउरापुर से आवत रे हउवै
आरे कउनो बीपति ए मावा परलि हउवै बड़ि रे यार
आरे बलको रूवति बाड़ैं ए मावा अहीरवा हो गउरा कैं
अपने बलको बइठल बाड़ो ए माई जौ गइन की रे अड़ं

बोहा में संवरू के साथ युद्ध का उल्लेख, संवरू की मृत्यु तथा दुर्गा का लोरिक की सहायता के लिए नेउरापुर आना

आरे एहर लागल ए बबुआ जौ लोहवा रे संवरू से
आरे दुरुगा टीकल बाड़ै रे मइया अ गइयन कौ रे आड़ं
आरे जहवां दुरुगा के काने में सबदिया बलको लागि हो गइलीं

आरे नेउरापुर गउवां रे मइया गइलि हउवै नियरे रं
आरे लोरिक के अगवां मै दुरुगा जंगलवां में खड़ी रे भइलीं
आरे लोरिक गिर परलैं रे मइया चरनियां पर भहरे रं
आरे मावा एतना मोर पूजवा जौ गइयन में खइले रे बाड़े
आरे घोड़वा मरि गयल रे मइया आ जंगलवा में रे हमं
आरे एहर दुरुगा बड़े जोर से लोरिक से बोलै रे लागल
आरे कहा दूनों ए बचवा दलिया जोगै रे घलीं
आरे एक ठे जोगईं ए बाचवा नेउरापुर की बजार
आरे लोरिक कै कवन दुसमन कै ए मावा दलिया जोगवत रे बाड़ें
एहर जोगवत बाड़ू जंगल में दलियौ रे हमं
आरे एहरवैं छोड़ि देबू ए मावा संगवा रे दुसमन कै
आरे सरगे घलबू ए मावा लोहवौ रे हामं
आरे उहै दुरुगा बोहा से माथे संवरू कै संगवा छोड़ि रे दे लैं
आरे जाइके टिक गइल माई नेउरापुरवौ की रे बा ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे एहर मलवा सांवर बोहवा में मारल रे गइलैं
अ गइया बेल्हि के गइलीं रे मोरि माई पिपरियौ की रे बाजं
आरे एहर दुरुगा घोड़वा कै बोखिया जंगलवा में खींचै रे लागल
आरे घोड़वा उठि के भयल बाड़ैं तइरे यं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे एहर गईल जौ बिपत लौरिक कै हइहै
उठि गयल घोड़वा ऽ ऽ ऽ अ नेउरापुर की बाजा ऽ ऽ ऽ र [१०८]

राजा हरेवा का महाजाल लगाना, मंजरी पर विपत्ति

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब दुरुगा गाइन से नेउरापुर टिक गइलीं
एहर मल सांवर कै गइया बेल्हल गइलीं
परल विपत गउरा में आरे नौलखा हार मंजरी कै लूटल गइलैं गले कै
घीउ गुड़ करनी कै लूटल गयल पूरा
ओहर जंगल में बीर लोरिक बइठैं असनवैं लगाय
एहर राजा हरेवा आरे महाजाल रतिया में जंगल पर दे लैं फेंकवाय
जंगल के आरी आरी महाजाल गिर गइलैं
एहर घोड़ा बीर लोरिक जाल में फंसि गइलैं भयल सबेरा जंगल में
मंगर घोड़ा कहै भयवा अरे जल्दी पीठिया होब्या रे असवार
महाजाल में हमहन फंसली
मगर एड़ा धरती में मारै तीन तीन जोजन गयल मेंडराय

जब उप्पर के घोड़ा जाल ले ले उड़लै तब नेउरापुर मचि गइलैं लेलकार
जेतना पट्ठा खींचैं लगलैं जाल कै मुह बन्द होइ जाय
एहर ए भाई घींचत घींचत नेउरापुर चललैं
तब रंगुआ कहलैं कि फंसि गयल अहीर गउरा कै
आरे किला में परै लै बनखान

लोरिक का बिजली से महाजाल को काटना तथा हरेवा का पलटन सजाना

दातुल दातुल रे गोहरावै लोरिक के होइ गयल खियाल
कि खींचि के बोजुली जलियै में मरलैं, जाल दू टुकड़ा होइ जाय
निकल के घोड़ा भागल आरे तीन तीन जोजन गयल मेंड़राय
आरे घोड़ा जंगल में चू गइलैं जाल छू छी नेउरापुर जाय
रंगू बारी कहलसि बबुआ अब कुसल बेड़ा न बाड़ैं
अ निज की मरन गयल निअराऽऽऽय तब राजा हरेवा बोलैं
कि अब का करीं रंगू कहलस कि बाबू पलटन सजवा द्या
बारह सै मोग़लइता सजवाय द्या तेरह सै तुरकी मो सजल पठान
सोरह सै रघुबंस सजा द्यां आरे जेकर निंगी रे झुलै लै तरवार
बीगुल बाजा मों कचहरी में बाजै मारू बजवा दे लै रे बजाय
पलटनिहन के काने में सबद लागि जाय
आपन आपन कोठरिया छोड़लैं लोहवन क कोठरी गइलैं रे निअराय
बरछी भाला कवनो चढ़ावै अउरो तेगा चढ़ावैं तरवार
कतार क कतार पट्ठा लगि गइलैं
आरे बलको कचहरी गइलै मोरे निअराय
घोड़ी मो कटहिया रे सजवावैं
आरे पवनी घोड़िया ले लैं कसवाय
ऊंटवन क मो टाटी रे लगावै
आरे सड़िनिन खाईं दे लैं मरवाय हथियन कै मोर फाटक लगावैं
एहर पलटन साजि कइलन रे तइयार
एहर रंगू बारी आपन हाथी कसवाय के बड़का घंउसा दे लैं रखवाय
आगे आगे पलटन चलल पीछे पीछे रंगू बारी
आरे हाथी पर घंउसा बजावै आ चढ़जा ज्वानों चढ़ जा धंउसा बजावै
आरे बारह कोस जंगल में गइलैं जहां बइठल अहीर गउरा कै
तब पलटन चारिउ अंलगे से घुमि के बीचे में छेंकि लेला
हाथिन के फटक लगावैं ऊंटवन टाटी देलैं मरवाय
संड़निन कै खाईं पिटवाय दे बीचे रारी सिंहिन कर बार

तब मंगर घोड़ा लोरिक से कहलैं
जल्दी डांकि के पीठिया होब्या रे असवार
बीर लोरिक घोड़वा पर चढ़ि गइलं हनि के एड़ां घोड़ा मरलस
तिनि तिनि रे मोरि मइया जोजनवैं में डरे रं
आरे घोड़वा उड़ि उड़ि के मइया जंगलवा में मेल्हैं रे लागल
आरे एहर भन भन भन चोभि चोभि चोभि बरछिया मोर बोलै रे लागल
आरे सन सन करति बाड़ैं मइया जंगलवै में तररे वं
आरे एहर उड़ि उड़ि घोड़वा खोपडड़न पर मारै रे लागल
आरे खोपड़ा तिन तिन ए मोरि मइया टुकड़वा अब होई रे जं
आरे जेकर धई के खोपड़वा घोड़वा मैं उडि हो गइलै
आरे ओकर पतवै रे मइया न लागति बाड़ैं ना रे ठिकं
आरे एहर दुरुगा मइया लोरिक के ललरेकारैं
आरे घोड़वा लेके ए बेटवा गोलिया में चूई रे जाब्या
आरे हइहै आइल बाड़ैं ए बचवा ओसरियौ ना रे तो हं
आरे घोड़वा ले के बलको मइया अ गोलिया में चुइ हो गइलैं
आरे एहर दुरुगा खपड़वा हथवा में बाड़ै लगवले
आरे लोरिक दबलस रे मइया बीजुलिया ना आपन रे खं
आरे एहर दुरुगा कै डरवा खपड़वा मों घूमैं रे लागल

लोरिक के खड्ग से लाशों का गिरना और हरेवा की पलटन का मारा जाना

आरे लोरिक के घूमति बाड़ैं रे मइया बीजुलिया न बलको रे खं
आरे एहर देखा मउरी कै रे मइया लगल बाड़ैं मउर ए माला
आरे दुरुगा लसियन कै दइबा लगवले हउवै खरि रे हं
आरे एहर गिधिनी मै गिधवा गावत बाड़ैं झकरे झूमर
आरे गिध गवलें रे मइया बेदवौ रे पुरं ऽऽऽऽऽ
आरे एहर सारा पलटनिया जंगलवा में मारल रे गइलीं
आरे रंगू हाथी ले के नेउरापुर गउवां गयल हउवै निअरे रं
आरे जाइ के राजा की कचहरी में रंगुवा मों गिरि रे गइलैं
आरे अब ना बची रे मइया जिनिगियौ रे तोहं
आरे काल्ह बिहाने ए बबुआ मरनवा तोर आई रे गइलैं
आरे हइहैं कलवा कपरवा आ गयल हौ तोरे निअरे रा ऽऽऽ य [१०९]

बच्चों के साथ नेउरापुर की स्त्रियों का जंगल में भागना

हां ऽऽऽऽ आं ऽऽऽऽ आं

आरे सुना अगवां कै खेलवार
तब रंगू बारी बोलै राजा हरेवा से
आरे बाबू अब कुसल बेल्हा ना हौ
राजा हरेवा कहै कउनों उपाय रंगू हम्मैं बतावा
अब हम का करीं तब रंगू बारी कहलैं
बाबू गावैं नेउरापुर डुगडुइया बजवाय द्या
आपन आपन सूप चलनी लेके सब बिटिया बेटवा जंगल में भागो
केहू क जिनिगी ना बची बाकी आवा तूं जाके फाटक
तीन फाटक के बीचे में जाइके बइठा
हम दुआरी पर फाटक बंद कइ देब
आई अहीर गउरा कै गांव भर सुनि पाई
कि केहू ना लड़की न केहू मिली, फिनि घूमि के चलि जाई
ई बात रंगू बतवलैं गांव भर डुगडुइया पीटल गईल
आपन आपन लईका लईकी लेके जंगल में भागल लोग गइलें
एहर ए भाई रंगू भारी फाटक बन करवाय के
फटके के कोठरी मैं लुक लैं
एहर राजा हरेवा तीन फाटक के बीचे जाके लुकैं
अ एहर बिहान भइले दुरुगा लोरिक के संगे में लेके
सोरह सै कंटाइन सोरह सै मरिया अउरो मसान
सोरह सै दल छोहरी जबै रूवै रूवां असवार
ब्रह्माइन बोहवा कै अरै संवरू दादा कै पुजमान
आरे गोरय डीह गाइन कै उछरै अठारह हाथ
दुरुगा बायें बनसतिया आरे दहीने चलै ले दुरुगा माइ
बीर लोरिक घोड़े पर चढ़ गइलें
हकलें घोड़ा नेउरापुर की गइलैं रे बजार
नेउरापुर में जब मों गइलैं सारा गांव सुन्न परल हौ
न अदमी न अदम जात न चिड़िया भनकै
आरे गइलैं राजा हरेवा के फटके पर
घोड़े से कूदि गइलैं आरे हनि के एड़ा मरलैं
दुरुगा ढकेललीं संग फाटक गिरल भहराय
फटके में हल गइलं तब रंगू निकल के दुआरी पर भइलैं तइयार
पूछलैं बीर लोरिक एक बात रंगू हम्मैं बता द्या
राजा हरेवा कहवां हउवैं तब रंगू बारी कहलैं

ओही कोठरी में लुकल हउवै एहर वीर लोरिक गइलैं कोठरी के पास
हनि के एड़ा मरलैं टूट गइल केवाड़ो
धइलैं गट्टा राजा हरेवा कै
आरे कीला में खाँड़ी से मरलैं माथा गिरल भहराय

लोरिक का हरेवा का सिर काट लेना तथा बारह सौ कैदियों का छुड़ाना

तब गइलैं रंगू के पास वीर लोरिक, ई बतावा
ऊ बारह सै गोपिन के बन्हुआ कहाँ बान्हल हउवैं
तब कहलेस ह रंगू बारी ए सेंटर में हउवैं
तब कहलेस ह रंगू बारी ए सेन्टर में हउवैं (पुनरावृत्ति)
अंगवा अंगवा रंगू चललैं
पीछे पीछे लोरिक रे रेवरले जाय
तब बन्हुवन के पास में गइलैं
आरे जइसै कपैं माघ में बियाइल गाय
बाबू सासत में जिनिगी परल हव
हम हन क दमिया छोड़ि दा बाबू
हम हन क दम बाबू एठिन छोड़ा
बड़े दूर के रहने वाले आरे बड़े गरीबे घरे कै लड़िका बबुआ
तबले रंगू बड़े जोर से डपटै कि
तोनहन लोगन के छोड़वै बदे त ऊ आवत हउवै
बारह सै गोपिन कै बन्हुआ रंगुआ आरे कीला में छोड़ि मोरि देहलैं
आगे आगे रंगू चललैं पाछे पाछे बन्हुआ
आरे खजाने की कोठरी पर गइलैं
तोड़ि तोड़ि ताला जब किलवा में बारह सै गोपिन के सेन्हुर
मोटरी गठरी में गठियावैं माल खजाना रे लुटवावैं
एहर दुरुगा फुंकलस नेपुरापुर तड़कै बड़ँरिया कै बांस
ऊपर के धुवां रे उधिराय गइलैं
आरे जमुनी बइठल हरदी में बाय
बुरुजे से लगा के ओसारी ताकैं कि नेउरापुर धुवां फूटत बलको बाय
अपने बुरुज से नीचे उतरै
आरे चन्ना कै कीला में गइल निअराय
आरे सुना गोपी लड़िकवन्हि तनी एक माना बाति हमं
जउने सइंया कै संगे आरे गउरा से हरदी में अइल्यु
तवन दुलहा तोहार नेउरापुर गइलैं

राजा हरेवा गरवा के चइला छाती पर रखत्राय के
उहै फुंकवाय देहले हौ जवन धुवां गयल उधि रं
तब चनवा जमुनी से बोलै आरे जमुनी मनब्यु बात हमार
दूल्हा के मरम तूं ना बलको जनत्यु
जानल बा रे मरमिया हमार
सात बेटवा राजा बमरी के सातो जनमल दइल कर लाल
कउनो सिंही सेर मरलै
कउनो बघवा मारैं हुड़ं
तेके मरलैं गढ़ सोहवल में
सतिया बहिन कै डांड़ीं गउरा देलैं बइठाय
आरे भाई अम्मर होके जिरउलो पर निरम्मल के मरलैं
मंजरी क डांड़ी किला में दे लैं बइठाय
मोर कइलैं उढ़ार चन्ना कै
टिकलैं हरदी केरी बजार
बारह सै गोपिन कै बन्हुआ छोड़ावै के कहलैं
छूटि जइहैं ए जमुऽऽऽऽऽना आ नेउरवापुर की बाजाऽऽऽर [११०]

लोरिक का नेउरापुर से कैदियों को छुड़ाकर हल्दी आना तथा कैदियों की पत्नियों का लोरिक की आरती उतारना

हांऽऽऽऽआंऽऽऽआंऽऽऽऽहां
सुना हाल अगवां कै राम राम राम हो
आरे जब ए भाई रंगू बारी अपने संगे में
जब बारह सै गोपिन कै बन्हुआ लें के
सारा धन लुटवाय के गठरी मोटरी बन्हवाय
नदी बेवरा उतारै लगलैं पार
आरे ए भाई एहर ले के नेउरापुर माटी में मिला के
एहर मैं लोरिक घोड़ा कुदा के ई ले के हरदी के चल लैं
सारा धन ले के हरदी में चललैं
आरे हरदी के जालैं रे बजार
नौ नौ गंडक तोरन लागे तेरह भिउली कै तोरै लैं पहार
एहर मै गांव हरदी में गइलैं गांव कै गोइंड़े गइलैं निअराय
मचल कूक हरदी में अरे भाई
बारह सै गोपिने के बन्हुवा आय गइलैं हरदी में
बड़ी डंका खुसिहाली कै भइल एहर बारह सै गोपी जवन हईं

आरे अपने अपने घरे आरती बनावैं गजरा करैं ली तइयार
बारह सै गोपी निकललीं हरदी सें आरे सरहद पर गइलीं
जाके बीर लोरिक कै आरती करै लगलीं
एहर लोरिक कै आरती कै कै गजरा दे लीं पहराय
एहर बारह सै गोपिन कै बन्हुवा जब हरदी में गइलैं
तब पूछै लगलैं कि हमहन बारह बरिस से आवत हई
हम हन कै आरती ना कइलू हइयै ऊ के हउवै
कि आरती ओनकर कइलू ह ऽ ऽ ऽ ऽ
एहर भेद बतावा चिन्ता बढल बदन में बाय
तब गोपी कहैं कि इहै अहीर गउरा के हउवै
जौ ई हरदी में ना आयल होतैं
आरे न छूटि के अवतीं हरदी के बजार
एतनी बात जब गोपी कहलीं
आरे भाई चूप चाप मारि बइठि लोंग गइलैं
एहर बीर लोरिक घोड़ा लेके चन्ना के फाटक पर गइलैं
मंगर घोड़ा के लगाम थामि के फटके में बान्हि देलैं
अपने उतर के किला में गइलैं चनवा मोटका गद्दा बिछावै
एहर मोटका गद्दा बिछाय कें लोरिक कै पकड़ के कलाइ बइठावै
हाली हाली गोड़ धुवत ह
हाली हाली ओ के गोड़ धो के
गिलास क पानी ले के मुंहे के लगावै
हलक झुरायल बाड़ँ तोहार पानी पीला संइया
लोरिक पानी जौ पीले लैं
तब एहर बोड़ा लगा के गोपी हाथे में दे लैं थमाय
लोरिक बीड़ा खाइ कें बइठलैं पंखा लेके चनवा हंउके
तब ए भाई चनवा हंसि हंसि लोरिक से बोलै
कि ए बात सइयां हम्मैं रे बताय द्या
चिन्ता बढ़ल बदन में बाय

चनवा का पूछना कि किसके सत से तुम्हारी विजय हुई, सत की महिमा

कि लागल सत सतिया कै सामी कि घोड़ा मांगर लगल ले सहाय
कि लागल सत बुढ़िया माई कै जेकरी न कोखो ले ला अवतार
कि लागल सत बियही कैं हउवै जे के कोट में देला रे बइठाय

कि लागल सत धरमी भइया कै जे छुटल गाइन की रे अड़ार
कि अपने बले भरोसे संइया नेउरापुर लुटल्या ढोल बजाय
कि जंघा में मोर फूटल जंघेला भूजन फूटि गयल बउसार
कि बांये लगल बनसतिया रहलीं कि दहीने लगल दुरुगा माय
एकर भेद बतादा सयां चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
तब त बोलै अहीर गउरा कै
आरे रानी मनब्यु बात हमार

लोरिक का अपने बलबूते पर विजय प्राप्त करने का दम्भ भरना व उसके अहंकार के कारण दुर्गा का साथ छोड़ना

का करीं सत मैं सतिया भउजी कै कइसे घोड़ा मंगर लगी रे सहाय
का करी सत बलको बियही कै जेकेर कोट दे लैं बइठाय
का करी सत बुढ़िया माई कै जेकरी कोखिया ले लं रे अवतार
का करी सतवा धरमीं भइया कै जे के गाइन की छोड़लें अड़ार
बायें लगल नहि बनसतिया हौ आरे दहिने नाहिं लगल ले दुरुगा माय
जंघवा में गोपी जंघेलवा फूटलं आरे भूजा में फूटल बउसार
अपने बले भरोसे गोपी नेउरापुर लूटलो ढोल बजाय
बनसत्ती के काने सबद लागल दुरुगा के पजरे गइल निअराय
सुना सुना ए बहिनियां तू आरे बलको बतिया मानैलू हमार
सभा में एनके बात न आइल मेहरी के आगे आल्हा सुनावैं
कइसन कइसन बात बतियावै आरे दुरुगा जरि के भसम होइ जाय
सुना सुना बनसत्ती एठियन आरे बलको बतिया मानैलू हमार
एइसन बात लोरिक बतियावत आरे बलको जरेला करेजवा हमं ऽ ऽ ऽ ऽ
ई हमार निंदा करत हउवें एकर संग बलको छोड़ि देबै
एनके माई बलको छोड़ि देबै सिरसापुर की जाबै रे बजार
धइले संग में राजा सिरसापुर एनके हम्मैं चढ़ाई बलिदान
एतनी बात जो बनसती सूनै आरे बलको सुनिके गइल रे घबड़ाय
सुना सुना दुरुगा बलको जे आरे माई मनबू बात हमार
हम घूमि के गाइन में जाबै हमरे बूते रे रहल नाहीं जाय
एतनी बात जब दुरुगा कहलं कि तूँ अपने गइयन जाबू
हम सिरिसापुर में चलि जाब
हम सिरिसापुर करनी में जाके काने में सबद देबैं सुनाय
ओनके बलको ली आ के हरदी में जो लेबै रे धरवाय
ले चलके सिरसापुर में सात दोन बनखान नवाय देब

अठवां दिन मंगर के रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया
अपने के चढ़ाय लेबै बल रे दा ऽ ऽ ऽ ऽ न [१११]

दुर्गा का सिरिसापुर जाना और राजा करनी से लोरिक को कैद करने के लिए कहना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ ऽ राम
जब दुरुगा हरदिया से आधी राति में उठल गांव सिरिसापुर में गईल
राजा करनी के खोद खोद जगावै राजा करनी उठि के बइठि गइलैं
कहलैं तूं के ह ऊ त कइलीं कि हम दुरुगा
कहैं एतनी राति के कहवां अइलू
एकर भेद तूं हम्मैं रे बताय द्या आरे चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
दुरुगा कहै बड़ी भूख लगल हौ कुछ तूं हम्मैं खियावा
एक सनेस कहै हम अइलीं कि बीर लोरिक गउरा कें
एहि हरिदिया में टीकल हंउवै
तवन चढ़ गइलैं थाना नेउरापुर टटके पाहुन तोर राजा हरेवा के मरलैं
सारा धन लूटि लेहलें हउवै अ बारह सै गोपिन सै गोपिन कै बन्हुआ
छोड़ा के ले के हरदी की आयल बाड़ैं बजार
हम्मैं पूजा दे बै कहले रहलैं तवन तनिको नांव ना ले ले हउवैं
हमार जिअरै गयल टिरयि ओही से मइया उठि के
आरे तोहरे पवन अइली दुआर
छोड़ देत हई संग लोरिक कै संगवा धई लेब बलको तोहार
लोरिक कै धै लिआवा आरे किला नाइ देबा बनखान
सात दिन बनखान नवाया अठवां दिन मंगरे के चढ़ाय द्या बलिदान
सात दिन बनखान नवाया अठवां दिन मंगरे के चढ़ाय द्या बलिदान (पु०)
एतनी बात करनी जब सुनलं आरे तबत करनी गयल घबड़ाय
जेकर पूजा एतना गइयन में खइल्यू
ओकर तू ना धन जौ भइलू हमार कब होबू
भाइ जउने दिन अहीर पूजा गाइन में दे देईं दुरुगा दुरुगा गोहराईं
उहां जाबू भागल अ धरबू संग बीर लोरिक के
सिरसापुर कटवाय लेबू माथ हमार
ए भाई हम पूजा ना देबै हम नाहीं पूजब सिरिसापुर केरी बजार
तोहार मन खोय दू चार महिन्ना पूजा खाय ला
फिन गउरा के घूमि के जाबू बजार

तब दुरुगा राजा करनी से कसम खा गईल
कि तोहार जिनिगी छोड़ देब सिरिसापुर केरी बजार
ए भाई जवन कहत हई तवन बात मोर करां
तब राजा करनी कहलस कि कवन बाति हौ
दू ठे सिपाही हम्मैं दे द्या हम ले के हरदी की जाईं बजार
धई लियाईं वीर लोरिक के हरदी से किला में नांय देईं बनखान

लोरिक का दुर्गा को अन्धा बना देना तथा लोरिक का दुखी होना

दू सिपाही संगे लेके अ एहर दुरुगा चलल हरदी में
ले जाके सिपाहिन के घाटे पर बइठा दें अपने हरदी में जाके
मुरुगा कै भेस धइके कु कु हूँ कू लगावै
लोरिक क नींद खुलि गइल किला में ही गइलें भोर बिहान
हाली हाली लोटिया हाथे में कांखें में धोती ले लैं दबाय
गोड़े में खराऊं नाके आरे सुरसरि में रचैं चललै नहान
जब घाटे में पहुँच लैं कुल्ला फराकित मयदान होके
करिहांव भर पांनी में जाके हलोरा मारै लगलें
तब एहर दुरुगा आंखिन में मोतिया बिन कइलेस
न सूझै उवारै पार तब घाटे में लोरिक टूवैं
मुर मुर बालू करारे से गिरै त अ दूनों सिपहिया बोलैं
कि बाबू कुछ तोर हेरायल हमहन खोजि के दे देईं
तब बीर लोरिक बोलै ना
तब सिपाही दूनों कहलैं बबुआ कउनो चीज गिर गइलं
एकर भेद बतावा चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
तब रुवै अहीर गउरा कै आरे ना जनी कवन रे मोरि
म ऽ ऽ ऽ ऽ इया अ पपवा उदै रे भइलैं
आरे कादौ ऽ ऽ हइहै बिगर गयल रे मोरि मइया करमवौं रे हमं
आरे कादौ आजु उपरल रे मइया कलपनवा रे मतवा कै
आरे घटवा में फूटि गयल रे मोरि मइया अंखियौ रे हमं
आरे कादौ परल कलपनवां धरमी रे म ऽ ऽ ऽ इया कै
आरे घटवा में मरन रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया अ गयल हउवै निअरेराय
आरे आजु का दो बायें बनवा सतिया संगवा मोर छोड़ि रे देहलस
आरे दहीने छोड़लसि रे मोरि मइया दुरुगआ न बलको रे मं
आरे हमके अइसन केहू मनसवा घटवा में नाहीं हो मिलत

आरे हमके देतै रे मोरि मइया हरदियै में पहुँ रे चं
आरे एहरवैं मैं दूनों जौ सिपहिया हथवा पकड़ रे ले लैं
आवा आवा तोहैं देईं ए बबुआ हरदियै में पहुँ रे चं

दोनों सिपाहियों का लोरिक को पकड़ कर राजा करनी के किले में डालना

आरे दूनो जे सिपहिया गटवा धइके सिरिसा पुर चले रे लगलैं
अगवां अगवां जात बाय अहीरवा रे गउरा कै
आरे पीछवा दुरुगै रे माई पराइल हउवै रे जं
आरे राजा करनी के बबुआ किलवा में ओल्हि रे आवै
बहरे से देखा फटकवा बन रे भइलैं
आरे तब एहर अंखिया क मोतिया बिनत्रा खोलि रे देलैं
आरे जब देखलसि रे मइया फटकवा रे करनी कै
आरे बलको पीटि पीटि के छतिया किलवा में रूवत रे हउवै
आरे निज की गयल बाड़ें रे माई मरनवा निअरे रं
आरे एहर दुरुगा जाके राजा करनी के खबरिया हउवै लगवले
जलदी पलटन सजवाय के किला में ए बबुआ नाइ देब्या बनरे खं

करनी की पटलन को लोरिक द्वारा मारा जाना तथा दुर्गा का लोरिक को गड्ढे में फेंकना तथा वनखान में डालना

आरे एहर सारा पलटनिया किलवा में सजि हो गइलों
आरे बलको लोरिक मारि मार किला में देलै हउवैं ना रे गिराय
आरे मारे खुनुस में दुरुगा पजरवा पहुँचि रे गइलीं
एक हाथ गांड़ी में देखा लोरिक के नाइ रे देला
एक ठे गरदन पर धीरे से दुरुगा देले बाड़ै ना रे दबं
आरे पिछवा के उलटी रे माई मुसुकिया हउवै चढ़वले
सब पोरिसा गड़बड़ा बलको देले बाड़ै खनरेवाय
आरे ओही में लोरिक के गड़गड़ा में ढेंगरे लावै
छतिया पर कोल्हू रे माई देलै बाड़ैं ढेंगरे ला ऽ ऽ ऽ य
आरे इन्हैं सात दिन बनखनवां नइले रे रहा
अठवां दिन मंगर के करनी चढ़ाय दीहा बल रे दं
एहर लोरिक देखा भइया बनखनवां परि हो गइलैं
आरं दुरुगा नीबियै के डारी पर झुलुववा नवले रे हउवै
भजन करत बाड़ैं माई जो संझवा रे बिहं
आरे एहर राजा करनी मगन बलको होइ रे गइलैं

देस देस सूबन के पाती भेजि रे देहलैं
आरे जवन लोरिक एतना उखमुज देसवा में कइले रे रहलैं
आरे तेके हम किलवै में मइया नवले बाड़ीं बनरे खं
आरे जेकर देखै क मनवा होय उहों बलको देखि रे जाईं
आरे बलको सूबा सात सात पलटनियाँ एहर मैं चलि रे देला
आरे सिरिसापुर गउवां जाके डेरवा देलै हउवै ना रे गिरं

सात दिन तक लोरिक का बनखान में रोना तथा
बनसत्ती का दुर्गा से लोरिक को छुड़ाने के लिए कहना

आरे एहर लोरिक के सात सात दिनवा क दिनवा बीति रे गइलै
आरे तब त अइसन रुवइया आ किलवा में रुवत रे हउवै
आरे माई अकसरि जाति बाड़ै रे मोरि मइया किला में जिनिगिया रे हमं
आरे बनसत्ती बोहवा में बइठल कनवा से सुनत रे बाड़े
आरे माई बलको आपन बोहवा जौ गइयन कै छोड़ि रे देलं
आरे सिरसापुर गउवैं रे माई गइल निअरे रं
आरे जाइके दुरुगा क झोंटवा पलनवा ले खींचि रे ले लै
आरे जउने अइसन बेटवा कै पूजवा खइले रे बाड़े
आरे कइसे भूजत बाड़ ए मात्रा सिरिसवैपुर की बाजं
आरे भला तबले दुरुगा धीरे धीरे बनसत्ती से बोले रे लागल
आरे कइसन कइसन बतिया हरदिया में बति रे वउलै
इनके जघवा के जोरवा का बलको होइ रे गइलैं
आरे काहें न छूटि के जात बाड़ै रे माई हरदियौ की रे बजं
आरे दुरुगा एतना कोपितवा किलवा होइ रे गइलीं
आरे बनसत्ती धीरे धीरे दुरुगा के घलत बाड़ी समुरे झं
आरे माई एतना पूजवा जौ गइयन में देले रे बाड़ै
आरे पूजा खइलू ए दुरुगा जौ संझवौ रे बिहं
आरे जब दहिना जंघवा बोहवा में गइयन में चीरि हो देहलें
आरे पियलू ए माई तूं पेटवौ रे अघं
कहलू जे जहवां ए बचवा पसिनवा त ढुरि हो जइहैं
आरे उहवां रुधिलवा ए बेटवा ढुरिहैं रे हमं
आरे एतना बरदान गाइन में देले बाड़
काहे के जिनिगी मारत बाड़ी ए म ऽ ऽ ऽ इया
अ सिरिसवा पुर की बजा ऽ ऽ ऽ ऽ र॥ ११२]

चनवा की दुर्गा से प्रार्थना तथा दुर्गा का उसको डांटना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब दुरुगा कहलस ह तब का करीं
जवन कहा तवन तोहार बात हम करीं
आरे कहैं जल्दी लोरिक क छोड़ावा
तब दुरुगा कहलस हे चलि के लोरिक कै इंतिजाम तूं करा
हम जांई हरदी में चनवा से कहि देईं
देखा ऊ का कहै ले बनसत्ती जाके लोरिक कै इंतजाम करै लागल
आ दुरुगा भागल हरदी में जाके आरे चनवा सनमुख भइल तइयार
चनवा गोड़े पर दुरुगा के गिरि गइल कहत हौ
कहो माता तोहार पता न चलत हौ
सइयां के पता न लगत हौ ठेकान
दस दिन बींति गइलैं तब दुरुगा दे बै लगत हौ जबाब
नहियर में लुकिया लगवलू सासुर में लगवलू आग
आरे दूनों घर फुंकलू रानी छन में भसम होइ जाय
अइसन बात बतियावत बाड़ू अपने बइठल बाड़ू
बुरुजे पर भूंजत एकवटे में राज
तोरे सइंया लोरिक किला मे परल बनखान
बान्हल मरि जालैं होलू चउकवा रांड़
तेली ना मिलल तमोली भुजा न मिलल कलवार
अहीर बरउलू गउरा से लेके हरदी की अइलू बजार
बड़े जोर में चनवा हंसैं आरे दुरुगा मनबू बात हमार
हरदी में तेली करब तमोली भूजा के लेबै कलवार
बान्हल पगरी सइंया क बोरि देब
तोर देसे में बोरब मनुसाय, हमार त इहै कमवैं हउवै
एतनी बात जब दुरुगा सुनि के आरे बलको गइल रे घबराय
सुनि ले चनवा बतिया मोर तनी एकन
ओड़न खाड़न लोरिक कै पहुँचाय दे
हम लेईं बलको रे ना छोड़ाय, एतनी बात जब चनवा सूनं
आरे माता मनब्यु बात हमार, हमसे ओड़न खाड़ न उठीं
हमसे ओड़न खांड़ ना उठीं (पुनरावृत्ति)
हमसे ओड़न खांड़ किला जाई
मेहरारू के ले जाये के ना बनल बांड़ैं

एतनी बात जब दुरुगा ले कहलस
दुरुगा हाथे में देलै रे थमाय
एहर चनवा ओड़न रखि के
घोड़वा के पजरे गयल रे निअराय

चनवा का मंगर घोड़े के पास जाना और पति लोरिक के बनखान में पड़ने की बात बताना

जाइके तबेले में घोड़ा के हनि गईल
जब तबेले मै हल्लल चनवा
तब घोड़ा कै सोझै रे नजर परिजाय
कवन करनवा खोलली केवाड़ी एकर भेदै देबो रे बताय
तब चनवा समुझावत हउवै आरे घोड़ा मनब्या बात हमार
अपने चना हरदी में खालें, सइंया सिरसापुर परल रे बनखान
बान्हल मर जाला समियां म आरे हम होबै चउकवै रांड़
तब मंगर घोड़ा कहत हउवै चाहे बान्हल बलको मरि जइहैं
हमकै रंचक गम नाहीं बाय
जब नेउरापुर से घूमि के अइलैं कादर में गिनिती करैं लैं हमार
हमके रायन क डर ना हउवै तब चनवा ना उठै ले रिसियाय
जब सामी मरि जइहैं सिरियापुर
तोहके मांरि नाइब हरदी की बलको रे बजार
एतनी बात जब चनवा कहैं आरे मंगर गयल ले घबड़ाय
तब मंगर चनवा से बोलैं के मोरि पीठिया पर चढ़िहैं
के लेके बलको सिरिसापुर चलिहैं तब चनवा मंगर से कहैं
हम पीठिया पर होवै रे असवार
हमके लेके सिरिसापुर चला
आरे मंगर ठावैं रे मोरि मइया जबाब बलको देबै रे लागं
आरे हम जनाना के चनवा जौ चढ़ै बदै नाहीं रे हइं
आरे हमरे पीठिया पर मनसेधू ए चनवा जौ होलैं बलको असरे वं
आरे जै तैं पीठि पर चढ़ि जाबू आरे बलको बिगरि जाई रे
मोरि म ऽऽऽइ ऽऽऽ या अ धरमवां ना रे हमा ऽऽऽ र [११३]

चनवा का घोड़ा मंगर पर बैठ कर लोरिक के पास जाने की तैयारी

हां ऽऽऽऽ हां ऽऽऽ हां
राम ऽऽऽऽ राम ऽऽऽ राम

तब मंगर घोड़े पर चन्ना धरै लगाम घोड़े कै
आरे लेके थाना हरदी में चलै लगल
जेकर जेकर नजर हरदी में पड़ै
आरे बलको उलटा रे पछाड़ा खाय
अइसन मनसेधू चनवा बनं
आरे पेन्है लगल निरखी जब गलवा में
गोड़वन में दोहरी पेन्है ले तमांच
आल्हा गूंजकर जब पनही जं
आरे गोपी एड़वन में ले लै रे चढ़ाय
बन्हले पाग जब रे नरमन कै
आरे जेकर चोर रे नेतर फहराय
बायें त बगल में जो ओड़न बान्है
आरे दहिने घींचि के बिजुलिया खांड़
धइके लगमियां चलै ले घोड़वा कै
आरे थाना हरदी की चलै ले बजार
गउवां के बहरवां अब हरदी के होइ गं ऽऽऽऽ
आरे घोड़वै कै घलै ले समुझाय
उड़ै लागा घोड़वा तू जब हरदी कें
एतने जोर से ठनक्या बबुआ
झूरै बलको रे बदर खहराय
लगि जाई सबद संइया के काने में
थाना सिरिसापुर की बजार

मंगर घोड़े पर बैठकर चनवा का सिरिसापुर जाना

तब त एहर चनवा दूनों गोड़े एक अलंगे कइके
आरे बलको पीठिया भइल ले असवार
मंगरा जौ एड़वा रे धरती में मारै
आरे लेके तीन तीन रे जोजन मेंड़राय
ठनकल घोड़ा जब दवदें में
आरे जेकर मांगर रे तुरहिया नांव
एतने जोर में घोड़वा ठनकै
आरे जहां झूरै रे बदर घहराय
आरे जहां झूरै रे बदर घहराय (पुनरावृत्ति)
लोरिक के काने में सबद लगि गइँ

आरे थाना सिरिसापुर की बजार
आरे तब तै सूतले रुत्रत बाड़ैं हो भइया अहीरवा हो गउरा कैं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे के हमरे पाठिया पर मइया हरदिया में जनमि रे गइलैं
आरे के कटहवा छोड़लसि रे मइया अ घोड़वा ना रे हमं ऽ ऽ
आरे कहां भइया के मोर सबदिया आ गइथन में लागि हो गइलीं
आरे का बोहवा ले आयल बाड़ैं रे मइया भयत्रौ ना रे हमं
आरे एहर घोड़वा उड़ल उड़ल ए यारो
अ बलको सिरिसापुर चुइ हो गइलैं
आरे ओहर राजा करनी बावनों जी सूबवा फटकवा पर टीकल रे हउवैं
आरे जवन लोरिक के सत सत दिनवां
दुरुगा बनखनवा सिरिसापुर नवले रे हउवैं
आरे बावनो सूबा देखै बदे फटके पर मोर डेरवा
अ देहले हउवैं ना रे गिरं
आरे तबले घोड़वा जाके बन सूबन के पजरवां
अ चनवा क घोड़वै मोर चुइ हो गइलैं
आरे बन सूबवा ताकति बाड़ैं रे मोरि मइया ओसरियी ना रे लगं
आरे लोरिका मतिन मनुसवा आरे हे दे हमके बलको लवकत रे हउवैं
आरे लोरिकै मतिन घोड़वा लवकति बाड़ैं
ए यारो सिरिसवै पुर कोना बजं
आरे सब कर राजा करनी सिरिसापुर में बलिदान मनले ह
आरे सब कर राजा करनी सिरिसापुर में बलिदान मनले ह
सब कर गयल हौ रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
अ मरनवां निअरे रा ऽ ऽ ऽ य [११४]

चनवा को देखकर बावन सूबा भयभीत

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
आरे तब बावनो सूबा गइलैं घबड़ाय
आउर लोग बतियावं बड़े बड़े लोरिक मोर जनमल
बड़े बड़े घोड़ा मोर जनमल
सब लोग तम्मू आपन छोड़ि देहलं चन्ना के पजरे गइलैं निअराय
हाथ जोड़ सूबा बोलैं आरे बाबू कहवां ओतन
आरे कहवां गोतन हौ कहवां जो जनम भयल बुनियाद
के करे बुनकर सिरिजल बाड़ू आरे केकरी कोखिया लेल्या रे अवतार
कहवां का बाबू चललि बाड़्या कहवां चलवले हउवा जं

एकर भेद बताय द्या हमके आरे चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
बोलत चनवा जब गोपी मं आरे रस में दे बै लगै ले जबाब
एने बन में सुगवा बोलैं आरे कोइलर कुंहकै आम की डार
अइसी बोली चनवा बोलैं आरे मुख से चूवै लगै लैं गुलाब
पियले पनियां जब सरजू कैं आरे गला बनसिन के रे तरे घुघुवाय
अइसन बोलिया मैं चनवा बोलैं आरे बाबू मनब्या बात हमार
कुसुमापुर में ओतन गोतन आरे कुसुमैपुर जनम भयल रे बुनियाद
महदेव बुन कै सिरजल बाड़ैं आरे सिलिया कोख ले ले रे अवतार
हमार बाबू सहदेवै नाव परल हौ आरे हइहै देखा
एक बहिन मोरे चनवा जनमल आरे जेकर चन्ना परल बा नांव
तवन अहीर गउरा कै कइके ओढ़ार हरदी की गइलैं बजार
राजा करनी लिखि के पतिया भेंजलें आरे पाती कुसुमापुर की बजार
जवन तो रे बहिन क ओढ़ार बलको कइलैं
आरे तेके किला में नावैं लैं बनखान
आइके देखै के होबा तूं देखि जाब्यां आरे उहै घोड़वै दीहल रे सजवाय
भले घात में परि औ गइलैं आरे मारि नाइब
जिनिगी मैं सिरिसापुर की बजार
बावनो सूबा मोरे चूतर बजावैं
हमहन क भारी जौं मुदई भारी मुदई आयल हे बा ऽऽऽय
कउनो सूबा चनवा के लिआ के
अपने तम्मू पर गइलैं घोड़ा मंगर के देलैं रे बन्हवाय

लोरिक की दुर्दशा देखकर चनवा की आखों से आंसू की वर्षा

एहर चनवा के कुरूसी लगा कें आरे बलको चन्ना के दे लैं रे बइठाय
रतिया में चनवा जौं लगै ले बितावैं
मंगर के दिनवा गयल रे निअराय
होत सबेरा बीर लोरिक के आरे राजा करनी गड़बड़ा से निकलवाय के
आरे नाऊ बलवाय के ओनकार बार बनवाय दे लैं
आरे नई कफ़नी गांड़ी मूड़ी करवाय दे लैं
ऊ मोट एकन गजरा गरे में नाय के
ऊ लिआय के फाटक पर करैं लै तइयार
बावनो सूबा सूरति मैं देखलैं बीर लोरिक कै
आरे चन्ना देखै जब सूरत बीर लोरिक कैं

गोपिया झर झर झर झर अंसिया नयनवा ले बहै रे लागं
आरे जवन सइयां फुलवन की नइयां हरदिया में ऊवल रे रहलं
आरे तवन फूलवन की नइयां जो गयल बाड़ें कुम्हि रे लं
आरे तब तै बावनो सूबवा गोपिया से बोलै रे लागै
आरे सुना सुना बबुआ कवनो कारन आज फटके पर रूवत बाड़्या
आरे हम हन के खटका रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या गयल हउवें नारे
बुझा ऽ ऽ ऽ य [११५]

राजा करनी द्वारा लोरिक के बलिदान की तैयारी

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब गोपी बोलैं फटके पर
आरे सुना ज्वानों एक अखाड़े कै लड़वइयां
गउरा लड़ल मेवाकरने के बगवान
आरे पदन में भाई लगैं लैं हमार
आज ईत कइलै हौ ओढ़ार बहिन कै
रहि रहि जियरा खउलत बाड़ैं हमार
देखले से मोह लगत हौ आज बहिन कै ओढ़ार ना कइले होतै
जाईत गउरा में सहित लेइ लेइत समउरिया कुटुम लेइत पलि वं
आरे संगे आके लड़ित राजा करनो से भाई घलित छोड़ाय
बाकी बिना मरले लोरिक के ना छोड़ब सिरिसापुर केरो बजार
ओहर राजा करनी किला में पक्की रे चउरिया दुरुगा क
बनवाय के अगवां जो कुंड़ देलैं रे खनवाय
एहर भाई अरघा बलको बनवाय दे बहगी क घिउवा देलैं रे झोंकवाय
लोरिक क मै गटवा पकरि के
राजा करनी ले ले बलको किलवा में हउवें जात
आरे किलवा में ले जाके करनी लोरिक कै गट्टा रे पकरि बलको लेत
हथवा में अपने तरवरिया लेके चउरी की आरी घुमावत बाय
एक फेरा राजा करनी घुमलं आरे दुसरा फेरवै गयल रे निअराय
तीसरा मै फेरवा करनिया घुमि गं आरे चउथा फेरा रे पूरा होइ जाय
जब पंचवा फेरा घूमन लागैं राजा करनी मोर देलैं रे जबाब
जेके गोहरावे के हौवा ओके जल्दी लेब्या तूं गोहराय
जउने देवतवा के पूजत होबा उहो बलको देवता लेब्या रे बोलाय
निज की मरनवाँ जौ किलवा में अइलैं आरे दुरुगा के चढ़ैला बलिदान
आरे तब तें रूवत बाड़ें रे मइया अहीरवा हो गउरा कैं

आरे कहवाँ हमरे सतवा रे मोरि मइया अ मतरिया कै रहि रे गइलैं
आरे कहवां सतवा ऐ भइया अ धरमियौं ना रे तो हं
आरे कहवाँ सतवा ना रे मइया बियहिया क रहि रे गइलैं
आरे सिरसापुर में जात बाड़ँ रे मोरि मइया अ जिनिगियौ ना रे हमं
आरे कहवाँ बायें बनवासतिया मतरिया हमार रहि हो गइलीं
आरे कहवाँ दहिने बाड़ें रे मोरि मइया दुरुगवा जौ बलको रे मं
आरे तबले मंगरा फरले अदमियन के बीचवें से मंगर जाति रे हउवें
आरे दंतवै मो लतवै दूनों ओंलगिया आ काटत मंगर भागल रे जाला
आरे हइहै लोरिक के गयल बाड़ँ मंगरा पजरवै मैं निअरेराय

चनवा का लोरिक की कलाई पकड़ लेना

आरे तब ले चनवा घोड़वै से रे मइया अ किलवा में कूदि रे गईलीं
आरे जाइ के राजा करनी के हाथ से तरवरिया
गोपी कीलवा में खीचि रे ले लैं
आरे लोरिक के गट्टा पकरि कै
अपने पजरे में रे मइया लेहले हउवें ना रे बलं
आरे द्या करनी बलदान हम चढ़ाय देईं
हमरे कुसुमामुर में चढ़ति बाड़ँ रे मइया अ संझवौ ना रे विहं
आरे चनवा एक फेरा यारो अ बलको चउरिया के घुमि हो गइलीं
आरे दुसरा फेरवा रनिया अ गइलि हउवै निअरे रं
आरे जब चउथा फेरवा गोपिया चउरिया के घूमैं रे लागल
आरे पंचवा मों फेरवा चनवा मोर घुमि रे गईं

दुर्गा का करनी की सारी पलटन को अंधा बनाना तथा चनवा का लोरिक को अस्त्र शस्त्र तथा सभी पोशाक पहिनाना

आरे तबले दुरुगा सारी पलटनिया के अन्हरवै किला में कइ रे देलै
आरे सारा सूबन के नाहीं सूझत बाड़ँ रे मइया अ संझवो ना रे बिहं ऽ ऽ
आरे तब ले चनवा हालो हालो निरिखिया गलवा के हउवै नीकलले
आरे समियां हाली हाली गरवा घलति बाड़ँ पहिरे व
आरे अपने तउवा रे मइया बदनिया बलको तोरि रे दे तैं
आरे समियां के छतिया में गोपिया अ देहले हउवैं ओंठ रें वं
आरे एहर गोड़वा क मोजवा लोरिक के गोड़वा में पहिरेरावै
आरे एहर पगिया हो मइया नरमवा कै बान्हि रे देलैं
आरे घोड़वा के पजरे मोरि चनवा गइल हउबै निअरे रं

आरे हमके जलदी ए मंगर हरदिया में पहुँरेचावा
आरे लागि जाला ए मंगरा लोहवा रे सामिया से
आरे किलवा में लूटि जाला ए मंगरा इजतियौ ना रे हमं
आरे तब ले मंगर कहैं ओदवां ए रनियां मनुसवा रूप तूं धइले रे रहलू
एदवां जनाना बनि गइलू नाहीं घलब ए गोपिया अ पीठिया पर बइ रे ठं
आरे नाहीं पंयड़े में कहीं सुंदर रे
मोर घोड़वा एइसन बलको लवकत रे हउवैं
अ जतिया क जनाना ए मइया भयल हउवैं असरे वं
उड़ि के घोड़ा मांगर जाय के
राजा करनी के चोदै लाग
आरे लोरिक डाकि के घोड़े पर भयल असवार
तब बावनो सूबन के पट्टी आंखि कै खूलि गईं
एहर अमला फइलन क पट्टी खूलि गईल
पलटनिहन क आंख खूलि गईल
राजा करनी क आंख खूल गईल
राजा करनी दुरुगा दुरुगा गोहरावै
आरे दुरुगा भइल ले बगल में ठाढ़
कहा राजा करनी काहे बदे मं घलैल गोहराय
तब राजा करनो मोर बोलैं
तब राजा करनी मोर बोलैं
आरे माई मनब्यु बात हमार
जवने लोरिक के बनखान किला नवलूं
तवन लोरिक हउवै घोड़े पर भइलैं रे असवार
अब कवन उपाइ लगाईं
तब दुरुगा समुझावै करनी कै
सारा पलटनि हन के साजि दा
बावनो सूबन के कीला में छेंकि के मारा
दुरुगा हमके चढ़ि जा तूँ बलदान
आरे राजा करनी बिगुल बजा दे
पलटनिहा भइलैं तइयार
आरे एहर बावनो सूबा तइयार फाटक बन भइलै
आरे हनन हनन गोली रे चललु बा
भन भन भन भन करै ले तरवार
छिवि छिवि छिवि छिवि बरछी बोलै

आरे गोला पिरिथी में तड़ाका खाय
मंगरा जो एड़वा जो धरती में मारै
आरे ले के तीन तीन जोजन मेंड़राय
आरे टप दे चनवा मैं गोपिया मंगरवा के समुरेझावै
आरे जइसे गोंसया ए मंगरा हरदी में तोर धन लागत रे रहलैं
आरे ओइसे हरदी में लागत ए मंगरा गोसाइन ना रे तो हं
आरे आज लूटि जाई मंगर जौ ईजतिया रे कीलवा में
हरदी में मुंहे पोति जाइ रे मंगरा करिखवौ ना बड़ि रे यं
आरे डूबि जाई डोंगा सामी क सांझे ए मोरि मइ ऽ ऽ ऽ ऽ या
अ गउरवै बलको गुंजरे रा ऽ ऽ ऽ त [११७]

घोड़ा मंगर का चनवा को हरदी पहुँचाना

हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ
तब्र मंगर घोड़ा कहले चन्ना से एक अलंगे गोड़ कइके बइठा
दूनो अलंगे दूनो गोड़ करबू ना पीठि पर घलब बइठाय
चनवा एक अलंगे गोड़ कइके बइठल घोड़ा पर
मंगर मरलसि एंड़ा धरती में तीन जोजन मेंडराय
उड़ल उड़ल घोड़ा हरदी में गइलैं जा के चू गइलैं सरहद पर
चनवा के उतारि के लगाम पीछे के फेंकवाय के
फिन एड़ां धरती में मारैं तीन तीन जोजन गइलैं मेंड़राय
तीन तीन जोजन गइलैं रे मेंडराय (पुनरावृत्ति)
ठनकल घोड़ा दाव देही हं
आरे जेकर मांगर रे तुरहिया नांव
जेकर खोपड़ा पर टपिया से मारै
खोपड़ा तीन टुकड़ हइ जाय
जेकर धइके खोपड़ा उड़िजाय
आरे ओकर पतवो न चलैं लै ठेकान
दंतवा लतवा दूनो काटै
आरे जेकर परल रे कटहवा नांव

लोरिक का लाशों की ढेर लगाना तथा सभी राजाओं को मारना दुर्गा के कहने से करनी को छोड़ देना

बीर लोंरिक गोल में कूदलैं
बाये खड़ी हौ बन सतिया

रे दहिने खड़ी हौ दुरुगा मं
रे दुरुगा लोरिक के ललकारैं
रे बचवा आइल ओसरिया तोहार
लस मुठिया तब ओड़ने कै
रे भक से भयल ओज रं
लस मुठिया बीजुली कै
रे बादर में दरेरा खाय
र दुरुगा ले कै खपड़ हथवा में
रे घूमति अन्तह हुउवै काल
ले एहर लोरिक दबलस मुठिया ओडने कैं
रे पोरिसन लवर रे गइल बुंमुवाय
र झर झर झर झरैले चुन र रीं
ट टूटि गिरने में लगलैं अंगार
लस मुठिया जब बीजुलो कं
रे जाइके बादर में दरेरा खाय
ल खांड बीर लोरिक कै
रे मउरिन कै मउर माला लगलै
संयन कै लगल खरिहान
गा खपड़वा ले लै मारै
रे बलको दुरुगा खपड़वा ले लै मारै (पुनरावृत्ति)
रा राजा के किला में मरलस
बीर लोरिक करनी पर दवरै
रे दुरुगा आगे रे करनी से
कर दोख ना तनिको हुउवै
रे हरदी में कइले बाड़ें रे बचवा तैं
वै ना बड़ि रे यं - - -

का लोरिक को उसके अहंकार की याद दिलाना, लोरिक के हल्दी आने बनवा का उसका पैर धोना तथा आराम करने के लिए गद्दा बिछाना

: चनवा कै अगवां ए बचवा तैं सोखियाना हंकले रे रहले
: कहल्या का करी मोर बायें जो बनवा ना बलको रे सतिया
: दहिने का करी ए मइया दुरुगवा न बलको रे मं
: अपने बलवा भरोसवा आ नेउरापुर लुटल रे बाड़ीं
: उहै कोपि गयल बचवा जियरौ रे हमं

आरे उहें सिरिसापुर बेटवा बनखनवां हमहन नउले रे रहली
आवा घुमि के चलीं रे मोरि मइया हरदियौ की रे बाजं
आरे लोरिक मानि गइलैं बबुआ बतिया हो दुरुगा कै
आरे डांकि के घोड़वा पर लोरिक भयल हउवै असरे वं
आरे एहर दुरुगा मैं भागल हरदिया के जाति रे हउवैं
आरे घोड़ा जाइ के चू गइलैं रे मइया हरदियो की रे बाजं
आरे जाइके चनवा के बबुआ फाटक में घोड़वा मंगर बान्हल रे गइलं
आरे लोरिक उतर के मैं घोड़े से कीलवा में हलि हो गइलैं
आरे चनवा मोटका मैं गदवा कीलवा में हउवै बिछवलें
आरे बलको हाली हाली गोड़वा लोरिक कै धूवै रे लागं
आरे सामी पानी पीला किलवा झुराइल रे मइया हलाकियौ ना रे तोहार
आरे जब मोर पनिया रे बबुआ हरदिया में पी हो लेहलैं
आरे तब तइं धीरे धीरे चनवा हरदिया में पूछत रे हउवै
आरे ओदवां अपने तूं बलवा भरोसवा नेउरापुर जीतले हो रहल्या
एदवां कइसे अइल्या ए समियां हरदियौ की रे बाजं
आरे तब तै कहै लागल ए गोपिया सतवा रे मतवा कै
आरे सतिया भउजी क सतवा लागल रे मइया हरदियौ की रे बजार
आरे एहर सतवा ए भइया कै लागल रे रहलैं
आरे बायें बनवा मैं सतिया भइल रहल तइरेयार
आरे दहिने दुरुगा रे मइया बगलिया में खड़ी रे रहलीं
आरे तब तै जीतलबै गइल ए रनिया अ बदियौ ना रे हमं
आरे ओइसे बचि गइलैं ए गोपिया जिनिगियौ रे हमं
आरे कहै लैं पांचू भगत बात ना मनब्या
लोरिक त चलि जाइ रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया
अ जिनिगिया ना रे तोहा ऽ ऽ ऽ ऽ र [११८]

मल सांवर की मृत्यु और मंजरी का रोना व फटी साड़ी पहन कर बोहा में स्नान करने जाना, जग्गू बनजारा से भेंट

हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ हां
राम ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम
आरे ओहर मंजरी जौ गोपिया मो जो गउरै में रूवत रे हउवैं
आरे मल सांवर भसुर मोर बोहवा में मारल रे गइलैं
आरे सारा बेल्हि गइलीं रे मइया अ गइया ना रे हमं
आरे सारा धनवां ए मोरि मइया अ गउरा कै लूटल रे गइलैं

आरे समियां जाके टीकल बाड़ैं रे मोरि मइया हरदियौं की रे बाजं ग
आरे एहर संवरू पोखरा बोहवा में बलको हउवैं खनवले
आरे सतिया चुनि के रे मोरि मइया बन्हवले ना रे धंग
आरे पुनवासी कै दिनवां बोहवा में जब हो अइलैं
आरे सती सगड़े में बबुआ लगल रहल ना हो नहं
आरे बलको बारह सै गोपिया गउरा कै चलि हो देलीं
आरे आइके बोहवा में रचत रनियां सगरवै में असरे नं
आरे मंजरी सात देवना कै लुगरिया हउवै पहिरले
आरे सात पेवना कै लेहलस रे मोरि मइया कांखिया ना रे दब
आरे जब आय के मोर गोपिया घटवा में बइठि रे गईं
आरे गोपी उहै मोर घटवा सगरवा कै छोड़ि रे देहलीं
आरे दूसरे घटवा में रनिया आ रचै लगलीं ना हो नाहंग
आरे तब ले पिछवां स मंजरी घटवा में आइ हो गइलीं
आरे मंजरी धीरे धीरे असननवा पोखरवा में करे रे लागल
आरे देहिया पर आपन देखब्या पीतांमर हउवै चढ़वले
आरे बलको घटवा में लुगवा मैं रनिया औ बलको गारत रे हउवै
आरे रुवत बाड़ैं हो मइया अ गइयन की रे आड़ग
आरे आजु पंयड़े क ए बरम्हा सिकिटिया पै रे धइलीं
आरे हमार गउरा भयल बाड़ैं रे मइया कुटुमवा ना पालि रे वं
आरे गोपिया हमार अइसन अमांग घटवा में भयल रे बाड़े
आरे संगवा छोड़ि देबी रे मइया अ गइयन की रे आड़
आरे मंजरी रुवत रुवत तीरिया पर चढ़ै रे लागल
आरे एहर जग्गू बनजार माई बोहवा मैं टीकल रे हउवैं
आरे जवन संवरू क बड़ा ए रामा संघी लागत रे रहलैं
आरे जग्गू के काने में गइल बाड़ैं ए यारों सबदियौ नारे सुनं
आरे जग्गू अपने बरधिया बोहवा में छोड़ि रे देलैं
आरे बलको घटवा पर रे मइया गयल बाड़ैं निअरे रं

मंजरी को देखकर जग्गू का दुखी होना

आरे मंजरी एइसन रुवइया घटवा पर रुवत रे हउवै
आरे बनवैं के पतवै रे मोरि मइया गिरत बाड़ैं खहरे रं
आरे तब ले जगुवा अगवां मंजरी के पहुँचि रे गइलैं
आरे देखि के सुरतिया जगुवा छतिया कै पीटत रे हउवै
आरे बहिन तोरे जनमें रे माइ सवा घरी सोना चानी बरसल रे रहलैं

आरे तवन ई कईसन बिपत आइल बाड़ैं
ए मंजरा तोहरे गउरवैं बलको गुंजरे रं
आरे मंजरी तनिको बोलत घटवै में नाहीं रे हउवै
आरे तब जग्गू कहलैं
तोहरे अनवां धनवां मंजरि बहिन कमी बलको परल रे होई
आरे तोहके गड़िया छोकड़वा देबै बलको लदरेवाय
आरे तो के रेसम क कमियां आरे गउरा परल रे होईं
आरे थनवै क थनवां बहिन अ देईं हम भेज रे वं
आरे कउनो करनवा लुगरिया बलको पहिरत रे बाड़ीं
आरे तोर का जनम ए मंजरी अगोरिया में होइ रे गइलैं
आरे बहिन आपन भेदवा हमके बलको बतावा

मंजरी का जग्गू का पैर पकड़ना तथा सारी विपति बताना

आरे तबले मंजरी डांकि के मै गोड़वा जगुआ कै धैं रे लें लें
आरे आपन कवन कवन ए बीरना बिपतिया हम कहि रे घलीं
आरे बिपत कहैं रे मोरि मइया जोगनवां कै नाहीं रे बं
आरे हमरे भसुर ए मोर बीरना अ संवरू गइयन में मारल रे गइलैं
आरे समियां जाके टीकल हउवैं ए बीरना हरदियौ की रे बाजं
आरे तवन बीरना हम फटही लुगरिया गउरा में बलको पहिरत रे बाड़ीं
आरे बीरना दुसमन भयल रे मोरि मइया कुटुमवा मोर पलिरे वं
आरे बीरना नौ लखवा हरवा हो मोरि मइया गरवा क लूटल रे गइलैं
आरे घीउ गुर करनीक लूटल गइलैं ए बीरना
अ गउरवैं हमरे गुंजरे रं
आरे सारी गइया बीरना अ बोहवा से लूटल रे गइलीं
आरे हमरे नन्हुवां भइया ए बीरना अगोरी से आयल रे रहलैं
आरे तवन पीपरी में भूंजन कै ए बीरना झोंकत हउवैं भररे सं
आरे एइसन केहूना मनुसवा ऊ गउरा में हम्मैं रे मिललैं
आरे तनो काटि दे तैं ए बीरना बिपतियों रे हमं
आरे हमके अइसन मनुसवा गउड़ा में कोई ना उपजल
आरे सइयां के दे तैं अ मइया सनेसवा मोर पहुँ रे चं
आरे जगुवा कहलस जवन कहुँ मंजरी धनवा मैं गांजि रे देईं
आरे काल्हि बिहाने हरदी में पहुँचि जाई ए मंजरा
अ सनेसवा ना रे तो ऽ ऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ र [११६]

ंजरी का बताना कि गांगी नाऊ से मैंने हल्दी संदेश भेजा है

ब जग्गू बनजारा कहलैं ई बतावा मंजरा
ोई के भेजले रहलू ह हरदी में तब मंजरी कहलस
बीरन गंगिया नाऊ के भेजली, पनरह दिन बीति गइलैं
वन गंगिया नाऊ के भेजला, पनरह दिन बीति गइलै (पुनरावृत्ति)
वन गंगिया नाऊ घूमि के ना अइलं
ा जग्गू बनजारा कहलस कि अच्छा जो घूमि के गउरा
ा जात हईं हरदी केरी बजार
र सनेस पहुँचाय दे बै मंजरी
ां से जग्गू चललैं बरधी के पास में अइलैं
वाहन के हुकुम लगवलैं बरधी लादि दा
र लदवाह बरधी लादि के हंकलैं हरदी के
नौ गंड़क तोरें तेरह तोरै लगैं पहाड़
ो रात में, होत सवेरा हरदी में
देखा बरधी पहुँचल सरहद के ऊपर
बनजारा हुकुम लगावै बरधिन के छटकाय द्या
लदवाह बोलैं जग्गू से ए बाबू खरी बनउर कहां मिली
कहवां घलब पियं, तब जग्गू कहलैं, इहां राज बे राज होय गइल
भाई राज बीर लोरिक कै हउवै बरधिन के छटकाय द्या
में जाइके चर अन्तह कं
के दाना पानी दे बै क जरूरत ना हौ
बरधी छोड़ पउलैं हरदी में
जाके गरदा दे लैं मचाय
ाग्गू बनजारा कहलैं इहै परजा बीर लोरिक कै हउवैं
लोगन के मारा तब लोरिक करिहैं भेंट दीदार
लदवाय के डेढ़ हाथ क हंकना ले के मारै लगलैं
ोग चललैं पराय
गइलैं गढ़ हरदी में लगल कचहरी बीर लोरिक कै
ोड़ि जोड़ि खाड़ा भइलैं
इसे लरिका परानी जिआई
कउड़ी दिआई तोहार
ा आइके सरहद पर टीकं
ारा हरदी में गरदो दे लैं रे मचाय

जग्गू बनजारा के लदवाहों का लोरिक के सिपाहियों को पीटना तथा लोरिक का घोड़ा मगर पर चढ़कर सीमा पर आना

एहर वीर लोरिक बीस सिपाहिन से कहलै
कि जाइके धइ लिआवा किला में ना द्या बनखान
बीसो सिपाही हरदी चपरास चढ़ा कें
जब उहां सरहद पर गइलैं
तब जग्गू बनजारा कहलेस कि इहै सिपाही बीर लोरिक के हउवें
एनहीं लोगन के एदवां मारा तब लोरिक करिहैं भेंट दीदार
आरे डेढ़ हाथ कै हंकना लेके आगे खड़ा मोर भइलैं
जब सिपाहो पहुँचं छुटल हंकना अन्तःकाल
सिपाही पिछहीं के चललैं पराय
भागल हरदी गोइंड़े ले कइ देहलैं
तब लदवाह घूमि के गइलैं सरहद पर
ईं बीसों सिपाही कचहरी में जाइके बाबू
हम हन का ना धरल धराई ना बान्हल बन्हाई ना मारल मराई
बीर लोरिक कुरूसो से कूदि परलै
भागल मंगर के तबेला में गइलैं नियराय
मुहें में लगाम चढ़ाय के निगी पीठि भइलन असवार
ओड़न खाड़न दबा के जब निगी पीठि भइलन असवार
घोड़ा हांकि के चललैं सरहद पर
मंगर मरलस एड़ा धरती में
आरे तीन तीन जोजन मेंड़राय
जाके सरहद पर घोड़ा चू गयल
आरे जब परि गइल मइया नजरिया रे बरधी पं
आरे लोरिक उतर के मै घोड़ा से लगभिया मोर पकड़ रे लेहलैं
आरे जग्गू आके पजरे रे मोरि मइया
अ गयल हउवै निअरे रा ऽ ऽ ऽ य [१२०]

जग्गू तथा लोरिक की भेंट

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ आं
जब जग्गू क नजर लोरिक पर परल
टप दे उठि के जग्गू लोरिक के पजरे गइलैं ऽ ऽ ऽ
कहां से आवत हउवा ए पाहुन
बहुत दिन पर भेंट भइल ह एकर भेद बता द बहनोई

चिन्ता बढ़ल बदन में बाय, कवने ओर से अइल्या हइयै
आरे मोसे तोसे हो गइल रे भेंट दीदार
आरे बोलत हौ अहीर तब गढ़ गउरा कै जग्गू माना बाति हमार
कइलीं ओढ़ार चन्ना कैं आरे हम हरदी की टीकल बजार
चढ़ि गइलीं थाना नेउरापुर बारह सै गोपिल कै सेन्हुर छोड़वलीं
ले के हरदी में भूंजीला एकवटें राज
इ बता द्या हीत एक बात तूं हम्मैं
भला हमरे बोहे से अइला हइयै
हमरे भइया से भेंट भइल हइयै
कइसे गाँव गउरा हौ, कइसे कनउज कै हउवै रे बजार
कइसे बुढ़िया माई हई गउरा में
कइसे बियही हउवै हमार
एकर भेद बता द्या होत, चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
तब बोले जग्गू बनजारा आरे बाबू मनव्या बात हमार
आरे जब तूं बोहे में रहत रहल्या
तब तै वखत दुगुना गइया बोहवा तोहरे भइल बाड़ीं तइरे यं
आरे बलको दुगुना मोर धनवां गउरा में गंजल हउवैं
आरे भइया मलसांवर गइयै भयल हउवैं चर रे वं
आरे नान्हू सरवा तोर बबुआ गइयन में लड़त रे हउवैं
आरे लड़ति बाड़ैं रे बबुआ मेवा करनिया के बजरे वं
आरे एक ठे बतियै ए बहिनोई हमसे तनी बातावा
आरे गंगिया से भेंटिया भईल रहल बबुआ हरदियौ की रे बजं
आरे टप दे लोरिक कहलैं,
हमसे नाहीं भइया अब भेंटिया से होई रे गइलीं

बोरा में बन्द गांगी बाहर निकाला गया और उसने सारी दुःखद गाथा सुनायी

आरे तबले बोरवा मंगाइ के पजरवां बलको राखि रे दे लैं
आरे एहर खोलि के मोर मुंहवा बोरवा से हउवैं नीकलले,
आरे गंगिया उठि के रे मोरि मइया भयल हउवै तइरे यं
आरे कहलैं सच्चो सच्ची बतिया गंगिया हमसे कहि रे घलव्या
हमसे पयड़े में का बतियै रे मइया भेंटिया जब तोहसे भइल रे रहल
आरे कवन कै का कहले रे बबुआ हरदियौ कै खेल रे वं
आरे गंगिया दसो नहवां जगुवा कै जोरै रे लागल
आरे कहलस जब गउरां से जग्गू मैं हरदिया में चलि हो गइलीं
आरे तब तै एहर चनवा सोझै मो फटकवा पर खड़ी रे रहल

आरे हमार पकड़ के भइया कलइया हो कीलवा में
हमके हलुवा पूड़ी खूब खियवले हौ हरदियौ की रे बजं
आरे हमके कोठिलै में बबुआ बलको जौ लुकि रे वावै
आरे उपरां से तोपि देहलसि मइया हरदियौ की रे बाजं
आरे कहलस जौ एको मैं सनेसवा हमरे समिया से कहि रे घलब्या
आरे हरदी में मारि नाइब ए गांगी जिनिगियौ ना रे तो हं ऽऽऽ
आरे तब तैं कियारी मैं लमहरे से जग्गू बलको दउरै रे लगलैं
आरे बलको डांकि के मै एंड़वा गंगिया के मरले रे हउवं
आरे गांगी गिर गइलैं हो मइया धरतिया में भहरे रं
आरे फिर एहर देखा दउर के मैं जगुवा एड़वान मारे रे चलल
लोरिक आके अगवां भो जग्गू के भयल हउवैं तइरे यं
आरे हमसे झूठि त बतिया गड़इल नदिया पर कहले रे हउवै

संवरू की मृत्यु तथा गउरा में मंजरी की इज्जत नष्ट होने की खबर सुनकर लोरिक का दुःखी होना

आरे तबले तड़क के मोर जगुवा लमहरे बलको हटि रे गइलैं
आरे तोके बज्जर परो जौ बेटउवा रे बुढ़िया कं
आरे तोके परौ रे बेटउवा बजरौ कै रे घं
आरे मंजरी बहिन के जनम में गंडुवा
सवाघरी सोना चानीं बरसल रे रहलैं
आरे तेकरे पर अइसन बिपतियं गउरा में नवले रे हउवै
आरे तोहरे भइया मलसांवर बोहवा में मारल रे गइलै
आरे सारा लूट गयल ए गंडुआ धनवौं ना रे तोहं
आरे मंजरी सत सत पेउना कै लुगरिया गउरां पहिरत रे हउवैं
आरे दमड़ी पर लीपत बाड़ै जगुवा बनियन कै रे दूक
आरे तउने पर एठियन टीकल रे गंडुआ हरिदियौ की रे बाजं
आरे तोहरे धनवा मैं लूटलै कै गम हमके नाहीं रे हउवै
अ मइया के मर जाये क तोरे बबुआ गइयन की रे अड़ं
आरे तोरे धरम कै लुटि जाये कै सोचिया मोके बढ़ल रे हउवै
आरे मंजरी कै इज्जत लुटि गइल ए मइया गउरवैं बलको गुजरे रं
आरे राजा होके बइठल बाड़ा बबुआ हरदियो की रे बाजं
आरे तबले डांकि के मोर गरवा जगुआ कै धइ रे ले लैं
आरे लोरिक रूवत बाड़ै रे मइया हरदियौ की रे बाजं

ारे जग्गू एइसन बिपतिया हमके हरदिया में हउवा सुनवले
ारे गरे में गगरी बान्हि के गिरि परीं ए जगुआ कुंवओ रे इनं ऽ ऽ
ारे हमके एइसन रे मइया गोलिया बलको मरले रे हउवे
ारे कइसे मइया मरि गइलैं ए मइया गइयन की रे आड़ार
ारे गरे में गगरो बान्हि के कत्तों गिरि जाईं ऽ ऽ ऽ रे
ोरि म ऽ ऽ ऽ इया अ कुववां ना रे ईना ऽ ऽ ऽ र [१२१]

• •

ध्याय ५

ोरिक की गउरा वापसी

ोरिक की गउरा लौटने की तैयारी

ां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ
ब जग्गू से कहलैं बीर लोरिक
ारे जग्गू हम्मैं जल्दी छुट्टी दे द्या अब हम हरदी में जाईं
ारे जग्गू बनजारा छुट्टी देहलैं हैं कि जाजा गउरा में बबुआ
ोहर मेहर तीन तीन कइलस भतार
ान्हल पगरी डूबि गइल देसे डूबि गइल मनुसाय
तनी बात लोरिक सुनि के अउरो गइलैं घबराय
ांगिया के संगे लिआय के चला गांगी हरदी केरी बजार
ागे आगे बीर लोरिक पीछे पीछे गांगी हरदी में जब गइलैं
ब गांगी नाऊ के आड़े बइठाय देलै
पने घोड़ा फाटक में बान्हि के चनवा के किला में गइलैं
ारे पलंग के ऊपर नीचे मउर कै के बइठलैं
ब गोपी निकसल है किला से अ आरे समने भइल तइयार
ीचे मउर कै के बइठलैं तब गोपी निकसल है
िला से अ आके समने भइल तइयार (पुनरावृत्ति)
ीचे मउर कइलैं हउवें तब कहत हौ
ारे कउनो रे री ए समियां चुकरवा मरले रे ऽ ऽ ऽ हउवैं
ारे कि कउनो हरदी में

आंखै रे मोरि मइया तोहके घलले हउवै ना रे दे खं
आरे आजु सामी कउनो करजहरु के मइया तगदवा कइले रे हउवै
आरे किलवा में बइठल बाड़ैं बलमुवा मउरियो न लटरे कं

चनवा को लोरिक द्वारा डांटा जाना—

तुमने नैहर और ससुराल दोनों जगह आग लगा दी

आरे तब त जरत बा माई अहोरबा हो गउरा कै
आरे नइहर में गोपिया लुकिया बाड़ू ना हो लगवले
आरे सासुर में लगाइ देलू रानी बलको तो हीं रे आग
आरे दुनो घरवा गोपिया छनवां में फूंकि रे देलू
आरे बलको छन में रानी भसम बाड़ैं होइ रे जं
आरे मोरे मइया मै फूंकि रे देलू
आरे बलको न में रानी भसम होई रे जात
आरे मोरे भइया रे मइया अ गइयन में मारल रे गइलैं
आरे गंगिया आके सनमुखवा भइल बाड़ैं तइरेयं
आरे जवन एक्को बतिया गोपिया हरदिया कै नाहीं कहै रे देहलू
आरे गउरा उपरि गइल ए रनिया सोरियो रे हमं
आरे बलको एइसन रुवइया किलवा में रुवत रे हउवैं
आरे आपन मैं धीरे धीरे चन्ना के किलवा समुरे झावैं
आरे हइहै अनवाँ धनवाँ हरदिया में लदरे वावै
आरे संगे में तम्मू कनात लेबू मै लदरे वावै
आरे संगवा में हाथी घोड़ा हरदिया में लेइ हो लेबू
आरे हइहै सिपाही के पलटन रे माई संगवा में लेई हो लेईं
आरे लेके आवा ए गोपी गउवां रे गउरा में
हम तोसे पहिले चलत बाड़ीं जो गइयन की रे अड़ं
आरे मंगर घोड़वा के पीठिया पर जीन पाखर रखैं रे लागैं
आरे मुंहवाँ में सोनन क माई चढ़बलस रे लागं
आरे बलको साठैं मोहरवा गरदने में नाइ हो देलैं
आरे पोछिया में मूंगा रे भाई दे ले बाड़ैं गुंछ रे वाय
आरे घोड़वा के नलवा में ए यारो घुंघुरुवा न बान्हि रे गइलैं
आरे अपने घोड़ा पर लोरिक भयल बाड़ैं असरेवारी
आरे एहरवै घोड़ा एंड़वै न भाई धरतिया पर मरले रे हउवै
आरे घोड़ा तीन तीन रे बबुआ जोजनवा न मेंडरेरं
आरे एहर बलको घोड़वा पर कइलैं न असरेवारी
आरे एहर चनवाँ भागल गइल

आरे अपने गउवां बलको गउरवां जाति रे हउवैं
आरे हमके केकरे रे माई लगवले जाला बलको रे घं

जमुनी को राज्य देकर उससे आज्ञा लेकर लोरिक गउरा जाने को उद्यत

आरे एहर सारा राज हरदिया क देले रे जाल्हा
आरे दुसुमन कपारे पर माई जो होइ जइहैं तइरे यं
आरे ओ समै में के केरे माई हरदिया में गोहरेरइबै
आरे तब धीरे धीरे जमुनी के हरदिया में समुरेझावैं
आरे हइहैं लिखि लिखि पतिया गउरा में भेजि हो दीहा
आरे जो कुलवा में हमरे कनउज में जनमल रे रहीं
आरे उहै हरदी में काटि देई रानी बिपतिया रे तोहं ऽ ऽ ऽ
आरे उहै आपन लोरिक जाइ के घोड़वा पर चढ़ि रे गइलैं
आरे चनवा क चाउर रे मोरि भइया लदत बाड़ैं बसरेमतिया
आरे एहर दर दर लदत हौ मुंगउवन कै रे दाल
आरे एहर घिउअन कै जब डबवा लदै हो लगलैं
अ तम्मू कनात जब हउवैं लदरेवावत
आरे एहर रंगुवा बारी गउरा कै नेउरापुर में रहल रे रहलैं
ते के लोरिक संगवा हरदिया देहलैं रे लगं
ते के लोरिक संगवा हरदिया देहलैं रे लगं (पुनरावृत्ति)
आरे एहर गंगिया नाऊ के संगवा में कइहो देहलैं
आरे ले के आवा बबुआ जौ गइयन की रे आड़ं

घोड़ा मंगर का लोरिक को लेकर गउरा आना और मंजरी के दो बच्चों को साथ सोते देखना

अपने लोरिक डांकि के घोड़ा मंगर पर चढ़ि रे गइलैं
आरे घोड़ा उड़ाय के चललैं ए बबुआ गउरवैं न गुंजरे रात
आरे उड़ल उड़ल घोड़वा जाति रे हउवैं आधीरात में चू गइलैं
बबुआ मोर गइयन की रे आड़ार
आरे एहर उत्तर दिसवा मैं हउवैं बलको थहावत
आरे एहर बलको पुरुब दिसवा जौ घललस़ रे थहं
आरे जब देखा दक्खिन दिसा संवरू के ढूंढै रे लागल
आरे पच्छिउ दिसवा बोहे में पतवा हउवैं लगावं
आरे कहीं भइया क लगत नाहीं बा पतवो रे ठेकं
आरे एहर धीरे धीरे मंगरा से लोरिक बतिरेयावैं

आरे हमके ले के ए मंगर गउरवां चलि हो चलब्या
आरे जग्गू है जेवन मेहर गउरा में तीन तीन जो कइ गस रे मनं
आरे ना जानी किलवा में कउनो सूतल रे हो इहीं
आरे मंगरा एड़वा माई धरतिया मरले रे हउवै
अ लेके बलको तीन तीन बबुआ जोजनवें मेंड़रे रं
आरे बलको उड़ल उड़ल घोड़वा गउरा पहुँचि रे गइलें
अधियै रतिया में अंगने में घोड़वा मजरी के चूइ हो गइलें
आरे बलको बार बार ओड़नवां घरवा में देखै रे लागें
ई मंजरी के कोठरी पर मोर गयल हउवै निअरे रं
आरे एहर एक अलंगे सूतल बार न हउवें रे भोरिक
आरे एक अलंगे मल साँवर के बेटवा देवइचा सूतल रे हउवै
तेकरे बोचे मंजरो बबुआ गोपिया सूतल रे हउवें
आरे केवाड़ी में कान लगाय के लोरिक ससवा सुनत रे हउवै
आरे एम्मन तीन तीन भइया मनसुवा सूतल रे हउवै
का दो एक ठे बियही किलवा सूतल बाड़ें ना रे हमं
आरे लोरिक के बड़ा खटकवा किलवा में होई रे गइलें
आरे टप दे दबलसि भइया मुठियवा में ओड़ने कं
आरे दुसुमन मारि नाई जौ किलवा में ल ल रे कं
आरे मंगर घोड़वा लोरिक के किलवा में समुरे झावै
आरे बबुआ मानि जावै किला में बतिया रे हमार
आरे बलको सोचै बिचार कै वतिया कह हो नाया
आरे पींछवाँ पछितावा मत बबुआ गउरवा गुजरे रं
आरे तब ले दुरुगा भोरिक के गोड़े में चिकोटिया बीन्हि रे लेहलस
आरे मंजरी के माई माई रे मइया अ किलवा में गोहरावै
आरे मंजरी कनवा के देखब्या भोरिका के हउवै लगवले
आरे काहे बदे बेटवां किलवा में चिंघरत रे हउवं

भोरिक का माँ मंजरी से अपने स्वप्न के बारे में बताना कि पिताजी गउरा आ गये हैं

आरे तबले लोरिक के दिल में खटकवा होइ रे गइलें
का हमरे बेटवा रे मइया ले ले हउवे अवरे तं
आरे डाँकि के घोड़ा के पीठि अगनवाँ में चढ़ि हो गइलें
आरे घोड़ा ऊड़ल जात बाड़ें रे माई अ गईयन की रे अड़ं
आरे मंजरी से लोरिक रे माई किलवा में कहत रे हउवें

आरे मावा हम सूतले से सपनवा किलवा में देखत रे रहलीं
कि बाबिल मोर आयल बाड़ँ गउरवँ न गुजरे रं
आरे ओही कयवा में माई चिल्लात रहलीं
किला में हम्मैं मालूम परतबा कि हइहै बाबिल
मोर बोहवा के जाति रे हउवैं
एइसन सपनवां सुनलो ए मावा गउरवैं हमरे गुंजरे रं
आरे मंजरी रूवत रूवत मइया कोठरिया रे अनूपी के
आरे जाके अनूपी बहिन घलति बाड़ँ गोहरे रं
आरे बहिन अइसन अनभो आज मालूम गउरा में परत बाड़ँ
लवटि आइल बाड़ँ रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इ ऽ ऽ ऽ या
अ बलमुआं ना रे हमा ऽ ऽ ऽ ऽ र [१२३]
गद्य—अब बोहे से गउरा में गइलं हं पता लगावै बदे कि ऽ ऽ ऽ
जवन जग्गू बनजारा कहलैं रहले कि तीन तीन मेहरि कइलैं भतार,
तवन पता लगावत हउवै कि सच्चे सूतल हउवै बा की नाहीं
तहां वीर भोरिक, देवाईब संवरूक लड़िका सूतल हउवैं

अनूपी का मंजरी को आश्वासन कि शायद लोरिक आ गये हैं

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ
राम ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम ऽ ऽ ऽ राम
तब अनूपी मंजरी के समुझावै, आरे मंजरी मनबी बात हमार
काल्ह जवन असगुन हमसे बतावत रहलीं ऽ ऽ ऽ ऽ
कि गोबर के ऊपर सरप बइठलि रहलि ए बहिन
ओकरे फन के ऊपर खिड़रिच बइठल रहै
अ दू चिती चीता अ चीता दू ठे लगल रहलैं कीरा के दूनों अलंगे बहिन
हम्मैं मालूम परत हौ मंजरी उहै गोबर घोड़ा मांगर
उहै सरप बलमुआ तोहार
उहै जौ पाग नरमे क बन्हले हौ उहै जवन फन पर खिड़रिच बइठल बाय
दूनों चिती लगलि बा मंजरी हम्में मालूम परत बा
ओड़न खांड़ दूनौ उहै असगुन तो कै गयल देखाय
हम्मैं मालूम परत बा बहनोई
हरदी से लवटल बाड़ँ गाइन की आयल बाड़ँ अड़ार
आरे खुलल भाग मंजरा तोहार गउरा में एहर अनूपी समुझावै
एहर बोहे में लोरिक धीरे धीरे चउरी के ओड़न खाड़ से विक्कन करैं
कि पूजा कइं लेईं गाइन के री अड़ा ऽ ऽ ऽ ऽ र

चिक्कन कय के धीरे धीरे सगरा गइलैं निअराय
पानी ली आईं सगरे से चउरी लीप पोनि करीं तइयार त पूजा करीं

मल सांवर के तालाब पर लोरिक का झीमल मल्लाह को मछली मारते देखना

जब सगड़ा पर लोरिक गइलैं मलसांवर के त
झीमल मल्लाह मछरी हींडि हींडि मारतु बाड़ैं
तब लोरिक पूछलैं कि के पोखरा खनउलस के चुन के बन्हाबै घाट
के करीं जांघ की बरिआईं मरल्या पोखरवै मांछ
तब बोलै झीमल मल्लाह नीचे से कि महदेव पोखरा खनउलैं
सहदेव चूनि के बन्हवलैं घाट
सिल्हिया की जांघ की बरियईं मारल पोखरवा माँछ
तबले लोरिक पंजरे गइलैं धइ के कलाई जब ए भाई
झीमल के तानि के केहुनी मरलैं, झीमल गिर गइलैं
कहैं करे सारे के पोखरा खनउलस
के चूनि के बनवलस घाट
के करे जांघ के बरिआई तैं मरले पोखरवां मांछ
कहै ए भइया आरे मलसांवर भइया पोखरा खनवलैं
भउजी चुनि के सतिया बन्हवलस घाट
लोरिक के जांधि की बरियईं माता के मारल पोखरवां मांछ
इहै बतिया पहिलवां काहे न कहले हइयैं
अच्छा अंजुरी अंजुरी पानी ले चल हम चउरी लीपीं
झीमल अंजुरी अंजुरी पानी ले जाय लगलैं

लोरिक का पूजा के लिए फूल लाने मालिन के पास जाना तथा
अंधी मालिन का उसे धिक्कारना

हइहै चउरी लीप पोत के कइलैं तइयार
त बिचार कइलैं लोरिक कि अब माला फूल ले लेईं
चलके तब पूजा करीं गाइन केरी अड़ार
उहैं से डोलत मलिनिया के दुआरे बोहे में गइलैं
आरे जाके दुआरी पर ए दादी ए दादी गोहरावै
मलिनियां भइल डेवढ़िया ठाढ़
कहै तूं के हउवा भइया कहैं हमैं का चीन्हत हईं का दादी
आरे कहैं तोरे ना लउकत हो दादी काहै अइसन बतियावत बाड़ू
कहै ए बचवा हमरे ना लउकत हउवै फूटि गई आंख हमार

एहि बोहवा में एक मलसांवर रहलैं तवन गाइन में मारल गइलैं
आरे गइया बेल्हि के पिपरी गइलीं बजार
एक ठे उनके भाई लोरिक जनमल रहलैं
तवन चलि गइलैं हरदिया के री बजं
जब ले उहै मल सांवर बोहवा में मारि गइलैं
तब ले अंखिया फूटि गइल हमार
ना जानी लवंड़ा के पूत हरदिया में मरि गयल
आरे का दों जोयत हरदी की हउवै बजार
लोरिक कहलैं दादी हमही लोरिक हई
आरे तब ले बुढ़िया पीटि पीटि के छतिया दुअरिया पर रुवै लागं
आरे नाहक मुहवां ए बचवा सनमुखवा तूं हउवा देखावै
आरे नाहक बुढ़िया की कोखी में जनमवा तोर होइ रे गइलैं
आरे भले घुमि के अइले रे पपिया त गइयन की रे अड़ार
आरे तो रे मल सांवर रे मइया जो बोहवा में मारल रे गइलैं
आरे सारा बेल्हि गइलीं ए बबुआ गइया ना रे तोहं
आरे नान्हूं सार तोरे पिपरी में रे बचवा झोंकत हउवैं भर रे सं
आरे सारा धनवां ए बचवा गउरा कै लूटल रे गइलैं
आरे तोरे भाइ क गोड़वै में ए ललवा बरहवा बान्हल रे रहलैं
आरे लरिका खोरियैं के खोरियै घलत रहलैं घिसरे रं
आरे तवन बेटवा आके ए ललवा तूं आइके बोहवा में टिकल रे हउवै
आरे जो अबहीं से पिपरी से गइया मैं लवरेटवते
तब न जानीं संवरू जियत बाड़ै ए मोरि मइया
जो गइयन की रे अडं
आरे नाहीं गरे में गगरी बान्हि के कतौ गिर परबे रे मोरि म ऽ ऽ ऽ या
आ कुंववा नारे इना ऽ ऽ ऽ र [१२४]

लोरिक का देवहा के किनारे से कनइल का फूल लाकर तीन हार बनाना तथा मालिन के हाथ धोबी, चनवां की मां, व मंजरी के पास भेजना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब त बीर माना बाति हमार
तनी एकन माला फूल हमके दे दा पूजा करीं गाइन के री अड़ार
तब बुढ़िया कहलस जबले मल सांवर गइयन में मरि गइलैं
अंपा सूखल, चंपा के बेइल, सूखल गुलाब

सारा फूलु सुखि गइलैं हमरे पास
फूल ना हउवैं हमना देबै गाइन केरी अड़ार
देवहा के किनारे जा कनइल फूल फूलल हउवैं
तोर के ली आवा पूजा कइल्या गइयन में
तब बीर लोरिक देवहा के किनारे जाके
कनइल फूल तोर के लिआ के मलिनियां के दुआरे चार हार बनावैं
आरे तीन ठे मलिनियाँ के देई दें एक ठे अपने हाथे में उठावैं
कहलैं ए दादी हम एक हार से पूजा गाइन में करबैं
बकी तीन हार लेके मोरे गउरा के चलि जा हो बजा ऽ ऽ ऽ र
आरे जवन बिदाई पाया तवन लेके मोरे गाइन के हमरी आया अड़ार
एक बात हम्मैं जिन बताया मत नाँव चरचा गउरा
तनिको करया ना हमार जानैं कुटुम पलिवार
जवन विदाई मिलैं, एक हार जइहा धोबी संगो केहिन के दीहा
अ एक हार हमरे घरे औ एक हार कुसुमापुर
जहाँ नइकी भइल ससु रा ऽ ऽ ऽ र
एहर मालिन कपारे पर टोपा धइल
लेके बलको कनउज की चलै ले बजार
अरगन तो रै ले परगन गोपी गोड़ारी में भइल बलको रे तइयार
हाली हाली बलको मलिनियाँ जात हौ देखा कनउज की जाले रे बजं
हाली हाली बलको मलिनियाँ चलत हौ
देखा कनउज की चलै रे बजं (पुनरावृत्ति)
गलिया में मालिन हलल गइल आरे ए माई अजई धोबी के पवन दुआर
अजई सूतल रहलैं पलंगे पं
एक हार निकाल के मालिन उनके गरे में नाँइ देला
आरे तब ले बिजवा दुअरिया पर भइल तइयार
सुना ए अइया मालिन तनीं एकन बतिया मानै लू हमार
रोज त नीक निकाम माला लेके आवत रहल्यु हइयै
आजु बड़ा सुन्दर हार लेके अइलू
एक ठे हार क गछवइया गाइन में मरि गइलैं
एक जने हरदी की मूवैं लैं बजार
एकर भेद तूं अइया हो बताय दं
आरे चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
तब धीरे धीरे बुढ़िया मोर बोलैं
आरे तनी मनब्या बात हमार

हमरे त बिटिया न बेटवा बोहे में
बहिन क बेटवा गोद घलैं ली बइठाय
ओहो के गवन मैं करवलीं रानी
आरे उहै सुन्दर सुन्दर हार बनावै
लेके तोरे पवन अइली दुआर
कुछ दे द्या बोहे में पतोहिया पहिरी हमार
बड़के घराने में ले ले आयल बाड़ीं
आरे तब एहर माई बिजवा मैं
अजई धोबिया के घलै ले जगाय
उठि के अजई बइठि मोर गइलैं
आरे तनी माना बात हमार
हे दे मालिन माला ले के आइल
कवन करीं ए सामिया औ बिदइया हो गउरा में

धोबी का कोदों बिदाई में देना तथा मंजरी का पीताम्बर, सोना, चांदी, और जोसन गहना विदाई में देना

आरे तब त धीरे धीरे धोबिया बीजवा के समुरेझावै
आरे गोपी मानि जाबू बलको कहनवउं ना रे हमं
आरे उहै कोदों गहकियाने मैं बलको जो पउले रे बाड़ीं
उहै कइ देबू ए रनिया बिदइया हो गउरा में
आरे तब तै ली आइल बिजवा टोपवा में कूरै रे देलै
बुढ़िया धइके मोर टोपवा बजरिया मोर गउरा रे धइलैस
लोरिक के जात बाड़ै बुढ़िया पवनवौं ना रे दुअं
आरे ले जाके एक ठे मोर हरवा
लोरिक के मतवा के गरवा में डालि रे दे लैं
तबले मंजरी मोर गोपिया कीलवा ले नीकल रे अइलीं
आरे हरवा मैं देखि के दुअरिया पर रूवै ए लागल
आरे हमरे हार कै गछवइया अइया बोहवा में भसुर मारल रे गइलैं
सइयां मरि गइलैं रे मइया हरदियौं की रे बजं
एइसन हरवा के गछलस रे अइया गइयन की हो अडं
आरे तब तै धीरे धीरे मलिनियां मंजरी के समुरे झावै
आरे अबहीं एक ठे हमरे बेटवा बहिनियां कै आयल रे हउवै
आरे ओही के गोदइ ऐ मंजरा घलत बाड़ैं बइरे ठं
आरे बलको ओही के गवनवां बोहवा में लगि रे गइलैं

आरे उहै गांछत बा मंजरा पतोहियौ रे हमं
आरे आजु मोरे बिदइया गउरा में देइ रे घलबू
आरे का करत बाड़ मंजरा बिदइयौ रे हमं
आरे तब तै मंजरी मैं अपने कोलवा में हलत रे जालें
एहर अरगनी से पीताम्बर गोपिया न हउवै उठवलें
आरे एहर सोनवा मैं चनिया बलको लेइ हो ले ला
आरे सोने कै जोसनवां बहुँवा कै हउवै उठवले
ली आके मालिन के मइया टोपवा पर धइ रे दे लें
आरे कहलस हमसे कूछ न अइया बिदइया न बनत रे हउवै
आरे बड़के घराने क बिदाई क अइया निन्दा मत करा रे मोरि
म ऽ ऽ ऽ इया आ हमरे गउरवैं बलको गुजरे ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ त [१२५।

कुसुमापुर में चनवा के यहां से मालिन को एक सेर सांवा विदाई में मिलना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ
तब त मंजरी कइलस बिदाई बुढ़िया कै
बुढ़िया न टोपा न उठाइके कपारवें पर
आरे बलको पंयड़ा घलै ले सुधियाय
धइलस डगरिया गढ़ कुसुमा कं
आरे सहदेव महदेव के पवन रे दुआर
जब सहदेव महदेव के दुआरे गइलै
तब मतारी चनवां के बइठल मचिया पर
टप दे टोपा नीचवा मैं दे लै रे उतार
एक हार गरवै में नावै
आरे बलको निरखत ओसरियै लगाय
तब बोलत सिल्हिया मालिन से
आरे मालिन मनब्यु बात हमार
एक बात तूं हम्मैं रे बताय द्यं
आरे चिन्ता बढ़ल ले बदन में बाय
ई हार कै गछवइयन अरे मर गइलें गइयन की रे अड़ार
एक जने जाइके हरदी में मरि गइलैं
का अहीर गउरा कै आयल हउवैं
एइसन हार बनवले हउवैं
तब मालिन घलै ले समुझाय
सुनिला सुनिला ए मोरे बहिन

आरे तनी मनबू बाति हमार
हमरे न बिटिया न बेटवा हउवैं
आरे बलको गाइन की हो अड़ार
एक ठे बहिन क बेटवा बलवउलीं
आरे ओही के गोद घली ला बइठाय
ओही क गवन करउले बाड़ीं
आरे सुंदर सुंदर हार जो घलै ले बनाय
उहै हरवा ले के बड़के बड़के घरवा में हम पहुँचावत बाड़ीं
एइसन बिदाई तनी मोर कय द्या
बोहे में पहिन लेई पतोहिया हमार
एतनी बात जब सिल्हिया सुनि कें
आरे सहदेव बो के हुकुमइ दे लै रे लगाय
सेर भर सांवा ले ले आवा बलको
एनके टोपा में रे रखि द्या
बुढ़िया के टोपवा में सउवां रखल
आरे बुढ़िया कपार पर ले लै रे उठाय
ले के बोहवा के बलको चलैं
पयंड़े में गारी बक्कत बाय
जनम भर बोहा एहि सहदेउवा महदेउवा के परल
आरे मरत बाड़ै कुसुमापुर की बजार
टोपवा मालिन कपरवा पर ले लं
आरे गाइन की गइलै अड़ार

बुढ़िया मालिन का लोरिक के पास लौटना और बिदाई का बखान करना

जहवां तमुववा लोरिक क गिरल हउवैं
चनवा क तम्मू गिरल बलको बाय
ले जा के टोपवा आगे उतारै
लोरिक पूछत तब बुढ़िया से
आरे दादी मनब्यु बात हमार
कवन कवन बिदइया पवलूं ए गउरा में
आरे बुढ़िया मोर दे लैं रे जबाब
हइहै सेर भर संगी तोहार को दों देहलैं
आरे थाना कनउज को हो बजार
एक पीतांवर बियही तोर देहलैं

आरे एक सोने कै जोसन दे लैं सोना चानी अउरो देहलैं
आरे कइले हउवै रे बिदइया हमार
सब कर नांव बनल गउरा में ना तोहार बबुआ बिगरल जं
आरे सोना चानी कनउज की गंजल बा बजार
हइहै सेर भर सांवा बलको सिल्हिया देहलं
आरे जवन नइकी बनै ले ससुरार
सिल्हिया कै बतिया चनवा सूनैं
आरे बलको जारि के भसम होइ जाय
जेकरे घरे तूं नीक तनी पवलू
नीक बना बना घलै लू बतिआय
जेकरे घरे तनीं निकामैं पवलू
आरे बुढ़ा निन्दा करै लू बरियार
टोपवा मैं बुढ़िया कपरवा पर धइकें
आरे गाइन की गइल रे अड़ार
अपने दुअरवा बुढ़िया पहुँचै
आरे चार दीन बोहे में बीतै लगलैं
चार दिन बोहे में बीतै लगलैं (पुनरावृत्ति)
तब लोरिक मैं रचल उपाय

बुढ़िया के हाथ लोरिक का गउरा संदेश भेजना
कि वह दुगुने दाम पर दही खरीदेगा

लिखल न पतिया जब बोहवा में
आरे निजकी गाइन की रे अड़ार
जे एक कंथरी दही लेके आई बोहे में
ओके दू दू अथरी क दामैं दे बै रे चुकाय
पतिया लीख के बुढ़िया के देहलैं
आरे दादी मनब्यु बात हमार
इहै पाती ले के गउरा में जाब्यु
घर घर खबरइ देबू रे जनाय
आयल बा पुरूबहा सूबा बोहवा में
आरे दही ले के गाइनि की आवा रे अड़ार
बड़ा पइसा गइयन में मिलि हैं
इहै बलको सनेस देबू रे फुरमाय
हमरे नउवां दादी मत ली हे

केहू से तनिको चरचा कनउज के मत करा बजार
नाहीं चरचा गउरा में करबूं
बोहवा में मारि नाइब जिनिगिया तोहार
लेहले मै पतिया बुढ़िया गउरं
आरे गउरा क पयंड़ा ले लै सुधियाय
लेहलै जे कनउज में बुढ़िया गईल
आरे घर घर खबरइ देलै रे जनाय
जे एक कंथरी दही लेके बिहाने बोहवा में आई
ओके ओके दू दू अथरी क दामइ देई रे चुकाय
एतनी बात जब घुमि घुमि कहैं
लोरिक के पवन आइल दुआर
बुढ़ खोइलन से कहन लागे
तबले मंजरी पजरे गइल रे निअराय
ए अइया तनी बतिया माना
आरे बिहने हमहूँ जाबै रे मोरि मइया जो गइयन की रे आड़ं
आरे एहर जरि जरि के बुढिया
भसमवा जौ होइ रे गइलीं
आरे हमार बिगरल ए मंजरा घरवा हो गउरा कें
आरे दुसमन भयल बाड़ैं ए मजरी कुटुमवा मोर पलि रे वं
आरे कवनो दुसुमन ए मंजरा बोहवा में टीकल रे होइहैं
आरे बलको लूटि लेई ए मंजरी धरमवौ रे तोहं
आरे मंजरी कहै ए अइया आरे कहनवा तोर बलकों रे मानब
आरे हम जाबै ए अइया गइयन की हो आड़ं

सोलह सौ गोपियों के साथ मंजरी का दही बेचने जाना

आरे मंजरी कैं चुनि चुनि दहिया किलवा में नउले रे हउवैं
आरे बलको होत मै सबेरवा पूजवा न कइलै रे हउवै
आरे सात पेवना कै लुगरिया मंजरी न हउवैं पहिर लें
आरे सोरह सै गोपिया गउरा से नीकल रे देलीं
आरे आपन आपन दही ले के जात बाड़ीं गइयन की रे अड़ं
आरे जब नदिया देवहा पर देखा गोपिया मोर पहुँचि रे गइलीं

गोपियों का झीमली मल्लाह को नदी पार करवाने के लिए बुलाना और झीमली का एक स्त्री उतराई में मारना

आरे जब नदिया देवहा पर देखा गोपिया मोर पहुँचि रे गइलीं

आरे झीमल के हथवा मार मार घटवा में बाड़ीं बोलावत
झीमल डोंगा ले के ओहि पर मइया सुति सुति अगिया फूंकत रे हउवैं
आरे गोपिया बड़े जोर में बबुआ घटवा में गोहरेरावैं
आरे झीमल डोंगा ली आवा
उतारि दा ए बबुआ आ नदी बेवरवै में ओहिरे पं
आरे तब तइ झीमला तनिको हुँकरिया घटवा में नाहीं रे भरै
आरे तब कहत हौ झीमल एक जने भइया खेवइया में रहि हो जाबू
आरे तब नदी उतारि देबै ए रानी मैं गइयन की आड़
आरे तब एहर गोपिया सउंजवा अपने में बान्है रे लागैं
आरे एम्मन के खलिहर बाड़ैं जो माई गइयन की रे आड़
आरे तब सारा गोपी सउंजवा बान्हि हो लेहलीं
आरे पीछवा से मंजरी गोपी हउवै बलको रे खाली
आरे उहै झीमला के दे दया ए यारों मोर गइयन की आड़
आरे तब तै एहर से गोपिया सैनवां झीमला के मारत रे बाड़ीं
ली आवा ली आवा डोंगा एक जने के बाबू तूं लेब्या ना हो बरांय
आरे झीमला धइके डंडवा में डोंगवा कै खींचै रे लागै
अ ले जाके करारे में डोंगा जौ देहलस रे लगं
आरे एहर मैं सारा गोपी मंजरवा के पजरवा बाड़ीं बोलवले
आरे मंजरी झंखै कि आज बड़ा मोह कइके बोहवा में बोलत रे बाड़ीं
आरे मंजरी बड़ा खुसी ए माई मोर गइयन की रे आड़
आरे मंजरी गोविन के यारों पजरवां पहुँचि रे गई
आरे तब तै झीमला करारे पर भयल बाड़ैं तइरे रं
आरे एकै केतार से गोपिया कररवा पर खड़ी रे बाड़ीं
अ मजरी चारि गोपिन के आड़े हउवै बलको लुकाइल
कि हमार बिगड़ल बा मइया दिनवा हो गउरा में
आरे न करै धइले रे माई कलइयाँ रे हमार
आरे झीमला एक फेरा यारों मथवा ले दउरल ले गइलैं
आ फिन घुमि के ओ माथे झीमला परायल हउवै रे जं
आरे लागल बिचारै एको मनवां में नाहीं रे बइठै
आरे तीसरो दाईं घूमि के धीरे धीरे लगल बलको तज रे बीजै
आरे मंजरी के पजरे झीमला गयल बाड़ैं नियरे रं

मंजरी को पकड़ने की झीमली मल्लाह की कोशिश तथा
मंजरी का उसको बड़े जोर से पैर से मारना

आरे चारै गोपिन के अड़वा में मंजरी न खड़ा रे हउवै

आरे तब तै ओकरे एंड़ी पर नजरिया झीमल क परि हो गइलीं
आरे जब मंजरी क लुलुअया देखि रे लेहल
आरे तब त दबरि के मोर झीमला कलइया मोर धरे रे चललैं
आरे मजरी दउरी ले ले मइया कपरवा से हटै रे लागं
आरे झीमला संगवै में देखब्या लखेदले न हउवै रे जं
आरे मंजरी दउरि के दउरिया धरतिया पर धइ रे देल्या
आरे झीमल के घूमि के मोर बहुबां गरदने पर मारि रे देलैं
आरे झीमल गिर गइलैं रे मइया धरतियौ पर भहरे रं
आरे बलको हनि के ए एंड़वा पजरिया में मरले रे हउवै
आरे झीमला के टूटि गइलैं ए यारों पंजरियन कै रे हाड़
आरे मंजरी ले के दउरिया कररवा पर खड़ी रे हउवै

मंजरी का सत का सुमिरन करना तथा देवहा नदी का सूख जाना

आरे अंचरा खोलि खोलि मंजरी कररवा पर हउवै मनवले
आरे हमरे सतवा हो मइया सरिरिया में बचल रे होइहैं
आरे मंजरी घोंचि कै मै सतवा देववहा में मारि रे देलैं
आरे देवहा क पनिया रे मइया मो गयल बाड़ैं ना रे झुंराय
आरे सारी गोपी झूखैं मैं झूरवा नदिया के उतरि रे गइलीं
आरे पिछवां से मंजरी मोर गोपिया ऊतरि के हउवै चलि रे जं
आरे झीमला जाइके दसो नहवां मंजरी से जोरति रे हउवै
देवहा में पनियां कै द भउजाई
नाहीं बोहे में मरि जालैं रे मोरि म ऽऽऽऽइ या
अ लड़िका परनियां ना रे हमा ऽऽऽऽ र [१२६]

झीमली का हाथ जोड़ कर क्षमा मांगना

हां ऽऽऽऽ हां ऽऽऽऽ
राम ऽऽऽ राम ऽऽऽऽ राम ऽऽऽऽ राम
आरे ऽऽऽ तब एहर मंजरी ऽऽऽ
आरे झीमल से बोलै ऽऽऽ आरे झीमल से बोलैं ऽऽऽऽऽ
आरे झीमल अच्छा काग ना कइल्या
भले बोहे में धरैला कलइया हमार
आज दिन पातर तू समझ गइल्या
एतने गोपिन में आरे कलाई दवर दवर धरत बाड़्या हमार
कवनो दिन सइयां हरदी से घुमि अइहैं

बोहे में मरवाय देबै जिनिगिया तोहार
आरे एतनी बात मंजरी जब कहलें
तब झीमल हाथ जोड़ि के रूवैं
बड़ा कसूर भउजी हमसे हो गयल
देवहा में पानी कइ दा
नाहीं लड़िका परानी मरि जाई हम
एतनी बात जब कहलस हइयें

मंजरी का सत स्मरण करना तथा देवहा में पुनः पानी आ जाना

मंजरी उठाय के सत देवहा में मारैं
पानी फिन तेस क तेस देवहा में भइलें
अपने दउरी लेके तम्मू पर मंजरी गइल है
ओहर बारह सै गोपी जावन बाड़ीं
तमुवा पर दहीं बेचत मोर बाड़ी
अधेला पइसा कै दही बेचैं अब मंजरी तम्मू पर पहुचल
चनवा चनराजीत के मींजत हउवै
आरे लंउड़ी से कहलस ओनकर गट्टा पकड़ि के तम्मू में लेइ आवा
लउंड़ी जाइके धइलस गट्टा मंजरी कै ले गइल भीतर घींचि के
एहर गोपी सारी मों चललीं रे पराय
इहां त धरम लूटि जाला मंजरा कै
आरे बोहे जुलुम भयल रे बड़ि यं
भागल गोपिया जौ गउरा मैं गइलीं

गोपियों का बुढ़िया खोइलनि को बताना कि मंजरी बोहा में पकड़ ली गई

बूढ़ खोइलन से जाके कहैं
हमहन त बहरे से दही देहलीं
मंजरा तम्मू में धइ गइलीं
अब नाहीं बचल रे धरमवा तोहार
एहर मंजरी तमुवा में खड़ी हौं
ओड़न खाड़ लोरिक के टंगल हौ
तब मंजरी चनवा से कहै कि
ए गोपी लड़िकवन्ही तनी बतिया माना हमार
एक बित्ता के घुंघुट लटकाय के चनराईत के मोंजत बाय
कहलस कि ए तम्मू के तमुवै रानी माना बात हमार

लोरिक का ओड़न तथा खड्ग देखकर मंजरी का चिन्तित होना तथा चनवा को पहचान कर उसका झोंटा पकड़ना

ई ओड़न खांड़ के कर टांगल हउवै हमके जल्दी बतावा
चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
तब चनवा मंजरी से बोलैं आरे गोपी माना बात हमार
एही कत्तों गढ़ गउरा हउवै, राड़ी हउवै सिंहिन कर बास
कइले ओढ़ार चन्ना क ले कै, हरदी के गयल बजार
ओनहीं के मोर बलमुवां मरलैं छारि लेहलैं ओड़निया खांड़
तब मंजरी कहै ए गोपी उहै मोर सइयां रहलैं
हम्मैं ओड़न खाड़ दे द्या बोहे में
हम लेके बलको सती होइ जाब
तब चनवा कहलस कि जेकर बलमुवां ओड़न खाड़ मोर छोड़लैं
हम तोहैं सती होये बदे देईं एहर चनवा बोले लगल
चनराइत उठि के खड़ा होये लगलैं
आरे गोपी कै घुंघुटै गयल उधिराय परल नजर मंजरी कै चनवा पर
आरे गोपी दउरि के मोर झोंटवा जौ चनवा कै धई रे ले लं
आरे मंजरी मारत बाड़ैं रे मइया केहुनिया न कै रे मार
आरे एहर चनवा बड़ा जोर मइया बोहवा में चीघरत रे हउवै
आरे चनराइत उठि के मोर पजरे चलत बाड़ैं ना रे परं
आरे भागल लोरिक के तमुववा में पहुँचि रे गइलैं
आरे दादा मनब्या तनी एकन बतिया रे हमं
आरे एक ठे बुढ़िया देखब्या तमुववा में आइल रे हउवै
आरे बोहवा में मार जालैं रे मोरि मइया मतरिया रे हमांर
आरे लोरिक धीरे रे धीरे चनराइत के समुरे झावैं
आरे जाके समुझाय द्या ए बचवा मानि जाई कहनवा रे तोहं
आरे चनराइत दउरत पजरवा में आइ हो गइलैं

चनवा के पुत्र चनराजीत का आकर छुड़ाना

आरे एहर दसो नहवां चनरइता मोर जोरै रे लागल
आरे भाई तनीं मनबू ए मंजरा कहनवौं रे हमं
आरे हरदी कै कमइया तोरे अंगवां आयल रे बाड़ीं
आरे जेतना बीपत ए मावा गउरा में परल रे होइहैं
आरे बलको काटि देबै ए मंजरी माई बिपतिया रे तोहं
आरे जेतना धनवां ए मावा गउरा कै लूटल रे होइहैं

आरे ओकर दुगुना गउरा देबै बलको गंजरे वं
आरे मावा जेतना गइया बोहवा कै बेल्हल रे ऽ ऽ ऽ होइहैं
आरे दुगुना गइया लेबै बलकी लवरेटं
आरे एहर लीखल रहल ए मावा बीयहवा तोर अ ऽ ऽ गोरिया में
आरे ओढ़ार लिखल रहल ए मावा कुसुमवापुर की बाजं
आरे एहर लीखल रहल ए मावा लोहवा नेउरापुर
आरे बारह सै गोपिन कै लेहलें रे मोर बाबिला
अ सेन्हुरवा छाड़ रेवा ऽ ऽ ऽ य १२७]

मंजरी की टोकरी में सोना चांदी देखकर बुढ़िया खोइलनि का क्रोध

आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
तब मंजरी चनवा के छोड़ि के लमहरे हटि गइल
चनराइत कै बात सुनै लागल
बुद्धिन में बड़ा रहल हुँसियार एहर ए भाई चनवा सुसकत कै उठल
दही उठाय के ले जाके गिरा लेलस
ओही में सोना चानो रखि के सांवा कोदो रखि के धइलस दउरी में
ओही में सोना चानो रखि के
सांवा कोदो रखि के धइलस दउरी में (पुनरावृत्ति)
दउरी में रखि देहलस मंजरी देखि ताकि के
सबके कपारे पर दउरी धइलं
लके कनउज की जालै रे बजार
एहर बुढ़ खोइलन देखा गउरा बइठल पंयड़ा जोहति बलको बाय
कि अबहीं मंजरी ना मोर आईं मजरी मो कनउज की गइल रे बजार
जब न दुअरिये पर मंजरी पहुँचं आरे बुढ़िया जरि के भसम होइ जाय
तप देना दउरी उतारि के देखं
आरे बलको दूधहंड़ सोझै उझिलै
अंगने सोना चानी देखैं लागं
ऊ घर घर पूछले रहल का का पवलू
अधेला पैसा सोनवा चानी देखि के बुढ़ियं
आरे अउरो गइल घबड़ाय
सबके अधेला पइसा देहलसि, इन्है सोना चानी काहें देहल

बुढ़िया का मंजरी के चरित्र पर सन्देह तथा मंजरी के सत से कड़ाह के तप्त तेल का ठंडा हो जाना

आरे बुढ़िया ओखरी से मूसर उठा के

आरे मारै लागल मूसरवन क मार
धरम लुटवाय देलू गढ़ गउरा कें
आरे गईल ई जतिया हमार
तबले अनूपी जाइके बटुअन से मारै लगल
काहे इज्जत लुटवउलू धरम काहें तें खोवली
आरे मारे मूंगरवन क मार तब अनूपी बूढ़ा से कहलस
कि एनकर सतिया अजमावा करहा में तेल भरवाया
चइला लगवावा ओही में इन्हें खड़ा करावा
देखा धरम बचल हौं कि चल गयल गाइन के री अड़ार
बुढ़िया टप दे हुकुम लगावें
करहा चढ़वाय के तेल बोझवाय के, आरे चइला नीचे लगाय कं
लगल जब तेल जलै तब मंजरी बलको रुवै लगलै
ए मइया गउरवें मैं बलको मोर गुंजरे रं
आरे मंजरी एइसन रुवइया अब गउरा रुवै रे लागल
आरे मंजरी सतव रे मोरि मइया बलको न हउवै मनवलें
आरे मंजरी घूम कै मोर सतवा तेलवा में मरले रे हउवै
आरे एहर ठंडा रे मोर मइया तेलवा होइ रे गइलैं
आरे ओही में मंजरी रे मोरि मइया भइल बाड़ें तइरे यं
आरे अनूपी कहलेस एतरे न मंजरा कहनवा नाहीं रे माना
आरे हमके चलि के देखावा ए मंजरी गइयन के री अड़
तब तै जान बचल बाड़ें ए मंजरा धरमवौ रे तोहं

मंजरी और अनूपी का बोहा जाना तथा मंजरी का सत से पुल बनाना

आरे मंजरी मइया के करहवा से नीकल रे गई
आरे बलको अगवां अगवां मंजरी चलै रे लागल
पीछवां से अनूपी गोपिया रेवरली चलि रे जं
आरे जब देवहा के मइया पजरवा पहुँचि रे गई
तब अनूपी धीरे धीरे मंजरी के घलति बाड़ें समुरे झं
आरे मंजरा सतन के पुलवा देवहवा में बान्हि हों नावा
आरे तब त जानी मंजरा धरम बांचल रे तो हं
आरे मंजरी घूमि घूमि के सतवा देवहवा में मारै रे लागल
दूनो अलंगे पुलवा बबुआ भयल बाड़ें तइरे यं
आरे अनूपी के ले मंजरी के, देवहवा उतरि रे गइलीं
आरे तब अनूपी मंजरी के ए बबुवा घटवा पर समुरे झावै

अ धीरे धीरे आवा ए मंजरा अ गइयन की हो आड़ं
हम्मैं बलको धीरे धीरे मंजरा तोहसे अगवें चलत रे बाड़ीं
आरे तनी अहीरा से कइ लेंइ ए मंजरा भेंटियो न मुलरे कं
आरे एहर अनूपी धइलस ए यारों रूपवा डोमिनियां कै
हथवा में बढ़नी गोपिया जो लेहलसि रे उठं
आरे एहर अनूपी तीरवा जो अपने नाचें रे लागल

अनूपी का नाचना और चनवा के तम्मू के पास पहुँचना तथा चनवा का लोरिक को नाच देखने के लिए कहना

नाचत नाचत तमुवा बबुआ गइल बाड़ें निअरे रं
आरे सारा अमला फइला कें तमुववा पर नाचें रे लागल
चनवा क तम्मू बाबू गयल हो निअरे रं
आरे जाइके चनवा के अनूपी फटकवा पर नाचति रे हउवै
चनवा हसति बाड़ें मोर गइयन की रे आड़ं
आरे बलको भागल चनवा लोरिक के तम्ववा में पहुँचि रे गईं
आरे दूलहा अइसन डोमिनिया फटकवा पै नाचत रे हउवै
चाल के नाच देखिला ए दुलहा मोर गइयन की रे अड़ं
आरे लोरिक कहे जा तूं देखा बइठ के फटके पं
आरे जब ओहर से चनवा लवटल आवत रे हउवैं
अनूपी के सोझें नजरिया चनवा से लड़ि हो गईं
आरे गोपिया अइसन नचिया फटकवा पर नाचत रे हउवै
आरे नीचवा बाबू धरतिया न मोहि रे गईं
आरे उपरां बरम्हा क मइया मोहत बाड़ें कयरेलं
आरे मोहि गयल अहीर गउरा कै
हइहै बलको गइयन को रे म ऽ ऽ ऽ इ या
हउवें ना रे अड़ा ऽ ऽ ऽ र [१२८]

अनूपी का जाकर चनवा का झोंटा पकड़ना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ
तब बीर लोरिक तम्मू में सेमला गरदन पर फेंकि के जब हिलै लगल
पृथ्वी बरम्हा कै कंपै लगल कयलास
तब एहर तम्मू मैं सेमला फेंकि के लोरिक टप दे दुआरि के चललैं
अनूपी खड़ा हो चूपचाप मारि के जब तम्मू का आड़ हटि गयल हा
सोझे नजर लोरिक से अनूपी से परि गइल है
अइसी नाच नचलस लोरिक चलतैं पराय

अपने तम्मू में भागि के गइलैं
एहर चनवा बइठ के फटके पर हँसति बाय
आरे एहर अनूपी हाथे क दउरी ओही दुअरियैं पर फेंकि दें
एहर हाथे के बढ़नीं दे लै रे पंवार अ घूमि के तमुवा में नाचै लगल
चनवा जरि के भसम होइ जाय
एहर गगरिया में पानी रखलस सइयां के भोजन बनाय के रखै
आरे जल्दी निकल जा तमुवा से आरे एहर नाचै अन्तः काल
बलको नाचति नाचति गोपिया मों झोंटवा रे चनवा ऽ ऽ ऽ कैं
आरे बलको नोचवैं धइके झोंटवा चनवा के हउवैं द ऽ ऽ ऽ बवलें

मंजरी का चनवा को लात मारना

आरे तबले मंजरी पजरे रे मोरि मइया गइल बाड़ैं नियरे रं
आरे तबले मंजरी लतवन लतवन बोहवा में मारै रे लागं
आरे एहर अनूपी बहुअन बहुअन चनवा के पीटत रे हउवैं
आरे चनराइत लोरिक के पजरवा बड़े जोर रुवत रे हउवैं
एदवा हइहै दू ठे बुढ़िया तमुववा में आइल रे बाड़ीं
आरे बोहवा में मारि जाला ए बाबिल मतरियैं रे हमं
आरे तब तै धीरे धीरे लोरिक गिदरवा के समुरेझावैं
जा के समुझाय द्या मानि जाई बतिवा रे तोहं
आरे एक चनराइत जाइके अगवां मंजरी के खड़ा रे हउवैं
आरे मावा हरदी कै कमइया तोरे अंगवा आयल रे बाड़ीं
आरे हइहै गउरा में काटि दे ए मावा बिपतिया रे तोहं
आरे एइसन मरिया ए मावा बोहवा में मारत रे बाड़ीं
आरे हइहै मरि जालै ए माई मतरिया रे हमं
आरे तब तै अनूपी देखत्या जौ मंजरी हटि हो गई
आरे दूनों गरवा में गरवा देइ के बोहवा में रूवै रे लागैं
आरे बन के पतवै रे माई गिरत बाड़ैं खहरे रं
आरे जबले अगोरिया से मंजरो गउरा में आइल रे रहल
आरे कब्बों ना रूवलसि ए माई गउरवां गुंजरे रं
उहै बोहे में रूवै क पारी गइलि बाड़ै निअरे रं
आरे उहै गरवा में गरवा मंजरी क धई रे ले लै
ई एइसन रूवइया बोहवा में रूवै रे लागै
आरे एहर बीर लोरिक रे माई तमुववा में रूवत रे हउवैं
आरे अनूपी अइसन रूवइया लोरिक से कहत रे हउवैं

अनूपी और लोरिक की बातचीत, लोरिक का रुदन

आरे नाहक ए समियाँ गवनवां लेइ रे अइल्या
आरे हमके दे ले बाड़्या संइया कनउजे में बइरे ठं
आरे अपने ले के देखा हरदिया में चलि हो गइलैं
आरे बोहवा में नवले बाड़्या ए माई बिपतिया बड़ि रे यं
आरे गोपिया एइसन रूवइया बोहवा में रूवत रे हउवै
आरे बलको एइसन रूवत बाड़ें रे मइया बेटउवा बुढ़िया कं
आरे रूवत रूवत पजरे ए रे मोरि मइया अ गयल हउवै निअरे रं
आरे गोपिया एइसन रूवइया बलको बोहवा जिन रे रूवा
आरे हइहै लवटि आइल बाड़ें ए रनिया समिया रे हमं
आरे दूनों ठउरी मइया चुप बलको होइ रे गइलीं
आरे ओहर गउरा में घंटा दू घंटा चार घंटेन बीति हो गइलैं
अ गुंड़ा सोहदा गउरा कै कहलैं एदवां बेल्हि गइलीं
ए बूढ़ा पतोहिया दूनों बोहवै रे तोहं

धर्म लुटने के भय से गउरा में चिंतित बुढ़िया का अजई धोबी के पास जाना

आरे एहर मै बुढ़िया छतियै पीटि पीटि गउरा रे रूवै
आरे बोहवा में लूटि गइलै रे मोरि मइया धरमवीं रे हमं
आरे बुढ़िया रूवत रूवत गउरा में पहुँचि रे गइलीं
आरे धोबिया के गइल ले माई पवनवीं रे दुअं
आरे एहर बिजवा गोपी दुअरिया पर खड़ी रे हउवै
आरे कहवां आइब ए अइया भयल रे वोहं
आरे बिजवा से रोय रोय बिपतिया बुढ़िया बिजवा से कहति रे हउवै
आरे अनूपी मंजरी ए बिजवा बोहवा में दूनो रे गईं
आरे कवनो मुदई ए बिजवा गइयन में टीकल रे हउवैं
आरे बोहवा में लूटि ले ला ऐ मइया इजतियों रे हमं
आरे उहै अजई धोबी के सनेस देबै आयल रे बाड़ीं
बोहवा से छोड़ाय दे ए बिजवा पतोहियो रे हमं
आरे तब तै बिजवा खोदि खोदि भइया धोबिया के गोहरावै
आरे धोबी पजरे रे मइया गयल हउवै निअरे रं
आरे कहां कहबा बूढ़ा अवनवां होइ रे गइलैं
आरे एकर भेदवा जलदी तूं धलव्यु रे बतं
आरे कहां सुनबा अजई दूनो पतोहिया अनूपी मंजरी हो गइनीं

आरे ओइ गइल बाड़ीं अजई गाइन की हो अड़ं
आरे अजई धोबी बड़े जोर से माई दुअरिया पर घुड़कै रे लगलैं
तोहार पाछे हमार नौ नौ गदहा गउरा में बिका हो गइलैं
दुसुमन भयल तोहरे पाछे कुटुमवा पलि रे वं
आरे कउनो दुसमन रे बुढ़िया गइयन में टीकल रे होइहैं
आरे मारि नइहैं ए मइया जिनिगियौ रे हमं
आरे तब तैं हम ना जाबै ए बूढ़ा गाइन की हो अड़ं
आरे बिजवा दवर के पजरवा मोर धोबिया के पहुँचि रे गइलीं
नाहक ए मोर समियां जनमवां मनसेधू कै भइलैं
आरे जनाना भयल होत ए समियां गउरवैं तोरे गुजं रे रं
आरे जेकर एतना मंठा गउरवा में पियले रे हउवा
आरे सेखि हाकि कै बलमुवा गउरवै रे बलको गुजरे रं
आरे भला मंजरी अनूपी के धरमवा हउवै लूटल रे जाला
आरे भले मुंहवा ए धोबिया वलबे ना रे देखं
आरे बलको जनाना कै लुगरिया गउरा में पहिरि रे लेत्था
आरे हम धन जाबै रे मइया गइयन की रे आड़ं
आरे हमार मारि नांई सइयां रजवा न बलको पुरुबहा
आरे दूनो बहिन ले के आइब रे पपिया गउरवै न गुजरे रं

धोबी का बोहा में जाना

आरे धोबिया तब तैं हाली हाली निरखी गलवा में पेन्है रे लागै
मुंड़ा ए पगरी कपारे पर धोबिया लेहले हउवै न रे चढ़ं
आरे एहर मोजवा धोबिया गोड़वा में हउवै चढ़वलै
आरे बलको मोटका मूगरवा कंखियौ में हउवै दबवले
आरे धोबिया मोरि छोड़ि देला ए भाई गउरवौ कै रे बाजं
आरे धोबी भागल जात बा आ बोहवा में गाइयन के
आरे बलको देखा संवरू जवन मोर पोखरवा हउवैं खनवले
लोरिक के अमला फइला घोड़ा लेके देखा सगरवा में
बलको मोर रचति हउवैं ना रे नहं
आरे जब धोबिया मइया सगरवा पर पहुँचि रे गइलैं
तब ते धोबी कहैं एइसन भउजी पोखरवा मोर बन्हरेववलं
आरे तवन गदही गदहा धोके खराब कइ देहलैं पोखरवा रे गइयन में
आरे धोबो एही भाई पीछे से पनियां में कुदि रे परलैं
तब ले सिपाही नीकल के बोहवा के चलल हउवै ना रे पारं

एहर बलको दउरल दउरल एहर पंउड़त धोबिया ओ
मथवां न पहुँचि रे गयलं
आरे घोड़वा के बगले में धोबिया भयल हउवैं तइरे यं
आरे बीचे थामि के मुंगरवा घोड़वा के हुल्ला रे मरलैं
आरे नीकल के घोड़ा पानी से ए बबुआ चलल हउवै ना रे पारं
बलको भागल लोरिक के तमुवा पर घोड़ा रे जालैं
आरे बलको टपिया घोड़वा कै बड़ा जोर दउरति रे हउवैं

लोरिक का तम्बू से बाहर निकलना तथा घोड़े से बातचीत करना

आरे लोरिक तम्मू से बहरवा बलको मोर नोकल रे गइलैं
आरे बलको पूछत बाड़ैं अहीरवा हो गउरा कैं
आरे हइहै काहै बदे मंगर एतना जोर में तू भागत रे हउवा
आरे मंगर घोड़ा कहैलैं
भयवा हम लोहवन क मरिया नेउरापुर देखलीं रे बाड़ी
आगे फिर देखलीं ए बबुआ सिरिसवापुर कै न बजं
आरे अइसन हुल्लन क मार न देखलीं ए मइया मुलुकुवा में संव रे सं
आरे एइसन हुल्ला आ मरले हौ बीर लोरिक
हमार टूटि गइल रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया
अ पंजरिया कै रे हा ऽ ऽ ऽ ड़

लोरिक तथा धोबी का सिसकियां बांध कर रोना,
धोबी का लोरिक से सारी विपत्ति कहना

हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब घोड़ा लोरिक से बोलै
अजई धोबी नीकल के सीढ़ीं पर बइठैं
दीन बिताय घललैं दीन भर बइठल सीढ़ी पर
दीन बिताय घललैं रात बीति मोर गइल
तब एहर सिपाही बीर लोरिक कै सबेरही में उठि के
भीटा के नीचे लोग बइठि गइलैं सगरे में जब गइलैं
आरे तब धोबी बड़े जोर से खोखै सब लोग चलल पराय
भागल अपने अपने तम्मू पर भगवा खोल खोल खड़ा हउवैं
जे सिपाही ओहर से आवै अ नीचे भीटा के पीछे बइठै
फिन पानी के छोंवे जाय तबले धोबिया बड़े जोर में खोखैं
चलैं पराय कि कलियां वाला बइठल हउवैं
इहै लोग सोंचै तबले सबेरे होइ गयल

लोरिक उठलें तम्मू से बाहर जब निकल लैं
त देखैं जे जहां खड़ा हौ ते तहैं खड़ा हौ
आरे सब लोग गयल बलको घबड़
लोरिक आपन तम्मू छोड़ि के चललैं मोती सगर के घाट
आरे धोबी बइठल हउवै सीढ़ी पर नीचे मउर लटका के
तबले लोरिक पजरे गइलैं रे निअराय
लोरिक नीचे मउर कै के धोबी के पजरे भयल तइ यं
आरे धोबी तनिको न हिल्लै न तनिको ताकै ओसारी लगाय
आरे दूनों सुसुक सुसुक मइया घटवा में रुवत रे हउवैं
आरे दूनों कइके बयनवां अ घटवा में रुवै रे लागैं
आरे एहरवैं धोबिया रे मइया लोरिक के कहत न रे हउवै
आरे नाहक ए भइया जनमवां तूं लेइ हो ले लैं
आरे बलको जामति रे मइया जो रुखवो ना रे परं
आरे भले ए मीतवा हरदिया में जाके टीकि रे अड़
आरे भइया भले मारि गइलैं रे मोरि मइया अ गइयन की रे अड़
आरे तब तैं धीरे धीरे लोरिक धोबिया से पूछत रे हउवैं
आरे के के हमरे भइया के मरलसि रे बबुआ अ गइयन की रे अड़
आरे तब धीरे धीरे धोबिया लोरिक के समुरेझावै
आरे एक अलंगे ए भइया गउवां पिपरिया चढ़ि रे आयल
आरे एक अलंगे कुसुमापुर के बबुआ चढ़ल बाड़ैं ना रे बजं
आरे जवन तोहार नइको ए बबुआ भइल बाड़ैं ससुरे रार
आरे सहदेव महदेव ए भाई चढ़इया कइले रे रहलें
आरे एही बोहे में भइया पलिटन उतर रे गइलीं
आरे तवन भइया सात दिन सात रात कंडन मरियां रे कइलैं
आरे सात दिन सात रात दूहनियै मार रे कइलैं
आरे सातै दिन सात रतिया गोइठवन मार रे कइलैं
आरे ऊलट ऊलट ताकत रहलैं ए भइया हरदिया की रे बजं
आरे कब पीठिया कै लवटि आई रे मइया भयत्रो रे हमं
आरे तवन तोर पता ए संगी बोहवा में नाहीं रे लागै

सुवचन ने बाण मारा तथा सुरसा डाइन ने संवरू का मस्तक काटा

आरे तवन एहर सुवच्चन क बनवां भइया के लगि हो गइलैं
एही गिरि परलैं ए लोरिक मोर गइअन की रे अड़
आरे सारी गइया मइया मेड़रिया देइ हो देलीं

एहर बलको दउरल दउरल एहर पंउड़त धोबिया ओ
मथवां न पहुँचि रे गयलं
आरे घोड़वा के बगले में धोबिया भयल हउवैं तइरे यं
आरे बीचे थामि के मुंगरवा घोड़वा के हुल्ला रे मरलैं
आरे नीकल के घोड़ा पानी से ए बबुआ चलल हउवै ना रे पारं
बलको भागल लोरिक के तमुवा पर घोड़ा रे जालैं
आरे बलको टपिया घोड़वा कै बड़ा जोर दउरति रे हउवैं

लोरिक का तम्बू से बाहर निकलना तथा घोड़े से बातचीत करना

आरे लोरिक तम्मू से बहरवा बलको मोर नीकल रे गइलैं
आरे बलको पूछत बाड़ैं अहीरवा हो गउरा कैं
आरे हइहै काहै बदे मंगर एतना जोर में तू भागत रे हउवा
आरे मंगर घोड़ा कहैलैं
भयवा हम लोहवन क मरिया नेउरापुर देखलीं रे बाड़ी
आगे फिर देखलीं ए बबुआ सिरिसवापुर कै न बजं
आरे अइसन हुल्लन क मार न देखलीं ए मइया मुलुकुवा में संव रे सं
आरे एइसन हुल्ला आ मरले हो बीर लोरिक
हमार टूटि गइल रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया
अ पंजरिया कै रे हा ऽ ऽ ऽ ड़

लोरिक तथा धोबी का सिसकियां बांध कर रोना,
धोबी का लोरिक से सारी विपत्ति कहना

हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब घोड़ा लोरिक से बोलै
अजई धोबी नीकल के सीढ़ीं पर बइठैं
दीन बिताय घललैं दीन भर बइठल सीढ़ी पर
दीन बिताय घललैं रात बीति मोर गइल
तब एहर सिपाही बीर लोरिक कै सबेरही में उठि के
भीटा के नीचे लोग बइठि गइलैं सगरे में जब गइलैं
आरे तब धोबी बड़े जोर से खोखै सब लोग चलल पराय
भागल अपने अपने तम्मू पर भगवा खोल खोल खड़ा हउवैं
जे सिपाही ओहर से आवै अ नीचे भीटा के पीछे बइठै
फिन पानी के छोंवे जाय तबले धोबिया बड़े जोर में खोखैं
चलैं पराय कि कलियां वाला बइठल हउवै
इहै लोग सोंचै तबले सबेरे होइ गयल

लोरिक उठलें तम्मू से बाहर जब निकल लैं
त देखैं जे जहां खड़ा हौ ते तहैं खड़ा हौ
आरे सब लोग गयल बलको घबड़ं
लोरिक आपन तम्मू छोड़ि के चललैं मोती सगर के घाट
आरे धोबी बइठल हउवै सीढ़ी पर नीचे मउर लटका के
तबले लोरिक पजरे गइलैं रे निअराय
लोरिक नीचे मउर कै के धोबी के पजरे भयल तइ यं
आरे धोबी तनिको न हिल्लै न तनिको ताकै ओसारी लगाय
आरे दूनों सुसुक सुसुक मइया घटवा में रुवत रे हउवैं
आरे दूनों कइके बयनवां अ घटवा में रुवै रे लागैं
आरे एहरवैं धोबिया रे मइया लोरिक के कहत न रे हउवै
आरे नाहक ए भइया जनमवां तूं लेइ हो ले लैं
आरे बलको जामति रे मइया जो रुखवो ना रे परं
आरे भले ए मीतवा हरदिया में जाके टीकि रे अड़ं
आरे भइया भले मारि गइलैं रे मोरि मइया अ गइयन की रे अड़ं
आरे तब तैं धीरे धीरे लोरिक धोबिया से पूछत रे हउवैं
आरे के के हमरे भइया के मरलसि रे बबुआ अ गइयन की रे अड़ं
आरे तब धीरे धीरे धोबिया लोरिक के समुझावै
आरे एक अलंगे ए भइया गउवां पिपरिया चढ़ि रे आयल
आरे एक अलंगे कुसुमापुर के बबुआ चढ़ल बाड़ैं ना रे बजं
आरे जवन तोहार नइकी ए बबुआ भइल बाड़ैं ससुरे रार
आरे सहदेव महदेव ए भाई चढ़इया कइले रे रहलैं
आरे एही बोहे में भइया पलिटन उतर रे गइलीं
आरे तवन भइया सात दिन सात रात कंडन मरियां रे कइलैं
आरे सात दिन सात रात दूहनियैं मार रे कइलैं
आरे सातै दिन सात रतिया गोइठवन मार रे कइलैं
आरे ऊलट ऊलट ताकत रहलैं ए भइया हरदिया की रे बजं
आरे कब पीठिया कै लवटि आई रे मइया भयत्रो रे हमं
आरे तवन तोर पता ए संगी बोहवा में नाहीं रे लागै

सुवचन ने बाण मारा तथा सुरसा डाइन ने संवरू का मस्तक काटा

आरे तवन एहर सुवच्चन क बनवां भइया के लगि हो गइलैं
एही गिरि परलैं ए लोरिक मोर गइअन की रे अड़ं
आरे सारी गइया मइया मेड़रिया देइ हो देलीं

एहर बलको दउरल दउरल एहर पंउड़त धोबिया ओ
मथवां न पहुँचि रे गयलं
आरे घोड़वा के बगले में धोबिया भयल हउवें तइरे यं
आरे बीचे थामि के मुंगरवा घोड़वा के हुल्ला रे मरलैं
आरे नीकल के घोड़ा पानी से ए बबुआ चलल हउवै ना रे पारं
बलको भागल लोरिक के तमुवा पर घोड़ा रे जालैं
आरे बलको टपिया घोड़वा कै बड़ा जोर दउरति रे हउवैं

लोरिक का तम्बू से बाहर निकलना तथा घोड़े से बातचीत करना

आरे लोरिक तम्मू से बहरवा बलको मोर नीकल रे गइलैं
आरे बलको पूछत बाड़ँ अहीरवा हो गउरा कैं
आरे हइहै काहै बदे मंगर एतना जोर में तू भागत रे हउवा
आरे मंगर घोड़ा कहैलैं
भयवा हम लोहवन क मरिया नेउरापुर देखलीं रे बाड़ी
आगे फिर देखलीं ए बबुआ सिरिसवापुर कै न बजं
आरे अइसन हुल्लन क मार न देखलीं ए मइया मुलुकुवा में संव रे सं
आरे एइसन हुल्ला आ मरले हो बीर लोरिक
हमार टूटि गइल रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया
अ पंजरिया कै रे हा ऽ ऽ ऽ ड़

लोरिक तथा धोबी का सिसकियां बांध कर रोना,
धोबी का लोरिक से सारी विपत्ति कहना

हां ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब घोड़ा लोरिक से बोलै
अजई धोबी नीकल के सीढ़ीं पर बइठैं
दीन बिताय घललैं दीन भर बइठल सीढ़ी पर
दीन बिताय घललैं रात बीति मोर गइन
तब एहर सिपाही बीर लोरिक कै सत्रेरही में उठि के
भीटा के नीचे लोग बइठि गइलैं सगरे में जब गइलैं
आरे तब धोबी बड़े जोर से खोखै सब लोग चलल पराय
भागल अपने अपने तम्मू पर भगवा खोल खोल खड़ा हउवैं
जे सिपाही ओहर से आवै अ नीचे भीटा के पीछे बइठै
फिन पानी के छोंवे जाय तबले धोबिया बड़े जोर में खोखैं
चलैं पराय कि कलियां वाला बइठल हउवैं
इहै लोग सोंचै तबले सबेरे होइ गयल

लोरिक उठलैं तम्मू से बाहर जब निकल लैं
त देखैं जे जहां खड़ा हौ ते तहैं खड़ा हौ
आरे सब लोग गयल बलको घबड़ं
लोरिक आपन तम्मू छोड़ि के चललैं मोती सगर के घाट
आरे धोबी बइठल हउवै सीढ़ी पर नीचे मउर लटका के
तबले लोरिक पजरे गइलैं रे निअराय
लोरिक नीचे मउर कै के धोबी के पजरे भयल तइ यं
आरे धोबी तनिको न हिल्लै न तनिको ताकै ओसारी लगाय
आरे दूनों सुसुक सुसुक भइया घटवा में रुवत रे हउवैं
आरे दूनों कइके बयनवां अ घटवा में रुवै रे लागैं
आरे एहरवैं धोबिया रे भइया लोरिक के कहत न रे हउवै
आरे नाहक ए भइया जनमवां तूं लेइ हो ले लैं
आरे बलको जामति रे भइया जो रुखवो ना रे परं
आरे भले ए मीतवा हरदिया में जाके टीकि रे अड़ं
आरे भइया भले मारि गइलैं रे मोरि भइया अ गइयन की रे अड़ं
आरे तब तैं धीरे धीरे लोरिक धोबिया से पूछत रे हउवैं
आरे के के हमरे भइया के मरलसि रे बबुआ अ गइयन की रे अड़ं
आरे तब धीरे धीरे धोबिया लोरिक के समुझावै
आरे एक अलंगे ए भइया गउवां पिपरिया चढ़ि रे आयल
आरे एक अलंगे कुसुमापुर के बबुआ चढ़ल बाड़ैं ना रे बजं
आरे जवन तोहार नइकी ए बबुआ भइल बाड़ैं ससुरे रार
आरे सहदेव महदेव ए भाई चढ़इया कइले रे रहलैं
आरे एही बोहे में भइया पलिटन उतर रे गइलीं
आरे तवन भइया सात दिन सात रात कंडन मरियां रे कइलैं
आरे सात दिन सात रात दूहनियै मार रे कइलैं
आरे सातै दिन सात रतिया गोइठवन मार रे कइलैं
आरे ऊलट ऊलट ताकत रहलैं ए भइया हरदिया की रे बजं
आरे कब पीठिया कै लवटि आई रे भइया भयत्रो रे हमं
आरे तवन तोर पता ए संगी बोहवा में नाहीं रे लागै

सुवचन ने बाण मारा तथा सुरसा डाइन ने संवरू का मस्तक काटा

आरे तवन एहर सुवच्चन क बनवां भइया के लगि हो गइलैं
एही गिरि परलैं ए लोरिक मोर गइअन की रे अड़ं
आरे सारी गइया भइया मेड़रिया देइ हो देलीं

आरे दूधवन से लास संवरू कै गइल बाड़ै उत्ति रे रं
आरे तवन पिरिमी पिपरी कै सतिया का रूपवा वोहवा हउवै पकरले
आरे हइहे गइया से फोंफरवा बोहवा में मांगे रे लगल
आरे सुरसा डाइन देखा संगवा में हलि हो गइलीं
आरे संवरू के काटि लेहलस लोरिक जौ मथवी ले ल रे कं
आरे मथवा हथवा में सुरसा डाइन जब लटरे कवल
आरे एहर गइया पोछवा पराइल बाड़ीं रे जं
सुरसा डाइन कउने करनवां संवरू कै माथ रे कटलै
आरे दुरुगा सुरसा डाइन के पास अम्मर कै बलको कगदवा
दसवंत कै बलको रखल रे रहलैं
आरे उहै दुरुगा ली आइल भइया कगदवा रे दसवंत कैं
उहै जौ सुरसा डाइन कहलस जौ दसवंत क मथवा
सगरे पर काटि हो लेबूं
आरे संवरू क काटि लेब ए माई गइयन की रे अड़ं
आरे उहै सुरसा डाइन लोरिक माथ ले के पिपरियं में चलि हो गईं

सारी गायें पिपरी में अपहृत, नान्हू का पिपरी में भाड़ झोंकना

आरे सारा गइया बेल्हल बाड़ीं पिपरिया की रे बजं
आरे नान्हू पिपरी में भयवा झोंकत बाड़ैं भर रे सं
आरे भले अपने आय के बबुआ गइयन में टीकल रे बाड़ा
आरे सुधिया दे ले बाड़े बबुआ गइयन के बिसरे रं
आरे भला अबहीं से बबुआ पिपरिया में चढ़ि रे जात्या
आरे आपन गइया मइया ले ते लव रे टाय
आरे जौ तैं पिपरी से लवटाय लेत्या त जानित संवरू भइया
जियत बाड़ैं रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया
आ गइयन की रे अ ऽ ऽ ऽ ऽ ड़ार [१३०]

लोरिक का गउरा आगमन तथा मां से मिलना, मां द्वार लोरिक की भर्त्सना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब धोबी कहै लोरिक से आरे भला इहां बोहे में आयल हउवा
का करत हउवा अबहीं से चला गढ़ गउरा
तब लोरिक धोबी से कहलैं कि काल्हि बिहाने आईं
तूं घुमि के कनउज की चला हो बजार
ओहर धोबी गउरा के चललैं लोरिक तम्मू गइलैं निअराय

एहर धोबी जब गउरा में गइलैं
जाके लोरिक के मतारी से कहलैं
कि तोहार बेटवा बोहे में आयल बाड़ैं
ना तोहार लुटि गयल धरम गइयन में
एकरे फेर में जिन तूं पड़ा
कहि के धोबी अपने पवन गयल दुआ ऽ ऽ ऽ ऽ र
एहर ए भाई दुआरे धोबिया अपने गइलैं
एहर भयल सबेरा जब बोहवा में
लोरिक आपन घोड़ा मंगर कसलैं
अ घोड़े पर भइलैं असवार
सारा असबाब चढ़ा के गउरा के चललै बजार
आरे घोड़ा नाचत गउरा के नाचत जात हौ पजरे गयल नियराय
तब घोड़ा अइसी नाच गउरा में नाचै
नाचत नाचत बजारी में घुसि गइलैं
अ घोड़ा नाचत लोरिक के दुआरे फटके पर गइलैं
लोरिक उतर के कीला में हलै लगलैं
बूढ़ खोइलन बइठल अगने में
जाके गोड़े पर गिर गइलैं
बुढ़िया जै जै मचवलस का ऽ ऽ ऽ ल
तब कहत हो बज्जर परो बीर लोरिक
तोहके परो बजर कै घान
नाहक कोखी में जनम तूं लेहले आरे जामत रुख परास
बलको गरवै में ए ललवा गगरिया तै बोझि रे लेबे
आरे कत्तों गिर जाबे रे मइयां
अ कुंववा ना रे इनं
आरे भला अपने गउवां रे मइया हरदिया में टिकि हो गइला
गउवां कै देले बाड़े ए ललवा सुधियोतैं रे बिसरे रं
आरे एहर मलवा मों संवरू बेटउवा न मारल रे गइलैं
आरे गउरा उपर गयल ए ललवा जौ सोरियौ रे हामांर
आरे बलको धीरे धीरे बुढ़िया के किलवा में समुरेझावैं
आरे माई मानि जाबू बलको कहनवौं रे हमांर
आरे बलको जियत जियत डंड़िया हरदिया से आईल रे हउवै
पिपरी से लै बै ए मावा अ गइयउ छोड़ रे वं
आरे लोरिक अपने ए मइया जौ कीलवा ले नीकल रे दे लैं

आरे नान्हु के संगे लोरिक हउवैं लियवले
आरे लेइ के जात बाड़ैं बबुआ गउरवैं गुंजरे रात
आरे जब गउरां में बाबू लोरिक हइहै चलि हो गइलैं
आरे बलको देखा बारह जोड़िया सिहवा हउवैं सरेखले
आरे चउदह जोड़ी ए माई बजत बा कर रे नाल
आरे चउदह जोड़िया बलको धउसंवा हउवैं सरे खले
आरे दू दू ठे डांड़ी गउरा करत हउवैं तइरे यं
आरे बलको ले के डंड़िया गउरा में चलि हो गइलैं
आरे हइहै डांड़ी ले जात बाड़ैं गइयन की रे आड़ं

बोहा से मंजरी की डोली गउरा में आना

आरे एहर मैं डंड़िया मइया बोहवा में पहुँचि रे गइलीं
आरे जहाँ गिरल बाड़ै तमुववा हो अहीरे कै
आरे एहर देखा होति बाड़ैं बबुआ बिदइया रे गोपियन कै
आरे जहां बाजा बजत बाड़ैं मोर गइयन की रे आड़ं
आरे अगवां अगवां डंड़िया मंजरी कै चलै रे लागै
आरे पीछवां अनूपी के संगवा हउवैं न चलि रे जं
आरे जेकरे पीछवां डंड़िया चनवा कै चलै रे लागल
आरे घोड़ा मंगर नाचति बाड़ैं गउरवैं गुजरे रं
आरे एहर बलको अगवाँ अगवाँ डाँड़ी हो मंजरी
आरे गउवां गउरा गयल हउवैं निअरे रं

समस्त गउरा की गोपियों का दृश्य देखना

आरे जब गलिया में डडिया मंजरी कै हलै रे लागल
आरे घोड़ा माँगर अइसन नचिया नाचै रे लागल
आरे गउरा देखि के रे माई मोहित बाड़ै होइ रे जं
आरे केतनी गोपिया कै सड़क में खिरकिया खुलि रे गइलीं
केतने ताकत बाड़ी गोपिया मउरिया लटरे कं
आरे केतने तउवा क रोटिया जो तउवा पर छोड़ि रे देलीं
आरे कैतने खपसल गोपी कठउतिन कै रे पिसान
आरे अब देखत बाड़ीं माई सुरतिया रे अहीरे कै
आरे सबके दिले खटका गउरा गयल हो बड़ि रे यं
आरे जब सबकर मरनवाँ गउरा में आइ हो गइलैं
आरे एहर डांड़ी के जाइके फटकवा पर लगि हो गईं

आरे तीनो गोपिया बब्रुआ किलवा में हलि हो गईं
आरे मंजरी चनवा भूंजै लगलीं एकवटे में न रे रं
आरे कहै ला पाँचू भगत कटलें विपत मंजरी कै
रजवा भूंजत बाड़ी रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया
अपने गउरवाँ गूंजरे रा ऽ ऽ ऽ ऽ त [१३१]

इसके बाद गायक कहता है (ॐ सरस्वती पार्वती लक्ष्मी ॐ)

अध्याय ६

पिपरी की लड़ाई—अग्नि में प्रवेश कर लोरिक की मृत्यु

लोरिक की आज्ञा पाकर अजई का पिपरी जाना

हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं
जब मंजरी गउरां राज भुंजति हीं
आरे एहर बीर लोरिक के दिल में बड़ा संका बढ़ गइलें
बलको अजई धोबी के दुअरवा गयल हउवें निअरे रं
आरे तनी एकन धोबिया मोर कहलवा जो कह हो देब्या
आरे बलको चल जात ए धोबिया पिपरियौ की रे बाजं
आरे तनी एकन सुबचन भइया के हमरे पिपरियें से ला आय हो अवत्या
आरे कत्तों कइ लेइत ए धोबिया हम भेंटियौं ना रे दी दं
आरे हइहै संवरू भइया धोबिया गइयन में मारि हो गइलें
आरे दूसर भाई केहू पीठिया पर धोबिया नाहीं हमरे हउवें रे देखं
आरे हइहै एतनी मोर बतिया जब धोबिया बलको सुनि रे लेता
आरे धोबिया जाति बाय ए मइया पिपरियौ की रे बाजं
आरे जाइके सुबचन के पजरे पर फटकवा पर बोलत रे हउवें
आरे भइया गउरा में हइहै लोरिक बलको आयल रे हउवें
आरे तनी कइ लेब्या ए बीरना जौ भेंटियौ ना मुलरे कं
आरे सुबचन एहर अपनै मइया फटकवा मोर छोड़ि रे दे लें
आरे गउरा के सुधिया पठवा ले ले हउवै सुधि रे यं
आरे बलको धीरे धीरे देखब्या जो गउरा में पहुँचि रे गइलें

लोरिक का सुवचन से पिपरी से गायें वापिस लाने का उपाय पूछना

आरे लोरिक गंउरा कै बहरे भयल हउवै तइरे यं
आरे जाइके सुवच्चन के गोड़े पर जो लोरिक बलको गिरि हो गइलैं
आरे भइया ए तनि मानि जाव्या एठियन बतिया रे हमं
आरे हमरे भइया ए भइया जौ बोहवा में जूझि रे गइलैं
आरे हइहै हमरे पर आइल रे बीरना बिपतियौ जो बरिरे यं
आरे तनी एकन अबके हमके उपइया जौ गउरा में बलको बताई
आरे हमके तनी एक सुबचन भइया
उपइया बलको बताय द्या (पुनरावृत्ति)
आरे कइसे पिपरी से छूटि जइहैं मइया जो गइयौ रे हमं
आरे कवन कवन ए बीरना उपइया न बलको बगाई
आरे बीपत कै बतिया सोचत सोचत मोर दिनवा बीति रे गइलैं
आरे तब तै धीरे धीरे सुबचना लोरिक के समुरेझावैं

सुवचन का नान्हू को जोगी रूप में पिपरी भेजने की सलाह देना

आरे हम धन जात बाड़ीं ए लोरिक गउवां हो पिपरी में
आरे पिपरी के सारा घलब बलकों बहरे कं
आरे नान्हू के जोगी के रूपवा एठियन ना हो बनाय ल्या
आरे भेजि देब्या ए बबुआ पिपरियौ की रे बाजं
आरे नान्हू जाइके जोगिया मै होइके पिपरिया गितिया गावै ना लगिहैं
आरे सरंगी बजाई रे मइया पिपरियौ की रे बाजं
आरे बलको ओहर सारा गइया कठघरा में बन्हवाईं
आरे कलंगी सांड़ तेली के कोल्हू बलको हउवै रे जोतं
आरे हइहै तवन भइया नान्हूँ होइके जोगिया जब
पिपरिया में भेजि रे देब्या
आरे चउमुख गलिया की गलिया भजनिया जौ कइ रे घलिहैं
आरे बलको जहां कोल्हू में कलंगी मैं संड़वा न जोतल रे जालां
आरे ओही दुआरे अपने डेरा बलको लेइहैं ना रे गीरं
आरे बलको अधियै रतिया के नथिया कलंगिया कैं
आरे आगे आगे नन्हूवां रे मइया बलको मोरि चलि हो देइहैं, मोर बलको
कटघरा पर जाइके सारा गइयन कै कटघरवा मोर बलको हटइहैं
आरे गइया आपन कटघरा से पिपरिया में बलको नीकल के
आरे लेके चलि अइहैं बबुआ गउरवा न गुंजरे रं
आरे जेतनी बीतत जौ गउरा में आइल होई
अब काटि देबै ए भइया अ जिनिगिया ना तोहा ऽ ऽ ऽ र [१३२]

नान्हू का योगी रूप में पिपरी जाना

हां ऽऽऽऽ आं ऽऽऽ
सुबचन कहिके अपने पिपरी क लवटि देलें
लोरिक गइलें अपनी पिपरी के री बजार
तब दुरुगा से लोरिक बोलें दसो नहं मैं जोरि के
आरे माता माना बात हमार
एक बात तूं हम्मैं बताय द्या चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
कइसे लड़ाई गढ़ पिपरी कै होई
कइसे पिपरी के चलब बजार
एकर भेद बताय द्या, चिन्ता बढ़ल बदन में बाय
माई जबले गउरा में ए मोरि मइया
हरदिया से हम घुमि रे अइलीं
आरे तबले फेरवा में परल बा ए मोरि मइया जिनिगियौ रे हमं
आरे माई अब एक्को अकिलिया करवा न करति रे हउवै
आरे कइसे छूटि जाई ए मावा दुःखवौ रे हमं
आरे दुरुगा धीरे धीरे लोरिक के गउरा में समुरेझावें
आरे हइहै सुनब्या सुनब्या बेटवा फुलरे झरुवा
आरे तनी मनबो बेटवा कहनवां रे हमं
आरे जवन जवन बतिया बबुआ गउरा में हमसे कहा
आरे हइहै काटि देई ए ललवा बिपतियौ रे तोहं
आरे तब धीरे धीरे लोरिक दुरुगा से कहै रे लागल
मोर भाई नान्हूँ के जोगिया रूपवा गउरा बनाय द्या
आरे नान्हूँ जइहैं ए मावा पिपरियौ की रे बजं
आरे इन्हैं सारा जोगी कै असबबवा आ गउरा में देई हो देबू
आरे तब तै दुरुगा माया के सरंगिया गउरा में बनावै रे लागं
आरे माया क कमंडल दुरुगा करति बाड़ैं तइरे यं
आरे हइहै माया क भाई सगरिया हउवै बनवले
आरे माया क झोली रे मइया घलति ना रे बनं
आरे बलको माया क गेरुवा बनवां हउवै बनवले
आरे नन्हुवां के मथवा में दुरुगा भभूतिया देवै रे लागल
आरे खड़ा तिलक रे मोरि मइया दे लै हउवै ना रे लगं
आरे माई गरवा में नान्हू के एहर मै झोलिया लटरेकावै
हथवा में कमंडल नन्हुवां के दे ले हउवै ना रे थम्हं

आरे बलको एहर मैं पितरी क कमंडल हथवा में हउवै थमहवलैं
आरे दुरुगा गढ़ि गढ़ भजनियां नन्हूवां के लगल बतावै
आरे नान्हू से कहलेस बचवा धीरे धीरे सरंगिया तनी बजाय द्या
आरे तोरे सरंगी क तनी एकन बेटवा मैं सुनि लेइत खेलरे वं
आरे तब तै अइसन सरंगिया नन्हुवां लगल बजावै
आरे जेम्मन छत्तिस रे मइया बेधत हउबै बलको रे रं
आरे नान्हुं अइसन भजनियाँ गउरा में गावै रे लागै
आरे बलको चिरिया चुरुमुन रे मइया मोहितवा होइ रे गइलैं
आरे एक मोहित जौ होइ गयल ए बबुआ गउरवै कै हो बाजं
आरे अइसन जोगी नान्हूँ बनल बाड़ै जइसे उत्रल बाड़ैं रे मोरि
म ऽ ऽ ऽ ऽ इया अ दुइजिया कै रे चा ऽ ऽ ऽ न [१३३]

नान्हूँ का पिपरी की गलियों में भजन गाना

आं ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ हां ऽ ऽ ऽ ऽ
तब दुरुगा नान्हू के जोगी रूप बनाय के पिपरी के भेज दे लैं बजार
जब नान्हू पिपरी में गइलैं
आरे जोगिया की गलिया भजनियां मोर गावै रे लागैं
आरे बलको एइसन भजनिया मोर गलिया में गावत रे हउवैं
आरे पिपरी के लोगवै रे मइया मोहित हउवैं होई रे जं
आरे बलको एइसन हम जोगिया जौ कबहुँ ना बलको रे देखल
आरे जोगी दरसन करै जोग कै आयल बा पिपरियौ की रे बाजं
आरे बलको ओगर मै पिपरी जौ पीछे पीछे घूमै रे लगल
आरे बलको दुआरी दुआरी भजनिया नान्हूँ गावै रे लागं
आरे बलको एहर घूम घूम के नन्हुवां सरंगियो ना लागल बजावै
आरे बलको चउमुख से घूमत घूमत मइया
आरे दूसरे कोनवां पर पहुँचि रे गइलै
आरे जहाँ हइहैं कलंगी मोर संड़वा जो कोल्हुवै मै जोतल रे जालैं
आरे जाइके दुआरी पर नन्हुवा भयल हउवैं तइरे यं
आरे एहर मैं त देखा कोल्हुवौ में संड़वा कलगिया मोर चलति रे हउवैं
आरे भजन सुनि के दुआरी पर मइया भयल हउवैं तइ रे यं
आरे एहर बड़े जोर में कलंगिया मोर कोल्हुवा में घूमै रे लागल
आरे एहर नान्हूँ बइठ के चउतरा असनवा न हउवैं लागवले
आरे भजन गावति हउवै पिपरियौ की रै बाजं

आधी रात तक भजन सुन कर सम्पूर्ण गाँव का सो जाना

आरे नान्हू अइसन अवजिया पिपरिया में देति रे हउवैं
आरे ओगरा गउवां भजनियां जौ रतिया में सूनै रे लागल
आरे जब आधी रात में भजनियां मोर गउले रे हउवैं
आरे तब तै ओगरा गउवां सूतै बलको चलि हो गइलैं
आरे तब तै कलंगी के नथिया तेली के दुअरवा से काटि रे देलं
आरे बलको अंगवा अंगवा जौ नन्हुवां मोर चले हो लागल
आरे गइयन के कटघरवा के पंजरे गयल हउवै निअरे रं
आरे एहर सारी गइया मै छुरी से कटघरा बलको खन्ने रे लागं
आरे नान्हूँ धीरे धीरे गइयन के कटघरवा पैर समुरे झावं
आरे एतना सोरवा ए गऊ पिपरियें में कइ हो देलू
आरे पिपरी सारा जागि जाला मइया पिपरियौ की रे बजं

नान्हूँ का पिपरी में कटघरे से सारी गायो का खोल देना

आरे एहर सारा कटघर वा नन्हुवां मै हउवै हटवले
आरे जब गइया रे मइया फोंफरवा मोर पाइं हो गइलीं
आरे हइहै अगवां अगवां जौ नन्हुबा मोर दउरै रे लागं
आरे एहर सारी गइया बलको पराइल हई रे जं
आरे एहर देवसी रे मइया आ एहर बनछिउलिया में बइठल रे हउवैं
आरे हइहै जोहत बाड़ैं लोरिक कै पंयड़ा संझवौ रे बिहं
आरे तब ले एहर गइया मइया पराइल जाति रे बाड़ीं
आरे एहर अंजोरिया मइया रतिया न उदै रे हउवैं

देवसिया का बाण लेकर पीछा करना और गायों को रोक लेना

आरे एहर देवसी के कनवां में गइलै सबदियौ न रे सुनांय
आरे तब तै भागल भागल देवसी उत्तर कोनवा पर पहुँचि रे गइलैं
आरे ओहर से नन्हुवां से गइया लखेदले बलको रे बं
आरे बलको परि गइल मइया नजरिया रे देवसी कैं
आरे देवसी आपन लेहले बनवां अगनिया कै दउरै रे लागल
आरे नान्हूँ छोड़ि के गइया देवहवा में कूदि रे गइलैं
आरे नदिया मोर उतर गयल मइया देवहवौ जौ ओहि रे पं
आरे भागल भागल गउवां रे मइया गउरवा में पहुँचि रे गइलै
आरे लोरिक के गोड़वा पर बलको गिरत हउवै भहरे रं
आरे सारा गइया ए भइया पिपरिया से लेइ रे आवा

आरे तवन बिचत्रा में सारा गइया देवसिया मोर छेकि रे ले लैं
आरे नाहीं उतर गइलीं देखब्या देवहवो जौ ओही रे पं
आरे जौ फिन पिपरी में घुमाय के ले जाला
नाहीं तौ छुटिहैं रे मोरि म ऽऽऽऽ इया
आ गइया ना रे हमा ऽऽऽऽऽ र [१३४]

घोड़ा मंगर पर सवार होकर लोरिक का पिपरी पर चढ़ाई करना

आं ऽऽऽऽ हां ऽऽऽऽ हां
जब एतनी बात लोरिक मोर सुनलैं
टप दे मंगर घोड़ा कै तबेला गइलैं रे निअराय
जाइके सिकड़ी मां तबेलवै क खोलि दे लें
आरे पकड़ के चोटी मंगर घोड़ा कै ले जाके बंगले कइलैं तइयार
जीन पाखर पीठिया पर रखलैं
आरे मुहें सोनन कै चढ़ावै लै लगाम
साठि साठि मोहर गरदन में छोड़लैं टीका मथवा पं
आरे चउदह कोस में भयल ओजरार
नलवन में घुंघरु बन्हि गइलैं
आरे पोंछियन मूंगवै देलैं रे गोंछवाय
तनलस बाग जब घौड़े कै चढ़ाय के
अपने देखा गढ़ गउरा में
आरे एहर देखा भाई, बान्हि पाग जब रे नरमन कै
जेकर चीर रे नेतर फहराय
साद परद कै तावा पितरिन कै
आरे बलको छतिया ले लैं रे बन्हवाय
सारा असबाब गउरा में चढ़ावैं
आरे बायें बगल में ओड़न
दहिने खींचि के बिजुलिया खांड़
चम चम चम चम चमकै ले चन्द्रमा
चमकन लागै लें माथ लिलार
सोरह सै कंटाइन सुमिरं आरे सोरह सै मरी रे मसान
सोरह सै दल छोहरी मै सुमिरै आरे जवन रुवौं रे रुवां असवार
ब्रह्माइन बोहवा के सुमिरैं आरे जवन संवरू दादा कै पुजमान
गोरया डीह गाइन कर सुमिरैं गोरया उछरै अट्ठारह हाथ
बायें बनसतिया के सुमिरैं दहिने बलको सुमिरे दुरुगा माई

छतीसै कोट के देवता सुमिरैं आरे जवन रुवां रे रुवां असवार
तब नान्हूँ के पजरे बोलावे आरे नान्हूँ मनब्या बात हमार
कउनो घटवा से उतरल रहल्या एकर भेदै देब्या रे बतं
आजु आधो रतिया चढ़ा गढ़ पिपरी
आरे बिहाने लूटबि रे मोरि म ऽ ऽ ऽ इया
आ ढोलिया ना रे बजा ऽ ऽ ऽ य [१३५]

कोल माकर द्वारा खुदवाये गड्ढे में घोड़े का गिर कर अटक जाना तथा बनसत्ती व दुरुगा की सहायता से उसको बाहर निकालना

जब बीर लोरिक गउरा अद्धी रात में घोड़ा आपन कसि कैं,
अंजोरिया रात ठहाठह उड़ल एहर घोड़ा
आपन लात धरती में लात दबलस तीन तीन रे जोजन मेंड़राय
उतर घोड़ा नद्दी मोर उतरलैं तब गढ़ पिपरी में जाके गोइड़ें में चूइ गइलैं
जब घोड़ा पिपरी में चूवल फोन घोड़ा मारै लात धरती में
आरे बलको तीन तीन रे जौजन मेंड़राय
अद्धी रात में घोड़ा मांगर कोलमंकरे के अंगने भयल ले तइयार
जहां गड़बड़ा कोलमाकर खनवावै
आरे एहर कुववै देलैं रे खनवाय
उपरां से टाटी अगंनवैं रखवाय दें
आरे बलको बालू देलैं रे फेंकवाय
एहर मैं सारा असबाव बिछाय देई
ओही में घोड़वा राति में पहुँचल
चारिउ टाप टापी पर देहल घोड़ा मंगर गिर गइलैं
नीचे जाइके अँड़सि गइलैं आरे तब मंगर घोड़ा हहहै
रूवत बाड़ें रे मइया पिपरिया की रे बजं
आरे तब तैं हमरे ए भइया जिनिगिया जौ नाही रे बचिहैं
आरे पिपरी जौं जगि जाला मटियन से बबुआ देई बलको तोपरेवं
आरे लोरिक बायें बनसतिया मांतरियै मोर सुमिरत रे हउवैं
आरे दहिने सुमिरै मइया दुरुगवा आपन रे मं
आरे दुरुगा पहुँचि कै मैं चोंटिया घोड़वा कै धइलैं रे हउवै
आरे बनसत्ती पिछवां से पोंछिया घोड़वा कै हउवै उठवलैं
ली आय के बलको अंगने कररवा पर रे मइया करति हउवैं तइरेयं
आरे एहर कोलमांकर ए बबुआ कीलवा में सुतलरे हउवैं
आरे रानी धीरे धीरे राति में चलत हउवै समुरे इं

आरे हम धन सूतले में समियां सपनवां जौ सूनत रे बाड़ी
आरे कउनो अंगने में मुदई ए मइया भयल हउवें तइरे यं
आरे एहर सारा मै देवतवा कीलवा पर दउरति रे हउवें
आरे इहै सपना ए समियां सुनति हई ए बड़िरे यं
आरे तबले राजा कोलमांकर पिपरिया में बिगड़त रे हउवें
आरे जूठे मुहें सूत गइलू सुतले में गोपिया हई बलको फहिरे रं
आरे चूप मारि के सूतबूं ए गोपिया गउवां रे पिपरी में

लोरिक द्वारा कोल मांकर की गर्दन काटा जाना

आरे तब ले दुरुगा लोरिक के पजरवें गइल हउवें नियरे रं
आरे अब तूं काटि लेबा ए बचवा जो मथवा कोलमाकरे कै
आरे टप दे लोरिक रे मइया बड़े जोर से ललरे कारें
आरे कोल्हमांकर किलवा में बबुआ भयल हउवें तइरे यं
आरे जब घूमि गइल ले मइया खंडिया रे अहीर कै
आरे मथवा कोलमांकर अंगनवा गिरत हउवें भहरे रं
आरे तबते सुरसा डाइन डांकि के मथवा कोलमांकरे कै हउवै उठवले
आरे हइहै धरिया में धरिया मोर घलति बाड़ें ना रे लगं
आरे मुहवां में अमरित चीरि के कोलमांकरे के हउवे पिअवले
आरे एहर किलवा में बबुआ भयल हउवै तइरे यं
आरे तबले दुरुगा बड़े जोर से मइया मोर कीलवा में ललरे कारें
आरे लोरिक कै घुमि गइलें बबुआ बिजुलिया न बलको रे खं
आरे एहर कोलमांकरे के धरिया धरतिया में गिरि हो गइलीं
आरे दुरुगा मथवा उठाई जब हथवा में अपने रे ले लीं
आरे एहर सुरसा डाइन के असनवां अंगवां जौ देबै रे लागं
आरे तबले लोरिक के धीरे धीरे मइया असनवां मोर देइ हो देलं
आरे सुरसा डाइन के दूनों मै लुलुहवा खंड़िया से काटि रे देलें
आंगने में दुरुगा देहलस रे मइया मउरियौं मोर ढेंगरे लं
आरे फुंकलसि जात बाड़ी आरे पिपरी के तड़कल हउवै रे
मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया अ बड़ें रिया कै रै बां ऽ ऽ ऽ स [१३६]

पिपरी को भस्म कर लोरिक का घोड़े के साथ गउरा वापस आने की तैयारी

आं ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
फूंकि के गढ़ पिपरी तड़कै बड़ेरिया कै बांस
घोड़ा घुमाय के वीर लोरिक चललें गउरा की हो जौ बजार
ले के घोड़वा मोर भगवले जालं

आरे वन छिउली मोर गइलें रे निअराय
जेम्मन देवसी बलको बइठल हउवें
आरे घोड़ा टपिया बजे ले अन्तः काल
देवसी के काने में सबदियै लागि गइलीं
हाली हाली कोने पर गयल ले निअराय
देखलसि घोड़वा मो बीर लोरिक कैं
आरे भइया मनब्या बात हमार
कहवां तू घोड़वा ले ले जाल्या
आवा हमसे कइ लेब्या मो भेट दीदार
बहुत दिन चलत मैं हमरी तोहरी
आवा बलको कइल्या भेंटिया मुलुकाति
भइया आवा समुझउता जंगलवै में होई
आरे लोरिक घोड़वा में देलैं रे घुमाय
जब देवसी के पंजरे पहुँचं
आरे पीटि पीटि सूरती उड़ावति बाय
लोरिक लेके अंगवा हाथ बढ़ावैं
आरे देवसी चांपलै हो अगिन कर बान
जोति के मैं बनवां देवसियै मरलस

देवसी के बाण लगने से लोरिक की जाघें सट जाना

दूनों जघवां लोरिक के सटि गइलै
आरे तब ले मंगर पंजरे गयल बा निअरे राय
थामि के खोपड़वा मै बीर लोरिक कं
आरे मंगर तीनि तीनि रे मोरि मइया जोजनवा हीं मेंड़रे रं
आरे मंगर ऊड़ल ऊड़ल लोरिक के लेके गउरवा में जाइ के चूई रे गइलैं
आरे मंजरी कै चूवल बाड़ें घोड़वा आरे पवनवीं ना रे दुअं
आरे मंजरी मैं पीटि पीटि कै छतिया अत्र गउरा में रूवत रे हउवें
आरे अधजल में डूबि गइलैं रे मोरि मइया आ डोगवीं नारे हमं
आरे हइहै सामी कै मरनियां भइल वा गउरा में गइल बारेमोरि म ऽऽऽ इया
अ बिपतिया निअरे रा ऽ ऽ ऽ ऽ य [१३७]

मंजरी का रुदन

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ
एहर बीर लोरिक कै लगल बान देवसी कै मंजरी रुवति अन्तः काल
एहर देवईत चनराईत मेवा करने से लड़ने बलको आवत हउवें

आरे लोरिक के पवनवैं मैं गइलैं रे दुअं
कवने में करनवा दादा बइठल बाड़ा
एहर बलको मंजरी जौ रुवत बाड़ै
आरे गोपी के झर झर बहै जौ नयन से आंस
तब ले भोरिक पजरे मो जाइके खड़ा भइलैं
काहे बदे माई रुवत बाड़ी
तब तैं धीरे धीरे मंजरी समुझावैं
आरे बचवा मनब्या बात हमार
लागल बाड़ैं बनवां तोरे रे बबिले के
दूनो जंघवा एक्कै में सटि गइलैं
आरे बबिलैं मरन गइल रे निअराय
एतनी बात देवाइच सूनैं
आरे बलको जरि के भसम होइ जाय
बोलत बाड़ैं बेटवा जब सतिया कं
आरे भइया मनब्या बात हमार

सतिया के पुत्र देवाइच का देवसी से लड़ने का आग्रह

बढ़ि गयल मनवां जब देवसी कै
आरे हमरे दादा के गाइन के मारैलैं अड़ार
सारा मो गइया देवसिया लूट लैं
आरे गउरा उपर गइल सोर हमार
चला भइया भेंटिया देवसियै से करीं
आरे तनी कइलेईं भेंट मुलकात
कि त देवसी के भइया हमहीं जो मारं
आरे कि त जिनगी दे देबै गहिरवा घाट
एतनी बात जब कहलैं देवाइं
आरे मंजरी मोरि पीटि पीटि के छतिया
अब किलवा में रुवत रे हउवैं
आरे बचवा तोर अउरो रे मोरि मइया
अकिलिया बलको बउरे रं
आरे मंदा बलको हउवै ए ललवा गउरवौ मे रे गियं
आरे बचवा अबहीं बारह बरिसवा के गिदरवा गउरा जनमल रे हउवै
आरे देवसी न छोड़ि ए ललवा ओ जिनिगियौ ना रे तोहं

मंजरी के लड़के भोरिक का तड़प उठना

आरे तबले तड़पति बाड़ैं रे मइया
आरे बेटउवा रे मंजरी कै
आरे माई तोरि गइल बाड़ैं गउरा में
अ अकिलिया जौ मोर बउराय
आरे जबले देवसी के ना मरबै
तबले हम अनकै एक मावा किरियवा जौ बोलत रे बाड़ी
आरे पनिया जौ सूअरि रे मोरि मइया
हम बोलत बाड़ी ना रे हरं
आरे हमके घुटिया हो मावा अ गउरवा बलको देइ हो घलबू
आरे तब तै मंजरी मोरि पीटि पीटि के छतिया
अब कीलवा में रुवत रे हउवै
आरे बचवा तोहरे बाबिले कै गतिया ललवा अब
बलको एठियन बीगर रे गइं
आरे तोहन लोगन कै लैके हम सनतोख करबै
ललवा हम गउरवैं अपने जो गुंजरे रं
आरे तबले एहर धीरे धीरे देवइचा औ मंजरी के समुरे झावैं
आरे बइठा बइठा मावा अपने बलको अ गउवां न गढ़ रे गउरा
आरे हमहन जाति बाड़ी मतरिया अ पिपरियौ की रे बाजं
आरे हमरे दादा के दूनो जंघवा अ एक में बलको सटल देखत रे बाड़ीं
आरे तब ले हमरे बूतवा ना ए मतरिया अ रहल बा नाहीं रे जं
आरे तब ते एहर तीनों मोर गिदरवा अ गउरा में बलको साजै रे लगलैं
आरे एहर मलवा संवरू कै टूटहवा बनवा देवइच बलको लेई हो ले लें
आरे लोरिक एहर बायें मोर ओड़नवा अ भोरिक कै बान्हि हो ले लें
आरे दहीने चापि के बन्हलसि रे मोर मइया
अ बिजुलिया बलको आपन रे खं
आरे एहरवैं सारा जो देवतवा आ गउरा सुमिरत रे हउवैं

तीन छोटे बच्चों का पिपरी पर आक्रमण

आरे तीनो पिपरी कै ए मइया अ चढ़इया बलको कइ हो देलैं
आरे नदिया के पजरे रे मोरि मइया अ गयल हउवैं निअरे रं
आरे नाहीं डोंगवा के कत्तों पतवा अब घटवा में लगत रे हउवैं
आरे तीनों नदिया में पंवर के हो मइया
अब नदिया बलको डांकै रे लगलैं

आरे बीच दरियउवा में तीनों मोर गिदरवा अब नदिया में बूड़ै रे लागं
आरे तब ले दुरुगा धइलै हउवै रे मइया अब रूपवा रे चीलिहया कै
आरे तीनों गिदरन के चंगुल में रे मइया अब लेहले हउवै नारे फंसांथ
आरे तीनों गिदरन के ले जाके बनछिउली के कररवा पर बइरेठावैं
आरे तीनों गिदर आपन आपन कपड़वा अब घटवा पर बदलै रे लागैं
आरे तब तै दुरुगा धीरे-धीरे रे मइया अ घलति बाड़ै समुरे झं
आरे बचवा सोझै मोर देवसिया आ जंगलवा में बलको लवकत रे हउवै
आरे एहर देवाइच चनराइत बीर लोरिक पंजरवां
देवसी के पहुँचि रे गइलैं
आरे बलको देवसी के सोझई रे मोरि मइया
आ नजरिया बलको परि हो गईं
आरे देवसी बड़े जोर से बबुआ अ जंगलवा में बोलत रे हउवै
आरे बचवा कवने मोर करनवा अ जंगलवा में तोनहन टहरत रे हउवा
आरे काहे बदे जंगल जंगल बचवा अ पंयड़िया तोनहन तोरत रे हउवा
आरे एकर तनी एकन देब्या ए मोरे ललवा अब भेदवौ न रे बतं
आरे टप दे बोलति बाड़ै ए यारों अ बेटउवा रे चनवा कैं
आरे बाबू हमहन देवसी से मोर भेंटिया
जंगल करै बलको आयल रे बाड़ीं
आरे जवन देवसी दादा के मरले हउवैं रे मइया
आ अगिनिया कैं बलको रे बं
आरे जउने दादा कैं दूनो बलको जंघवा अब एक में हइहै सटत रे हउवैं
आरे कब देवसी कैं काटि लेबै रे मइया मथवौ मै ललरे क
आरे तब लै धीरे धीरे देवसिया गिदरवन के समुरेझावै
आरे बचवा एक्कैं मोर लड़िकवा अब संवरू के जनमल रे हउवै
आरे एक बेटवा चनवा की कोखिया अ लेहले हउवै तोनहन अवरे तं
आरे एक्कै बेटवा ना रे मोरि मइया तूं मंजरी के जनमल रे हउवा
आरे काहे के जिनिगी देत बाड़ा ए बचवा अ पिपरियौ की रे बाजं
आरे तबले जरति बाड़ैं रे मइया अ बेटउवा रे चनवा कै
आरे बलको जरि जरि के गिदरवा अ भसमवां हउवैं होई रे जं
आरे बिना माथ कटलै अ बनछिउलो में नाहीं छोड़ब रे
मोरि म ऽऽऽ इया अ दमिया ना रे तोहा ऽऽऽ र [१३८]

बारह वर्ष के तीनों बच्चों का देवसी पर आक्रमण

हां ऽऽऽऽ आं ऽऽऽऽ

मंजरी के लड़के भोरिक का तड़प उठना

आरे तबले तड़पति बाड़ैं रे मइया
आरे बेटउवा रे मंजरी कै
आरे माई तोरि गइल बाड़ैं गउरा में
अ अकिलिया जौ मोर बउराय
आरे जबले देवसी के ना मरबै
तबले हम अनकै एक मावा किरियवा जौ बोलत रे बाड़ी
आरे पनिया जौ सूअरि रे मोरि मइया
हम बोलत बाड़ी ना रे हरं
आरे हमके घुटिया हो मावा अ गउरवा बलको देइ हो घलबूं
आरे तब तै मंजरी मोरि पीटि पीटि के छतिया
अब कीलवा में रुवत रे हउवै
आरे बचवा तोहरे बाबिले कै गतिया ललवा अब
बलको एठियन बीगर रे गइं
आरे तोहन लोगन कै लैके हम सनतोख करबै
ललवा हम गउरवैं अपने जो गुंजरे रं
आरे तबले एहर धीरे धीरे देवइचा औ मंजरी के समुरे झावें
आरे बइठा बइठा मावा अपने बलको अ गउवां न गढ़ रे गउरा
आरे हमहन जाति बाड़ी मतरिया अ पिपरियौ की रे बाजं
आरे हमरे दादा के दूनो जंघवा अ एक में बलको सटल देखत रे बाड़ीं
आरे तब ले हमरे बूतवा ना ए मतरिया अ रहल बा नाहीं रे जं
आरे तब ते एहर तीनों मोर गिदरवा अ गउरा में बलको साजै रे लगलैं
आरे एहर मलवा संवरू कै टूटहवा बनवा देवइच बलको लेई हो ले लें
आरे लोरिक एहर बायें मोर ओड़नवा अ भोरिक कै बान्हि हो ले लें
आरे दहीने चापि के बन्हलसि रे मोर मइया
अ बिजुलिया बलको आपन रे खं
आरे एहरवें सारा जो देवतवा आ गउरा सुमिरत रे हउवें

तीन छोटे बच्चों का पिपरी पर आक्रमण

आरे तीनो पिपरी कै ए मइया अ चढ़इया बलको कइ हो देलैं
आरे नदिया के पजरे रे मोरि मइया अ गयल हउवें निअरे रं
आरे नाहीं डोंगवा के कत्तों पतवा अब घटवा में लगत रे हउवें
आरे तीनों नदिया में पंवर के हो मइया
अब नदिया बलको डांकै रे लगलैं

आरे बीच दरियउवा में तीनों मोर गिदरवा अब नदिया में बूड़ें रे लागं
आरे तब ले दुरुगा धइलै हउवै रे मइया अब रूपवा रे चील्हिया कै
आरे तीनों गिदरन के चंगुल में रे मइया अब लेहले हउवै नारे फंसांथ
आरे तीनों गिदरन के ले जाके बनछिउली के कररवा पर बइरेठावैं
आरे तीनों गिदर आपन आपन कपड़वा अब घटवा पर बदलै रे लागैं
आरे तब तै दुरुगा धीरे-धीरे रे मइया अ घलति बाड़ै समुरे झं
आरे बचवा सोझें मोर देवसिया आ जंगलवा में बलको लवकत रे हउवै
आरे एहर देवाइच चनराइत बीर लोरिक पंजरवां
देवसी के पहुँचि रे गइलैं
आरे बलको देवसी के सोझई रे मोरि मइया
आ नजरिया बलको परि हो गई
आरे देवसी बड़े जोर से बबुआ अ जंगलवा में बोलत रे हउवै
आरे बचवा कवने मोर करनवा अ जंगलवा में तोनहन टहरत रे हउवा
आरे काहे बदे जंगल जंगल बचवा अ पंयड़िया तोनहन तोरत रे हउवा
आरे एकर तनी एकन देब्या ए मोरे ललवा अब भेदवौ न रे बतं
आरे टप दे बोलति बाड़ै ए यारों अ बेटउवा रे चनवा कैं
आरे बाबू हमहन देवसी से मोर भेंटिया
जंगल करै बलको आयल रे बाड़ीं
आरे जवन देवसी दादा के मरले हउवैं रे मइया
आ अगिनिया कैं बलको रे बं
आरे जउने दादा कैं दूनो बलको जंघवा अब एक में हइहै सटत रे हउवैं
आरे कब देवसी कैं काटि लेबै रे मइया मथवौ मै ललरे क
आरे तब लै धीरे धीरे देवसिया गिदरवन के समुरेझावै
आरे बचवा एक्कैं मोर लड़िकवा अब संवरू के जनमल रे हउवै
आरे एक बेटवा चनवा का कोखिया अ लेहले हउवै तोनहन अवरे तं
आरे एक्कै बेटवा ना रे मोरि मइया तूं मंजरी के जनमल रे हउवा
आरे काहे के जिनिगी देत बाड़ा ए बचवा अ पिपरियौ का रे बाजं
आरे तबले जरति बाड़ैं रे मइया अ बेटउवा रे चनवा कै
आरे बलको जरि जरि के गिदरवा अ भसमवां हउवैं होई रे जं
आरे बिना माथ कटलै अ बनछिउली में नाहीं छोड़ब रे
मोरि म ऽ ऽ ऽ इया अ दमिया ना रे तोहा ऽ ऽ ऽ र [१३८]

बारह वर्ष के तीनों बच्चों का देवसी पर आक्रमण

हां ऽ ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ

तब तीनों गीद ऽ ऽ र देवसिया से बोलैं
आरे न पीछे गोड़ हटाइब न कादर घलब रे कहाय
कहै करा तूं उबार देवसी ए जंगल में
तनी तोर रे देखीं रे मनुसाय
एतनी बात जब देवसी सूनैं
जेकरे झर झर बहत ही नयन से आंस
देखले से हमके रुवाई आवै
बारह बारह बरिस कै गीदर जब एक्को बान जब हम चढ़ाय के मारि दं
आरे तोहर पता न चली ठेकान
आखिर जिनिगीं तोहार भइया जइहैं
आरे गउरां रोई रे कुटुम पलिवार
माइ मंजरी जो गउरां में रोइहैं
आरे गउरा उपर जाइ सोर तोहार
एतनी बात जब बोलैं गीदं
आरे जेकर चनराइत परल ही नांव
उहो मरम बबुआ जिन जान्या नाहीं कादर में गिनती हमार
सुनिल्या बबुआ बात तनो म्हेरा
राठी कुल कै जनमल बाड़्या आरे राठी कुल में लेला रे अवतार
नाहीं बाबिल कब्बो पीछे हटलैं
आरे नाहीं कादर गयल रे कहाय
तोहरे मन होय तूं भागि जाब्या
आरे जंगल में नाहीं छोड़ब रे देवसिया अ जिनिगिया ना रे तोहा ऽ ऽ र
बार बार देवसिया समुझावै
कि अबहीं से घुमि के गउरा चलि जा
आरे तड़कै बेटवा चनवा कै बाबू करा उबार तोरो देखीं मनुसाय
तनलसि बान अगिनिया कै देवसो
चर चर चर चर धनुहां कइलैं
औरे पर पर करै रे अगिन कर बान
दूनों गोंछवा बनवा कै नइगैं
दूनों गोंछवा बनवा कै नइगैं (पुनरावृत्ति)
आरे जेम्मन धुवां रे गयल उधिराय
एहर बेटवा देखा मल सांवर कै
उहै ले के टुटहवा बान खड़ा भइलैं

तब ले देवसी मरलस अगिन कर बान
बाने से बनवैं ठरकावै दूसरे मों अलंगे में दे लैं रे घुमाय
एहर ललकारत बेटवा संवरू कै आरे देवसी देखु रे अगिन कर बान
पाँच बान देवसियै मारैं आरे पाँचो बान देलैं रे ठरकाय
तब ललकारत बेटवा मल साँवर कैं
आरे जेकर परल रे देवइचा नाँव
बबुआ तूं पंच पंच बनवा मरल्या
आरे तोर देखलैं अगिन कर बान
एक बान तूं हमरो देखं
आरे जेवन लरिका लगी ला तोहार
पिपरे के आड़े में हटि जाब्यां
आरे तब देखा मोर अगिन कर बान
भइया एतनी देवसी जब सुनि कैं
आरे बलको गयल रे घबड़ाय
टप दे देवसिया मोर बोलन लागै
आरे बाबू मनब्या बात हमार करा उबार बलको समने में
काहे बदे पिपरे के आड़े में देता रे हटाय
तब बोलत बेटवा चनवा कैं आरे बाबू मनब्या बात हमार
एदवां बान जौ छुटि मोर जइहैं
आरे तोर पता न लगी रे ठेकान
बनवैं के संगवा तूं उड़ि बलको जाब्या
आरे तब देवसी पिपरवा तर हटि हउवै जात
तब तनलस बान बेटा संवरू कै
चर चर चर चर धनुहां बोलै
पर पर करै लै अगिन कर बान
दूनों गोंछ बनवा कै नइगै
आरे जेम्मन धुआं गयल उधिराय
जोति के बनवा गीदर मरलै
फर जो पीपर पार निकल गइलैं

देवाइच के बाण से देवसी का जल जाना

आरे जाके लागि गइलैं रे मइया देवसिया के
अगिनिया कै रे बान
आरे देवसी खड़ैं रे मोरि माई गयल बाड़ैं नारे झुरं

आरे तीनों गिदरवा पजरवा देवसिया के पहुँचि रे गइलैं
आरे कहलैं हइहै चनराइत चला ए मोरे भइया
घुमि के गउवां न अपने गढ़ रे गउरा
आरे चला दादा के हमहन पीठिया पर लादि के रे मइया
जंगलवा में लेइ रे आई
आरे देवसी कै लेई रे मोरि मइया मथवा हम कटरेवाय
आरे तीनों गीदर रे भाई गउरवा के घूमि रे देलैं
सारे नदिया उतरि गइलैं डोंगा लेके देवहवा जौ ओहि रे पं
आरे तीनों जने जाके लोरिक के गोड़वा पर गिरि हो गइलैं
आरे दादा देवसी के रे मइया जंगलवा में मरले रे बाड़ें
आरे चलि के काटि लेब्या ए दादा मथवां तूं ललरे कं
आरे तब तै धीरे धीरे लोरिक गिदरवन कै समुरेझावैं
आरे न कर जियत होई बेटवा बनवां रे छीउलो में
आरे हइहै काटि लेई ललवा मथवौ रे हमं

लोरिक को लेकर तीनों बच्चों का बनछिउली आना
और देवसी का सिर काटा जाना

आरे तब तीनों गिदरवा लोरिक के पीठिया पर लादि हो ले लै
आरे बनछिउलो के घटवै रे मोरि मइया गयल हउवें निअरे रं
आरे तीनों गिदरवा पेटवै के निचवा हथवा हउवें लगवले
आरे एहर दुरुगा रे माई संगवा में लागल रे हउवै
आरे बलको नदिया खेते रे दुरुगा लगवलसि ओही रे पं
आरे जब तीनों गिदरवा फिर पीठिया पर लादि हो ले लैं
आरे देवसी के पजरें ए मइया गयल हउवें निअरे रं
आरे बलको खड़ा देवसिया पिपरवा तर सूखल रे हउवें
अंखिया के पंयड़े से देवसी के निकसलि रे पर
आरे जब टुकुर टुकुर देवसिया ताकत रे हउवें
आरे तब तै हिलत बाय माई टँगरिया रे अहीरे कै
आरे तबले भोरिक जाइके खंड़िया से लसिया के मारि हो देलं
आरे लोरिक पजरे रे मइया गयल ह निअरे रं
आरे बलको खड़िया से मथवा देवसिया के कटिरेवावै
आरे तीनों गिदर पीठिया पर माई जंगलवा में लदले रे हउवें
नदिया घाटे में रे माई गयल बा निअरे रं
आरे बलको तीनों गिदरवा फिन लेके पंयड़ेरावै

आरे एहर दुरुगा नोचवा जौ हथवा हउवै लगवले
आरे तीनों के उतार देले नदिया देखा मैं ओहि रे पार
आरे लोरिक के फिन तीनों गिदरवा पीठिया पर लदले रे हउवैं
आरे लेके अपने पवनवौं गयल रे दुअं
आरे एहर माई मंजरी के लोरिक किलवा पर गोहरेरावै
आरे मंजरी पजरें रे मइया गइल हउवैं निअरे रं
आरे हम्मैं छुट्टी अब देइ दा गांव गउरा में
भजन करी रे मोरि म ऽ ऽ ऽ ऽ इया अ नदी
बेवरवा के रे कीना ऽ ऽ ऽ ऽ र [१३९]

मंजरी और बच्चों को राज्य सौंपकर लोरिक का बेवरा नदी के तट पर भजन करने जाना

हां ऽ ऽ ऽ आं ऽ ऽ ऽ ऽ
तब बीर लोरिक मंजरी के पजरे बोलाय के
तीनों गिदरन के बोला के
आरे अउरो कुटुम पलिवार पजरे बोला के तब मंजरी से कहलैं
आरे भाई अब हम इहै अन तन धन लेके कनउज के ले लल्या बजार
ले ला बोहा गाइन कै अब हमार भरोसा जिन करा
आरे तब तै मंजरी मारि कै धमकत्रा अ किलवा में रूवै रे लागं
आरे समिया अपने रे मइया देवहवा पर जाति रे हउवै
आरे हमके केकरे रे मोरि मइया लगउले जाल्या बलको रे घं
आरे हमार कइसे ए दिनवां गउरवां में बीति हो जइहैं
अधजल में डुबावत बाड़ा ए समियां डोंगवौं रे हमं
आरे तब तै धीरे-धीरे लोरिक मंजरी के समुरेझावै
आरे मंजरा तीन तीन ललनवा गउरा में जनम रे ले लैं
आरे जवन हमरे समने लोहा गहलसि रे मइया पिपरियो की रे बाजं
आरे मंजरा एहर मैं कुलवा में मइया ललनवा जो जनम रे गइलैं
आरे कुल कै पालन करिहें रे मोरि मइया संझवौ रे बिहं
अब तीनों गिदरवा के गउरा तूं लेइ हो लेबू
आरे बइठल भूंजबू ए रनिया एकवटे में बलको रे रं
आरे लोरिक सारा धनवां अब गउरा कै तजि हो दे लैं
आरे नदी बेवरा पर कूसै कै मइया मड़इया न हउवै लगावैं
आरे कुसवन कै टाटी गिदरवा बलको देहले हउवैं बन्हरे वं
आरे ओनके कुसवा कै सदरी मड़इया में के हउवैं बिछावत

आरे एहर लोरिक के मोर पीठी पर गउरा में लादि हो ले लैं
आरे नदी बेवरा पर गिदरा गयल हउवें निअरे रं
आरे हइहै कूसे के मड़इया नदिया पर बइरे ठावें
आरे भजन करे लागल लोरिक मोर संझवी रे बिहं
आरे जेके छवै महीनवां अ नदिया पर बीति हो गइलें
आरे बलको जेकर मरन रे मइया गइल हउवै निअरे रं

बेवरा नदी के तट पर लोरिक का चिता बना कर अग्नि में भस्म होना

आरे तब तै गिदरन के मइया गउरवा ले बोल रे वावें
आरे बचवा मेवा करने से गिदरवा लकड़ियौ मोर कटरे वावा
आरे हमके चुनि चुनि के चीतवा अब देब्या बलको ना रे लगाय
आरे हमै चीतवा पर गिदरा भसमवा जब होइ रे जइबै
आरे हइहै बनि जाई ए बचवा मुकुतियौ रे हमं
आरे हइहै सारा दिनवां मरै क मोर हउवें बतवले
आरे तब ते एहर गिदर चुनि चुनि के चितवा घटवा में हउवे लगवले
आरे एहर चन्नन के लकड़िया देहलै हउवें झोंकरे वं
आरे जवने दिन मरन रे मइया लोरिक कै जौ होइ रे गइलें
आरे गीदर चितवा त मइया करत हउवें तइरे यं
आरे एहर फुंकलसि रे मइया अगिया रे चीतवा में
आरे बलको जरत नद्दी मोर बेवरवौं के रे किनं

बच्चों का पिपरी से गायों को लौटाना तथा मंजरी का राज्य करना

आरे तीनों गीदरा रे मइया गउरवा के घुमि रे गइलैं
आरे मंजरी रूवत बाड़ै हो मइया गउरवा न गुंजरे रं
आरे,एहर सारी गइया पिपरियै से लवरे टवलं
आरे नान्हू लेके जाके गाइन में मइया भयल हउवें चररे वाह
आरे एहर मंजरी रे मइया गउरा में
बलको जौ देखब्या हो बइठि के
आरे गोपी भूंजति बाड़ै एकवटे में बलको रे रं
आरे एहर सारा बतिया मंजरी कै रुकि रे गइलैं
मंगर बलको घोड़वा तबेलवा में बान्हि हो गइलैं
आरे एहर मंजरी बिपत काटै रे मइया अ संझवौ रे बिहं
आरे एहर लोरिकी ए यारों एठियन खतम रे भइलैं
आरे एहर आँगवा के बबुआ सुनि लेब्या खेल रे वं

आरे गंगा की दूकानी में गोलिया मोर बइठल रे हउवें
आरे भजन होत बाड़ें हो भइया संझवौं रे बिहं
आरे एहर परानापुर गउवां जनमवां हो मोर होई रे गइलैं
आरे पांचू भगत रे मोरि मइया परल हउवै बलको रे नांव
आरे रात दिन भजन करत बाड़ें अ हइहै जपत बाड़ें
म ऽ ऽ ऽ लवा अ संझवा ना रे बि ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ हान ऽ ऽ ऽ [१४०]

● ●

समाप्त

भावार्थ, शब्दार्थ
तथा
टिप्पणियाँ
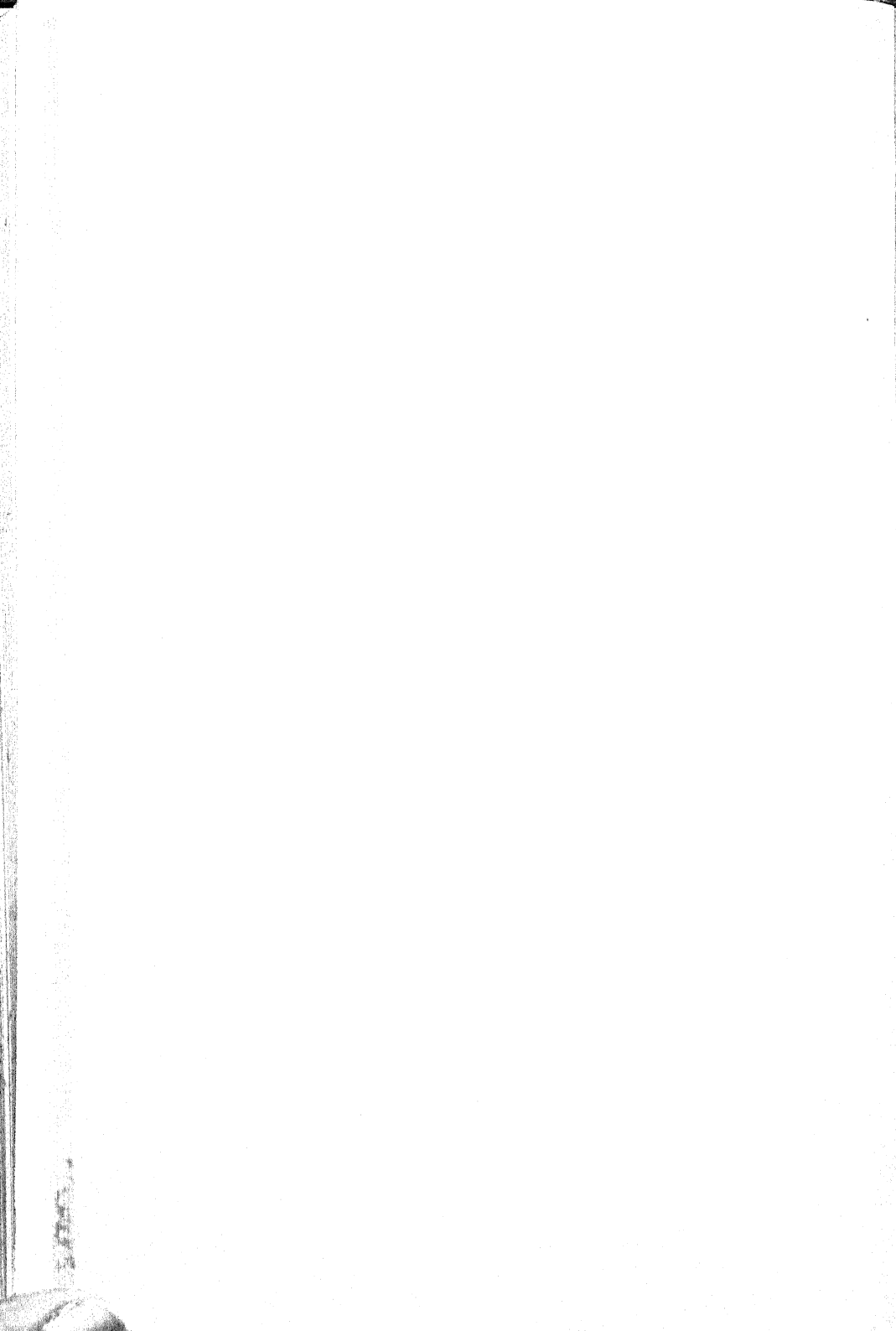
सुमिरन

रामनाम का स्मरण करते हुए गायक कहता है जैसे दूध पीने से शक्ति बढ़ती है, वैसे ही रामनाम के जप से ज्ञान बढ़ता है। लड़की अपने पति के घर बढ़ती है और तर्क से समय बढ़ता है। साँझ और सुबह तुम राम का नाम न छोड़ो। यदि तुम रामनाम भूल गये तो तुम्हारा शरीर मिट्टी में मिल जायगा। रामनाम के जप से पाप का पहाड़ कट जायगा। तुम्हारे संगी-साथी और समवयस्क लोग छूट जायँगे। घर-कुटुम्ब और परिवार छूट जायगा। स्त्री से तुम्हारा सम्बन्ध छूट जायगा और सारा मुल्क और संसार छूट जायगा। अतः ऐ जवानों, रामनाम मत भूलो। राम के संग में रामायण चला गया और अर्जुन के साथ पाँचों वाण चले गये। सहदेव के साथ पोथी और पंचांग चला गया। कौन पंडित वेद और पुराण बांचेगा। भीम के साथ पुरुषत्व चला गया। रावण के साथ अभिमान चला गया। अन्न में उत्तम गेहूँ है और धन में कपिला गाय है। कपड़ों में उत्तम कम्बल है कि धोबी के घर नहीं जाता। लकड़ी में उत्तम अगियार चन्दन (धूप) है और पत्तों में मगही पान है। स्त्रियों में उत्तम सीता जी हैं जिनको पुरुष भगवान मिले।

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—गुन = गुण। गियान = ज्ञान। सजन = पति। तरकिया = तर्क। जिन = मत। अउरु = और। अवघट = कठिन, दुर्गम। मटियैं में = मिट्टी में। तोहार = तुम्हारा। संघी = संगी। समउरिया = समवयस्क। कुटुम = कुटुम्ब। घरुनी = घरनी, पत्नी। नाता = सम्बन्ध। अन = अन्न। नोना = उत्तम। कपिलवा गाय = कपिला गाय, सफेद रंग की गाय। कमरा = कम्बल। कब्बों = कभी। मोला आगि रे चन्नन = अर्थ स्पष्ट नहीं है, संभव है यह मलयागिरि चंदन हो। दूसरी सम्भावना अगियार की है। अगियार वह चंदन है जिससे धूप बनता है। आगि = आग। चन्नन = चंदन। पत्तल = पत्ता। मगहिया = मगह का। ढोली = दो सौ पानों की गड्डी। तिरियन = स्त्रियाँ। पूरुस = पुरुष। सहदेव = महाभारत के पांडु के पांच पुत्रों अर्थात् पांडवों में से एक। ये सबसे छोटे थे और विद्वान थे।

भिम्हल = भीम, पांडवों में से एक। ये युधिष्ठिर से छोटे तथा अर्जुन से बड़े थे। ये अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे। सुख में भगवती गाती हैं। युद्ध में दुर्गा माँ गाती हैं। स्वर में सरस्वती गाती हैं जो गायकों की माँ लगती हैं। माँ! जैसे तुमने भ्रमर को स्वर दिया जो बाँस की शाखों पर गाता है, उसी प्रकार तुम गायक को स्वर दो ताकि मैं तुम्हारी कीर्ति नित्य गाऊँ। (१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—भुगु = सुख, भोग। जुझु = युद्ध। सुखै में = सुर में, स्वर में। सुरसती = सरस्वती। गायन = गायक। माइ = माँ। गर = गला। भँवरा =

भ्रमर । गोंइंजे = गूँजता है । कइन = बाँस की शाखें, छड़ियाँ जो बाँस से निकलती हैं। पोर = गाँठ । किरतिया = कीर्ति ।

सुमिरन के बाद गायक गढ़ गउरा का वर्णन करता है, जिसमें तिरपन बाजार हैं। इसमें तेली, तमोली, मड़भूजे तथा कलवार बसते हैं। इसमें रघुवंशी, यदुवंशी और ग्वाल भी बसते हैं। घर-घर में अखाड़ा है जहाँ सुबह-शाम लेजम घूमता है। वहाँ सात कोस का बोहा है और चौदह कोस का चरागाह है। वहाँ लक्ष्मी का निवास है। ब्रह्मा वहाँ रथ हाँकते हैं। वीर लोरिक का तेग वहाँ से सारे संसार में झंकार कर उठा है। बोहा में सोलह सौ कंटाइन हैं। सोलह सौ मरी हैं और मसान हैं। वहाँ ब्रह्माइन भी हैं जो सँवरू के लिए पूज्य हैं। बायें बनसत्ती हैं और दाहिने माँ दुर्गा हैं। लक्ष्मी वहाँ बैठी हुई हैं अर्थात् वहाँ समृद्धि है। (२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बारहनपाल = बारह पल्ले का, बारह पल्लिका या पुरे का । निगी = कमर में । गुवाल = ग्वाल । अखढ़वा = अखाड़ा । लेजिम = लेजम । एक कमान जिसमें लोहे की जंजीर और कटारियाँ रहती हैं। पहलवान व्यायाम के लिए इसे प्रयुक्त करते हैं। बिड़र = दूर-दूर तक फैला हुआ । लछमी = लक्ष्मी । गोड़वन तोरि-तोरि बइठ = लक्ष्मी पैर तोड़कर बैठी हुई हैं। सवंसार = संसार । कंटाइन = चुड़ैल । मरी = एक प्रकार की प्रेतात्मा । मसान = भूत, पिशाच । ब्रम्हाइन = ब्रम्हाणी । गोरयडीह = पशुओं के रहने के स्थान का डीह देवता । बनसतिया = वनस्पति । गोड़वा = पैर । संझवा = सांझ । बिहान = सुबह ।

* *

अध्याय १

मलसांवर का विवाह

भावार्थ—गायक कहता है कि अब आगे की कथा सुनो। गढ़ गउरा का धोबी जिसका नाम अजई है, गढ़ सोहवल में चला गया जहाँ का राजा बमरी है। बमरी के सात बेटे हैं, जो सिंह और बाघ का शिकार करते हैं। कोई सूँस और घड़ियाल पकड़ता है। बमरी का बेटा दसवंत माँ की कोख में दस मास तप चुका है और मिम्हली तेरह मास। दसवंत तथा बमरी के अन्य पुत्र सभी अमर होकर उत्पन्न हुए हैं। बमरी ने यह प्रण कर रखा है "मैं ससुर नहीं

कहा जाऊँगा और न मेरे लड़के साले कहे जायंगे । दूसरे देशों की लड़कियाँ मैं लाऊँगा पर अपने देश की लड़कियों को अन्यत्र नहीं बिबाहूँगा''

गढ़ गउरा का धोबी अजई सोहवल में गाय चरा रहा है और अब उसको वहाँ सात महीने हो चुके हैं। खेदू धोबी की लड़की विजवा वहाँ कपड़ा धो रही है तब गढ़ गउरा का धोबी अजई गायें लेकर घाट पर चला जाता है और धोबिन को देखता है। फिर घाट पर रखे हुए कपड़ों पर गायों को चढ़ा देता है। खेदू धोबी की लड़की विजवा उसे फटकारती है और कहती है कि आज दादा बमरी से कहकर दसवंत भइया से तुम्हारी जान मरवा दूंगी। अजई वहाँ से गायें हटा लेता है। विजवा अपना गट्ठर बाँधती है और बमरी की पुत्री सतिया के किले में पहुँचती है और उदास होकर वहाँ मौन खड़ी हो जाती है। सतिया इसका कारण पूछती है। विजवा उसे बताती है कि आश्चर्य है कि बाहर का एक आदमी आया है जिसने मेरे कपड़ों पर गायें चढ़ा दी हैं और वह व्यंग्यपूर्ण बातें कर रहा है। तुम उसे मना करवा दो नहीं तो सुहवल में उसकी जान चली जायेगी। तब सतिया ने कहा कि ऐ विजवा अगर तुम्हारा विवाह सुहवल में हो जाय तो तुम्हारा भाग्य खुल जायगा। (३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—अगवां = आगे । गउवाँ = गाँव । दइव = दैव । सिंघी = सिंह । नद्दी = नदी । देवड़ा = एक नदी का नाम । सोंइस = सूँस । घरियार = घड़ियाल । बेटवा = बेटा । परन = प्रण । ससुरा = ससुर । मुलुक = मुल्क, देश । मल = मल्ल, योद्धा । बतिया = बात । मोछिया = मूंछ । जरि के भसम होइ जाय = जलकर भस्म हो गया । सगड़े पर = झील या तालाब के तट पर । बादी = शत्रु । महिन्ना = महीना । चोर = कपड़ा । लगा के ओसारी = आँख फैलाकर । संका = शंका । बड़ियार = भारी । मनसेधू = आदमी, पुरुष । अंखिया फूटलबा = क्या तुम्हारी आँखे फूट गयी हैं । जिनिगिया = जिंदगी । उहवां = वहाँ । डहरावै = घुमा लिया । अलंगे = ओर, तरफ । तिल = क्षण में । दे लै रे पंवार = फेंक दिया (प्रवारण सं०) । बुरुजवा = बुर्ज । मउन = मौन । काहे बदे = किसलिए । अइसन = ऐसा । अनभो = अनुभव । चिकारी बोलत बाय = ठठोली कर रहा है ।

भावार्थ—सती ने विजवा के पिता खेदू से कहा कि ऐ दादा, आप अपनी लड़की विजवा का विवाह मेरे नौकर से कर दीजिए। चोरी-चोरी विवाह कर दीजिए और चोरी-चोरी कन्यादान कर दीजिए तो सोहवल में आपकी मुक्ति हो जायगी। खेदू ने तब सतिया को बताया कि बेटी तुम्हारे पिता ने प्रण किया है कि वे छत्तीस जाति की कन्याओं को कुंवारी रखेंगे। वह श्वसुर नहीं कहलाना चाहते और न चाहते है कि उनके लड़के साले कहे जांय। वह दूसरे देशों की लड़कियाँ लाना चाहते हैं पर अपने देश की लड़कियाँ नहीं देना चाहते। उनका यह प्रण ठन गया है। यदि वह कहीं विजवा के विवाह का समाचार सुन गये तो हमारी जिन्दगी नहीं बचेगी। खेदू भयभीत हैं।

सतिया उन्हें समझा रही है। चोरी से भाँवर घुमा दो। अताल में थुन्हीं होगी, पाताल में मंडप होगा। सोहवल के बाजार में इसे कोई नहीं जानेगा। (४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—नोकरवा = नौकर। मुगुतिया = मुक्ति। बिटिया = बेटी। करिना = कन्या। कुंवार = अविवाहित। लरिका = लड़का। सार = साला। बाबिल = पिता। भांवर = विवाह के समय की एक रस्म, जिसमें वर-वधू अग्नि के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। इन भांवरों के बाद विवाह पूर्ण होता है। अताल = पाताल के साथ आता है इसका शायद कोई खास अर्थ नहीं है। थुन्हीं = स्तंभ, खंभा। मांडो = मंडप। चरवाह = ढोर चराने वाला।

भावार्थ—विजवा का विवाह सम्पन्न हो गया और सेंदू ने अजई से कह दिया कि वह उसके द्वार न आये। सोहवल का सारा बाजार इस बात को जान गया। संपूर्ण सोहवल और अजई में बदी ठन गई। सोहवल के लोगों को घबराहट हुई। बमरी उदास हो गये कि यह कहाँ का पुरुष है, जिसने संपूर्ण सोहवल को परास्त कर दिया है। मुंशियों ने सलाह दी, आप पत्र लिखकर सिलहट से झिमली और दसवंत दोनों पुत्रों को बुला लें, नहीं तो अजई विजेता बनकर गउरा जायगा और शेखी मारेगा। बमरी पत्र लिखते हैं और धावन के हाथ सिलहट भेजते हैं। पत्र पढ़कर दसवंत घबरा गये। तुरंत हाथी पर हौदा कसवा दिया गया और घण्टे लटका दिये गये। दसवंत ने गले में निरखी पहन ली। पैर में दोहरी डाल ली और तमांचा खींच लिया, जूते पहन लिये तथा पगड़ी धारण कर ली और पाँच बाणों को पीठ पर लाद कर दसवंत तथा झिमली दोनों भाई तैयार हुए और हाथी पर सवार होकर सोहवल चले। सोहवल पहुँचकर उन्होंने पिता के पाँव छुए और उनसे सोहवल बुलाने का कारण पूछा। पिता ने कहा कि अपनी पराजय को कल विजय में बदलना है। सारे गाँव में डुग्गी पिट गयी। अजई धोबी के कानों में भी आवाज पहुँची। वह डर गया। शायद मृत्यु निकट आ गयी है। दूसरे दिन अजई के साथ दसवंत तथा झिमली की बदी छिड़ गयी। धोबी ने आज नई चाल खेली। पाँचवे फेरे में उसने दसवंत को थप्पड़ मारा और वहाँ से भाग खड़ा हुआ। दसवंत झिमली को पुकारने लगा, भैया खेत पर हमारी इज्जत चली गयी। (५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—थुन्हीं = खम्भा। मांडो = मंडप। कोठरी = कमरा। पवन दुआर = पवित्र द्वार। ओगर = सम्पूर्ण। बदिया का गांग = बदी हुई बाजी। ऊड़ंती = कुश्ती का एक पेंच जिसमें खिलाड़ी एक दूसरे की पकड़ को बचाने के लिए पैंतरा करते हैं। गड़ंती = प्रतिरक्षा की पंक्ति। नीगोटा = लंगोट। गांगई देला रे चढ़ाय = हरा दिया। मुंमी = मुंशी। पतिया = पत्र। इलाका = राज्य, क्षेत्र। बगनियाँ = बागीचा। वरियार = जबर्दस्त। दुसमनि = दुश्मन, शत्रु। सेखी हांकी = डींग मारेगा। मउर = मुकुट। मउर लटकि जाई = सिर नीचे हो जायगा। मुदइया = शत्रु,

मुद्दई। बदिया बंखेलले बाड़ै=ऐसी बदी ठानी है। धावन=हरकारा, पत्रवाहक। कुचक्त=कूचे में, रास्ते में। बांचत=पढ़ता है। गोड़े=पैर में। तमांच=एक छोटी बंदूक, तमंचा। आल्हा गूंजकर=सजधज कर। पनही=जूता। एड़वन में=पैरों में। पाग=पगड़ी। फटके=फाटक। मोछ=मूंछ। बाबिल=पिता। डुगिया=डुग्गी। गंगिया मोर दे लै रे उतार=अपनो हारी हुई बाजी बराबर कर दी है। डुगडुइया बाजि गइनीं=डुगडुगी बज गयी। जिनिगिया=जिंदगी। मारत हव सपाटा=अब वह सपाट खींच रहा है। मयदां=मैदान। बदिया क मयल बदान=प्रतियोगिता ठन गयी। धोबी चलल पयंतरे चाल=धोबी पैंतरा चाल चलने लगा। एक फेरा=एक चक्कर। ईजतिया=इज्जत।

भावार्थ—दसवंत फिर धोबी को ललकार रहा है। उसने धोबी को ऐसा ऐड़ा मारा कि उसकी पसली की हड्डी टूट गयी। लोगों ने कहा धोबो मर गया। सभी लोग वहाँ से भाग खड़े हुए और खेदू से जाकर कहा कि अपनी जाति के धोबी को जों दूसरे देश से आया है, खेत से उठा लाओ और छः महीने गुड़-घी खिलाओ, नहीं तो वह सोहवल के बाजार में मर जायगा। आठ पट्ठे मिलकर गये और चारपाई पर लादकर उसको खेदू के घर लाये। कुछ देर के बाद जोर लगाकर अजई धोबी उठा। खेदू ने अजई को छ महीने तक घर रहने के लिए कहा। सातवें महीने में अजई ने चुपके से गौना करा देने के लिए खेदू से कहा। चोरी-चोरी गौना हो गया और विजवा को लेकर अजई कनउज के बाजार में चला। चलने के पूर्व सोहवल में उसने बमरी से भेंट की और कहा कि मैं थाना कनउज में गउरा जा रहा हूँ जहाँ एक सिहनी ने दो बीरों को जन्म दिया है। एक बोहा में गाय चराता है दूसरा ठकुराई करता है। मैं यहाँ उनको एक दिन लेकर आऊँगा। हम लोग मोती सगड़ के घाट पर टिकेंगे तथा सतिया का विवाह करेंगे और दसवंत को मार डालेंगे। (६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बाघिनी=सिहनी। डंवरू=पुत्र। ठकुराय=ठकुराई। हनि के एड़ा मारा=जोर से पैर मारा। पजरियाक=बगल का, पसली का। हाड़=हड्डी। चलल पराय=भाग चले। खटिया=चारपाई। एहर=इधर। पट्ठा=पहलवान, मर्द। कन्हवै=कंधे पर। बखरी=घर। दमिया लगवले=गांजा पिया। गयल रे नियराय=निकट आया। दीदार=दर्शन, साक्षात्कार। गहुवर=अच्छी तरह। मुंसी=मुंशी। कायथ=कायस्थ, लिपिक।

भावार्थ—इतनी बात कहकर धोबी भाग खड़ा हुआ। सब लोगों ने बाँस लेकर उसका पीछा किया। रात-दिन चलकर वह थाना कनउज में गउरा पहुँचा और अपने घर रहने लगा। उसने किसी से सम्पर्क नहीं रखा। फिर माघ आया, फागुन आया। लोरिक ने सुना कि धोबी अजई कनउज वापस आया है। उन्होंने मलसाँवर को पत्र लिखा। हमें एक डंफ बाजा भिजवा दीजिए। हम फाग खेलेंगे। मलसांवर ने डंफ भिजवा दिया और पत्र में मना किया कि तीन दिशाओं में वह होली खेले पर कुसुमापुर

के बाजार में न जाय। होली के दिन लोरिक फगुवा खेलने निकला। अजई धोबी को भी बुलवा लिया और उसके गले में डंफ डाल दिया। पिचकारी लेकर सभी संगी-साथी कनउज के बाजार और गलियों में घूमने लगे। पिचकारी छोड़ते हुए वे कुसुमापुर पहुँच गये और गली-गली होली खेलते हुए सहदेव-महदेव के पावन द्वार पर पहुँच गये। वहाँ खिड़की पर चनवा अपनी ननद के साथ बैठी हुई थी। लोरिक ने पिचकारी मारी और चनवा पर रंग पड़ गया। उसने लोरिक को ताना दिया। व्यंग्य कसा 'तुम गाँव की बहिन-बिटिया को नहीं पहचानते, तुमने हमारी चुनरी बिगाड़ दी। अगर तुम गउरा में ऐसे मर्द होते तो भाई की भाँवर घुमवाते और भावज लाकर गढ़ गउरा में फगुआ खेलते। (७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—खेदे लगलें=खदेड़ने लगे। अन्त:काल=अन्त में। कुचयन में=कूचों में, रास्तों में। मोकाम=मुकाम, ठिकाना। फगुवा=फाग। अड़ार=जानवरों के रहने का स्थान। डफिया=डंफ। ननद भउजाई=ननद-भावज। नजरिया=नजर। बज्जर परो=तुम्हारे ऊपर बज्रपात हो जाय, एक प्रकार का अभिशाप।

भावार्थ—चनवा ने कहा तुम दूसरे के घर पर नजर लगाते हो और दूसरे की स्त्री पर फगुवा खेलते हो। तुम्हें लज्जा नहीं आती। मरने पर संवरू को हल्दी लगेगी। तुम्हारा जीना व्यर्थ है। इतनी बात जब लोरिक ने सुनी तब वह जलकर भस्म हो गया। हाथ की पिचकारी फेंक दी और अजई धोबी के गले का डंफ तोड़ दिया। फिर जाकर अपने बंगले पर दुपट्टा तानकर सो गया और सात दिन तक सोता रह गया। बूढ़ी मां खोइलनि पास गयीं और कहा—बेटा तुम क्यों सो रहे हो? क्या किसी ने तुम्हारे ऊपर ताने कसे है? क्या तुम्हें किसी ने अपमानित किया है या किसी कर्ज देने वाले ने तकाजा किया है? मुझे चिन्ता हो रही है, तुम क्यों सो रहे हो और हिल-डुल नहीं रहे हो। वहां से रोती हुई बुढ़िया बिजवा के पास गयी। बिजवा ने खोइलनि के आने का कारण पूछा। खोइलनि ने लोरिक का हाल बताया कि लोरिक को किसी बात से क्रोध हो गया है और वह अन्न-पानी नहीं ग्रहण कर रहा है। ऐ पतोहू, ऐसा करते सात दिन हो गया है। वह मर जायगा। खोइलनि और बिजवा लोरिक को मनाने चलीं। बंगले पर जाकर लोरिक से दुख का कारण पूछा। बुढ़िया का बेटा रोने लगा और कहने लगा। भउजी तुम मेरी बात मानो। मैं बहुत चिंतित हूँ। उसने होली से लेकर चनवा की फटकार तक सारी कथा कह सुनाई। मैंने सहदेव की पत्नी पर रंग फेंका और रंग चनवा पर पड़ गया। उसने मेरे ऊपर ताने कसे और कहा कि वीर हो तो भाई का विवाह करवाओ। नहीं तो तुम्हारा जन्म व्यर्थ है। तुम कुंए में जाकर गिर जाओ। मैंने शपथ ली है कि जब तक भइया का विवाह न हो जाय मैं गउरा गुजरात में पानी नहीं पीऊँगा। (८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—नजारा मारत बाड़्या=नजर उठा रहे हो। आन=

अन्य । मेहरी = स्त्री । बिरथा = वृथा, व्यर्थ । गांड़ी = मल द्वार । दुपट्टवै = दुपट्टा । पंजरे = पास में । रेरिया मरले हउवै = ताना दिया है । मेहना = कटूक्ति, अपमान-पूर्ण शब्द, व्यंग्य । करजहरू = कर्ज देने वाला । तकादा = तकाजा । जुमूस = जुंबिश, स्पंदन । भेदवा = भेद । देवर = पति का भाई । कोहायल = क्रोध में, आक्रोश में । किरिया बोललैं = शपथ ली है । सूवरइं बोले लैं हराम = सूअर को हराम बोल दिया अर्थात् शपथ ले ली है । कसम खा ली है । पतोहू = पुत्र वधू । रेवरली जाय = अनुगमन कर रही है । भउजी = भाभी, भाई की पत्नी । खिरकियै पर = खिड़की पर । बिरथ होइ जाइ = व्यर्थ हो जाय । इनार = कुंवा ।

भावार्थ—तब बिजवा ने कहा, तुम्हारी मति मारी गयी है । तुम्हारा ज्ञान मंद हो गया है । लड़की के लिए तुम्हें खोज नहीं करनी है । मेरे स्वामी (अजई) से पूछ लो । वह तुम्हारे मित्र हैं । मलसाँवर के योग्य बमरी की कन्या सतिया है । और उसका बेटा दसवंत तुम्हारे जोड़ का है । मेरे स्वामी अगुवाई करेंगे । सोहवल पर चढ़ाई कर दो और सतिया की भांवर घुमवा दो । सतिया यहाँ आयेगी और मैं जैसे उसका वस्त्र सोहवल में धोती थी वैसे ही यहाँ भी धोऊँगी । सतिया अवर्णनीय है । वह ऐसा भजन करती है कि वह अपने तप से क्षण में ब्रह्मा के द्वार जाती है और क्षण में धरती पर आ जाती है । बिजवा कहती है कि तुम मेरे पति अजई को गायों के अड़ार पर ले जाओ और गायों के साथ उसे ठहराओ । जब वह थक जायगा तो ढाक के पेड़ों के नीचे सो जायगा । तब उसके बाँये बगल में मुक्का मारो, फिर वह सारी कहानी बतायेगा । लोरिक ने ऐसा ही किया । धोबी चार बजे के करीब सो गया । जब उसकी नाक बजने लगी तब लोरिक ने उसे मुक्का मारा । चोट लगने पर उसने अपने पुराने घाव की कहानी बतायी । उसने बमरी और उसके सात पुत्रों के बारे में भी बताया । वे सातो पुत्र देव के लाल हैं । दसवंत के साथ उसकी कैसे लड़ाई हुई यह भी उसने बताया । उसने यह भी बताया कि कैसे मिमली ने उसको जमीन पर पटक दिया और दसवंत ने कैसे उसकी हड्डी तोड़ डाली । (६)

शब्दार्थ और टिप्पणी— अकिल बउरइले = अक्ल पागल हो गयी । गियान = ज्ञान । सामी = स्वामी । जोगे = योग्य । अगुवाई क भात = मध्यस्थ होने का निमंत्रण जिसमें भात खिलाया जाता है । समिया = स्वामी । एहूठियन = इस स्थान पर । काल्ह = कल । अड़ार = जानवरों के रहने का स्थान अट्टाल । सगरों = सभी जगह । ढेकुली = ढाक । टटका = ताजा । थकाई = थकान । नकुला = नाक । पजरिये = बगल में । बदिया बदान = चुनौती । सोझे = सीधे । थपरवा = थप्पड़ । पोंगरवा = पैर ।

भावार्थ—लोरिक और अजई दोनों साथ-साथ कनउज के बाजार गये । धोबी ने वहाँ पहुँचते ही कहा मैं थक गया हूँ । तब लोरिक उसको शराब-घर (कलवारी) में ले गया और दारू पिलाया । जब शराब का नशा तेज हुआ वह कुर्सी से कूद गया और चिल्लाकर लोरिक से कहने लगा । हम अगुवाई करेंगे, सोहवल में चढ़ चलो ।

वहाँ संवरू की भाँति ही सतिया का जन्म हुआ है जैसे तुम्हारा जन्म गउरा में हुआ है वैसे ही दसवंत और भिमली का अवतार हुआ है। यह सुनते ही लोरिक की प्रसन्नता से छाती फूल गयी। उसने धोबी को घर पहुँचाया। उसने अपने किले में आकर भोजन किया, फिर पैर फैलाकर आराम से सो गया। प्रातःकाल जब उस धोबी की नींद खुली, वह सोच में पड़ गया। नशा में मैं अगुवा बन गया पर अब हमारी जिंदगी नहीं बचेगी। वह डगमगाने लगा। लोरिक के बंगले पर जाकर कहने लगा—मैं अगुवाई नहीं करूँगा। वीर लोरिक धोबी के घर पहुँचा। वहाँ धोबी की स्त्री विजवा मिली। लोरिक ने उससे कहा कि अजई ने कल नशे में अगुवाई का वचन दिया और आज वह अपने वचन से टल रहा है। अब कौन अगुवाई करेगा ? विजवा ने पति को झिड़की सुनाई। तुम्हारा जन्म न होता तो अच्छा होता। गउरा में बड़े वीर बनते थे अब जब मर्दों से काम पड़ा तब पैर डगमगाने लगे। तुम अपना वस्त्र मुझे दो और स्वयं बिल्ली बनकर कोने में छिप जाओ। मैं जाकर अगुवाई करूँगी और अगुवाई का भात खाऊँगी। मलसांवर का विवाह कराये बिना मैं वापस नहीं आऊँगी। (१०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—थकाई = थकान। ठावें = उसी स्थान पर। उसी क्षण। कलवरियाँ = जहाँ देशी शराब बनती है, कलवारी। दारुवे = दारू, शराब। छाती फूलि के भइल गजराज = छाती फूलकर हाथी की भाँति हो गयी अर्थात् उसे बहुत प्रसन्नता हुई। मक्कान = घर। सूते ले टंगरियै फइलाय = पैर फैलाकर सो रहे थे। बखरी = घर। हुँकरिया भरले = स्वीकृति दी, हाँ कहा। दुलहा = प्रिय, पति। पंयड़ा = पथ, रास्ता। हिल्लत बाड़ें टंगरिया तोहार = तुम्हारे पैर हिल रहे हैं। अस-बबवा = असबाब। लुगरिया = साड़ी, स्त्री का वस्त्र।

भावार्थ—तब धोबी क्रोध में चिल्ला उठा। तुम दसवंत का हाल नहीं जानती ! पर बाद में अगुवाई करने के लिए वह उद्यत हो गया। उसने लोरिक को बमरी और उसके सात पुत्रों के बारे में बताया—"बमरी के सात पुत्र देव के लाल हैं। उनमें कोई सिंह को मारता है, कोई शेर मारता है, कोई बाघ मारता है और कोई हुँडार (भेड़िया) का शिकार करता है। कोई बेवरा नदी में कूदता है। कोई डूबकर सूँस और घड़ियाल पकड़ता है। दसवंत गर्भ में दस महीने तक तप चुका है तथा भिमली तेरह महीने तप चुका है। सब अमर होकर उत्पन्न हुए हैं। ब्रह्मा ने उनको पांच बाण दिये हैं। वे अटल हैं। एक बाण के मारने से चौदह कोस तक दावाग्नि फैल जाती है जिससे वृक्ष और पलाश जलने लगते हैं। इनसे सुरसरि के जल में खलबली मच जाती है तथा सूँस और घड़ियाल तक उलटने लगते हैं। धोबी कहता है—"ऐ लोरिक तुम तो एक साधारण व्यक्ति हो। वहाँ निश्चय ही तुम्हारी जिन्दगी नहीं बचेगी।" मैं अगुवाई की स्वीकृति देता हूँ पर मुझे दोष मत देना। लोरिक ने अजई को आश्वासन दिया। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं होगा। कनउज में घर-घर मंडप गाड़ दिया गया। सबके हाथ

में कंगन बंधवा दिया गया और सबको विवाह के लिए मुकुट पहना दिया गया। सबके पैरों में महावर लगा दिये गये। गढ़ गउरा में इस प्रकार सारी बारात सज गयी पर लोरिक के घर कुछ नहीं हुआ। समस्या थी विवाह के लिए मलसांवर को कैसे तैयार किया जाय। गांगी नाऊ को गायों के अड़ार में भेजा गया। उसने हाथ जोड़कर मलसांवर से बिनती की। उसने कहा आज गउरा दूसरा हो गया है। वहाँ हलचल मची हुई है। घर-घर में मंडप गड़ गया है और सबके हाथों में कंगन बंधवा दिये गये हैं। केवल आप शेष रह गये हैं। आप कनउज चलिये। आपके हाथों में कंगन बंधेगा। मटमंगरा होगा और विवाह सम्पन्न होगा। मलसांवर यह सुनकर क्रुद्ध हुए। मेरा तीन पन बीत गया। चौथा पन बुढ़ापा निकट है। मेरे मुख के दाँत टूट गये। सिर के बाल सफेद हो गये। भजन करते हुए उम्र व्यतीत हो गयी। यह कहते हुए उन्होंने गंगिया को ऐसा मारा कि वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ और लोरिक के पास आ गया। उसने लोरिक को बताया कि मलसांवर विवाह का नाम सुनते ही क्रोध में जल उठे और मुझे दो गोजी (डंडा) मारी। यह सुनकर लोरिक की आँखों से झर-झर आँसू गिरने लगे। रोते हुए वह माँ खोइलनि के पास पहुँचे, और कहा कि भइया को बुलवाओ नहीं तो हमारी इज्जत नहीं बचेगी। बुढ़िया माँ गायों के अड़ार पर गयीं और मलसांवर को समझाने का यत्न किया किन्तु सब कुछ व्यर्थ गया। उन्होंने क्रुद्ध होकर कहा, "यदि तुम मेरी माता न होती तो बोहे में तुम्हारा सिर काट देता।"(११)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मेहना = कटूक्ति, व्यंग्य, ताना। हुँड़ार = भेड़िया। बेवरा = एक नदी का नाम। बन डेढ़वा = दावानल। भरत बाड़ी रे हुँकरिया तोहार = तुम्हें हाँ कह रहा हूँ। माँड़ो = मंडप। गोड़ = पैर। महावर = लाख से तैयार किया जाने वाला एक तरह का गहरा चटकीला लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ शुभ अवसरों पर अपने पैर चित्रित करती तथा तलुवे रंगती है। बघेला = बाघ की भाँति, शूरमा। मटमंगरा = विवाह के समय की एक रस्म। इसमें वर या वधू के घर की स्त्रियाँ शुभ मुहूर्त पर बाहर से मिट्टी लाती हैं। यह मिट्टी विवाह के अवसर पर प्रयुक्त होती है। संवज = परामर्श, सलाह। पयान = प्रयाण, प्रस्थान। उठल रिसियाय = क्रुद्ध हो उठा। सनकुट = सफेद। पनथ = जीवन का भाग, पन। पंजरे = समीप में ठाँवइ = उसी ठौर पर, तुरंत। बियाह = विवाह। नउवां = नाम। गोजी = डंडा। डगर = रास्ता। उखमज = उत्तेजना, उद्विग्नता। करिना = कन्या।

भावार्थ—बुढ़िया माँ नाराज होकर वहाँ से चली और गउरा आयी। लोरिक उनके पैर पड़ा और उसने बोहा का समाचार पूछा। बुढ़िया ने चिढ़कर कहा—न कहीं से तिलक देने वाले आये, न कोई अगुवा हुआ। कैसे विवाह करने जा रहे हो? गउरा में तुमने उत्तेजना सी फैला दी है। यह बात सुनकर सभी घबरा उठे तथा आपस में सभा परामर्श करने लगे। अब मलसांवर को कौन मनायेगा? तब गुलबी नामक

एक मुसहरिन तैयार हो गयी। सब लोगों ने आज्ञा भी दे दी। उसने एक रोटी बनायी और कपड़े पर उसके टुकड़े रख लिये। हाथ में एक लोटा पानी लिया तथा गायों के अड़ार पर चली। मलसांवर पूजा कर रहे थे। गुलबी उनके सामने जाकर पानी छिड़कने लगी। मलसांवर को उसने बताया कि मेरे मुसहर गुरुमुख हुए हैं और वह किसी का छुवा हुआ नहीं खाते हैं। उन्हीं के लिए मैं पानी छिड़क रही हूँ। वह इधर लकड़ी तोड़ते हैं। इधर से कोई बाल कुँवार लड़का गुजरा होगा जिससे यह मार्ग अशुद्ध हो गया होगा, बिना शुद्धि के मेरे स्वामी भोजन नहीं करेंगे। सँवरू ने घबराकर पूछा तुम कौन-सा वेद जानती हो कि मेरे शरीर को अशुद्ध समझ रही हो। क्या विवाह करने से ही शरीर शुद्ध होता है। गुलबी के पीछे-पीछे मलसांवर कनउज आ गये। लोरिक ने उनका पाँव स्पर्श किया और उनसे क्षमा माँगी। लोरिक ने कहा, मइया, जो कुछ अब तक मैंने कहा है तुमने किया है। एक बार फिर तुम मेरा कहना कर दो, फिर मैं गउरा में तुझसे और कुछ नहीं कहूँगा। (१२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—खुनसाय के = क्रुद्ध होकर। सउंजा = परामर्श। भसुर = पति का बड़ा भाई, जेठ। छुटिया = छुट्टी। हुकमइ = हुक्म, आज्ञा। सम्हने = सामने। चिरुवा = हथेली, हाथ। मुसहरवा = मुसहर, एक जाति। गुरुमुख भइले = गुरु मंत्र लिया है। बारम कुँवार = बाल कुँवार, बचपन से कुमार। पयड़ां = मार्ग। असुध = अशुद्ध। सरीरिया = शरीर। सुद्धी = शुद्धि। अड़वै = आड़ से, छिपकर। मउर = मुकुट, सिर। जियरा = जीव, प्राण। बिरना = बीर, भाई। एदवां पारी = इस बार।

भावार्थ—तब मलसांवर कहने लगे—ऐ भाई जो बातें तुमने पहले कही थीं मैंने सब पूरी कीं। इस बार भी मैं तुम्हारी बात मान लूँगा, पर भविष्य में मैं फिर कभी तुम्हारा कहना नहीं मानूँगा। तब आँगन में मंडप गड़ गया। चौका तैयार कराया गया। कलश भी बैठा दिया गया। दुबरी पंडित बुलाये गये। गांगी नाऊ भी तैयार हुआ। आँगन में पीढ़ा और चंदन रखा गया। गउरा में मंगलगान प्रारंभ कर दिया गया। सुबह-शाम ढोलकियाँ बजने लगीं। वहाँ इस प्रकार भजन होने लगा कि देवता भी मुग्ध होने लगे। इन्द्र की परियाँ नाचने लगीं। इधर मटमंगरा की रस्म सम्पन्न हुई तब सबकी सवारियाँ सज गयी। मलसांवर भी अपनी सवारी पर बैठ गये। कनउज के छ कहार डोली में लग गये। बारह जोड़े सिंगे बजने लगे। तेरह जोड़े करताल तथा चौदह जोड़े धौंसे भी बजने लगे। बासमती चावल, मूँग की दाल, आटा, घी, अचार, मसाले सब कुछ बारात के लिए लादे गये। फिर बीर लोरिक सजने लगा। गले में वह निरखी तथा पैर में दोहरी पहनने लगा। फिर तमांचा खींचा और पैर में जूते धारण किये। जब उसने ओड़न की मुट्ठी दबाई तब एक परोसे तक लपट उठ गयी जैसे आकाश में चुनरी झरने लगी हो। अंगारे टूट-टूट कर गिरने लगे। उसने बिजली की मुट्ठी दबायी। वह जाकर बादल में टकराने लगी।

लोरिक ने सोलह सौ कंटाइनों (चुड़ैलों), सोरह सौ मरी तथा सोलह सौ छोह-रियों को स्मरण किया जो रोवें-रोवें पर सवार थीं। उसने बोहा के ब्रह्माइन का भी स्मरण किया जिनको संवरू दादा पूजते थे। उसने बनसत्ती तथा दुर्गा माँ का भी स्मरण किया। छत्तीस कोटि देवताओं के साथ लोरिक उद्यत हुआ और बारात तैयार होकर बाजे-गाजे के साथ सोहवल चली।

हरिण और हरिणी जंगल में चर रहे थे। हरिणी हरिण के पास गयी और उसने कहा, चलो हम जान बचाकर भागें अन्यथा हमारी जान इस जंगल में नहीं बचेगी। हरिण ने समझाया कोई शत्रु नहीं आ रहा है। मलसाँवर की बारात जा रही है। हरिणी हंसकर कहती है कि क्या उस बुढ़ऊ का जो रात-दिन माला जपते हैं विवाह होगा ? हरिण उसे समझाता है, कनउज में एक से एक पुरुष उत्पन्न हुए हैं। सबका विवाह सोहवल में सम्पन्न होने वाला है। ऐ हरिणी, मुझे प्रतीत हो रहा है कि दसवंत की मृत्यु होने वाली है और सतिया का विवाह निकट आ रहा है। (१३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बीरन = भाई। एदवा = इस बार। चउक = चौका। पुरवाय देलें = जब चौका तैयार करा दिया। असवारी = सवारी, एक प्रकार की पालकी। डँड़िया = डोली, पालकी। सिहवा = फूँक कर बजाया जाने वाला सींग या लोहे की एक तुरही, सिंगा। करताल = लकड़ी, कांसे आदि का बना हुआ एक प्रसिद्ध बाजा जिसका एक-एक जोड़ा हाथ में लेकर बजाते हैं। झाँझ = मंजीरा। धंउसा = धौंसा, बड़ा नगारा, डंका। बसमतिया = बासमती। घीउ = घी। तेपर = उस पर। नेबुलन = नीबू का। पनही = जूता। तवा पितरिन का = पीतल का तवा। ओड़न = एक प्रकार की ढाल। बिजुलिया खांड = बिजली गिराने वाली खड्ग। लवर = लपट। बुमुवाय = फैलने लगी। बादर में दरेरा खाय = बाहर में टक्कर खाने लगा। कंटाइन = चुड़ैल। मरी = एक प्रकार का प्रेतात्मा। रुवां = रोम। छोहरी = लड़की। गोरये डीह = जानवरों के स्थान का डीह देवता। गोर्‌या = गोरू, पशु। बनसतिया = बनसत्ती। वनस्पति = दुर्गा का एक अन्य रूप। मरुवा = युद्ध के समय का एक स्वर। लकड़िया बाजै = स्वर बज रहा है। डीह ठाकुर = डीह बाबा, डीह के देवता। जहाँ कान दीहल बानहि जात = जहाँ कान देना अर्थात् सुनना कठिन हो गया है। बुढ़ऊ = बूढ़ा वृद्ध। बनवा = बान।

भावार्थ—आगे की कथा सुनो। बारात रात-दिन चलने लगी। रास्ते में कहीं-कहीं पड़ाव भी हुए। धोबी सबसे आगे चल रहा था पर जब सोहवल निकट आया वह आगे चलने से इन्कार करने लगा। उसे लग रहा था कि उसकी जिन्दगी नहीं बचेगी। लोगों ने फिर कहा, हमें क्यों यहाँ चढ़ा लाये ? फिर धोबी नेतृत्व करने लगा और बारात बमरी के सोहवल में मोती सगड़ के घाट पहुँची और वहाँ तम्बू गिरा दिये गये। लोरिक ने पंडित दुबरी बाबा से शुभ घड़ी पूछकर अपना तम्बू भी गड़वा दिया। सुर्जन डोम, बंठवा चमार, अजई धोबी देवसी सबके तम्बू पड़ गये। सिवगड़ तथा मलसाँवर के तम्बू

भी डाल दिये गये । खाने-पीने का सारा सामान उतर गया । शाम को खाना बनाने के लिये आग का अहरा जोड़ा गया । इससे चारों ओर धुँवा उठ गया । सतिया ने जब धुँवा देखा तब उसे परेशानी हुई । उसे लगा कि उसके भइया दसवंत का मोती सगड़ पर बंगला फूक दिया गया है । दूसरे दिन प्रातःकाल चार सखियों को आगे कर तथा चार सखियों को पीछे कर सतिया हाथ में टोकरी लटका कर शिव मंदिर में पूजा करने चली । (१४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—गंडक = रुकावट, बाधा । कुच = कूचा, गली रास्ता । पिछवा बाराति खरलि जाय = पीछे बारात अनुगमन कर रही थी । मोती सगर = स्थान का नाम । पतरवा = पंचांग । साइत = शुभ मुहूर्त । अउसा-धंउसा = धौंसा, नगारा । गाँजल हउए = पूँजी भूत है, एकत्र है । गोड़ = पैर । चाउर = चावल । रहर = अरहर । घीउ बैनन के = नयी ब्याही हुई गाय । अहरा = कंडों के समूह को जोड़कर सुलगाई हुई आग । डलई — डाली, टोकरी ।

भावार्थ—आगे कथा इस प्रकार है । सती जब मोती सगड़ पर आयी, वहाँ स्नान का उपक्रम होने लगा । स्नान कर सती पीताम्बर धारण कर शिवमंदिर में गयी और उनके मस्तक पर जल चढ़ाकर माला फूल चढ़ाया । तब शिव बाबा प्रकट हुए और उन्होंने सती से वरदान माँगने के लिए कहा । सतिया शिव बाबा के समक्ष रो पड़ी और कहने लगी—ऐ बाबा, मैं लाल तम्बू और लाल कनात देख रही हूँ । इस मोती सगड़ पर सुन्दर-सुन्दर पुरुष दिखाई पड़ रहे हैं । ये राही हैं, बटोही हैं या कोई उमराव आया है जिसने खर्चा चुक जाने के कारण यहाँ डेरा डाल दिया है । तब शिव बाबा ने उत्तर दिया कि एक गढ़ गउरा है जहाँ का धोबी यहाँ आया था और विजवा का विवाह कर ले गया था । उसी ने आज अगुवाई की है तथा बारात के साथ यहाँ सगड़ पर टिका हुआ है । हमें ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अब दसवंत की मृत्यु निकट आ गयी है । (१५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—नहान = स्नान । पीतामर = पीताम्बर । डलई = डाली । मंदिल-मंदिर । कपार = मस्तक, सिर । परघट = प्रकट । तमुवा = तम्बू । कनात = कनात, मोटे कपड़े की खड़ी की गयी दीवार । बटोही = राहगीर । उमराव = अमीर, का बहुवचन प्रतिष्ठित धनी व्यक्ति, सरदार । खर्चा = व्यय, खर्च करने का पैसा । रारी = गर्जेगा । सिंगिन = सिंहनी । बार = बाल । कनिया = कन्या ।

भावार्थ—सतिया मंदिर से निकल कर सोहवल के बाजार में आयी । उसके बंगले में चिन्ता छा गयी । भाई की मृत्यु की चिन्ता में वह हरदोइया नाग के यहाँ पहुँची और कहा कि सोहवल में एक आश्चर्यजनक बात हुई है । सगड़ पर एक बारात आयी हुई है । मेरे भाई दसवंत की मृत्यु की आशंका है अतः तुम सगड़ पर जाओ और सारी बारात को डंस कर मृत बना दो । यह सुनकर हरदोइया नाग घबरा गया और कहने लगा मैं इतना पाप नहीं करूँगा । इस पर सतिया जलकर भस्म हो गयी और

उसको धमकाया कि मेरा राज्य छोड़ दो नहीं तो मैं तुम्हारी जान नहीं छोड़ूंगी। अन्ततः हरदोइया नाग बारात को डंसने के लिए तैयार हो गया पर उसने यह भी कहा कि एक बार जब बारात मर जायगी तब उसको जीवित करना सम्भव नहीं होगा। अगर मैं बारात जीवित कर दूँगा तो मेरी मृत्यु हो जायगी। आधी रात को हरदोइया अपने बिल से निकलकर सगड़ पर पहुँचा तथा सुर्जन डोम, बंठवा चमार, अजई धोबी, देवसी, सिवगड़ तथा मलसाँवर सबको डंस लिया। जब वह लोरिक के पास पहुँचा तब देखा कि उसके बांये बनसत्ती देवी तथा दाहिने दुर्गा सोई हुई हैं। जब नाग ने लोरिक को डंसने के लिए फण उठाया तब बनसत्ती ने जगकर लुकाठी से उसका आधा मुँह जला दिया। नाग डर के मारे भाग चला और सतिया से जाकर उसने सभी को डसने की बात बताई तब सतिया ने कहा सबको डंसने से क्या लाभ हुआ जब तुमने वास्तविक शत्रु को छोड़ दिया। (१६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—अबसोस = अफसोस, दुख। डोंगा = नाव। सबेरवा = सबेरा। डेवढ़िया = डेवढ़ी, देहली। कारजिया = कार्य। डूबि जाइ रे डोंगवा हमार = हमारी नाव डूब जायगी। मुवाइद = मृत बना दो। मानी = बिल जहाँ साँप रहता है। बांबी मुर्दन = मुर्दा का बहुवचन। खेलवाड़ = खेल तमाशा। सूतै लगलैं गोड़ फइलाय = पैर फैलाकर सोने लगे। टप दें = अचानक, जल्दी से। लौकत नाहीं बाय = दिखाई नहीं पड़ रहा है। बारि के लुक्का लगवलसि = जलाकर लुकाठी लगा दी।

भावार्थ – तब हरदोई अपने मांद पर चला गया। इधर सती ने सत के कौवे बनाये और उन्हें सारे बारातियों की आँखें निकाल लेने की आज्ञा दी। कौवे मोती सगड़ पर किनारे-किनारे घूमने लगे। इसी बीच लोरिक की नींद खुल गयी। उसने घूमकर देखा तो सारी बारात मृत पड़ी हुई थी। वह चिंतित हो उठा। यह कैसी विपत्ति आ गयी। लोरिक ढेलों से कौवों को भगाने लगा। सती ने रात को माया के सियार बनाये जो मृतकों का कलेजा निकाल सकें। लोरिक रात में सियार तथा दिन में कौवों को हांकने लगा। इसी प्रकार आठ दिन सगड़ पर व्यतीत हो गये। अन्न के बिना उसका उदर कृश हो गया तथा पानी के बिना उसका मुँह सूख गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसकी पीठ का भाई मर गया। सारी बारात मर गयी। इधर बाँये बनसत्ती हंस रही हैं और दाहिने दुर्गा हंस रही हैं। दुख सहते-सहते पंद्रह दिन व्यतीत हो गये कि जग्गू बनजारे के लदवाह जो अपने बैलों को लादकर हल्दी जा रहे थे, उधर से निकले। जग्गू बनजारा को मलसांवर ने एक तिलंगी बछड़ा दिया था। लोरिक उसको पहचान गया और जल्दी से उसके पास गया। लदवाह से पूछा—तुमने कहाँ से बैल लादा है और कहाँ जा रहे हो? लदवाह ने उत्तर दिया—मैंने अगोरी में बैल लादे हैं और हल्दी हमारा गंतव्य है। फिर उसने लोरिक से पूछा—तुम्हारा घर कहाँ है? गउरा के अहीर ने जवाब दिया—"मेरा वतन गउरा है, वहीं मैं उत्पन्न हुआ हूँ। टिकई मेरे पिता और खोइलनि माता हैं। हम दो भाई हैं। एक बोहा में गाय चराते हैं तथा मैं ठकुराई करता हूँ। यहाँ मैं भाई का विवाह करने

आया हूँ । यहाँ का राजा बमरी है । उसकी कन्या सतिया है । राजा के दो बेटे दसवंत और मिम्हलों हैं । अभी मेरी उनसे भेंट नहीं हुई है और न अभी तलवारें ही चली है । इसके पहले ही मेरे ऊपर विपत्ति आ गयी है और यहाँ कोई मेरा सहायक नहीं है । यदि तुम सहायता कर दो तो बड़ी नेकी मानूँगा । लदवाह ने क्रुद्ध होकर कहा—सहायता करना मेरे बूते की बात नहीं है । हम तो तेजपात, धनिया हल्दी ले जा रहे हैं । तब लोरिक ने उसके सारे बैलों को तम्बू के खूँटों से बाँध दिया । लदवाह चिंतित हुआ, उसने धावन को एक पत्र दिया । सांड़िनी पर सवार होकर वह अगोरी पहुँचा जहाँ जग्गू बनजारे का दरबार लगा हुआ था । उसने वहाँ जाकर जग्गू से कहा—तुम्हारे सारे बैल तथा सारा धन रोक लिया गया है । (१७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सतवा क कउवा = सत का कौवा । सत से बनाया गया कौवा । मनुसन = मनुष्य (बहुबचन) । आरी-आरी = किनारे-किनारे । निदिया = नींद । दउरन लागै = दौड़ने लगा । ढेलवासा = ढेलों का ढेर । चक्का = पत्थर या ढेले का टुकड़ा । लदिया = लाद, कलेजा । मसिया = मांस । पोटरी = पेट । कंवल = कमल, मुख । मइया पीठिया के = पीठ के भाई, अग्रज । सकलई = सभी । पनरह = पंद्रह । अकिलि = अक्ल । बरधी = बैल । तिलंगी बछवा = तिलंगी बछड़ा । हाली हाली = जल्दी जल्दी । लदवाह = बैलों पर सामान लादकर तिजारत के लिए चलने वाले को लदवाह कहते हैं । टिकई बुन = टिकई के बूँद से, टिकई के वीर्य से । सिर जल — सृष्ट, सृजित । कोखिया = कोख में, कुक्ष में । ओतन = वतन, घर । गोतन = गोत्र ? वोतन के साथ पुनरावृत्ति भी हो सकती है । मतंगिया = मतंग (हाथी) की तरह । करिना = कन्या । बताउर = जिसके बारे में बताया गया है । सारन = साले । ना मुंहे पेलि के चलल तलवार = जमकर तलवार नहीं चली । नेकी मानब = कृतज्ञ हूँगा । बरधी = बैल । संडिनी = सांड़िनी । बेरि गइल = रोक लिये गये ।

भावार्थ—जग्गू बनजारा की कचहरी लगी हुई । उन्होंने कहारों को आज्ञा दी और पालकी सजायी गई । उस में जग्गू बैठ गये तथा सोहवल पहुँचकर लदवाहों से मिले । लदवाहों ने उन्हें बताया कि आपका सारा धन लुट गया है, सारे बैल लूट लिये गये हैं । जग्गू ने फाटक पर पहुँच कर लोरिक को आवाज दी । तुम चोर हो, चंडाल हो, या भूत अथवा वैताल हो । मेरे बैलों को लूटते हुए तुम्हें भय नहीं लगा ? जल्दी बताओ नहीं तो सड़क पर बड़ा जुल्म हो जायगा । तब गढ़ गउरा के अहीर ने अपना परिचय दिया । गढ़ गउरा में हम दो भाई लोरिक और मलसांवर पैदा हुए हैं । यहाँ हम भाई का विवाह करने आये हैं और हमारी सारी बारात यहाँ मर गयी है । मलसांवर जग्गू के पुराने दोस्त थे । उन्होंने कहा—तुम्हें मुझे भी बारात के लिए निमंत्रण देना चाहिए था । मेरे मन में तुम्हारे बारे में एक शंका है । तुम्हारे भाई ने मुझे तिलंगी बछड़ा दिया था जो चौदह हाथ चौकड़ी भरता है । यदि तुम उसके साथ चौकड़ी भर सको तब मुझे विश्वास होगा कि तुम लोरिक हो । लोरिक ने बछड़े के

साथ अठारह हाथ चौकड़ी भर दी फिर जग्गू को विश्वास हो गया कि वह लोरिक ही है। उन्होंने लोरिक को सहायता का आश्वासन दिया और लदवाहों को आज्ञा दी कि एक-एक मुर्दे की रखवाली दो-दो लदवाह करें। जग्गू ने उनको हिदायत कर दी कि अगर कौवों ने किसी बाराती की आँखें निकाल लीं तो किसी लदवाह की आँखें वहाँ लगा दी जायंगी। यदि किसी बाराती का कलेजा सियार निकाल लेंगे तो किसी लदवाह का कलेजा उसमें लगा दिया जायगा। भय के मारे लदवाहों ने मुस्तैदी के साथ मुर्दों की रखवाली शुरू की। उन्होंने रात-दिन कौवों और सियारों को भगाना शुरू किया किन्तु कौवे तथा सियार इस प्रकार लगे हुए थे कि लदवाह विकल हो उठे। तब उसमें से एक लदवाह ने सलाह दी की सभी लदवाहों को मुर्दा बनकर सो जाना चाहिए। सबने ऐसा ही किया और जब कौवे तंबू में घुसे तब लदवाहों ने उन्हें पैनों से मारना शुरू किया। उनके पंख टूटने लगे, तब कुछ कौवे भागकर सतिया के पास आये और कहा कि जितने बाराती मरे थे उनसे दुगुने तैयार हो गये हैं। (१८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—डाँड़ी = पालकी, डोली। छीपल = छिप गयी। गंजलेह = एकत्र कर दिया है। जुलुम = जुल्म। बरियार = बड़ा, शक्तिशाली। विपतिया = विपत्ति। तिलंगिया बछड़ा = तिलंगी बछड़ा। चौकड़ी मारैला = चौकड़ी भरता है। मरलेसि टिकोरी = ललकारा, पुचकार कर उत्साहित किया। टिकोरी मरना = जीभ से आवाज निकालना। अगोरवा द्या = रखवाली करवा दो। ओकरी = उसकी। नवा के = लगाकर। ओसन से = उसमें से। हूंकन से = पैने से, छोटे डंडे से।

भावार्थ—सतिया ने रात में माया से निर्मित सियारों को छोड़ा। सियार मोती सगड़ पर आकर हुवां-हुवां चिल्लाने लगे। तब लदवाह मुर्दा बनने लगे और तम्बू में सोने लगे। जब सारे सियार तम्बू में चले गये तब लदवाहों ने उन्हें पैनों से पीटना शुरू किया। इससे कुछ सियारों के पैर टूट गये। कुछ की लदवाहों ने पूंछ उखाड़ ली। कुछ वहाँ से भाग खड़े हुए और सोहवल पहुँचे। उन्होंने जाकर सतिया को बताया कि जितने मुर्दे पहले थे उनसे दुगुने अब तैयार हो गये हैं। यह सुनकर सतिया घबरा उठी। इधर लोरिक सोता रहा। आठ दिन व्यतीत हो गये तब दुर्गा उसके पास पहुँची और कहा—बेटा, तुम सो रहे हो, तुम्हारी बुद्धि मारी गयी है। जिसकी बारात मर गयी हो वह इस प्रकार टांग फैलाकर निश्चिन्त क्यों सो रहा है? तुम्हारी पीठ के भाई मर गये। तुम्हारी जड़ उखड़ गयी है। यह सुनकर लोरिक उठ बैठा और दुर्गा से कहने लगा। तुमने मुझे अल्हड़ नींद से जगा दिया। मेरा कोई प्रयास काम नहीं कर रहा है। तब दुर्गा ने उसके लिए एक उपाय रचा। उसके लिए माया की सारंगी, माया की कांथरी, कमंडल तथा मृगछाला तैयार किया। माया की झोली बनाई, विभूति तथा तिलक की रचना की। गले में गूदड़ी, कंधे में झोली, काँख में मृगछाला, हाथ में कमंडल तथा सारंगी लेकर लोरिक योगी बन गया और ऐसा भजन गाने लगा कि पक्षी

तक मोहित हो उठे। दुर्गा और बनसत्ती हँसने लगी। दुर्गा ने लोरिक को संकेत किया कि गढ़ सोहवल में चलो। वहाँ पूर्व की तरफ एक कुंवा है। उसमें चार घाट बने हैं। जिस घाट में तुम पैर लटका कर बैठोगे। वहाँ पानी रहेगा। शेष घाटों का पानी सूख जायगा। लोरिक वहाँ गया और अपनी सारंगी बजाने लगा।

इधर दुर्गा सोलह सौ कंटाइन, सोलह सौ मरी और मसान तथा सोलह सौ छोहरियों का दल लेकर चलीं। संवरू दादा की पूज्य देवी ब्रह्माइन तथा गोरयाडीह भी साथ थे जो अठारह हाथ उछल रहे थे। बायें बनसत्ती जा रही थीं और दाहिने माँ दुर्गा चल रही थीं। सोहवल में ताल, पोखर, कुंवा सभी सूखने लगे। कुंडों और घड़ों का पानी भी दुर्गा ने गिरा दिया। प्रातः काल लोगों ने देखा कि सगड़ का सारा पानी सूख गया है। पानी छूने के लिए भी पानी नहीं है। बड़े ताल का भी पानी सूख चुका था। सोहवल की गोपियाँ बंसवाड़ी के इर्द-गिर्द घूमने लगीं पर कहीं पानी नहीं था। सुहवल के पुरुष भी परेशान हो उठे थे। बारह बजे दिन को सभी घर आते हैं और वे संकेत से पूछते हैं कि क्या घड़े में पानी है? गोपियाँ उन्हें बताती हैं कि घर में पानी नहीं है। हमारा धर्म छूट रहा है। सोहवल में भूत, शैतान, अथवा दैत्य आया हुआ है जिसने यहाँ का सारा पानी पी लिया है। सोहवल में अब हमारी मृत्यु हो जायगी। (१६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—तमुवा में हलि गइलें = तम्बू में प्रवेश कर गये। पोंछ = पूंछ। उपारि ले लें = उखाड़ लिया। सुतल हव टंगरिया फइलाय = टांग फैला कर निश्चित सो रहा है। भइया पीठिया के = पीठ का भाई। उपरि गइलि सोरिया = तुम्हारी जड़ उखड़ गयी। आल्हर = अल्हड़, अलसायी सी। सरंगी = सारंगी। कांवरी = योगियों का थैला, कंथा। भभूती = विभूति, राख। गर में = गले में। गूदरी = गूदड़ी। कान्ह में = कंधे में। कांखी में = कांख में। जेमन = जिसमें। मोहित = मुग्ध। जेमन छतीसो बेधरा बाड़े राग = जिसमें छत्तीसों प्रकार के राग मुखरित हो रहे हैं। उयल दूइज के चाँद = जैसे दूज का चांद उगा हो। इनारा = कुंवा। खनल हउवे = खुदा हुआ है। जेमन = जिसमें। झुराय = सूखा हुआ। पैंडा = रास्ता। ले नें रे गुधियाय = लोरिक सीधे रास्ते पर गया। ईनारे पर = कुंए पर। गोर्या डीह = पशुओं के स्थान के डीह देवता। गाँवों में डीह बाबा भी देवता होते हैं। अनेक गाँवों में डीह बाबा की पूजा होती है। बनसतिया = वनस्पति देवी। ताल सोखेंनी पोखर = ताल और पोखर सोख लिया। गगरिन = घड़े। गयल रे झुराय = सूख गया। भिटवा = भींटा। अरिये आरी = किनारे-किनारे। सान बुझावें = संकेत कर रहे हैं। पानी छुवल जं = चलो आबदस्त लें, चलो पानी छुवें। बंसवाड़ी = जहाँ बासों का झुरमुट लगा होता है। झंखे = चिन्ता कर रही हैं। धरम = धर्म। गोलिया = दल। मूंड़ी = गर्दन। अनुभो = अजीब चीज, अनोखा अनुभव। भूतवा = भूत। सयतान = शैतान। दईत = दैत्य।

भावार्थ—आगे का हाल सुनो। सोहवल का सारा पानी सूख गया। सभी

लोग घबरा उठे। राजा बमरी के किले में खलबली मच गयी। सोलह सौ सखियाँ परामर्श करके बड़े कुंए पर चलीं जहाँ अथाह जल था। सबके हाथ में घड़े और रेशम की डोरियाँ थीं। इसी बीच दुर्गा लोरिक को समझा देती हैं कि यदि ये गोपियाँ कुंवे पर पाँव रख देती हैं तो तुम्हारा धर्म नष्ट हो जायगा। तुम उन्हें जोर से फटकारो ताकि गोपी पर गोपी महरा उठे। घड़े पर घड़े फूट जाँय। लोरिक ने ऐसा ही किया। जब गोपियाँ पास आयीं, लोरिक जोर से गरज उठा। गोपियाँ एक दूसरे पर महरा उठीं। कुंडे पर कुंडे फूटने लगे। तब वे हाथ जोड़कर लोरिक से पूछने लगीं कि ऐ बाबा हम लोगों को बताओ कि सोहवल का पानी क्यों सूख गया है। उसने गोपियों को बताया कि "तुम्हारे सोहवल में बड़ा पाप हुआ है। बमरी के यहाँ छत्तीस जाति की कन्याओं को बचपन से कूंवारा रखा है। उन्होंने प्रण किया है कि मैं श्वसुर नहीं कहलाऊँगा और मेरे लड़के साले नहीं कहे जायंगे। दूसरे देशों की लड़कियाँ लाऊँगा पर अपने देश की कन्याओं का विवाह नहीं होने दूँगा।" उसी पाप से सोहवल का पानी सूख गया है। राजा बमरी की बेटी, जिसका नाम सत मदाइन है, जब सत का लोटा बनायेगी, सत की डोरी बनायेगी और जब सत के साथ आकर मुझे पानी पिलायेगी तब सुहवल में पानी खुल जायगा। सोलह सौ गोपियाँ यह सुनकर राजा बमरी की कचहरी में आयीं और बताया कि सोहवल में बड़ा पाप हुआ है अतः यहाँ का पानी सूख गया है। बड़े कुँए पर एक योगी आये हैं उन्होंने यह बात कही है। जब सती सत के लोटे से तथा सत की रस्सी से योगी को सत के साथ पानी पिलायेगी तब सुहवल का पानी खुलेगा। बमरी घबरा कर सतिया के किले में गये। सतिया ने उसके पैर छुए और उनके आने का कारण पूछा। बमरी ने बताया कि बड़े कुएं पर एक योगी आया है उसको तुम पानी पिला दो। सत का लोटा तथा सत की डोरी लेकर साधु को पानी पिलाओ ताकि सोहवल में पानी वापस आ जाय। यह सुनकर सतिया चिंतित हुई और उसने बमरी को यह बात बतायी कि आपके लिए वह योगी आया है। मेरे लिए वह एक शत्रु है। वह दसवंत भइया को मारेगा और सोहवल में आपकी नौका डूब जायगी। (२०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—हड़बड़ मच गयल = खलबली मच गयी। सउंजा = सलाह। ओमन से = उसमें से। रेसमें क = रेशम का। घड़िलै = घड़े। तड़कि जा जगते पं = कुंए की जगत पर तड़क जाओ। कुंडा = घड़ा। सराप = श्राप। गिरैनी = गिरीं, गिर पड़ीं। छतिस जाति = छत्तीस जाति। पानी गयल झुराय = पानी सूख गया। गहुअरि = गंभीरता पूर्वक, जमकर। ओनही से = उनसे। बुरुजे पर = बुर्ज पर। आगम = होने वाली बात, भवितव्यता, भविष्य। बाबिल = पिता। काहे बदे = किसलिए। तोरे लेखे = तुम्हारे लिए। मुदई = शत्रु। अधजल में डूबि जाई रे भइया आ डोंगवा ना रे तोहार = मझधार में तुम्हारी नाव डूब जायगी।

भावार्थ – तब राजा बमरी क्रुद्ध होकर बोल उठा। उसकी भुजाएँ लाल-पीली

होने लगीं। उसने सतिया से कहा—तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाय? दसवंत अमर होकर उत्पन्न हुआ है। उसको ब्रह्मा ने पाँच बाण दिये हैं। एक बाण के मारने से चौदह कोस तक दावानल उठ जाता है और पेड़ रूख जलने लगते हैं। सुरसरि के जल में स्पंदन शुरू हो जाता है जिसमें सूंस और घड़ियाल उलटने लगते हैं। एक शत्रु को कौन कहे वह दो चार शत्रुओं को मार डालेगा। तुम जाकर पानी पिला दो। सतिया पिता के चरणों पर गिर पड़ी और उनकी आज्ञा मान ली। सोलह गोपियों को लेकर वह चल पड़ी। माया से उसने भड़भुजे की लड़की (भुजइन) का सा रूप बनाया, फिर हाथ में लोटा डोर लेकर वह कुंए पर आयी। दुर्गा ने लोरिक को इसके बारे में आगाह किया और कह दिया कि जो गोपी सबके पीछे आ रही है उसके हाथ से पानी पीना। लोरिक ने अन्य गोपियों के हाथ से पानी नहीं पिया और कहा कि जो गोपी सबके पीछे है उसके हाथ का पानी पीऊँगा। सोलह गोपियाँ सतिया के पास गयीं और उसे बताया कि लोरिक तुम्हारा सब हाल जानता है। वह हमारे हाथ का पानी नहीं पीयेगा। सतिया ने फिर अस्सी वर्ष की बुढ़िया कोढ़ी का रूप बनाया। उसके शरीर से मज्जा चू रही थी। हाथ में एक लकड़ी थी। उसके शरीर से दुर्गन्ध फैल रही थी। जब लोरिक ने उसको देखा तब वह चिंतित हुआ। उसने कहा धोबी ने मेरे साथ धोखा किया है। इस प्रकार की मावज मिल रही है। यह विवाह हम नहीं सम्पन्न करायेंगे, भैया भले ही कुंवारे रह जांय। तब दुर्गा ने लोरिक की गर्दन पकड़ ली और कहा कि तुम पानी पी लो। लोरिक नाक दबाकर बैठ गया और सतिया कुंए से पानी निकाल कर पिलाने लगी। उसने माया से निर्मित मज्जा लोरिक के हाथ में छोड़ दिया जिससे वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ। दुर्गा ने उसकी गर्दन पकड़ कर उसे संभाला और कहा कि इसके हाथ का पानी पी लो, तब तुम्हारा भाई जीवित हो उठेगा। लोरिक ने जल पीना शुरू किया और दो लोटा पानी पी गया। विवश होकर सती ने अपना रूप बदला और बारह वर्ष की एक कन्या बन गयी। लोरिक प्रसन्न हो उठा। सतिया पानी पिलाती चली गयी और दुर्गा को ऐसा लगा कि सतिया पानी पिला-पिला लोरिक को मार डालेगी अतः उन्होंने उसके पेट में बड़वानल लगा दिया जिसमें सारा पानी जल जाता था। सतिया पानी पिलाते-पिलाते थक गयी फिर उसने कुंए की जगत पर लोटा डोरी फेंक दी और सोहवल जाने लगी। दुर्गा तब लोरिक के पास पहुँच गयी और उससे कहा कि सतिया सोहवल लौटकर जा रही है। तुम्हारी बारात सगरा पर जीवित नहीं हो सकेगी। (२१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—लालपियर = लालपीला। बजर = वज्र। भुजइन = भड़भूजे की लड़की। डपटि दा = डांट दो। [illegible] = उपाय। ठुब ठुब = ठीक-ठीक। डगर = रास्ता। बिगहा = २० बिस्वा की दूरी। पुरनियं = बुढ़िया। माज = मज्जा। महकति बाय = महक रही है। दगन = धोखा, दगा। जगतिया = कुंए की जगत। अंजुरिया = अंजुलि। घलं बनाय = बना डाला। धींच-धींच = खींच खींचकर।

मुड़िया = गर्दन । बड़वानलवा = बड़वानल । भवरिया ओलि रे अं = भवानी प्रविष्ट हुई हैं । उभ्भंग = व्यक्त, छोड़ा हुआ । आरे बहुवां में पीरा जोगिया गइल बाड़े ना रे उभ्भंग = योगी ने बांह में पीड़ा छोड़ दी है । पजरवा = पास, बगल में ।

भावार्थ—तब लोरिक कुंए की जगत से कूदकर सतिया के पास चला गया और उसे अंकवार में भर लिया । उसकी हड्डियाँ पड़-पड़ाने लगीं । लोरिक ने कहा जब तक तुम मुझे देवर नहीं कहोगी और तुम मेरी भावज नहीं बनोगी, तब तक मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा । सतिया ने पूछा कि तुम्हारे भाई ने मुझसे कब विवाह किया, तथा कैसे भाँवर घुमायी । तुम सुहाग का ताग-पाट दिखाओ । उसी क्षण मां दुर्गा ने अपनी जांघ काट कर तागपाट प्रस्तुत कर दिया और लोरिक के हाथ में दे दिया । जब सतिया ने ताग-पाट देखा तब उसे परेशानी हुई । उसने फिर लोरिक को देवर कहा और सुझाव दिया कि मैं शिव बाबा की पूजा करने आऊँगी और तुम्हारी बारात जीवित कर दूँगी । लोरिक को इस पर विश्वास नहीं हुआ । लोरिक दुर्गा के साथ शिव मंदिर में आया और शिव बाबा से कहा कि तुमने सारी जिंदगी भावज की पूजा को स्वीकार किया फिर भी सगड़ पर बारात क्यों मर गयी ? यह कहते हुए उन्होंने शिव मंदिर का फाटक तोड़ दिया और शिव बाबा पर जोर से आघात किया । (२२।

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—अंकवार = अंकपाल, हृदय से लगाना । गहुवा = जोर से । सेंदुर = सिंदूर । भउजी = भाई की पत्नी । तागपाट = मंगल सूत्र । सोहगइला = सौभाग्य । अम्मर चीरिया = अमरता प्रदान करने वाला वस्त्र । हलिया = हाल । ओठियन = उस जगह । पुजनिया = पूजा । बिस्सास = विश्वास । बेंवड़वा = डंडा ।

भावार्थ—शिव बाबा को मार कर लोरिक अपने तम्बू में आया और मौन होकर बैठ गया । इधर सतिया चार सखियों को आगे करके तथा चार सखियों को पीछे करके प्रातःकाल शिव बाबा की पूजा के लिए चली । पूजा समाप्त करके सोहवल के बाजार में वापस आयी । दूसरे दिन उसने माया के पाँच सूवर बनाये और अपने हाथ में डंडा लेकर सगड़ पर पहुँची और पुकारा कि सगड़ पर वैद्य आया है किसी को मुर्दा जिलाना है तो हम उसे जिला देंगे । लोरिक वहाँ आया और सतिया के कहने पर सूवर चराने लगा और जब वे भागने लगे तब उन्हें पकड़कर बाँधना शुरू किया । सतिया वन में गयी और छाती पीटकर रोने लगी । "हाय सोहवल में मेरी नाव डूबने लगी । दसवंत भइया की मृत्यु करीब आ गयी है । मैं बमरी दादा को बार-बार मना कर रही थी पर उन्होंने मेरी बात नहीं मानी ।" सतिया अपने सतीत्व का स्मरण करने लगी और उड़कर इन्द्रासन में पहुँची जहाँ ब्रम्हा की कचहरी लगी हुई थी । सतिया ने वहाँ जाकर पूछा कि ऐ ब्रम्हा हमारा कौन सा पाप उदय हुआ है कि मेरे ललाट में तुमने विवाह लिख दिया है । तब ब्रम्हा ने समझाया कि तुम्हारे पिता बमरी ने छत्तीस जाति की कन्याओं का विवाह नहीं होने दिया है । उसी का पाप

सोहवल में उदय हुआ है। अब दसवंत की मृत्यु तथा तुम्हारा विवाह निकट आ गया है। (२३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी---पछवां = पीछे। असनान = स्नान। कइके = करके। डगर = रास्ता। बिहान = प्रात:काल। सुवर = शूकर। बेंवड़वा = डंडा। बइदा-बइदा = वैद्य वैद्य। मुअल = मृत ओलियाय दें = प्रविष्ट करा दें। बिरई—वृक्ष। लियंई उपार = उखाड़ लूं। वन छिउली = पलाश का वन। घुमुरल = घूम गया। पांचों क गोड़ छनलें = पांचों का पैर पकड़ लिया। मरन = मृत्यु। डोंगवा = डोंगा, नाव। अध जल = आधे जल में, बीच में। धइ धइ छानत बाड़ें = पकड़ पकड़ कर बांध रहे हैं। बेरिया क बेरिया = बार बार। बरजत रहलीं = मना कर रही थीं। छानि देला = बांध लिया। जे ठे ते = जितनी थी उतनीं। एदवां = इस बार। डंड़वा = डंडा। एड़वा = पैर से गइल हु हउवे मेंड़रे राय = मंडराने लगा। मिरितवा = मृत्यु लोक। कनिवा = कन्या।

भावार्थ—तब सतिया कुछ नहीं बोली और उसने ब्रम्हा से कहा—नौ दिन के लिए बादल और घोर वर्षा लिख दो और मोती सगड़ पर तम्बुओं को उलट-पुलट दो। ऐसा ही हुआ। तम्बू उलट पलट गये और सारे मुर्दे पानी पर उतराने लगे। नौ दिन के बाद बादल छंट गये, मूसलाधार वर्षा भी रुक गयी। सतिया हरदोई नाग के गह्वर (मांद) पर गयी और उससे कहा कि जितने बारातियों को तुमने मृत कर दिया है उन सबको जीवित कर दो। नाग क्रुद्ध हो उठा कि यदि मैं बारात को जीवित कर दूंगा तो हमारा शरीर छूट जायगा। तुमने मुझसे पहले कहा था कि भाई का मोह मुझे सता रहा है। मेरा भाई मारा जायगा पर वह मोह कहाँ चला गया? यह रहस्य मुझे बता दो। जाओ तुम अपने बंगले में बैठो। मैं बारात जीवित कर दूंगा। (२४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—इनरासन = इन्द्रासन। बदरी = बादल। झाटा = मूसलाधार वर्षा। बरतिहा = बाराती। उठल रिसियाय = क्रुद्ध हो उठा। चोला = शरीर। अकिल गइल बउराइ = अक्ल बावली हो गयी। मोहिया = मोह, ममता। भेंटिया = भेंट।

भावार्थ—सतिया हरदोई नाग के गह्वर या बांबी से अपने बंगले पर गयी। आधी रात में हरदोई उठा तथा उसने मर्जन राम, बांठा, धोबी अजई, देवसिया, शिव हरि, सारे बाजे वाले तथा सभी बारातियों का विष उतार लिया। फिर मलसांवर का विष उतारा एवं लोरिक के तम्बू में गया। उसके बाद भागते हुए वह सतिया के बंगले पर गया और कहने लगा कि मेरे ब्रह्मांड पर विष चढ़ गया है, मेरा शरीर छूट जायगा। सती ने अपने सत से दूध बनवाया और उसमें नाग को ठंडा किया। विष उतर जाने के बाद नाग अपने बिल में चला गया। इधर सारी बारात जग गयी। सब लोग दातुन-कुल्ला करके स्नान करने लगे। अजई धोबी भी उठा और लोरिक के

तम्बू में जाकर उसने उससे नाश्ता पानी कराने के लिए कहा। किन्तु वहाँ खाने की सारी चीजें समाप्त हो गयी थीं। लोरिक का वहाँ कोई परिचित नहीं था। अतः उसने धोबी से कहा कि तुम्हारा सोहवल में परिचय है। अगर तुम सगड़ पर खर्चा जुटवा दो तो मैं बहुत कृतज्ञ हूँगा। (२५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—घूमि के = लौटकर। विख = विष। बजनिहन = बाजा बजाने वाले। बरतिहन = सारे बाराती। बरमांड = ब्रह्मांड। छूट जाला रे चोला हमार = हमारा शरीर छूट जायगा। नादो = नाद। दतुवन = दातून। दतुवन कुल्ला कइके = नित्य क्रिया से निवृत्त होकर। गोहरावै = पुकारने लगा। दाना पानी करा द्या = नाश्ता पानी करा दो। चाउर = चावल। चुकल = समाप्त हो गया। नेबुल = नीबू। आटा गउजइया = गेहूँ और जौ का आटा। नाहीं चिन्हल बाड़ै = परिचित नहीं है। गंजवा दा = एकत्र करा दो, जमा करा दो।

भावार्थ—तब लोरिक से धोबी ने कहा—तुमको कोई नहीं पहचानता अतः तुम गाँव सोहवल में जाओ। मैं तुम्हें उपाय बताता हूँ। लोरिक अपनी निरखी, दोहरी तथा तमांचा धारण कर, एवं तवा (कवच) तथा ओड़न से सुसज्जित होकर सोहवल चला और झिंगई बनिया के द्वार पर पहुँचा। झिंगई गड़गड़ा पी रहा था। उसने लोरिक का सुन्दर स्वरूप देखा और उसे पकड़कर कुर्सी पर बैठाया, फिर पूछा कि तुम कहाँ से चले हो और कहाँ जाओगे? गउरा के अहीर ने उसे बताया—यहाँ से बहुत दूर गउरा है। हम वहाँ से आये हैं और हमारे राजा ने यहाँ सगड़ पर डेरा डाला है। हम लोगों का यहाँ खर्चा चुक गया है इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ। तुम सारा सामान लदवा कर ले चलो वहाँ से तुम सोना चांदी लेकर वापस आओगे। उसने सहुआइन से आकर बताया कि सोहवल में ऐसा पुरुष आया है कि मैंने उसके समान दूसरा व्यक्ति नहीं देखा है। वह पूजा करने योग्य है। जब सहुवाइन ने आकर उसे दरवाजे पर देखा और उसकी लोरिक से नजर मिली तो वह गिर पड़ी। (२६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—होलिया = हुलिया, विवरण। केहुना = कोई नहीं। सूरत = सौंदर्य। बदनिया = शरीर। बरनन = वर्णन। डेवढ़िया = ड्योढ़ी, देहली।

भावार्थ—तब सहुआइन ने कहा—अरे साहु! ऐसा पुरुष तो मैंने किसी देश में नहीं देखा है। वह जितना खर्चा मांगे, लदवा दो। सहुआइन की आज्ञा से चावल, दाल, आटा, नमक, तेल, मसाला; सब कुछ लद गया और तम्बू में पहुँचा दिया गया। इसके बाद धोबी अपना मुंगदर लिये हुए तम्बू से बाहर आया और साहु के निकट आकर कहने लगा। या तो हमारा खर्च राजा बमरी चलावैं या यहाँ की प्रजा चलावे। तुम हमारे सामने से भाग जाओ नहीं तो मैं यहाँ तुम्हारी जिंदगी समाप्त कर दूँगा। (२७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सहुआइन = साहू की स्त्री। साव = साहू। हुकुम = हुक्म। पयाम = संदेश, पैगाम। बही = हिसाब किताब की पुस्तक। दुवाइत = दावात। टपदे = शीघ्र। बरधी = बैल। मुंगरवा = मुगदर। पाहुन = दामाद। परजा = प्रजा।

भावार्थ—यहाँ गायक फिर राम का नाम स्मरण करता है और कहता है कि राम के गुणगान से कोटि-कोटि अपराध कट जाते हैं। यहाँ के संगी साथी छूट जायेंगे, कुटुम्ब और परिवार छूट जायगा। इस कलियुग में यदि तुमने राम नाम को भुला दिया तो तुम्हारा शरीर मिट्टी में मिल जायगा। इस सुमिरन के बाद कथा आगे बढ़ती है। चावल, दाल, घी, नींबू, अचार सब कुछ एकत्र हो गया। बारात घी और खिचड़ी खाने लगी। इधर बारह जोड़ी सिंगे तथा चौदह जोड़ी करताल बजने लगे। चौदह जोड़ी धौंसे (नगाड़े) भी बजने लगे। वहाँ कान देना कठिन हो गया है।

इधर राजा बमरी सोहबल में घबरा उठे। ऐसे बाजे सोहबल में कभी नहीं बजे। ऐसे पुरुष सोहबल में कभी नहीं आये। बमरी ने धावन को बुलाया और उसे मोती सगड़ पर भेजा कि पता लगाओ। कहीं राही, बटोही, या कोई उमराव आया है। धावन वहाँ गया। सुर्जन डोम और बोठा के तम्बू को देखते हुए वह धोबी के तम्बू में गया। उसे देखकर धावन घबरा गया। यह वही व्यक्ति था जिसको दसवंत तथा भिमली ने ऐसा पदाघात किया था कि उसकी पसली की हड्डी टूट गयी थी। इसके उपरान्त धावन देवसी और सिवगढ़ के तम्बू पर गया। फिर मलसाँवर के तम्बू के निकट आ गया। मलसाँवर वैसे ही था जैसे राजा बमरी की बेटी सती थी और जिसका नाम मदाइन था। (२८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—समउरिया = समवयस्क। कुटुम = कुटुंब। घरनी = पत्नी, घरवाली। मुलुक संसार = देश तथा संसार। कलऊ = कलियुग। सूबा = सूबे का प्रशासक। उमराव = रईस। पड़हुआ = पड़ाव डालने वाला। एक दाँई = एक बार। हनि के = जमाकर, जोर से।

भावार्थ—धावन मलसाँवर का तम्बू छोड़कर लोरिक के तम्बू के निकट आया। लोरिक ने उसे जोर से डांटा। तुम चोर हो अथवा चौकस हो? क्या मेरा टूटा हुआ जूता लेने के लिए इस मोती सगड़ पर आये हो। मैं तुम्हारी खाल में भुसा भरवा दूँगा। डरके मारे धावन थर-थर काँपने लगा और कहने लगा जैसे मैं राजा बमरी का धावन हूँ वैसे ही तुम्हारा भी धावन लगूँगा। (२९)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सोझे = सीधे। दसनह धावन बलको जोरे = दोनों हाथ जोड़कर।

भावार्थ—तब वीर लोरिक धावन (गांगी) को बुलवाता है और अपने बंगले में उसका बाल बनवाता है, स्नान करवाता है फिर कच्छा और पीताम्बर पहनने को देता है और विदाई में उसे सोना देता है। फिर गांगी लोरिक से उसका परिचय पूछता है। लोरिक अपना परिचय देता है कि मैं गउरा का रहने वाला हूँ। मेरे पिता का नाम

टिकई तथा माता का नाम खोइलनि है। वह यह भी बताता है कि हम दो भाई हैं। एक बोहा में गाय चराते हैं और मैं ठकुराई करता हूँ। धोबी अजई ने यहाँ अगुवाई की है। अभी तक मैंने भाई मलसाँवर का विवाह सतिया से नहीं कराया है तथा अभी हम डोली लेकर कनउज नहीं जा सके हैं। ऐ धावन। जाकर तुम कह दो कि बमरी थाली और कपड़ा लेकर आ जायँ और भइया को तिलक चढ़ा जायँ तथा सतिया का विवाह कर दें ताकि हम लोग कनउज चले जांय। धावन यह सुनकर सोहवल चला गया और बमरी की कचहरी में पहुँचा। बमरी ने धावन से समाचार पूछा। उसने बताया—"न तो ये राही हैं और न बटोही हैं। ये उमराव हैं। जो धोबी (अजई) यहाँ बारह वर्ष रह चुका है और दसवंत भइया के मारने से जिसकी पसली टूट गयी थी, उस धोबी ने अगुवाई की है। जितनी बालकन्याएँ सुहवल में हैं। उतने वीर मोती सगड़ पर टिके हुए हैं। एक विचित्र बात सगड़ पर हुई है। दसवंत की अब मृत्यु निकट आ गयी है। (३०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कछनी = कच्छा। पीताम्मर = पीताम्बर, पीला वस्त्र। कोखिया = कोख। डांडी = डोली। थरिया = थाली। थनवा = थान का कपड़ा। नाऊ = नापित। जियरा = जीव। बादी = शत्रु, विरोधी।

भावार्थ—बमरी यह सुनते ही क्रुद्ध हो उठा। उसने दो सिपाहियों को अजई धोबी के श्वसुर खेदू धोबी को पकड़ लाने के लिए भेजा ? सिपाही खेदू के द्वार पर गये और उसकी कलाई पकड़ कर उसे बमरी के दरबार में लाये। खेदू पर बमरी बहुत क्रुद्ध हुआ और कहने लगा कि तुम मेरे सामने अपने पाहुन अजई को नहीं लाये तो तुम्हारे बच्चों को मैं कोल्हू में पेरवा दूँगा। घँटे भर की छुट्टी मिली। वह मोती सगड़ के घाट आया। यहाँ धोबी अजई भींटे पर बैठा हुआ था। जब उसने अपने श्वसुर को देखा तब वह डर कर अपने तम्बू में भाग गया और चद्दर तान कर सो गया। खेदू लोरिक के फाटक के पास पहुँचा। लोरिक ने उसे जोर से डाँटा और पूछा तुम चोर हो या चँडाल हो। मैं तुम्हारे शरीर में भूसा भरवा दूँगा। खेदू ने उत्तर दिया—'मैं अपने पाहुन अजई से मिलने आया हूँ। उनकी सास और सरहज ने यह शपथ ली है कि जब तक वे पाहुन को देख न लेंगी तब तक अन्न और जल नहीं ग्रहण करेंगी। मैं भी उनको देखे बिना पानी नहीं पीऊँगा।" लोरिक ने अजई से कहा कि अपने श्वसुर से भेंट कर लो पर धोबी को कँपकपी छूटने लगी और उसे तेज बुखार हो आया। उसने खेदू से न मिलने की इच्छा प्रकट की। पर लोरिक की आज्ञा से वह निरखी, दोहरी, तमंचा तथा मुंगदर आदि लेकर तैयार हो गया और खेदू के किले में पहुँचा। खेदू ने पतोहू को आज्ञा दी कि तुम इन्हें जल्दी खिचड़ी खिला दो। मैं इन्हें राजा बमरी के किले में पहुँचा आऊँ, नहीं तो हमारे सभी प्राणी मारे जायँगे। (३१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—दुई = दो। धइ लियाव = पकड़ लाओ। कलई = कलाई। गहुवर = जमकर। छुटिया = छुट्टी। सोझे = सीधे। चदरिये = चादर।

कत्तो न = कहीं नहीं । लवकति बाड़े = दिखाई पड़ता है । टुटही = टूटी हुई । पनही = जूता । दीदार = दर्शन । गुड़गुड़िया = कंपकंपी । तिजार = तेज ज्वर । कलइया = कलाई । सीर = सिर । एनकर = इनका, इनकी । कसमखाइ गइलीं = शपथ लेली । सूरत = मुख । बइठका = घर में पुरुषों के बैठने की जगह । पतोहू = पुत्र वधू । ओलियाय देईं = प्रवेश करादूँ । परनिया, = प्राणिजंन ।

भावार्थ – खेदू की पतोहू ने खिचड़ी तैयार की और अजई खाने के लिए बैठ गया । तब उसकी सरहज रोने लगी कि ऐ ननदोई । मेरे पति और बच्चे किले में मारे जायँगे । भला तब उनके माता-पिता कैसे जीवित रहेंगे ? ऐ ननदोई । तुम सोहवल में मारे जाओगे । हाय गउरा में मेरी ननद की नौका डूब जायगी । (३२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी — बखरी = घर । बइठक = बैठक । पुरुषों के बैठने और आराम करने का स्थान । लरिका परानी = बाल बच्चे । पटवा के अड़वा = पर्दे की ओट में । हलल हउवै = धोबी आगे बढ़ता जा रहा था । टहरे पर = चौके पर, खाने के पीढ़े पर । पटवा = पर्दापट । अड़वा = ओट में । रुवउया = रुदन । ननदोई = ननद । का पति । महतारी = माँ । सेन्हुरवा = सिंदूर, पति । चउकवा = चौकपर । रांड़ = विधवा

भावार्थ—धोबी अजई की दृष्टि गोपी पर पड़ गयी । आंसुओं से उसकी चुनरी भीग गयी थी । अजई ने उससे दुख का कारण पूछा और कहा कि जब इसका भेद बता दोगी तभी मैं भोजन करूँगा । तब गोपी ने कहा दो कौर खिचड़ी खालो । तुम्हें बमरी के किले में कैद किया जायगा । दो कौर खिचड़ी खाकर धोबी उठ गया, खेदू से उसने कहा मैंने जेवनार करली । तब खेदू अजई को दारू की दूकान पर ले गया और उसे इतनी शराब पिलायी कि वह नशे में चूर हो गया और मुंगदर उठाकर गली में भांजने लगा और जोर से चिल्लाने लगा । बमरी से मेरी भेंट करा दो । खेदू बमरी के किले के पास अजई को ले गया । जब उसने किले के फाटक को देखा तब उसका नशा उतर गया । खेदू चुपके से वहाँ से भाग गया तथा अजई कैद कर लिया गया । बमरी ने हुक्म दे दिया कि अजई को मार डाला जाय । उसको पलटन ने चारो तरफ से घेर लिया । किले में लड़ाई छिड़ गयी । अजई अपने मुंगदर के साथ लड़ाई करने लगा और बमरी का सारा दल विकल हो उठा । । बमरी ने उन्हें ललकारा तब पलटन ने ललकारते हुए अजई को घर दबाया । उसका मुशुक चढ़ाकर एक गड्ढे में ढकेल दिया और उसकी छाती पर कोल्हू रखवा दिया । उसके नखों में खपचियाँ ठोकवा दी गयीं । इसी प्रकार सात दिन व्यतीत हो गये । धोबी की आँखों से झर-झर आंसू गिर रहा था । वह कहने लगा— लोरिक क्या तुम मोती सागड़ पर मर गये ? मैं यहाँ संकट में पड़ा हूँ । बनसत्ती देवी के कानों में यह बात पहुँची और लोरिक को यह सूचना दी कि धोबी किले में कैद है । अगर वह सोहवल में मर जायगा तो यहाँ तुम्हारी जड़ उखड़ जायगी । (३३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—भीजि गइलों = भीग गई। बिसमाद = दुख। ठहरे पर = इसी ठहर पर, इसी स्थान पर। जेवनार = भोजन, न्यौता। कवर = कौर, ग्रास। परैल्या बनखान = कैद होंगे। डोंगा = नाव। उहवां से = वहाँ से। गब दे = जल्दी। नसवा = नशा। नावा रे बनखान = कैद में डाल दो। लोहवन की कोठरी = लोहे का कमरा। चारि अलंगे से पलटनि बीचवे में छेकलं = चारों ओर से पलटन ने अजई धोबी को घेर लिया। जुलुम = जुल्म। पिछही के = पीछे से। तोनहन = तुमलोग। तरहों = नीचे। मुसुकिया = मुसुक। गबड़े = गड्ढा। छतिया = छाती। नहन = नाखून। खपचरिया = खपच्चियाँ। सांसत = विपत्ति। सोरिया = जड़।

भावार्थ—तब लोरिक अपने तम्बू से उठकर मलसांवर के तम्बू में गया और उन्हें बताया कि धोबी बनखान में पड़ा हुआ है। आप सगड़ पर बारात की देखभाल कीजिए। मैं सोहवल के बाजार में जाऊँगा। मलसांवर ने यह सुनकर अपना अग्नि बाण साधा। मैं सोहवाल को फूंक दूंगा और धोबी की रक्षा हो जायगी। पर लोरिक ने उन्हें मना किया, ऐसा करने से भावज सतिया भी जल जायगी। मलसांवर ने बाण रख दिया। लोरिक अपने तम्बू में जाकर अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हुआ फिर सारे देवी-देवताओं का स्मरण कर बमरी के फाटक पर पहुँचा। उसके पद प्रहार से फाटक टूट कर महरा उठा। देवी दुर्गा धोबी के पास गयीं और माया की ऐसी रचना की कि सभी वहाँ पैर तानकर सो गये। लोरिक ने धोबी को सुझाया कि तुम अपनी छाती फुला कर चौड़ी कर दो ताकि नाल के तीन टुकड़े हो जायं। इसके बाद तुम दाहिने से बायें उलट जाओ ताकि छाती पर से कोल्हू हट जाय। धोबी ने ऐसा ही किया। वह मुक्त हो गया तथा अपने नखों की खपचियों को जमीन में गाड़ कर मोती सगड़ पर आ गया। इधर सवेरा हुआ और सिपाहियों ने जाकर देखा तो गड्ढे में धोबी नहीं था। बमरी का मस्तक नीचे हो गया। उसने पत्र लिखकर सिलहट में धावन को भेजा और अपने दो पुत्रों भिमली और दसवंत को बुलाया। पत्र में लिखा था—बारह पाल का गढ़ गउरा है तथा कनउज के तिरपन बाजार हैं। वहाँ का लोरिक शत्रु बनकर चढ़ आया है। धोबी अजई ने अगुवाई की है। सोहवल में जितनी बाल कन्याएँ हैं उतनी ही संख्या में बारात आयी है। तुम लोग सामना करने के लिए आ जाओ। दसवंत ने पत्र पढ़ा फिर भिमली को भी सुनाया। भिमली सुनकर गरज उठा। पूर्व में मैं पुर पाटन गया, मेरा कोई जोड़ नहीं मिला। दक्षिण देश के पहाड़ों में गया तब भी कोई बराबरी का नहीं मिला। पश्चिम पंजाब में भी कोई समानता नहीं कर सका। उत्तर नेपाल में भी कोई नहीं मिला। इस बार अगर पिता का प्रण टूट गया, तो ऐ भइया, तुम्हें लज्जित होना पड़ेगा। (३४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—अगिन कर बान = अग्नि बाण। हलल = पार करके। खियाल = ख्याल। सीना = छाती। नार = लोहे की नाल। मेल्हि गइलै = करवट बदल ली। गयल रे ढंगि लाय = लुढ़क गया। नहवा क = नख का। कोल्हुवा = कोल्हू।

खमचार = खप्पचियाँ। गड़वड़ा = गड्ढा। तेकरे = उसके। मउर = मुकुट, मस्तक। पतवा ठेकान = पता ठिकाना। बारह पाल = बारह होने के। अन = अन्न। मतंगिया = हाथी की भाँति। धावन = संदेशवाहक। गठिवावे = संदेशवाहक ने गाँठ में बाँधा। संड़िनी = सांड़िनी। देलें रे दवराय = दौड़ा दिया। गंडक = बाधा, रुकावट। नेतर फइलाय = नेत्र फैलाकर, आँख खोलकर। बिड़र = दूर-दूर फैला हुआ। जोड़ न मिलल = बराबरी का नहीं मिला। कोन = कोना। पिरथमी = पृथ्वी। लग्गन से = अपने डंडों से। अइली थहाय = थाह लिया। मउरिया = मस्तक, मुकुट। बीरना = भाई।

भावार्थ—जितने पट्ठे अखाड़े में एकत्र हुए थे उनसे दसवंत ने कहा—ऐ जवानो, तुम लोग हमेशा सोहवल दिखा देने के लिए कहते थे। आज बारी आ गयी है। कायर व्यक्ति लंगोट छोड़कर भाग खड़े हुए। जो वीर थे वे मैदान में डट गये। दसवंत तथा भिमली ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि वे पट्ठों को दानापानी करा दें। हम सब लोगों को सोहवल के बाजार जाना है। भिमली और दसवंत अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर हाथी पर बैठ गये और अपना बिगुल बजा दिया। आगे-आगे पलटन जा रही थी और पीछे से हाथी जा रहे थे। जब सब लोग सिलहट पार करने लगे तो दो सियार आगे से रास्ता काट गये। भिमली को अपशकुन के लक्षण दिखाई पड़ने लगे। दसवंत ने कहा लगता है कि बहिन सतिया काल होकर उत्पन्न हुई हैं। पिता बमरी भी हमारे लिए काल हो गये हैं, ऐ भाई हमारी मृत्यु निकट आ गयी है। (३५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—जूटल बाड़ें = एकत्र हुए हैं। पारी = बारी, समय। कादर = कायर। जंघिया = जाँघ। निगोटा = लंगोट। गुरवां = शूरमा, वीर। रइन = मोर्चा। अडर = आर्डर, आज्ञा। पट्ठन के = पट्ठों को। दानापानी करा द्या = दानापानी करा दो, जलपान करा दो। हउदा कसवा द्या = हौदा कसवा दो। डाँकन लागे = पार करने लगे। सरहद = सीमा। सोझे = सीधे। असगुन = अपशकुन। कालि होके = काल होकर। जियरवा = प्राण।

भावार्थ—हाथी पर बैठे हुए दसवंत बड़े जोर से तड़का। मैंने ऐसे बहुत से अपशकुन देखे हैं? उन्होंने हाथी को हाँक दिया। सोहवल में उनके पहुँचने की खबर मिल गयी। सोहवल में पहली बार विवाह का नाम सुना गया था अतः गोपियाँ वहाँ उत्साह में घर-घर दौड़ रही थीं। भिमली और दसवंत के आने की सूचना पाकर वे कहने लगीं—हमारे भाग्य फूट गये हैं, अब सारे वर मारे जायेंगे। हमारे जोवन के तीन पंथ व्यतीत हो चुके हैं चौथा पंथ निकट आ गया है। सोहवल में रहते-रहते हमारे दाँत टूट गये, हमारे सिर के बाल सफेद हो गये। (न जाने) बमरी के बेटे कब मारे जायेंगे और हमारा भाग्योदय कब होगा? (३६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सबद = शब्द। गहुअर = गंभीर। दउरन लागे =

दौड़ने लगे। दुलहा = वर। फूटि गइल भाग हमार = हमारा भाग्य फूट गया। सनकुट = सफेद। कपरवन के = सिरका। बेलकुल = बिल्कुल। बार = बाल।

भावार्थ—दोनों भाई सोहवल पहुँचे। यहाँ राजा बमरी की पलटन सजी हुई है। दरबार में पहुँचकर दोनों भाइयों ने राजा बमरी के पैर छुए तथा कारण पूछा कि उन्होंने पत्र लिखकर उन्हें क्यों बुलवाया है? तब बमरी ने सारी बातें बतायीं और कहा कि उस धोबी की, जिसकी पसली तुमने तोड़ दी थी, अगुवाई पर यहाँ बारात आयी है। जितनी कन्याएँ यहाँ अविवाहिता हैं उतने ही पुरुष आये हैं। तुम पहले अगुवा को मार डालो फिर अन्य शत्रुओं का संहार करो। दसवंत ने पिता बमरी से कहा कि पहले हम मोती सगड़ पर जाकर यह पता लगा रहे हैं कि कोई सुयोग्य 'सूबा' आया है या सम्बन्ध कायम करने योग्य 'भूपाल' आया है?

दोनों हाथी पर चढ़कर मोती सगड़ चले। धोबी ने जब उनको भींटे पर देखा तो डर कर भाग खड़ा हुआ। अपने तम्बू में जाकर तथा अपनी पीठ पर गद्दा फेंक कर सो गया। फिर दोनों भाई सुर्जन डोम के तम्बू पर पहुँचे। सुर्जन का खंभा (पैर) कदली के पेड़ की भाँति दिखाई पड़ रहा था। उसकी 'मुसुक' खैर की डाल की भाँति थी। उसकी गर्दन पर सेरों धूल दिखाई पड़ रही थी तथा उसका मस्तक चमक रहा था। उसके कानों तक दो-दो फेरों की मूँछे थीं। उसने दोनों भाइयों को डांटकर कहा—तुम लोग चोर हो, चंडाल हो, भूत हो या बैताल हो? आज सूबे से सगड़ पर तुम्हारी भेंट होगी। वह तुम्हारा मस्तक काट लेगा। (३७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—पतिया = पत्र। मारि घाला ललकार = ललकार कर मार दो। ठांवइ = उसी स्थान पर। जो रै जोग = जोड़ने योग्य। हिताई = सम्बन्ध, रिश्तेदारी। पयान = प्रस्थान। केदरियन = केला। मुसुक = मुश्क, कँधे और कोहनी के बीच का भाग। खयर = एक प्रकार का पेड़ जिसके गोंद से कत्था बनता है। सेरन = सेरों। धूर = धूल। गरदन = गर्दन। लउकै = दिखाई पड़ रहा है। पवन = पबित्र। अइठलें = ऐंठे हुए है। बैताल = वैताल।

भावार्थ—जब सुर्जन ने इस प्रकार की बात कही तब मिमली ने दसवंत को संकेत किया कि वह उसकी जाति पूछें। दसवंत ने सुर्जन से पूछा—भइया, तुम ऐसी बात कर रहे हो, हाथी को सूअर बना रहे हो। तुम्हारी कौन जाति है? सुर्जन ने जवाब दिया—मैं सुर्जन डोम हूँ, मैं कनऊज के बाजार में रहता हूँ। वीर लोरिक के साथ यहाँ बारात करने आया हूँ। गउरा से बहुत लोग आये हैं। बड़े-बड़े लखपति और करोड़पति आये हैं। दसवंत ने सुर्जन से गउरा के बारे में सूचना चाही। सुर्जन ने बताया – गउरा में बारह पुरवे हैं। उसमें कनउज के तिरपन बाजार हैं। उसमें तेली, तमोली, भड़भूजे तथा कलवार रहते हैं। वहाँ रघुवंशी बसते हैं जिनकी कटि में तलवारें लटकती रहती हैं। वहाँ यदुवंशी और ग्वाल भी रहते हैं। घर-घर में वहाँ अखाड़ा है

जहाँ सुबह शाम लेजिम घूमता रहता है। वहाँ सारा गाँव लड़ने वाला है। जब कभी शत्रु से उनका सामना होता है वे उसके मुँह में तलवार घोंप देते हैं। (३८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—माय = भाई। एइसन बतिया बनेला बतियाय = इस प्रकार की बात कर रहे हो। ओगर = सम्पूर्ण। पेल देहलस = ठोंक दिया, भर दिया।

भावार्थ—वहाँ से दोनों व्यक्तियों ने बांठा चमार के तम्बू की ओर अपने हाथी हाँके। बाँठा अपने तम्बू में अउंसा-धउंसा (गाजे-बाजे) एकत्र कर सो रहा था। उसके तम्बू में सबकी पीली धोतियाँ और सबके मुकुट टंगे हुए थे। भिमली और दसवंत ने देखा सबके हाथों में कंगन बंधे हुए हैं और सबके पैर लाल रंग से रंगे गये हैं। भिमली ने दसवंत से कहा कि मैं सोहवल में अपशकुन देख रहा हूँ। मुझे ऐसा आश्चर्य कभी नहीं दिखाई पड़ा। जितने बाजा बजाने वाले हैं सबके सब मोती सगड़ पर दुलहा बने हुए हैं। इसके बाद दोनों भाई धोबी के तम्बू में पहुँचे। वह भय के मारे काँप रहा था। उन्होंने हाथियों को आगे बढ़ाया तो देखा कि चारों ओर अपशकुन दिखाई पड़ रहे हैं। किसी ने जादू का खेल किया है। आगे बढ़ने पर देवसी का तम्बू आया, फिर सिवहरिया का। सिवहरिया सो रहा था। भिमली ने कहा—मैं तो समझ रहा था यहाँ मनुष्य टिके हुए हैं पर ये तो भूत और शैतान हैं। दोनों भाई फिर संवरू के तम्बू पर गये। भिमली ने संवरू को देखकर कहा-कन्या के योग्य वर दिखाई पड़ रहा है। हमें सोहवल गाँव में लौट जाना चाहिए और बमरी दादा को समझाना चाहिए कि थाली, वस्त्र, कुटुम्ब, नाऊ, ब्राह्मण सबको लेकर सवा मन सोने के साथ मोती सगड़ पर तिलक चढ़ा देना चाहिए। इस प्रकार गउरा में अच्छा सम्बन्ध हो जायगा। आगे जाने पर लोरिक का तम्बू दिखाई पड़ा। घंटे की आवाज सुनते ही वह फाटक पर सावधान हो गया और जोर से आवाज लगायी तुम लोग चोर हो, चंडाल हो, भूत हो या शैतान हो। मैं तुम्हारी खाल में भूसा भरवा दूँगा। दसवंत ने लोरिक को बताया कि हम लोग रास्ता भूल गये हैं। हमने तुम्हारे लाल-लाल तम्बू देखे हैं, उनमें लाल कनातें लगी हैं। इस सगड़ पर सुंदर-सुंदर व्यक्ति दिखाई पड़े अतः हमारे हाथी इधर ही मुड़ गये। भाई, तुम अपना रहस्य बताओ कि इस मोती सगड़ पर क्यों टिके हो? क्या तुम्हारा रास्ता भूल गया है। यदि तुम्हारा खर्च चुक गया है तो तुम्हारे पास हम गाड़ी लदवा कर भेज देंगे। लोरिक ने उत्तर दिया—हमारा खर्चा नहीं चुका है, न हमारा रास्ता ही भूला है धोबी ने अगुवाई की है। हम राजा बमरी की कन्या को विवाहने आये हैं। वह कन्या अत्यन्त सुन्दर है। हम यहाँ बैठे हुए दसवंत की खोज कर रहे हैं। अभी तक हमारी उनसे भेंट नहीं हुई। (३९)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—धउंसा = एक प्रकार का ढोल। अउंसा उसके साथ जुड़ा हुआ है जिसका कोई विशेष अर्थ नहीं प्रतीत होता। गांजिके = एकत्र करके। पियरी = पीली। कंगन = विवाह का सूत्र। असगुन = अपशकुन। कपरे पर = सिर

पर । बजनिहाँ = बाजा बजाने वाले । चौमुख = चारो ओर । धनुवा = धनुष । मानुख = मनुष्य । बेल्कुल = बिलकुल । बुकनिया = पीसा हुआ चूर्ण, लाल रंग जो विवाह के समय पैर में लगाया जाता है । बारि कुँवरवा = बाल कुँवार । बरवा = वर । सोझई = सामने । लवकत हउवैं = दिखाई पड़ रहे हैं । बीड़ना = भाई । बरनिया = वर्ण के, सुन्दर, उपयुक्त । थरिया थान = थाली और वस्त्र । कुटुमवा = कुटुम्ब । पलिरेवं = परिवार का संक्षिप्त रूप गायक ने कर दिया है । घं = घाट को गायक ने संक्षिप्त कर दिया है । हितइया = रिश्तेदारी, सम्बन्ध । छतवा = क्षति के समय, दुख में । हितवा = हित.। सयरेतं = शैतान । खलिया = खाल । चुकल होंइहैं = समाप्त हो गया होगा । गड़िया छकड़वा = छकड़ा गाड़ी । पयंडा = रास्ता । जोहत रे हउवैं = खोज रहे हैं ।

भावार्थ —दसवंत ने वीर लोरिक से पूछा—क्या गउरा से कोई तिलक या तुम लोग सिर्फ धोबी की अगुवाई पर यहाँ चढ़ आये । क्या कोई और भी अगुवा है । तब बुढ़िया खोइलनि के बेटे लोरिक ने कहा—"एक समय की बात है कि राजा बमरी की गाय बहक कर मेरी गायों के अड़ार में चली गयी । उनके बेटा झिगुरी वहाँ आये और मलसांवर के साथ दूध लिट्टी खाकर रहे । फिर सातवें महीने उन्होंने सोहवल आने की इच्छा प्रकट की और कहा कि हमारे तुम्हारे बीच रिश्तेदारी होनी चाहिए । इस पर भइया मलसांवर ने कहा—न मेरी बिटिया है और न बेटा है । हम दो भाई बाल कुँवार हैं । कनउज में कैसे रिश्तेदारी होगी ? झिगुरी ने मलसाँवर से कहा—"जैसे तुम्हारा जन्म गउरा में हुआ है वैसे ही मेरी बहन सतिया का जन्म सोहवल के बाजार में हुआ है । जैसे तुम्हारे भाई लोरिक का जन्म यहाँ हुआ है वैसे ही दसवंत और भिमली उत्पन्न हुए हैं । उन्होंने कहा था कि जाकर बमरी को मनायेंगे नहीं तो खेत पर लोहा लग जायगा और तलवारें निकल पड़ेंगी । जो सोहवल का लोहा जीत लेगा वह विवाह करेगा । सतिया के भाई उस झिगुरी का आज पता नहीं लग रहा है ।

तब भिमली ने दसवंत से कहा—चलिये, दादा बमरी को समझाया जाय । सवा मन सोना, एवं कुटुम्ब-परिवार तथा नाऊ और ब्राह्मण को साथ लेकर मोती सगड़ पर तिलक चढ़ा दिया जाय । दसवंत बमरी के पास गये । बमरी ने दसवंत से सारा हाल पूछा । दसवंत ने उनसे निवेदन किया चलिये मोती सगड़ पर तिलक वरक्षा कर दें, गउरा में अच्छी रिश्तेदारी हो जायगी । बड़े अच्छे सम्बन्धी आये हैं । यह बात सुनते ही बमरी जलभुन उठे और दसवंत को डांट कर कहा—'तुम रोज कहा करते थे कि हमें मर्दों से भेंट करा दो । आज जब मर्दों से भेंट हो गयी तो तुम्हारे पैर कांपने लगे हैं ? (४०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—अउरो केहू = और कोई । राढ़ी = झगड़ालू, जिद्दी (राटि से) सिहिनी = सिहिनी । बार = बाल, बच्चा । एठियन = इस स्थान पर । समै = समय । बहक के = बहक कर, भूल कर । लिट्टी = आटे की बनायी हुई रोटी जो प्रायः कंडे पर सेंकी जाती है । बारइ = बचपन से । बियाह = विवाह । जीत पाई

लोहा = अगर युद्ध जीत सका। पतवा = पता। कपल = कौल, वचन। कुटुम = कुटुम्ब। हित = सम्बन्धी। मर्द = वीर पुरुष। टंगरिया = पैर।

भावार्थ—इधर दसवंत और बमरी के बीच बातचीत हो रही थी तब दसवंत की पत्नी ने अपनी सेविका को बुलाया और बताया कि मैंने स्वप्न देखा है कि मेरे स्वामी सिलहट से आये हैं। तुम उनसे मेरी भेंट करा दो। सेविका बमरी की कचहरी में गयी और सिपाही को संकेत से बुलाया और कहा कि तुम मेरी दसवंत से मुलाकात करा दो। दसवंत आये और सेविका ने कहा कि रानी बुला रही हैं। दसवंत रानी के पास पहुँचे। वह सोलह सज्जा तथा बत्तीस शृंगार किये हुए थीं। उनके माथे पर टिकुली थी और आँख में काजल था। रानी ने स्वामी की आरती उतारी और सजल नेत्रों से कहा—तुम सिलहट से यहाँ क्यों आये? तुम्हारे प्राण यहाँ नहीं बचेंगे। मैंने जबसे अहीर के आने का समाचार सुना है किले में मेरे पैर काँप रहे हैं। अभी से मेरी बात मान लो। खेत पर लड़ने मत जाओ। मुझे डर लग रहा है। तुमने अभी कल ही तो मेरा गौना कराया है और मुझे इस किले में बैठा दिया है। मेरी फूल की सेज इस किले में लगी रह गयी, तुम नहीं आये। अभी मेरे गौने की साड़ी धूमिल नहीं हुई है और तुम्हारी मृत्यु की बारी आ गयी है। ऐ स्वामी अगर तुम सगड़ पर गये तो तुम्हारी जिन्दगी नहीं बचेगी। (४१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—लंउड़ी = सेविका। गोहरावैं = पुकारते हैं। संइया = स्वामी। दूतवा = दूत। बुरुजवा = बुर्ज। सनवा = सैन, संकेत। भेंटिया = भेंट। अंगुरी = अंगुली। आड़े से = आड़ से, ओट से। अजीरन = अजीर्ण, कुछ अधिक। मरकहवा = जान मारने वाला। रतनार = लाल। अइबवा = आगमन। टंगरिया = पैर। गवनवा = गौना। कंसिया-कोटिया = कांस कोट में, घास-फूस के घर में (जो जल्दी नष्ट हो जाय)। सेजरिया = सेज। चुनरिया = चुनरी।

भावार्थ—तब दसवंत ने अपनी विवाहिता से कहा। तुम पागल हो गयी हो और तुम्हारी बुद्धि मन्द हो गयी है। हम अमर होकर उत्पन्न हुए हैं। ब्रह्मा ने हमें पांच अमिट बान दिये हैं। एक लोरिक तो क्या हम चार-पांच लोरिकों को मार डालेंगे। उसने पत्नी को मारा और वह जोर से रोने लगी। मैं आदमी की बात नहीं कह रही हूँ। अहीर के साथ भूत और शैतान भी आये हैं। इधर बांये बनसत्ती तथा दाहिने दुर्गा आयी हुई हैं। छत्तीस कोटि के देवताओं का भी आगमन हुआ है। मुझे भय लग रहा है। सोहवल में हमारी नाव डूब जायगी। दसवंत ने बात नहीं मानी। दोनों भाई सवार होकर सगड़ पर पहुँचे। लोरिक ने संवरू को पुकारा कि आपका शत्रु आ गया है। लोरिक दसवंत को देखने लगे। दसवंत ने खेत पर हाथी को बैठाया और स्वयं जमीन पर उतर गया तथा ललकारने लगा। जो वीर लड़ाकू हो, अब मैदान में आ जाय। यह सुनते ही धोबी डर के मारे भाग खड़ा हुआ और लोरिक के तम्बू में जाकर दरी ओढ़ कर सो गया। लोरिक उसको बारात के इन्तजाम का कार्य सौंप कर स्वयं लड़ने के लिए तैयार हुआ।

उसने संवरू को सूचित कर दिया कि मैदान में शत्रु आ डटा है। आप सगड़ पर बारात को संभालिये। फिर अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर तथा सभी देवताओं का स्मरण कर लोरिक कूद पड़ा। दसवंत की नजर उस पर पड़ी। उसकी आँखों से झर कर आँसू टपक पड़े। विवाहिता ने जो कुछ मुझसे किले में कहा था, वह निकट दिखाई पड़ रहा है ? (४२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—अकिल = अक्ल। बउरायल = पागल। मंदा = मंद। गियान = ज्ञान। मारिनाइब = मार डालूंगा। छतिसइकोटि के देवतवा = छत्तीस कोटि के देवता। वलमुवा = बालम, प्रिय पति। डरिया = डर। बरजल मान जात्या = मना किया हुआ मान जाते। हाली-हाली = जल्दी-जल्दी। गोहरावै = पुकारे, पुकारता है। ओसरियो ना रे लगं = टकटकी लगा कर। लुकि रे गइलैं = छिप गये। पट्ठा = पहलवान, बहादुर। लड़वइया = लड़ने वाला। हलि हो गइलैं = प्रवेश कर गये। टंगरियै = टांग, पैर। इंतजामवै = इंतजाम, प्रबन्ध। दुसमनवा = दुश्मन। अलंगिया = बगल में, तरफ। बियही = विवाहिता। हमरे अंखियन = हमारी आँखों के सामने।

भावार्थ—लोरिक खेत पर तेजी से दौड़ रहा है और दुर्गा उसके पीछे दौड़ रही हैं। लोरिक दसवंत के पास पहुँच गया तथा दुर्गा ने ऐसा थप्पड़ मारा कि दसवंत की आँखों के सामने अंधेरा छा गया। वह रो रहा था। मेरी मृत्यु निकट आ गयी है पर शीघ्र उसने अपना मुंह पोंछा और लोरिक से कहने लगा—तुम कनउज लौट जाओ नहीं तो तुम्हारे घर का दीपक बुझ जायगा। तुम्हारी मृत्यु पर गोपी रात दिन रोयेगी। तब लोरिक ने उसे जवाब दिया—हमारे लिए कोई रोने वाला नहीं हैं। मैं जब छोटा था तभी माँ बाप मर गये। हम दो भाई गउरा में उत्पन्न हुए हैं। एक का तीन पंथ (पन) व्यतीत हो गया है। उनका दांत टूट गया है और सिर के बाल सफेद हो गये हैं। मैं कनउज के बाजार कदापि वापस नहीं जाऊँगा। मैं यहाँ तुम्हारा पुरुषत्व देखना चाहता हूँ। दसवंत यह सुन कर क्रुद्ध हुआ और उसने अग्नि बाण साधा। जब उसने तान कर अपना बाण फेंका बनसत्ती ने दुर्गा से कहा कि दसवंत को पकड़ लो और उसका मस्तक काट लो। बनसत्ती और दुर्गा दोनों बाण से लिपट गयीं और उसको रगड़ कर उड़ा दिया। फिर चारों ओर गहरा अंधकार छा गया। दुर्गा ने दसवंत को ऐसा थप्पड़ मारा कि उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि शत्रु मारा गया है। उसने ललकारा कि जो भी वीर शेष है, आकर लड़ें। धोबी के पास यह आवाज पहुँची तो वह डर गया। उसने बीर सांवर के तम्बू में जाकर कहा कि सगड़ पर लोरिक मार डाले गये हैं। तुम अपना डेरा यहाँ से हटा लो। विवाह के फेर में न पड़ो अन्यथा तुम्हारी जान यहाँ नहीं बचेगी। मलसांवर ने कहा मेरी पीठ का भाई मारा गया है। मैं कैसे गउरा भाग चलूं ? तुम्हारी बुद्धि मारी गयी है। सारे देश में हमारी हँसी होगी। लोग कहेंगे कि स्त्री के चक्कर में भाई मारा गया। जैसे मेरा भाई इस सगड़ पर मारा गया वैसे ही मैं भी इस सगड़ पर मारा जाऊँगा। (४३)

लोहा = अगर युद्ध जीत सका । पतवा = पता । कपल = कौल, वचन । कुटुम = कुटुम्ब । हित = सम्बन्धी । मर्द = वीर पुरुष । टंगरिया = पैर ।

भावार्थ—इधर दसवंत और बमरी के बीच बातचीत हो रही थी तब दसवंत की पत्नी ने अपनी सेविका को बुलाया और बताया कि मैंने स्वप्न देखा है कि मेरे स्वामी सिलहट से आये हैं । तुम उनसे मेरी भेंट करा दो । सेविका बमरी की कचहरी में गयी और सिपाही को संकेत से बुलाया और कहा कि तुम मेरी दसवंत से मुलाकात करा दो । दसवंत आये और सेविका ने कहा कि रानी बुला रही हैं । दसवंत रानी के पास पहुँचे । वह सोलह सज्जा तथा बत्तीस श्रृंगार किये हुए थीं । उनके माथे पर टिकुली थी और आँख में काजल था । रानी ने स्वामी की आरती उतारी और सजल नेत्रों से कहा—तुम सिलहट से यहाँ क्यों आये ? तुम्हारे प्राण यहाँ नहीं बचेंगे । मैंने जबसे अहीर के आने का समाचार सुना है किले में मेरे पैर कांप रहे हैं । अभी से मेरी बात मान लो । खेत पर लड़ने मत जाओ । मुझे डर लग रहा है । तुमने अभी कल ही तो मेरा गौना कराया है और मुझे इस किले में बैठा दिया है । मेरी फूल की सेज इस किले में लगी रह गयी, तुम नहीं आये । अभी मेरे गौने की साड़ी धूमिल नहीं हुई है और तुम्हारी मृत्यु की बारी आ गयी है । ऐ स्वामी अगर तुम सगड़ पर गये तो तुम्हारी जिन्दगी नहीं बचेगी । (४१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—लंउड़ी = सेविका । गोहरावैं = पुकारते हैं । संइया = स्वामी । दूतवा = दूत । बुरुजवा = बुर्ज । सनवा = सैन, संकेत । भेंटिया = भेंट । अंगुरी = अंगुली । आड़े से = आड़ से, ओट से । अजीरन = अजीर्ण, कुछ अधिक । मरकहवा = जान मारने वाला । रतनार = लाल । अइबवा = आगमन । टंगरिया = पैर । गवनवा = गौना । कंसिया-कोटिया = कांस कोट में, घास-फूस के घर में (जो जल्दी नष्ट हो जाय) । सेजरिया = सेज । चुनरिया = चुनरी ।

भावार्थ – तब दसवंत ने अपनी विवाहिता से कहा । तुम पागल हो गयी हो और तुम्हारी बुद्धि मन्द हो गयी है । हम अमर होकर उत्पन्न हुए हैं । ब्रह्मा ने हमें पांच अमिट बान दिये हैं । एक लोरिक तो क्या हम चार-पांच लोरिकों को मार डालेंगे । उसने पत्नी को मारा और वह जोर से रोने लगी । मैं आदमी की बात नहीं कह रही हूँ । अहीर के साथ भूत और शैतान भी आये हैं । इधर बांये बनसत्ती तथा दाहिने दुर्गा आयी हुई हैं । छत्तीस कोटि के देवताओं का भी आगमन हुआ है । मुझे भय लग रहा है । सोहवल में हमारी नाव डूब जायगी । दसवंत ने बात नहीं मानी । दोनों भाई सवार होकर सगड़ पर पहुँचे । लोरिक ने संवरू को पुकारा कि आपका शत्रु आ गया है । लोरिक दसवंत को देखने लगे । दसवंत ने खेत पर हाथी को बैठाया और स्वयं जमीन पर उतर गया तथा ललकारने लगा । जो वीर लड़ाकू हो, अब मैदान में आ जाय । यह सुनते ही धोबी डर के मारे भाग खड़ा हुआ और लोरिक के तम्बू में जाकर दरी ओढ़ कर सो गया । लोरिक उसको बारात के इन्तजाम का कार्य सौंप कर स्वयं लड़ने के लिए तैयार हुआ ।

उसने संवरू को सूचित कर दिया कि मैदान में शत्रु आ डटा है। आप सगड़ पर बारात को संभालिये। फिर अस्त्र-शस्त्र से सुजज्जित होकर तथा सभी देवताओं का स्मरण कर लोरिक कूद पड़ा। दसवंत की नजर उस पर पड़ी। उसकी आँखों से झर कर आँसू टपक पड़े। विवाहिता ने जो कुछ मुझसे किले में कहा था, वह निकट दिखाई पड़ रहा है? (४२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—अकिल = अक्ल। बउरायल = पागल। मंदा = मंद। गियान = ज्ञान। मारिनाइब = मार डालूंगा। छतिसइकोटि के देवतवा = छत्तीस कोटि के देवता। बलमुवा = बालम, प्रिय पति। डरिया = डर। बरजल मान जात्या = मना किया हुआ मान जाते। हाली-हाली = जल्दी-जल्दी। गोहरावै = पुकारे, पुकारता है। ओसरियो ना रे लगं = टकटकी लगा कर। लुकि रे गइलैं = छिप गये। पट्ठा = पहलवान, बहादुर। लड़वइया = लड़ने वाला। हलि हो गइलैं = प्रवेश कर गये। टंगरियैं = टांग, पैर। इंतजामवै = इंतजाम, प्रबन्ध। दुसमनवा = दुश्मन। अलंगिया = बगल में, तरफ। बियही = विवाहिता। हमरे अंखियन = हमारी आँखों के सामने।

भावार्थ—लोरिक खेत पर तेजी से दौड़ रहा है और दुर्गा उसके पीछे दौड़ रही हैं। लोरिक दसवंत के पास पहुँच गया तथा दुर्गा ने ऐसा थप्पड़ मारा कि दसवंत की आँखों के सामने अंधेरा छा गया। वह रो रहा था। मेरी मृत्यु निकट आ गयी है पर शीघ्र उसने अपना मुंह पोंछा और लोरिक से कहने लगा—तुम कनउज लौट जाओ नहीं तो तुम्हारे घर का दीपक बुझ जायगा। तुम्हारी मृत्यु पर गोपी रात दिन रोयेगी। तब लोरिक ने उसे जवाब दिया—हमारे लिए कोई रोने वाला नहीं हैं। मैं जब छोटा था तभी माँ बाप मर गये। हम दो भाई गउरा में उत्पन्न हुए हैं। एक का तीन पंथ (पन) व्यतीत हो गया है। उनका दाँत टूट गया है और सिर के बाल सफेद हो गये हैं। मैं कनउज के बाजार कदापि वापस नहीं जाऊँगा। मैं यहाँ तुम्हारा पुरुषत्व देखना चाहता हूँ। दसवंत यह सुन कर क्रुद्ध हुआ और उसने अग्नि बाण साधा। जब उसने तान कर अपना बाण फेंका बनसत्ती ने दुर्गा से कहा कि दसवंत को पकड़ लो और उसका मस्तक काट लो। बनसत्ती और दुर्गा दोनों बाण से लिपट गयीं और उसको रगड़ कर उड़ा दिया। फिर चारों ओर गहरा अंधकार छा गया। दुर्गा ने दसवंत को ऐसा थप्पड़ मारा कि उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि शत्रु मारा गया है। उसने ललकारा कि जो भी वीर शेष है, आकर लड़ें। धोबी के पास यह आवाज पहुँची तो वह डर गया। उसने बीर सांवर के तम्बू में जाकर कहा कि सगड़ पर लोरिक मार डाले गये हैं। तुम अपना डेरा यहाँ से हटा लो। विवाह के फेर में न पड़ो अन्यथा तुम्हारी जान यहाँ नहीं बचेगी। मलसांवर ने कहा मेरी पीठ का भाई मारा गया है। मैं कैसे गउरा भाग चलूं? तुम्हारी बुद्धि मारी गयी है। सारे देश में हमारी हँसी होगी। लोग कहेंगे कि स्त्री के चक्कर में भाई मारा गया। जैसे मेरा भाई इस सगड़ पर मारा गया वैसे ही मैं भी इस सगड़ पर मारा जाऊँगा। (४३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—थप्पी = थप्पड़ । उवार पार = आर पार । ललवा = लाल, पुत्र । दिया = दीपक, चिराग । सेंदुर = सिंदूर, पति के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । एठियें = इसी स्थान पर । रुवइया = रोने वाला । गवइया = गाने वाला । बाप मतारी = माँ बाप । टूवर = अनाथ, माता पिता से रहित । बरधे में = बचपन से । उबार = उपाय । मनुसात = पुरुषत्व, वीरता । धनुहां = धनुष । गोछवां = बाण का अग्रिम भाग । वनवां = वन । अन्हिार = अंधकार । कोइला = कोयला । कोइला अन्हि-यार = कोयले की भाँति अंधकार । थपिया = थाप, थप्पड़ । बांचल = शेष हो । दउरै = दौड़े । डेरवा = डेरा । लड़े बदे = लड़ने के लिये । फेर में = चक्कर में । पीठिया क भयवा = पीठ का भाई । मेहनवा मारे लागों = निंदा करने लगेगा । मेहरी = स्त्री, पत्नी । करनवा = कारण से ।

भावार्थ—दुर्गा ने सगड़ पर पूर्वा हवा के बजाय पछुवा हवा चला दी और वहाँ पर प्रकाश हो उठा । लोरिक को देख कर दसवंत झंखने लगा । दुर्गा ने लोरिक को संकेत किया और उसने ओड़न की मुट्ठी दबाई जिससे परोसों तक लहर फैल गयी । चुनरी की भाँति ज्वाला फूट पड़ी तथा अंगारे गिरने लगे । लोरिक ने अपनी तलवार दसवंत की गर्दन पर चलायी जिससे वह धरती पर गिर पड़ा पर वह जीवित बच निकला । उसने लोरिक पर ज्योति बाण चलाया जिससे लोरिक गिर पड़ा और पलटा खाने लगा । इधर दुर्गा के आंचल से अग्नि फूट पड़ी । चौदह कोस तक दावाग्नि फैल गयी तथा पेड़ पत्ते सुलगने लगे । सुरसरि के जल में खलबली मच गयी तथा उसमें सूंस तथा घड़ियाल उलटने लगे । दुर्गा लोरिक को हाथ में उठा कर सुरसरि के पास गयीं पर वहाँ पानी खौल रहा था । लोरिक को लेकर वह पाताल में गयीं और दूध की नदी में उसको शीतल किया तथा उसके मुँह में अमृत डाला । लोरिक उठ बैठा । उसने दोनों हाथ जोड़ कर दुर्गा से कहा—मइया को जल जाने दो । हम कनउज चलेंगे । दसवंत ने ऐसा बाण मारा है कि अब सगड़ पर हमारी जिन्दगी नहीं बचेगी । दुर्गा यह बात सुनते ही जल उठीं । उन्होंने लोरिक को फटकारा । तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाय । तुम रोज कहते थे कि किसी वीर से भेंट करा दो अब किसी वीर पुरुष से भेंट हुई है तो तुम्हारे पैर कांप रहे हैं । क्या सरलता से तुम किसी को भाभी कहोगे ? क्या सहज में तुम कनउज में फगुवा खेलोगे ? अब चलो तुम्हारा अवसर आ गया है । पर लोरिक डर गया था । उसने कनउज भागने की इच्छा प्रकट की । वह दसवंत के सामने नहीं जाना चाहता था । दुर्गा ने उसको डाँट कर कहा—तुम अकेले गउरा गुजरात भाग जाओ । (४४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—पुरुवा = पूर्व से चलने वाली हवा । पछुवा = पश्चिम से चलने वाली हवा । ओजरार = उजियार । झंखै लगलैं = झंखने लगा, अफसोस करने लगा । समाइल = प्रवेश कर गया । परास = पलाश, पत्ता । ओसरी = अवसर । परिया = बारी । खांड = खड्ग । बदनक = शरीर का । अगिन

कर बान = अग्नि बाण। धनुहा = धनुष । गोंछ = अग्रिम भाग। नइगै = टेढ़ा हो गया। गयल उधियाय = उड़ गया। जोति बान = ज्योति बाण। कलटा = पलटा। खोइंछा = आंचल। दुधवन क = दूध का। अमिरित = अमृत। राड़ी = जिद्दी, हठी। खउलति बाड़ैं = खोलता है। करेजवा = कलेजा। बजर क घात = बज्रापात। कउन्नो = कोई या किसी। सहजै = सरलता से। ओसरी = अवसर। परोसा = सिर तक।

भावार्थ—दुर्गा ने लोरिक को समझाया कि हम सात बहिनें मृत्युलोक में आयीं। कोई गया बस गया, कोई गजाधर, कोई प्रयाग और कोई पर्वत पर बस गया जिनकी पूजा संसार करने लगा। किसी ने केवट के संग जाकर उसकी नाव को खे-खे कर पार लगाया। किसी ने ब्राह्मण के पास जाकर उसको पत्रा (पञ्चाङ्ग) पढ़ने में सहायता की। हम दोनों को कोई सहारा नहीं मिला तो गायों के झुण्ड में आ गये। तुम्हारे भाई मलसांवर सो रहे थे, मैंने उन्हें जगाया। मुझे भूख लगी थी। उन्होंने मुझे सोने के गिलास में दूध पिलाया। जब पेट नहीं भरा तब संवरू ने बहंगी का दूध पत्तों में पिलवाया। फिर खीर खिलाया। फिर जब उससे भी पेट नहीं भरा तब उन्होंने कहा—मुझे ऐसा देवता नहीं चाहिए। मुझसे इतनी पूजा नहीं दी जायेगी। उन्होंने यह कहकर मुझे तुम्हारे पास भेजा कि तुम हमारा पेट भर दोगे। (४५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मिरुते में = मृत्यु लोक में। नइया = नाव। पतरा = पत्रा, पंचाङ्ग। अलम = अवलम्ब, सहारा। बैनन = गाय। बहङ्गी = काँवर।

भावार्थ—दुर्गा ने कहा—तभी से हमने तुम्हारा साथ पकड़ा है। मलसांवर ने पक्की चौखंडी बनवायी। सोने की मूर्ति बैठवाई। अर्घा बनवाया तथा कुण्डा खुदवाया दूध, घी से पूजा करवाया। तब भी हमारा पेट नहीं भरा। तब मैं तुम्हारा सत अजमाने लगी। तुमने अपनी दाहिनी जांघा फाड़ दी। मैंने अघाकर रक्त पिया और तभी मैंने कहा था कि जहाँ तुम्हारा पसीना गिरेगा वहाँ मैं रक्त दूँगी। तुम इस लड़ाई में क्यों डर रहे हो? मैंने तुम्हें गायों के बीच बरदान दिया है। तुम्हारे पैर क्यों कांप रहे हैं। तुम सगड़ पर चलो तुम्हारी विजय का अवसर आ गया है। दुर्गा पाताल से उसे मीटे पर ले गयीं और कहा कि तुम दसवंत का मस्तक काट लो तथा सतिया का बाल पकड़ कर भाँवर घुमा लो। दुर्गा स्वयं ब्रह्मा के पास दसवंत का कागज लेने चलीं। उसको अमरत्व का वरदान मिला था। अतः लोरिक उसको मार नहीं सकता था। दुर्गा ब्रह्मा के समीप पहुँची और उनको यह खबर मिली कि दुर्गा आयी हुई हैं तो ब्रह्माइन ने उनके स्वागत की तैयारी की। ब्रह्मा डर रहे थे कि कहीं दुर्गा हमारा इन्द्रासन न फूँक दें। दुर्गा ने ब्रह्माइन का हाथ तोड़ दिया फिर उनका गला पकड़ लिया और कहा कि गउरा में मेरे दो सेवक हैं। वे दोनों सगड़ पर मर गये हैं। तुम दसवंत का कागज दे दो नहीं मैं तुम्हारा इन्द्रासन फूँक दूँगी। (४६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—चउरी = देवी या देवता का चबूतरा। मूरत = मूर्ति।

बहंगी = कांवर । सकला = समिधा । पसीना दुरी = पसीना गिरेगा । रुधिल = रुधिर, रक्त । ओसरिया = अवसर । एदवां का पारी = इस बार । झोंटा = बाल । गुड़लू = रेखा, वृत्त । बादी = वैरी, शत्रु । चउका देली रे पुरवाय = चौक पुरवा दिया । चन्नन = चन्दन । कोठरिया = कमरा । कलाई = कलाई, हाथ । लमहूरे = दूरी पर ।

भावार्थ—ब्रह्माइन ने कहा कि यह मेरा काम नहीं है । ब्रह्मा की कचहरी में जाइये । दुर्गा ब्रह्मा की कचहरी में पहुँची । डर के मारे सारे देवता वहाँ से भाग गये । दुर्गा ने ब्रह्मा से दसवंत का कागज मांगा और उनको धमकाया कि कागज दो नहीं तो तुम्हारी कोठरी फूंक दूँगी । ब्रह्मा ने उनको चुनौती दी । फिर क्या था । दुर्गा ने ज्योति बाण मारा । सर्वत्र अग्नि फैल गयी । ब्रह्मा इन्द्र के पास गये तथा उन्हें आज्ञा दी कि अग्नि बुझाने के लिए वर्षा कर दो । उन्होंने मेघनाद को आज्ञा दी । दुर्गा ने उनके सेवक को पकड़ लिया और उसको मृत्युलोक में फेंक दिया शेष लोग डर गये । उन्होंने दुर्गा की बात मान ली और घी बरसाना शुरू किया । आग और तेज हो गयी । ब्रह्मा ने दसवंत का कागज छिपा दिया और कहा कि दसवंत को अमरता का वरदान मिला है उसका कागज देने योग्य नहीं है । दुर्गा चक्कर में पड़ गयी और समाधि लगाकर बैठ गयीं तब उन्हें ज्ञात हुआ कि ब्रह्मा ने अपने चूनड़ के नीचे कागज दबा रखा है । दुर्गा ने जबर्दस्ती वहाँ से कागज ले लिया । ब्रह्मा ने उन्हें चेतावनी दी कि बाद में कोई बात हो तो तुम मुझे दोष मत लगाना । जब पहली बार दसवंत का माथा कटेगा वह गया, गजाधर जायेगा । उसके बाद त्रिवेणी जायगा । पाँच बार उसका मस्तक कटेगा । फिर छठी बार वह मेरे पास आकर रोयेगा । जब सातवीं बार सिर कटेगा और रक्त की एक भी बूंद वहाँ गिरेगी तब अनेक अमर (देवता) वहाँ तैयार हो जायँगे । उस समय तुम्हारी अक्ल काम नहीं करेगी । दुर्गा ने उत्तर दिया कि हमारे साथ छत्तीस कोटि के देवता आये हुये हैं । सातवीं बार वनसत्ती गर्दन अपने हाथ में लेंगी और मैं उसे सोहवल में फेंक दूँगी । गर्दन बमरी के आँगन में जाकर गिरेगी । (४७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बजल अयाज = जब आवाज आयी । गुदरी = गुदड़ी । कोठरिया = कोठरी । बाँड़ = बाण । बरखा = वर्षा । मिरित संसार = मृत्युलोक । मूसरन = मूसल की भाँति मोटा । बंबुयाय = तेज हो जाय । आदि सकति = आदि शक्ति, दुर्गा । बेकल = विकल । पलथिया लगाय = पल्थी मारकर । साँसा = श्वांस । दोसवा = दोष । इनरवापुर = इन्द्रपुरी । बेनिया = त्रिवेणी (प्रयाग) । टोप = बूंद ।

भावार्थ— दुर्गा कागज लेकर इन्द्रासन से पहुँची । मारिक अपने तम्बू में पहुँचा । धोबी प्रसन्नता में अठारह हाथ उछलने लगा । जब दसवंत को यह बात मालूम हो गयी कि कागज आ गया है तो विवाहिता की बात उसे याद आ गयी । वह चिंतित हो उठा । इधर दसवंत की पत्नी अपने किले में सेविका को बुलाने लगी । उसने यह स्वप्न देख लिया था कि दुर्गा उसके पति के अमरत्व का कागज पा गयी हैं । इधर छत्तीस जाति की कन्याएँ आँचर-पसार कर सोहवल में मनौती कर रही है । हमारा तीन पंथ

व्यतीत हो गया है अब चौथा पन बीत रहा है। वे रो-रोकर मना रही हैं कि बमरी का बेटा कब मरेगा और हमारा भाग्य कब खुलेगा ? सभी ब्रह्मा से प्रार्थना कर रही हैं और अपना सत मना रही हैं। इसी बीच दुर्गा ने लोरिक को पुकारा। लोरिक अपनी वेश-भूषा में सज्जित हो गया। सारे देवी-देवता उसके पीछे दौड़ने लगे। दसवंत ने लोरिक को देखते ही रुदन आरम्भ कर दिया। मेरी बहन काल बनकर उत्पन्न हुई है। दुर्गा दसवंत का कागज लेकर लोरिक के पास खड़ी हो गयीं। लोरिक ने ओड़न की मुट्ठी दबायी। इससे चारों ओर अग्नि फैल गयी। दसवंत ने पलक खोली तो देखा कि दुर्गा खेत पर उसके अमरत्व का कागज फाड़ रही हैं। लोरिक की तलवार दसवंत की गर्दन पर गिर गयी। उसका धड़ जमीन पर लोटने लगा तथा उसका सिर स्वर्ग में मंडराने लगा। गया, गजाधर, त्रिवेणी, सर्वत्र मस्तक दौड़ने लगा फिर वह धड़ पर आकर बैठ गया। उसने फिर अपना अग्नि बाण तान लिया जिससे पृथ्वी डगमगाने लगी। ऊपर ब्रह्मा का कैलाश हिलने लगा। धोबी का तम्बू भी हिल उठा। वह खेत पर चीखने लगा। दसवंत ने ज्योति बाण मारा जो जाकर लोरिक को लगा। लोरिक धरती पर गिर पड़ा। दुर्गा खेत पर चिंतित हो उठीं। (४८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—इनरासन = इन्द्रासन। हड़बड़ = खलबली। परिया = पारी। उछरै = उछल रहा है। रोवइया = रुदन। जंघवई = जांघ में। सराप = अभिशाप। असबबवा = असबाब, सामान। बदन्हइयाँ = बदन पर। बहिनियां = बहन। जियरवा = जीव। असनवां = आसन। पलकिया = पलक। मउर = सिर, मस्तक, मुकुट। चिघरत बाड़े = चिंघाड़ रहा है।

भावार्थ—दुर्गा आग बुझाते हुये लोरिक के पास गयीं। उसे हाथ में उठाकर सुरसरि के तीर ले गयीं एवं ठन्डे पानी में उसको लेकर कूद गयीं। उसे ठन्डा किया, फिर अमृत पिलाया। लोरिक उठकर बैठ गया तथा विवाह किये बिना कनउज चलने के लिए कहने लगा। दसवंत की मार से उसका कलेजा खौलने लगा था। दुर्गा ने उसे प्रोत्साहन दिया और कहा कि तुम्हारे पैर क्यों कांप रहे हैं। छत्तीस कोटि के देवता तथा मैं सहायक हूँ फिर भी तुम भयभीत हो रहे हो। लोरिक भींटे पर कूद गया तथा उसने दसवंत का सिर काट लिया परन्तु फिर वह उसके धड़ से जुट गया। उसने लोरिक को ऐसा ज्योति बाण मारा कि वह तीन-तीन बार पलटने लगा।

दुर्गा ने फिर उसे सुरसरि के तट पर ले जाकर ठन्डा किया और अमृत पिलाया। लोरिक कायरता दिखाने लगा तब धोबी ने ललकारा और उसने दसवंत का मस्तक छठी बार काट लिया। उसका मस्तक ब्रह्मा के पास गया और कहने लगा—मैंने मृत्युलोक में इतना भजन किया कि तुमने प्रसन्न होकर हमें पाँच बान दिये। मुझे अमर बनाया, फिर क्यों मेरा सिर कटवा दिया। ब्रह्मा ने कहा कि मैंने इसलिए तुम्हें अमर बनाया था तथा इसलिए तुम्हें पाँच बाण दिये थे कि तुम जाकर मृत्युलोक में सबका उपकार करोगे। वह तुमसे नहीं हुआ। तुम्हारे पिता का अभिमान बढ़ गया है।

बहंगी = काँवर । सकला = समिधा । पसीना दुरी = पसीना गिरेगा । रुधिल = रुधिर, रक्त । ओसरिया = अवसर । एदवां का पारी = इस बार । झोंटा = बाल । गुड़लू = रेखा, वृत्त । बादी = वैरी, शत्रु । चउका देली रे पुरवाय = चौक पुरवा दिया । चन्नन = चन्दन । कोठरिया = कमरा । कलाई = कलाई, हाथ । लमहुरे = दूरी पर ।

भावार्थ—ब्रह्माइन ने कहा कि यह मेरा काम नहीं है । ब्रह्मा की कचहरी में जाइये । दुर्गा ब्रह्मा की कचहरी में पहुँची । डर के मारे सारे देवता वहाँ से भाग गये । दुर्गा ने ब्रह्मा से दसवंत का कागज मांगा और उनको धमकाया कि कागज दो नहीं तो तुम्हारी कोठरी फूंक दूँगी । ब्रह्मा ने उनको चुनौती दी । फिर क्या था । दुर्गा ने ज्योति बाण मारा । सर्वत्र अग्नि फैल गयी । ब्रह्मा इन्द्र के पास गये तथा उन्हें आज्ञा दी कि अग्नि बुझाने के लिए वर्षा कर दो । उन्होंने मेघनाद को आज्ञा दी । दुर्गा ने उनके सेवक को पकड़ लिया और उसको मृत्युलोक में फेंक दिया शेष लोग डर गये । उन्होंने दुर्गा की बात मान ली और घी बरसाना शुरू किया । आग और तेज हो गयी । ब्रह्मा ने दसवंत का कागज छिपा दिया और कहा कि दसवंत को अमरता का वरदान मिला है उसका कागज देने योग्य नहीं है । दुर्गा चक्कर में पड़ गयी और समाधि लगाकर बैठ गयीं तब उन्हें ज्ञात हुआ कि ब्रह्मा ने अपने चूतड़ के नीचे कागज दबा रखा है । दुर्गा ने जबर्दस्ती वहाँ से कागज ले लिया । ब्रह्मा ने उन्हें चेतावनी दी कि बाद में कोई बात हो तो तुम मुझे दोष मत लगाना । जब पहली बार दसवंत का माथा कटेगा वह गया, गजाधर जायेगा । उसके बाद त्रिवेणी जायगा । पाँच बार उसका मस्तक कटेगा । फिर छठी बार वह मेरे पास आकर रोयेगा । जब सातवीं बार सिर कटेगा और रक्त की एक भी बूंद वहाँ गिरेगी तब अनेक अमर (देवता) वहाँ तैयार हो जायँगे । उस समय तुम्हारी अक्ल काम नहीं करेगी । दुर्गा ने उत्तर दिया कि हमारे साथ छत्तीस कोटि के देवता आये हुये हैं । सातवीं बार वनसत्ती गर्दन अपने हाथ में लेंगी और मैं उसे सोहवल में फेंक दूँगी । गर्दन बमरी के आँगन में जाकर गिरेगी । (४७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बजल अयाज = जब आवाज आयी । गुदरी = गुदड़ी । कोठरिया = कोठरी । बाँड़ = बाण । बरखा = वर्षा । मिरित संसार = मृत्युलोक । मूसरन = मूसल की भाँति मोटा । बंबुयाय = तेज हो जाय । आदि सकति = आदि शक्ति, दुर्गा । बेकल = विकल । पलथिया लगाय = पल्थी मारकर । साँसा = श्वांस । दोसवा = दोष । इनरवापुर = इन्द्रपुरी । बेनिया = त्रिवेणी (पयाग) । ठोप = बूँद ।

भावार्थ—दुर्गा कागज लेकर इन्द्रासन से पहुँची । मारिक अपने तम्बू में पहुँचा । धोबी प्रसन्नता में अठारह हाथ उछलने लगा । जब दसवंत को यह बात मालूम हो गयी कि कागज आ गया है तो विवाहिता की बात उसे याद आ गयी । वह चिंतित हो उठा । इधर दसवंत की पत्नी अपने किले में सेविका को बुलाने लगी । उसने यह स्वप्न देख लिया था कि दुर्गा उसके पति के अमरत्व का कागज पा गयी हैं । इधर छत्तीस जाति की कन्याएं आंचर-पसार कर सोहवल में मनौती कर रही हैं । हमारा तीन पंच

व्यतीत हो गया है अब चौथा पन बीत रहा है। वे रो-रोकर मना रही हैं कि बमरी का बेटा कब मरेगा और हमारा भाग्य कब खुलेगा ? सभी ब्रह्मा से प्रार्थना कर रही हैं और अपना सत मना रही हैं। इसी बीच दुर्गा ने लोरिक को पुकारा। लोरिक अपनी वेश-भूषा में सज्जित हो गया। सारे देवी-देवता उसके पीछे दौड़ने लगे। दसवंत ने लोरिक को देखते ही रुदन आरम्भ कर दिया। मेरी बहन काल बनकर उत्पन्न हुई है। दुर्गा दसवंत का कागज लेकर लोरिक के पास खड़ी हो गयीं। लोरिक ने ओड़न की मुट्ठी दबायी। इससे चारों ओर अग्नि फैल गयी। दसवंत ने पलक खोली तो देखा कि दुर्गा खेत पर उसके अमरत्व का कागज फाड़ रही हैं। लोरिक की तलवार दसवंत की गर्दन पर गिर गयी। उसका धड़ जमीन पर लोटने लगा तथा उसका सिर स्वर्ग में मंडराने लगा। गया, गजाधर, त्रिवेणी, सर्वत्र मस्तक दौड़ने लगा फिर वह धड़ पर आकर बैठ गया। उसने फिर अपना अग्नि बाण तान लिया जिससे पृथ्वी डगमगाने लगी। ऊपर ब्रह्मा का कैलाश हिलने लगा। धोबी का तम्बू भी हिल उठा। वह खेत पर चीखने लगा। दसवंत ने ज्योति बाण मारा जो जाकर लोरिक को लगा। लोरिक धरती पर गिर पड़ा। दुर्गा खेत पर चिंतित हो उठीं। (४८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—इनरासन = इन्द्रासन। हड़बड़ = खलबली। परिया = पारी। उछरै = उछल रहा है। रोवइया = रुदन। जंघवई = जांघ में। सराप = अभिशाप। असबबवा = असबाब, सामान। बदन्हइयाँ = बदन पर। बहिनियां = बहन। जियरवा = जीव। असनवां = आसन। पलकिया = पलक। मउर = सिर, मस्तक, मुकुट। चिघरत बाड़े = चिघाड़ रहा है।

भावार्थ—दुर्गा आग बुझाते हुये लोरिक के पास गयीं। उसे हाथ में उठाकर सुरसरि के तीर ले गयीं एवं ठन्डे पानी में उसको लेकर कूद गयीं। उसे ठन्डा किया, फिर अमृत पिलाया। लोरिक उठकर बैठ गया तथा विवाह किये बिना कनउज चलने के लिए कहने लगा। दसवंत की मार से उसका कलेजा खौलने लगा था। दुर्गा ने उसे प्रोत्साहन दिया और कहा कि तुम्हारे पैर क्यों कांप रहे हैं। छत्तीस कोटि के देवता तथा मैं सहायक हूँ फिर भी तुम भयभीत हो रहे हो। लोरिक भींटे पर कूद गया तथा उसने दसवंत का सिर काट लिया परन्तु फिर वह उसके धड़ से जुट गया। उसने लोरिक को ऐसा ज्योति बाण मारा कि वह तीन-तीन बार पलटने लगा।

दुर्गा ने फिर उसे सुरसरि के तट पर ले जाकर ठन्डा किया और अमृत पिलाया। लोरिक कायरता दिखाने लगा तब धोबी ने ललकारा और उसने दसवंत का मस्तक छठी बार काट लिया। उसका मस्तक ब्रह्मा के पास गया और कहने लगा—मैंने मृत्युलोक में इतना भजन किया कि तुमने प्रसन्न होकर हमें पाँच बान दिये। मुझे अमर बनाया, फिर क्यों मेरा सिर कटवा दिया। ब्रह्मा ने कहा कि मैंने इसलिए तुम्हें अमर बनाया था तथा इसलिए तुम्हें पाँच बाण दिये थे कि तुम जाकर मृत्युलोक में सबका उपकार करोगे। वह तुमसे नहीं हुआ। तुम्हारे पिता का अभिमान बढ़ गया है।

उन्होंने छत्तीस जाति की कन्याओं को कुंवारा रखा है। वह आँचल खोलकर मना रही हैं कि बमरी का बेटा कब मरेगा तथा हमारा भाग्य कब खुलेगा ? उसी के पाप से ऐ दसवंत तुम्हारी मृत्यु निकट आ गयी है। (४६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कूदल = कूद गयीं। करेजवा = कलेजा। कोखिया = कोख। परघट = प्रकट। तालइ = ताल। खोंइछा = आंचल। दबरि के = दौड़कर। खंड़िया = खड्ग। कलमिया = कलम। काहे बदे = किसलिए। एठियन = यहाँ। माग = भाग्य। बाबिल = पिता।

भावार्थ इन्द्रासन से सिर फिर धड़ पर आ गया। दसवंत फिर अग्नि बाण लेकर खड़ा हो गया। सातवीं बार में मल दसवंत का बाण समाप्त हो गया तब उसने शक्तिबाण चलाना शुरू किया। शक्ति बाण लगते ही लोरिक घबरा उठा। दसवंत को मारना कठिन हो रहा था। जब उसने शक्ति बाण मारा, लोरिक की आँख पर पर्दा पड़ गया। उसको इधर-उधर दिखाई नहीं पड़ रहा था वह दुर्गा को पुकारने लगा। मेरी बारी कब आयेगी। मैं विकल हो उठा हूँ। दुर्गा लोरिक को समझा रही हैं। अरे बेटा, जब सातवां दिन आयेगा, तब बारह बजे के आस-पास तुम्हारी बारी आयेगी। दसवंत अपना ज्योति बान मारता था तथा दुर्गा उसको निरस्त कर देती थीं। जब सातवां दिन आ गया, दुर्गा ने सोरह सौ चुड़ैलों तथा सोलह सौ मरियों को बुलाया। सबका मुँह खुल गया और सबको दुर्गा ने ऊपर देखने के लिए कहा। उनको यह भी चेतावनी दे दी कि जिसकी तरफ धरती पर खून गिरेगा मैं उसका मस्तक काट लूंगी। बारह बजे का समय आया तब दुर्गा ने लोरिक को ललकारा और बताया कि तुम्हारा अवसर आ गया है। उसने अपना खोड़न साधकर मारा जिससे सर्वत्र लपट फैल गयी। वीर लोरिक ने अपना खड्ग चलाया तथा दसवंत भहरा कर गिर पड़ा। उसका आधा सिर आकाश में घूमने लगा। उसके रक्त का एक भी बूंद गिर रहा था तो देवता उसे पीते जाते थे। मस्तक पूर्व, दक्षिण, पश्चिम फिर उत्तर गया। देवता भी उधर ही भागे जा रहे थे। मस्तक घूमकर फिर बीच में आया। उसके धरती पर पहुँचते ही दुर्गा ने जोर से पैर मारा। फिर वह आकाश में मंडराने लगा। नीचे आते ही बनसती ने उसे लोक लिया। सारे देवता वहाँ जुट गये और उसका सारा रक्त खींच लिया। दुर्गा ने फिर उस मस्तक को बमरी के आंगन में फेंक दिया। जब दसवंत का सिर आंगन में गिर गया, सारा कुटुम्ब और परिवार रोने लगा। उसकी विवाहिता ने अपने पति दसवंत का सिर पहचाना और रोना-पीटना शुरू किया। ऐ स्वामी, मैं तुम्हें किले में मना कर रही थी पर तुम नहीं माने। तुम मारे गये। सोहबल में मेरी जड़ उखड़ गयी। मेरी ननद काल होकर उत्पन्न हो गयी है। मेरी गौने की चुनरी अभी धूमिल नहीं हुई है। हाय, मेरी नाव आधे जल में डूब गयी। उधर सतिया अपना बुर्ज छोड़कर सगड़ पर पहुँची और लोरिक से कहा कि तुमने सगड़ पर अच्छा काम नहीं किया है। खैर,

तुम मेरी एक बात मानो । जब मेरे भाई की पत्नी अपने पति दसवंत का शव लेकर चिता में जलने लगे उससे वर माँगना कि जैसे तुम्हारे पति सोहवल में उत्पन्न हुये वैसे ही मेरे पुत्र उत्पन्न हो । (५०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी— छटकल = हट गया । माथ = मस्तक, सिर । इनरासन = इन्द्रासन । धर = धड़ । सतई = सातवीं । दीहल = दिया हुआ । घींचि = खींचकर । घड़-घड़ = जल्दी-जल्दी । ताल बजावैं = ताली बजा रहा है । लड़तई = लड़ते हुये । जियर = प्राण । उवार = आर-पार । अभला में = आस-पास । दीन = दिन । बवाय = खुलवाकर । उधर = ऊपर । तकावैं = दिखवावैं । सरग = आकाश । मउर = सिर । ठोप = बूँद । लुँडक-लुंड = भुंड के भुंड । परायल जाय = भाग रहे हैं । रुधिलवा = रुधिर । लोकलस = लोक लिया । बतीसो = दाँत की बतीसी । बरजत रहली = मना कर रही थी । ऊपर जाला = उखड़ रहा है । सोरिया = जड़ । गवनेक = गौने का । चुनरिया = चुनरी । घूमिलवा = घूमिल, मैली । सइयां = स्वामी । पपिया = पापी । डोंगवउ = डोंगा, नाव । रुवइया = रुदन । अंगुरी = अंगुली । सनवां = संकेत । वीरना = भाई । चीतवा = चीता । दसो नहवां जोरि रे दीहा = दोनों हाथ जोड़ देना, (दसों नहों को जोड़ देना) । भउजी = भावज । सराप = श्राप । दरियैं = पास । भसमवा = भस्म । गउरवा गुजरात = गउरा गुजरात ।

भावार्थ—ऐ देवर, ऐसा वरदान माँग लेना । सतिया यह कहकर सोहवल बाजार में भाग गयी । इधर गोपी रोते-रोते सगड़ पर पहुँची । वहाँ बन के पत्ते खड़-खड़ाकर गिरने लगे । वह मेवाकरन बगीचे से चन्दन की लकड़ी कटवाने लगी तथा चुन-चुनकर चिता बनवाने लगी । फिर शव को चिता पर रख दिया । लोरिक वहाँ आ पहुँचे । गोपी ने उसे जोर से डाँटा और कहा कि हमारे सामने से तुम भाग जाओ तुमने मेरे पति को मार डाला है । लोरिक ने अपना मस्तक नीचे कर लिया । अन्त में गोपी ने उससे वरदान माँगने के लिए कहा लोरिक ने वरदान माँगा—जैसे सोहवल में तुम्हारे पति का जन्म हुआ था वैसे गउरा गुजरात में मेरे पुत्र उत्पन्न हो । गोपी ने चिता पर रो-रोकर वह वरदान दे दिया और अपने सत का स्मरण कर चिता में बैठ गयी । चिता जल उठी । उसने सतिया को अभिशाप दिया जैसे सोहवल में मेरे पति का हरण हुआ उसी प्रकार गायों के अड़ार बोहा में तुम्हारे पति हरे जायंगे । (५१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मंगनवा = माँग, वरदान । मांग लीह = माँग लेना । पतया = पत्ते । खहराय = खड़खड़ा कर, आवाज करके । बनबा = वन । चन्नन = चन्दन । चितवइ = चिता पर । घालति बाड़ें न रे लगाय = लगा रही है । घालति बाड़े = डाल रही है । घालति का प्रयोग हिन्दी डालने सदृश है जैसे ओकरा के मारि घाला = उसको मार डालो । लसिया = लाश । घुड़कति हउवै = घुड़क रही है ।

हट जो = हट जाओ । आगि = अग्नि, आग । ध ध बरे रे लागल = धू धू करके जलने लगा । हरजाई = ले लिया जायगा, प्राण हर लिया जायगा ।

भावार्थ—इधर बमरी का परिवार रोने लगा । मिम्हली भी मुहबल में रोने लगा और कहने लगा कि बड़ा भारी जुल्म हुआ । छत्तीस जाति की कन्याएँ प्रसन्न हुईं कि हमारा भाग्य खुल गया । मिम्हली पिता बमरी के पास जा कर पैर पर गिर पड़ा । और कहने लगा—दादा मेरी बात मानो । थाली और वस्त्र लेकर मोती सगड़ पर चलो तथा सतिया का तिलक चढ़ा दो । अन्यथा भइया का जीवन मोती सगड़ पर चला गया, मुझे भी वे मोती सगड़ पर नहीं छोड़ेंगे । बमरी क्रोध में जल उठे । फटकार कर कहा—तुमने मेरे कुल में कलंक लगा दिया । भइया दसवंत मारे गये तुम यह मुझे बता रहे हो ! मिम्हली ने मन में समझ लिया कि दादा को अक्ल मारी गयी है । यह तैयार होकर हाथी के पास आया उस पर सवार होकर मोती सगड़ पर जाने लगा । पत्नी ने मना किया । इतने अमर थे दसवंत, वह भी मारे गये । तुम्हारी बुद्धि क्यों मन्द हो गयी है ? तुम लड़ने मत जाओ और सिलहट के बाजार भाग जाओ । मिम्हली यह सुनकर आँसू बरसाने लगा । कहने लगा—पिता का प्रण है । वह टूटने वाला नहीं है । वह लड़ाई के बिना नहीं मानेंगे । यह कहते हुए उसने मोती सगड़ की ओर हाथी को हाँक दिया । धोबी ने मिम्हली को देख कर लोरिक को पुकारा । मिम्हली ने इसी बीच ललकारा—जो भी वीर हो सामने आ जाय । लोरिक यह सुन कर मल सांवर के पास गये और उनसे बारात की देख-भाल करने के लिए कहा । स्वयं भीटे से कूद कर मिम्हली के पास गये । मिम्हली रो पड़ा । पत्नी की बात उसे याद आयी । उसने बहन को धिक्कारा । बहन मेरे लिए काल है । वह अपने जीवन के लिए झंख रहा था, और कह रहा था कि मैंने दादा बमरी को बार-बार मना किया किन्तु उन्होंने मेरा कहना नहीं माना । रोते हुए उसने लोरिक को ललकारा और कहा तुमने मेरे भाई को मार डाला । अतः तुम्हारा उत्साह बढ़ गया है । तुम अपना डेरा-डण्डा उठा कर गउरा गुजरात भाग जाओ नहीं तो मैं तेरा सिर काट लूँगा । (५२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—जुलुम = जुल्म । मगन = मग्न । एड़िया आगि लागि जो लागल = एड़ी में जो आग लगी । चुरुकी = शिखा । लवर = लपट । नुंगुवाय = धधकने लगा । तब बमरी के .... नुंगुवाय = बमरी के सिर से पैर तक आग लग गयी अर्थात् वह क्रुद्ध हो उठे । कुलवा में दगिया = कुल में दाग । लमहरे = दूर । गयल बउराय = पागल हो गया । भसुर = पति का बड़ा भाई । दमिया = दम, प्राण । एठियन से = यहाँ से । परन = प्रण । जीन = मत । गोहराया = पुकारा । लड़वइया = लड़ने वाला । तोहई = तुम्हीं । कलवा = काल । दउरि दउरि = दौड़ दौड़ ।

भावार्थ—लोरिक गरज उठा—मिम्हली तुम सुनो और राजा बमरी को समझा दो । थाली, वस्त्र, कुटुम्ब, परिवार, नाऊ, ब्राह्मण सबको लेकर वह तिलक चढ़ा दें और सतिया का विवाह कर दें ताकि हम लोग कनउज लौट जायँ पर मिम्हली

ने उस पर अग्नि बाण प्रहार कर दिया। लोरिक भहरा कर धरती पर गिर गया। दुर्गा के आंचल में आग लग गयी। उन्होंने उसे बुझाया फिर लोरिक को ठण्डा करके उसे अमृत पिलाया। लोरिक दुर्गा के चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा—माँ, मैं गउरा भाग रहा हूँ। नहीं तो यहाँ हमारे प्राण नहीं बचेंगे। दुर्गा ने आश्वासन दिया। इस बार चलो—तुम्हारी बारी आयी है। लोरिक ने कहा, इस बार विजय नहीं हुई तो मैं अवश्य गउरा-गुजरात भाग जाऊँगा। (५३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—तड़कल = गरज उठा। उबार = वार, प्रहार। मनुसाय = वीरता, पौरुष। कुरेध = क्रोध। मारे त कुरेध = क्रोध के मारे। खोंइछी = आंचल। हउवै वुनवले = बुझाया है।

भावार्थ—दुर्गा ने लोरिक को समझाया। चलो तुम्हारा अवसर आ गया है। पाँच बाण भिम्हली को मिले थे। एक बाण छूट चुका है। पाँचवें बाण के समय तुम उसका मस्तक काट लोगे। लोरिक सगड़ पर पहुँचा। धोबी ने उसे प्रोत्साहन दिया—भिम्हली का सिर काट लो। लोरिक भींटे पर कूद पड़ा। भिम्हली ने तान कर उसे बाण मारा। दुर्गा ने उस बाण को धरती में दबा दिया। सगड़ पर अन्धकार छा गया। फिर उन्होंने भिम्हली को ऐसा थप्पड़ मारा कि उसके सामने अन्धकार छा गया। उसे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा था। भिम्हली ने ललकारा कि सगड़ पर लोरिक मारा गया है और जो भी लड़ने वाले हों मैदान में आ जायँ। (५४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—हो पउले = प्राप्त किया है। दन देने = जल्दी से। बेरियै कै बेरियै = बार-बार। अन्हियार = अन्धकार।

भावार्थ—जब बारात तक यह आवाज पहुँची सभी लोग घबरा गये। क्या खेत पर लोरिक मारे गये? भिम्हली ललकार रहा है। धोबी सगड़ पर छाती पीट-पीट कर रो रहा है। क्या हमारी मृत्यु निकट आ गयी? शीघ्र ही सगड़ पर प्रकाश हो गया। भिम्हली ने लोरिक को देखा। वह रो पड़ा। हाय, मेरी मृत्यु निकट आ गयी है? उसकी आवाज किले में पहुँची। भिम्हली की पत्नी रो उठी। स्वामी तुमने यहाँ मुझे किले बैठा दिया और स्वयं इलाके पर सिलहट चले गये। हाय, आज पति की मृत्यु हो जायगी तथा अघजल में मेरा डोंगा डूब जायगा। (५५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—पुरवा ले पच्छिम लवकारे = पुरवा हवा पश्चिम की ओर चलने लगी। ओजियार = उज्ज्वल, उजियार, प्रकाश। खहरेराय = खड़क कर। अकनत हउवै = विकल हो रही है। इलकवा = इलाका।

भावार्थ—तब लोरिक ने बड़े जोर से ललकारा। भिम्हली ने फिर उसे ज्योति बाण मारा जिससे चौदह कोस में दावानल फैल गया तथा पेड़ पत्ते जलने लगे। सुरसरि का पानी भी खौलने लगा जिसमें सूंस और घड़ियाल उलटने लगे। आहत लोरिक को दुर्गा ने ठण्डे पानी में शीतल किया फिर अमृत पिलाया। अब भिम्हली के तीन

बाण समाप्त हो गए थे। उसकी पत्नी सेविका के पास गयी तथा रो-रो कर कहने लगी। अब चौथा बाण भी समाप्त हो गया। पाँचवाँ बाण भी टूट जायेगा। मेरे स्वामी खेत पर मारे जायेंगे। (५६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी— मनसेधुई = पौरुष । बनडेढ़वा = दावानल, वन की अग्नि । रुखवो = पेड़ । परास = पलाश, पत्ते । सोटंस = सँस । घरियार = घड़ियाल । चरनिया = चरण । ओसरिया = अवसर । बेरियें के बेरियें = बार बार । बियहिया = विवाहिता । लउँडी = सेविका । बलमुवा = बालम, पति । समिया = स्वामी ।

भावार्थ—लोरिक ने उसे ललकारा—तुम्हारे पास सड़े गले बाण हैं जिन्हें लेकर तुम खेत पर आये हो। भिम्हली यह सुन कर क्रुद्ध हुआ और इस बार फिर उसने अग्नि बाण से लोरिक को आहत किया। दुर्गा ने फिर उसको सुरसरि तट पर ले जा कर ठण्डा किया और अमृत पिलाया। लोरिक घबरा उठा था। दुर्गा ने उसका साहस बँधाया। भिम्हली ने अपना अन्तिम प्रहार किया जिससे पृथ्वी डगमगाने लगी। ब्रह्मा का कैलाश भी काँप उठा पर दुर्गा ने उस बाण को निरस्त्र कर दिया और उसे धरती में दबा दिया। लोरिक ने अपना खड्ग साधा और उसके प्रहार करते ही भिम्हली का धड़ जमीन पर गिर पड़ा। उसका सिर स्वर्ग में मंडराने लगा। देवताओं ने उसका रक्त खींच लिया। दुर्गा ने उसके मस्तक को उठा कर बमरी के आँगन में फेंक दिया। उसकी पत्नी विलाप करने लगी। (५७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सरल पाकल = सड़ा गला। ताकेला = देख रहा था। जेंम्मन = जिसमें। परिया = पारी। जिवनवा कइ रे काल = प्राण के लिए काल स्वरूप। सेन्हुरवा = सिंदूर, पति।

भावार्थ—गोपी ने रोते हुए अपने स्वामी का सिर हाथ में उठा लिया। जब वह उसे लेकर चलने लगी तब बमरी की बेटी सतिया भी रोने लगी। हाय, हमारा भाई मार डाला गया। इधर गोपी ने चंदन की चिता सजायी। लोरिक उसके पास पहुँचा और उससे क्षमा माँगी। गोपी ने उसे फटकारा—तुमने मेरे पति को मार डाला है और मेरी नाव डुबा दी है। लोरिक नत मस्तक हो गया। गोपी ने अपने सत का स्मरण किया। लोरिक को आयुष्मान होने का आशीर्वाद दिया। फिर यह भी कहा—मेरी ननद का सुहवल में विवाह हो रहा है पर जैसे सुहवल में मेरी नाव डूब गयी वैसे ही ननद की नाव गायों के अहार में डूब जायगी। (५८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—'आँसू' को संक्षिप्त कर गायक ने 'अं' कर दिया है। यह गायक की सामान्य प्रवृत्ति है। ढुरकति बाय = ढुलक रहा है। कसूरवा = अपराध, कसर। का दो = न जाने क्या। बूतवा = बूते में। बूतवा रहल नहीं जाय = इसको सँभालना हमारे बूते के बाहर है। मारें जौं कुरेध में = क्रोध के मारे। परगट = प्रकट।

भावार्थ--सोहवल हड़बड़ी मच गयी। बड़ा जुल्म हो गया। राजा बमरी ने कचहरी में अपना बिगुल बजाया जिससे सारी पलटन तैयार हो गयी। सभी पंक्तिबद्ध खड़े हो गये। काट खाने वाली (कटहिया) घोड़ी भी सज गयी। हाथियों पर हौदे कस गये। ऊँट भी तैयार कर दिये गये। सारी पलटन सज कर मोती सगड़ पर आ गयी। धोबी डर गया पर लोरिक ने उसे ढाढ़स दिया। वह स्वयं निरखो, दोहरी, तमंचा, जूते, तथा पीतल के तवों से लैश होकर निकल पड़ा। उसके साथ दुर्गा और बनसत्ती के अतिरिक्त देवी देवता भी थे। बारह सौ मंगलैत (मुगल), तेरह सौ तुर्क, पठान तथा सोलह सौ रघुवंशी भी जा रहे हैं जिनके कटि में तलवारें झूल रही हैं। लड़ाई छिड़ गयी और लोरिक की तलवारें निकल पड़ीं और कटे हुए सिरों की माला सी तैयार हो गयी। लाशों की ढेर लग गयी। गिद्ध और गिद्धनियाँ सभी प्रसन्न हो उठे। सारी पलटन के मारे जाने की खबर सुनकर बमरी छाती पीट कर रोने लगे। सतिया भी रो उठी। ब्रह्मा की बात उसे याद आयी। बमरी के सिर पर पाप चढ़ गया है। हमारे भाई मारे जा चुके हैं। (५९)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—हड़ बड़=खलबली। मारू=एक राग जो युद्ध के समय गाया और बजाया जाता है। लोहवन=लोहा। कोठरी=कमरा। असबबइ= असबाब, सज्जा। कतर क कतरइ=कतार की कतार। घोड़िया=घोड़ी। कटहिया= काटने वाली। गोल=दल। उटवन कै टाटी लगि गईलीं=ऊँटों की लीद पड़ गयी। खाई देलें रे भरवाय=खाई भरवा दी गई। नीज=खास। कटकिया=कटक, सेना पलटन। मंगलइत=मंगलैत, मुगल ? । तुरुक=तुर्क। खपड़वा=खपड़ा। हननन हननन=तेजी से। तरारा खाय=धराशायी हो रहा है। मलवा=माला। लसियन =लाश। खरिहं=खलियान। गिधिनी गिधवा गावति बाड़ैं छकछूमै=गिद्ध और गिद्धनियाँ प्रसन्नता से झूम रही हैं। गावति बाड़ैं वेदवउ रे पुरं=वेद पुराण गा रहे हैं अर्थात् प्रसन्नता के स्वर अलाप रहे हैं। कपारे=सिर पर। पपउ=पाप। असरेवार= सवार।

भावार्थ—सारी पलटन मारी गयी। दुर्गा लोरिक को लेकर सगड़ के घाट चली। धोबी ने लोरिक से कहा—सोहवल के बाजार चलिये और सतिया का केश पकड़ कर मड़या की भाँवर घुमा दीजिये। लोरिक ने उसे मना किया और कहा कि हमें सोहवल के बाजार में चलना चाहिये और बमरी से पूछ लेना चाहिए। धोबी आगे चला तथा लोरिक पीछे हुआ। जब दोनों सोहवल पहुँचे तो शोर मच गया। फाटक से पहरेदार भाग खड़े हुए। लोरिक सीधे बमरी की कचहरी में पहुँच गया। बमरी अपनी कुर्सी से महरा उठा। (६०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—झोंटवा=झोंटा, बाल। हलवा=हल्ला, शोर। पराइल=भागती हुई। पहरुदार=पहरेदार। चलल बाड़ैं पराय=भाग चले। कुरुसिया=कुर्सी। महराय=महरा कर।

भावार्थ—राजा बमरी कुर्सी से गिर पड़े। मुंशी और दीवान भाग चले। लोरिक ने बमरी से कहा बाबा सुनो। हमारी बात मानो। अकाल में थूनी तथा पाताल में मंडप गड़वा दो तथा सतिया की भांवरें घुमा दो। हम उसे कनउज के बाजार में जायंगे। यह सुनकर बमरी अत्यन्त क्रुद्ध हुये और कहा—हमारे सामने से हट जाओ नहीं तो मैं तुम्हारी जान मार डालूंगा। धोबी ने दौड़कर बमरी को पकड़ लिया, फिर मुसकु चढ़ाया और उसकी छाती पर कोल्हू रखवा दिया। बमरी रो उठे। लोरिक तुमने मेरे पुत्रों को मार डाला। मेरी जिन्दगी भी तुम सोहवल में अब खतम कर रहे हो। मैं सतिया का विवाह कर दूंगा। सोहवल में मंडप गड़वा दूंगा। लोरिक दौड़कर बमरी के पास गये और उसका कोल्हू छाती से हटा दिया। सोहवल में विवाह की तैयारी होने लगी। मूसल की पूजा होने लगी। कलश रखवा दिया गया तथा मंगलाचार होने लगा। घर-घर में ढोलक बजने लगा। सोहवल की बारह सौ कुंवारी कन्यायें प्रसन्न हो उठीं। अच्छा हुआ कि बमरी के लड़के मर गये। हमारा भाग्य खुल गया। कल प्रातःकाल डोलियाँ गउरा गुजरात जायंगी। (६१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मुनुसी = मुंशी। देवान = दीवान। पराय = भागकर। घमकल = घमक कर, घमकते हुये। चुरकी = शिखा। जियरा खउलति बाटे हमार = हमारा प्राण खौल रहा है, हमें क्रोध आ रहा है। धवर के = दौड़कर। मुसुकिया = मुश्क, कंधे और कोहनी के बीच का भाग। बाड़ें ढोंगराय = लुढ़का दिया। मड़वउ = मंडप। मुंसरवा = मूसल। कलसा = कलश। सुगया = शुक, सुग्गा। ढोलकिया = ढोलक। बारी कुंवरवा = बाल कुंवार। काल्ह = कल। बिहाने = प्रातः। डोलों = पालकी।

भावार्थ—सोहवल में घर-घर मंडप गड़ गया तथा विवाह का आयोजन होने लगा। बमरी ने अपने घर में भी मंडप गड़वा दिया। मलसांवर के विवाह की तैयारी होने लगी। बांठा ने अपना बाजा बजाना शुरू किया। जितने बाल कुंवार लड़के थे उनके सिर पर मुकुट बँधवा दिया गया। सबके माथे पर तिलक लग गया। द्वार-द्वार पर बारात लग गयी और परछन शुरू हो गयी। कन्यादान करने के लिए बमरी ने उपवास कर रखा था। विवाह का मुहूर्त आ गया। दुबरी बाबा आँगन में विवाह कराने चले। विवाह होने लगा और इन्द्र की परियाँ प्रसन्न हो उठीं और आगे आकाश में आकर मंडराने लगीं। फूलों की वर्षा प्रारम्भ हो गयी। सभी देवता प्रसन्न हो गये। सतिया ने ऐसा तप किया था कि वह क्षण में स्वर्ग जा सकती थी। वह ब्रह्मा के द्वार पर गयी कि तुमने अच्छा कार्य नहीं किया। तुमने सोहवल में ऐसी रचना क्यों की ? मेरे भाइयों को क्यों हर लिया ? ब्रह्मा ने समझाया-बमरी पागल हो गये थे। छत्तीस जाति की कन्याओं को उन्होंने कुँवारी रखा। सोहवल में उसी का पाप लगा हुआ है। सतिया इन्द्रासन से धरती पर आयी। बमरी ने चौके पर बैठकर कन्यादान दिया। झिंगुरी ने लावा परछा। वह रो-रोकर कहने लगे—ऐ दादा, तुमने हमारी बात नहीं

मानी। मेरे वीर-भाई मारे गये। सोहवल में हमारी जड़ें उखड़ गयीं। कल प्रातःकाल सतिया की विदाई कर दो कि वह गउरा गुजरात चली जाय। (६२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—साइत = मूहूर्त। डीह ठाकुर = डीह के देवता। बीयहुती = विवाह का। बरतिहा = बाराती। परछन = प्रदक्षिणा। लावा परीछे बदे = लावा की रस्म अदा करने के लिए। इन्दरक परिया = इन्द्र की परियाँ। खुसी = खुशी। फुलयन = फूल। दुअरिया = द्वार पर। इनरासन = इन्द्रासन। चउकवा = चौक। अँसिया = आँसू। बरजत रहलीं = मना करती रही। बलवंतया = शक्तिशाली, बलवंत।

भावार्थ—संध्या को विवाह हुआ तथा प्रातःकाल पालकी तैयार हुई। विवाह सम्पन्न होने के बाद मलसांवर की पालकी सोहवल के बाजार में गयी फिर बमरी के किले पर गयी। सतिया की सारी सखियाँ वहाँ आ पहुँची। छत्तीस जाति की कन्याओं को पालकी भी तैयार हो गयी। सतिया अपनी माँ से गले लगकर रो पड़ी। उनके रोने से सोहवल में वन के पत्ते खड़खड़ाकर गिरने लगे। सतिया कहने लगी—मेरा विवाह बहुत दूर हो गया है फिर कैसे भेंट होगी? सतिया ने माँ से विदाई माँगी जिसको वह अपने साथ गउरा बाजार ले जा सके। माँ ने कहा—क्या बिदाई दूँ। सोहवल में तो मेरा सर्वनाश हो गया। दसवंत और भिम्हली मार डाले गये। सतिया ने नवलखा हार माँगा। माँ ने गले का नौ लखा हार उसे दे दिया। तब नाईन ने सतिया को पालकी पर बैठाया। सतिया शिव मन्दिर में गयी और रोने लगी—तुम्हारा साथ छूट रहा है अब भेंट न होगी। मैं तुम्हारी पूजा नहीं कर सकूँगी। शिव बाबा ने प्रकट होकर वर माँगने के लिए कहा—सतिया ने वर माँगा कि सुबह शाम जब मैं तुम्हारा भजन करूँ, तुम दर्शन देना। शिव बाबा ने वरदान दिया। सतिया अपनी पालकी में बैठ गयी। छत्तीस जाति की कन्याएँ भी साथ चलीं। गउरा के लिए प्रस्थान हुआ। रास्ते में कहीं पड़ाव नहीं पड़ा। जब सतिया की पालकी बोहे में गायों के अड़ार पर पहुँच गयी तब मलसांवर ने कहा—बिना पूजा किये मैं गउरा गुजरात की ओर नहीं बढ़ूँगा। (६३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सिर सिहोर = सिर में सिंदूर। ओगर = सम्पूर्ण। डँड़िया फनल = पालकी चली। गरवा = गला। सोर = जड़। नवलखवा हार = नवलखा हार। नाउन = नाइन। सहेलर = सहेली। ढूरत = ढलकती है। कंहार = पालकी ढोने वाले। पुजनवा = पूजन। कूच की लकड़ी = कूच का बाजा। मोकाम = मुकाम, पड़ाव।

भावार्थ—बोहा में डोली रुक गयी। मलसांवर की आज्ञा से बहँगी में प्रचुर घी आ गया। पंडितों और पुजारियों को बुलवाकर हवन करवाया जाने लगा। बहँगी से घी, हविष्य तथा दूध का अर्घ्य दिया गया पर दुर्गा का पेट नहीं भरा। फिर बड़ा

यज्ञ किया गया तब दुर्गा प्रसन्न हुई। उसके बाद सतिया की डोली उठी तथा बुढ़ खोइलनि के द्वार पर पहुँची। खोइलनि का सारा परिवार वहाँ जुट गया। धोबी अजयी की पत्नी विजवा भी वहाँ पहुँची। उसने कहा ऐ सती—मैंने सोहवल में बहुत दिन तक तुम्हारे कपड़े धोये हैं तथा साथ में भजन किया है। कुछ दिन और तुम्हारे कपड़े धोऊँगी और हमारा जीवन सफल हो जायगा। सतिया ने रो-रोकर कहा—सोहवल में ऐसा अनुभव कभी नहीं हुआ। जाने सोहवल में कौन सी कमाई चूक गयी कि वहाँ सर्वनाश हो गया। फिर सतिया की डोली किले में पहुँच गयी।

[इस प्रसंग का अन्त हो चुकने पर गायक अपना परिचय देता है। मेरा शहर बनारस है जहाँ बाबा विश्वनाथ जी बसते हैं। चौबेपुर में मुकाम हुआ है। गंगाराम की मिठाई की दूकान में गायन हो रहा है। थाना चौबेपुर में लेखनी लिखी जा रही है। आज पाँचू भगत गंगा के द्वार पर गाना गा रहे हैं।] (६४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—डाँड़ी = डोली, सवारी। अडर = आर्डर, आज्ञा। बहँगी = काँवर। गइयन क = गायों का। सकला = हविष्य। अरघा = अर्घ्य। जगिया = यज्ञ। गरवा = गला। बीरना = भाई। वजरवा = वज्र। चीरिया = कपड़ा। सुफलवा = सफल। कहनवाँ = कहना। अनभो = अनुभव। ऐसी घटना जो पहले नहीं हो (अन + भो) पवनवा के दुवार = पवित्र द्वार।

मलसाँवर का विवाह समाप्त।

अध्याय २

लोरिक का विवाह

भावार्थ—अब अगोरी की कथा सुनो। अगोरी का राजा मोलागत था। वहाँ एक दूसरा राजा मोलागत तैयार हुआ। महर की एक बिटिया उत्पन्न हुई। उसका नाम दावन मंजरी रखा गया। उसके उत्पन्न होते समय सवा घड़ी सोना और चाँदी की वर्षा हुई। नोनवा दायी बुलायी गयी। उसने मंजरी का नाल काटा। महरी ने सोने का हंसुवा बिदायी में दिया। राजा मोलागत कचहरी से निकल कर फाटक पर जा रहे थे तो नोनवा दिखाई पड़ी। मोलागत ने उसे बुलाया और पूछा—यह चटक पीले रंग की पीली साड़ी की बिदायी किसने दी है तथा यह सोने का हंसुवा किसने दिया है। नोनवा ने बताया कि महर के यहाँ लड़की अवतरित हुई है। उसका नाम दावन मंजरी है। उसके

उत्पन्न होने पर सवा घड़ी सोना और चाँदी की वर्षा हुई है। मोलागत ने हाथी पर चढ़कर सिपाहियों के साथ महर के द्वार पर जाकर कहा कि मैं मंजरी के हाथ में धागा बंधवा देता हूँ। जब वह विवाह के योग्य हो जायगी तब मैं उसके साथ भांवरें घुमा लूंगा। महरिन ने मधुरता से जवाब दिया, राजा हमारी बात मानो। अगर इस समय मंजरी को ले जाओगे और माँ का दूध पिलाओगे तो वह तुम्हारी मानजी होगी और पत्नी का दूध पिलाओगे तो तुम्हारी लड़की हो जायगी। मुझे इसको पालने दो। जब वह बड़ी हो जायगी, मैं उसके लिए दूसरा वर नहीं खोजूंगी। मंजरी के साथ तुम्हारा विवाह कर दूंगी और मेरा धर्म बच जायगा। यह सुनकर मोलागत लज्जित हुआ। वहाँ से हाथी घुमाकर अपने द्वार आया। महरिन रो पड़ी। मेरा धर्म कैसे बचेगा? इज्जत कैसे बचेगी? हाय राम! मेरी विपत्ति कौन काटेगा? उसकी रुलाई सुनकर बनके पत्ते खरमरा कर गिरने लगे। (६५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—ओहर = उधर। गोइयां = युग्म, जोड़ा। घरी = घड़ी। सोनवा = सोना। चानी = चाँदी। आई = दाई। नरवा = नाल। बरही = बरही की रस्म जो बारहवें दिन पर होता है। छठिया = छठे दिन की रस्म। गहवर = चटख, गहरा। जोग = योग्य। सउरी = सौर गृह। रस में = मधुरता से। बखत = समय। भैने = मानजी। वर = दुल्हा धरमउ = धर्म। इजतिया = इज्जत। अइसन = इस प्रकार।

भावार्थ—जब मंजरी बारह वर्ष की हो गई तो राजा महर उसके लिए वर खोजने लगे। सवा मन तिलक लेकर पूर्व देश में पुरपाटन गये पर वर नहीं मिला। दक्खिन देश के पहाड़ों की ओर गये पर उधर भी घर वर नहीं मिला। पश्चिम पंजाब गये, वहाँ भी वर नहीं मिला। राजा महर घर आये तथा चिंतित हो गये—हमारा धर्म बिगड़ गया, हमारा धर्म लुट जायगा। मंजरी काल होकर उत्पन्न हुई है। उन्होंने तलवार लेकर बंगले की ओर प्रस्थान किया—मंजरी को मार डालूं। मंजरी छत से नीचे आयी और पिता के चरणों पर गिर पड़ी। पिता जी, किसकी मृत्यु निकट आयी है? तुमने म्यान से तलवार खींच ली है। उन्होंने बताया—तुम्हारे लिए हर जगह पर वर खोजा पर कहीं वर नहीं मिला। हमारी इज्जत लुट गयी। तुम काल होकर पैदा हुई हो? मंजरी ने बताया तुम गढ़ गउरा जाओ। बारह पाल में गढ़ गउरा बसा है तथा वहाँ तिरपन बाजार है। तुम वहाँ मेरा तिलक भेज दो। वहाँ सात कोस का बोहा है। चौदह कोस का चरागाह है जहाँ गायें चरती रहती हैं। ऐ बाबुल! तुम वहाँ तिलक भेज दो। मेरे ससुर का नाम मलसांवर है, ससुर का नाम टिकईत है। मैं स्वामी का नाम नहीं जानती। तुम वहाँ तिलक भेज दोगे तो वह अगोरी आयेगा, मोलागत को मार डालेगा और तुम्हारा धर्म बच जायगा। (६६)

शब्दार्थ—बरिस = वर्ष। तीलक = तिलक। मियनियाँ = म्यान। दुआरी = द्वार। ठियन = स्थान। बाबिल = बाबुल, पिता। मुदई = शत्रु।

भावार्थ—जब महर ने इतनी बात सुनी, उन्होंने नाऊ और ब्राह्मण को बुलाया। फिर शिवचन्द को बुलाकर कहा—तुम सवा मन सोना लेकर तथा थाली और वस्त्र लेकर अगोरी के बाजार में जाओ। वहाँ वादी के अनुकूल वादी मिलेगा। समधी के योग्य समधी मिलेगा तब हमारा धर्म बच जायगा। वे मुहूर्त निकलवा कर चले तथा कनऊज पहुँचे। तीनों लोरिक के बंगले पर उपस्थित हुए। लोरिक वहाँ गहरी नींद में सो रहा था। शिवचन्द की खांसी सुनकर वह जग गया तथा पूछने लगा—भइया तुम्हारा वतन कहाँ है? तुम्हारे पिता कौन हैं? शिवचन्द ने कहा—अगोरी मेरा वतन है। अगोरी में ही मैं उत्पन्न हुआ हूँ। सवा मन तिलक लेकर मैं कनऊज के बाजार आया हूँ। लोरिक अपनी माँ खोइलनि के पास गये और यह आश्चर्यजनक बात बतायी कि तिलक देने वाले आये हैं। तुम तिलक स्वीकार कर लो। यह सुनकर वह हंस पड़ीं। उन्होंने जल्दी से गांगी को बुलाया और उसको दुबरी पंडित के दरवाजे पर भेजा। पंडित बाबा आये। लोरिक ने उनका पांव स्पर्श किया। उन्होंने जयजयकार किया। खोइलनि ने कम्बल बिछाया तथा पंडित जी को बैठाया। लोरिक का तिलक सम्पन्न हो गया। उसके बाद दावत हुई। छप्पन प्रकार के भोजन बने। नाऊ, ब्राह्मण, सबने भोजन किया फिर दुबरी पंडित ने लग्न शोधकर बताया। शिवचन्द ने कहा—बारात के लिए गउरा में अच्छे पट्ठों को सजाना। बारह जोड़ी सिंघा तथा तेरह जोड़ी करताल ले लेना। चौदह जोड़ी धौंसा भी लेना। अगोरी में मोलागत दूज के चाँद की भाँति उगा हुआ है। उसके मुकाबले का कोई शत्रु नहीं है। उसकी टक्कर में कोई नहीं आ सकता। (६७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—नउवा = नाऊ। बामन = ब्राह्मण। साइत = मुहूर्त। वदिया = वादी, शत्रु। धावन लागें = दौड़ने लगे। मोकाम = मुकाम, पड़ाव। हलल जायं = पार करते जा रहे हैं। मसहरी = एक प्रकार की चारपाई। गदवा = गद्दा। जुमुस = जुंबिश, कंप, गति। खोखे लगलें = खांसने लगे। बुनकें = बूंद से, वीर्य से। सिरजल बाड़या = सृजित हुए। कोखिया = कुक्ष। ओतन गोतन = गोतन ओतन (वतन) एक युग्म लगता है गोतन का यहाँ कोई विशेष अर्थ नहीं प्रतीत होता। बताउर = बताया हुआ। तिलक हरू = तिलक चढ़ाने वाले। माया = माँ। करजिया = कर्ज। बलावा = निमंत्रण, बुलावा। तिलकिया = तिलक। टकहया = टका, पैसा। कांखी = कांख में। पतरइ = पत्रा, पंचाङ्ग। कम्मल = कंबल। चउक = चौका। चउक पुरवावें = पूजा के लिए चौक तैयार करवा रहे हैं। पूजा के लिए जो चौक तैयार किया जाता है उसको चौक पुरना करते हैं। चाअन = चन्दन। पीढ़वा = पीढ़ा। कलसा = कलश छपनो मोर बनल परकार = छप्पन प्रकार का भोजन बना। परकार = प्रकार। लग-निया = लग्न। पठवा = पट्ठा। उवल रे दुइज कर चान = दूज का चाँद उगा हुआ है अर्थात् वह दूज के चाँद की भाँति है। उवल = उगा हुआ। चान = चंद्रमा। अइसन = इस प्रकार। पठवा = पट्ठा, वीर। टकरे आई = टक्कर में आयेगा। ना कोई रहे रेखिया उठान = कोई मूंछ नहीं उठा सकता था। रेख आना = नयी मूंछ निकलना।

भावार्थ—तब शिवचन्द ने लोरिक को समझाया कि बुड्ढे लोगों की आवश्यकता नहीं है। ऐसे लोगों को लाना है जिनमें तरुणाई का जोर है और जिनकी माताएं अच्छी हैं। लोरिक ने उत्तर तो नहीं दिया पर अपने मन में कहा—पिता बूढ़ कूवे को कैसे छोड़ा जा सकता है ? शिवचन्द तिलक चढ़ाकर चले गये। लोरिक की चिन्ता बढ़ गयी। मलसांवर के पास उन्होंने गायों के अड़ार पर गांगी के हाथ पत्र भेजा। मलसांवर पत्र पाकर दुखी हुए और उनकी आँखों से झर-झर आँसू गिरने लगे। हमें बोहा में खबर क्यों नहीं दी गयी। इस प्रकार गउरा में क्यों तिलक ठान लिया ? गांगी ने उन्हें समझाया कि भइया असमंजस में पड़ गये थे। मलसांवर ने पत्र लिखा कि तुम पट्ठों को तैयार करो। यदि गउरा में अन्न या धन की कमी होगी तब हम गाड़ी में लदवाकर भेज देंगे। बारात लेकर अगोरी में चढ़ चलो। गांगी ने लोरिक को यह पत्र दिया। वह रोने लगा। हाय, मेरे ऊपर बड़ा अभियोग लग गया है। यदि भैया से मैंने पूछ लिया होता तो धर्म बच गया होता। (६८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मतारी = माँ। जायल = उत्पन्न किया हुआ। बूढ़ठेल = बूढ़े पुराने। सोचिया = चिंता, सोच। ओढ़ कार = विघ्न, असमंजस। आफतिया = आफत, विपत्ति। अनवां = अन्न। धनवां = धन। छकड़वा = गाड़ी, छकड़ा। पतिया = पत्र। बांचै लागल = पढ़ने लगा। अंसिया = आँसू। इजलमवै = इल्जाम, अभियोग। धरमवां = धर्म।

शब्दार्थ—यहाँ गउरा में लोरिक स्वयंबर रचने लगा। सबको निमंत्रण गया। छत्तीस जाति के लोगों को सूचना भेजी गयी। जोड़ी, करताल, तथा धउंसा सब बज उठे। लोरिक की माँ मंगल गान करने लगी। मटमंगरा हुआ। कंगन बांधा गया। संवरू बोहा से कनऊज आये। बारात का सारा सामान लद गया। बासमती चावल, मूँग की दाल, घी, तम्बू, कनात सभी चीजें लाद ली गयीं। लोरिक ने अपने पिता को भी एक झंपोली में बन्द कर रख लिया। यद्यपि शिवचन्द ने बूढ़ों को लाने से मना किया था पर परामर्श कौन देता ? बारात का सारा प्रबन्ध पूर्ण हो गया। मलसांवर की पालकी सज गयी। धोबी अजई ने भी अपना साज सजाया। लोरिक ने दुर्गा, बनसत्ती, तथा अन्य देवताओं का स्मरण किया। बाजे-गाजे की तुमुल आवाज गूँज उठी और संपूर्ण बारात तैयार हो गयी। इधर हरिण और हरिणी के कानों में यह आवाज पहुँची। हरिणी रो पड़ी। ऐसा बाजा बज रहा है कि लगता है कि ऐ हरिण तुम्हारे प्राण चले जायँगे। हमें दूसरे जंगल में भाग चलना चाहिए। हरिण ने हरिणी को समझाया—अगोरी में मोलागत मारे जायँगे तथा मंजरी का डोला गउरा गुजरात आयेगा। (६९)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सियंवर = स्वयंवर। भीउली = भींट + ली = ऊँची जमीन। नेवतै = निमंत्रित। बेलकुल = बिल्कुल। तेली = तेल निकालने और बेचने वाली वैश्यों की एक जाति। तमोली = तबोली, पानवाला। धउंसवा = धौंसा। मतरिया

ावे = कान। मटमंगरा = मटमंगरा विवाह के पहले की एक रीति जिसमें
दिन पर वर या वधू के घर की स्त्रियाँ अन्य स्त्रियों के साथ गाँव के बाहर
ा जाती हैं और मिट्टी लाती हैं जिसका उपयोग विवाह में अनुष्ठान के
है। बयनवनक = गायों का। झंपोलवा = झंपोली। दंतजमवा =
ागरवा = शृंगार। सिहवा = सिहा, एक प्रकार का बाजा।

ार्थ—आगे का हाल सुनो - लोरिक की बारात सज गयी। मलसांवर की
र हो गयी तथा कनऊज में परछन होने लगी। सखियाँ मंगलगान करने
क की भी परिछन हुई। सजकर बारात चल पड़ी। आगे मलसांवर तथा
की डोली चली। बायें बनसत्ती तथा दाहिने दुर्गा हैं। सोलह सौ कंटाइन
हरियाँ भी साथ चल रही हैं। संवरू दादा की पूज्य ब्रह्माइन भी साथ में
ाति के युवक चले जिनमें तरुणाई का जोर था। दिन रात चलकर सभी
और थाना अगोरी के बाजार में सगड़ पर अपना डेरा डाला। दुबरी पंडित
ातायी। सुर्जन डोम, बांठा, धोबी अजई सबका तंबू गिरा। देवसी का तम्बू
में नौ-नौ कुतिया बैठी हुई हैं। सिवचन्द, मलसांवर, लोरिक सबने तम्बू
वहाँ मलसांवर कुश की चटाई बिछाकर सुबह शाम पूजा करने लगे।
ा हुई। यदि राजा मोलागत को खबर मिलेगी तो डोला नहीं जाने देगा।
न्द को भेजा कि जाकर बारात को कह दें कि बाजा बजाना हितकर नहीं
चन्द लोरिक के पास गये और कहा—तुम इस प्रकार बाजा बजा रहे हो
जायगा। अगोरी में इस सगड़ पर हमारी इज्जत चली जायगी। (७०)

तथा टिप्पणी—परछन = परि + अर्चन, एक विशेष प्रकार की आरती जो
य की जाती है। लाव लस्कर = लाव लश्कर। डगरिया = डगर, रास्ता।
का। टाटी = टट्टी, आसनी, चटाई। डेरवा = डेरा। बाजी बजावति बाड़
ा रहे हो। इजतिया = इज्जत।

र्थ—शिवचन्द अगोरी आ गये। इधर लोरिक बांठा के पास पहुँचे और
ह जोड़ी सिंहा, तेरह जोड़ी करताल तथा चौदह जोड़ी धौंसा बजा दो।
मारू राग बजाया, फिर जुझार बजाया, उसके बाद फिर विवाह के समय
ायी। महर इससे चिंतित हुए और अगोरी में पत्र लिखने लगे। धावन
रिक के पास पहुँचा। उसमें लिखा था तीन सौ साठ पोर का बांस हमारे
ा से मंगवा दो ताकि हम उसे अगोरी में गाड़ दें और स्वयं वर करें।
े के पास गये और पत्र का सार उनको बताया। कुँवे ने कहा कि देवहा
ओ और वहाँ जोर से पैर मारो। जब कगार गिरने लगे तब तीन सौ
एक कुश उखाड़ लेना और उसे अगोरी में भिजवा देना। इससे तुम्हारा
हो जायगा और भांवरें घूम जायँगी।

शब्दार्थ तथा टिप्पणी — लकड़ी धलैंले बजाय = लकड़ी से धौंसे या बैंड पर जो स्वर बजाया जाता है उसे लकड़ी कहते है। युद्ध के समय का चित्र है अतः मारू तथा जूझार लकड़ी बजाने की बात कही गयी है। बियहुती लकड़ी = विवाह के समय पर बजाया जाने वाला स्वर। पोरै के = गांठ का। झंपोला = पेटिका। देवहा के तीरे = देवहा नदी के तट पर। कररवां = करार पर, तट पर। हनि के = जोर से। कूसै = कुश। उपार लेब्या = उखाड़ लेना। भंवरवा = भाँवर।

भावार्थ—लोरिक जब देवहा के किनारे गये तब उन्होंने कगार पर जोर से पैर मारा। कगार टूटकर गिर पड़ा। उन्होंने ३६० पोंरों का कुश उखाड़ा फिर वहाँ से वह झंपोले के पास आ गये। गांगी उस कुश को लेकर अगोरी के बाजार गया और उसे उसने महर को सौंप दिया। महर को तब विश्वास हो गया कि लोरिक शत्रु से लड़ने योग्य है। फिर उन्होंने एक पत्र लिखकर सगड़ पर भेजा कि गढ़ गउरा से कुंवा मंगवा दो। उस कुएँ के पानी से कलश भरवा दूँ तथा मंजरी का भांवर घूमा दूँ। अगोरी के कुंवों का पानी सूख गया है। कैसे पानी भरवाऊँ ? पत्र पढ़ते हुये लोरिक झंपोले के पास पहुँचे और बूढ़ कूबे से कहा कि इस बार महर ने बड़ा गूढ़ पत्र लिखा है। गढ़ गउरा से कुंवा कैसे आयेगा ? उन्होंने समझाया कि पत्र लिख दो कि महर मेरे साथ सूखा कुंवा गउरा भेज दें। यह लिखकर उन्होंने गांगी के हाथ पत्र भिजवा दिया। मेहर विचारने लगे वीर आकर सगड़ के घाट पर टिके हुये हैं। महर के आंगन में बांस गड़ने लगे तथा मंजरी का कंगन बांधा जाने लगा। जब द्वार पूजा का मुहूर्त आ गया तब बाजे-गाजे की तुमुल ध्वनि हो उठी। लोरिक की पालकी सज गयी तथा महर के द्वार पर पहुँची। परछन के बाद बारात जनवासे लौट गयी। विवाह का मुहूर्त आ गया। छः छः कहांर पालकी लेकर महर के द्वार पर पहुँच गये। लोरिक आँगन में पहुँचे तथा विवाह सम्पन्न हुआ। बारात सगड़ पर विदा हुई। मलसांवर भी वापस आ गये। आधी रात हो गयी तब मंजरी मंडप पकड़कर रोने लगी। कल प्रातःकाल अगोरी से विदायी हो जायगी। राजा मोलागत हमारी डाँड़ी छीन लेगा। मेरी माँग में सिंदूर पड़ चुका है और मैं किसी की पत्नी हो चुकी हूँ। मंजरी का रुदन लोरिक के कानों में पहुँचा। सोचने लगा किसी का बेटा अगोरी में मारा गया है या किसी की सखी-सहेली छूट रही है जिसके कारण वह रो रही है। आज अगोरी में कौन सी अजीब बात हो गयी है कि गोपो रो रही है। (७२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी — करार = कगार। पोर = गांठ। गन्नत-गन्नत = गिनते-गिनते। केशुवाक = किस चीज का। अवगुड़वा = गूढ़। अचरज = आश्चर्य। झूरै = सूखा हुआ। बंसवै = बाँस। दूअर पूजवा = द्वार पूजा। बरनेत = वर। पहरवा = पहरा। मड़वा = मंडप। सेन्हुरवा = सिंदूर। कोट = किला। टूवर = अनाथ। बजं = बाजार का संक्षिप्त रूप। अनभो = अजीब चीज, अचंभा।

भावार्थ—जब सगड़ पर लोरिक को रुदन की ध्वनि सुनाई पड़ी, वह घबरा गया। वह वहाँ घूम-घूमकर पहरा देने लगा फिर गांगी के तम्बू में गया और उसे जगाया। उसने लोरिक को डांटा—पैसा तो टका मिला है। खाना मिला नहीं। फिर आधी रात को जगाने चले हो। लोरिक ने उसे आश्वासन दिया। जब विवाह कर अगोरी से चलेंगे हम तुम्हारे लिये असरफी और सोने की कोठरी खोल देंगे। तुम क्यों चिन्ता करते हो? फिर गांगी को बताया कोई गोपी आधी रात को आंगन में रो रही है। इसका पता लगाओ। गांगी डर गया और कहने लगा अगर वहाँ जाऊँगा तो कोई जान से मार डालेगा। लोरिक ने समझाया—नाऊ, तुम्हारी बुद्धि ज्ञान से भरी हुई है। तुम अगोरी जाकर पता लगाओ। गांगी किले पर गया—और वहाँ फाटक पर बैठे हुये दो सिपाहियों ने उसे फटकारा—तुम चोर हो? चंडाल हो? भूत हो? बैताल हो? इतनी रात कहाँ जा रहे हो? गांगी ने बात बतायी। लोरिक के भात में अधिक नमक पड़ गया था। उसका तालू सूख गया है। मोती सगड़ के सारे कुएँ सूख गये हैं। मैं कलश का पानी लेने जा रहा हूँ। अन्यथा गउरा का अहीर मर जायगा और मंजरी विधवा हो जायगी। यह सुनकर सिपाहियों ने फाटक खोल दिया। वह पहले फाटक से दूसरे फाटक पर गया, वहाँ बाघ और सिंह अंकित थे? गांगी डर कर वहाँ से भाग गया। सिपाही ने उसे समझाया कि सिंह पत्थर के हैं। गांगी ने उन्हें स्पर्श करके देखा। फिर वह आगे बढ़ा। तीसरे फाटक पर एक ओर बूढ़ बूबे तथा दूसरी ओर मलसांवर अंकित थे। गांगी मंडप में पहुँचा जहाँ मंजरी रो रही थी। उसके पांव में महावर लगे थे। हाथ में कंगन था। गहरी पीली साड़ी थी। माथ में सिंदूर था। मंजरी की दृष्टि गांगी पर पड़ी और वह भाग खड़ी हुई। अनूपी के पास गयी तथा उसे सारा हाल बताया। अनूपी गांगी के पास गयी तथा उसकी कलाई पकड़ कर घसीटने लगी और उसे ले जाकर मांड़ में पटक दिया फिर उसे अपने हाथों से पीटने लगी। वह रो-रोकर कहने लगा—ऐ भावज मंजरी, मैं यहीं मर जाऊँगा और पूजा लूँगा। तुम्हारा सारा कुटुम्ब और परिवार निन्दा करेगा। मंजरी के कहने पर गांगी को गड्ढे से बाहर निकाला गया और कुंडों के पानी से नहलाया गया। फिर पीताम्बर, कछनी, तथा और चीजें उसे पहनने के लिए दी गयीं। अनूपी ने उससे मंडप में आने का कारण पूछा? क्या गउरा का अहीर मर गया! क्या मंजरी चौके पर ही विधवा हो गयी? गांगी ने बताया कि सगड़ का पानी गंदा हो गया है। कुएँ सूख गये हैं अतः मैं कलश का पानी लेने आया हूँ। अन्यथा गउरा का अहीर मर जायगा और मंजरी रांड़ हो जायगी। अनूपी गांगी को मंजरी के कोठे पर ले गयी। मंजरी ने उसे पानी और शर्बत पिलाया। सोना, चांदी दिया और कहा कि मोती सगड़ पर जाकर अहीर से कह दो कि इसी समय आकर यहाँ ससुराल कर जांय। गांगी दौड़कर सगड़ पर आ गया। उसने लोरिक को डांटा और कहा तुम रात में मेरी जान मरवा दोगे। मैं अगोरी में मर जाता, फिर बड़ा चौका होता! (७२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—अधेला = आधा पैसा। पइसा = पैसा। असरफी = अशरफी। लीहा गठियाय = गांठ में बांध लेना। करनवा = कारण से। निआई की रात = न्याय की रात, निर्णायक रात। बुधिय = बुद्धि। पयाम = प्रस्थान। चटर-चटर बोलत = चट-चट बोल रही है। तारू = तालू। ढबइल = गंदा। अद्धी = आधी। रांड़ = विधवा। हुँड़ार = भेड़िया। बनउरी लिखल हउवै = पत्थर अंकित किये गये हैं। टूवत हउवैं = छू रहे हैं। मंड़वा = मंडप। व्योपार = व्यापार, कार्य। निंगी = नग्न। उघार = खुला हुआ। घिसरउले = घसीटते हुये। मांड़ = भात बनाने के बाद जो पानी निकाला जाता है उसे मांड़ कहते हैं। ठेंगलाय = ढुलका दिया। पूजवइवै = पूजा लूंगा। मेहना = निंदा। गड़बड़ा = गड्ढा। कछनी = कच्छा। कादौ = शायद। सोरिऔ = जड़। तरोतर = तुरन्त, शीघ्र। सरबत = शर्बत। डांक के = चिल्लाकर। चउकवा = चौका।

भावार्थ—गांगी ने बड़े जोर से लोरिक से कहा—आधी रात में तुमने मुझे अगोरी भेजा। मेरी जिन्दगी चली जाती। लोरिक ने गांगी से पूछा—आधी रात को कौन अगोरी में रो रहा था? गांगी ने बताया कि मंजरी मंडप का बांस पकड़कर रो रही थी। उसने मुझसे कहा है कि गढ़ गउरा का अहीर आकर ससुराल कर जाय। लोरिक यह सुनकर क्रुद्ध हुआ। भइया संवरू जगेंगे, धोबी जगेगा। सारी बारात जगेगी और मेरी खोज करेगी। तुम्हें आधी रात में भेजते हुये लज्जा नहीं आती। गांगी ने कहा—ससुराल कर लो फिर गउरा जाना संभव नहीं होगा। लोरिक अपने अस्त्र-शस्त्र से लैश होकर, तवा छाती पर बांधकर तथा खड्ग एवं ओढ़न लेकर अगोरी के लिए रवाना हुआ। सिपाही किले पर बैठे हुये थे। उन्होंने कुछ भी नहीं कहा—लोरिक ने अन्दर जाकर देखा पत्थर का शेर तथा बाघ अंकित था। आगे मलसांवर और सतिया अंकित थी। एक ड्योढ़ी के नीचे धोबी की पत्नी बिजवा भी नग्न अंकित थी। लोरिक जलकर भस्म हो गया। वह आंगन में पहुँचा और उसने कुंडे का पानी ढरका दिया। सारी गोपियां उठकर आंगन में टहलने लगीं। वे अनूपी के पास पहुँची और कहने लगी—अहीर आंगन में आ गया है। गोपी मंजरी अपनी कोठरी से आ गयी और उसने लोरिक की कलाई पकड़ ली। अन्य गोपियाँ एकत्र होकर वहाँ मंगल गान करने लगीं। फिर दूब और अछत (चावल) लेकर लोरिक को चूमने लगीं। उन्होंने मंजरी की स्तुति की और कहा कि मंजरी अगोरी में देवता के सदृश उत्पन्न हुई है। उसका यहाँ अवतार हुआ है। (७४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मुवल = मरा हुआ। मंड़वा = मंडप। सेन्हुर = सिंदूर। अउर = और। ससुरार = ससुराल। खोजिया = खोज। गोहराई = गोहरायेंगे, पुकारेंगे। लजात = लज्जित। बेवरा = विवरण। केरुवा = केला। सिकटी = कंकड़। बीनि कें = चुनकर। झोलरा = झोला। पीतरी क = पीतल का। घबरे रं = घबड़ाय। भक से = अचानक, एकाएक। उजियार = प्रकाशित। डाँकि रे गइलै = पार कर गये।

निंगी = नंगा । लीखल हउवै = अंकित की गयी है । नेवतहरी = नेवता करने वाले । ढरकवलं = ढुलका दिया । सनेसवा = संदेश । कलइया = कलाई । मंगलवो रे चं = मंगलाचार । दूब = दुर्वा । चउरा = चावल । चूमन बाड़ीं = चूम रही हैं । चुकावन कर रही हैं । यह एक रीति है जो मंगलोत्सव के समय स्त्रियाँ करती हैं । खोंइछवा = आँचल में ।

भावार्थ—इधर वीर लोरिक सिर लटका कर बैठा हुआ है और सारी गोपियाँ चिन्ता में पड़ गयी हैं । लोरिक किसी की ओर नहीं देख रहा है । गोपियाँ उसे खोद रही हैं पर वह स्थिर बैठा हुआ है, जैसे बबूल का वृक्ष आँगन में बैठा हुआ हो । गोपियाँ बुला रही हैं पर वह मौन है । गोपियाँ उसको हिला रही हैं पर वह निस्पंद है । वे आपस में कहने लगीं—मजरी का भाग्य फूट गया है । उसे गूँगा और बहरा पति मिल गया है वैसे देखने में तो वह सुन्दर है । महरिन फिर से रोने लगी । मैं अपनी बेटी की बिदायी नहीं करूँगी । गले में घड़ा बाँध कर मजरी के साथ मैं कुएँ में गिर जाऊँगी । अनूपी ने उन्हें सन्तोष दिलाया और कहा कि हम इन्हें बुलवायेंगे । अनूपी पैर में घुँघरू बाँध कर नाचने लगी और ताल भरने लगी । उसका नृत्य ऐसा सुन्दर था कि धरती और आकाश सभी मोहित हो गये किन्तु गउरा का अहीर अप्रभावित रहा । महरिन छाती पीट कर रोने लगी और कहने लगी कि ऐ शिवचन्द तुम मेरी बेटी को पानी में डुबा आये । तब शिवचन्द ने लोरिक पर व्यंग्य किया कि इनकी माता ओखली का अन्न और भूसी बटोरती है और उसकी रोटी खाती है । इन्होंने जलती हुई रोटी खा ली थी अतः बचपन से ही इनका कण्ठ रुद्ध हो गया है । तब अहीर लोरिक बोल उठा—तुमने बूढ़ी कन्या से मेरा विवाह करा दिया और अब सगड़ पर पानी खोज कर मेरे लिए शत्रु तैयार कर रहे हो । (७५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मउर = मस्तक । लटकाय = लटका कर । खुदुक्का मारैं = खोद रही हैं । खुत्था = सूखा पेड़ । आपुस में = आपस में । बहिर = बधिर । गगरी = घड़ा । दईब = देव । छतिया = छाती । कजरवा = काजल । मरकहवा = जीव मारने वाला । रतरे नं = रतनार, चमकदार । घुघुरवा = घुँघरू । तं = ताल । तोरति बाड़ें = तोड़ रही है । नचिया = नाच । मोहितवा = मुग्ध । कयरे न = कैलाश । अजगुत = अयुक्त, अनुचित । सूरतवै = आकृति । पनिया में बोरि अइल्या = पानी में डुबा आये । दुअरी = द्वार पर । हरवाहिया = हलवाही, हल चलाने का काम । कन्ना = अन्न का दाना । खुदिये = भूसी । जरती = जलती हुई । कंठा = कंठ । रून्हनवें = रुद्ध । करिनवां = कन्या । सगरवां = सगड़ पर । मुदई = शत्रु ।

भावार्थ—लोरिक की बातें सुन कर सारी गोपियाँ हँसने लगी और कहने लगीं हम लोग इतनी देर से बुलवा रहे थे पर तुम जरा भी नहीं बोले अब किस बात पर तुम्हें गोली सी लग गयी । कैसे तुम बोलने लगे । आंगन में अब प्रसन्नता छा गयी है । अनूपी ने तोसक-तकिया लगा कर सेज तैयार कर दी और लोरिक को सुला दिया ।

तब मञ्जरी ने अपने सत का स्मरण किया। उसने सत का थाल सजाया, सत का दीपक जलाया तथा सत के फूल बनाये, फिर आरती की। उसके बाद रोने लगी। कल मेरी डोली जिरउल पर जायगी और वहाँ मेरे पति मारे जायेंगे। मेरी नाव अध-जल में डूब जायगी। इसी बीच लोरिक की नींद खुल गयी। उसने मञ्जरी की कलाई पकड़ कर कहा—तुम्हारे ऊपर कौन सी विपत्ति आ गयी है कि तू रो रही थी। क्या सङ्गी, साथी, समवयस्क, गाँव तथा परिवार छूटने का दुख है ? तुम्हें क्या चिन्ता है ? तब गोपी ने उसे रो-रो कर बताया कि जिस दिन मेरा जन्म हुआ, मोलागत ने सौर ग्रह में मेरे हाथ में धागा बँधवाया था। मैं तुम्हारी प्रथम विवाहिता हूँ। कल जिरउल पर तुम्हारी जान चली जायगी और अगोरी में मेरी नाव डूब जायगी। (७६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—एतनी बेर ले = इतने समय तक। कइसन बात तोके गोली लगि गइल = कौन सी ऐसी बात हुई कि तुम्हारे हृदय में गोली सी बिध गयी। खुसिहाली = प्रसन्नता। तोसक = बिछाने का गद्दा। चुनि-चुनि = चुन चुन कर। नकुला = नाक। मोटके = मोटका। सतवा = सत। मतरिया = माता। सरिरिया = शरीर। सहं(ग) = सहायक। रसिया = रस, क्रीड़ा, आमोद। निदिया = नींद। रतिया = रात। समउरिया = सम व्यस्क। कुटुम = कुटुम्ब। सइंया = स्वामी। सउरी = सौर ग्रह। जियवा = जीव, प्राण।

भावार्थ—जब लोरिक ने यह बात सुनी उसने गोपी को यह ताड़ना दी और कहा—तुम मुझसे इस प्रकार बात मत करो। तुम क्यों रो रही हो ? मेरे भाई साँवर, कुटुम्ब, परिवार, धोबी सभी लोग सो रहे हैं। सभी सुन कर निन्दा करेंगे। हमने एक वार सोहवल में राजा बमरी के उन सात पुत्रों को मार डाला जो दैवी प्राणि थे और जो सिंह और बाघ को मार डालते थे। वे सूंस और घड़ियाल को पकड़ लेते थे। मैं कल निर्मल को भी मार डालूंगा। मञ्जरी ने कहा तुम चाहे मुझे जितना भरोसा दिलाओ, मैं इस किले में भयभीत हूँ। कल जिरउल पर मेरी डोली छीन ली जायगी। अतः मेरी बात मान जाओ और गउरा गुजरात लौट जाओ। मुझसे सुन्दर स्त्री तुम्हें कुसुमापुर में खोज रही हैं। तुम जाकर वहाँ आनन्द करो। मुझ जैसे नारकीय जीवन के लिए यहाँ तुम्हारी जान चली जायगी। तुम्हारा कुटुम्ब और परिवार रो उठेगा। तुम्हारे भाई भी गायों के अड़ार में रोयेंगे। लोरिक ने तब मञ्जरी को समझाया—तुम मृत्यु को सरल न समझो। ऐ गोपी हम पीछे पैर नहीं हटायेंगे, न भाग कर गउरा गुजरात जायेंगे। या तो मेरे प्राण जिरउल पर जायेंगे या मैं गउरा गुजरात जाऊंगा। जब तक मेरा जीवन रहेगा मैं जिरउल पर तुम्हारी डांड़ी नही छोड़ूंगा। (७७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बजर परो = तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाय। गढ़वै = गढ़। धान = प्रहार, चोट। निअइयैं की रात = न्याय की रात, निर्णायक रात। समउरिया = सम वयस्क। मतंगिया = मतङ्ग की भाँति, हाथी की भाँति। काहे

बदे = किस लिए। नदी बेउरा = बेउरा नदी । डाँड़ी = डोली । निरम्मर = निर्मल, मोलागत का भानजा जो बड़ा वीर था। लोरिक ने उसे लड़ाई में मार डाला। भरोसवा = भरोसा । टंगरियाँ = पैर । कलियाँ = फल । जिरउल = गांव की सीमा? छोरल जइहैं = छीनी जायगी। बियहिया कुसुमापुर-जोहत रे हउवै = विवाहिता तुम्हें कुसुमापुर में खोज रही है। चनवा (चंदा) की ओर सकेत किया गया है। जोहत हउवै = खोज कर रही है। मजा = आनन्द । नरकी जियरा = नारकीय प्राण। समिया = स्वामी । नाहीं पीछवा रे गोड़वा रे हटइबैं = पीछे पैर नहीं हटाऊँगा। की त = या तो। दम बचल रही = जब तक साँस रहेगी।

भावार्थ—वीर लोरिक ने मंजरी से पूछा, तुम मुझे बताओ बिदाई में क्या-क्या मिलेगा? मइया को क्या बिदायी मिलेगी और दादा को क्या बिदायी मिलेगी? मंजरी ने समझाया कि तुम आँगन में रूठकर बैठना। तुम्हें चाहे जितना पैसा दिया जाय स्वीकार मत करना। जब शिवचंद मामा आँगन में आ जाँय और कहें कि कुछ माँग करो तो उनसे जिरउल पर लड़ने के लिए ढाल माँगना तथा अपने भाई मलसाँवर से कहना कि वह आगे तथा पीछे वाली गाय न स्वीकार करें। मध्य वाली गाय चुनकर ले लें और गउरा चले जाँय। बाबिल बूढ़ कूबे दुशाला बिछा दें और जितना दहेज मिले वह लेकर कनउज के बाजार के लिए प्रस्थान कर जाँय। प्रातः काल होते-होते लोरिक मोती सगड़ पर आ गये। इधर सारी बारात जग गयी। गाँगी पंखा झलने लगा। धोबी गड़ बुटवल का तम्बाकू जहानाबादी चिलम में रखकर पीने लगा। मलसाँवर हाथ में माला लेकर भजन करने लगे। तड़के ही अगोरी से राजा महर ने यह पत्र लिखकर भेजा—संध्या समय तुमने विवाह किया। प्रातः काल ही मंजरी की डोली ले जाओ। ऐसा मुहूर्त निकला है। वीर लोरिक ने पत्र पढ़ा और उसे बूढ़ कूबे के पास ले गया। उन्होंने सलाह दी, छः कँहारों को भेज दो तथा बाँठा के द्वारा बाजा बजवा दो। कँहार गये और मंजरी की पालकी सज गयी। उसने माँ से बिदायी माँगी। नान्हू भइया को हमारे पास भेज दो। माँ ने इस बात को स्वीकार कर लिया। मंजरी ने फिर सखियों से बिदायी माँगी। एक सखी ने नवलखा हार निकालकर दे दिया। फिर मंजरी ने मामा शिवचन्द से अनूपी को बिदायी में ली। अन्त में वह पिता के पास गयी तथा पिता ने उसे गाड़ी भर सोना लदवा दिया ताकि मंजरी सारी जिन्दगी बैठे हुये खा सके। (७८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बिदायी = बिदायी के समय की भेंट। सुधि = सुधि, याद। बीरनै के = भाई का। दउलति = दौलत । बटुवा = एक प्रकार का थैला। मझिली = मध्य वाली, बीच वाली। लीहै बराय = चुन लेना। दुसाला = दुशाला, चादर। दइजा = दहेज। बान्हि के = बाँधकर। गढ़ बुटवल = यह स्थान कहाँ है अभी इसकी जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है। जहानाबाद = एक स्थान का नाम। यह स्थान कहाँ था इस पर खोज की आवश्यकता बनी हुई है। पाती = पत्र । सेवला = श्वेत

पट, सफेद वस्त्र, चादर । इसकी व्युत्पत्ति शैवाल से भी हो सकती है। यह एक प्रकार की घास है जो नदी के किनारे उगती है। यहाँ अर्थ घास की चटाई आदि भी सम्भव है। सेन्हुर = सिन्दूर । भोरवा = प्रातःकाल । साइत = मुहूर्त । अइसन = ऐसा । फनाय = फंदाकर । हुकुमइ = हुक्म, आज्ञा । चउके से = चौके से । मंगनवा = माँग । डाँड़ी = डोली । सुधिया = सुधि, स्मृति । मावा = माँ । कुकुरा = कुत्ता । मनुई = आदमी, मनुष्य । धइलस = पकड़ लिया । छकड़ा = शकट, बोझा ढोने की गाड़ी ।

भावार्थ—नाइन ने मंजरी को डोली में बैठाया तथा डोली जिरउल पर लायी गयी। इधर लोरिक आंगन में आया तथा सखियाँ मंगलगान करने लगीं। लोरिक वहाँ मस्तक झुकाये मौन बैठा रहा। सब लोगों ने लोरिक को मनाने की कोशिश की पर लोरिक ने किसी की ओर नहीं देखा। शिवचन्द मनाने आये और कहा जो कुछ मांगों मैं दूँगा। लोरिक ने कहा—ऐ बाबा, तुम बटुवा मुझे दे दो ताकि जिरउल पर मैं सुबह-शाम खिचड़ी बना सकूं। इसके अतिरिक्त तुम मुझे ओड़न दे दो ताकि मैं युद्ध कर सकूँ। लोरिक की विदायी हो गयी। मलसांवर ने दो दांत वाली गाय ले ली। बूढ़ कूबे अपने झंपोले से बाहर आ गये। अगोरी में विदायी देते-देते लोक थक गये थे। उन्होंने बूढ़ कूबे के सिर पर भूसा रख दिया। वह गउरा के लिए प्रस्थान कर गये। मंजरी की डाँड़ी जिरउल पर पहुँची। इधर उसके पिता महर भागते हुये मोलागत की कचहरी में पहुँचे और कहा कि जिस मंजरी के हाथ तुमने धांगा बँधवाया था उसके लिए मैंने एक दुर्बल सम्बन्धी खोज लिया है और उसका विवाह कर दिया है। कन्यादान कर देने से मेरा जीवन सुफल हो गया। तुम जाकर उसकी डोली छीन लो और मंजरी के साथ सुख-विलास करो। यह कहकर वह अपने किले में भाग आये। मोलागत घबरा उठा। मैं गउरा के अहीर को कब मारूँगा। वह किले में रोने लगा। मुंशी, दीवान, तथा सभी कचहरी घबरा गयी। उन्होंने कहा—मोलागत के सिर पर पाप चढ़ गया है। गाँव की बहन-बिटियाँ को यह नहीं पहचान रहा है। इसकी मृत्यु निकट आ गयी है। मोलागत ने भांट को पत्र लिखा—मैं तुम्हें आधा राज्य दे दूँगा। तुम बरमपुर में पान खाना। धावन पत्र लेकर भटउल गया। भाँटिन से पूछा—भांट कहाँ है? उसने बताया कि मेवाकरन में अखाड़े में वह लड़ रहा है। धावन ने जाकर वहाँ पत्र दिया। पत्र में गउरा के अहीर से लड़ने की बात लिखी गयी थी। मोलागत ने लिखा था कि गउरा के अहीर ने चढ़ाई कर दी है। ऐ भांट, तुम अहीर को मार डालो। तुम्हें अगोरी में राजतिलक कर दूंगा। भांट प्रसन्न हो उठा। हमारा भाग्य खुल गया। अब राजा कहलाने का समय आ गया है। मैं एकछत्र राज्य करूँगा। उसकी पत्नी भाटिन पत्र पढ़कर रो पड़ी। उसने कहा—मैं अहीर का मर्म जानती हूँ। उसने बमरी के सात पुत्रों को मार डाला था। तुम उससे पार नहीं पाओगे। उसके साथ सोलह सौ कंटाइन, सोलह सौ मरी और मसान हैं। जिस समय तुम दुर्गा के सामने पड़ जाओगे तुम्हारी जान नहीं बचेगी। भांट ने डांट दिया। तुम स्त्री की जाति हो। भटउल में बैठो। मैं अगोरी में जाकर अहीर का मस्तक काट रहा हूँ। (७६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी - ताकत बाड़ें = देख रहे हैं । मंगनवा = माँग । बटुवा = खाना बनाने का एक बर्तन बटुला । अदंत = पशु जिसका दांत न निकला हो। वरंद = वरदान का संक्षिप्त रूप । बियं = बियान, बछड़ा देने का समय । बरा के = चुनकर । भूसवला = जहाँ भूसा रखा जाता है वह स्थान । गंजल हउवे = जहाँ भूसा एकत्र कर रखा गया हैं । कोलिया = खेत, मैदान । खोपवा = खोप, बाँस की बनायी गयी एक झोपड़ी जहाँ गल्ला रखा जाता है । कपार = सिर । बगलिया = बगल में । बरमपुर = एक स्थान का नाम । कचरे = कुचलना । मघइया पान = मगही पान। अरगन देखै परगन तो रै रे लागल = बड़ी तेजी से जाने लगा । दुअं = द्वार, (दुआर)। अखढ़वा = अखाड़ा । सिरिया बाड़ झुकवले = सिर झुकाया, प्रणाम किया । ओमन = उसमें । रजवा = राज । दउलतिया = दौलत । मारि नंवते = मार डालते । तलिया हउवे बजवले = ताली बजायी है । भूंजब = भोग करूँगा । एकवटे = एकछत्र, अकेला। घूरिया = धूल । सेरन = सेर का बहुवचन सेरों । पउवन = पाँव भर । बखरिया = बखरी । भीतिये = दीवार से । धकवा = धक्का । चुल्हनिया = चूल्हा । बेंवतत = कात रहा है । दरुरवा = दारू । गोजिया = डंडा । मरमियो = मर्म । एठियन = यहाँ ।

भावार्थ— आँगन में भांट उछलने लगा और धड़ाधड़ ताली बजाने लगा । वहाँ से निकलकर वह भंटउली में गया और कहने लगा कि आज एक कोठी में गोजई बँटेगी। सब लोंग अपनी टोकरी लेकर पहुँचे तथा उसे भर-भर कर घर आये । भांट ने मुरैठा बाँधा तथा उलला ? डंडा धारण किया फिर हाथ में लोटा लिया तथा अगोरी का रास्ता नापा । मोलागत की कचहरी में पहुँचकर सलामी दी फिर उनसे अगोरी का हाल पूछा । मोलागत ने बताया कि महर की बेटी को मैंने सौर में धागा बांधा था । एक अहीर ने गउरा से आकर उसका विवाह कर लिया है । उसने जिरउल पर उसकी डोली रखी है । तुम उसको जाकर छीन लो तो अगोरी का राज्य लिख दूंगा । तुम एक-छत्र राज्य करना । भांट ने जिरउल का रास्ता पूछा । धावन ने उसकी सहायता की। भांट ने जिरउल के मैदान में पहले लोरिकी को देखा फिर वह मंजरी की डोली के पास पहुँचा । मंजरी ने उसे पहचान लिया कि वह तो रंपा भांट है । मंजरी ने लोरिक से कहा कि इसको नेग दे दो पर भांट डांड़ी के उत्तर-दक्षिण घूमने लगा। उसको इधर-उधर घूमते देख कर लोरिक ने पूछा—तुम किसलिए इस प्रकार घूम रहे हो ? क्या तुम्हारा रास्ता भूल गया है ? क्या कुछ खो गया है ? तुम सूबा हो ? उम-राव हो ? चोर हो या चंडाल हो ? किस घात में लगे हुए हो ? क्या तुम डोली को लूटना चाहते हो ? फिर लोरिक से भांट ने पूछना शुरू किया । तुम्हारा वतन कहाँ है । तुम कहाँ उत्पन्न हुए हो ? किसलिए जिरउल पर टिके हो ? तब लोरिक ने अपना परिचय दिया और बताया कि मैंने मंजरी से विवाह किया है और यहाँ मोला-गत की तलाश में हूँ । उसने मेरी डोली रोकवा दी है । भांट इस पर गरज पड़ा । तुम खतरी की बेटी सोना सुहागिन को ले लो या शिवबचन की बेटी अनूपी को ले लो ।

चाहो तो तुम्हें सोने, चाँदी की गाड़ी लदवा दूँ। तुम कनउज भाग जाओ। अन्यथा खेत पर तुम्हारे प्राण चले जायँगे। ज्यों ही लोरिक ने इतनी बात सुनी वह जल कर भस्म हो गया। (८०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—भूंजब = भोगूगा। एकवटे = एकछत्र, अकेला। कोठिला = कोषागार, कोठरी जहाँ अनाज रखा जाता है। गोजई = जौ, गेहूँ का मिश्रण। दउरी = टोकरी। मुरायठ = मुरेठा, पगड़ी, साफा। कान ओन्हाय = कान ढँक कर। सउरी = सौर गृह। खेतान = खेत। खेताड़ = खेत। लड़कवन्ही = लड़की। चीन्ह के = पहचान कर। सुरतिया = आकृति। नेग जोग = दक्षिणा या पुरस्कार जो सम्बन्धियों या पवनियों को दिया जाता है। हिरायल = खो गया है। घात पेंचि लगा-वत बाड़या = दाँव पेंच लगा रहे हो, षडयन्त्र कर रहे हो।

भावार्थ—भांट ने कहा—बाबू हमारी बात मानो जिस बात के लिए तुम भूखे हो मैं जिरउल पर सब कुछ दूँगा। लोरिक ने तब उत्तर दिया—मेरे आगे-पीछे कोई रोने गाने वाला नहीं है। तुम एक काम करो तो मैं यह डोली नहीं ले जाऊँगा। गढ़ गउरा में मेरी टूटी झोपड़ी है। उसमें दीमक लगे हुए हैं। सरयू का किनारा है केले और गोजे नष्ट हो गये हैं। तुम मुझे एक बोझ गोजा दे दो। मैं उसे कनउज ले जाऊँगा और गढ़ गउरा में अपनी झोपड़ी छाऊँगा। एक बुढ़िया माँ जीवित है मैं उसको आदरपूर्वक खिलाऊँगा। भांट प्रसन्नता से उछलने लगा। वह नदी के पास पहुँचा तथा केले का पेड़ काट-काट कर गोजा (गवाजन) बनाने लगा। फिर बोझ लेकर लोरिक के पास पहुँचा और कहने लगा तुम्हारे लिए गोजे का बोझा आ गया। तुम उसे लेकर कनउज जाओ। लोरिक ने जल्दी से पगड़ी बाँधी तथा बोझ के पास चला गया। एक ओर से उसे भांट उठाने लगा तथा दूसरी ओर से लोरिक। दोनों बोझ को छाती तक लाये और दोनों एक दूसरे को ढकेलने लगे। यहाँ तक कि लोरिक उसे दो-दो बिस्वे तक ढकेल ले गया। जब वह थक कर हाँफने लगा तब बोझा छोड़ कर भाग खड़ा हुआ। दूसरों बार फिर वह आया पर लोरिक की छाती से ऊपर घंटों तक बोझ नहीं उठा सका। फिर वह अलग हट गया और कहने लगा—ऐ गउरा के अहीर ! तुम डांड़ी छोड़ कर गउरा चले जाओ नहीं तो मैं तुम्हारी जान मार डालूँगा। लोरिक यह बात सुन कर क्रोधित हो उठा और गोजा उठाकर भांट को ऐसा मारा कि वह भहरा कर गिर पड़ा। उसकी पसली की हड्डी टूट गयी। इस बीच मंजरी डोली से बाहर आ गयी और कहने लगी कि अगर तुम भांट को मार डालोगे तो वह गउरा में तुम्हारा पूजमान बन जायगा और तुमसे सुबह शाम पूजा लेगा। लोरिक और मंजरी की बातचीत के मध्य भांट को मौका मिला और वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ। रास्ते में सब लोग उस पर हँस रहे थे। लोरिक ने उसको ऐसा मारा था कि उसका दाँत टूट गया था और उसके मुँह से रुधिर प्रवाहित हो रहा था। गाँव के पास भाटिन ने जब उसे देखा तब उसे हँसी आ गयी। उसने पूछा तुम्हारी जान कैसे बच

गयी। मांट ने बताया कि मीठी बात करते-करते उसने मेरे मुँह में एक घूसा दिया फिर उसने गोजे से मारा। मैं धरती पर गिर पड़ा। तब उसने जोर से मुझे पदाघात किया। मेरे दो दाँत टूट गये। यदि मंजरी न होती तो मेरे प्राण चले गये होते। (८१)।

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—नइखन = नहीं है। मड़इया = मड़ई, झोपड़ी। देवंका = दीमक। भूखल = भूखा। केरुवा = केला। गोजवा = गोजा, केले का कटा हुआ पेड़ गोजा, गजावन। सरजू = सरयू नदी। मान के = आदर के साथ। पगरिया = पगड़ी। बोझवा = बोझ। अलंगे = बगल, अंग। बिस्सा = बिस्वा। लमहरे = लम्बा। महराय = महरा कर। पजरिया = बगल। सेंहूर = सिन्दूर। जुलुम = जुलम। रुदिलवा = रुधिर रक्त। गंउवा के गोंइड़े = गाँव के पास। धंगी = ढीठ। हूँचा = घूसा।

भावार्थ—मांट मंटउल में भाग गया। मोलागत को इससे चिन्ता हुई। उसने धावन को बुलाया फिर जिरउल भेजा। वहाँ लोरिक बैठा हुआ था। उसने धावन का परिचय पूछा। धावन ने बताया मैं मोलागत का संदेशवाहक हूँ और रंपा मांट के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ। लोरिक ने उसे बताया कि वह अपना नेग लेकर वापस चला गया है। धावन ने जाकर मोलागत को बताया कि घूस का जमाना आ गया है। मांट घूस लेकर भाग आया है। जिरउल पर कोई लड़ने वाला नहीं है। सोना चाँदी लेकर मांट मंटउल भाग गया है। मोलागत ने मुंशी और दीवान से परामर्श लेकर भंवरानन्द हाथी को दारू पिला कर तथा अफीम खिलाकर अगोरी भेज दिया कि वह लोरिक को मार डाले। भंवरानन्द हाथी को देखकर मंजरी विक्षिप्त सी हो गयी। हाथ ने अपने सूँड़ में लोरिक को पकड़कर धरती पर पटक दिया और उसकी छाती पर पैर रख कर हुमचने लगा। किन्तु बायीं तरफ बनसती तथा दाहिनी ओर दुर्गा ने हाथी को पकड़ लिया। उन्होंने हाथी के चारों पैर पकड़ कर बाँध लिये। अपने को छुड़ाने के लिए हाथी जोर लगाते लगाते परेशान हो गया। लोरिक वहां सोया हुआ था। हाथी छाती पर से उतर गया था। तब तक उसका नशा भी उतर गया था। वह सोचते हुए चला जा रहा था कि जाकर किले में राजा को खबर दूँ कि तुम्हारा शत्रु लोरिक मर चुका है। इतने में लोरिक उठ बैठा और जोर से ललकारने लगा कि ऐ हाथी तुम अगोरी के बाजार में क्यों भाग रहे हो? (८२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सेतार = सेत। रंपा = मांट का नाम। गहुवर = जम कर, गम्भीरता से। घूसहा = घूस लेने वाला। जमाना = युग। उपइया = उपाय। भंवरानन्द = एक हाथी का नाम। माठी = भट्ठी जिसमें शराब बनायी जाती है। दारू = शराब। सीकड़ = शृंखला। कचिया = कच्चा। पकिया = पक्का। नजरिया = नजर। लड़िकवन्ही = लड़की। भेदवा = भेद। ईत = यह तो। मातल = उन्मत्त, पागल। हुमचत बाय = हुमच रहा है। पर लें = पर से। नसा = नशा। रजवा = राजा को।

भावार्थ—जिरउल से हाथी के अगोरी लौट आने पर मोलागत को प्रसन्नता हुई। उसने हाथी से जिरउल का हाल पूछा। हाथी ने जवाब दिया कि मैंने लोरिक को घन्टों तक दबा रखा था। वह सोता रहा। अतः मैंने सोचा वह मर गका है। जब मैं अगोरी यह खबर देने के लिए चलने लगा तब वह उठ कर ललकारने लगा तब डर के मारे मेरे पैर काँपने लगे।

इधर दुर्गा ब्रह्मा के यहाँ जाकर भंवरानन्द हाथी का कागज ले आयीं। उसके बिना हाथी की मृत्यु नहीं हो सकती थी। मोलागत ने बारह भट्ठी का दारू पिलाकर तथा अफीम खिलाकर फिर हाथी की शृंखला खोल दी। हाथी जिरउल पर गया और उसने अपने सूँड़ में लोरिक को पकड़ कर उसे पटक दिया पर दुर्गा और बनसत्ती ने फिर सहायता की। लोरिक ने खड्ग का प्रहार किया और वह चिघाड़ते हुये धरती पर गिर गया। यह आवाज राजा मोलागत के किले में पहुँची। उसने धावन को जिरउल पर भेजा, न जाने क्यों हायी जिरउल पर चिघाड़ रहा है। धावन ने जाकर देखा तो पहाड़ की भाँति हाथी धरती पर लोट रहा है। राजा मोलागत को जाकर उसने यह सूचना दी। राजा मोलागत ने करनी के पास जाकर उसके पति भंवरानन्द के मरने की खबर दी। करनी भागकर जिरउल पर गयी और लोरिक के पास खड़ी हो गयी। मञ्जरी ने लोरिक को बताया कि करनी पूर्व जन्म की मेरी बहन है। वह डोली के बाहर आ गयी और करनी को समझाया कि तुम पूर्व जन्म में मेरी बहन थी। तुम्हारा कर्म बिगड़ गया अतः तुम्हें हथिनी बनना पड़ा। अगर तुमने मेरे स्वामी को मारा तो तुम्हें नर्क मिलेगा।

हथिनी ने कहा—तुमने मेरे साथ धोखा किया है और मेरे पति को मरवा डाला है। मञ्जरी के बहुत समझाने पर हथिनी अगोरी लौटने लगी। दुर्गा ने इसी बीच लोरिक को समझाया कि वह हथिनी का सूँड़ काट ले। दुर्गा ने हथिनी का सूँड़ पकड़ लिया और लोरिक ने उसको अपनी तलवार से काट डाला। जब हथिनी सूँड़ रहित होकर अगोरी में गयी तब मोलागत घबरा उठा। मञ्जरी की डांड़ी नहीं मिलेगी। अब मेरी नौका डूब जायेगी। (८३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—हथवा = हाथी (पु०)। खुसिहाली = प्रसन्नता, खुशी। ठाँवे = तुरन्त। ओलियाय = छोड़कर। हिमतवै = हिम्मत, साहस। डरन = डर के। बारह भट्ठी = शराब चुवाने के लिए बनायी गयी भट्ठी जिसमें बारह अंगीठियाँ हों। दरुरवा = दारू, शराब। सीकड़ = जंजीर, शृंखला। छटकवलै = खोल दिया। डंड़िया = डोली। पंजरवा = बगल में। बउराइल = पागल। ओहरवा = उधर। धरतियउ = धरती पर। टपिया = पैरों का टाप। हुमुचत = दबाकर हुमच रहा है। घात = दाव। घात बइठी नाहीं = दाव नहीं लगेगा। कगदवा = कागज। पोंकरत बाड़ै = चिघाड़ रहा है। पहड़वा मतिन = पहाड़ की भाँति। ठिन = स्थान। ओहरवा मारि के = सतं

स्मरण करके। ननवा = नाते से, सम्बन्ध से। पदवन में = पद में। कमइया = कमाई, कर्म। तोहं = तुम्हारा। तोहके कुमे ए रानी नरक हाइ रे गं = ...। धाखबन = धोखा। सेन्हुरवो = सिंदूर। टापि दे = शीघ्र।

भावार्थ—राजा मोलागत कचहरी में सिर लटकाकर बैठ गया। मुंशी दीवान ने उससे पूछा—क्यों उदास होकर बैठो हो? बिना लड़ाई किये डोली नहीं मिलेगी। तुम थाना अगोरी से विजयपुर पत्र लिखो तथा अपने भानजे निरम्मर को बुलवा लो। वह अमर होकर उत्पन्न हुआ है। ब्रह्मा ने उसको पाँच अमिट बाण दिये हैं। मोलागत ने यह बात सुनी और पत्र लिखा कि गढ़ गउरा का शत्रु चढ़ आया है। तुम विजयपुर में अन्न खाओ तथा आकर अगोरी में पानी पीओ (शीघ्रता करो) धावन संड़िनी पर सवार होकर गया और निरम्मर की माँ के हाथ में पत्र दिया। वह पत्र पढ़कर रोने लगी—। मेरे एक ही पुत्र है। वह अगोरी में मर जायगा तथा विजयपुर में मेरा सर्वनाश हो जायगा। (८४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मनवां = मन। पाती = पत्र। भयने = भानजा। सेवटले जाला = समेटने लगा। सेंवटली न जाय = समेटी नहीं जा सकी। असरेवं = असवार, सवार। ईत = यह तो। मतरिया = माँ। बज्जर = वज्र। सोरिया = जड़।

भावार्थ—तब धावन ने कुनुपी से पूछा कि निर्मल कहां गये हैं? कुनुपी ने बताया कि वह लोह गाजर में गौना कराने गये हैं। धावन ने इतना सुनते ही अपनी संड़िनी पर लोह गाजर के लिए प्रस्थान किया। उधर से निर्मल वापस आ रहा था। दोनों की भेंट रास्ते में हो गयी। निर्मल ने धावन को देखकर उसे जय-जयकार किया। धावन ने मोलागत का पत्र निर्मल को दे दिया। पत्र पढ़कर उसने उसे धोड़ी में बांध दिया। उसकी पत्नी ने पूछा—कैसा पत्र है? उसके कानों में भनक पड़ गयी थी। उसने निर्मल को बताया मैंने भी कुछ गउरा के बारे में सुना है। मेरे पाँव काँप रहे हैं। मैं अहीर का मर्म जानती हूँ। तुम्हारी जान नहीं बच पायेगी। (८५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कुनुपी = निर्मल की माँ। लोह गाजर = एक स्थान का नाम। सिरिया = सिर। पयान = प्रस्थान। कनवों रे ओन्हे = कान लगाकर। सनवा = संकेत। पंइड़िया = रास्ता।

भावार्थ—गोपी ने इस प्रकार समझाया फिर वह पत्र अपने हाथ में लेकर पढ़ने लगी। पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखों से आँसू प्रवाहित हो रहे थे। उसने कहा—ऐ स्वामी, तुमने व्यर्थ मेरा गौना करवाया। तुम व्यर्थ मुझे विजयपुर ले जा रहे हो। तुम अभी मुझे नैहर पहुँचा दो। लोह गाजर में मैंने गउरा के अहीर को देखा है। अब तुम्हारी जान नहीं बचेगी। अहीर के साथ सोलह सौ कंटाइन, मरी और मसान हैं। दाहिने दुर्गा तथा बाँये बनसत्ती हैं। जब तुम अहीर के सामने पड़ जाओगे तुम्हारे प्राणों की रक्षा नहीं हो सकेगी। (८६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—लागल बांचै = पढ़ने लगी। नाहक = व्यर्थ। नइहरवै = नैहर, माँ बाप के यहाँ। सुरतियौ = आकृति। समिया = स्वामी। जँयड़वा = जन्म लेने वाले, उत्पन्न। चउकवा = चौक। सनमुख = सामने, सम्मुख। कोटिउ = किसी प्रकार, कोटि उपाय करने पर भी।

भावार्थ—तब राजा निर्मल तड़क उठा—ऐ गोपी तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाय। तुम ऐसी बात कर रही हो कि मुझसे सहा नहीं जा रहा है। मैं अमर होकर उत्पन्न हुआ हूँ। मैंने अमरता का भात खाया है। ब्रह्मा ने मुझे पाँच बाण दिये हैं जो अमिट हैं। मेरे एक बाण से चौदह कोस तक दावानल फैल जाता है। सुरसरि का पानी खौलने लगता है तथा सूंस और घड़ियाल उलटने लगते हैं। एक लोरिक तो क्या मैं दो चार लोरिकों को मार डालूँगा। निर्मल की पत्नी छाती पीटकर रोने लगी। मैं अहीर के मर्म को जानती हूँ। एक बार सोहवल में चढ़ गया था तथा उसने राजा बमरी के सात अमर बेटों को मार डाला था। तुम अभी मेरी बात मान लो। तुम डोली लेकर विजयपुर चलो। दो-चार, दस दिन अपने किले में रहो तब अगोरी में लड़ने जाना। निर्मल बड़े जोर से बोलने लगा—चलो मैं तुम्हारी डोली विजयपुर पहुँचाता हूँ। वह रोती रही। स्वामी मैं तुम्हें बार-बार मना कर रही हूँ। तुम थाना अगोरी चलना चाहते हो तो चलो। मैं भी चलूँगी। जब तुम्हारी अच्छी गति होगी तब मैं भी तुम्हारे साथ सती हो जाऊँगी। (८७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—तरकल = तड़प उठा। तोहके = तुझे। बान = बाण। मारिनाइब = मार डालूंगा। मारि के धमकवा = धमाका मार कर, छाती पीट-पीटकर। बेटउवा = पुत्र, बेटा। सिंहिया = सिंह। सेरवा = शेर। बघवै = बाघ। हुँड''''''
''हुँड़ार का संक्षिप्त रूप, भेड़िया। अमरवा = अमर। कोटिउ = कभी भी, कोटि उपाय करने पर भी। जिनिगियौ = जिन्दगी। पंयड़वौ में = रास्ते में। भरोसवा = भरोसा। तनिकौ = जरा भी। घबड़े रं = घबराया हुआ। चूनरी धूमिल नाहीं भइली = चूनरी धूमिल नहीं हुई है। मरन = मृत्यु। पारी = बारी, समय। बेरियाँ की बेरियाँ = बार-बार। कहनवौं = कथन। हमरो = हमारा। नीके गति = अच्छी गति। यहाँ सद्गति की ओर संकेत है अर्थात् जब तुम्हारी मृत्यु हुई। सतिया = सती।

भावार्थ—तब निर्मल ने कहारों को समझाया। गोपी की डोली लेकर तुम विजयपुर चलो। मैं अगोरी जाऊँगा। यह कहकर वह अपनी पौनी घोड़ी पर सवार हो गया। जब कहाँर चलने लगे, गोपी ने उनसे कहा—तुम लोग मेरी डोली भी अगोरी में ले चलो। मैं तुम लोगों को सोने की दो दो मुहरें दूँगी। कहाँर निर्मल के पीछे-पीछे डोली अगोरी ले चले। निर्मल अगोरी में मोलागत की कचहरी में पहुँच गया और उसने अभिवादन के बाद पूछा, मुझे आपने क्यों बुलाया है? क्यों पत्र भेजा है? मोलागत ने सारी कहानी बतायी। कैसे मञ्जरी के पैदा होने पर सोना-चांदी बरसा और कैसे मैंने सौर में धागा बंधवाया। कैसे राजा महर ने उसका चोरी-चोरी विवाह सम्पन्न

करवाया। ऐ भानजे ! वह अहीर डोली के साथ जिरउल पर टिका हुआ है। तुम उसको कब मारोगे और कब उसकी डोली लूटकर किले में लाकर रख दोगे। (८८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कहार = एक जाति जो डोली ढोने का कार्य करती है। तोहन लोगन = तुम लोग। पवनी = पौनी घोड़ी। मोहर = सोने का सिक्का, मुहर। असवार = सवार। सोनवन = सोना। ले लें पोंछियाय = पीछा किया। पछवा = पीछे। रेवर ले जाय = पीछे-पीछे चली। करिना = कन्या। दगनक मार = धोखा। सेवटल = समेटा हुआ।

भावार्थ—तब निर्मल ने राजा मोलागत से कहा कि मैं जिरउल पर जाकर पता लगा रहा हूँ कि कैसा व्यक्ति आकर टिका हुआ है। तुम्हारे जोवन का तीसरा भाग व्यतीत हो चुका है। चौथापन आ गया है। मृत्यु निकट है। मुँह के दांत टूट चुके हैं। सिर का बाल सफेद हो चुका है। तुम कैसी बात कर रहे हो ? तुम किसी की स्त्री छीन रहे हो। तुम्हें तो कुंए में जाकर गिर जाना चाहिये। फिर निर्मल जिरउल पर चला। लोरिक ने उसे देखा तो मंजरी के पास गया और उससे पूछा कि कौन मनुष्य आया है ? गोपी ने निर्मल को ओट से देखा तब वह छाती पीटकर रोने लगी। तुम्हें डोली छोड़कर यहाँ से भाग जाना चाहिये। भैत पर यह अमर व्यक्ति आया है। तुम्हारे प्राण अब नहीं बचेंगे। लोरिक भी रो पड़ा और कहने लगा। तुम किसलिए जिरउल पर भयभीत हो रही हो ? मञ्जरी ने अपने सत का सुमिरन प्रारम्भ किया। इधर संवरू दादा ने गायों के अड़ार में यह स्वप्न देखा कि जिरउल पर विपत्ति आ गयी है। उन्होंने बोहे से तानकर विषबाण मारा। वह बाण जाकर मञ्जरी के इर्द-गिर्द घूमने लगा। लोरिक ने निर्मल को देखा और पूछा—तुम राही हो ? बटोही हो ? सूबा हो या उमराव हो ? निर्मल ने जवाब दिया, मैं अगोरी से आ रहा हूँ। मैंने सुना है गउरा का अहीर आया है। मैं उससे भेंट, मुलाकात करने आया हूँ। तुम किसलिए जिरउल पर टिके हुये हो ? क्या तुम्हारी डोली किसी ने रोकवा ली है ? तुम अपना भेद जल्दी से बताओ—मुझे चिन्ता हो रही है। लोरिक ने बताया कि विवाह करने के लिए मैं अगोरी आया। यहाँ के राजा मोलागत ने डोली रोकवा ली है। वह गाँव की बहन, बिटिया को नहीं पहचानता। मैं यहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। बिजयपुर से कब अमर निर्मल आयेगा तथा यहाँ लोहा लगेगा। कब वह अमर मरेगा और कब मेरी डोली गउरा गुजरात पहुँचेगी। (८९)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मम्मा = मामा। पतवा = पता। भेंपाल = भूपाल, राजा। जोरन जोग = जोड़ने योग्य। हितइया = सम्बन्ध। पनथिया = पंथ, अवस्था। दंतवा = दांत। सनकुट = सफेद। कपरवा = सिर। अनके = दूसरे का। जननवा = जनाना, स्त्री। इनार = कुंआ। असवार = सवार। भेतार = भैत। मनुसवा = मनुष्य। घोड़िया = घोड़ी। अहरवा = ओट में। धमकवा = चोट। मारि धमकवा छतिया में =

छाती पीट-पीटकर। बनवां = वन। पतवा = पत्ता। खहराय = खड़-खड़ाकर। अरियां अरियां = किनारे-किनारे। सूतले में = सोने में। सपनवा = स्वप्न। बिसबनवा = विष बाण। पजरवां = पास। धइले = पकड़कर। काहे वदे = किसलिए। अपने मनवा = अपने मन से। डेरवा देहले हउवा = तुमने डेरा दिया है। भेदवा = भेद, रहस्य। सरीरियौ = शरीर। बं = बड़ियार को गायक ने संक्षिप्त कर दिया है। जबर्दस्त। करेवदे = करने के लिए। दइबा = दैव। उपफर परै = नष्ट हो जाय। जोहत = खोजत। लोहवा = लोहा। लगिजाइ लोहवा = लड़ाई छिड़ जायगी। डांड़ी लग जाइ = डोली लग जायगी, पहुँच जायगी।

भावार्थ—तब निर्मल कहने लगा। मैं अगोरी जाकर अपने मामा को समझाऊँगा। तुम उनसे मित्रता कर लो और अगोरी चले जाओ। निर्मल घोड़ी पर बैठकर मोलागत की कचहरी में गये और उनसे कहा – तुम मेरी बात मानो। बड़ा भारी अपशकुन हो रहा है। तुम अहीर से मित्रता कर लो। यह सुनकर मोलागत क्रुद्ध हो उठा। तुम अमर होकर उत्पन्न हुये हो। ब्रह्मा ने तुम्हें पाँच बाण दिये हैं। आज जब किसी मर्द से काम पड़ा है तो तुम्हारे पैर डगमगा रहे हैं। तुम्हारा जीवन व्यर्थ है। तुम जाकर साड़ी पहन लो तथा कोने में जाकर बिल्ली की भाँति बैठ जाओ। जब निर्मल ने यह सुना तो उसकी आँखों से झर-झर आँसू गिरने लगा। इधर निर्मल की पत्नी को सेविका ने बताया कि तुम्हारा पति मारा जायगा। सेविका निर्मल को उसकी पत्नी की कोठरी में ले गयी। उसकी पत्नी पैर पकड़कर रोने लगी। तुम खेत में लड़ने मत जाओ। तुम्हारी जान नहीं बचेगी और अधजल में मेरी नाव डूब जायगी। निर्मल ने कहा तुम अगोरी में बैठी रहो, मैं लड़ने जाऊंगा। रानी ने छाती पीटा और कहा कि बूढ़े पर पाप चढ़ गया है। अगोरी में पाप नाच रहा है। तुम जिरउल पर मारे जाओगे। विजयपुर में तुम्हारा सर्वनाश हो जायगा। (६०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—घन = प्रिय, सौभाग्य से पूर्ण। मिताई = मित्रता। छुटिया = छुट्टी। घुट्रुकै = घुड़क रहा है, बज रहा है। महराय = महराकर। अड़गुड़ = गड़बड़ी। असगुन = अपशकुन। कोखिया = कोख। मरदे से = मर्द से। टंगरिया = पैर। जनाना = स्त्री। बिलार = बिल्ली। लंउड़ी = सेविका। एदवां पारी = इस बार। अंगुरी = अंगुली। सनवा = संकेत, इशारा। बलमुवा = स्वामी। थपरवा = थप्पड़। छतिया में = छाती में। बूढ़वा = बूढ़ा। कपारे पर = सिर पर। प वां = पाप। पाप नाचत = पाप नाच रहा हैं। तोहऊँ = तुम भी।

भावार्थ—गोपी को समझाकर निर्मल अपने किले से निकला तथा मोलागत की कचहरी में आकर कहने लगा तुम मेरी बात नहीं मानते हो। मैं जिरउल पर लड़ने जा रहा हूँ। मैं गढ़ गउरा के अहीर को मार डालूंगा। तुम मञ्जरी के साथ सुख-विलास करना। इतनी बात सुनकर मोलागत की छाती फूल गयी। अपनी घोड़ी पर सवार होकर अपने पाँच बाणों के साथ वह लड़ाई करने चला। वहाँ ऊपर गिद्ध मंडरा

रहे थे । गिद्धनी गिद्ध से कह रही है कि ऐसा मांस हम लोगों ने पहले कभी नहीं खाया है । अमर व्यक्ति का मांस पहली बार हम लोग खायेंगे । लोरिक ने निर्मल को जिरउल पर आते हुये देखा । उसने जाकर मंजरी से कहा कि जो व्यक्ति घोड़ी पर आया था वह फिर जिरउल पर आया है । मञ्जरी छाती पीट-पीटकर रोने लगी । स्वामी, अब तुम्हारी मृत्यु निकट आ गयी है । मेरे नारकीय जीवन के लिए तुम्हारा प्राण जा रहा है। तुम मेरी डोली जिरउल पर छोड़कर गउरा गुजरात चले जाओ । लोरिक ने मंजरी को समझाया तुम चुप्पी साध कर डोली में बैठो और मेरा पौरुष देखो । निर्मल ने बड़े जोर से लोरिक को ललकारा—या तो तुम मुझसे लड़ाई करो या डोली छोड़ कर गउरा गुजरात भाग जाओ । लोरिक निरखी, तमांचा, तवा, खड़ग सब कुछ पहन कर आ डटा । अन्य देवी, देवताओं के अतिरिक्त दुर्गा और बनसत्ती भी उसके साथ थीं निर्मल उसको देख कर भयभीत हो गया । कहने लगा—मेरी विवाहिता ने जो कुछ कहा था सामने आ गया । वहाँ जिरउल पर सारे देवता नाच रहे थे । निर्मल ने अपना अग्नि बाण ताना जिससे धरती डगमगाने लगी । ब्रह्मा का कैलाश भी हिल उठा । मंजरी जिरउल पर छाती पीट-पीट कर रोने लगी । हाय, मेरे स्वामी की मृत्यु निकट आ गयी । (६१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बरजल = वर्जित किये हुए को । पंच पंच = पाँच पाँच । गिधवा = गिद्ध । गिधनी = गिद्धिनी । ओइसन ओइसन = वैसा वैसा । मंसिया = मांस । बरनिया = रंग का, वर्ण का । गीध = गिद्ध । अवरेतं = उत्पन्न, अवतार हो जायेगा । वेकले रं = विकल । मनुरे सं = मनुसात को गायक ने यहाँ संक्षिप्त कर दिया है, पौरुष । खतिरी = क्षत्रिय, वीर । बियही = विवाहिता, पत्नी । मुलरे कं = मुलाकात । उवरवा = वार, युद्ध । कयरे लं = कैलाश ।

भावार्थ—निर्मल ने ज्योति बाण मारा जिससे लोरिक तीन बार उलट गया । दुर्गा के आँचल में आग फूट गयी । उन्होंने आग बुझा दी । लोरिक को गुरसरि के तट पर लाकर जुड़वाया फिर अमृत पिलाया । दुर्गा ने कहा शीघ्र जिरउल पर चलो नहीं तो तुम्हारी डोली लुट जायगी । पर लोरिक का साहस घट गया था । दुर्गा के प्रोत्साहन पर फिर मैदान में आ डटा । मंजरी वहाँ अपने सतीत्व का स्मरण कर रही थी । लोरिक को इससे शक्ति मिल रही थी । निर्मल रोने लगा । मैंने मामा को बार-बार मना किया । उसकी पत्नी छाती पीट-पीट कर रो रही थी । दुर्गा लोरिक की सहायता के लिए दौड़ रही थीं । निर्मल का एक बाण समाप्त हो गया था । चार बाण अभी शेष थे । पर निर्मल की पत्नी कह रही थी । प्रिय की मृत्यु आ गयी । अगोरी में मेरा विध्वंश हो गया । (६२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—धनुहा = धनुष । गयल उधियाय = उड़ गया । अग्नि बाण = वह बाण जिसमें से अग्नि की ज्वाला प्रकट हो । ज्योति बाण = वह बाण जिससे ज्योति प्रकट हो । जुड़वाने = ठण्डा कर रहा है । उपरल = उखड़ गया ।

हिम्मति = हिम्मत, साहस । अंचरवा = आंचल । उवल को हइये = उदित हुए, उगे हुए । सुरजइं = सूर्य । अलंगे = तरफ, और । गयल सेराय = ठण्डा हो गया । सनमुख = सम्मुख । लउके = दिखाई पड़ा । अगसर = अक्सर, अकेला । सतवा खींचि खींचि मारत हउवे = अपने सतीत्व को पुकार रही है । जंघवा = जंघे में । पूजवा = पूजा । सहं = सहायता, यहाँ गायक ने संक्षिप्तीकरण किया है । अरियां अरियां = किनारे-किनारे । सामी = स्वामी । दुलहा = पति ।

भावार्थ—इधर गोपी किले में रो रही थी । वहाँ लोरिक ने निर्मल को ललकारा । ऐ पट्ठे ! तुम ऐसे टूटे हुए बाण को लेकर आये हो जिसका कोइ प्रभाव नहीं हैं । यह अग्नि बाण नहीं प्रतीत होता । तुम बाण चलाओ । मैं तुम्हारा पौरुष देखूं । निर्मल ने फिर ज्योति बाण मारा जिससे आकाश में धुंवा छा गया । बाण आकाश में जाकर फिर नीचे आ गया । लोरिक को फिर बाण लग गया और वह भहरा कर गिर गया । दुर्गा उठा कर उसे सुरसरि के तट पर ले गयीं तथा ठण्डे पानी से उसे शीतल किया फिर अमृत पिलाया । लोरिक ने फिर ललकारा । इस बार निर्मल ने ऐसा बाण मारा कि नीचे पृथ्वी और ऊपर उसका कैलाश हिलने लगा । तब बनसत्तों ने दुर्गा से कहा—इस बार अमर निर्मल का बाण पकड़ लो नहीं तो बड़ा जुल्म हो जायगा । दुर्गा ने बाण को पकड़ लिया और उसे रगड़ कर धरती में दबा दिया । वहाँ सर्वत्र कोयला सा अंधकार छा गया । इधर निर्मल को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था । दुर्गा ब्रह्मा की कचहरी में पहुँची । जब ब्रह्माइन को यह खबर मिली उन्होंने चौका पुरवाया और दुर्गा को बैठने के लिए पीढ़ा दिया । दुर्गा ने पीढ़ा उठाकर ब्रह्माइन को मारा । ब्रह्माइन धरती पर गिर पड़ीं । उन्होंने उठकर दुर्गा का पैर पकड़ा और पूछा मेरा अपराध क्या है ? दुर्गा ने बताया मेरा सेवक मर रहा है । मंजरी की इज्जत लुट रही है । मैंने उसकी पूजा ली है । तुम जल्दी से निर्मल की अमरता का कागज दे दो, नहीं तो मैं तुम्हारी कोठरी फूंक दूँगी । यदि आज लोरिक जिरउल पर मारा गया तो मैं तुम्हारा इन्द्रासन मिट्टी में मिला दूँगी । (६३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—ओसरी = अवसर । टूटहा = टूटा हुआ । बनवाँ = बाण । मनुसात = पौरुष । गोंछवा = धनुष का छोर । नइगै = झुक गआ । अकासे = आकाश में । गगने में = गगन में, आकाश में । हथवा = हाथ । तीरवाँ = तट । सरल पाकल = जीर्ण-शीर्ण, सड़ा पका । कयलास = कैलाश । भीजे लागल = मलने लगीं । ओदवां = वहाँ । नहीं सूझत बाय = दिखायी नहीं पड़ रहा है । थपिया = थाप । बचवा = बच्चा । अलंगिया = ओर, तरफ । सरगवा = आकाश । पठरे वं = पठवाय । हउवे पठर वं = पठा दिया है । चउकवा हई पुरवउले = चौक पुरवा दिया है । दुवारी = द्वार । तइरे यं = तैयार । खुनुसिया = क्रोध में । भहरे रं = भहरा कर । पजरियन = बगल का । बीगर जाला = बिगड़ जायगा । पूजवा = पूजा । दिआय दा = दिला दो, दिला दीजिए । माटी में देवो मिलाय = मिट्टी में मिला दूँगी, नष्ट कर दूँगी ।

रहे थे। गिद्धनी गिद्ध से कह रही है कि ऐसा मांस हम लोगों ने पहले कभी नहीं खाया है। अमर व्यक्ति का मांस पहली बार हम लोग खायेंगे। लोरिक ने निर्मल को जिरउल पर आते हुये देखा। उसने जाकर मंजरी से कहा कि जो व्यक्ति घोड़ी पर आया था वह फिर जिरउल पर आया है। मञ्जरी छाती पीट-पीटकर रोने लगी। स्वामी, अब तुम्हारी मृत्यु निकट आ गयी है। मेरे नारकीय जीवन के लिए तुम्हारा प्राण जा रहा है। तुम मेरी डोली जिरउल पर छोड़कर गउरा गुजरात चले जाओ। लोरिक ने मंजरी को समझाया तुम चुप्पी साध कर डोली में बैठो और मेरा पौरुष देखो। निर्मल ने बड़े जोर से लोरिक को ललकारा—या तो तुम मुझसे लड़ाई करो या डोली छोड़ कर गउरा गुजरात भाग जाओ। लोरिक निरखी, तमांचा, तवा, खड़ग सब कुछ पहन कर आ डटा। अन्य देवी, देवताओं के अतिरिक्त दुर्गा और बनसत्ती भी उसके साथ थीं निर्मल उसको देख कर भयभीत हो गया। कहने लगा—मेरी विवाहिता ने जो कुछ कहा था सामने आ गया। वहाँ जिरउल पर सारे देवता नाच रहे थे। निर्मल ने अपना अग्नि बाण ताना जिससे धरती डगमगाने लगी। ब्रह्मा का कैलाश भी हिल उठा। मंजरी जिरउल पर छाती पीट-पीट कर रोने लगी। हाय, मेरे स्वामी की मृत्यु निकट आ गयी। (६१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बरजल=वर्जित किये हुए को। पंच पंच=पाँच पाँच। गिधवा=गिद्ध। गिधनी=गिद्धिनी। ओइसन ओइसन=वैसा वैसा। मंसिया =मांस। बरनिया=रंग का, वर्ण का। गीध=गिद्ध। अवरेत=उत्पन्न, अवतार हो जायेगा। वेकले रं=विकल। मनुरे सं=मनुसात को गायक ने यहाँ संक्षिप्त कर दिया है, पौरुष। खतिरी=क्षत्रिय, वीर। बियही=विवाहिता, पत्नी। मुलरे कं= मुलाकात। उवरवा=वार, युद्ध। कयरे लं=कैलाश।

भावार्थ—निर्मल ने ज्योति बाण मारा जिससे लोरिक तीन बार उलट गया। दुर्गा के आँचल में आग फूट गयी। उन्होंने आग बुझा दी। लोरिक को गुरसरि के तट पर लाकर जुड़वाया फिर अमृत पिलाया। दुर्गा ने कहा शीघ्र जिरउल पर चलो नहीं तो तुम्हारी डोली लुट जायगी। पर लोरिक का साहस घट गया था। दुर्गा के प्रोत्साहन पर फिर मैदान में आ डटा। मंजरी वहाँ अपने सतीत्व का स्मरण कर रही थी। लोरिक को इससे शक्ति मिल रही थी। निर्मल रोने लगा। मैंने मामा को बार-बार मना किया। उसकी पत्नी छाती पीट-पीट कर रो रही थी। दुर्गा लोरिक की सहायता के लिए दौड़ रही थीं। निर्मल का एक बाण समाप्त हो गया था। चार बाण अभी शेष थे। पर निर्मल की पत्नी कह रही थी। प्रिय की मृत्यु आ गयी। अगोरी में मेरा विध्वंश हो गया। (६२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—धनुहा=धनुष। गयल उधियाय=उड़ गया। अग्नि बाण=वह बाण जिसमें से अग्नि की ज्वाला प्रकट हो। ज्योति बाण=वह बाण जिससे ज्योति प्रकट हो। जुड़वाने=ठण्डा कर रहा है। उपरल=उखड़ गया।

हिम्मति = हिम्मत, साहस । अंचरवा = आंचल । उवल को हइये = उदित हुए, उगे हुए । सुरजइं = सूर्य । अलंगे = तरफ, और । गयल सेराय = ठण्डा हो गया । सनमुख = सम्मुख । लउके = दिखाई पड़ा । अगसर = अक्सर, अकेला । सतवा खींचि खींचि मारत हउवै = अपने सतीत्व को पुकार रही है । जंघवा = जंघे में । पूजवा = पूजा । सहं = सहायता, यहाँ गायक ने संक्षिप्तीकरण किया है । अरियां अरियां = किनारे-किनारे । सामी = स्वामी । दुलहा = पति ।

भावार्थ—इधर गोपी किले में रो रही थी । वहाँ लोरिक ने निर्मल को ललकारा । ऐ पट्ठे ! तुम ऐसे टूटे हुए बाण को लेकर आये हो जिसका कोइ प्रभाव नहीं हैं । यह अग्नि बाण नहीं प्रतीत होता । तुम बाण चलाओ । मैं तुम्हारा पौरुष देखू ं । निर्मल ने फिर ज्योति बाण मारा जिससे आकाश में धुंवा छा गया । बाण आकाश में जाकर फिर नीचे आ गया । लोरिक को फिर बाण लग गया और वह महरा कर गिर गया । दुर्गा उठा कर उसे सुरसरि के तट पर ले गयीं तथा ठण्डे पानी से उसे शीतल किया फिर अमृत पिलाया । लोरिक ने फिर ललकारा । इस बार निर्मल ने ऐसा बाण मारा कि नींचे पृथ्वी और ऊपर उसका कैलाश हिलने लगा । तब बनसत्ती ने दुर्गा से कहा—इस बार अमर निर्मल का बाण पकड़ लो नहीं तो बड़ा जुल्म हो जायगा । दुर्गा ने बाण को पकड़ लिया और उसे रगड़ कर धरती में दबा दिया । वहाँ सर्वत्र कोयला सा अंधकार छा गया । इधर निर्मल को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था । दुर्गा ब्रह्मा की कचहरी में पहुँची । जब ब्रह्माइन को यह खबर मिली उन्होंने चौका पुरवाया और दुर्गा को बैठने के लिए पीढ़ा दिया । दुर्गा ने पीढ़ा उठाकर ब्रह्माइन को मारा । ब्रह्माइन धरती पर गिर पड़ीं । उन्होंने उठकर दुर्गा का पैर पकड़ा और पूछा मेरा अपराध क्या है ? दुर्गा ने बताया मेरा सेवक मर रहा है । मंजरी की इज्जत लुट रही है । मैंने उसकी पूजा ली है । तुम जल्दी से निर्मल की अमरता का कागज दे दो, नहीं तो मैं तुम्हारी कोठरी फूंक दूंगी । यदि आज लोरिक जिरउल पर मारा गया तो मैं तुम्हारा इन्द्रासन मिट्टी में मिला दूंगी । (६३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—ओसरी = अवसर । टूटहा = टूटा हुआ । बनवाँ = बाण । मनुसात = पौरुष । गोंछवा = धनुष का छोर । नइगै = झुक गआ । अकासे = आकाश में । गगने में = गगन में, आकाश में । हथवा = हाथ । तीरधाँ = तट । सरल पाकल = जीर्ण-शीर्ण, सड़ा पका । कयलास = कैलाश । मीजे लागल = मलने लगीं । ओदवां = वहाँ । नहीं सूझत बाय = दिखायी नहीं पड़ रहा है । थपिया = थाप । बचवा = बच्चा । अलंगिया = ओर, तरफ । सरगवा = आकाश । पठरे वं = पठवाय । हउवे पठर वं = पठा दिया है । चउकवा हई पुरवउले = चौक पुरवा दिया है । दुवारी = द्वार । तइरे यं = तैयार । खुनुसिया = क्रोध में । महरे रं = महरा कर । पजरियन = बगल का । बीगर जाला = बिगड़ जायगा । पूजवा = पूजा । दिआय दा = दिला दो, दिला दीजिए । माटी में देबो मिलाय = मिट्टी में मिला दूंगी, नष्ट कर दूंगी ।

भावार्थ—ब्रह्माइन ने कहा यह कार्य मुझसे नहीं होगा। ब्रह्मा के द्वार पर जाइये। दुर्गा ब्रह्मा के पास पहुँची। वह गुदड़ी तान कर सो रहे थे। ब्रह्मा ने दुर्गा से इन्द्रासन में आने का कारण पूछा। दुर्गा ने कहा जल्दी निर्मल की अमरता का कागज दे दो ताकि मैं जिरउल पर जाऊँ। अन्यथा मैं तुम्हारी कोठा फूँक दूँगी। ब्रह्मा क्रुद्ध हुए। उन्होंने कहा—निर्मल अमर होकर उत्पन्न हुआ है। उसको मैंने पाँच बाण दिये हैं। ये बाण अटल हैं। वह इस बार ऐसा बाण मारेगा कि तुम घबरा उठोगी। ब्रह्मा ने कागज देने से इन्कार कर दिया तब दुर्गा क्रुद्ध हो उठीं और उनकी कोठरी पर शक्ति बाण चला दिया। ब्रह्मा ने मेघनाथ से वर्षा करने के लिए कहा। दुर्गा मेघनाथ के सेवकों के पास गयीं और कहा कि तुमने अगर जल की वर्षा की तो मैं तुम्हें मृत्यु-लोक में फेंक दूँगी। तुम्हारा पता ठिकाना नहीं लगेगा। मेघनाथ के सेवकों ने घी की वर्षा शुरू कर दी। फलस्वरूप अग्नि तीव्र हो उठी। ब्रह्मा घबरा गये। एक अमर के लिए सम्पूर्ण संसार भस्म हो जायगा। ब्रह्मा दुर्गा के पाँव पर गिर पड़े और निर्मल का कागज उन्हें देने का वचन दे दिया। दुर्गा वहाँ से कागज लेकर चलीं। ब्रह्मा ने कहा जब निर्मल का मस्तक कटेगा न जाने कितने अमर देवता और तैयार हो जायेंगे। दुर्गा ने ब्रह्मा को बताया कि हमारे पास तैंतीस कोटि के देवता हैं। निर्मल के मस्तक से जितना रक्त गिरेगा सभी देवता उसको पी जायेंगे। मैं मस्तक को अगोरी में फेंक दूँगी। वह मोलागत के आँगन में जाकर गिरेगा। (४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—ठावें = तुरन्त। कहलिया = कहा हुआ, कथन। दुआर = द्वार। गुदरिया = गुदड़ी। मिरित = मृत्यु। मिरित ससार = मृत्यु लोक। कोपल बाड़ँ = कुपित हुई, क्रुद्ध हुई। सकतिया = शक्ति बाण। बुताय = बुझ जाय। घीउवन घी का। चउमुख = चारों तरफ। ताकिहैं = देखेंगे।

भावार्थ—निर्मल का कागज लेकर दुर्गा लोरिक के पास जिरउल पर पहुँच गयीं। वहाँ जबर्दस्त धुँआ उड़ रहा था। दुर्गा ने पूर्व से पछुवा हवा चला दी तथा जिरउल पर प्रकाश हो गया। सामने वीर लोरिक दिखाई पड़ रहा है। राजा निर्मल यह देख कर भयभीत हो गया। उसकी पत्नी ने देखा कि दुर्गा ब्रह्मा से अमरत्व का कागज प्राप्त कर चुकी है। वह छाती पीट-पीट कर रो रही है। इधर मजरी अपना सत मना रही है। सत मजरी की डोली के चारों ओर मँडरा रहा है। निर्मल ने फिर बाणों की वर्षा शुरू की। दुर्गा ने इन्द्रासन में जाकर मेघनाथ से आग्रह किया कि मूसलाधार पानी बरसाओ। वर्षा प्रारम्भ हो गयी और अग्नि बुझ गयी। निर्मल कहने लगा अब मेरा जीवन नहीं बचेगा। मैंने अपनी बिवाहिता की बात नहीं मानी। मामा (मोलागत) ने मेरी बात नहीं मानी उनके पाप से मेरी मृत्यु निकट आ गयी है। इधर लोरिक निर्मल के पास पहुँचकर कहने लगा। तुम्हारे चार बाणों को मैं देख चुका। अब तुम अपना पाँचवा बाण दिखाओ। छठी बार मैं तुम्हारा मस्तक काट लूँगा। (६५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—लवकत = दिखाई पड़ता है। गउंजल रहलैं = एकत्र हुआ था। सपनवा = स्वप्न। ओसरी = अवसर। मन से धुई = वीरता, पौरुष। मूसरन धरिया = मूसलाधार। जेवन = जिस बात को। देखै बदे = देखने के लिए।

भावार्थ—तब लोरिक ने बड़े जोर से ललकारा। तुम्हारे चार बाण समाप्त हो गये। तुम्हारा पाँचवां बाण कैसा है ? निर्मल ने पाँचवां बाण प्रहार किया। उससे अग्नि की ऐसी वर्षा प्रारम्भ हुई कि दुर्गा घबरा उठीं। मेघनाथ ने फिर वर्षा की और आग बुझ गयी। लोरिक ने अपना खड्ग संभाला और ऐसा प्रहार किया कि निर्मल का सिर कट गया और स्वर्ग में मँडराने लगा। उसके मस्तक से जितना रुधिर गिर रहा था, देवता पीते जा रहे थे। दुर्गा ने उसके मस्तक पर पदाघात किया। बनसत्ती ने उसे लोक लिया। फिर दुर्गा ने उसका मस्तक हाथ में लेकर अगोरी के बाजार में फेंक दिया। उसकी विवाहिता को यह खबर मिली। वह छाती पीट-पीटकर रोने लगी। हाय, अधजल में मेरा डोंगा डूब गया। (६६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—होला = हुआ। अकसवा = आकाश। खबरिया = खबर।

भावार्थ – जब निर्मल का मस्तक आँगन में गिर गया उसकी पत्नी ने उसे अपने आँचल में ले लिया। मोलागत कुर्सी से गिर पड़े। गोपी रोते-रोते अगोरी जिरउल पर पहुँची। चंदन की लकड़ी कटवायो, चिता बनवायो और स्नान किया। फिर स्वामी का शव गोद में लेकर चिता में बैठ गयी। चिता जल उठी। लोरिक आगे आकर खड़ा हो गया तथा दोनों हाथ जोड़कर वर माँगने लगा जैसे तुम्हारे स्वामी विजयपुर में उत्पन्न हुये थे वैसे ही गउरा गुजरात में मेरे पुत्र उत्पन्न हो। गोपी ने अपना सत सुमिरन किया। लोरिक को पहले तो डाँटा फिर वर दिया। उसने मञ्जरी को अभिशाप दिया जैसे मेरे ऊपर विपत्ति पड़ी है वैसे ही तुम्हारे ऊपर गउरा गुजरात में विपत्ति पड़ेगी। इधर जब मोलागत को यह सूचना मिली तो उन्होंने बिगुल बजवा दिया जिससे पलटन सजकर तैयार हो गयी। बारह सौ मोगलइत (मुगल), तेरह सौ तुर्क, सज गये। जोर से नगाड़े बजने लगे। सैनिक कहने लगे चलो मञ्जरी की डोली लूट लें। जिरउल पर लोगों का तांता लग गया। दुर्गा लोरिक के पास गयीं। उसने अपने ओढ़न की मुट्ठी दबायी। वहाँ टूट-टूटकर अंगार गिरने लगा। लाशों का ढेर लग गया। दुर्गा मंजरी की डोली के पास स्वयं खड़ी थीं। इधर सारी पलटन जिरउल पर मारी गयी। मोलागत अगोरी से भाग खड़े हुये। मञ्जरी को समझाकर कि लाशों को देखकर डरना नहीं, लोरिक स्वयं अगोरी में मोलागत को मार डालने तथा अगोरी फूँक देने के लिए गया। मोलागत के किले का फाटक बन्द था। लोरिक ने उसे ऐसे जोर से मारा कि वह टूट गया। अन्दर उसने मोलागत का सिर काट लिया तथा उसके शरीर में भूसा भरवा दिया। अगोरी के किले को दुर्गा ने फूँक दिया तथा संपूर्ण किला मिट्टी में मिल गया। लोरिक फिर जिरउल पर गया। मञ्जरी ने सत का फूल बनाया। वह अपने सत के साथ आरती

भावार्थ—ब्रह्माइन ने कहा यह कार्य मुझसे नहीं होगा। ब्रह्मा के द्वार पर जाइये। दुर्गा ब्रह्मा के पास पहुँची। वह गुदड़ी तान कर सो रहे थे। ब्रह्मा ने दुर्गा से इन्द्रासन में आने का कारण पूछा। दुर्गा ने कहा जल्दी निर्मल की अमरता का कागज दे दो ताकि मैं जिरउल पर जाऊँ। अन्यथा मैं तुम्हारी कोठी फूँक दूँगी। ब्रह्मा क्रुद्ध हुए। उन्होंने कहा—निर्मल अमर होकर उत्पन्न हुआ है। उसको मैंने पाँच बाण दिये हैं। ये बाण अटल हैं। वह इस बार ऐसा बाण मारेगा कि तुम घबरा उठोगी। ब्रह्मा ने कागज देने से इन्कार कर दिया तब दुर्गा क्रुद्ध हो उठीं और उनकी कोठरी पर शक्ति बाण चला दिया। ब्रह्मा ने मेघनाथ से वर्षा करने के लिए कहा। दुर्गा मेघनाथ के सेवकों के पास गयीं और कहा कि तुमने अगर जल की वर्षा की तो मैं तुम्हें मृत्यु-लोक में फेंक दूँगी। तुम्हारा पता ठिकाना नहीं लगेगा। मेघनाथ के सेवकों ने घी की वर्षा शुरू कर दी। फलस्वरूप अग्नि तीव्र हो उठी। ब्रह्मा घबरा गये। एक अमर के लिए सम्पूर्ण संसार भस्म हो जायगा। ब्रह्मा दुर्गा के पाँव पर गिर पड़े और निर्मल का कागज उन्हें देने का वचन दे दिया। दुर्गा हाथ में कागज लेकर चलीं। ब्रह्मा ने कहा जब निर्मल का मस्तक कटेगा न जाने कितने अमर देवता और तैयार हो जायेंगे। दुर्गा ने ब्रह्मा को बताया कि हमारे पास छप्पन कोटि के देवता हैं। निर्मल के मस्तक से जितना रक्त गिरेगा सभी देवता उसको पी जायेंगे। मैं मस्तक को अगोरी में फेंक दूँगी। वह मोलागत के आँगन में जाकर गिरेगा। (९४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—ठावें = तुरन्त। कहलिया = कहा हुआ, कथन। दुआर = द्वार। गुदरिया = गुदड़ी। मिरित = मृत्यु। मिरित ससार = मृत्यु लोक। कोपल बाड़ँ = कुपित हुई, क्रुद्ध हुई। सकतिया = शक्ति बाण। बुताय = बुझ जाय। घीउवन घी का। चउमुख = चारों तरफ। तकिहै = देखेंगे।

भावार्थ—निर्मल का कागज लेकर दुर्गा लोरिक के पास जिरउल पर पहुँच गयीं। वहाँ जबर्दस्त धुँआ उड़ रहा था। दुर्गा ने पूर्व से पछुवा हवा चला दी तथा जिरउल पर प्रकाश हो गया। सामने वीर लोरिक दिखाई पड़ रहा है। राजा निर्मल यह देख कर भयभीत हो गया। उसकी पत्नी ने देखा कि दुर्गा ब्रह्मा से अमरत्व का कागज प्राप्त कर चुकी हैं। वह छाती पीट-पीट कर रो रही है। इधर मजरी अपना सत मना रही है। सत मजरी की डोली के चारों ओर मड़रा रहा है। निर्मल ने फिर बाणों की वर्षा शुरू की। दुर्गा ने इन्द्रासन में जाकर मेघनाथ से आग्रह किया कि मूसलाधार पानी बरसाओ। वर्षा प्रारम्भ हो गयी और अग्नि बुझ गयी। निर्मल कहने लगा अब मेरा जीवन नहीं बचेगा। मैंने अपनी विवाहिता की बात नहीं मानी। मामा (मोलागत) ने मेरी बात नहीं मानी उनके पाप से मेरी मृत्यु निकट आ गयी है। इधर लोरिक निर्मल के पास पहुँचकर कहने लगा। तुम्हारे चार बाणों को मैं देख चुका। अब तुम अपना पाँचवा बाण दिखाओ। छठी बार मैं तुम्हारा मस्तक काट लूँगा। (९५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—लवकत = दिखाई पड़ता है। गउंजल रहलैं = एकत्र हुआ था। सपनवा = स्वप्न। ओसरी = अवसर। मन से धुई = वीरता, पौरुष। मूसरन धरिया = मूसलाधार। जेवन = जिस बात को। देखै बदे = देखने के लिए।

भावार्थ—तब लोरिक ने बड़े जोर से ललकारा। तुम्हारे चार बाण समाप्त हो गये। तुम्हारा पाँचवां बाण कैसा है? निर्मल ने पाँचवां बाण प्रहार किया। उससे अग्नि की ऐसी वर्षा प्रारम्भ हुई कि दुर्गा घबरा उठीं। मेघनाथ ने फिर वर्षा की और आग बुझ गयी। लोरिक ने अपना खड्ग संभाला और ऐसा प्रहार किया कि निर्मल का सिर कट गया और स्वर्ग में मँडराने लगा। उसके मस्तक से जितना रुधिर गिर रहा था, देवता पीते जा रहे थे। दुर्गा ने उसके मस्तक पर पदाघात किया। बनसत्ती ने उसे लोक लिया। फिर दुर्गा ने उसका मस्तक हाथ में लेकर अगोरी के बाजार में फेंक दिया। उसकी विवाहिता को यह खबर मिली। वह छाती पीट-पीटकर रोने लगी। हाय, अधजल में मेरा डोंगा डूब गया। (६६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—होला = हुआ। अकसवा = आकाश। खबरिया = खबर।

भावार्थ—जब निर्मल का मस्तक आँगन में गिर गया उसकी पत्नी ने उसे अपने आँचल में ले लिया। मोलागत कुर्सी से गिर पड़े। गोपी रोते-रोते अगोरी जिरउल पर पहुँची। चंदन की लकड़ी कटवायी, चिता बनवायी और स्नान किया। फिर स्वामी का शव गोद में लेकर चिता में बैठ गयी। चिता जल उठी। लोरिक आगे आकर खड़ा हो गया तथा दोनों हाथ जोड़कर वर माँगने लगा जैसे तुम्हारे स्वामी विजयपुर में उत्पन्न हुये थे वैसे ही गउरा गुजरात में मेरे पुत्र उत्पन्न हो। गोपी ने अपना सत सुमिरन किया। लोरिक को पहले तो डाँटा फिर वर दिया। उसने मञ्जरी को अभिशाप दिया जैसे मेरे ऊपर विपत्ति पड़ी है वैसे ही तुम्हारे ऊपर गउरा गुजरात में विपत्ति पड़ेगी। इधर जब मोलागत को यह सूचना मिली तो उन्होंने बिगुल बजवा दिया जिससे पलटन सजकर तैयार हो गयी। बारह सौ मोगलइत (मुगल), तेरह सौ तुर्क, सज गये। जोर से नगाड़े बजने लगे। सैनिक कहने लगे चलो मञ्जरी की डोली लूट लें। जिरउल पर लोगों का तांता लग गया। दुर्गा लोरिक के पास गयीं। उसने अपने ओढ़न की मुट्ठी दबायी। वहाँ टूट-टूटकर अंगार गिरने लगा। लाशों का ढेर लग गया। दुर्गा मंजरी की डोली के पास स्वयं खड़ी थीं। इधर सारी पलटन जिरउल पर मारी गयी। मोलागत अगोरी से भाग खड़े हुये। मञ्जरी को समझाकर कि लाशों को देखकर डरना नहीं, लोरिक स्वयं अगोरी में मोलागत को मार डालने तथा अगोरी फूँक देने के लिए गया। मोलागत के किले का फाटक बन्द था। लोरिक ने उसे ऐसे जोर से मारा कि वह टूट गया। अन्दर उसने मोलागत का सिर काट लिया तथा उसके शरीर में भूसा भरवा दिया। अगोरी के किले को दुर्गा ने फूँक दिया तथा संपूर्ण किला मिट्टी में मिल गया। लोरिक फिर जिरउल पर गया। मञ्जरी ने सत का फूल बनाया। वह अपने सत के साथ आरती

करने लगी और कहने लगी स्वामी मेरा धर्म बच गया। चलो, अब गउरा चलें। (६७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी— लसिया = लाश। कोरवा = गोद में। मारि के सतवा चितवा में मरले रे हउवै = सत का स्मरण कर चिता के पास उसका आवाहन कर रही है। बिगर जाई = बिगड़ जायगा। जुमुनवा = जुंबिश, स्पंदन। दयवा = दया। गंजल = गंजा हुआ है, एकत्र है। जउने दिन = जिस दिन। जेम्मन = जिसमें। बिपत = विपत्ति। बिगुल = एक प्रकार की तुरही। मोगलइना = मुगल। तुरुकि = तुर्क। कतार = पंक्ति। तंतवै = ताँता। चउमुख = चारों ओर से। खपड़वा = खर्पट, खपड़ा। मउर माला = मुन्डों की माला। खरि रे हंग = खलियान। परं = पराय का संक्षिप्तीकरण गायक ने किया है। बाड़ें ना पराय = भाग गये। मुरदा = मुर्दा, शव। रजवा = राजा। असबबवा = असबाब, सामान। महरे र = महराय, महराकर। खं = खांड, खड्ग। खलिया = खाल। अरतिया = आरती। सतवनक = सत का। फूलवा = फूल। धरमवो = धर्म।

भावार्थ— तब लोरिक को मंजरी ने समझाया। स्वामी मेरी बात मानो। मैंने जिरउल पर आंचल खोलकर सूर्य की मनौती माना है कि जब युद्ध में जीत होगी उनकी पूजा करूंगी। फिर दुर्गा की पूजा करूंगी तब डोली यहाँ से चलेगी। यह पूजा कैसे सम्पन्न होगी इसकी मुझे चिन्ता है। लोरिक ने उत्तर दिया, रानी! मैं अगोरी संदेश भेज रहा हूँ तथा गढ़ गउरा तथा गायों के अड़ार में भी पत्र लिख रहा हूँ। गढ़ गउरा से घी मंगवा लूंगा तथा बहंगी से घी झोंकवाऊँगा। बहंगी से समिधा तथा अर्घ्य में दूध भरवा दूंगा। उन्होंने राजा महर को अगोरी से बुलवाया। धावन पत्र लेकर बोहा गायों के अड़ार में भी गया। संवरू ने ध्यान से पत्र पढ़ा। घी और हविष्य लेकर आने का सन्देश था। मलसांवर उसे पढ़कर प्रसन्न हो गये। वह बुढ़िया माता खोइलनि के पास गये और बताया कि अगोरी में विजय हो चुकी है। बिना पूजा किये जिरउल से लोरिक नहीं चलेगा। बुढ़िया प्रसन्न हुई। घी, हविष्य, बारह जोड़ी सिंहा, चौदह जोड़ी करनाल तथा धौंसा लेकर तथा सारी बारात सजाकर संवरू फिर जिरउल चले। साथ में पंडित दुबरी बाबा भी थे। लोरिक संवरू के पैरों पर गिर पड़ा। मंजरी भी डोली से निकली और दुबरी बाबा के पाँव पड़ी और कहने लगी, मैंने सूर्य बाबा को मनौती मानी है, फिर माँ दुर्गा की भी मनौती माँगी है। कुंड तैयार किये गये और उसमें हविष्य डाला गया। दुर्गा और सूर्य का पूजन प्रारम्भ हुआ। दुबरी बाबा ने पहले हाथ में संकल्प थमाया फिर हवन प्रारम्भ हुआ। दुर्गा आसन लगाकर बैठ गयीं। संवरू तथा अन्य लोग माला जपने लगे। पूजा समाप्त हुई फिर ब्रह्मभोज हुआ। उसके बाद सभी लोगों ने गउरा प्रस्थान किया। आगे-आगे मंजरी की डोली चल रही थी। पीछे-पीछे अनूपी की। सभी बोहा आये। संवरू ने दुर्गा की पूजा की फिर डोली गउरा पहुँची। बुढ़िया माँ अत्यन्त प्रसन्न हुईं। सारा कुटुम्ब और परिवार एकत्र हुआ।

सारी सहेलियाँ एकत्र हुई। भजन होने लगा। डोली द्वार पर पहुँची। मञ्जरी आँगन में गयी। सतिया उससे मिलकर प्रसन्न हुई। उसने कहा मैं समझती थी कि मैंने ही सोहवल में भजन किया था, मञ्जरी ने भी अगोरी में उतना ही भजन किया है। लोरिक का खेलवाड़ यहाँ समाप्त हो रहा है और वह अब गउरा में एकछत्र राज्य कर रहा है।

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मनवती = मनौती, मान्यता। सुरुज = सूर्य। सनेसवा = संदेश। बहंगी = भार ढोने का एक उपकरण, काँवर। सकला = शाकल्य, हविष्य। अरघा = अर्घ्य। धरमी = धर्मात्मा, संवरू की दूसरी उपाधि। बदिया = वादी, शत्रु। छाता फूलि के भइल गजराज = प्रसन्नता से छाती भर गयी। मगन = मग्न, प्रसन्न। घिउवा = घी। डबवन = डब्बा। इंतजामवा = इंतजाम, प्रबन्ध। गंडक = विघ्न, रुकावट। जै जै मंचावलें का र = जय-जयकार मनाया। पूजनिया = पूजा। एहरवें = यहाँ। हथवा में संकलप देलें थमाय = हाथ में संकल्प दिया। असननवां = स्नान। बाम्हन बीसुन = ब्राह्मण। गाँव में ब्रह्मभोज के लिए कभी-कभी लोग कहते हैं कि बामन-बीसुन को खिलाना है। बीसुन सम्भवत: विष्णु का परिवर्तित रूप है। नेवता = निमंत्रण। दावत = भोज। सुनरी = सुन्दरी। गरवा = गला। वजवा = बाजा, वाद्य। पूजनीया = पूजन। चउरी = चबूतरा। खुसिहाली = प्रसन्नता। कुटुमवा = कुटुम्ब। संझवो रे बिहान = सुबह-शाम। लोरिकी = गायक ने यहाँ महाकाव्य का नाम लारिकी दिया है। खेलवाड़ = खेल। बबुवा = बाबू। भूंजत बाड़ें = भोग रहे हैं। एकवटे = एक-छत्र।

लोरिक का विवाह समाप्त।

अध्याय ३

चनवा का उद्धार

भावार्थ—आगे की कथा सुनो। चनवा अपनी ससुराल से नैहर जा रही है। इधर गउवा का बँठवा जङ्गल में शिकार खेल रहा था तब सामने चनवा मिल गयी। बाँठा उसे देखकर मुग्ध हो गया और चनवा के सम्मुख आकर खड़ा हो गया। कहने लगा। रानी तू मेरी विवाहिता बन जा। तब चनवा ने कहा—भइया मैं तो गउरा की बहन बेटी हूँ। तुम्हारी आँख फूट गयी है। तुम किस प्रकार मुझे विवाहिता बना

रहे हो। बँठवा ने कहा मैं तुम्हें इस जङ्गल में नहीं छोड़ूँगा। चनवा ने तब उससे कहा—तुम बेल के वृक्ष के शिखर पर चढ़ जाओ तथा बेलपत्तियाँ ला दो तब मैं तुम्हारी विवाहिता हो जाऊँगी। बँठवा डाककर वृक्ष पर चढ़ गया। इधर चनवा ने अपने सतीत्व का स्मरण किया। उसका सत जग गया जिससे वृक्ष की बल्लरी बढ़ गयी और बँठवा उसमें बँध गया। चनवा जङ्गल में भाग खड़ी हो गयी और कुसुमापुर सहदेव महदेव के द्वार पर पहुँची। फिर उसने सत का स्मरण किया जिससे बँठवा वृक्ष की बल्लरी से छूट गया। वह कुसुमापुर पहुँचा और सहदेव महदेव के द्वार को छेक लिया और कहने लगा—यहाँ मेरी विवाहिता आयी है। यह सुनकर सहदेव महदेव भँखने लगे। उन्होंने कहा—तुम्हारी विवाहिता यहाँ नहीं आयी है। तुम गउरा गुजरात लौट जाओ। बँठवा द्वार से नहीं हटा तब चनवा की माँ सिल्हिया उठी और गउरा गुजरात लोरिक के पास आयी। उसने लोरिक से कहा—भइया, कुसुमापुर में मेरी इज्जत जा रही है। बंठवा ने मेरा द्वार रोक लिया है। आज मेरी इज्जत बचा लो नहीं तो गढ़ कुसुमापुर में मेरा धर्म चला जायगा। (९७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सासुर = ससुराल। नइहर = नेहर, लड़की के माता-पिता का घर। सिकार = शिकार। बियहुती = विवाहिता। फूटि गइल बीरना जो अँखिया रे तोहँ = ऐ भाई तुम्हारी आँखें फूट गयीं। एठियन = यहाँ। पुरइन = पत्ती। बेलवा = बेल। पेड़ियाँ से = पेड़ से। बँवरिया = बल्लरी। बान्हि लेला = बाँध लिया। दुअरिया = द्वार। छेकि लेहलस = छेंक लिया, रोक लिया। भँखे लागे = भँखने लगे। सिल्हिया = चनवा की माँ का नाम। इजतिया = इज्जत। धरमवा = धर्म।

भावार्थ—तब वीर लोरिक ने अपना बङ्गला छोड़ा और दौड़ते हुये बुढ़िया के साथ कुसुमापुर आये। सहदेव महदेव के द्वार पर बंठवा ने लोरिक को देखकर जै राम किया। लोरिक ने पूछा—ऐ बाँठा। तुम क्यों बैठो हो? बाँठा ने कहा—भाई बात बताने योग्य नहीं है। मेरी रानी यहाँ किले में आयी हुई है। तुम उसे वापस करा दो। यह सुनकर लोरिक ने उसे ऐसा घुटना मारा कि वह भहराकर गिर पड़ा। उसके बाद लोरिक उसको मारने के लिए दौड़ा। बाँठा भाग खड़ा हुआ। इधर चनवा को भय हुआ कि बाँठा ने जङ्गल में मुझे पत्नी बना डाला है। यह दोष मेरे ऊपर लगा है। मैं कोई यज्ञ करूँ कि मेरा धर्म बच जाय? पण्डित ने कहा—यज्ञ कराने से ही तुम्हारा पाप कटेगा। चनवा ने कुसुमापुर में यज्ञ ठाना। ब्राह्मणों को बुलाया—भोज कराया। फिर पण्डित से पूछा—अब कोई पाप तो नहीं रह गया है। पण्डित ने कहा—सबको बुलाया किन्तु जिस अहीर ने तुम्हारी जान बचायी उसको नहीं बुलाया। यह पाप अभी लगा हुआ है। तुम फिर यज्ञ करो। चनवा ने कुसुमापुर में पुनः यज्ञ किया। सबको निमन्त्रण भेजा। लोरिक भी कुसुमापुर आया। चनवा ने उसे स्वयं भोजन कराया।

चनवा को देखकर लोरिक मोहित हो गया। भोजन के उपरान्त चनवा ने लोरिक को पान दिया। पान खाने के बाद वह गउरा गुजरात वापस आ गया। प्रातः काल होते ही चनवा ने अपनी माँ से आज्ञा ली कि मैं गउरा बसावन कोइरी के कोड़ार में जाकर भँटा लूँगी। उसकी माँ सिल्हिया ने आज्ञा दे दी। बसावन कोइरी के कोड़ार में मंजरी भी पहुँची। चनवा ने उसे भावज कहा। मंजरी बोल उठी—तुम दिन में मुझे भावज कहती हो और रात में सौत हो जाती हो। इस कहा-सुनी में दोनों में झगड़ा शुरू हो गया। बसावन दोड़-दौड़कर उन्हें छुड़ाने लगे। उनके सारे-बैगन गर्द में मिल गये। वह भागकर लोरिक के द्वार पर गये और कह दिया कि मंजरी और चनवा खेत पर लड़ रही हैं। लोरिक अपना बङ्गला छोड़कर बसावन के साथ कोड़ार में आये। मंजरी ने लोरिक के खाँसने की आवाज सुनी और वह कोड़ार से भाग गयी। चनवा ने अहीर से कहना शुरू किया, ऐ स्वामी, हम हल्दी चले चलें। अन्यथा यहाँ बड़ा जुल्म मच गया है। कुछ दिन हल्दी में व्यतीत कर फिर हम लोग गउरा गुजरात वापस आ जायँगे। लोरिक ने कहा—इससे गउरा में बड़ी निन्दा होगी। भइया भी सुनेंगे। मेरे कुल में दाग लग जायगा। चनवा ने तब माया पसारी और कहने लगी—मैं जहर खाकर मर जाऊँगी। गउरा का अहीर घबरा उठा और फिर मोह और चिन्ता में पड़ गया। लोरिक और चनवा के जाने का कौल हो गया। चनवा ने कहा—तुम कहाँ पड़ाव डालोगे। तुम मुझे स्थान बताओ या मैं तुम्हें स्थान बताऊँ। चनवा ने पीपल के वृक्ष के नीचे रात में आने के लिए कहा—और सुझाव दिया कि जो पहले पहुँचेगा वह वृक्ष में चिन्ह बना देगा और लौट जायगा। चनवा शाम को ही जाकर वृक्ष पर बैठ गयी। इधर मंजरी चुन-चुनकर सेज बनाने लगी। भोजन करवाया तथा लोरिक को शैया पर सुला दिया। दोनों पैर मिलाकर सो गये। मंजरी पंखा डुलाती रही। भोर होते-होते उसे नींद आ गयी। लोरिक पैर छुड़ाकर पीपल के पेड़ के नीचे भागा तथा चाकू से उसमें निशान बना दिया और यह समझकर कि गोपी कुसुमापुर से नहीं आयी है, गउरा गुजरात लौटने लगा। इस पर चनवा ने ललकारा और पेड़ के ऊपर से ही कहने लगी—तुम ओछे हो। तुम्हारा कुटुम्ब और परिवार ओछा है। (९८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बंगला = निवास स्थान। जै राम, जै राम = जै राम कहकर नमस्कार करना। जोग = योग्य। मनजूर = मंजूर। खटका = आशंका। पतरा = पत्र, पंचांग। चन्ना = चन्दा। जज्ञ = यज्ञ। रोप ले = ठाना। जगिया = यज्ञ। नेवतइ = नेवता, निमन्त्रण। मोहित = मुग्ध। खिलिखिलि = अच्छी तरह से बनाया हुआ पान। बिड़वा = पान का बीड़ा। मावा = मां। मतरिया = मां। कोड़रिया = कोड़ार, गाँव के पास का खेत। सवत = सौत। गरदवा = गर्द, धूल। जुलुम = जुल्म। कुलवा = कुल। दगिया = दाग। अकिली = अक्ल। हरदिया = हल्दी। जहर = विष। पिपरे तर = पीपल के वृक्ष के नीचे। छेबुवा परि गइले बदनवा = समय तय हो गया।

लगवले = वृक्ष को थोड़ा काटा । छेव लगाय = पेड़ को किसी चाकू या अन्य चीज से काट कर । घटिया = अधम, नीच ।

भावार्थ तब लोरिक लौट कर पीपल के वृक्ष के नीचे गया । चन्दा नीचे उतर आयी और कहने लगी स्वामी तुम्हारे ऊपर वज्रपात हो जाय । लोरिक का सिर नीचे हो गया । उसने सोचा—यह जुल्म हो गया । मैं बड़ी भारी बात हार गया और मेरे कुल में दाग लग गया । वह गायों के अड़ार पर गया । चनवा से उसने कहा—जरा तुम इस ढेकुल के नीचे बैठो । मैं भइया से भेंट कर लूं । वह भी भसुर से मुलाकात करना चाहती थी । चनवा के पैर का घुंघरू झन-झन बज रहा था जिसकी आवाज से बोहे की सारी गायों के कान खड़े हो गये । मलसाँवर ने उन्हें देखा और नान्हू को बुला कर कहा—देखो कोई सिंह आया है, या बाघ या हुँड़ार आया है ? नान्हू पीपल पर चढ़ गये तथा चौकन्ना होकर देखा तो आगे लोरिक था तथा पीछे चन्दा । उसने मलसाँवर को बताया कि एक बाघ तथा एक बाघिनी तुमसे बोहा में मिलने आ रही है । लोरिक आकर मलसाँवर के पैर पर गिर पड़ा और कहने लगा । भइया मुझसे बड़ी गलती हो गयी है । क्षमा करना । मलसाँवर ने कहा—तुम्हारे लिए मैं यहाँ महादेव का मन्दिर बनवा देता हूँ । पक्का मकान खड़ा करवा देता हूँ । चनवा को लेकर बोहा में ही रहो । हल्दी मत जाओ । नहीं तो सारा परिवार और कुटुम्ब दुश्मन हो जायगा । जब मलसाँवर ने इतनी बात कही—लोरिक की आँखों से झर-झर आँसू गिरने लगे । भइया मैं तुम्हारी बात नहीं मानूँगा । मुझे हल्दी जाना है । मलसाँवर ने सोने के गिलास में दूध पीने के लिए दिया । चन्दा ने सोचा, लोरिक अधिक दूध पी जायेगा और हल्दी नहीं जा सकेगा । वह अपने पैर का कड़ा झनझनाने लगी । लोरिक ने दूध को कुल्ला कर दिया । सँवरू रो पड़े और कहने लगे—भइया मेरी जिन्दगी अब नहीं बचेगी । तुमने मुझे संकट में डाल दिया है । अब हम दोनों की भेंट नहीं होगी । (६९)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—ढेकुली = कुँए से पानी निकालने की लकड़ी और बाँस का एक यन्त्र । भसुर = पति का बड़ा भाई । पयरी = घुंघरू । पिपरे पर = पीपल के पेड़ पर । चन्ना = चन्दा । बहनोई = बहन का पति । माफी = क्षमा । महादेव = शिव का मन्दिर । दुसुमन = दुश्मन । बछरू = गाय का बछड़ा । छटकावें = छोड़ दिया । मांजि लें ले = धो लिया, रगड़ कर साफ कर लिया । बयना = गाय । कड़ा = हाथ या पैर का एक गहना । फेरवां में = चिन्ता में, फेर में ।

भावार्थ—फिर लोरिक और चन्दा आगे बढ़े । मलसाँवर ने सिवगढ़ को पत्र लिख दिया कि तुम्हारी स्त्री चन्दा को मेरा भाई लिये जा रहा है । तुम उसे छीन लो जङ्गल में शिवगढ़ आ पहुँचा । लोरिक से उसका युद्ध शुरू हो गया । दोनों लड़ते-लड़ते घबरा गये । अन्त में शिवगढ़ ने लोरिक को नीचे से दबा दिया । चन्दा जंगल में खाँसती हुई आगे आयी । इस प्रकार हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे । तुम दोनों खड़े

होकर लड़ो । इस बार जो पटक देगा मैं उसके साथ चली जाऊँगी । दोनों फिर लड़ने लगे । चन्दा ने इसी बीच लोरिक को संकेत किया कि शिवगड़ की फटी हुई बेवाई में जोर से चोट करो तो वह गिर जायगा । लोरिक ने उसकी बेवाई पर चोट की और वह गिर पड़ा । लोरिक और चन्दा फिर हल्दी चलने लगे । लोरिक आगे चल रहा था तथा चन्दा पीछे-पीछे जा रही थी । हल्दी पहुँच कर दोनों ने पक्के कुँए पर डेरा डाला । फिर चनवा दो मुहरें लेकर हल्दी बाजार में सामान लाने गयी । रास्ते में उसे जो भी देख रहा था, कह रहा था जिसकी स्त्री ऐसी सुन्दर है उसका आदमी कैसा होगा ? चनवा हल्दी के अखाड़े के पास से गुजरी । गुण्डों और शोहदों ने उस पर आवाजें कसीं । चनवा ने जवाब दिया—तुम लोग अपने को बड़ा पुरुष समझते हो । तुम्हारे जैसे पुरुषों को बहुत देखा है । यदि मेरे पति से तुम्हारी भेंट हो गयी तो वह तुम लोगों की जान ले लेगा । चन्दा जमुनी की दूकान पर शराब लेने गयी । वहाँ एक टके वाली मुहर उसने जमुनी के सामने फेंक दिया । जमुनी उसे लेकर अन्दर गयी और एक बोतल पानी में दो बूँद मद डालकर ले आयी । चनवा उसे लेकर कुंए की जगत पर पहुँची । लोरिक ने बोतल की काग खोली । सभी देवी देवताओं को मनाया फिर पीना शुरू किया तो नशा बिल्कुल नहीं था । लोरिक ने कहा—रानी, हल्दी में कब का बदला साध रही हो । मैं देवी और देवताओं के सामने झूठा पड़ गया । चन्दा ने कहा-कभी कुसुमापुर में आँखों से मैंने शराब नहीं देखी । हल्दी में तुम्हारा कहना माना । कलवारिन ने मुझे बोतल में काग लगा कर दिया । लोरिक क्रुद्ध हुआ और प्रातःकाल होते ही जमुनी के दरवाजे पर पहुँचा । जमुनी से पूछा तुमने मेरे साथ ऐसा धोखा क्यों किया ? उसने उत्तर दिया जिसकी स्त्री ऐसी है, उसका पुरुष कैसा होगा ? यह मैं जानना चाहती थी । अब मै तुम्हें महुवे का मद दूँगी । लोरिक ने उससे कहा हम लोग परदेशी हैं । हमारे लिए कोई बंगला खोज दो । जमुनी ने उसे अपने ही बंगले में रख लिया । वहाँ रहते-रहते उसको दस दिन व्यतीत हो गये । ग्यारहवें दिन उसने सोचना शुरू किया—मैं तो सुरसरि में स्नान करने वाला व्यक्ति हूँ । यहाँ मेरा स्नान तथा शिव की पूजा सब कुछ छूट गया है । लोरिक के मन में दुख हुआ । वह दूसरे दिन साहु की पत्नी जमुनी के पास गया और कहने लगा—मैं सुरसरि में स्नान करूँगा । यदि तुम सुरसरि का रास्ता नहीं बताओगी तो मैं गउरा गुजरात चला जाऊँगा । जमुनी ने रास्ता बता दिया और लोरिक सुरसरि के घाट पहुँचा । वहाँ उसने देखा कि बारह सौ साधु अपने शरीर पर कफन डालकर दिन-रात माला जप रहे हैं । लोरिक पास गया तो उन्होंने अपना मुँह-पूर्व से पश्चिम कर लिया जैसे कोई नंगा-लुच्चा घाट पर आ रहा हो । तब तक लोरिक पास आ गया और हाथ जोड़ कर संतों के पीछे खड़ा हो गया । पर सन्तों ने पलक नहीं उठायी । लोरिक के मन में शंका हुई, शायद मैंने चन्दा का अपहरण किया है इसलिए इन लोगों ने मुँह फेर लिया है । एक गोपी ने लोरिक को बताया कि हम साधु नहीं हैं । हम बारह सौ गोपियाँ यहाँ माला

इसलिए फेर रही हैं कि हमारे बारह सौ पति नेउरापुर में कैद हैं। हम लोग एक अहीर लोरिक की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अभी तक गउरा का अहीर नहीं पहुँचा है। हम लोग अपने पतियों से वियुक्त हैं। कुछ दिन और रास्ता देख रहे हैं अन्यथा हम अपनी जान दे देंगे। तब अहीर बोल उठा। मैं ही लोरिक हूँ। मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ, जो भी विपत्ति तुम्हारे ऊपर हल्दी में आयी है मैं उसे काट दूँगा। (१००)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मेहरिया = पत्नी, स्त्री। बजनियाँ = लड़ाई, कुश्ती। इसरवा = इशारा। बेवइया = बेवाई। इनरवा = इनार, कुँआ। मोहरवा = मुहर। नाजर = नजर। बरनिया के = वर्ण का, रंग का। बजरिये में = बाजार में। दरियै = पास में, वहीं। भेंटिया = भेंट। सोहदा = शोहदा, बदमाश। बोलिया बोलत हउवा = आवाजें कस रहे हो। समनियां = सामान। बजरिया = बाजार। मदिया = मद, शराब। टकहवा = एक टके का। मोहरिया = मुहर। हलि गइली = प्रवेश कर गयी। ठोप = बूँद। जगतिया = कुँए की जगत, फर्श। बयरिया = बैर, शत्रुता। दगइया = दगा, धोखा। मधिया = मद। महुवा = मधूक। तरवटा = नीचे रहने वाली, स्त्री। परदेसिया = परदेशी। इगरहवां = ग्यारहवां। नहवइया = नहाने वाला। गोड़वा = पैर। झाला = छाला। गांड़ी मूड़ी = नीचे से ऊपर तक। मुकुतियो = मुक्ति। करारवा = तट, किनारा। नहं = नहान। पुरुब = पूर्व। पच्छुम = पश्चिम। नंगा लुच्चा = बदमाश, गुण्डा। पलकियो = पलक। उठं = उठाकर। मज्जन = स्नान। दरसन = दर्शन। मलवा = माला। बनखान = कैद। बघेलवा = बघेला, वीर बाघ की भाँति। घं = घाट। बीपत = विपत्ति। काट देवी = काट दूँगा।

भावार्थ—सारी गोपियाँ लोरिक की ओर देखने लगीं। फिर उसमें से एक ने कहा—तुम्हीं गउरा के अहीर हो। हम बारह सौ गोपियाँ हल्दी से अपनी जान देने के लिए सुरसरि के तट पर चलीं। हमें रास्ते में एक दण्डी साधु मिले। उन्होंने यह बताया कि जब हम पूरे शरीर पर कफनी डालकर माला जपेंगे और जब बारह वर्ष पूरा हो जायगा तब गउरा का अहीर आयेगा, नहाने का उपक्रम करेगा और तुम्हारे पतियों को छुड़ा लेगा। तब से हम माला जप रहे हैं। दंडी स्वामी ने यह भी कहा था—अहीर की बाँयी ओर गुल्ली का घाव होगा तथा दाहिने उसका मस्तक चमक रहा होगा—उसका जंघा केले की भाँति होगा। उसका मुसुक कत्थे के रङ्ग का होगा। गर्दन पर एक सेर धूल होगी तथा उसके बाँये बगल में ओढ़न तथा दाहिने में बिजुली की खड़ग होगी। उसने नर्म की पगड़ी बाँधी होगी। तब लोरिक ने अपने सिर की पगड़ी उतार दी। उसके बाँयें बगल में गुल्ली दिखाई पड़ रही थी। उसका मस्तक चमक रहा था। उसने शरीर की निरखा उतारी तो उसकी जंघा केले के खम्भे की भाँति दिखाई पड़ रही थी। मुसुक कत्थे की भाँति, काली हाथी की भाँति, तथा पेट कमलिनी के पत्ते जैसा दिखाई पड़ रहा था। सारी गोपियाँ लोरिक को देखकर रोने लगीं। हमारे नारकीय जीवन के लिए तुम नेउरापुर में मारे जाओगे। तुम्हारी माँ

रोएगी। तुम्हारे जैसा पति मारा जायगा तो तुम्हारी पत्नी भी बिलखेगी। अतः तुम गउरा लौट जाओ। तब लोरिक ने कहा—तुम लोगों ने बारह वर्ष तक तप किया है। मैं तुम्हारे पतियों को अवश्य मुक्त कराऊँगा अन्यथा मुझे घोर-पाप लगेगा। कल प्रातः काल तुम्हारे पतियों को अवश्य छुड़वा दूँगा। (१०१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—ताकै लगलीं=देखने लगीं। मइंस=भैंस। घरवा=घर। छोंड़ी=कुण्डा। देंक्का=दीमक। डंडी=दंडी स्वामी। बरिस=वर्ष। नहान=स्नान। गुल्ली=लकड़ी का छोटा टुकड़ा। केदरियन=केला। खयर=कत्था। सेर=सेर। धूर=धूल। पवन=पावन पवित्र,। पाग=पगड़ी। रूपकं=रूप। पगरी=पगड़ी। लउकै=दिखाई पड़ रहा है। बदने क=शरीर का। निरखी=चोंगा। एक विशेष प्रकार का लम्बा कुर्ता। गजन्नरन=हाथी के वर्ण का। पुरइनि=पुटकिनी, कमलिनी। मतरियौ=माँ। जियरा=जीवन। बिलं=बिल्ली, बिलार का संक्षिप्त रूप। पयंड़िया न ओहले बाडूँ=रास्ता देख रही हो, प्रतीक्षा कर रही हो। काल्ह=कल। बिहाने=प्रातः काल।

भावार्थ—तब गोपियां आपस में बात करने लगीं। चलो जरा हम हल्दी में इनका पौरुष देखें। सारी गोपियां हल्दी आयीं और अपने-अपने घर चली गयीं। वीर लोरिक जमुनी के द्वार पर गया। जमुनी ने उसे कुर्सी दी और उसे बताया कि नेउरा-पुर जाने का नाम न लो। वहां तुम्हारी जान चली जायगी। ये गोपियाँ साधु नहीं हैं। उनके पति नेउरापुर में कैद हैं। वे बारह वर्ष से माला जपते हुए खड़ी हैं। जमुनी के यहाँ से लोरिक चन्दा के यहाँ गये। हाथ-मुँह धोकर भोजन करने बैठे। चन्दा उनकी बहुत देर से प्रतीक्षा कर रही थी। चन्दा ने कहा खर्चा घट गया है, यहां काम कैसे चलेगा? न तूने किसी की नौकरी की, न तूने हल्दी में किसी का हल जोता। इतनी बात सुनते ही लोरिक ने थाली पटक दी और कहा तुम्हारी बुद्धि बिगड़ गयी है। मैंने तुम्हारी बात मान ली जिससे भाई छूट गये। गउरा में माँ छूट गयी। धोबी तथा अन्य साथी छूट गये। जिसके जन्म के समय सवा घड़ी सोने-चाँदी की वर्षा हुई थी वैसी पत्नी छूट गयी। दादा ने कभी हल नहीं चलवाया। न संवरू भइया ने कभी चरवाही करवाई। मैं किसकी नौकरी करूँ। मेरी जिन्दगी नष्ट हो गयी। अब हल्दी में नौकरी किये बगैर पानी नहीं पीऊँगा। (१०२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बतिआवैं=बात करें। रेबरले जायं=पीछा करने लगीं। टप दे=तुरन्त। सइयाँ=स्वामी। यहाँ जमुनी लोरिक को सइयाँ कह रही है। लोरिकी के अन्य पाठों में भी जमुनी और लोरिक के मधुर सम्बन्धों का उल्लेख है। असनान=स्थान। मुकुतिया=मुक्ति। माँ⋯⋯=मास। मोटे=बली। ठहरे पर=भोजन करने का स्थान। परानी=प्राणी। खरच=खर्चा। थरिया=थाली। आडर=और। गइयन में=गायों में। मतरिया=माँ। सोनवां=सोना,। चनिया=चाँदी। बेनिये=हाथ का पखा, बेनिया। हरबा=हल।

भावार्थ—लोरिक अपना बझुना छोड़कर जमुनी के दरवाजे पर पहुँचे और उससे कहा—मेरी एक नौकरी लगवा दो। जमुनी ने कहा—घर में सोना-चाँदी गँजा हुआ है। तुम बैठे हुए खाओ। दूसरे की नौकरी करने क्यों जाओगे। लोरिक ने कहा—मैं दूसरे का धन बैठकर नहीं खाऊँगा। उसने महिचन को पुकारा। महिचन उसकी नौकरी लगाने के लिए राजा महुअरि के यहाँ गये। लोरिक वहाँ कुर्सी पर दाहिनी ओर बैठ गया। महुरि ने आशंका प्रकट की और महिचन से कहा यह व्यक्ति नौकरी करने योग्य नहीं है। पर लोरिक को गाँव का चरवाह बना दिया गया। जब दोनों किले से बाहर आये, महिचन ने कहा—भइया तुम्हारी वजह से मेरी जिन्दगी चली जायगी। तुम राजा के पास कुर्सी पर क्यों बैठ गये। महुअरि ने डुग्गी पिटवा दी। सब लोग अपने जानवर दक्षिण सगड़ पर पहुँचा दें। सबेरा हुआ। सारा गाँव गायों को लेकर मीटे पर पहुँचा। सभी लोगों ने लोरिक का कान पकड़ कर हिलाया और कहा—एक भी पशु भूल गया तो दंड लिया जायगा। दिन भर गाय चराने के बाद लोरिक मीटे पर आया। फिर जो भी गाय लेने आया लोरिक उसका कान उखाड़ने लगा। सारे गाँव का कान उखड़ गया। महुअरि के पास शिकायत पहुँची। पर गाँव के लोगों की गलती थी। पहले लोरिक का कान उन लोगों ने पकड़ा था। लोरिक वहाँ अफसोस कर रहा था कि स्त्री के चक्कर में आकर यह सब हो रहा है। पहले मेरा कान किसी मर्द ने नहीं पकड़ा। दूसरे दिन लोरिक ने महुअरि के बगीचे में गायें छोड़ दीं। फाटक पर बैठे हुए दो सिपाहियों में से एक पर आघात किया तथा दूसरा भाग खड़ा हुआ। गायें बगीचे का फल खाने लगी और तृप्त होकर उन्होंने लोरिक को आशीर्वाद दिया कि जैसे आज हमारा पेट भरा है वैसे ही हल्दी में हम तुम्हारा पेट भरेंगे। तुम नेउरापुर में भी विजय प्राप्त करोगे। (१०३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—गोहरवले = पुकारा। डेवढ़िया = ड्योढ़ी। हाँक = पुकार। तोंहई = तुम्हीं। ताबेदारी = नौकरी। बाबिल = पिता। खइले बेगर = खाये बिना। बरियं = बरियार, जबर्दस्त। गोरू = ढोर। ओगरे = पूरा, सब। हरइहैं = गायब होगी। संझा = साँझ। डांड = दंड, जुर्माना। डहरवले = घुमाया। नदी बेवरा = एक नदी का नाम। कूसा = कुश। राब = एक प्रकार का फूस। पगुरी = जुगाली। बरायल = चुन लो। उपार = उखाड़। खेदले = खदेड़ने पर, पीछा करने पर। चरवहया = चरवाह। रजवा = राजा। कनवाँ = कान। बेजइयाँ = अपराध (बेजाई से है)। बाजं = बाजार, गायक ने संक्षिप्तीकरण किया है। झंखे लागल = अफसोस करने लगा। मतवा = राय। मेवाक रनिया = फल फूल। बगरैबं = बगवान का संक्षिप्त रूप, बगीचा। बगइचा = बगीचा। केहुनिया = केहुनी। मेवइया = मेवा फल। पपीता = एक फल। असुधा = पूर्ण तुस। असीसत = आशीर्वाद दे रही हैं।

भावार्थ—तब लोरिक ने सोचा—गायों को बगीचे में चर खिलाऊँगा। सारी गायों को लेकर उसने खेतों में छोड़ दिया। सारा हल्दी गाँव छाती पीटने लगा। कैसे

बाल-बच्चे जीयेंगे। कौड़ी कैसे दी जायगी ? कान उखाड़ लिये जाने के कारण कोई पास जा नहीं रहा था। जाकर सबने राजा महुअरि से शिकायत की। राजा महुअरि ने दो सिपाहियों को भेजा कि वे लोरिक को पकड़ लाये और उसे कैद में डाल दें। महुअरि को लोरिक ने डाँटा। आओ लड़ो, बादी दो (चुनौती दो) मैं तुम्हारे मुँह में तलवार घुसेड़ दूँगा। अन्यथा हल्दी में तुम्हारा मस्तक काट लूँगा। राजा महुअरि कुर्सी से गिर पड़ा। नौकर-चाकर भाग गये। मुंशी तथा दीवान ने उसे बैठाया और महुअरि को सलाह दिया कि उसको नेउरापुर भेज दिया जाय। वहाँ लड़कर वह मर जायगा और तुम्हारी जान बच जायगी। सिपाहियों ने कहा—इसे काटखाने वाला घोड़ा मंगर सौंप दो। दो सिपाहियों ने लोरिक को घोड़ा दिखाया जिसका नाम मंगर था। उसके मुँह पर तवा लगा हुआ था। हल्दी में डुग्गी पिटवा दी गयी। सब लोग अपने घर की टट्टी बन्द कर दें। काटखाने वाला (कटहवा) घोड़ा छूट रहा है। सब लोग अपने घर का ताला बन्द कर दें अन्यथा वह सबकी जान ले लेगा। वीर लोरिक ने घोड़े के मुँह का तवा उठा लिया और जब उसकी चोटी पकड़कर उसे बाहर लाया, घोड़ा उसे काटने लगा। लोरिक ने उसे केहुनी से ऐसा मारा कि वह वहीं खड़ा हो गया। उसने लोरिक से पूछा तुम कौन हो ? लोरिक ने घोड़े से पूछा तुम कौन हो ? उसने कहा मैं घोड़ा मंगर हूँ। लोरिक ने अपना परिचय दिया और कहा मैं चन्दा का उद्धार कर हल्दी आया हूँ। घोड़े ने अपने बारे में बताया—मेरा जन्म नेउरापुर में हुआ है। लिलिया घोड़ी के पेट से मैं उत्पन्न हुआ हूँ। नेउरापुर के राजा को पण्डित ने पचाङ्ग खोलकर बताया है कि मैं जो जाऊँगा तो राजा की जान ले लूँगा। (१०४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—खर = घास फूस। डाँड़े पर = डंडार पर, खेतों की सीमा पर। ओगरा = सम्पूर्ण। लरिका परानी = बाल बच्चे। कइसे कउड़ी दियाई = कैसे कर दिया जायगा। उपरले के नाते = उखड़ जाने की वजह से। गट्टा = कलाई। घिसराय = घसीटकर। पोखरा पर दूध दीह चुकवाय = तालाब पर दूध डलवा दो। नाहीं बादी दा खेते मुँहे पेल चलाई तरवार = नहीं तो तुम चुनौती दो, मैं जाकर तलवार चलाऊँ। बरतिया = व्रत, संकल्प। दरब = द्रव्य। इनारा = कुँवा। झउवन = टोकरी भर। चउमुख = चारों ओर। बजँ = बाजार। कटहवा = काट खाने वाला। कंटक जाई मेटाय = कंटक मिट जायगा। टाटी बेंड़वा द्या = टाटी दे दो, ताला बन्द करवा दो। बहूरे = बाहर। पांते लाते = पैर से। मरले हूँचा = घूसा मारा। केउनी = केहुनी। अकड़ गइलें = खड़ा हो गया, रुक गया। ओढ़ार = अपहरण।

भावार्थ—घोड़े ने लोरिक को बताया कि जब हरेवा को यह बात मालूम हुई तब उन्होंने म्यान से तलवार खींच ली और थाना नेउरापुर के बाजार में मुझे मारने

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मियनियाँ = म्यान । खिरकिया पर = खिड़की पर । जियरवा = जिंदगी । बन = बंद । दरियाव = दरिया, नदी । बूड़ि के = डूबकर । बकसवा = बाक्स, सन्दूक । सोरन = स्वर्ण, सोना । लगमियाँ = लगाम । पीठिया = पीठ । पाखड़ = पाखर । घुघुरवा = घुंघरू । सइतिया = शकुन, मुहूर्त । मिरितवा = मृत्युलोक । कमाई चूकि रे गइलीं = मैंने उचित पुण्य नहीं कमाया । कटहवा = काट खाने वाला । सुखवन = अन्न जो सुखाने के लिए रखा गया हो । डेराय-डेराय = डर-डर कर । गड़बड़ा = गड्ढा । लग्गा = बड़ी लाठी । पोटरिया फाटि गइली = अन्न के बिना पेट फट गया अर्थात् अन्न के बिना तड़प गया । कवल = कमल, मुँह । हुउवै कुम्हिलाय = कुम्हला गया । चोलवा = चोला, शरीर । झूरै = सूखे में । बदरवा = बादल । घहराय = गिर रहा है । अबजिया = आवाज । परवजवा = बीड़वान बाड़ीं उडवले = हमने बीड़ा उठाया है, चुनौती दी है । तुरहिया = तुरही । ढोलियो = ढोल । गजरा = माला । बिजनवां = व्यंजन, विशेष प्रकार के भोजन । ढूरति = ढुलक रहा है । दिअवा = दीपक । धउंसा = धौंसा । मीतवा = मित्र । सरमियो = मर्म । बेवरवा = बेवरा नदी । कंडन = कंडा, बाण (बहुवचन) । पालेंल नोइटवन = प्रेम से पाला पोसा । दीदं = दीदार, दर्शन ।

चनवा का विवाह समाप्त ।

अध्याय ४

नेउरापुर की लड़ाई

भावार्थ—बेवरा नदी पर लोरिक खड़ा है । नदी का पाट दो कोस का है । लोरिक ने घोड़े से पूछा—कैसे पार उतरा जाय ? घोड़े ने सुझाव दिया नाव और मांझी को बुलवा लो । इस पार हल्दी है तथा उस पार नेउरापुर है । बारह कोस का जङ्गल है । जालपा देवी हरेवा की पूज्य देवी हैं । घोड़े ने कहा अगर हम उड़कर चलेंगे और नदी में गिर जायंगे तो दोनों की मृत्यु हो जायगी । परन्तु शीघ्र ही घोड़ा उड़ गया और नदी के पार पलाश के बन (बन छिउली) में उतर गया । लोरिक का ओढ़न गिर गया था जिसे घोड़े ने अपनी पिटारी में रख लिया था । उसने निकालकर ओढ़न लोरिक को दिया । राजा हरेवा की पूज्य देवी जालपा को आहट मिली । वह सारी डाइन और कंटाइन लेकर दौड़ने लगीं । तब घोड़ा जङ्गल में रोने लगा और कहने लगा—जालपा देवी लोरिक को खाने आ रही हैं । लोरिक ने बनसत्ती तथा दुर्गा का स्मरण किया । वे बोहा से आ गयीं । दुर्गा ने समझाया, जाकर जालपा देवी के पैर

पकड़ लो। वह तुम्हें बारह कोस के जङ्गल में घसीटेगी पर तुम उन्हें नहीं छोड़ना। लोरिक ने ऐसा ही किया। जालपा देवी विकल हो गयीं। उन्होंने लोरिक से वरदान माँगने के लिए कहा। लोरिक ने वरदान माँगा—हरेवा का साथ छोड़ दो। मेरा साथ पकड़ लो। जालपा देवी ने लोरिक को सहायता के लिए आश्वासन दिया। इधर हरेवा अपनी पत्नी के साथ सो रहे थे। पत्नी ने बुरा स्वप्न देखा। जालपा देवी ने जाकर हरेवा को बताया कि शत्रु आ पहुँचा है। हरेवा ने प्रातःकाल रंगू बारी को बुलाया और कहा बारह कोस जङ्गल में शत्रु टिका हुआ है। जाकर पता लगाओ। रंगू पता लगाने लगा। लोरिक से भेंट हुई—पूछा तुम कौन हो? लोरिक ने अपना परिचय बताया और कहा मैं चन्दा को उढ़ार कर हल्दी आया था। हल्दी की बारह सौ गोपियों के पतियों को हरेवा ने कैद किया है। मैं उन्हें छुड़ाने आया हूँ। रंगू को लोरिक पहचान गया था। गुल्ली डंडा खेलने में बारह वर्ष पहले उसे चोट लगी थी और वह गउरा से नेउरा-पुर भाग आया था। लोरिक ने रंगू से पूछा—तुम मुझे युक्ति बताओ। हम दोनों साथ ही फिर गउरा वापस चलेंगे। (१०६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—नाव बेड़ा = नौका। मांझी = मल्लाह। बूड़ि के = डूबकर। गयल मेंडराय = चक्कर लगाने लगा। टूवें = इधर-उधर ढूंढकर देख रहे हैं। बियाइल = जन्म दिया। तारू = तालू। ठीठोराई = घसीटेगा। नीमक = नमक। सेजिया = शैया। अजगुत = अयुक्त, खराब। सोझे = सीधे। नगरिया = नगर। लमहुरे से = दूर से।

भावार्थ—वीर लोरिक ने रंगू बारी से नेउरापुर के बारे में विस्तार से बताने के लिए कहा। रंगू बारी ने कहा—मैं हरेवा की नौकरी करता हूँ। उसका मंत्री हूँ। बारह वर्ष से उसका नमक खा रहा हूँ। तुम्हीं बताओ मैं तुम्हें कैसे युक्ति बताऊँ। मुझे अपराध लगेगा। लोरिक ने समझाया—बारह सौ गोपियों के पति यहाँ कैद हैं। यहाँ इतना पाप हुआ है। अन्त में रंगू बारी ने एक बात छोड़कर अन्य सभी सूचनाएँ दे दीं। उसने बताया कि हरेवा पहले बरों का छत्ता छोड़ेगा। यदि उससे तुम्हारी जान बच गयी तो ब्रह्मा का महाजाल जङ्गल में फेंकवा देगा। फिर नेउरापुर किले में कैद करवा-कर बनखान में डालेगा। लोरिक ने बचने का उपाय पूछा तो रंगू बारी ने कहा—मैंने हरेवा का नमक खाया है। मैं उसका भेद नहीं बताऊँगा। लोरिक ने रंगू से कहा कि हम लोग एक गढ़ के रहने वाले हैं। एक ही साथ वहाँ वापस चलेंगे। तब रंगू बारी ने उपाय बताया कि ओढ़न की मुट्ठी दबाओ। चारों ओर आग फैल जायगी तथा बरों का झुन्ड जंगल में जल जायगा। उसके बाद जब वह सांकर कुत्तियों को छोड़े तो घोड़े पर चढ़कर उड़ जाना और तीन-तीन जोजन तक मंडराना। जब वह महाजाल फेंके तब मैं दातुल-दातुल चिल्लाऊँगा। फिर तुम तलवार लेकर उसे दो टुकड़े कर देना। घोड़ा निकलकर भाग जायगा। यह कहकर रंगू नेउरापुर भाग गया। जाकर उसने हरेवा को बताया कि तुम्हारा बच पाना कठिन है। गढ़ गउरा का अहीर आया है।

जान नहीं बचेगी। मैं दूसरे राज्य में भाग जाऊँगा। राजा हरेवा ने बर्रों को छोड़ा। लोरिक के ओढ़न की आग से वे सारे जल गये। फिर हरेवा ने कुत्तों को छोड़ा। लोरिक तब घोड़े पर चढ़ गया। घोड़ा तीन-तीन योजन मंडराने लगा। (१०७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मंतिरी = मंत्री। वरिस = वर्ष। बन्हुवा = कैदी। बरई = बर्रे। बीन्हि लीहैं = काट लेंगी, डंक मारेंगी। खिचवाय के = खींचकर। पहिलेइं = पहले ही। रहवइया = रहने वाला। सांकर कुतिया = कुतिया जो जंजीर में बंधी हुई है। खांड़ी = खड्ग। कपरवा = कपार, सिर। मंझार = मध्य में। डांकि के = कूदकर।

भावार्थ—घोड़ा जाकर मध्य आकाश में मंडराने लगा। दो कुत्तों ने घोड़े को जोर से पकड़ लिया। घोड़े के शरीर में विष भिनने लगा तो वह ढीला पड़ने लगा। लोरिक ने उनका सिर अपनी तलवार से काट डाला। पर घोड़ा महराकर गिर पड़ा। लोरिक जङ्गल में रोने लगा। हाय, हमारी बाँह कट गयी। उसने बनसत्ती और दुर्गा को पुकारा किन्तु वे बोहा में विराजमान थीं जहाँ संवरू से युद्ध हो रहा था। लोरिक का रुदन सुनकर वे आ गयीं। चतुरता से दुर्गा ने कहा—दोनों ओर लड़ाई छिड़ी हुई है मैं दोनों की रक्षा करूँ या नेउरापुर में एक को ही बचाऊँ। लोरिक ने कहा एक ही की रक्षा करो। शत्रु की रक्षा क्यों करती हो? लोरिक को यह मालूम नहीं था कि दुर्गा का इशारा संवरू के युद्ध की ओर है। उसने समझा कि दुर्गा मेरी और हरेवा दोनों की रक्षा करना चाहती है। दुर्गा ने संवरू का साथ छोड़ दिया। वह मारे गये तथा सारी गायें पीवरी अपहृत कर ली गयीं। दुर्गा नेउरापुर में आकर टिक गयीं। उन्होंने घोड़े का विष खींच लिया। घोड़ा उठ खड़ा हुआ। लोरिक की विपत्ति कट गयी। (१०८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सरग = स्वर्ग, आकाश। काछे में = पीछे से। भीनल = भिनने लगा। बहुरे लगे = ढीला पड़ने लगा। मउर = सिर। मतरिया = महतारी, माँ। सांसत = संकट, विपत्ति। चोलवो = चोला। अवजिया = आवाज। चरनिया = चरण। दलिया = दाल। आरे कहाँ···जोगे धलीं = दुर्गा यहाँ कहना चाहती है कि मैं तुम्हें ही जीताऊँ या तुम्हें और मलसांवर दोनों को जीताऊँ। लोरिक ने समझा कि दुर्गा कह रही हैं कि मैं दोनों को जीताऊँ यानी तुम्हारे शत्रु हरेवा की मदद करूँ या केवल तुम्हारी। लोरिक ने इसका उत्तर दिया केवल एक को। अतः दुर्गा ने सँवरू का साथ छोड़ दिया क्योंकि जब लोरिक इधर लड़ाई कर रहा था उसी समय सँवरू बोहा में शत्रुओं से लड़ रहे थे। जोगे रे धलीं = रक्षा करूँ, बचा लूँ। दगियो = धोखा देने वाला। लोहवो = लोहा, युद्ध। बेल्हि के = अपहरण करके, हटाकर। पिपरियो = पीपरी। बीखिया = विष।

भावार्थ—दुर्गा बोहा में गायों के अगार से हटकर नेउरापुर आ गयीं। मल-सांवर की गायें हर ली गयीं। मंजरी पर विपत्ति पड़ गयी। उसका नौलखा हार टूट

लिया गया । यहाँ नेउरापुर में हरेवा ने महाजाल फैलवाया । लोरिक उसमें फँस गया । घोड़ा लोरिक को लेकर जाल समेत उड़ने लगा पर जाल को पहुँ खींचने लगे । जाल का मुँह बन्द हो गया । रंगुवा ने कहा—अब गउरा अहीर फँस गया । रंगू ने दातुल-दातुल गोहराया । लोरिक ने बिजली की खाँड से जाल के दो टुकड़े कर दिये । घोड़ा निकलकर भागा और तीन योजन तक मंडराने लगा फिर नेउरापुर में आकर चू गया । हरेवा को रंगू ने समझाया कि अब तुम्हारी मृत्यु निकट आ गयी है । हरेवा ने अपनी पलटन समझायी । उसमें बारह सौ मुंगलैन, तेरह सौ तुर्क और पठान तथा सोलह सौ रघुवंशी थे जिनकी कमर में तलवार झूल रहा था । हरेवा ने मारू बाजा बजाया । बर्छी, भाला, तेग, तलवार, सजाकर सभी कचहरी में आ गये । घोड़े, ऊँट, हाथी, साँड़ सब तैयार हुये । रंगू बारी अपने हाथी पर बैठकर मँडसा बजाने लगा । तब मंगर घोड़ा ने लोरिक से कहा तुम जल्दी मेरी पीठ पर बैठ जाओ । घोड़ा लोरिक को लेकर आकाश में उड़ने लगा । बर्छियाँ, चलने लगीं । तलवारें सनसनाने लगीं । इधर घोड़ा लोगों की खोपड़ियाँ तोड़ने लगा । लोरिक ने अपनी बिजली की तलवार घुमायी जिससे शत्रुओं के मुंडों की ढेर लग गयी तथा लाशों का खलियान तैयार हो गया । हरेवा की सारी पलटन मारी गयी । रंगू ने राजा हरेवा की कचहरी में जाकर निवेदन किया । कल प्रातःकाल तुम्हारी मृत्यु आने वाली है । तुम्हारे सिर पर काल आ गया है । (१०६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बेन्हल = अपहृत । असनवँ = आसन । महाजाल = एक प्रकार का बड़ा जाल । दातुल-दातुल = इसका अभिप्राय स्पष्ट नहीं है । निज को = निश्चय ही । छेंकिलेला = घेर लिया । औगरियो = अवसर । गउरी = मस्तक, मुंड । खरि रे रं = खलियान । खलि रे रं = यहाँ गायक ने खरिहान का संक्षिप्तीकरण किया है । गिध गवलँ बेदवो रे पुरं = गिद्ध वेद पुरान गा रहे हैं अर्थात् प्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं ।

भावार्थ—रंगू बारी ने हरेवा से कहा—अब कुशल नहीं है । हरेवा के उपाय पूछने पर उसने सुझाया कि नेउरापुर डुग्गी पीटवा दो कि सभी लड़के तथा लड़कियाँ सूप और चलनी लेकर जङ्गल में भाग जायें । डुग्गी पीट गयी, सभी अपने बाल-बच्चों के साथ जङ्गल में भाग गये । रंगू बारी फाटक बन्द करवा कर छिप गये । राजा हरेवा भी तीन फाटकों के बीच में जाकर छिप गया । दूसरे दिन जब लोरिक नेउरापुर पहुँचा तो सारा गाँव सूना पड़ा था । राजा हरेवा के फाटक पर पहुँचा और लोरिक ने ऐसा ऐड़ा मारा कि फाटक छिन्न-भिन्न हो गया । सामने रंगू बारी निकलकर आया । उसने लोरिक को बता दिया कि हरेवा कहाँ छिपा है ? लोरिक हरेवा के पास पहुँचा । दरवाजा तोड़कर हरेवा की कलाई पकड़ी तथा उसकी गर्दन काट ली फिर बारह सौ कैदियों के पास पहुँचकर उन्हें छुड़ाया । कैदियों ने नेउरापुर का सारा धन लूट लिया तथा दुर्गा ने नेउरापुर को फूँक दिया । जमुना ने ध्यान से देखा । नेउरापुर में धुँआ उड़ रहा था । वह दौड़कर चन्दा के बुर्ज में गयी और कहा कि जिस स्वामी के साथ

तुम यहाँ आयी थी उसको हरेवा ने मरवा दिया है और उसकी छाती पर रखकर उसे जलवा दिया है। इसलिए वहाँ धुँवा उठ रहा है। चन्दा ने कहा मेरे पति का मर्म तुम नहीं जानती। उन्होंने राजा बमरी के सात अमर बेटों को मारा है और सतिया की डोली उठवायी। उन्होंने बारह-सौ कैदियों को छुड़ाने के लिए कहा था—नेउरापुर में सभी छूट जायंगे। (११०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कुसल बेल्हा = कुशल बेला। लउकी = दिखाई पड़ेगा। लुकलैं = छिप गये। सुन्न = सूना। बदमजात = आदमी। भनके = शोर कर रही है। लूकल = छिपा हुआ। केवाड़ी = दरवाजा। गट्टा = कलाई। बन्हुवा = कैदी। दमिया = दम, प्राण। बड़ेरिया के बाँस = बंडेरी का बाँस, मकान के ऊपरी भाग का बाँस। उधिराय गइलैं = उड़ गया। बुरुजे से = बुर्ज से। ओसरी ताकैं = ध्यान से देख रही है। लड़िकवन्हो = बालिका। चइला = सूखी लकड़ी के फाड़े गये टुकड़े।

भावार्थ—रंगूबारी अपने सारे कैदियों को लेकर सारे धन के साथ बेनरा नदी के पार उतरने लगे। इधर नेउरापुर को मिट्टी में मिलाकर लोरिक ने हल्दी के लिए घोड़ा कूदाया। जब हल्दी के पास लोरिक पहुँचा तो सारे गाँव में हलचल मच गयी और सर्वत्र प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी कि सारे कैदी छूट कर आ गये हैं। गोपियाँ गाँव की सरहद पर गयीं और उन्होंने लोरिक की आरती उतारी। लोरिक चन्दा के पास गये। चन्दा ने मोटागद्दा बिछाया। लोरिक का हाथ पैर धोया पानी पिलाया, फिर पान खिलाया और पंखा झलने लगी। चन्दा ने पूछा किसके सत ने तुम्हें शक्ति दी। बुढ़िया माई, धरमी संवरू या मंजरी के सत ने तुम्हें विजेता बनाया है या तुमने अपने भरोसे विजय प्राप्त की है अथवा बायें बनसत्ती तथा दाहिने दुर्गा ने सहायता पहुँचायी है। लोरिक ने कहा—किसी के सत ने सहायता नहीं दी है और न बनसत्ती और दुर्गा ने ही सहायता की। हमने अपनी जांघ के बल पर तथा अपनी भुजाओं की शक्ति पर नेउरापुर लूटा है। बनसत्ती ने यह बात सुनी और दुर्गा को जाकर बताया। उसके इस अहङ्कार से दुर्गा को दुख पहुँचा। वह उसका साथ छोड़कर सिरसापुर जाने लगीं। बनसत्ती से कहा—तुम गायों के अड़ार में जाओ। मैं लोरिक को सिरसापुर में कोढ़ करवाऊंगी और आठवें दिन उसका बलिदान चढ़वाऊंगी। (१११)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बन्हुवा = कैदी। गठरी मोटरी = गट्ठर। माटी = मिट्टी। मचल कूक = कोलाहल मच गया। डंका गुसिहानी के मयल = खुशियाली का डका पीट गया। सरहद = सीमा। हलक झुरायल = कण्ठ सूख गया। बीड़ा = पान का बीड़ा। कोखिया = कोख, कुक्ष। जंघेलवा = जंघा की शक्ति। बउसार = पौरुष। आल्हा सुनावै = वीरता का राग अलाप रहे हैं। एठियन = यहाँ। करेजवा = कलेजा। करनी = एक राजा का नाम। नवाय देब = झलवा दूँगी। बलदान = बलिदान।

भावार्थ—दुर्गा हल्दी से उड़कर सिरसापुर पहुँच गयीं और वहाँ राजा करनी को खोद कर जगाया। अपना परिचय देने के बाद कहा कि तुम्हारे पाहुन हरवा। को

लिया गया। यहाँ नेउरापुर में हरेवा ने महाजाल फैलवाया। लोरिक उसमें फँस गया। घोड़ा लोरिक को लेकर जाल समेत उड़ने लगा पर जाल की पट्टी खींचने लगे। जाल का मुँह बन्द हो गया। रंगुवा ने कहा—अब गउरा अहीर फँस गया। रंगू ने दातुल-दातुल गोहराया। लोरिक ने बिजली की खांड से जाल के दो टुकड़े कर दिये। घोड़ा निकलकर भागा और तीन योजन तक मंडराने लगा फिर नेउरापुर में आकर रुक गया। हरेवा को रंगू ने समझाया कि अब तुम्हारी मृत्यु निकट आ गयी है। हरेवा ने अपनी पलटन समझायी। उसमें बारह सौ मुंगलैन, तेरह सौ तुर्क और पठान तथा सोलह सौ रघुवंशी थे जिनकी कमर में तलवार झूल रहा था। हरेवा ने मारू बाजा बजाया। बर्छी, भाला, तेग, तलवार, सजाकर सभी कचहरी में आ गये। घोड़े, ऊँट, हाथी, साँड़ सब तैयार हुये। रंगू बारी अपने हाथी पर बैठकर पैंजसा बजाने लगा। तब मंगर घोड़ा ने लोरिक से कहा तुम जल्दी मेरी पीठ पर बैठ जाओ। घोड़ा लोरिक को लेकर आकाश में उड़ने लगा। बर्छियां, चलने लगीं। तलवारें सनसनाने लगीं। इधर घोड़ा लोगों की खोपड़ियाँ तोड़ने लगा। लोरिक ने अपनी बिजली की तलवार घुमायी जिससे शत्रुओं के मुंडों की ढेर लग गयी तथा लाशों का खलिया तैयार हो गया। हरेवा की सारी पलटन मारी गयी। रंगू ने राजा हरेवा की कचहरी में जाकर निवेदन किया। कल प्रातःकाल तुम्हारी मृत्यु आने वाली है। तुम्हारे सिर पर काल आ गया है। (१०६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—वेन्हल = अपहृत। असनवें = आसन। महाजाल = एक प्रकार का बड़ा जाल। दातुल-दातुल = इसका अभिप्राय स्पष्ट नहीं है। निज को = निश्चय ही। छेंकिलेला = घेर लिया। ओगरियो = अजगर। गउरी = मस्तक, मुंड। खरि रे रं = खलियान। खलि रे रं = यहां गायक ने खरिहान का संक्षिप्तीकरण किया है। गिध गवलैं वेदवो रे पुरं = गिद्ध वेद पुरान गा रहे हैं अर्थात् प्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं।

भावार्थ—रंगू बारी ने हरेवा से कहा—अब कुशल नहीं है। हरेवा के उपाय पूछने पर उसने सुझाया कि नेउरापुर डुग्गी पीटवा दो कि सभी लड़के तथा लड़कियाँ सूप और चलनी लेकर जङ्गल में भाग जायें। डुग्गी पीट गयी, सभी अपने बाल-बच्चों के साथ जङ्गल में भाग गये। रंगू बारी फाटक बन्द करवा कर छिप गये। राजा हरेवा भी तीन फाटकों के बीच में जाकर छिप गया। दूसरे दिन जब लोरिक नेउरापुर पहुँचा तो सारा गाँव सूना पड़ा था। घोड़ा हरेवा के फाटक पर पहुँचा और लोरिक ने ऐसा ऐड़ा मारा कि फाटक छिन्न-भिन्न हो गया। सामने रंगू बारी निकलकर आया। उसने लोरिक को बता दिया कि हरेवा कहां छिपा है? लोरिक हरेवा के पास पहुँचा। दरवाजा तोड़कर हरेवा की कलाई पकड़ी तथा उसकी गर्दन काट ली फिर बारह सौ कैदियों के पास पहुँचकर उन्हें छुड़ाया। कैदियों ने नेउरापुर का सारा धन लूट लिया तथा दुर्गा ने नेउरापुर को फूँक दिया। जमुना ने ध्यान से देखा। नेउरापुर में धुँआ उड़ रहा था। वह दौड़कर चन्दा के बुर्ज में गया और कहा कि जिस स्वामी के साथ

तुम यहाँ आयी थी उसको हरेवा ने मरवा दिया है और उसकी छाती पर रखकर उसे
जलवा दिया है। इसलिए वहाँ धुँआ उठ रहा है। चन्दा ने कहा मेरे पति का मर्म तुम
नहीं जानती। उन्होंने राजा बमरी के सात अमर बेटों को मारा है और सतिया को
डोली उठवायी। उन्होंने बारह-सौ कैदियों को छुड़ाने के लिए कहा था—नेउरापुर में
सभी छूट जायंगे। (११०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कुसल बेल्हा = कुशल बेला। लउकी = दिखाई पड़ेगा।
लुकलें = छिप गये। सुन्न = सूना। अदमजात = आदमी। भनके = शोर कर रही है।
लूकल = छिपा हुआ। केवाड़ी = दरवाजा। गट्टा = कलाई। बन्हुवा = कैदी। दमिया
= दम, प्राण। बड़ेरिया के बाँस = बंड़ेरी का बाँस, मकान के ऊपरी भाग का बाँस।
उधिराय गइलें = उड़ गया। बुरुजे से = बुर्ज से। ओसरी ताकें = ध्यान से देख रही है।
लड़िकवन्ही = बालिका। चइला = सूखी लकड़ी के फाड़े गये टुकड़े।

भावार्थ—रंगूवारी अपने सारे कैदियों को लेकर सारे धन के साथ बेबरा नदी
के पार उतरने लगे। इधर नेउरापुर को मिट्टी में मिलाकर लोरिक ने हल्दी के लिए
घोड़ा कूदाया। जब हल्दी के पास लोरिक पहुँचा तो सारे गाँव में हलचल मच गयी
और सर्वत्र प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी कि सारे कैदी छूट कर आ गये हैं। गोपियाँ
गाँव की सरहद पर गयीं और उन्होंने लोरिक की आरती उतारी। लोरिक चन्दा के पास
गये। चन्दा ने मोटागद्दा बिछाया। लोरिक का हाथ पैर धोया पानी पिलाया, फिर पान
खिलाया और पंखा झलने लगी। चन्दा ने पूछा किसके सत ने तुम्हें शक्ति दी। बुढ़िया
माई, धरमी संवरू या मंजरी के सत ने तुम्हें विजेता बनाया है या तुमने अपने भरोसे
विजय प्राप्त की है अथवा बायें बनसत्ती तथा दाहिने दुर्गा ने सहायता पहुँचाया है।
लोरिक ने कहा—किसी के सत ने सहायता नहीं दी है और न बनसत्ती और दुर्गा ने
ही सहायता की। हमने अपनी जांघ के बल पर तथा अपनी भुजाओं की शक्ति पर
नेउरापुर लूटा है। बनसत्ती ने यह बात सुनी और दुर्गा को जाकर बताया। उसके इस
अहङ्कार से दुर्गा को दुख पहुँचा। वह उसका साथ छोड़कर सिरसापुर जाने लगी।
बनसत्ती से कहा—तुम गायों के अड़ार में जाओ। मैं लोरिक को सिरसापुर में कैद
करवाऊंगी और आठवें दिन उसका बलिदान चढ़वाऊँगी। (१११)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बन्हुवा = कैदी। गठरी मोटरी = गट्ठर। माटी =
मिट्टी। मचल कूक = कोलाहल मच गया। डंका गुमिहाली के मयल = खुशियाली का
डका पीट गया। सरहद = सीमा। हलक झुरायल = कण्ठ सूख गया। बीड़ा = पान का
बीड़ा। कांखिया = कोख, कुक्ष। जंघेलवा = जंघा की शक्ति। बउसार = पौरुष। आल्हा
सुनावै = वीरता का राग अलाप रहे हैं। एठियन = यहाँ। करेजवा = कलेजा। करनी =
एक राजा का नाम। नवाय देव = झलवा दूँगी। बलदान = बलिदान।

भावार्थ—दुर्गा हल्दी से उड़कर सिरसापुर पहुँच गयीं और वहाँ राजा करनी
को खोद कर जगाया। अपना परिचय देने के बाद कहा कि तुम्हारे पाहुन हरवा को

लोरिक ने मार डाला है तथा सारा धन लूट लिया है । मुझे पूजा देने के लिए कहा था वह भी नहीं दिया । मुझे क्रोध है । मैं लोरिक का संग छोड़ता हूँ और तुम्हारा संग पकड़ती हूँ । लोरिक का हल्दी से पकड़ लाओ और कैद में डाल दो । सात दिन तक बनखान में रखो एवं आठवें दिन मगर का बलिदान चढ़ा दो । राजा करनी घबरा गया और कहने लगा—तू ने लोरिक की इतनी पूजा ली है अगर तू उसकी न हो सकी तो मेरी कैसे होगी । जिस दिन वह गायों में पूजा दे देगा । तुम फिर उसके साथ हो जाओगी और मेरा मस्तक कटवा दोगी । दुर्गा दो सिपाहियों को लेकर हल्दी लोरिक को पकड़ने चली गयीं । उन्होंने मुर्ग का वेश बनाया । कूँ कूँ की आवाज लगायी । लोरिक ने समझा सुबह हो गयी । हाथ में लोटा तथा बगल में धोती दबा कर नहाने चला । जब वह कटि भर पानी में स्नान कर रहा था दुर्गा ने उसकी आँख में मोतिया बिन्दु की बीमारी डाल दी । वह अन्धा हो गया और कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था । दोनों सिपाहियों ने उसका हाथ पकड़ लिया और सिरसापुर में दुर्गा के कहने से लोरिक को बनखान में डाल दिया गया । दुर्गा क्रोध में लोरिक के पास पहुँच गयीं और उसको दबा कर मुसक चढ़ा दिया लोर गड्ढे में ढकेल दिया । राजा करनी सिरसापुर में अत्यन्त प्रसन्न हो उठा । इस प्रकार लोरिक को सात दिन व्यतीत हो गये और वह रो पड़ा । हाय, इस किले में मेरा जीवन नष्ट हो गया । बनसत्ती ने यह बात सुनी और तब गायों के अड़ार से सिरसापुर आयो । दुर्गा को फिर समझाया कि तुमने लोरिक की पूजा खायी है । उसने अपनी जांघ चीर कर तुम्हें रक्त पिलाया है । तू ने वचन दिया है जहाँ लोरिक का पसीना गिरेगा वहाँ तुम रुधिर गिराओगी । इतना वरदान देने के बाद फिर सिरसापुर में तू क्यों उसकी जान मरवा रही हो ? (११२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सनेस = संदेश । टटके = ताजा, अभी-अभी । जियरे = हृदय । गयल टिर्राय = क्रुद्ध हो उठा । धन = प्रिय । भेख = वेश । धइके = पकड़ कर, बना कर । खराऊँ = खड़ाऊँ । ना के = डाल कर । कुल्ला फराकत = नित्य-क्रिया, शौचादि । मयदान = मैदान, शौचादि । करिहाँव = कटि तक । हलोरा = हिलकोरा, डूबकी । मोतिया बिन = एक बीमारी जिससे आँख की रोशनी चली जाती है । उवारे पार = इधर-उधर, आर-पार । टूवें = छू रहे हैं । मुरमुर = मू मू कर । हेरायल = खो गया है । उदै = उदय । बिगरि गयल = बिगड़ गया । उपरल = उभर गया, प्रकट हो गया । कलपनवाँ = तड़प, रोना-कलपना । परल कलपना = उसकी तड़प मुझे लग गयी है । गटवा = गटा, कलाई । ओलिहयाले = प्रवेश करता है । भुनुस = क्रोध । पजरवा = पास । गड़बड़ा = गड्ढा । नीबियें को डारी = नीम की डाली पर । मगन = प्रसन्न, मग्न । झलुववा = झूला । उखमुब = उत्पात । अकसारी = अकेला । कनवा से = कान से । कोपितना = कुपित । अधं = अबाध, अधा कर ।

भावार्थ—दुर्गा ने बनसत्ती से कहा जो तुम कहो वही करूँ । बनसत्ती ने कहा—शीघ्र लोरिक को छुड़ाओ । दुर्गा हल्दी गयीं और चनवा उनके पैर पर गिर

पड़ी। माता तुम्हारा पता नहीं चलता है और न स्वामी का ही पता चलता है। दस दिन व्यतीत हो गये हैं। तब दुर्गा ने उत्तर दिया—तुमने नैहर में आग लगायी, ससुराल में आग लगायी। तुम दोनों घर फूँक कर बुर्ज पर बैठी हो तथा एकछत्र राज्य कर रही हो। तुम्हारे स्वामी किले में कैद हैं ? वह बनखान में मर जायगा। तुम रांड़ हो जाओगी। तुम्हें तेली नहीं मिला। तमोली, भड़भुजा या कलवार नहीं मिला। तुमने अहीर को चुना और हल्दी आ गयी। हँस कर चनवा ने कहा —हल्दी में तेली को रख लूँगी, भड़भुजा के साथ चली जाऊँगी। स्वामी की बँधी हुई पगड़ी डूबा दूँगी तथा तुम्हारी शक्ति भी डूबा दूँगी। यही तो हमारा काम है। यह सुनकर दुर्गा घबरा उठीं चनवा घोड़े पर सवार होकर सिरसापुर चलने को तैयार हुई। पर घोड़े ने कहा—मेरी पीठ पुरुषों के लिए है अगर तुम मेरी पीठ पर चढ़ोगी तो बड़ा अधर्म हो जायगा। (११३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—लुकिया = लूक, आग। एकवटे = एकछत्र, अकेला। रांड़ = विधवा। बान्हल पगरी = बँधी हुई पगड़ी। बोरि देब = डूबा दूँगी, सैंया की प्रतिष्ठा नष्ट कर दूँगी। तबेले में = घुड़साल में। मेहरारू = स्त्री। करनवा = कारण से। कादर = कायर।

भावार्थ - मंगर घोड़े पर चढ़ कर तथा लगाम पकड़ कर चनवा हल्दी से चलने लगी। उसे जिसने भी देखा उसे हैरानी हुई। चनवा गले में निरखी एवं पैर में दोहरी पहन कर तथा तमांचा धारण कर तैयार थी। उसने जूते पहन लिये थे तथा ओड़न और बिजली का खडग ग्रहण कर घोड़े पर सवार थी। वह सिरसापुर पहुँची। घोड़े की ठनकार लोरिक के कानों तक पहुँच गयी। बावन सूबे जो राजा करनी के फाटक पर एकत्र हुए थे, ध्यान से देख रहे थे। लोरिक के घोड़े की ही भाँति घोड़ा दिखाई पड़ रहा था। सब सोचने लगे अब सिरसापुर में हमारी मृत्यु निकट आ गयी है। (११४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—उलटा पछाड़ा खाय = सब लोग परेशानी में अभचूभ हो रहे थे। बरवलू = चुना। तेली करब तमोली भूजा कै लेबे कलवार = तेली, तमोली और भड़भूजा को अपना लूँगी। रंचक = जरा भी, थोड़ा भी। गम = दुख। कादर = कायर। भूरे बादल खहराय = सूखे बादल गड़गड़ाने लगे। ठनकल = ठनकने लगा। नवले हउवे = डाल दिया है। मनुसवा = मनुष्य, व्यक्ति।

भावार्थ—बावन सूबे घबरा कर चनवा के पास गये और पूछा—तुम्हारा वतन कहाँ है ? तुम्हारे माता पिता कौन हैं ? तुम्हें कहाँ जाना है ? चनवा ने बताया—कुसुमापुर वतन है। महदेव पिता हैं तथा सिल्हिया मेरी माँ है। मेरा नाम सहदेव है। मेरी एक बहन है, उसका नाम चनवा है। गउरा का अहीर लोरिक उसे अपहृत कर हल्दी आया था। राजा करनी ने कुसुमापुर में यह पत्र भेजा है कि जिसने मेरी बहन का अपहरण किया है, वह कैद है। मैं उसे देखने आया हूँ। सारे सूबे भयभीत हो गये। हम लोगों का शत्रु आ पहुँचा है। एक सूबा चनवा को तम्बू में ले गया तथा

कुर्सी देकर उसे बिठाया। घोड़ा मंगर को बंधवा दिया गया। प्रातःकाल लोरिक बन-खान से निकाला गया। नाऊ बुलवा कर उसकी हजामत बनवायी गयी तथा हार पहना कर उसे फाटक पर लाया गया। चनवा उसे देख कर आंसू गिराने लगी। जो मेरे पति फूल की भांति हल्दी में खिले हुए थे वे फूल ही की भांति मुर्झा गये हैं। तब बावन सूबों ने पूछा—आज तुम इस फाटक पर क्यों रो रहे हो। हमें बड़ी शंका हो रही है। (११५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—सुगवा = तोता। कोइलर = कोयल। ओतन = वतन। बुन = बूंद, वीर्य। ओहार = अपहरण। बार = बाल। फूलवन की नइयाँ = फूलों की भांति। बाड़ें कुम्हिलाय = कुम्हला गये हैं।

भावार्थ—चनवा ने कहा ऐ जवानों, इसने मेरी बहन का उद्धार किया है। मेरा हृदय खोल रहा है। मैं इसको मारे बगैर नहीं छोड़ूँगा। इधर राजा करनी ने सिरसापुर में दुर्गा की पूजा के लिए चबूतरा बनवाया। कुंआ खुदवाया। अर्घा बनवाया तथा उसमें बहंगी से घी डाला। लोरिक की कलाई पकड़कर राजा करनी अपने हाथ में तलवार लेकर उसे चबूतरे के चारों ओर घुमाने लगा। चार फेरे घुमाने के बाद राजा करनी ने लोरिक से कहा जो मांगना हो मांग लो। जिस देवता को पुकारना हो पुकार लो हम तुम्हारा बलिदान करेंगे। लोरिक ने रो-रोकर पुकारा—मेरी माँ का सत कहाँ चला गया? धरमी माई का सत कहाँ गया। मेरी विवाहिता का सत कहाँ चला गया? आज सिरसापुर में मेरी जान जा रही है। माँ बनसत्ती कहाँ गयीं जो बायें रहती थीं। माँ दुर्गा कहाँ गयीं जो दाहिने रहती थीं। पुकार सुनकर दुर्गा प्रसन्न हुईं। चनवा घोड़े से उतर गयी। राजा करनी के हाथ की तलवार खींच ली। फिर लोरिक की कलाई—पकड़कर उसे अपने पास लायी। करनी से कहा—लाओ, मैं बलिदान चढ़ाता हूँ। उसने लोरिक को पांच बार घुमाया। इस बीच दुर्गा ने सारी पलटन को अंधाकर दिया। चन्दा ने अपने सारे अस्त्र-शस्त्र लोरिक को दे दिये। फिर चन्दा मंगर घोड़े के पास गयी कि जल्दी मुझे हल्दी ले चलो। मंगर ने कहा—तुमने पुरुष का रूप धारण कर लिया था। इस बार तुम स्त्री दिखाई पड़ रही हो। मैं तुम्हें अपनी पीठ पर नहीं बैठाऊँगा। चनवा ने समझाया कि यदि ऐसा नहीं करोगे तो किले में मेरी इज्जत लुट जायगी। हल्दी में मेरे मुँह में कालिख पुत जायगी। (११६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मेवाफरन के बगवान = फलों के बगीचे में। पदन में = पद में। चउरिया = चबूतरा। देलें रे खनवाय = खुदवा दिया। अरघा = अर्घा। बहंगी = कांवर। तरवरिया = तलवार। आंगे = किनारे। फेरा = चक्कर। तउवा = तवा। लोहवा = लोहा, युद्ध। गोसयां = गोस्वामी, मालिक। पोति जाइ करिखवा = कालिख पुत जायगी, इज्जत नष्ट हो जायगी।

भावार्थ—चनवा घोड़े पर एक ओर पैर रखकर बैठ गयी। घोड़ा लोगों की खोपड़ियाँ तोड़ते हुये उड़ गया। लोरिक ने ओड़न की मुट्ठी दबायी जिससे चारों ओर

प्रकाश फैल गया । सर्वत्र आग के अंगारे बरसने लगे । मुन्डों की माला तैयार होने लगी तथा लाशों का खलियान तैयार हो गया । वनसत्ती लोरिक के बायें तथा दुर्गा उसके दाहिने सहायता कर रही थीं । जब लोरिक राजा करनी को मारने दौड़ा, दुर्गा सामने आ गयीं और लोरिक से कहने लगीं —करनी का कोई दोष नहीं है । तुमने हल्दी में बड़ा पाप किया है । चनवा के सामने शेखी मारी और कहा बायें वनसत्ती तथा दाहिने दुर्गा क्या करेंगी ? मैंने अपनी शक्ति से नेउरापुर जीता है । इस कारण मुझे क्रोध हुआ । लोरिक ने अपनी गलती स्वीकार की । फिर वह घोड़े पर चढ़ गया और हल्दी पहुँचा । चन्दा ने गद्दा बिछाया । पैर धोया और पूछा इस बार सिरसापुर से कैसे आये ? लोरिक ने बताया कि माता का सत, भउजा का सत, तथा भइया का सत सहायक हुआ । बायें वनसत्ती और दाहिने दुर्गा सहायता कर रही थीं । शत्रु को मैंने इस प्रकार जीता । पांचू भगत कह रहे हैं कि (दुर्गा की) बात नहीं मानोगे तो, ऐ लोरिक, तुम्हारी जान नहीं बचेगी । (११८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी— गोल = पलटन । दोस = दोष । सोखिया हंकल = डिंग मारी, शेखी मारी । कोपि गयल = क्रुद्ध हुआ । मोटका = मोटा । गदवा = गद्दा । बगलिया में = बगल में । पांचू भगत = गायक ने अपना नाम स्मरण किया है ।

भावार्थ—यहाँ गउरा में मंजरी रो रही है । ससुर मलसांवर बोहा में मारे गये तथा सारी गायें अपहृत कर लो गयीं, सारा धन लूट लिया गया । उसके पति हल्दी में जाकर टिके हुये हैं । संवरू ने बोहे में तालाब खुदवाया था और चुन-चुनकर उसमें सात घाट बँधवाये थे । पूर्णिमा का दिन आया तो बारह सौ गोपियाँ वहाँ स्नान के लिये चलीं । मंजरी ने ऐसी फटी साड़ी पहन रखी है जिसमें सात पैबंद हैं । उसी तरह की साड़ी उसकी कांख में है । वह घाट पर आ गयी, स्नान किया और पीताम्बर अपने शरीर पर धारण किया और रोते-रोते गायों के अड़ार पर गयी । वह अपने भाग्य को कोसते हुये तट पर जा रही थी कि जग्गू बनजारा दिखाई पड़ा । उसके कानों में मंजरी का करुण क्रंदन पड़ा । वह अपने बैलों को छोड़कर घाट पर आ गया । मंजरी की करुण दशा देखकर वह छाती पीटने लगा । बहन तुम्हारे जन्म के समय सवाघरी सोना चांदी बरसा था सो तुम्हारे ऊपर कैसी विपत्ति आ गयी है ? यदि अन्न और धन की कमी हो गयी हो तो मैं गाड़ी पर लदवाकर भेज दूँ । किस कारण यह चिथड़ा पहन रही हो । मंजरी पैर पर गिर पड़ी और अपनी सारी दुखद गाथा सुनायी । मेरे ससुर बोहा में मारे गये । स्वामी जाकर हल्दी में टिक गये । सारा कुटुम्ब और परिवार शत्रु हो गया है । मेरा नौलखा हार तथा घर का घी, गुड़, अन्न सब लुट चुका है । मेरे नान्हू भइया जो अगोरी से आये थे, पीपरी में भाड़ झोंक रहे हैं । ऐ भइया, गउरा में कोई नहीं है जो मेरी विपत्ति काट सके । ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिससे मैं सन्देश भेजूँ । जग्गू ने कहा —जितना कहो मैं धन गजवां दूं । कल प्रातःकाल हल्दी में तुम्हारा संदेश पहुँच जायगा । (११९)

की दूकान लीपपोत रही है। इस पर भी तुम यहाँ टिके हुये हो। मञ्जरी की इज्जत गउरा में लुटी जा रही है। तुम्हारे धन लुट जाने तथा भाई के मर जाने की चिन्ता मुझे कम है पर तुम्हारा धर्म लुट रहा है, इसकी चिन्ता अवश्य है। तुम यहाँ राजा बनकर बैठे हुये हो। लोरिक यह सुनकर रो पड़ा और उसने जग्गू का गला पकड़ लिया तुमने ऐसी विपत्ति सुनाई है। मैं गले में घड़ा बाँधकर कुएँ में डूब जाता हूँ। (१२१)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—पाहुन = दामाद, बहनोई, अतिथि। समानता न होते हुए भी पाहुन कहने का रिवाज पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाँवों में है। ए वखत = इस वक्त। इस समय। सरवा = साला। बोरवा = बोरा। सोझे = सीधे। कोठिले = कोठरी, कमरा। लुकरेवावें = छिपा दिया। लमहरे = दूर। बज्जर = वज्र। मंडुवा = मंडप में। पेउना = पैबंद। गम = दुख। गरवा = गला। गगरी = घड़ा। गोलिया = गोली। गरे में = गले में।

अध्याय ५

लोरिक की गउरा वापसी

भावार्थ—जग्गू से बातचीत के बाद लोरिक ने गउरा की तैयारी की। जग्गू ने कह दिया जल्दी आओ। तुम्हारी पत्नी ने तीन-तीन पति कर रखे हैं। तुम्हारी पगड़ी डूब गयी और तुम्हारा पौरुष डूब गया। यह सुनकर लोरिक घबराया हुआ चनवा के पास गया। उसको डाँटते हुए कहा—तुमने नैहर और ससुराल दोनों जगह आग लगा दी। तुमने मांगी को सन्देश भी नहीं कहने दिया। उसने चनवा को आज्ञा दी, हल्दी से अन्न, धन, तम्बाकू, कनात, हाथी घोड़ा, पलटन, सिपाही लेकर गउरा आओ। तब तक मैं अकेले जा रहा हूँ। लोरिक ने मंगर घोड़े की पीठ पर जीन और पाखर लाद कर, उसके मुँह में सोने की लगाम लगाकर तथा उसके पैर में घुंघरू और गर्दन में साठ मोहरें डाल कर उस पर बैठ गया। घोड़ा आकाश में मंडराने लगा। इधर चनवा मागती हुई जपुनी के द्वार पर पहुँची। (१२२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी मतार = मर्तार, पति। पगरी = पगड़ी। चुकरवा मरले हउवे = किसी ने अपमान किया है। आँखे हउवे दे (रवाय) = किसी ने तुम्हें आँख दिखाई है। करजहरू = कर्ज देने वाला। तगदवा = तकाजा। लुकिया = लूक, आग। छनवां में = क्षण में। सनमुखवा = सम्मुख। सोरिया = जड़।

मञ्जरी तुम्हारा भाग्य खुल गया है। इधर लोरिक गायों के अड़ार में पूजा की तैयारी करने लगे। उसके लिए सगड़ से पानी लाने गये ताकि चउरी को लीप-पोतकर साफ करें। जब वह पानी के लिये मलसांवर के सगड़ पर गये तो वहाँ झीमल मल्लाह मछली मार रहा था। झीमल से लोरिक ने पूछा यह पोखरा किसने खुदवाया है। तथा इसका घाट किसने बंधवाया है। किसकी जांघ की शक्ति से मछली मार रहे हो। मल्लाह ने उत्तर दिया। महादेव ने पोखरा खुदवाया। सहदेव ने घाट बँधवाया। सिल्हिया की शक्ति के जोर पर मैं यहाँ मछली मार रहा हूँ। तब लोरिक ने उसकी कलाई पकड़ ली और केहुनी से ऐसा मारा कि वह भहराकर गिर पड़ा। तब वह कहने लगा मलसांवर ने पोखरा खुदवाया। सतिया ने घाट बंधवाया तथा लोरिक के बलबूते पर मैं मछली मार रहा हूँ। लोरिक फूल लेने के लिए मालिन के पास गये। मालिन ने उन्हें नहीं पहचाना। वह मलसांवर के मरने के बाद अंधी हो गयी थी। उसने लोरिक को बताया कि मल-सांवर मारे गये। गायें पीपरी चली गयीं। एक उनका भाई था वह दुष्ट हल्दी चला गया। लोरिक ने अपना परिचय दिया, तब वह रो-रोकर कहने लगी—तुम्हारा जन्म व्यर्थ गया। तुम व्यर्थ यहाँ मुँह दिखा रहे हो। संवरू मारे गये। तुम्हारी सारी गायें पीपरी में हर ली गयी हैं। तुम्हारे साले पीपरी में भाड़ झोंक रहे हैं। तुम्हारी माँ के पैर में रस्सी बाँध दी गयी थी तथा लड़के उनको घसीट रहे थे। अगर तुम सारी गायों को लौटा लो तो समझ लूँ कि संवरू गायों के अड़ार पर जीवित हैं। यदि ऐसा न कर सको तो दही के घड़े की भाँति कुएँ में जाकर गिर पड़ो। (१४४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—काल्ह = कल। असगुन = अपशकुन। सरप = सर्प। खिड़रिच = एक पक्षी, खंजन। पाग = पगड़ी। चिक्कन = चिकना। हींड़ि हींड़ि = पानी को हिड़कर, हलकार कर। बरियई = जोर से। माछ = मछली। खनउलस = खुदवाया। पोखरा = तालाब। डेवढ़िया = डेवढ़ी। लवड़ा कपूत = एक गाली है। यह गाली अभी भी पूर्वी उत्तर प्रदेश में दी जाता है। ना जनी = न जाने। कादों = या। सनमुखवा = सामने। नाहक = व्यर्थ। भरसाय = भाड़। खोरियै के खोरियै = गली-गली। गगरी = घड़ा।

भावार्थ—लोरिक ने कहा—माता मुझे फूल दे दो कि मैं गायों के अड़ार में पूजा करूँ। बुढ़िया ने कहा मलसांवर के मरने के बाद से—चंपा, बेला, गुलाब, तथा अन्य सभी फूल सूख गये। देवहा के किनारे जो कनेर के फूल हैं उन्हें लाओ और पूजा कर लो। लोरिक जाकर फूल ले आये तथा चार हार बना कर उनमें से एक पूजा के लिए रख लिया तथा शेष तीन बुढ़िया को देकर उसे गउरा भेजा। उसने कहा एक हार मेरे साथी अजई को देना। दूसरा मेरे घर में देना तथा तीसरा कुसुमापुर देना जहाँ मेरी नयी ससुराल है। लोरिक ने यह भी समझा दिया कि मेरे बारे में कहीं चर्चा न करना और जो भी विदाई मिले उसे लेकर मेरे पास आना। मालिन ने सिर पर टोपा रखा तथा कनउज बाजार चली। धोबी के द्वार पर पहुँची तो विजवा ने कहा-

कि आज तो बड़ा अच्छा हार लायी हो। एक अच्छा हार बनाने वाला गायों के अढ़ार में मर गया। दूसरा हल्दी के बाजार में मर गया। बुढ़िया मालिन ने कहा—मैंने बहन के बेटे को गोद में लिया है। उसका गौना करवाना है। मेरी पतोहू ने इसे बनाया है। उसके लिए कुछ भेंट दो। धोबी के यहां विदायी में कोदो मिला। बुढ़िया ने एक हार ले जाकर लोरिक की बुढ़िया मां के गले में डाला। मंजरी इसी बीच बाहर आ गयी। गले में हार देखकर वह रो पड़ी। उसने अपने हाथ के सोने के जोसन को बुढ़िया के टोपे में रख दिया और कहा—मुझसे कुछ विदाई देते नहीं बन रहा है। तुम बड़े घर की विदायी की गउरा में निंदा मत कराना। (१२५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी चंपा = चंपा का फूल। बेइल = बेला। देवहा = एक नदी का नाम। पूर्वी उत्तर प्रदेश में बही सरयू को घाघरा या देवहा कहते हैं। कनइल = कनेर। मलिनियां = मालिन। नाँव चरचा = नाम-चर्चा। हाली-हाली = जल्दी-जल्दी। नीकनी काम = सामान्यतः अच्छा। गछरइया = गूँथने वाला। मूवें लें = मर गये। पतोहिया = पतोहू, पुत्र वधू। कोदो = बाजरे की जाति का एक अनाज, यह अनाज बहुत घटिया समझा जाता है। गहकिया = ग्राहक। हरवा = हार। मतवा = मां। गछलस = गूंथा। गोदइ = गोद में। गांछत = गूंथ रही है। विदइया = विदाई। अरगनी—कपड़े रखने की खूंटी, या रस्सी। पीतामंर = पीताम्बर। जोसनवा = बांह में पहना जाने वाला एक गहना। अइया = दादी।

भावार्थ—मंजरी ने जो विदायी दी थी उसको अपने टोपे में रखकर बुढ़िया कुसुमापुर गयी। वहां सहदेव महदेव के द्वार पर जाकर उसने चनवा की मां को हार पहनाया। चनवा की माँ सिल्हिया ने कहा, उसको सेर भर सवां विदायी में दो। विदायी लेकर बुढ़िया ने बोहा का रास्ता लिया। रास्ते में वह सिल्हिया को गाली देती जा रही थी। लोरिक ने बुढ़िया से पूछा—क्या-क्या विदायी मिली है? बुढ़िया ने बताया तुम्हारे दोस्त अजयी ने सवा सेर कोदो दिया है। तुम्हारी बियाहिता ने एक पीताम्बर तथा सोने का जोसन दिया है। सब गउरा में नामी है पर—तुम्हारी स्थिति बिगड़ जाने पर भी तुम्हारे घर की मर्यादा है। चनवा की मां सिल्हिया ने सवा सेर सांवा दिया है। बुढ़िया ने गउरा की प्रशंसा की। फिर लोरिक ने एक उपाय रचा। उसने एक पत्र लिखकर गउरा भेजा कि बोहा में एक-एक कहतरी दही के लिए दुगुना दाम दिया जायगा। बुढ़िया पत्र लेकर गयी और उसने घर-घर में यह खबर प्रचारित कर दी। बुढ़िया को लोरिक ने यह समझा दिया था कि वह उसका नाम किसी को न बतावे। लोरिक के द्वार पर जाकर उसकी बूढ़ी मां को भी उसने जाकर खबर सुनायी। मंजरी ने दही लेकर जाने की इच्छा प्रकट की। बुढ़िया मां इस पर बहुत नाराज हुई। उसने कहा—ऐ मांजरि, गउरा में हमारे घर पर बुरे दिन आ गये हैं—कुटुम्ब तथा परिवार सभी दुश्मन हो गये हैं। कोई शत्रु बोहा में टिका होगा तो वह तुम्हारा धर्म लूट लेगा, पर मंजरी जाने को तैयार हो गयी। उसने दही बनायी तथा

प्रातःकाल सोरह सौ गोपियों के साथ दही लेकर बोहा चली। बेवरा नदी पर गोपियों ने भीमल को बुलाया। भीमल ने कहा अगर तुममें से एक भाड़े की ऐवज में रह जाय तब मैं सबको गायों के अड़ार में उतार दूँगा। गोपियों ने आपस में परामर्श कर मंजरी को उसे सौंप देने का निश्चय किया। भीमल ने नाव किनारे लगा दी। गोपियाँ आज मंजरी से बड़े प्रेम से बोल रही हैं। मंजरी को इस पर प्रसन्नता भी हुई। मंजरी चार गोपियों की आड़ में छिप गयी कि गउरा में हमारे बुरे दिन आ गये हैं, कहीं भीमल मेरी कलाई न पकड़ ले। भीमल दो-तीन बार इधर-उधर जाकर गोपियों को चुनने लगा पर कोई उसके हृदय में नहीं बैठ रही थी। तीसरी बार—उसको मंजरी पसन्द आयी। वह चार गोपियों के पीछे खड़ी थी। जब उसने मंजरी का हाथ देखा तब दौड़कर उसको पकड़ने चला। मंजरी अपनी टोकरी के साथ पीछे हटने लगी। भीमली उसका पीछा करने लगा। तब मंजरी ने धरती पर टोकरी रख दी और भीमली की गर्दन पर अपनी बाहों से दे मारा। भीमली धरती पर महराकर गिर पड़ा। फिर उस पर ऐसा पदाघात किया कि उसकी बगल की हड्डी टूट गयी। वह फिर टोकरी लेकर किनारे पर खड़ी हो गयी। आंचल खोलकर वह अपने सत का स्मरण करने लगी। अगर मेरे शरीर में सत शेष रह गया हो तो इस देवहा नदी का पानी सूख जाय। उसने खींच कर अपने सत को मारा और देवहा का पानी सूख गया। सारी गोपियाँ सूखी हुई नदी पार कर गयी। पीछे से मंजरी भी चली। तब भीमली ने मंजरी के पास जाकर दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की। देवहा में पानी कर दो, नहीं तो बोहे में मेरे बाल-बच्चे मर जायेंगे। (१२६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कपरवे पर = सिर पर। पयंड़ा = रास्ता। डगरिया = डगर, मार्ग। मचिया = बैठने का मोढ़ा। गछवइया = गूँथने वाला। हुकुमई = हुक्म। टोप = बड़ी टोपी। गारी = गाली। जोसनवा = बाहों में पहना जाने वाला एक सोना या चांदी का गहना। गोद घली ला बइठाय = उसको गोद में बैठा लिया है। हरवा = हार, माला। बड़के = बड़ा। सउवां = सवां, एक प्रकार का अन्न। सावां कोदो एक ही जाति के अन्न हैं। नडकी = नयी। नीक = अच्छा। पतियाय = विश्वास कर। कहंतरी = दही जमाने का मिट्टी का वर्तन। अथरी = कहंतरी। पूरू बहा = पूर्व का। सनेह = संदेश। चरचा = चर्चा। बिहने = प्रातःकाल। बिगरल = बिगड़ गया। अइया = दादी। भीमल = मल्लाह का नाम। बेवरा नदी = इसके पूर्व इस नदी को देवहा कहा गया है। सुति-सुति = सो सोकर। डोंगा = नाव। हुंकारी ना भरी = स्वीकृति नहीं दे रहा था। सउंजवा = सलाह। खलिहर = खाली। सैनवां = संकेत। लेबा बराय = चुनकर ले लो। करारे में = किनारे। लुकायल = छिपी हुई है। परायल = भागते हुए। लुलुवया = हाथ का अंगूठा। कपार = सिर। कररवा = किनारा। सरिरिया = शरीर। झूरयै = सूखा। दसो नहयां जोरि = दोनों हाथ जोड़कर।

भावार्थ—तब मंजरी ने भीमल से कहा—तुमने अच्छा काम नहीं किया।

तुमने बोहे में मेरी कलाई पकड़ी। जब मेरे स्वामी हल्दी से लौटकर आयेंगे तो मैं तुम्हारी जान मरवा दूँगी। जब मंजरी ने इतनी बात कही—भीमल ने हाथ जोड़ लिया। रोते हुए कहा—दिवहा में पानी कर दो, नहीं तो मेरे बाल-बच्चे मर जायंगे। मंजरी ने अपने सत का सुमिरन किया। फिर दिवहा का पानी जैसे था वैसा ही हो गया। वह अपनी टोकरी लेकर बोहा गयी। बारह सौ गोपियाँ बोहा में दही बेच रही हैं। मंजरी भी धेले पैसे की दही बेचने चली। इधर चनवा चनराजीत को तेल लगा रही थी। उसने सेविका से कहा मंजरी की कलाई पकड़ कर लाओ। सेविका ने जाकर उसकी कलाई पकड़ ली और सभी वहाँ से भाग खड़ी हुईं। सबने जाकर खोइलनि से कहा कि हमने तो बाहर से दही दिया पर मंजरी वहाँ पकड़ ली गयी है। अब तुम्हारा धर्म नहीं बचा है। इधर मंजरी तम्बू में खड़ी है जहाँ लोरिक का ओढ़न और उसका खड्ग टंगा हुआ है। चनवा बड़ा सा घूँघट निकालकर चनराजीत को तेल लगा रही है। मंजरी ने उससे पूछा कि यह किसका ओढ़न और खड्ग है ? जल्दी बताओ मुझे चिन्ता हो रही है। चनवा ने कहा—यहीं कहीं गढ़ गउरा है। वहाँ से चनवा का अपहरण करके एक पुरुष भाग गया था। मेरे पति ने उसे मार डाला और उसका ओढ़न तथा खड्ग छीन लिया। इसी बीच चनराजीत रो पड़ा। चनवा का घूँघट अकस्मात खुल गया। मंजरी की उस पर दृष्टि पड़ गयी। उसने चनवा का केश पकड़ लिया और उसको केहुनी से मारना शुरू किया। चनराजीत दौड़ते हुए लोरिक के पास गया। लोरिक ने कहा जाकर उसे समझा दो वह तुम्हारी बात मान जायगी। चनराजीत वहाँ आया और दोनों हाथ जोड़कर उसने कहा—माँ, तुम मेरी बात मानो। हल्दी की कमाई में तुम्हारे सामने आया हूँ जितनी विपत्ति गउरा में आयी है मैं सब काट दूँगा। जितना धन लूटा गया है उसका दुगुना करवा दूँगा। जितनी गायें हरी गयी हैं उसकी दुगुनी गायें करवा दूँगा। ऐ माँ गउरा में तुम्हारा विवाह लिखा था तथा कुसुमापुर में उद्धार लिखा था। इसी प्रकार नेउरापुर में युद्ध लिखा था। पिता जी ने बारह सौ गोपियों को मुक्त करवा दिया है। (१२७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कलइया = कलाई। पातर = पतला। दिन पातर = पतला दिन, खराब दिन। कसूर = कुसूर, अपराध। दउरी = टोकरी। मींजत हउयें = मालिश कर रही है। गट्टा = कलाई। बिरा = बालिश्त। केकर = किसका। कतों = कहीं =। ओढ़निया = ओढ़न, ढाल। सती होय बदे = सती होने के लिए। दउरत = दौड़ते हुए। कमइया = कमाई। बिपत = विपत्ति। लोहवा = लोहा, युद्ध।

भावार्थ—मंजरी चनवा को छोड़कर दूर हट गयी और चनराजीत की बात सुनने लगी। वह बुद्धि में प्रखर थी। इधर चनवा ने मंजरी की टोकरी में सोना, चांदी, रखकर सांवा कोदों से उसे ढंक दिया। जब मंजरी टोकरी लेकर दरवाजे पर पहुँची तो बुढ़िया खोइलनि बहुत क्रुद्ध हुई। जब उसने देखा कि मंजरी के दूध के बर्तन में सोना चांदी है तो वह चिंतित हो उठी। और सभी गोपियों को तो अधेला पैसा मिला,

मंजरी को सोना-चांदी क्यों मिला ? बुढ़िया ने ओखल से मूसल उठाकर मंजरी को मारना शुरू किया । तुमने गउरा में धर्म लुटा दिया । हमारी इज्जत चली गयी । फिर अनूपी ने भी उसे बट्ठये तथा मुँगदर से मारा । उसने कहा—मंजरी के सत की परीक्षा ली जाय । कढाहा मंगवाकर उसमें तेल भरवाया गया तथा उसके नीचे लकड़ी जला दी गयी । मंजरी ने अपने सत का स्मरण किया । जलता हुआ तेल ठंडा हो गया । इस पर भी अनूपी को विश्वास नहीं हुआ । उसने कहा—चलकर बोहा में मुझे गायों का अड़ार दिखाओ । मंजरी तथा अनूपी दोनों साथ-साथ चलीं । देवहा नदी के किनारे मंजरी ने अनूपी से कहा—सत का पुल बनाओ तब समझूँगी कि तुम्हारा धर्म बचा है । मंजरी ने अपना सत सुमिरन किया पुल तैयार हो गया । अनूपी को लेकर मंजरी पुल पार कर गयी । अनूपी ने डोमिन का रूप धारण किया, हाथ में झाड़ू धारण किया और देवहा के तट पर नाचने लगी । सबके सामने नाचती हुई वह चनवा के तम्बू के पास पहुँची । मंजरी पीछे रह गयी । अनूपी का नाच देखकर चनवा हँसने लगी । वह लोरिक के तम्बू में गयी तथा उससे डोमिन का नाच देखने के लिए कहा । लोरिक ने उससे कह दिया जाकर तुम स्वयं नाच देखो । चनवा लौटने लगी तो उसकी आँख अनूपी से मिल गयी । वह ऐसा नाच-नाच रही थी कि नीचे धरती मुग्ध थी तथा ऊपर ब्रह्मा का कैलाश मुग्ध हो रहा था । उसका नाच देखकर गउरा का अहीर भी मुग्ध हो उठा । (१२८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—हँसियार = होशियार; चतुर । दउरी = टोकरी । दूह हंड = दूध की हांडी । उभिलै = उलट दिया । ओखरी = ऊखल । मूसर = मूसल । मुंगरवन = मूंगर । चइला = लकड़ी । करहा = कड़ाह । बढ़नी = झाड़ू । सोझे = सीधे । नचिया = नाच । उपरां = ऊपर । कयरे लं = कैलाश ।

भावार्थ—अनूपी की नजर लोरिक पर पड़ गयी । उसने ऐसा नाच दिखाया कि लोरिक अपने तम्बू से भाग खड़े हुए । चनवा अपने फाटक पर बैठकर हँस रही थी । अनूपी ने हाथ की टोकरी दरवाजे पर फेंक दी, फिर झाड़ू फेंक दिया और तम्बू में नाचने लगी । नाचते-नाचते अनूपी ने चनवा का झोंटा पकड़ लिया । मंजरी उसे लतियाने लगी । चनराजीत दौड़कर लोरिक के पास गया कि दो बुढ़िया औरतें मेरी मां को मार रही हैं । लोरिक ने चनराजीत से कहा कि वह जाकर उन्हें समझा दे । चनराजीत ने फिर जाकर मंजरी को समझाया कि मैं तुम्हारी विपत्ति हर लूंगा । अनूपी और मंजरी दोनों रोने लगीं । लोरिक भी तम्बू में रोने लगा । मंजरी ने लोरिक से कहा—तुमने व्यर्थ गौना कराया । स्वयं हल्दी चले गये और मुझे भारी विपत्ति दी । लोरिक तथा मंजरी दोनों भरपूर रोये । इस प्रकार मंजरी को बोहा में दो चार घंटे बीत गये । गुंडों और शोहदों ने बुढ़िया खोइलनि से कह दिया—तुम्हारी दोनों बहुओं को गुंडों ने हर लिया । बुढ़िया अजयो धोबी के द्वार पर गयी । वियजा द्वार पर मिली । बुढ़िया ने उससे कहा—बोहा में मेरी बहुएँ लुट गयी हैं, उन्हें छुड़ा दो । धोबी पहले तो

तैयार नहीं हुआ पर बिजवा के कहने पर कि तुम साड़ी पहनकर बैठो, मैं दोनों बहुओं का धर्म बचाने जाऊँगी, अजयी जाने को तैयार हो गया । गले में निरखी, सिर पर पगड़ी, तथा मुँगदर आदि सबसे सुसज्जित होकर वह सगड़ पर पहुँच गया । वहाँ तालाब में कूद गया और उसे पार करके घोड़ा संवरू के पास आया । घोड़े को ऐसा मुंगदर मारा कि वह भाग खड़ा हुआ । वह लोरिक के पास आकर कहने लगा—मेरे ऊपर ऐसी मार पड़ी है कि मेरे बगल की हड्डी टूट गयी है । (१२९)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बढ़नी = झाड़ू । गगरिया = घड़ा । झोंटवा = झोंटा, बाल । लतवन = लात से । गिदरवा = बच्चा । गवनवा = गौना । ठउरी = जगह । सनेस = संदेश । अवनवा = आगमन । बिका गइलैं = बिक गये । दवर के = दौड़कर । नाहकि = बेकार । पुरुबहा = पूर्व का । बहरवा = बाहर । पंजरिया = बगल का ।

भावार्थ—अजयी धोबी सीढ़ी पर बैठ गया और इसी प्रकार रात व्यतीत हो गयी । प्रातःकाल लोरिक के सिपाही भीटे पर गये । तब अजयी ने जोर से खांसा । उसकी आवाज सुनकर सिपाही भाग खड़े हुये । लोरिक स्वयं सगड़ पर आये । भेंट होने पर दोनों सिसकियाँ भरकर रोने लगे । फिर धोबी ने बताया कि एक तरफ से पीपरी गाँव ने चढ़ाई कर दी । दूसरी तरफ से कुसुमापुर चढ़ आया । बोहे में सारी पलटने उतर आयीं । सात-सात दिन तक तुम्हारे भइया कोड़े चलाते रहे, सात दिन तक दुहानी चलाते रहे और सात दिन तक उपने से मार करते रहे । वह बार-बार हल्दी की ओर एकटक देख रहे थे कि कब मेरी पीठ का भाई लौट आयेगा । अन्त में गुरुवचन के बाणों से घायल होकर गायों के अड़ार में गिर पड़े । गुरमा डाइन ने संवरू का सिर काट लिया और उनका सिर पीपरी ले गयी । नान्हू आजकल पीपरी में भाड़ झोंक रहे हैं । भइया तुम पीपरी पर चढ़ाई करके अपनी गायें लौटा लो तब हम समझेंगे कि संवरू भइया गायों के अड़ार में जीवित है । (१३०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—खोंसे लगलें = खांसने लगे । भगवा = लंगोटी । छापें = किनारे के जल पर पानी छूने जाने लगे । कनिया बाला = कन बाला । सुसुक-सुसुक = सिसकियाँ भरकर । बयनवां = वर्णन, बयान । रूखवा [illegible] परास = रूख और पलाश, वृक्ष तथा पत्तों । नइकी = नयी । कंडन = कंडा का, बाण । दुहनियै = दुहानी । गोंइठवन = उपला, गोंइठा । बनवां = बाण । भेड़रिया = गोलाई, वृत्त । भेड़रिया देइ हो देलीं = वृत्त बना दिया । दुधवन = दूध । लास = लाश ।

भावार्थ—धोबी अजयी ने कहा—गढ़ गउरा चलो । लोरिक ने धोबी से कहा कि मैं कल प्रातः आऊँगा । अजई गउरा वापस आ गये तथा लोरिक की माँ को बताया कि तुम्हारा बेटा बोहा में आ गया है । तुम्हारा धर्म नहीं लुटा है । लोरिक अपने घोड़े पर गउरा पहुँचे और माँ के चरणों पर गिर पड़े । जय-जयकार के बाद बुढ़िया माँ ने कहा—लोरिक तुम्हारा जन्म व्यर्थ हुआ । तुम्हें अपने गले में घड़ा बाँधकर कुएं में डूब जाना चाहिये । तुम जाकर हल्दी टिक गये और गउरा की सुधि बिसरा दी । तुम्हारे

भाई मर गये और गउरा में तुम्हारी नाव डूब गयी है। घोड़ा फिर धोबी के द्वार पर पहुँचा। बिजवा घर से बाहर आयी और उसने लोरिक को बैठने के लिए कुर्सी दी। फिर लोरिक और अजई पीपरी पहुँचे। नान्हू की खोज खबर ली। नान्हू बनछिउली में आकर लोरिक के चरणों पर गिर पड़ा लोरिक उसे लेकर गउरा आये। फिर बारह जोड़ी सिहा, चौदह जोड़ी करताल तथा चौदह जोड़ी धंउसा बजने लगे। डोलियाँ तैयार हो गयीं। गउरा में बोहे से डोलियाँ चलने लगीं। सबसे पहले मञ्जरी की डोली थी, फिर अनूपी की। उसके पीछे चनवा की डोली जा रही थी। घोड़ा मंगर भी नाचते हुये जा रहा था। गउरा में उसका नाच देखकर लोग मुग्ध हो रहे थे। वहाँ की गोपियाँ खिड़कियों से झाँकने लगीं। कितनों ने तवों पर रोटियाँ छोड़ दीं। बहुतों ने आटा गूँथना रोक दिया। जब अहीर का मुँह देखा तब सभी डर गयीं। उनके चेहरे सशंकित हो उठे। लगता था गउरा में सबकी मृत्यु निकट आ गयी है। मञ्जरी की डोली फाटक पर आ पहुँची। तीनों गोपियाँ गउरा में अपने-अपने किले में प्रविष्ट हुईं। मञ्जरी तथा चनवा ने एकछत्र राज्य करना शुरू किया। पांचू भगत कह रहे हैं कि मञ्जरी की विपत्ति कटी और अब वह गउरा में राज भोग रही है। (१३०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कालिह = कल। फेर में = चिंता में। मलवा = मल्ल, योद्धा। बनछिउली = पलाश वन। सिकिटी = कंकर-पत्थर। डंड़िया = डोली। खिरकिया = खिड़की। कठउती = काठ का वर्तन जिसमें आटा गूँथा जाता है, काष्ठ-पात्र। पिसान = आटा। हलि गयीं = प्रवेश कर गयीं। एकवटे में = एकछत्र। भूँजत बाड़ी = भोग कर रही हैं।

भावार्थ—गउरा में मञ्जरी राज्य भोगने लगी। तब एक दिन लोरिक अजयी धोबी के पास गया और उससे पीपरी जाकर सुबचन को बुलाने के लिए कहा। सुबचन आ गये। लोरिक उनके पाँव पर गिर गये और उनसे उपाय पूछा कि पीपरी से गायें कैसे छूटेंगी। सुबचन ने सुझाव दिया कि नान्हू को जोगी बनाकर पीपरी भेजो। वह गलियों में चारों ओर भजन गायेगा। फिर उस तेली के द्वार पर जायगा जहाँ सांड़ कोल्हू में जोता जाता है। आधी रात में वह कठघरे से गायों को खोल देगा और उन्हें लेकर गउरा आ जायगा। गउरा में जितनी मुसीबतें आयी थीं मैं उन्हें काट दूँगा। (१३२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बीरना = भाई। बीपत = विपत्ति। जोगी = योगी। सारंगी = एक बाजा जो योगी बजाते हैं। कठघरा = काठ का घर, कठघरे में पशु कैद किये जाते थे। संड़वा = सांड़।

भावार्थ—सुबचन यह कहकर पीपरी लौट गये। लोरिक ने दोनों हाथ जोड़कर दुर्गा से पूछा—पीपरी की लड़ाई कैसे होगी? मैं पीपरी कैसे जाऊँ? लोरिक को दुर्गा ने आश्वासन दिया कि जैसा तुम कहोगे वैसा मैं करूँगी। लोरिक की प्रार्थना पर नान्हू के लिए दुर्गा ने योगी का वेश तैयार कर दिया। माया की सारंगी, माया का कमंडल,

तैयार नहीं हुआ पर विजवा के कहने पर कि तुम साड़ी पहनकर बैठो, मैं दोनों बहुओं का धर्म बचाने जाऊँगी, अजयी जाने को तैयार हो गया। गले में निरखी, सिर पर पगड़ी, तथा मुंगदर आदि सबसे सुसज्जित होकर वह सगड़ पर पहुँच गया। वहाँ तालाब में कूद गया और उसे पार करके घोड़ा मंगर के पास आया। घोड़े को ऐसा मुंगदर मारा कि वह भाग खड़ा हुआ। वह लोरिक के पास आकर कहने लगा—मेरे ऊपर ऐसी मार पड़ी है कि मेरे बगल की हड्डी टूट गयी है। (१२९)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बढ़नी = झाड़ू। गगरिया = घड़ा। झोंटवा = झोंटा, बाल। ललवन = लात से। गिदरवा = बच्चा। गवनवा = गौना। ठउरी = जगह। सनेस = संदेश। अवनवा = आगमन। बिका गइलैं = बिक गये। धवर के = दौड़कर। नाहकि = बेकार। पुरुबहा = पूर्व का। बहरवा = बाहर। पंजरिया = बगल का।

भावार्थ—अजयी धोबी सीढ़ी पर बैठ गया और इसी प्रकार रात व्यतीत हो गयी। प्रातःकाल लोरिक के सिपाही भीटे पर गये। तब अजयी ने जोर से खाँसा। उसकी आवाज सुनकर सिपाही भाग खड़े हुये। लोरिक स्वयं सगड़ पर आये। भेंट होने पर दोनों सिसकियाँ भरकर रोने लगे। फिर धोबी ने बताया कैसे एक तरफ से पीपरी गाँव ने चढ़ाई कर दी। दूसरी तरफ से कुसुमापुर चढ़ आया। बोहे में सारी पलटनें उतर आयीं। सात-सात दिन तक तुम्हारे भइया कटे चलाते रहे, सात दिन तक दुधानी चलाते रहे और सात दिन तक उपने से मार करते रहे। वह बार-बार हल्दी की ओर एकटक देख रहे थे कि कब मेरी पीठ का भाई लौट आयेगा। अन्त में गुबरूचन के बाणों से घायल होकर गायों के अहार में गिर पड़े। सुरमा डाइन ने संवरू का सिर काट लिया और उनका सिर पीपरी ले गयी। नान्हू आजकल पीपरी में भाड़ झोंक रहे हैं। भइया तुम पीपरी पर चढ़ाई करके अपनी गायें लौटा लो तब हम समझेंगे कि संवरू भइया गायों के अहार में जीवित हैं। (१३०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—खाँसैं लगलैं = खाँसने लगे। भगवा = लंगोटी। छ्वापें = किनारे के जल पर पानी छूने जाने लगे। कनिया बान्ना = कल बान्ना। सुसुक-सुसुक = सिसकियाँ भरकर। बयनवां = वर्णन, बयान। रूखवा र पत (परास) = रूख और पलाश, वृक्ष तथा पत्तों। नइकी = नयी। कंडन = कांडा का, बाण। दुहनियाँ = दुहानी। गोंइठवन = उपला, गोंइठा। बनवां = बाण। भेड़रिया = गोलाई, वृत्त। भेड़रिया दइ हो देलीं = वृत्त बना दिया। धुअवन = धुआं। लास = लाश।

भावार्थ—धोबी अजयी ने कहा—चलो गउरा चलो। लोरिक ने धोबी से कहा कि मैं कल प्रातः आऊँगा। अजई गउरा वापस आ गये तथा लोरिक की माँ को बताया कि तुम्हारा बेटा बोहा में आ गया है। तुम्हारा धर्म नहीं लुटा है। लोरिक अपने घोड़े पर गउरा पहुँचे और माँ के चरणों पर गिर पड़े। जय-जयकार के बाद बुढ़िया माँ ने कहा—लोरिक तुम्हारा जन्म व्यर्थ हुआ। तुम्हें अपने गले में घड़ा बाँधकर कुएं में डूब जाना चाहिये। तुम जाकर हल्दी टिक गये और गउरा की सुधि बिसरा दी। तुम्हार

माई मर गये और गउरा में तुम्हारी नाव डूब गयी है। पाड़ा फिर बाबा के द्वार पर पहुँचा। बिजवा घर से बाहर आयी और उसने लोरिक को बैठने के लिए कुर्सी दी। फिर लोरिक और अजई पीपरी पहुँचे। नान्हू की खोज खबर की। नान्हू बालिहसंग भी आकर लोरिक के चरणों पर गिर पड़ा। लोरिक उसे लेकर गउरा आये। फिर बारह जोड़ी सिहा, चौदह जोड़ी करताल तथा चौदह जोड़ी पंगुरा बजने लगे। डोलियाँ तैयार हो गयीं। गउरा में बोहे से डोलियाँ चलने लगीं। सबसे पहले मंजरी की डोली थी, फिर अनूपी की। उसके पीछे चनवा की डोली जा रही थी। पाड़ा मगन होकर नाचता हुआ जा रहा था। गउरा में उसका नाच देखकर लोग मुग्ध हो रहे थे। वहाँ की नारियाँ खिड़कियों से झाँकने लगीं। कितनों ने तवों पर रोटियाँ छोड़ दीं। बहुतों ने आटा गूँधना रोक दिया। जब अहीर का मुँह देखा तब सभी डर गयीं। उनके चेहरे आलोकित हो उठे। लगता था गउरा में सबकी मृत्यु निकट आ गयी है। मंजरी की डोली फाटक पर आ पहुँची। तीनों गोपियाँ गउरा में अपने-अपने किले में प्रविष्ट हुईं। मंजरी तथा चनवा ने एकछत्र राज्य करना शुरू किया। पांडू भगत कह रहे हैं कि मंजरी की विपत्ति कटी और अब वह गउरा में राज भोग रही है। (१३०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कालिह = कल। फेर में = फिर में। मलवा = मल्ल, योद्धा। वनाछउली = पलाश वन। सिकिटी = कंकर-पत्थर। डोलिया = डोली। खिरकिया = खिड़की। कठउती = काठ का बर्तन जिसमें आटा गूँथा जाता है, काष्ठ-पात्र। पिसान = आटा। हलि गयीं = प्रवेश कर गयीं। एकताई में = एकछत्र। भूँजत बाड़ी = भोग कर रही हैं।

भावार्थ—गउरा में मंजरी राज्य भोगने लगीं। तब एक दिन लोरिक अजबी धोबी के पास गया और उससे पीपरी जाकर सुबचन को बुलाने के लिए कहा। सुबचन आ गये। लोरिक उनके पाँव पर गिर गये और उनसे उपाय पूछा कि पीपरी से गाय कैसे छूटेंगी। सुबचन ने सुझाव दिया कि नान्हू को योगी बनाकर पीपरी भेजो। वह गलियों में चारों ओर भजन गायेगा। फिर उस तेली के द्वार पर जायगा जहाँ साँड़ कोल्हू में जोता जाता है। आधी रात में वह कठघरे से गायों को खोल देगा और उन्हें लेकर गउरा आ जायगा। गउरा में जितनी मुसीबतें आयी थीं मैं उन्हें काट दूँगा। (१३२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बीरना = भाई। बीपत = विपत्ति। जोगी = योगी। सारंगी = एक बाजा जो योगी बजाते हैं। कठघरा = काठ का घर, कठघरे में पशु कैद किये जाते थे। संड़वा = साँड़।

भावार्थ—सुबचन यह कहकर पीपरी लौट गये। लोरिक ने दोनों हाथ जोड़कर दुर्गा से पूछा—पीपरी की लड़ाई कैसे होगी? मैं पीपरी कैसे जाऊँ? लोरिक को दुर्गा ने आश्वासन दिया कि जैसा तुम कहोगे वैसा मैं करूँगी। लोरिक की प्रार्थना पर नान्हू के लिए दुर्गा ने योगी का वेश तैयार कर दिया। माया की सारंगी, माया का कमंडल,

तैयार नहीं हुआ पर बिजवा के कहने पर कि तुम साड़ी पहनकर बैठो, मैं दोनों बहुओं का धर्म बचाने जाऊँगी, अजयी जाने को तैयार हो गया। गले में निरखो, सिर पर पगड़ी, तथा मुँगदर आदि सबसे सुसज्जित होकर वह सगड़ पर पहुँच गया। वहाँ तालाब में कूद गया और उसे पार करके घोड़ा मंगर के [illegible] आया। घोड़े को ऐसा मुंगदर मारा कि वह भाग खड़ा हुआ। वह लोरिक के पास आकर कहने लगा—मेरे ऊपर ऐसी मार पड़ी है कि मेरे बगल की हड्डी टूट गयी है। (१२९)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बढ़नी = झाड़ू। गगरिया = घड़ा। झोंटवा = झोंटा, बाल। लतवन = लात से। गिदरवा = बच्चा। गवनवा = गौना। ठउरी = जगह। सनेस = संदेश। अवनवा = आगमन। बिका गइलें = बिक गये। दवर के = दौड़कर। नाहकि = बेकार। पुरुबहा = पूर्व का। बहरवा = बाहर। पंजरिया = बगल का।

भावार्थ—अजयी धोबी सीढ़ी पर बैठ गया और इसी प्रकार रात व्यतीत हो गयी। प्रातःकाल लोरिक के सिपाही भीटे पर गये। तब अजयी ने जोर से खाँसा। उसकी आवाज सुनकर सिपाही भाग खड़े हुये। लोरिक स्वयं सगड़ पर आये। भेंट होने पर दोनों सिसकियाँ भरकर रोने लगे। फिर धोबी ने बताया कैसे एक तरफ से पीपरी गाँव ने चढ़ाई कर दी। दूसरी तरफ से कुसुमापुर चढ़ आया। बोहे में सारी पलटनें उतर आयीं। सात-सात दिन तक तुम्हारे भइया कोड़े चलाते रहे, सात दिन तक दुहानी चलाते रहे और सात दिन तक उपने से मार करते रहे। वह बार-बार हल्दी की ओर एकटक देख रहे थे कि कब मेरी पीठ का भाई लौट आयेगा। अन्त में सुबच्चन के बाणों से घायल होकर गायों के अड़ार में गिर पड़े। गुरसा डाइन ने संवरू का सिर काट लिया और उनका सिर पीपरी ले गयी। नाम्हू आजकल पीपरी में भाड़ झोंक रहे हैं। भइया तुम पीपरी पर चढ़ाई करके अपनी गायें लौटा लो तब हम समझेंगे कि संवरू भइया गायों के अड़ार में जीवित हैं। (१३०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—खोखै लगलैं = खाँसने लगे। भगवा = लंगोटी। छापें = किनारे के जल पर पानी छूने जाने लगे। कनिया वाला = कल वाला। सुगुक-सुगुक = सिसकियाँ भरकर। बयनवां = वर्णन, बयान। रूखवों र पर [illegible] (पराम) = रूख और पलाश, वृक्ष तथा पत्तों। नइकी = नयी। कंडन = कांडा का, बाण। दूहनियाँ = दुहानी। गोंइठवन = उपला, गोंइठा। बनवां = बाण। भेड़रिया = गोलाई, वृत्त। भेड़रिया देइ हो देलीं = वृत्त बना दिया। दूभवन = दूब। लास = लाश।

भावार्थ—धोबी अजयी ने कहा—गढ़ गउरा चलो। लोरिक ने धोबी से कहा कि मैं कल प्रातः आऊँगा। अजई गउरा वापस आ गये तथा लोरिक की माँ को बताया कि तुम्हारा बेटा बोहा में आ गया है। तुम्हारा धर्म नहीं लुटा है। लोरिक अपने घोड़े पर गउरा पहुँचे और माँ के चरणों पर गिर पड़े। जय-जयकार के बाद बुढ़िया माँ ने कहा—लोरिक तुम्हारा जन्म व्यर्थ हुआ। तुम्हें अपने गले में घड़ा बाँधकर कुए में डूब जाना चाहिये। तुम जाकर हल्दी टिक गये और गउरा की सुधि बिसरा दी। तुम्हार

भाई मर गये और गउरा में तुम्हारी नाव डूब गयी है। घोड़ा फिर धोबी के द्वार पर पहुँचा। बिजवा घर से बाहर आयी और उसने लोरिक को बैठने के लिए कुर्सी दी। फिर लोरिक और अजई पीपरी पहुँचे। नान्हू की खोज खबर ली। नान्हू बनछिउली में आकर लोरिक के चरणों पर गिर पड़ा लोरिक उसे लेकर गउरा आये। फिर बारह जोड़ी सिहा, चौदह जोड़ी करताल तथा चौदह जोड़ी धंउसा बजने लगे। डोलियाँ तैयार हो गयीं। गउरा में बोहे से डोलियाँ चलने लगीं। सबसे पहले मञ्जरी की डोली थी, फिर अनूपी की। उसके पीछे चनवा की डोली जा रही थी। घोड़ा मंगर भी नाचते हुये जा रहा था। गउरा में उसका नाच देखकर लोग मुग्ध हो रहे थे। वहाँ की गोपियाँ खिड़कियों से झाँकने लगीं। कितनों ने तवों पर रोटियाँ छोड़ दीं। बहुतों ने आटा गूँथना रोक दिया। जब अहीर का मुँह देखा तब सभी डर गयीं। उनके चेहरे सशंकित हो उठे। लगता था गउरा में सबकी मृत्यु निकट आ गयी है। मञ्जरी की डोली फाटक पर आ पहुँची। तीनों गोपियाँ गउरा में अपने-अपने किले में प्रविष्ट हुईं। मञ्जरी तथा चनवा ने एकछत्र राज्य करना शुरू किया। पांचू भगत कह रहे हैं कि मञ्जरी की विपत्ति कटी और अब वह गउरा में राज भोग रही है। (१३०)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कािल्ह = कल। फेर में = चिता में। मलवा = मल्ल, योद्धा। बनछिउली = पलाश वन। सिकिटी = कंकर-पत्थर। डंड़िया = डोली। खिरकिया = खिड़की। कठउती = काठ का वर्तन जिसमें आटा गूँथा जाता है, काष्ठ-पात्र। पिसान = आटा। हलि गयीं = प्रवेश कर गयीं। एकवटे में = एकछत्र। भूँजत बाड़ी = भोग कर रही हैं।

भावार्थ—गउरा में मञ्जरी राज्य भोगने लगी। तब एक दिन लोरिक अजयी धोबी के पास गया और उससे पीपरी जाकर सुबचन को बुलाने के लिए कहा। सुबचन आ गये। लोरिक उनके पांव पर गिर गये और उनसे उपाय पूछा कि पीपरी से गायें कैसे छूटेंगी। सुबचन ने सुझाव दिया कि नान्हू को जोगी बनाकर पीपरी भेजो। वह गलियों में चारों ओर भजन गायेगा। फिर उस तेली के द्वार पर जायगा जहाँ सांड़ कोल्हू में जोता जाता है। आधी रात में वह कठघरे से गायों को खोल देगा और उन्हें लेकर गउरा आ जायगा। गउरा में जितनी मुसीबतें आयी थीं मैं उन्हें काट दूँगा। (१३२)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बीरना = भाई। बीपत = विपत्ति। जोगी = योगी। सारंगी = एक बाजा जो योगी बजाते हैं। कठघरा = काठ का घर, कठघरे में पशु कैद किये जाते थे। संड़वा = सांड़।

भावार्थ—सुबचन यह कहकर पीपरी लौट गये। लोरिक ने दोनों हाथ जोड़कर दुर्गा से पूछा—पीपरी की लड़ाई कैसे होगी? मैं पीपरी कैसे जाऊँ? लोरिक को दुर्गा ने आश्वासन दिया कि जैसा तुम कहोगे वैसा मैं करूँगी। लोरिक की प्रार्थना पर नान्हू के लिए दुर्गा ने योगी का वेश तैयार कर दिया। माया की सारंगी, माया का कमंडल,

माया की झोली, माया का गेरुआ वस्त्र नान्हू ने धारण किया। दुर्गा ने उसके मस्तक पर विभूति तथा तिलक लगा दिया। नान्हू अपनी सारंगी पर छत्तीस राग बजाने लगा। उसने ऐसा भजन गाना शुरू किया कि पक्षी तक मोहित हो उठे। नान्हू ऐसे योगी बन गये जैसे दूज का चन्द्र। (१३३)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—पनवां = बाना, वेश। मभूतिया = विभूति। पितरी = पीतल। दुइजिया = दूज, द्वितीया। र········ = राग। चरिया चुरुमन = सुन्दर पक्षी। उबल = उगा है।

भावार्थ—नान्हू योगी वेश धारण कर पीपरी गया और गली-गली में भजन गाने लगा। उसके भजन से पीपरी के लोग मुग्ध हो गये। गाते-गाते वह उस द्वार पर पहुँचा जहाँ कलंगी सांड़ कोल्हू में जोता जा रहा था। वहाँ नान्हू ने चबूतरे पर डेरा डाला फिर आधी रात तक भजन गाता रहा। सारा गाँव उसे सुन रहा था। फिर सभी लोग सोने चले गये। नान्हू तब बैलों के क..धरे के पास पहुँचा और गायों को खोल दिया। वे भागने लगीं। इधर बनछिउनी में देवसी बैठा हुआ था। उसके कानों में आवाज आयी। उसने अपना अग्नि बाण लेकर नान्हू को खदेड़ा। नान्हू गायों को छोड़कर देवहा पार कर गउरा पहुँच गया। जाकर लो..क के पैरों पर गिर पड़ा। तुम जाकर गायों को पीपरी से लाओ। देवसिया ने देवहा के उस पार उन्हें रास्ते में रोक रखा है। (१३४)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कोनवां = कोने में। कलंगिया = कलंगी, जटाधारी। नथिया = नथ। खुरी से = पैर के खुर से। सोरवा = शोर। फोंफरवा = फांफर, रिक्त स्थान। अंजोरिया = चाँदनी, उजेली रात। पराइल = भागती हुई। कनवां में = कान में। लखेदलेबं = खदेड़ लिया है।

भावार्थ—यह बात सुनकर लोरिक घोड़ा सजाकर उस पर बैठ गया। सात पर्त का तवा, पगड़ी, ओढ़न, खड्ग, सबसे लैस होकर लोरिक चला। जाने के पहले बनसत्ती तथा दुर्गा, एवं अन्य सभी देवताओं का सुमिरन किया। फिर नान्हू को बुलाकर पूछा—किस घाट से उतरे थे, उसका भेद बताओ। आज आधी रात में गढ़ पीपरी में चढ़ाई करूँगा। कल ढोल-बजाकर गायों को गढ़ पीपरी में लूट लूँगा। (१३५)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—टा दे = जल्दी से। तबेला = घुड़साल। सिकड़ी = जंजीर। ओजरार = प्रकाश। नलवन = नाल में।

भावार्थ—आधी रात में घोड़ा आकाश में मंडराने लगा। रात उजेली थी। चाँदनी खिली हुई थी। घोड़ा गढ़ पीपरी में जाकर उतर गया और शीघ्र ही कोल मांकर के आंगन में पहुँच गया। उसने गड्ढा खुदवा दिया था उस पर टाटी रखवा दी थी तथा बालू फेंकवा दिया था। रात को घोड़ा पहुँचा तो जाकर गड्ढे में गिर कर फंस गया। तब वीर लोरिक ने बनसत्ती तथा दुर्गा का स्मरण किया। इधर कोल मांकर—अपने किले में सोया था। उसकी पत्नी ने स्वप्न देखा कि सारे देवता किले में दौड़ रहे

हैं तथा कोई शत्रु खड़ा है। कोल माकर ने अपनी पत्नी को डांटा कि जूठे मुँह सो जाने से ऐसा हो रहा है। इधर दुर्गा ने लोरिक को प्रोत्साहित किया कि वह कोल माकर का सिर काट ले। अहीर ने खड़ग-प्रहार किया तथा कोल माकर का सिर जमीन पर आकर गिर गया। डाइन सुरसा ने उसके मुँह में अमृत डाला फिर वह जीवित हो उठा। लोरिक ने उस पर फिर प्रहार किया। तथा दुर्गा ने उसका कटा हुआ सिर अपने हाथ में ले लिया। लोरिक ने सुरसा डाइन के दोनों हाथ काट लिए। आँगन में दुर्गा ने उसका मस्तक फेंककर संपूर्ण पीपरी में आग लगा दी। कोल माकर के किले की बंड़ेरी का बाँस आग लगने से चरचरा उठा। (१३६)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—अंजोरिया = चाँदनी रात, ज्योत्सना। टहाटह = चटख। ऊवल = उग गया। गोंड़ड़ा = पास। अंड़सि गइलै = धँस गया। घरिया में घरिया = घार। लुलुहवा = हाथ। बंड़ेरी = ईमारत का ऊपरी हिस्सा।

भावार्थ—गढ़ पीपरी फूंककर लोरिक गउरा चला। घोड़ा भागते-भागते वन-छिउली में पहुँचा जहाँ देवसिया छिपा हुआ था। देवसिया ने लोरिक को ऐसा बाण मारा कि उसके दोनों पैर सट गये। घोड़ा वीर लोरिक को लेकर गउरा आ गया। मंजरी उसे देखकर रोने लगी। हाय, स्वामी की मृत्यु निकट आ गयी ? (१३७)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—बड़ेरिया = ईमारत का ऊपरी हिस्सा। जेम्मन = जिसमें। हाली-हाली = जल्दी-जल्दी। सूरती उड़ावत जाय = तम्बाकू उड़ा रहा था। खोपड़वा = खोपड़ा, सिर।

भावार्थ—इधर लोरिक को बाण लगा था और मञ्जरी रो रही थी तब वहाँ भोरिक आ गया। माँ ने उसे बताया कि तुम्हारे पिता को बाण लगा है। उनके दोनों पैर सट गये हैं—वे बच नहीं पायेंगे। चनराइत और देवाइच भी वहाँ आ गये। देवाइच अभी केवल बारह वर्ष का था। उसने मञ्जरी से कहा—देवसी का मन बढ़ गया है—या तो मैं उसको मार डालूँगा या अपनी जिन्दगी दे दूँगा। मञ्जरी ने छाती पीटते हुये कहा—अभी तुम बारह वर्ष के बच्चे हो। देवसी तुम्हारी जान नहीं छोड़ेगा। देवाइच ने भी मञ्जरी से कहा तुम यहाँ बैठो। मैं पीपरी जा रहा हूँ। पिता जी की सटी हुई जांघें मुझसे नहीं देखी जा रही हैं। तीनों बच्चों ने तैयारी शुरू की। देवाइच ने वीर सांवर का टूटा हुआ बाण लिया। भोरिक ने ओड़न और खड्ग लिया। सभी समर करने के लिए सन्नद्ध होकर पीपरी चले। जब नदी पर पहुँचे तो वहाँ नौका नहीं थी। तीनों तैर कर नदी पार करने लगे पर बीच नदी में ही तीनों डूबने लगे। दुर्गा ने चिल्ह पक्षी का रूप धारण कर उन्हें निकालकर पलाशवन (वनछिउली) के पास कर दिया। देवसी ने उन्हें देखा और कारण पूछा कि तुम क्यों इस जंगल में घूम रहे हो। तब चनवा के लड़के चनराजीत ने कहा कि हम लोग उस देवसी से मिलने आये हैं जिसने मेरे दादा को अग्नि बाण मारा है। देवसी का सिर कब काटेंगे ? देवसी ने उनसे कहा—तुम तीनों में से एक मञ्जरी के गर्भ से उत्पन्न हो, एक चनवा के गर्भ से उत्पन्न हो और

एक मलसांवर के पुत्र हो। तब सब लोग क्यों पीपरी में जान दे रहे हो। तीनों बच्चे क्रुद्ध हो रहे हैं। हम लोग तुम्हारा मस्तक काटे बिना यह वनछिउली नहीं छोड़ेंगे। (१३८)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—मेवाकरने = फलों का बगीचा। करनवा = कारण से। बढ़ि गयल मनवा = तुम्हारा हौसला बढ़ गया है। गहिरवा = गहरा। अकिलिया = बउरायल = पागल हो गये। गियाँ = ज्ञान। किरियवा बोलत बाड़ीं = हम शपथ ले रहे हैं। गतिया = गति। बीगर गइली = बिगड़ गयी है। सनतोख = संतोष। टुम्हवा बनवां = टूटा हुआ बाण। सारा जामों = समस्त घड़ी, आठों याम। पँवर के हो = तैर कर। गिदरवा = बच्चे। ठहरत हउवा = टहल रहे हो।

भावार्थ—तीनों लड़कों ने कहा—हम पीछे पैर हटाकर कायर नहीं कहे जायंगे। देवसी आँखों में आँसू भरकर समझाने लगा। तुम लोग मारे जाओगे और तुम्हारा कुल परिवार रोयेगा। लड़कों ने फिर चुनौती दी। देवसी ने बाण मारे। मलसांवर के लड़के ने अपने टूटे बाण से उसके बाण को दूसरी ओर घुमा दिया। देवसी ने पाँच बाण मारे। बच्चे ने सबको निरस्त कर दिया। फिर मलसांवर के लड़के ने अपना बाण चलाया। देवसी पीपल के पेड़ के नीचे छिपकर खड़े थे। पीपल को भेदकर बाण देवसी को लगा और वह वहीं सूख गया। तीनों बच्चे गउरा आये तथा लोरिक को पीठ पर लादकर फिर वनछिउली ले गये। वहाँ देवसी सूखा पड़ा था। उसके प्राण निकल चुके थे। फिर भी उसकी आँखें टुकुर-टुकुर देख रही थीं। भोरिक ने अपनी तलवार लोरिक को दी। उसने देवसी के सिर को काट डाला। फिर लोरिक को लेकर बच्चे गउरा आ गये। लोरिक ने मञ्जरी को बुलाया और कहा मुझे गाँव गउरा में छुट्टी दे दो। अब मैं बेवरा नदी के तट पर भजन करूँगा। (१३९)

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—गोदर = बच्चा। कादर = कायर। रुवाई = रुलाई। राढ़ी = जिद्दी, हठी। ढरकाय = निरस्त, निष्प्रभाव। झुर्र = झुराय, सूख गया। परं = प्राण। पंयड़े रानै = तैरा रहे हैं। बेवरवा किनार = बेवरा का तट। बेवरा तथा देवहा शायद एक ही नदी के लिए गायक ने प्रयुक्त किया है।

भावार्थ—लोरिक ने मञ्जरी, तीनों बच्चों तथा समस्त कुटुम्ब और परिवार को बुलाया। उसने मञ्जरी से कहा—तुम अन्न, धन सब कुछ ले लो। बोहा की गायों को भी ले लो। मेरा भरोसा मत करो। मंजरी रोने लगी। हाय, गउरा में मेरा दिन कैसे कटेगा? तुम बीच धार में मेरी नाव डुबा रहे हो। लोरिक ने उसे समझाया—मेरे तीन बेटे गउरा में उत्पन्न हुये हैं। इन्होंने मेरे सामने पीपरी में युद्ध किया है। वे कुल का पालन करेंगे। तुम तीनों लड़कों को लेकर गउरा एकछत्र राज्य करो। सारा धन गउरा में त्यागकर उन्होंने बेवरा नदी के तट पर कुश की झोपड़ी बनवायी। लड़कों ने कुश की टाटी बँधवायी। कुश का बिछौना बनवाया। लोरिक को पीठ पर लादकर बेवरा नदी के तट पर ले गये। लोरिक वहाँ दिन भर भजन करने लगे। भजन करते हुये नदी

के तट पर छ महीने व्यतीत हो गये। फिर उन्होंने गउरा से बच्चों को बुलवाया और कहा कि बगीचे से लकड़ी कटवाओ और चिता बनवा दो। अब मैं चिता में भस्म हो जाऊँगा। मेरी मुक्ति हो जायगी। बच्चों ने चिता बनवायी। उस पर चन्दन की लकड़ी रखी। उसमें अग्नि प्रज्वलित कर लोरिक बेवरा के तट पर भस्मीभूत हो गये। तीनों बच्चे गउरा वापस आये। उन्होंने पीपरी से सारी गायें वापस करायीं। नान्हू उनकी चरवाही करने लगे। मंगर घोड़ा अस्तबल में बाँध दिया गया। (१४०)

[यहाँ लोरिकी समाप्त हो रही है। गंगा की दूकान पर मंडली बैठी हुई है। दिन रात भजन हो रहा है। मेरा जन्म परानापुर में हुआ है। मेरा नाम पाँचू भगत रखा गया है। पाँचू भगत रात दिन भजन कर रहे हैं तथा माला जप रहे हैं।]

शब्दार्थ तथा टिप्पणी—कुटुम पलिवार = कुटुम्ब तथा परिवार। मारि के धमकवा = धमाका मारकर, छाती पीटकर। दं = दम, शक्ति। समियां = स्वामी। डोंगवो = नाव। लोहा गहलस = युद्ध ठाना। ललनवा = लाल, सुपुत्र। गिदरवा = बच्चे। मूजबू = राज्य करोगी। कुसै के = कुश का। मड़ई = झोपड़ी। सदरी = बिछौना। चितवा = चिता। मुकितियो = मुक्ति। चन्नन = चंदन। देहले हउवै झोंकवाय = झोंकवा दिया। किन = किनारे। एकवटे = एकछत्र। मूँजति बाड़े = राज्य कर रही है। बतिया रुकि गइलें = सारी कथा खत्म हो गयी, बातें रुक गयीं। तबेलवा = अस्तबल। एठियन = यहाँ। खेलरे वं = खिलवाड़। गोलिया = मंडली। गंगा की दूकानी—बनारस जिले में परानापुर के पास लोरिकी की रिकार्डिंग मैंने गंगा प्रसाद की मिठाई की दूकान में की थी। उन्होंने मेरे लिए बिजली की व्यवस्था उदारता पूर्वक कर दी। गायक ने गंगा प्रसाद की दूकान का यहाँ उल्लेख किया है जो परानापुर के पास ही चौबेपुर में है।

समाप्त

मूल पाठ की नामानुक्रमणिका

मूल पाठ की नामानुक्रमणिका

संक्षिप्त पुस्तक-सूची

उपाध्याय, कृष्णदेव

भोजपुरी ग्राम गीत (दो भागों में) : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, संवत २०००

उपाध्याय, कृष्णदेव

भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन : हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, १९६०

गुप्त, माता प्रसाद

चांदायन : प्रामाणिक प्रकाशन, आगरा, १९६८

तिवारी, उदय नारायण

भोजपुरी भाषा और साहित्य : बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, १९५८

तिवारी, नित्यानंद

मध्ययुगीन रोमांचक प्रेमाख्यान : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, १९७०

त्रिपाठी, रामनरेश

ग्राम साहित्य (भाग १) : हिन्दी मन्दिर, इलाहाबाद, १९५१

त्रिपाठी, रामनरेश

कविता कौमुदी (भाग ५) : हिन्दी मन्दिर, इलाहाबाद, १९२९

परमार, श्याम

भारतीय लोक साहित्य : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९५४

पाण्डेय, श्याम मनोहर

मध्ययुगीन प्रेमाख्यान : मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद, १९६१

पाण्डेय, श्याम मनोहर

सूफी काव्य विमर्श : विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, १९६८

सत्यार्थी, देवेन्द्र

हिन्दी साहित्य पर लोक साहित्य का प्रभाव : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १९५३

सत्येन्द्र

जाहर पीर : गुरु गुग्गा, हिन्द विद्यापीठ, आगरा, १९५६

सत्येन्द्र

व्रज लोक साहित्य का अध्ययन : साहित्य रत्न भण्डार, आगरा, १९५०

सत्येन्द्र

लोक साहित्य विज्ञान : शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, १९७१

सिन्हा, सत्यव्रत

भोजपुरी लोक-गाथा : हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, १९५८

श्रीकृष्णदास

लोक गीतों की सामाजिक व्याख्या : साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, संवत् २०१३
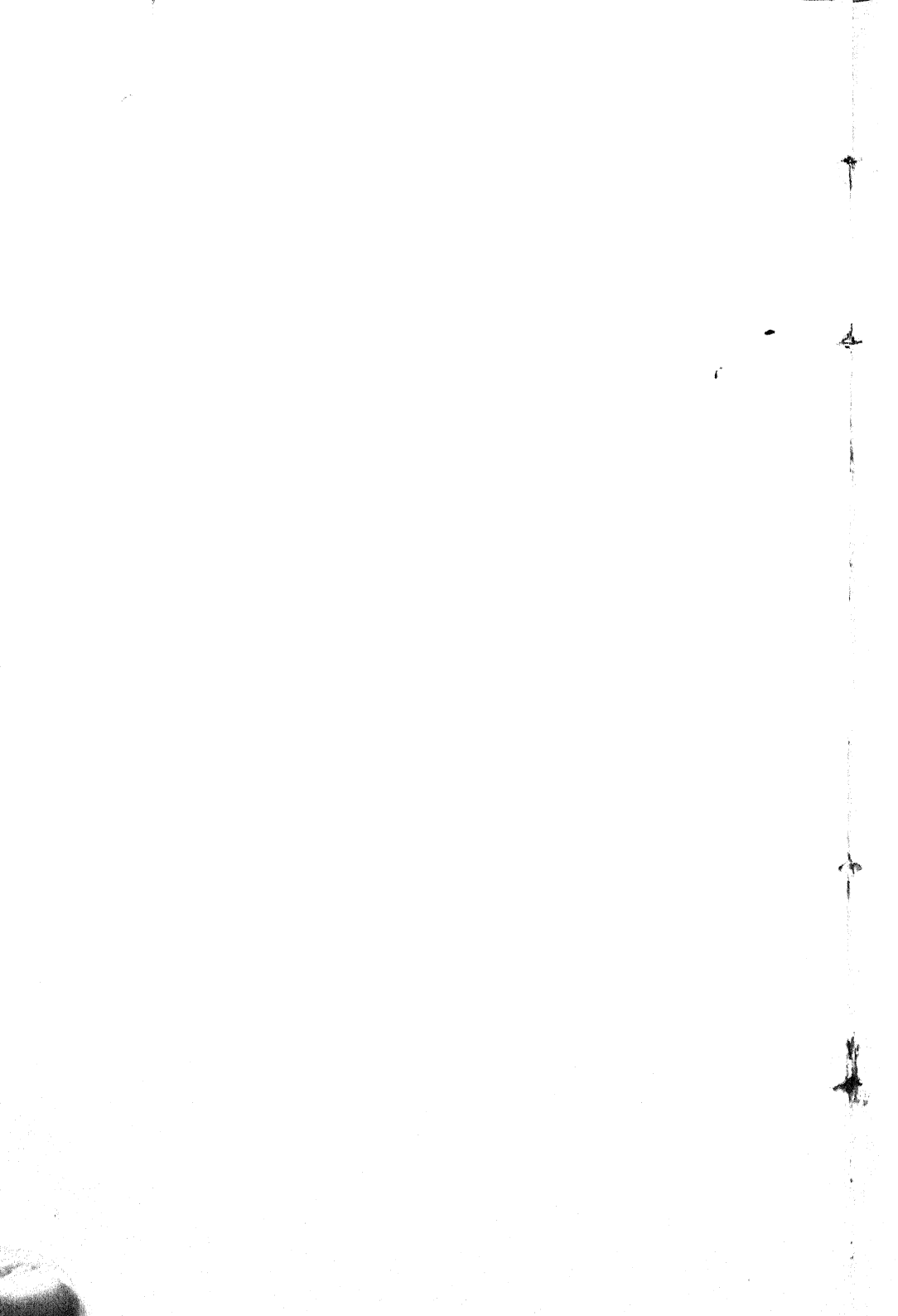
A SELECTED BIBLIOGRAPHY

Abraham S. D. Roger and Foss George :
Anglo American folksong style : New Jersey, Prentice-Hall inc, 1966.

Adam Parry (ed) :
The making of Homeric verse : The collected papers of Milman Parry Oxford, Clarendon Press, 1971.

Barber, Richard :
The knight and chivalry : London, Sphere books ltd. 1974.

Biebuyck, Daniel and Matteene Kahombo :
The mwindo epic : From the Banyanga, Congo republic, Berkley, University of California Press, 1971.

Bowra, C. M :
Heroic Poetry : London, Macmillan and company Ltd. 1964.

Chadwick, H. M :
The heroic age : Cambridge, Cambridge University Press, 1975.

Chadwick, H. M; Chadwick Norak :
The growth of literature : (3 volumes). Cambridge, Cambridge University Press, 1968.

Child, Francis James :
The English and scottish popular ballads (5 volumes) : New York, Dover publications, 1965.

Dan Ben Amos and Kenneth S. Goldstein :
Folklore : Performance and Communication, the Hague, Mouton, 1975.

Deg, Linda :
Folk tale and society : Story telling in a hungarian peasant community, Bloomington, Indiana University Press, 1969.

Dorson, Richard M :
African folklore : Newyork, Anchor books 1972.

Dorson, Richard M :
Folklore : Selected essays, Bloomington, Indiana University Press, 1972.

Dundes, Alan :
The study of folklore : Englewood, cliffs, N. J. Prentic Hall, inc. 1965.

Edmonson, Munro S :
Lore : An introduction to the science of folklore and literature, Newyork, Holt Rinehart and Winston, Inc, 1971.

Emeneau M. B :
Toda Songs : Oxford, Claredon Press, 1971.

Finnegan, Ruth :
Oral literature in Africa : Oxford, the Claredon Press. 1970.

Finnegan, Ruth :
Oral Poetry : Its nature, significance and social context, Cambridge, Cambridge University Press, 1977.

Ghosal, Satyendranath :
Beginning of secular romances in Bengali literatnre : Santiniketan, 1959.

Hayes, E. Nelson and Hayes tanya (ed) :
Claude Le'vi-strauss : The anthropologist as hero, Cambridge, Massachusetts, 1970

Henige, David P :
The chronology of oral tradition : Oxford, Clarendon Press, 1974.

Jacobs, Melville :
The content and style of an oral literature : Newyork, Viking fund publications in anthropology, 1959.

Jakobson, Roman :
Selected writings : Vol. IV. The Hague, Mouton and Co. 1966.

Jan Vansina :
Oral Tradition : Middlesex England, Penguin Books, 1973.

Kailaspathy, K :
Tamil Heroic Poetry : Oxford, The Claredon Press, 1968.

Ker W. P :
Epic and Romance : Essays on Medieval literature, New York, Dover Publications, 1957.

Kunene, D. P :
Heroic Poetry Of Basotho, Oxford, Clarendon Press, 1971.

Levi Strauss, Claude :
From Honey to Ashes : Translated from the French by John and Doreen weightman. London ; Jonathancape Ltd., 1973.

Levi Strauss, Claude :
The raw and the Cooked : Translated from the French by John and Doreen Weightman, London, Jonathan Cape Ltd.. 1969.

Levi Strauss Claude :
The Savage Mind : London; Weidenfield and Nicolson, 1974.

Levi Strauss, Claude :
Structural Anthropology : Translated from the French by Claire Jacobson and Brook grundfest Schoepf, England, Penguin Books, 1972.

Lomax Alan :
Folksong Style and Culture.
Washington, American Association for the Advanced Science, 1968.

Lord, Albert :
The Singers of Tales : New York, Atheneum Edition, 1965.

Maranda Elli Kongas and Maranda Pierre.
Structural Models in Folklore and Transformational Essays : The Hague, Mounton, 1971.

Niane :
Sundiata : An epic of old Mali, Translated by G. D. Picket, London; Longmans Green and Co. Ltd., 1969.

Pandey, Shyam Manohar :
Abduction of Sita in the Ramayana of Tulasidasa : Orientalia Lovaniensia Periodica, Leuven; Belgium, 1977, Vol. 8.

Pandey, Shyam Manohar :
Maulana Daud and his Contributions to the Hindi Sufi Literature : Annali Istituto Universitario Orientale, Napoli, ITALY 1978 (3S-1).

Paredes, Americo and Bauman Richard (Ed.) :
Towards new perspectives in folklore : Austin, the University of Texas Press, 1972.

Parry. M. and Lord A. (Ed.) :
Serbo Croatian Heroic Songs : Vol. I, Massachusetts. Harvard University Press, 1954.

Propp V :

Morphology of the folktale : Austin, University of Texas, 1971.

Sen, Sukumar (Ed.) :

Vipradas. *Manasa Vjiaya* : Calcutta; the Asiatic Society, 1953.

Sidhanta N. K :

The Heroic age of India : London; Kegan Paul, Trench Trubner and Co. Ltd., 1929.

Sokolov, Y. M :

Russian Folklore : Detroit, Folklore Associates, 1971.

Thompson Stith :

The Folktale : Berkley; University of California Press, 1977.

Thompson Stith :

Motif Index of Folkliterature : 6 Volumes, Bloomington; Indiana University Press, 1966.

Thompson Stith and Roberts, warren, E. :

Types of Indic Oral Tales : Helsinki, 1960.

Watts, Ann Chalmers :

The lyre and harp : A Comparative Reconsideration of Oral Tradition in Homer and old English Epic Poetry, New haven; Yale University Press, 1969.

Wimberly, Lowry Charles :

Folklore in the English and Scottish Ballads : New York. Dover Publications, 1965.